श्रीजैनकथा रत्नकोष नामना पुस्तकनो त्रीजो
मूकेलो छे, जेमां प्रथम अत्युत्तम मोहविवेकनो
ंदर उपमितिभवप्रपंच नामना ग्रंथनी माफक
था कर्म परिणाम राजा अने तेमनां कुटुंबादिकनुं
अने सम्यग्दर्शन नामें प्रधान तेमज विवेकादिक
वांचवाथी वांचनारने यथार्थ संसारस्वरूप स्वतः
छी बीजो ग्रंथ महोपाध्याय श्रीविनयविजयजी
स्तवन १२७ गाथानुं दाखल करेलुं छे. ते ग्रंथ
णुं करी मलता विषयवालोज छे. ते पछी त्रीजो
. ते ग्रंथमां समकेतनी चार सद्दहणा आदिक स
र्णन करेलुं छे, अने ते वली प्रत्येक बोलनी उपर
ब तेज विषयने दर्शावनारी तादृश उपदेशनी सू
प्राभाविक पुरुषोनी कथाउ आवेलीउ छे, तेथी
अपूर्व बोध थयाविना रहेशेज नहिं, एवा मह
ग्रंथो एतत्पुस्तक गत मुद्रित करेला छे.
र्शनसित्तरी ग्रंथनी एकज प्रत महारी पासें घणी
थी तेने शुद्ध करी छापवाने अर्थें बीजी प्रत मेलव

यत्न कर्यो परंतु क्यांहिथी प्रत मली शकी नहीं माटे एकज प्रत उपरथी म्हारी यथाशक्ति शोधन करीने ए ग्रंथ छाप्यो छे तथा वली ए ग्रंथमां साक्षी दाखल अनेक स्थले जूदा जूदा शास्त्रोनी गाथाउ अने श्लोको मागधी भाषा तथा संस्कृत भाषामां आवेला छे, तेने शुद्ध करवा माटे कोइ पण म्हाहामी प्रत नही मलवाथी तेमां अशुद्धताना दोष साधारण वाचनार साहेबोने पण दीठामां आवशे तो चतुरजनोने दीठामां आवे तेमां तो कहेवुंज शुं? माटे महान्पुरुषो महारामां ग्रंथ शोधन करवानी हानशक्ति जाणता छतां पण म्हारी उपर अप्रियता न आणतां पोतें सुधारी वाचशे अने हुं महाराथी थयेली भूलोने माटे समस्त वांचनारा साहेबोनी समक्ष म्हारा शुद्ध अंतःकरणथी मिच्छाडुक्कड देउं छुं.

दर्शनसित्तरी ग्रंथने कथाउ सहित बराबर धारणामां राखवाथी समकेतना सडसठ बोल मांहेला कया कया बोल कया कया सम्यक्दृष्टि जनोमां पामीयें? एवुं अनुमान करवानी शक्ति आदिक बीजा पण मोक्षमार्गना साधनने प्राप्त करावनारा एवा अनेक उत्तम गुणोनो लाभ थवाथी दूर रहेवाने लीधे यशंकीर्त्तिनी वृद्धि होवाथी आ भवमां पण सर्व सज्जनोमां अग्रेसरनी पदवीने पामशे. ए ग्रंथमां केटली कथाउ छे अने ते कया कया उत्तम जनोनी छे? इत्यादि बाबतो जो सामान्यथी जाणवी होय तो ते पाछेना पानामां अनुक्रमणिका जोवाथी जाणवामां आवशे.

मोहविवेकनो रास घणुकरी मारवाडदेशमां रचेलो होवाथी तेमां आवेली भाषा पण घणी खरी मारवाडदेशनेज मलती होवाथी ते भाषामां हुं विशेषे करी अजाण होवाने लीधे तेम वली ए ग्रंथनी मात्र एकज प्रत म्हारा हस्तगत होवाथी वधारे शुद्धता करवानुं माहाराथी बनी शक्युं नथी.

आ ग्रंथो केवा रसिक छे, ते विषेनी तारीफ मारा मोढाथी नहिं करवा रस्ततां हुं एम धारुं छुं के सुज्ञ वांचनाराउ पोतेज ते ग्रंथो वांचवाथी तेनी तारीफ कर्या वगर रहेशे नहि. किंबहुविलेखनेन शुभमस्तु.

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

प्रथम मोहविवेकना रासनी अनुक्रमणिका.

त्रीजो ग्रंथ सम्यक्त्व सप्ततिका बालावबोध तथा कथासहित छे, तेनी अनुक्र०

॥ अथ ॥

॥ पंडित श्रीधर्ममंदिर विरचित श्रीमोहविवेकनो रास प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम खंडः

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित चाहशुं, प्रणमुं प्रथमोल्लास ॥ तेज तमस जींत्यां जिणे, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ गुण अनंत गुरुजन तणा, दयाकुशल भंमार ॥ ज्ञान दान दीये जिके, ते प्रणमुं सुखकार ॥ २ ॥ ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान ज्योति जगमांय ॥ ज्ञान देव दिलमां धरुं, ज्ञान कल्पतरु गाय ॥ ३ ॥ अनंत सिद्धमां ज्योति ए, साधारण महाधाम ॥ मुनि मनपंकजमां धरे, सारे वंछित काम ॥४॥ ज्ञानी पण वचनें करी, कही न शके जसु पार ॥ आतम अनुभवशुं लहे, चिदानंद विस्तार ॥ ५ ॥ कर्म जाति बहु वर्गणा, फिर रही छे जसु पास ॥ पण तेहने लागे नहिं, ज्युं रविवादल रास ॥ ६ ॥ पुण्यपापथी ए नहिं, अनुपम ज्योति अभंग ॥ जन्म कह्यो जोगीसरें, उदासीनता संग ॥ ७ ॥ चन्द्र दीप मणि भानुनी, ज्योति देशथी होय ॥ जडता दाहकता तिहां, इहां कलंक न कोय ॥ ८ ॥ भोग मांहि वसतां थकां, पहोंचाड्या इण पार ॥ क्रोड वर्ष कष्टें करी, न तर्या बहु संसार ॥ ९ ॥ काम क्रोध न रहे तिहां, जिहां जागी ए ज्योत ॥ वालबुद्धि जाणे नहिं, भवजल तारण पोत ॥ १० ॥ नाद वाद तप मौन धर, आसन आश निरोध ॥ इणशुं नर लाभे नहिं, स्वाभाविक ए बोध ॥ ११॥ नमो नमो सरस्वति भणी, कर्म अलुखता दूर ॥ नाभिपुत्र ब्रह्माय की, उपनी अनुपम नूर ॥ १२ ॥ निर्मल मानससर वसे, अवर मूकी परिवार ॥ हंस केलि त्यां नित करे, सरस्वति वाहन सार ॥ १३ ॥ ते सरस्वति आतम निकट, वहे रहे निश दीस ॥ अवर कोइ जाणे नहिं, इक जाणे योगीश ॥१४॥ नीच गमन पाषाण बहु, जडता जाल प्रकार ॥ अवर नदी दूषण घणां, ए निर्मल निर्धार ॥१५॥ जिन वाणी सरस्वति कही, बीजी सरस्वति नांही ॥ भव्य लोकहितकारिणी, जयवंती जगमांही ॥१६॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नमणी खमणी नें मनगमणी ॥ ए देशी ॥ श्रीजयशेखर आवे सुरि न्दा, सुणजो रोचक नविजन वृंदा ॥ अध्यातमनो ए अधिकार, मीगे मा नुं अमृतधार ॥ १ ॥ मूरख मोहदशामां राचे, लौकिक चतुर कथा करि माचे ॥ कही परने ज्ञान दिखावे, आप प्रबोधमां कबहुं नावे ॥ २ ॥ पढि गुण ग्रंथ वडाई पाइ, शान्ति दशा मनमें कबु नांइ ॥ ज्युं नड्क गज मो ती धारे, पण तेहना गुण फल न विचारे ॥ ३ ॥ शृंगारमां बहु ढे नर र सिया, शान्तितणे घर विरला वसिया ॥ शीत तापमां बहु दिन होई, शुन जाणे मेरे दिन कोइ ॥ ४ ॥ अग्नि पडे जे पबरसेंती, बहुला लाने धरती सेंती ॥ चन्द्रकान्ते जे अमृत वरसे, तेहवो समरस विरलो फरसे ॥ ५ ॥ अणवाव्यां पण वननां धान, उपजे निपजे को नहिं मान ॥ शालिनां जतन घणां वलि कीजें, उत्तम लोकां आदर दीजें ॥ ६ ॥ सम रस शालि सरीखो जाणो, बीजा रस तुब मनमां आणो ॥ समरस अनुनवतां सु खदाइ, बीजा रस दुःख राचे नाइ ॥ ७ ॥ उत्तम नर उत्तम कुल जायो, तिण ए नाग्यसंयोगें पायो ॥ मूढ लोक बीजा रस सेवे, अंतरदृष्टि ते कब हुं न देवे ॥ ८ ॥ साचो रस समरस रस राजा, शिवसुख अमृत आपे ताजा ॥ कठिन कषाय विकार विदारे, जे सेवे तसु पार उतारे ॥ ए ॥ वन ताडीना मूकी तमासा, पुजल परणन परणी वासा ॥ जूठी रामत जूठ पासा, होय रह्या कांय परना दासा ॥ १० ॥ अत्तरवास सुवासमां ली णा, ते नर जगमां जाण प्रवीणा ॥ मनगज समता अंकुश दीजें, अध्या तम अमृत रस पीजें ॥ ११ ॥ विवेक वीरनो वास वसीजें, समता रसनो स्वाद लहीजें ॥ बीजा रस कूचा जाणीजें, नरनव केरो लाहो लीजें ॥ १२ ॥ शान्ति शिरोमणि नवरसमांहि, गावो तसु गुण मन उन्नाहि ॥ ए सेवंतां शिवसुख आवे, मोह महिपतिनो नय जावे ॥ १३ ॥ काम अ ग्नि बीजा रस वाले, समता रस साहामो न निहाले ॥ वीर विवेक परस्प र प्यारो, मोह रायने ए रस खारो ॥ १४ ॥ अध्यातम शैलीनो साचो, रा जनीतिमां नहिं जे काचो ॥ कोविद कविता गुणनो धारी, ते इण ग्रंथत णो अधिकारी ॥ १५ ॥ पहेली ढालें शान्तरस गायो, उदासीन में मंदिर पायो ॥ नूर नविक जन मनमां नायो, धर्ममंदिर कहे सुख सवायो ॥ १६ ॥

॥ दोहो ॥

॥ आचारिज कहे सांभलो, शान्तिरसक जे होय ॥ तेहतणां लक्षण कहुं, परखेजो सहु कोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आनंद समकित उच्चरे रे लाल ॥ ए देशी ॥ शान्ति सदा रस सेवियें रे लाल, कीजें एहशुं प्रीत सुखकारी रे ॥ ब्रह्म मुहूर्त्त प्रातनो रे लाल, तिहां कीजें एह रीत सुखकारी रे ॥ शांति सदा रस सेवियें रे लाल ॥१॥ आलस निद्रा वे तजे रे लाल, आत्मचिन्तक होय सु० ॥ स्थिर मन तन वचने करी रे लाल, ज्ञान नयनशुं जोय सु० ॥शां०॥२॥ कामीने वादी हुवे रे लाल, दंभी लोभी लोल सु० ॥ बहिर्मुखी कुमती सदा रे लाल, गीत गायन रंग रोल सु०॥शां०॥३॥ भुंजाणो इन्द्रिय विषे रे लाल, मानी क्रोधनो गेह सु०॥ विश्वासघाती वक्रता रे लाल, तुरत दिखावे छेह सु० ॥ शां० ॥ ४ ॥ एवा दोष जिहां नहिं रे लाल, तेहिज पुरुष प्रधान सु० ॥ रोष धरे नहिं दूहव्या रे लाल, मान दीयां नहि मान सु० ॥ शां० ॥ ५ ॥ हुं कुण क्यांथी आवियो रे लाल, कुण छे माहरुं रूप सु० ॥ मित्र शत्रु कुण माहरा रे लाल, मोह माया ए कूप सु० ॥ शां० ॥ ६ ॥ संबल साथें शुं हशे रे लाल, कइ ज्योतिमां जाय सु० ॥ वैराग्यें मन वालियुं रे लाल, इम आतमशुं धाय सु० ॥ शां० ॥ ७ ॥ द्रव्य नयातम आतमा रे लाल, एक निश्चें नहिं भेद सु० ॥ व्यवहारे बहु भेद छे रे लाल, तिणमांहे भव खेद सु० ॥ शां० ॥८॥ अंतरंग बहिरंगना रे लाल, धर्म पटंतर जोय सु० ॥ परमाणु मेरु शैलनो रे लाल, एवडो अंतर होय सु० ॥ शां० ॥ ए ॥ काने पाप सुणे नहिं रे लाल, परदोष देखे न कोय सु० ॥ पंडित पण मौनता भजे रे लाल, सम रस साधे सोय सु० ॥ शां० ॥ १० ॥ साध्य दशा साधक भजे रे लाल, अभ्यासे नर जेह सु० ॥ इन्द्रियनी वृत्ति वश हुवे रे लाल, देखे स्वरूपने तेह सु० ॥ शां० ॥ ११ ॥ बहिरातमता मूकीने रे लाल, अंतर आतम लीन सु० ॥ रूपातीत ध्यान धावता रे लाल, मूक प्रथम ध्यान तीन सु० ॥ शां० ॥ १२ ॥ ते परमातमता भजे रे लाल, सम रस साधक जेह सु० ॥ दोष सकल दूरें हूवे रे लाल, आवे ज्ञान अभेद सु० ॥ शां० ॥ १३ ॥ बिहुं भेदें सहु जीव छे रे लाल, भव्य अभव्य प्रकार सु० ॥ भव्य ते सिद्ध

होशे सही रे लाल, अजव्य फिरे संसार सु० ॥ शां० ॥ १४ ॥ सिद्ध ते तीन प्रकार छे रे लाल, दूर आसन ने मद्ध सु० ॥ पुजल अर्द्ध सीऊशे रे लाल, अंतरे कहियें सिद्ध सु० ॥ शां० ॥१५ ॥ अंतर मुहूर्त्त सीऊशे रे लाल, ते आसन कहाय सु० ॥ ए बेहु विच जे हुवे रे लाल, मध्यम सिद्ध सुहाय सु० ॥ शां० ॥ १६ ॥ इहां मध्यम सिद्धनो कहुं रे लाल, आतमनो अधिकार सु० ॥ मोह विवेक हंस चेतना रे लाल, वलि एनो परिवार सु० ॥ शां० ॥ १७ ॥ जविक जणी प्रतिबोधवा रे लाल, कल्पना कीधी एम सु० ॥ यांन बोल्या पल्लव जणी रे लाल, ए पण दृष्टांत तेम सु० ॥ शां० ॥ १० ॥ परमारथ साधन जणी रे लाल,कीजें एह उपाय सु० ॥ जन्म जरा डुःख मेटीयें रे लाल, ज्ञान लब्धि सिद्ध थाय सु० ॥ शां० ॥ १ए ॥ आतमनो अनुजव हुवे रे लाल,पाप तिमिर डुःख दूर सु० ॥ धर्ममंदिर ज्ञान सेवतां रे लाल, सासतां सुख जरपूर सु० ॥ शां०॥ २०॥ सर्व गाथा ॥५३॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय नय निजगुण करी,सदा विराजे एह ॥ आतम अविकारी अचल, व्यवहारियें धरि देह ॥ १ ॥ माया नारी वश कियो, चेतन राजा जेम ॥ मोह विवेक विरतंत सब, जवि जन सुणजो तेम ॥ २ ॥ वृद्ध वचन अनुसारथी, ए अधिकार करेइ ॥ बालक अटवी ऊतरे, गुरुजन हाथ धरेइ ॥ ३ ॥ पद्मनाज जगवंतनो, शिष्य जावि अणगार ॥ धर्मरुचि नामें जलो, कहेशे सकलविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीप ए जाणियें रे, गोलतणी परें होय ॥ मध्य मेरु नाजि समो रे, दीसते अरका जोय ॥ जविकजन,सुणजो ए अधिकार ॥१॥ ज्युं लाजे अनुजव सार,ज्युं पामे जवनो पार ॥ज०॥सु०॥ ए आंकणी ॥ मेरुथी दक्षिण दिश जलो रे,जरत क्षेत्र कहेवाय ॥ रत्न लाज लोजें करी रे, समुड निकट रहेवाय ॥ ज० ॥ सु० ॥ २ ॥ ए अवसर्पिणीमां हुवा रे, तीन आरा बहु मान ॥ चोथा आरा छेहडे रे, हुवा श्री वर्द्धमान ॥ ज० ॥ सु० ॥ ३ ॥ सात हाथ सुप्रमाण छे रें, सोवन वरण शरीर ॥ सिंह लंबन शोजे जलो रे, जिनवर श्री महावीर ॥ ज० ॥ सु० ॥ ४ ॥ तस पद पंकज जमर ज्युं रे, सेवे श्रेणिक राय ॥ गिरुउ श्रावक गु

ऐं न्नख्यो रे, मगधेसर कहेवाय ॥ न्न० ॥ सु०॥५॥ राजगृही नगरीतणा रे, सघला सुखिया लोक ॥ सौम्यदृष्टि स्वामीतणी रे, वाधे सघला थोक ॥ ॥ न्न० ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरिनो न्नाव रथ चक्रमें रे, लाजे तेहने राज ॥ तेम प्रताप वाधे घणा रे, सारे सहुनां काज ॥ न्न० ॥ सु० ॥ ७ ॥ धर्म अर्थ काम तीन ए रे, साचवे समय सावधान ॥ देव परीक्षा पहोंचियो रे, दीपायो धर्मवान ॥ न्न० ॥ सु० ॥ ८ ॥ मीनग्राही ऋषि देखीने रे, चूको नहि सन्नाव ॥ समकित साचो राखियो रे, न्नवजलतारण नाव ॥ ॥ न्न० ॥ सु० ॥ए॥ दार कुमार न्नाइ पुत्रनो रे, वात संबंध विचार ॥ अवर आगमथी जाणजो रे, इहां न कह्यो विस्तार ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १० ॥ अरिहंत न्नक्ति आदें करी रे, वीश स्थानकमां केवी ॥ तीर्थंकर गोत्र बांधियुं रे, शुद्ध आतम सुविसेवी ॥ न्न० ॥ सु० ॥ ११ ॥ समकितधारी जे हुवे रे, अपतित धारा पाय ॥ वैमानिक वरजी करी रे, अवरगतें नवि जाय ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १२ ॥ श्रेणिक समकित लान्नथी रे, पेहलुं बांध्युं आय ॥ ए कारण जाणो इहां रे, पहेली नरकें जाय ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १३ ॥ रुंधीजें दरियावने रे, अर्जुन बाण रोकाय ॥ रुंधीजें वलि वीजली रे, कर्म उदय न रहाय ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १४ ॥ स्वकृतन्नावना न्नावतो रे, निर्जर तो निज कर्म ॥ अति वेदना होशे नहिं रे, स्थिर रहेशे निज धर्म ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १५ ॥ सहस्र चोराशी वर्षनो रे, पाली आयु निदान ॥ गज जिम गरता लंघशे रे, वारु वधशे वान ॥ न्न० ॥ सु०॥ १६ ॥ मति श्रुत अवधि ज्ञानें करी रे, शोन्नतो होशे तेह ॥ अवतरशे ए न्नरतमां रे, अघपावकमां मेह ॥ न्न० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे शिष्य किणे समे, कुण नामें जिनराय ॥ कोण गामे कोण पुर वसें, हवे गुरु कहे पसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नल राजारे देश, होजी पिंगलहूती पलाणिया ॥ ए देशी ॥ ए अवसर्पिणी एम, होजी सघली उतरी जिण समे ॥ बीजी उत्सर्पिणी तेम, होजी वधतो समे डुःखने समे ॥ १ ॥ पेहलो आरो अति डुष्ट, होजी उतस्यो बीजो लागसी ॥ ए कांइक छे शुद्ध, होजी मेघ घणा त्यां वरससी

२ ॥ नसम समी नूमि तेह, होजी ताता निवाहतणी पेरें ॥ समय स्व
मेह, होजी तिहां किणें शुन इम अनुसरे ॥ ३ ॥ पुष्करावर्त्त बहु मे
, होजी वरसशे शुन धारा करी ॥ त्यार पछी क्षीर जेम, होजी वरसशे घृ
धारा धरी ॥ ४ ॥ मीठी धरती थाय, होजी चीकणी बहु रस सारणी ॥
ीतमनो संग पाय, होजी ज्युं नारी सुख धारिणी ॥ ५ ॥ वसुधा वाध्यो
न, होजी वृक्ष अंकुर प्रगट थया ॥ हर्षित हूइ जीहान, होजी वहा
मल्या ज्युं डुःख गयां ॥ ६ ॥ समय स्वनावें होय, होजी नूमि सबे व
सुधारिका ॥ प्रगट्या पर्वत जोय, होजी रात्रि समे ज्युं तारिका ॥७॥ स्थि
र परनावथी एम, होजी उपचय चय होवे सदा ॥ पुजल परणित तेम,
होजी नगवंत नांख्यो इम मुदा ॥८॥ बीजो आरो बहु जाय, होजी त्रीजो
आरो निकटें यदा ॥ इणिपरे नरतें थाय, होजी चढत पडत रीत ए तदा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मित्रप्रन संनूम वली, सुप्रन स्वयंप्रन तेम ॥ दत्तसूक्ष्म सुबन्धु ति
म, अनुक्रमें कुलगर एम ॥ १ ॥ वैताढ्यगिरि निकटें होशे, शान्तिहार पुर
नाम ॥ कुलगर होशे सातमो, सुमति नाम अनिराम ॥ २ ॥ सुनागी सु
खियो घणुं, नोग पुरंदर काम ॥ सुमति यथार्थ सुमतिधर, वधती होशे
माम ॥ ३ ॥ तसु घर नडा नारजा, शील गुणे शिरदार ॥ शील सोवननी
कसवटी, प्रमदा प्रेम उदार ॥ ४ ॥ पहेली नरकें पाथडो, सीमंतो इण
नाम ॥ त्यांथी श्रेणिक आतमा, अवतरशे इण ठाम ॥ ५ ॥ मानसरोवर
हंस ज्युं. मुक्ताफल सीपमांय ॥ नडाकुख अवतारशुं, सुरतरु सम जसु ठाय
॥६॥ चौदे स्वप्नां देखशे, सुख सूती ते नार ॥ सुमति स्वमतिशुं आखशे, उ
त्तम स्वप्न विचार ॥ ७ ॥ तिण प्रस्तावें आवीने, इन्द्र कहेशे एम ॥ तीन
नुवन शिरसेहरो, पुत्र होशे बहु प्रेम ॥ ८ ॥ शुन लक्षण कुख ताहरी, र
यण वैरागर खाण ॥ मंदिरनी तुं कंदरा, गर्न कल्पतरु जाण ॥ ए ॥ सुर
नर किन्नर मधुप गण, जस पद पंकज लीन ॥ प्रथम तीर्थंकर होयशे, अ
धिक अधिक परवीण ॥ १० ॥ एम कही इन्द्र गया पछी, हर्षित तन मन
होय ॥ गर्नतणी रक्षा करे, पथ्य नोजन ले जोय ॥ ११ ॥ तव दोहला पूरा
होशे, गर्ननणे अनुसार ॥ नव मासे अधिके थये, सुत होशे सुखकार ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ एक दिन दासीदोडती, आइकृष्णने पासरे ॥ एदेशी॥ छप्पन दिशनी कुंवरी मिली, साचवे निज निज कम्म रे ॥ आसन कंपे अविधें करी, जाणियो जिनवर जम्म रे ॥१॥ जगतगुरु जनमिया शुन्नदिने, सुमति घर उत्सव थाय रे ॥ नारकी पण सुख पामियो, गायो सुरवधू आय रे ॥ जगतगुरु जनमिया० ॥ २ ॥ पद्म वासा वसवा नणी, पद्मनी वृष्टि बहु होय रे ॥ देवता नक्ति नावे करी, समकित बीज पण वोय रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोसठ सुरपति आवशे, मेरु शिखरें लेइ जाय रे ॥ जन्मोत्सव विविधें करी, पुण्यनो लान्न लेवाय रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ आनंद उलट नावशुं, पूजा रची बहु प्रेम रे ॥ मातानी पास आणी धरे, कहे होजो कुशल ने क्षेम रे ॥ ज० ॥५॥ हेमनी कोडी त्यां वरसीने, देवता स्थानक जाय रे ॥ मात ने तात मन हरखियां, निरखियो पुत्र सुहाय रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ पद्मनी वृष्टि पुहवी तले, पग पग हुइ अन्निराम रे ॥ एहनो अर्थ मन आणीने, होयशे पद्मनान्न नाम रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मानवी दानवी देव ए, पालियें लालियें तेम रे ॥ अंगुष्ठ पान पीयूषथी, तनुतणी पुष्टता एम रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ अंकथी अंक अपछर घणी, हाथथी हाथ वली लेइ रे ॥ कोड कर होड कर खेलवे, सुरवधू नरवधू केइ रे ॥ ज० ॥ ए ॥ बालकरूप धरी देवता, खेलशे तेहनी साथ रे ॥ हर्ष धारे मनमां घणो, सहजशुं जो ग्रहे हाथ रे ॥ ज० ॥ १० ॥ आठ वरसना हुवा जिसे, आपथी पंमित एह रे ॥ तात इम जाणीने तेहने, राज देशे बहु नेह रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तरुणता संपदा साहिबी, अंतर एह त्रिदोष रे ॥ पथ्यन्नोजन उदासीनता, जे धरे तास बहु तोष रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उद्यम देश साधनतणो, कीयो तिणे तिण समे आय रे ॥ पूर्णनद्र माणिनद्र देवता, सेनानी तसु थाय रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ युद्धनुं काम ते सुर करे, अनुपम पुण्य पमूर रे ॥ दानव मानव देवता, सेवशे आवि हजूर रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ देवसेना नाम तव थयो, न्नुवनमां नूरि विख्यात रे ॥ पुत्रसम प्रेमें प्रजा पालतो, धारतो राज्यंग सात रे ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इक दिन सेवक वीनवे, सुण स्वामी सस्नेह ॥ मयगल मातो मन हरु, शैलोपम सम देह ॥ १ ॥ चन्द्रतणी परें उजलो, चार दंत गजराज ॥

आज राज आव्यो अछे, रिपु गण वटिका वाज ॥ २ ॥ नवि जाणुं आयो कण, किण प्रेर्यो किण हेत ॥ इन्द्र कीधुं तुज नेटणो, मूक्यो ए गज से ॥ ३ ॥ हाथी घणा तुम राजमां, ए सम को नहिं एक ॥ हस्तीशालायें अ वियो, आपथी धरि सुविवेक ॥ ४ ॥ राजा आव्यो त्यां किणे, सेवकन सुणी वयण ॥ हस्ती रयण दीठो खरो, आनंद पायो नयण ॥ ५ ॥ पयोगें करी निरखियो, नगवंत ज्ञान विशेष ॥ वैताढ्य वनवासी कर नागो दवने देख ॥ ६ ॥ बहु शुन लक्षण देखीने, पटहस्ती राय कीध तसु वेसी फिरशे धरा, विमलवाहन नाम दीध ॥ ७ ॥ पद्मनान देवसे वली, विमलवाहन त्रण नाम ॥ अर्थ युक्त इणि परें होशे, नोगवशे ख काम ॥ ८ ॥ नोग कर्म खपवा नणी, केवल करशे राज ॥ पुण्य पा विण नोगव्यां, न लहे धर्म जहाज ॥ ए ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ रसियाना गीतनी देशी ॥ लली लली लोकांतिक सुर वीनवे,सुण स्वाम अरदास ॥ सुज्ञानी ॥ राज धरा मूको हवे मूलथी, धर्म तीर्थ परगास सुज्ञानी ॥ ल० ॥ १ ॥ तुं ज्ञानी तुं ध्यानी ध्याइयें, त्यागी सागी रे हो ॥ सुज्ञानी ॥ संगी रंगी तुं कबही नहिं, शिवरूपी शिव जोय ॥ सुज्ञान ॥ ल० ॥ २ ॥ तुं दानी तुं मानी दीपतो, वाणी सुणी हवे तेह ॥ सुज्ञान ॥ दान धर्म दीपायो देशने, सोवन धारा रे मेह ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ३ वरसी दान ते मेह समान छे, निवृत्ति हुइ जब तास ॥ सुज्ञानी ॥ प्रगट सुरुचि शरद मनमां नली, निर्मल जीवन राश ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ४ पातक पंक पलाया तिण समे, हरख्यां हंसनां वृंद ॥ सुज्ञानी ॥ सरस आं फल सघलां वीजशुं, विकस्यां नवि अरविंद ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ५ मुगता मारग हुआ मनहरु, साधु नणी सुख थाय ॥ सुज्ञानी ॥ संयम वा उद्यम तव करे, पितृ परलोकें रे जाय ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ६ ॥ त्री वर्ष पण होशे तिण समे, पुत्रने देशे रे राज ॥ सुज्ञानी ॥ दीक्षा उत्स करशे देवता, सघला मली सुरराज ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ७ ॥ शिबिक वेसी सुरनर वृंदशुं, नव नव नाटक साज ॥ वैरागी ॥ जय जय धन ध शब्द सहु नणे, साधो आतम काज ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ८ ॥ उपवन आ वी शिबिकाथी उतरी, आनरण सकल उतार ॥ वैरागी ॥ नमो नमो अ

सिद्ध नणी कहे, सावद्य सघलां निवार ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ए ॥ निश्चें मन आतमशुं नावता, शत्रु मित्र समता रे तास ॥ वैरागी ॥ घर्म पवन शीत सबलां जालशे, गिरि ज्युं धीरमवास ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १० ॥ घन घाती माती वृक्षावली, दूर करे बल फोर ॥ वैरागी ॥ नावत ध्यान कुगर करें ग्रही, एकाकी आप जोर ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ११ ॥ देवता नर तीर्यंचें जे किया, सबल परिसह जेह ॥ वैरागी ॥ सहिया वहिया कर्म उदय करी, अनुलोम प्रतिलोम तेह ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १२ ॥ बार वरस पक्ष तेर उपर थकां, लेशे केवल ज्ञान ॥ वैरागी ॥ समवसरण करशे सुरपति तदा, जोयणनो तसु मान ॥ वैरागी ॥ ॥ ल० ॥ १३ ॥ कनक सिंहासन आदि देइ करी, प्रतिहारज अठ सार ॥ वैरागी ॥ देशना देशे मधुर ध्वनियें करी, नविजनने उपकार ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १४ ॥ समकित केइ देशविरत केइ, केइ ले संयम नार ॥ वैरागी ॥ संघ चतुर्विध स्थापना होयशे, धर्म उदय सुखकार ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १५ ॥ एकादश गणधरनी स्थापना, त्रिपदी देइरे कीध ॥ वैरागी ॥ शिष्य घणा होशे तसु सेहथें, प्रगटी आतम रूद्धि ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १६ ॥ नगवंत देश विदेशें विचरशे, तारण तरण जहाज ॥ वैरागी ॥ धर्ममंदिर कहे धन वासर तिको, वांदीजें जिनराज ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पद्मनान्न जिनवर तणो, साधु गुणे शिरदार ॥ काम क्रोध जीत्या जिणें, धर्मरुचि अणगार ॥ १ ॥ किण प्रस्तावें पूछशे, कहो स्वामी मुझ एह ॥ केवल होशे कें नहिं, मुझ मन छे संदेह ॥ २ ॥ नगवन् नांखे सुण रूषि, सुग्राम नामें ग्राम ॥ तस उपवनमांहे तुझे, केवल पद अनिराम ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नरत नृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥ धर्मरुचि एम सांनली ए, ले जिनवर आदेश, महामुनि सेवियें ए ॥ ए टेक ॥ चाली ते तिहां जायशे ए, तसु वनने परदेश ॥ महा० ॥ १ ॥ एकादशमी प्रतिमा धरी ए, ध्यान धर्यां लयलीन ॥ म० ॥ क्षपकश्रेणी क्षणमां करि ए, आवशे गुणगणें क्षीण ॥ म० ॥ २ ॥ तेरमे केवल पामशे ए, लोकालोक प्रकाश ॥ म० ॥ केवल महिमा सुर करे ए, आणी अधिक उल्लास ॥ म० ॥ ३ ॥ देवनां डुंडुनि वाजशे ए, जय जय शब्द सुहाय ॥ म० ॥ ग्रामना लोक सहु आ

वशे ए, वंदन कारण धाय ॥ म० ॥ ४ ॥ गामनो चोधरी आवशे ए, महिमा देखण काज ॥ म० ॥ चमत्कार चित पामशे ए, धन्य धन्य रुषिराज ॥ म० ॥ ५ ॥ जाप होम कीजें घणा ए, एको न आवे देव ॥ म० ॥ अणतेड्या आवी करी ए, लाख ज्ञानें करे सेव ॥ म० ॥ ६ ॥ देवे नहिं लेवे नहिं ए, आदर न करे कोय ॥ म० ॥ दर्शन स्वप्नें दोहिलुं ए, ते सुर सेवक होय ॥ म० ॥ ७ ॥ प्रजुता जवजानें करी ए, मानव मान करेइ ॥ म० ॥ अनुपम प्रजुता एहनी ए, समता दमता धरेइ ॥ म० ॥ ८ ॥ रूडो रूप सोहामणो ए, यौवन लावण्य जोर ॥ म० ॥ तप जप तेज दिवाकरु ए, कष्ट क्रिया पण घोर ॥ म० ॥ ए ॥ एम उल्लसित परिणामशुं ए, जाव जगति मन काम ॥ म० ॥ चरण कमल वांदी करी ए, बेसी यथायोग्य गम ॥ म० ॥ १० ॥ देशना देइ रह्या पछी ए, एकांत वेला पाय ॥ म० ॥ ग्रामणी कर जोडी करी ए, पूछशे चित्त लगाय ॥ म० ॥ ११ ॥ तुम दर्शन थी पामिया ए, विस्मय वारंवार ॥ म० ॥ तमें कोण क्यांथी आविया ए, ए रुद्धि केहे प्रकार ॥ म० ॥ १२ ॥ ते विरतंत कहीजियें ए, ज्युं मन आनंद थाय ॥ म० ॥ वचन सुधारस पीजियें ए, जवनी प्यास बुजाय ॥ म० ॥ १३ ॥ देवानुप्रिय सांजलो ए, महोटुं चरित्र छे एह ॥ म० ॥ स्थिर मन करि शुज जावशुं ए, धर्म उपर धरि नेह ॥ म० ॥ १४ ॥ प्रथम खंम पूरो थयो ए, साते ढालें सार ॥ म० ॥ दयाकुशल पाठकवरु ए, तसु सान्निध्य सुखकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धर्ममंदिर गणीयें कह्यो ए, पद्मनाज अधिकार ॥ म० ॥ सुणतां जणतां शिवकरु ए, श्रीसंघने जयकार ॥ म० ॥ १६ ॥

इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालजापाप्रबन्धे पद्मनाजजिनचरित्र धर्मरुचि मुनिमोक्षाधिकार नामा प्रथमखंमः संपूर्णः ॥१॥

॥ अथ द्वितीयखंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजे खंम बोलशुं, आतमनो अधिकार ॥ आलस उंघ तजी करी. सुणजो जवि चित्त धार ॥ १ ॥ ग्रामणी पूछयो तेहनो, उत्तर आखें एम ॥ रुद्धि निद्धि जिनवर लही, धर्मरुचि कहे तेम ॥ २ ॥ स्थिर वसनां संसार पुर, नामें नगर कहाय ॥ अनंत जीव लोकें जस्यो, घृतघट केरे

न्याय ॥ ३ ॥ हूआ होशे जे अछे, ग्राम नगर नग राशि ॥ ए सहु ते पुरने अछे, एके खूणे वास ॥ ४ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ए, पाटक तीन प्रकार ॥ उत्तम मध्यम जघन्य जीव, वसवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ क्रमी कीटक आदें करी, इन्द्र अन्नं सहु जीव ॥ आप आपणा गममां, मग्न रहे निशि दीव ॥ ६ ॥ क्युं कामण इण पुर कियां, वास न छोड्यो जाय ॥ दुःख दूपण देखे घणां, तोही आवे दाय ॥ ७ ॥ अवर नयर प्रायें हुवे, वासक दे उदवास ॥ अधिकायी ए नगरनी, कदी न होवे नाश ॥ ८ ॥ आपाढा सम उदधि सहु, क्रीडा गिरिसम मेर ॥ गति आगति नाटक तिहां, होय रह्यां बहु वेर ॥ ए ॥ तिण नगरें राजा अछे, हंसराज अभिराम ॥ आत्म दृष्टी ओलखे, तास कहुं गुण ग्राम ॥ १० ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नायकानी देशी ॥ अथवा ॥ तसु घरणी मृगावती रे ॥ ए देशी ॥

संसार नगरीनो धणी रे,अनुपम रूप निधान रे सोभागी ॥ गुण तेहना कोण दाखवे रे लाल, जो करे सहस विधान रे सोभागी ॥ हंस राजा गुण सांभलो रे लाल, पावन करो निज कान रे सो० ॥ हं० ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष केई एहना रे, गुण मणिरयण प्रकाश रे सो० ॥ केइ अगम अपार छे रे लाल, उज्ज्वल गुण हिमराश रे सो० ॥ हं० ॥ २ ॥ कोटि ज्ञानें ग्रंथें भणे रे, केइ तप तपे लाख रे सो० ॥ ते पण सकल स्वरूपने रे लाल, कही न शके मुख भाख रे सो० ॥ हं० ॥ ३ ॥ अंगुलि मेरु उपाडियें रे, बांहे समुद्र तरेय रे सो० ॥ एवा शूरा सांभल्या रे लाल, नृप गुण सहु न धरेय रे सो० ॥ हं० ॥ ४ ॥ एक समयमां संचरे रे, लोकने अंतें वेग रे सो० ॥ एक समय अवर न को अछे रे लाल, जागती जेनी तेग रे सो० ॥ हं० ॥५॥ ज्ञानसागर पण ए सही रे, समकित मोती जेथ रे सो० ॥ ग्रंथ अर्थ लहेरां घणी रे लाल, पवन विभाव छे नेथ रे सो० ॥ हं० ॥ ६ ॥ स्वाभाविक गुण जेहनो रे, केवल ज्ञान विलास रे सो० ॥ सूर्य ज्योति ज्युं जागती रे लाल, दीपावे आकाश रे सो० ॥ हं० ॥ ७ ॥ वर्णाश्रमण पण नही रे, रंग विरंग न थाय रे सो० ॥ संघयण संठाण ए नहिं रे लाल, अकल स्वरूप सुहाय रे सो० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आर्य अनार्य ए नहिं रे, बाल न बुढो एह रे सो० ॥ जंगम स्थावर ए नहिं रे लाल, स्थूल न नहानी देह रे

सो० ॥ हं० ॥ ए ॥ रूपी रसियो ए नहिं रे, गंध न लेवे कोय रे सो० ॥ फरसे नहिं ए फरसने रे लाल, ज्योति स्वरूपी सोय रे सो० ॥ हं०॥ १० ॥ निर्मल स्फटिकतणी परें रे, निश्चय नय करी जोय रे सो० ॥ कर्म उपाधि मल्यां थयां रे लाल, बहुविधरूपी होय रे सो० ॥ हं० ॥ ११ ॥ परगुण ने वश आवीयो रे, निज गुणने वीसार रे सो० ॥ चर स्थिर सघले संचरे रे लाल, अशुद्ध योग प्रकार रे सो० ॥ हं० ॥ १२ ॥ काष्ठमां पावक पाइ यें रे, तिलमां तेल ज्युं होय रे सो० ॥ गोरसमां घी नालियें रे लाल, मा टीमां हेम होय रे सो० ॥ हं० ॥ १३ ॥ क्षीर नीर न्यायें करी रे, होय र ह्यो एक मेक रे सो० ॥ देहमांहे रह्यो उलखे रे लाल, जसु हैडे सुविवेक रे सो० ॥ हं० ॥ १४ ॥ पंचभूत नेलां करे रे, नाम कर्म वश पाइ रे सो० ॥ सेनानी सूत्रधार ज्युं रे लाल, सेना रथंग मिलाय रे सो० ॥ हं० ॥ १५ ॥ सकल पदारथ लोकमां रे, दिखलावे छे एम रे सो० ॥ दीपक तम निशि मंदिरें रे लाल, प्रगट प्रकाशे तेम रे सो० ॥ हं० ॥ १६ ॥ कर्ता नोक्ता ए सही रे, गमनागमन विचार रे सो० ॥ जब लग कर्में विंटियो रे लाल, तव लग ए व्यवहार रे सो० ॥ हं० ॥ १७ ॥ एह विना जग शून्य छे रे, चंद विना जेम रात रे सो० ॥ वदन कमल नयणा विना रे लाल, शोने नहिं तिल मात रे सो० ॥ हं०॥ १८ ॥ आतमना गुण आखिया रे, धर्म रुचि अणगार रे सो० ॥ धर्ममंदिर कहे सांनलो रे लाल, हवे पटराणी विचार रे सो० ॥ हं० ॥ १ए ॥ सर्वगाथा ॥ २ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी रायनी, चमकी चतुरा नार ॥ प्रीतमशुं राती रहे, घ रनी जाणे सार ॥ १ ॥ संवित १ प्रज्ञा २ चेतना, ३ आतपज्योति ४ उदा र ॥ इत्यादिक जसु नाम छे, विविधरूप विस्तार ॥ २ ॥ मूल रूप केवल दशा. अनुपम महिमा नियान ॥ ज्युं कर्त्रिम तिनमें नहिं, परमास्पंद प्रधा न ॥ ३ ॥ तेह रूप आतम निकट, रहे न देखे एह ॥ ज्ञानावर्णादिक घणी, लाग रही छे खेह ॥ ४ ॥ वीजुं रूप राणीतणुं, बुद्धि इस्यो विख्यात ॥ अनंत गुणें हीणो अछे, मूल रूपथी गात ॥ ५ ॥ पांचांसुं मलती रहे, श्रवण मनन परचार ॥ नृपति करणी जे करे, बुद्धितणे अनुसार ॥ ६ ॥ बुद्धितणां बे रूप हुवे, कुबुद्धि सुबुद्धि विशेष ॥ ज्युं धरती एकरूप छे, खा

री मीठी देख ॥ ७ ॥ सुबुद्धि कुबुद्धि बेउ घरणी, व्यवहार वर्त्तण काज ॥ सूर्य छवी निशि सुख अछे, इणिपरें विधरे साज ॥ ८ ॥ सुबुद्धितणे वारे करे, नृपति उत्तम काम ॥ कुबुद्धितणे वारे करे, पापतणो जे धाम ॥ ९ ॥ सुबुद्धि शीख सुख दाखवे, राजा नावे दाय ॥ पथ्य अने हित शीखवे, प्रायें मधुर न थाय ॥ १० ॥ कुबुद्धि नारीशुं नरपति, अहोनिश राखे रंग ॥ नदीपूर धननो धणी, ढले नीचसुं संग ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ बींदलीनी देशी ॥ सीता तो रूपें रूडी, जाणे आंबा माले सूडी हो ॥ सीता अति शोहे ॥ ए देशी ॥ तिण नगरीयें एक नारी, वसे माया कामणगारी हो माया मन मोहे ॥ कर्म प्रकृति नाम बीजो, आतमदामनिका त्रीजो हो ॥ मा० ॥ १ ॥ काम कुतूहल जाणे, तिण सघला घरमें आणे हो ॥ ॥ मा० ॥ चंचल विजली जेसी, चमकंती चाले तेसी हो ॥ मा० ॥ २ ॥ नामिनी नोग नलेरी, तिम मलपे शेरी शेरी हो ॥ मा० ॥ हाव नाव बहु जाणे, तिम नरनां मन वश आणे हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ कूड कपटनी गेह, जसु हैडानो नहिं छेह हो ॥ मा० ॥ सोले कषाय शृंगारा, सजी चाली राज डुवारा हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ दीठो राय तिण नारी, चंचल चतुरा अति सारी हो ॥ मा० ॥ आंखतणे फुरकारे, राय कीधो आपणे सारे हो ॥ ॥ मा० ॥ ५ ॥ बिहुं राणीशुं मेल, करवा वांछे छे नेल हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिशुं मांही अंगीठी, करे मुखनी वात ते मीठी हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ कुबुद्धिशुं महा प्रेम धारी, करे मांहोमांहे यारी हो ॥ मा० ॥ नव नव राग विलासा, देखावी राय कियो दासा हो ॥ मा० ॥ ७ ॥ हंस राजा वश कीधो, माया मनवंछित सीधो हो ॥ मा० ॥ अनंत दलिक पुण्य पाप, बंधन बांध्यां बहु व्याप हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ राजा मन नवि कोपे, नव नवली प्रीति आरोपे हो ॥ मा० ॥ बांध्यो पण वडवेगी, जाये सिद्ध शीला लग तेगी हो ॥ मा० ॥ ९ ॥ नरता ने नंनेरे, सद्बुद्धिशुं मनसा फेरे हो ॥ मा० ॥ माया कुबुद्धितणो एकारो, अबे सुबुद्धितणो वसे वारो हो ॥ मा० ॥ १० ॥ मायानुं कह्युं माने, सद्बुद्धिने कीधां काने हो ॥ मा० ॥ डुर्बुद्धिशुं घणी प्रीत, वली मायाशुं घर रीत हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ राजा आगल माया, डुर्बुद्धि गुण वदे सवाया हो ॥मा०॥ डुर्बुद्धि माया मलियां, अहनिश माणो

ग रलियां हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ सुबुद्धिने वारें वासे, पियु नावे तेहनी
ासें हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिने को नहिं मान, मायानो वाध्यो वान हो ॥
। मा० ॥ १३ ॥ सुबुद्धि राणी इम ध्यावे, हवे प्रीतम हाथ न आवे हो
। मा० ॥ साची वात ए जोइ, लोक परघरभंजा होइ हो ॥ मा० ॥ १४॥
हेनड शोक्य ए मेरी, मायायें ते पण फेरी हो ॥ मा० ॥ घरनो नेद ए
ारी, तिण कांइ न फेरे सारी हो ॥ मा० ॥ १५ ॥ बे नारी बे पासी, इ
थी हुं जाउं नासी हो ॥ मा० ॥ कामण करी पियु बांध्यो, तनु बगड्यो
अन्न ज्युं रांध्यो हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ नारी चरित्र ले नारी, मो विण कु
ण जाणणहारी हो ॥ मा० ॥ नृपने सकल बतावुं, जो अवसर सखरुं पा
वुं हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवसर औषध लीजें, नवले तप क्युंही न दीजें
हो ॥ मा० ॥ अवसर नदियां तरियें, नव पूर न नरवा करियें हो ॥ मा०
॥ १८ ॥ अवसर वेढ निवारे, बुध तेहिज वेला विचारे हो ॥ मा० ॥ सुबु
द्धि इस्युं मन आणी, कोइने न कही हित वाणी हो ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मायाथी सुख सेवतां, पुत्र थयो परधान ॥ मोह नाम जग परगडो,
वाध्यो सघले वान ॥ १ ॥ मोहथकी माया हवे, मायाथी मोह जाण ॥
अशुद्ध निश्चय नय जोवतां, कर्मतणी ए खाण ॥ २ ॥ बीजथकी सहकार
ले, सहकारें बीज जोय ॥ पर्वथकी इक्षु नीपजे, इक्षुथकी पर्व होय ॥ ३ ॥
बगलांथी इंमां हुवे, इंमांथी बग देख ॥ ए अनादि संबंध ले, व्यवहारें बहु
नेख ॥ ४ ॥ दुर्बुद्धिने वल्लन्न घणुं, खेलावे धरि कोड ॥ मोह कुंवर मनोह
र थयो, बीजो नावे जोड ॥ ५ ॥ माया दुर्बुद्धि एणी परें, मोह वधारे दो
य ॥ नवि जाणे को पुत्र ए, बीहुंमें कहेनो होय ॥ ६ ॥ सहजे मेलो मोह
ए, जनकनणी करे द्रोह ॥ हेतविना सहु लोकशुं, वैर वधारे मोह ॥ ७ ॥
पामातुर नरने सदा, मीठी खाज सुहाय ॥ पण ते दुःखदायक घणुं, मो
ह इसी पेरें थाय ॥ ८ ॥ दुर्बुद्धि माया मोह मली, केद कियो हंसराय ॥
तेह दशा हवे वर्णवे, सहु सुणजो मन लाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ चरणाली चामुंम रण चढे ॥ ए देशी ॥ नायक लायक ले घणुं, पडियो
परवश जायो रे ॥ जुआरी पर हारियो, कुद्धितणो व्यवसायो रे ॥ नायक०

॥ १ ॥ दिन उगें ज्युं चन्द्रमा, हिम पड्यां ज्युं वृक्षो रे ॥ कान्तिकला ज्युं हीन ए, हूतो अति हि दक्षो रे ॥ नायक० ॥ २ ॥ निर्लक्षण नारी मल्यां, एक फजेती जोयो रे ॥ रंक भयो रजवट गयो, घेहलानी परें होयो रे ॥ ॥ नायक० ॥ ३ ॥ मूढ भयो मद आलसु, मूक भयो वली अंधो रे ॥ वो वडो वोखो लघु भयो, मायाने प्रतिबंधो रे ॥ नायक० ॥ ४ ॥ मोह मा हा मद प्रेरियो, सूक्ष्म निगोदें जायो रे ॥ वली बादर निगोदमां, अनंत काल रहिवायो रे ॥ नायक० ॥ ५ ॥ पृथ्वी पाणीमां ते उपजे, वाय वन स्पति तेमो रे ॥ सूक्ष्म बादर वे भम्यो, असंख्याता भव एमो रे नाय ॥ क०॥ ६ ॥ क्रमी कीटक कुंथु भयो, कीटिका भ्रमर पतंगो रे ॥ विकलेन्द्रि यमां बहु भम्यो, माया भानिनी संगो रे ॥ नायक० ॥ ७ ॥ उरपरि भुज परि खेचरा, जलचर जीव विशेखो रे ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंचना, भवनो के हो लेखो रे ॥ नायक० ॥ ८ ॥ साथ हुइ माया नारी, साते नरक देखा य रे ॥ वायुवशें ज्युं पानडुं, जल थल सघले जाय रे ॥ नायक० ॥ ९ ॥ हंस विचारे एकदा, किमही माया जायो रें ॥ भागी वांहतणी परें, लाग रही गल धायो रे ॥ नायक० ॥ १० ॥ अनंत काल भव पंथ छे, पंथी सम नृप जायो रे ॥ फरतां थाको एकदा, नरवपु पुरमां आयो रे ॥ नायक० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर पेसंतां इक मल्यो, मनरूप बालक कोय ॥ आलिंगन आवी दी यो, शकुन भलुं ए होय ॥ १ ॥ अति सूक्ष्म तनु जेहनुं, सुंदर चंचलरूप ॥ आलस नहिं उद्यमधरु, इम चिन्ते मन भूप ॥ २ ॥ पांचे इन्द्रियनी क्रिया, मालम करशे मोही ॥ परपंची परधान ए, होशे राजनी सोही ॥ ३ ॥ इम जाणी आदर दियो, माथे फेरी हाथ ॥ मधुर वचन बतलाइने, तुर त लियो ते साथ ॥ ४ ॥ औदारिक पुद्गल ग्रही, तनु पुर वास वसाय ॥ प्राण उदान अपान वली, इत्यादिक पंच गाय ॥ ५ ॥ व्यापारी महोटा जिहां, पांचे इन्द्रिय सार ॥ आणी तेह वसाइया, नगर हुउ शिरदार ॥ ६ ॥ इडा पिंगला नारी तिहां, राय मार्ग सुखदाय ॥ नव द्वारें करी शोभतो, भुजअर्गल कहेवाय ॥ ७ ॥ सातुं धात कपाट वली, निपजाया बहु मान ॥ जब मन परजापति थयो, तब कीनो परधान ॥ ८ ॥ माया महिला रायनो, क्षण इक न तजे साथ ॥ इण कारण अधिकार सब, मान प्रधानने हाथ ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धणरा ढोला एना गीतनी देशी ॥ इण अवसर हवे एकदा रे, रूठी माया नारी॥ मनना मान्या ॥ प्रीतमशुं कलहो करे रे, मानवती निर्धार ॥ मनना मान्या ॥ कह्युं कीजें हो सुजाण कह्युं कीजें, नीच मायाशुं मोहिनी उतार ॥ मनना मान्या ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुबुद्धि कहे कर जोडिने रे, सांभल तुं भरतार ॥ म० ॥ एह दशा तुमची नहीं रे, आपो आप विचार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ २ ॥ पंमित तुं जग परगडो रे, नीचशुं संग निवार ॥ म० ॥ हुं नारी तुमने कहुं रे, तेह नहिं व्यवहार ॥ म० ॥ ॥ कह्युं० ॥ ३ ॥ व्यसन वगोवे वाहला रे, उत्तमने पण एह ॥ म० ॥ मुख मीठा धीठा जिके रे, अंत दिखावे छेह ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ भोला तो भूले सदा रे, एह अनादिनी रीत ॥ म० ॥ पंमितही जो पांतरे रे, क्युं रहेशे शुभ नीत ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ५ ॥ तुं उत्तम शिरसेहरो रे, नेहडो इणशुं निवार ॥ म० ॥ नीच कीचमां इहां रहे रे, निज पदने संभार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ६ ॥ घरणी परणी जे तजे रे, कृत ऊपर ए खार ॥ म० ॥ प्रीतम पल्लव झालीने रे, वीनवुं वारंवार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ७ ॥ चातुर पण आतुर सदा रे, कर्म उदय वश होय ॥ म० ॥ पण कबही पाठी लिये रे, आप विचारी जोय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ८ ॥ तें शिर चाढी एहने रे, घरधणियाणी कीध॥ म०॥ चारवाकमती हशे रे, घरनो भेद इण दीध ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ए ॥ पोषी पण द्वेषी भइ रे, शोषी नहिं ए लगार ॥ म० ॥ दूध भुजंगी पाइयें रे, वाध्यो विषनो भार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥१०॥ मधुबिन्डु सम सुख देइने रे, दे डुःख मेरुसमान ॥म०॥ हठ करे शठ भावें चढी रे, वाध्युं अति अभिमान ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ११ ॥ विषवेली व्याली कीधुं रे, झाली पावक जाल ॥ म० ॥ ए पातकथी नवि टले रे, पाप सरोवर पाल ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १२ ॥ पाणीथी पावक कीधो रे, अमृतथी विष थाय ॥ म० ॥ अंगारा वरसे चन्द्रथी रे, रविथी तम प्रगटाय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १३ ॥ धूल उडे सागरथकी रे, पथ्यथकी थाय रोग ॥ म० ॥ वर स्वरूपी तो भणी रे, एह कर्मनो योग ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १४ ॥ पाप क्रिया जे ए करे रे, तसु भोक्ता तुं थाय ॥ म० ॥ रागवशें जाणे नहिं रे, ए कामण कहेवाय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १५ ॥ एहनो शील शठ एहवो रे, ज्युं

कायरनी बांह ॥म०॥ कमल नाल पुण छे धरो रे, वली वादलनी छांह ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १६ ॥ वेलुघर रायजुज जिमे रे, खल वाणी वारि तेह ॥ म० ॥ मुख मीठी ए हठी खरी रे, निपट नहिं जसु नेह ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १७ ॥ तीन जुवनत्रायक हतुं रे, वल तहारुं ते केथ ॥ म० ॥ प्रजुता ते ताहरी किहां रे, रंक थयो रह्यो एथ ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १८ ॥ प्रायः स्त्री जगमां अछे रे, रांढु विण पगपाश ॥ म० ॥ रात विना अंधकार ए रे, पुरुष जणी करे दास ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १९ ॥ पाणी विना ए पुरुष छे रे, धूल विना रज लेप ॥ म० ॥ मदिरा विण मदमत्तता रे, क्युं रज नीरें खेप ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ २० ॥ सुबुद्धि शीख इणि परें कही रे, प्रीतमने परधान ॥ म० ॥ धर्ममंदिर गणि इम कहे रे, अजहुं माया मान ॥ म० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि राणी इम वीनवे, सुण आतम माहाराय ॥ हुं पण एहथकी मरुं, नावुं तुमचे पाय ॥ १ ॥ माया पुत्र कुपुत्र जे, मोह इस्यो जस मान ॥ तुम डोही किण गुण करी, जीवन प्राण समान ॥ २ ॥ माया डुर्बुद्धि कामिनी, बेहू एकज साथ ॥ बेहू तजवा योग्य छे, सुण साहिब मुज नाथ ॥ ३ ॥ निर्माल्य फूलतणी परें, अब जो छोडे एह ॥ राहुमुक्त ज्युं चंद्रमा, सघली शोज धरेह ॥ ४ ॥ हितवत्सल प्रियजुं कह्यो, सघली वात विचार ॥ राजा सुणि बोल्यो नहिं, चिंतवे सुबुद्धि विचार ॥ ५ ॥ प्रायः पुरुष कठोर दृढ, मन वच कायामांहिं ॥ नमती खमती प्रेमें करी, क्युंही रीजे नांहि ॥ ६ ॥ नारी सारीनी परें, तुरत फरे लही दाव ॥ कोमल कमलतणी परें, मृडु मन मुग्ध स्वजाव ॥ ७ ॥ नदीयां मीठां जल ग्रही, सिंधु समीपें जाय ॥ खारो जीवन खार मुख, करि तसु सहामो थाय ॥ ८ ॥ प्रीत रीत धर्म नीतिने, मूकें सगुणो स्वाम ॥ तो जावी न मटे सही, सहजें होसें काम ॥ ९ ॥ सुबुद्धि इस्युं मन चिंतवी, जाय रही निज गाम ॥ संक्लेश स्थानक तजे, संत सदा सुखधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ चूनडीनी देशी ॥ अथवा ॥ कनकमाला इम चिंतवे, प्रेखी प्रद्युम्न स्वरूप रे, मन मोह्युं अमारुं नंदना ॥ ए देशी ॥ क्षण अंतर मायामानिनी, मन मान तजीने आइ रे ॥ सूर्य द्यूति अलगी गयां, जेम यामिनी आवे धाई रे

॥ १ ॥ मन मोह्यो माया कामिनी, नीको मटको एह रे ॥ ठमके चमके पगलां भरे, चपला चमके देह रे ॥ म० ॥ २ ॥ शोक्य तणी शंका नहिं, रंग राती माती लाल रे ॥ खीर नीर ज्युं मिल गइ, फूलवासना एक निहाल रे ॥ म० ॥ ३ ॥ हालचाल मायातणो, राजानो को नहिं चार रे ॥ मन मंत्री पण हवे चिंतवे, काम करवुं ए अनुसार रे ॥ म० ॥ ४ ॥ माया राणीशुं करे, नीत मुजरो मन परधान रे ॥ अवसरने ते उलखे, जे होवे बुद्धिनिधान रे ॥ म० ॥ ५ ॥ काम काज मायातणुं, मन मंत्री समारे सा रे ॥ खिजमत ठोडी रायनी, माया सेवे करी इक तार रे ॥ म० ॥ ६ ॥ माया पण जाणे खरो, ए सेवक में सिरदार रे ॥ कृपण भाव वजीरशुं, नवि कीजें ए व्यवहार रे ॥ म० ॥ ७ ॥ माया मान्यो मंत्रवी, अति वाध्यो साध्यो राज रे ॥ जोध जुवान हुउ जिसे, करे परणवानो साज रे ॥ म० ॥ ८ ॥ व्याकरणी कहे षंढ ए, ते शब्दतणे अनुसार रे ॥ पण परमारथ जोवतां, पुरुषोतम दीठ उदार रे ॥ म० ॥ ए ॥ हवे डुर्बुद्धिने ठे पुत्रिका, नामें प्रवृत्ति प्रसिद्ध रे ॥ मायाने कहे मंत्रीयें, त्रण पुत्री लेइ दीध रे ॥म०॥ १० ॥ सगपण नवि हूउ हवे, प्रवृत्ति मोह बहु प्रीति रे ॥ कुटुंब सहु भेळुं रहे, करे रंग रली निज रीत रे ॥म०॥ ११ ॥ सुबुद्धि सुणी ए वारता, मनमांहे कियो योग रे ॥ भडा भरणी ने योगिणी, त्रण मली हूउ कुयोग रे ॥ म० ॥ १२ ॥ भाग्यवशें भूपति घरे, भेली थइ त्रण नार रे ॥ प्रवृत्ति कुबुद्धि माया वधू, ते राजाने शिर भार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ राजा तो जाणे नहिं, वश पडियो वानर जेम रे ॥ मायाकामिनी नाचवे, नृप राचे नाचे तेम रे ॥ म० ॥ १४ ॥ परणावीने वश कियो, मन मंत्री जे परधान रे ॥ इण ऊंचा पग आरोपिया, मायानो वाध्यो वान रे ॥ म० ॥ १५ ॥ १३४॥

॥ दोहा ॥

॥ सुबुद्धि राणी मन चिंतवे, कीजें कोइ उपाय ॥ घरनां सूत रहे जिणे, ए मुज आवे दाय ॥ १ ॥ आलोचीजें केहशुं, केहशुं कीजें वात ॥ घरमांहे ए साथशुं, न भिले मारी धात ॥ २ ॥ आपो आप विचारशुं, बेसीने एकांत ॥ राजा सम आज मंत्री ठे, जिम तिम ए हिततंत्र ॥ ३ ॥ तो हवे हुं पण एहने, निज पुत्री परणाव ॥ सगपण साधुं एहशुं, दीसे ले ए दाव ॥ ४ ॥ पुत्री ठे शुभ लक्षणी, रत्नकूखी कहेवाय ॥ जो कोइ क

ए पेदास हूय, तिणथी ए दुःख जाय ॥५॥ नानाने पण सुख करे,बेसाडे निज राज ॥ माया मोह कुबुद्धिने, काढि समारे काज ॥६॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलावी कहे एम ॥ स्वामी धर्मधर तुं सही,धरजे हुं कहुं तेम॥७॥

॥ ढाल उठी ॥

॥ मेरी वहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ मुज हर्षे हूउं छे ए सही, सुण मंत्री कहुं तेह ॥ पुत्री निवृत्ति छे माहरी, परणीजें सस्नेह ॥ मंत्री मानजे ए माहरो उपदेश, अनुपम सुख लहेश, हर्षित होशे नरेश ॥मंत्री०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ रत्नकूखी मुज पुत्रिका, निवृत्ति एहवे नाम ॥ परणावुं हुं तोजणी, होशे वंछित काम ॥मं०॥ २ ॥ मंत्री मनमांहि चिंत वे, छेलियें केम करी लाछ ॥ आदर देइ घर आणियें, नवि कीजें पूछ गाछ ॥ मं० ॥ ३ ॥ इम जाणीने मन मंत्रवी, परणियो निवृत्ति उल्लास ॥ बिहु नामिनी सुखशुं रमे, नव नव रंग विलास ॥ मं० ॥ ४ ॥ इम जाणीने मन मंत्रवी, पडवो वारो वास ॥ इक शंखिणी इक पद्मिनी, दुर्गंध इक फुलवास ॥ मं० ॥ ५ ॥ जूजूइ प्रकृति मिले नहिं, पश्चिम प्राची जोय ॥ अस्त उदय संगतिथकी, सूर्य सम पियु होय ॥ मं० ॥ ६ ॥ वारो हुवे जब प्रवृत्तिनो, तब करे पाप अघोर ॥ निवृत्तिने वारे थये, पाप खरे अति जोर ॥ मं० ॥ ॥ ७ ॥ दुर्बुद्धि माया बे मली, गुण वर्णवे मुख एम ॥ तुं वडनागी मंत्रवी, बे स्त्री परण्यो प्रेम ॥ मं० ॥७॥ वल्लना होवे दुर्लना, गुण करी आप समा न ॥ सरिखा सरिखो जो मले, तो करे सहु गुणग्राम ॥ मं० ॥ ए ॥ तम गुण सरखी प्रवृत्ति छें, अति चपल चतुरा नार ॥ सकल क्रियामां पंमिता, कामकद्ध सिरदार ॥मं०॥ १० ॥ ए सुबुद्धिनी जे छोकरी, आलसु नडाका र ॥ कर्महीण दीसे अछे,क्रियागुण न लगार ॥मं०॥ ११ ॥ तुज गुणथकी विपरीत छे, तो किस्युं आदर मान ॥ अजगर ज्युं उंघी रहे, न करे लौकि क काण ॥मं०॥१२॥ शांत दांत सरिखी दीसती, क्युं नहिं लाव ने लाव॥ कामकद्ध माणस नहिं, तेहशुं केहो नाव ॥ मं० ॥ १३ ॥ राज बीज वली मोह छे, माया तणो अंगजात ॥ एशुं प्रीत घणी करो, होशे जगतमें ख्या त ॥मं०॥ १४ ॥ को पर्व अवसर जाणीने, निवृत्तिने बोलाय ॥ क्षण एक तेहशुं सुख लहो, तुरत करो विदाय ॥मं०॥१५॥ बेउ नारीशुं एम मंत्रवी, सुख नोगवे संसार ॥ धर्ममंदिर कहे ते सुणो,विवेकतणो विस्तार ॥मं०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ शीप स्वाति जल कण लही, मोती धारे जेम ॥ निवृत्ति नारी जन मियो, शुन लक्षण सुत एम ॥ १ ॥ नानी सुबुद्धि नणी हूउं, मनमां हर्ष अपार ॥ नाम विवेक दीयो नलो, सब जनमां सुखकार ॥ २ ॥ विमल कमल कोमल तनु, नीलवट टीको नूर ॥ मोह इस्यो तम जीपवा, अन्निनव ऊग्यो सूर ॥ ३ ॥ राजा रलियायत थयो, रंग ढंग तसु देख ॥ संग नलो एनो सही, रत्न विवेक विशेष ॥ ४ ॥ परम प्रतीत पवित्र तनु, अनुपम कुंवर विवेक ॥ परम ऋद्धि प्रापतिकरु, ए सम अवर न एक ॥ ५ ॥ खेलावे खंतें करी, राजा अवसर पाय ॥ सुबुद्धि मने सुख ऊपजे, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ माया डुर्बुद्धि प्रवृत्तिने, मनमां थयो विषाद ॥ निवृत्तिने बेटो हूउं, वधशे वाद विवाद ॥ ७ ॥ विष वैरी पावक ऋणो, अल्पेशुं नित हाल ॥ बांधी जें कांइ हवे, पाणी पहेली पाल ॥ ८ ॥ रखे राजा मंत्री नणी, मलशे वारं वार ॥ तो बाजी हाथाथकी, जाशे पहेले पार ॥ ९ ॥ मोह विवेक बेहू रमे, देखे राजा हंस ॥ बेहु प्रवृत्ति मले नहिं, ज्युं वायस ने हंस ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ केइक वर लाधो ॥ ए देशी ॥ माया डुर्बुद्धि बे मली, मन चिंते एह विचार रे ॥ वश करजे वारु ॥ प्रवृत्ति नणी इणिपरें कहे, शीख सांनल पुत्री सार रे ॥ व० ॥ १ ॥ तुं चतुरा चपला छे घणुं, नवि जाणे उंमा नेद रे ॥ व० ॥ शांत दांत तुऊ शोक्य छे, तसु पुत्र हुवो गयो खेद रें ॥ व० ॥ २ ॥ पुत्रवती प्रिया मानीयें, घर सघलुं तेने हाथ रे ॥ व० ॥ पुत्रपखें शी पद्मिणी, स ही पुत्र अछे घर आथ रे ॥ व० ॥ ३ ॥ पुत्र विवेक हुआ पछी, नृप मंत्री बे हु एह रे ॥ व० ॥ निवृत्ति नणी आदर करे, छानो न छिपे कदी नेह रे ॥ व० ॥ ४ ॥ आज पछी तुं पियुप्रत्यें, तन मन वचनें एकांत रे ॥ व० ॥ नाव नक्ति एम साचवे, जेम वश हुवे तुऊ कांत रे ॥ व० ॥ ५ ॥ निवृत्तिथकी मन उत रे, कांइ करजे एवी वात रे ॥ व० ॥ कर्म क्रिया केलवे नली, मुऊ वाधे अं गनी धात रे ॥ व० ॥ ६ ॥ निवृत्तितणो वारे अछे, तुऊ जेम करे ते लाज रे ॥ व० ॥ शोक्यतणी शंका किसी, ए शीख धरे मन आज रे ॥ व० ॥ ७ ॥ शो क्य शूनी वली सायणी, वलगी न नली तुं जाण रे ॥ व० ॥ शोक्य कही शू ली जिसी, शुं कहिजें तेह वखाण रे ॥ व० ॥ ८ ॥ शीख इसी परें सांनली,

रहे प्रवृत्ति पिउ पास रे ॥व०॥ क्षण अंतर अलगी रही, जेम तनु छाया इ क वास रे ॥ व० ॥ ए ॥ रात दिवस उन्नी रहे, खिजमतगारी मनखंत रे ॥व०॥ सकल काम संसारनां, साधे नव नवी भंत रे ॥व०॥१०॥ प्रवृत्ति नारी मन मंत्रवी, वश कीधो आपणो नाथ रे ॥व०॥ निवृत्ति नणी आ वा न दे, सहु सरखो मिलियो साथ रे ॥व०॥ ११ ॥ उवट चाल्यो मंत्रवी, जीव घात करे निश्शंक रे ॥व०॥ मृषा वोले धन हरे, परदारा सेवे वंक रे ॥व०॥१२॥ नव नव परिग्रह मेलिया, मद मांस नखे दिन रात रे ॥व०॥ परद्रोही मोही हुउ, आरंनी दंनी जात रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आर्तध्यानी आ करो, वली द्रोह तणा परिणाम रे ॥व०॥ तंडुलमत्स्य तणी परें, दूर ध्या नी आतु जाम रे ॥ व० ॥ १४ ॥ तेली वेलतणी परें, खरवृत्ति नमाडे नूर रे ॥ व० ॥ ज्युं तरुवरने उखेडिने,वाहे बहु जलनुं पूर रे ॥ व० ॥ १५ ॥ माया मन हरखी घणुं, हवे मंत्री अमारे सार रे ॥ व० ॥ सोहागिणी गात्री तिका, जेणें वश कीधो नरतार रे ॥ व० ॥१६॥ सर्वगाथा ॥१०३॥

॥ दोहा ॥

॥ मायासेंती मन मल्यो, हवे केहने ए पाड ॥ उछलियो जलनिधि जिस्यो, हवे केही तसु आड ॥ १ ॥ पवने प्रेर्यो अग्नि ज्युं, मयगल मातो जेम ॥ प्रेर्यो नूरव्यो वाजि ज्युं, धावे इत उत तेम ॥ २ ॥ पंम हूइ पन्नग त णे,क्युं कुपथानो रोग ॥ विख लेप्यो ज्युं तीर ए, तिम मन माया योग ॥ ३ ॥ थाको थलमें हुवे नहिं, नवि बूडे जलपूर ॥ सांसीणो न हुवे क दा, पर्वत चढे सनूर ॥ ४ ॥ अग्निमांहि नमतो थको, न वले सबलो वेग ॥ अलख अगोचर संचरे, नवि पामे उद्वेग ॥ ५ ॥ रज्जु पास जंजीरशुं, न विहुं बांध्यो जाय ॥ मंत्र यंत्र औषध करी, वश क्युंही नवि थाय ॥ ६ ॥ धाम काम रामा रमा, नेली कीधी नूर ॥ नृपति न पामे सिंधि ज्युं, लख आवे जलपूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ घर आंगण सुर तरु फल्यो जी ॥ ए देशी ॥ मेमत्त मंत्री चिंतवे जी, हवे मुज हाथे राज ॥ राजा परजा मो वश्यु जी, आनंद अधिको आज ॥ कर्मगति कठिन कही जिनराज ॥ १ ॥ ते निज श्रवणे सांनली जी, नवि जन नावमें आय ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ राय वधाव्यो हाथशुं जी, नाना

थी वड कीध ॥ घर अधिकारी स्थापियो जी, निज मुद्रा जसु दीध ॥क०॥२॥ तेहवे मंत्री रायने जी, झोह करे अति जोर ॥ बांध्योथो पहेली सही जी, निवड बंधन करे डेर ॥ क० ॥ ३ ॥ आप वधास्यो आपने जी, पीडाकारी जोय ॥ काष्ठ वधारे वन्हिने जी, काष्ठही बाले सोय ॥क०॥ ४ ॥ अल्पशक्ति राजा थयो जी,मूल नहिं ते नूर ॥ धूलपमल धूवे करी जी,ढांकी राख्यो सूर ॥ क० ॥ ५ ॥ मन मान्युं मंत्री करे जी, न्यायें न्याय विचार ॥ बांधे बोडे आपथी जी, हेतु अवर न लगार ॥क०॥ ६ ॥ मोजो माणे मन घणी जी, ज्युं लहरी दरियाव ॥ लूंटे खूटे लोकने जी,लाधो आपणो दाव ॥क०॥७॥ लाख क्रोड वरसां लगें जी, तप करे धर्मनी खंत ॥ ते पण मनना प्रेरिया जी, सातमी नरकें जंत ॥क० ॥८॥ भोग भला सुख भोगवे जी, तेने आपे मोख ॥ सघली करणी एहनी जी, दोष अने गुणपोष ॥ क० ॥ ए ॥ तप जप दान दया सही जी, मन विण सघलो बार ॥ मनमेलु महोटो कह्यो जी, ऊतारे भवपार ॥ क० ॥ १० ॥ किण अवसर मन मंत्रवी जी, दीठो विवेक कुमार ॥ सौम्यवदन सरिखी कला जी, बोलाव्यो सुखकार ॥ क० ॥ ११ ॥ चित्त चितारी निवृत्तिनें जी, आय खडी ते एम ॥ सद्बुद्धिने संभारिने जी, विसरी विद्या जेम ॥ क० ॥१२॥ समरी देवीनी परें जी, ऊभी आवी पास ॥ नयणांनो मेलो हुउ जी, ऊलस्यो अंग उल्लास ॥क०॥१३॥ माता पण आवी अबे जी, निजपुत्रीनी लार ॥ बांध्यो राजा ऊलखी जी, दूरथकी निज नार ॥क० ॥ १४ ॥ शक्ति नहिं मलवातणी जी, परवशने परकाश ॥ दासतणी परें हुइ रह्यो जी, प्रमदा नावे पास ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा हवे निज निंदतो, संभारें सोवार ॥ माया साधारण वधू, से व्यां एह विकार ॥ १ ॥ सुबुद्धि प्रिया में ताहरी,शीख धरी नहिं कांय ॥ ते ए चोरतणी परें, वंधन एवडां थाय ॥ २ ॥ प्रौढी पावन तुं प्रिया, निर्मल गंगानीर ॥ ते तो तुं गुण आगली, हीर क्षीर दंमीर ॥ ३ ॥ तुं चिन्तामणि सारिखी, में बोडी मति मूढ ॥ मायाकाच करें ग्रही, जग सघलोइ ढूंढ ॥४॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती ॥ए देशी॥ पियु आखे प्रिया सांभलो, तुऊ महोटी हो जगमांहे माम ॥ परउपकारी परगडी, आवीने हो कीजें निज

काम ॥पि०॥१॥ घरनी सोह घरणी हाथे, ए वाणी हो में साची दीठ॥ कथन न मान्युं ताहरुं, परसंगें हो हुवो हुं धीठ ॥ पि० ॥ २ ॥ तुऊ प्रसादथी पामियें, निज पदवी हो जे त्रिजुवन राज ॥ तुऊ विण दासपणुं ऊज्यो, परघरनां हो कीजें ठे काज ॥ पि० ॥ ३ ॥ क्यां बांध्यो क्यां रूंधियो, क्यां पीड्यो हो क्यां वींटचो जोय ॥ क्यां मसल्यो क्यां हत हुउ, क्यां किंकर हो क्यां सेवक होय ॥पि० ॥ ४ ॥ हाल हुकम हुयो किहां, निर्धनिया हो कीधी बहु जात ॥ नव नव रंग किया तिहां, में सघली हो न कहाये वात ॥ पि० ॥ ५ ॥ तुऊ विरहो वारु नहिं, में जाएयुं हो हवे पामी शीख ॥ माया मनमंत्री मली, मुऊ कीधो हो इण आप सरीख ॥ पि० ॥ ६ ॥ में मंत्री महोटो कियो, इण कीधो हो मुऊ एह प्रकार ॥ स्वारथियां सघलां मळ्यां, हवे सुंदरि हो तुंहीज आधार ॥ पि० ॥ ७ ॥ वांठे रविने शीतमे, जल वाह्यो हो नावाने धाय ॥ दृग वंठे अंधक नरु, तममांहे हो दीपक आवे दाय ॥ पि० ॥ ८ ॥ इण परि हुं हवे तो नली, चित्त चाहुं हो मूकुं परसंग ॥ दीनदयाल दया करी, हवे राखो हो मुऊसेंती रंग ॥ पि० ॥ ए ॥ शीलवती साची तिका, जे न तजे हो पति आपदमांय ॥ सयण तिके साचा सही, डुःखमांहे हो काढे ग्रहि बांय ॥ पि० ॥ १० ॥ में अवहीला जे करी, ते खमजो हो तुं सुगुणी नार ॥ रोष रखे मनमें धरो, इम बोल्यो हो नृप वारंवार ॥ पि० ॥ ११ ॥ इण अवसर डुर्बुद्धि राणी, अणचिन्ती हो आवी तिण ताम ॥ तासु नयें करि त्रासवी, मा बेटी हो जाये निज धाम ॥ पि० ॥ १२ ॥ बहु दिवसें मलिया हुता, मनमंत्री हो निवृत्ति विवेक ॥ सुबुद्धि राणी साथें हुती, नृप पासें हो आया था ठेक॥ पि० ॥ १३ ॥ देखी शके नहिं डुर्जना, संत मेलो हो तेहने न सुहाय ॥ धर्ममंदिर धन ते नरु, जे न करे हो वेढ राड उपाय ॥ पि० ॥ १४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ माया नारी प्रवृत्ति बे, ए पण आवी तेथ ॥ राजा मंत्री कुबुद्धि वली, मलि रलि बेग जेथ ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी हांजरनी ॥ अथवा ॥ काल अनंतानंत, नवमांही नमतां हो जे वेदन सही ॥ ए देशी ॥ आइ नारी अचान, तीनुं मिल कर हो नरपति

नी कने ॥ उलंनो दिये एम, ए क्युं आइ हो जे कीधी मनें ॥ १ ॥ अ मशुं एवी प्रीत, फिर अम शोकडी हो मुख क्युं लगाइयें ॥ अहोनिश की जें सेव, जीजी करिने हो तुऊने गाइयें ॥ २ ॥ उलंना वली एम, मंत्री ने पण हो माया उच्चरे ॥ प्रकृति बुरी क्युं नारी, राज पधाख्या हो निवृ त्तिनें घरे ॥ ३ ॥ दूति तत्त्वहग मूकी, तें बोलाइ हो सुबुद्धि नणी इहां ॥ निंबु रसनी नाय, दीसतो हेज हो निलता जिहां तिहां ॥४॥ नोलो तुं मन मंत्री, ए मुऊ वातां हो साची बे सही ॥ सुबुद्धि मली जो एथ, तो मुऊ प्रजुता हो स्थिरता नां रही ॥ ५ ॥ इम समजाव्यो मंत्री, माया नारी हो वचन कही घणां ॥ प्रकृति नणी कहे एम, करजे पुत्री हो आलोच मन तणा ॥ ६ ॥ देशवटानी वाट, निवृत्ति नारी हो जिण परें ए लहे ॥ की जें तेह उपाय, तो ए प्रजुता हो निज हाथे रहे ॥ ७ ॥ विषमति पियुनी फाली, आलस मूकी हो काम करीजियें ॥ तुऊ सखिया पचवीश, किरि या सारी हो साथें लीजियें ॥ ८ ॥ कायिक्यादि प्रसिद्ध, धारां धीरां हो नव नव नायका ॥ ए पंचवीशमां इक टाली, इरियावहिया हो तुऊ नेह लाइका ॥ ए ॥ निवृत्ति नारी जेह, इणशुं नासे हो उनी ना रहे ॥ मारो बे विश्वास, चोवीशसेंती हो तुऊ आज्ञा वहे ॥ १० ॥ ए सखियां अनि राम, जिण जग सघलो हो जेर कियो नलो ॥ सबलो सजियो साज, नि वृत्तिसेंती हो हवे कर साफलो ॥ ११ ॥ चोवीशे लेइ साथ, पियुशुं खेले हो नव नव रंगशुं ॥ सखीयांनां सुख देख, पियुडो मोह्यो हो प्रमदा संग शुं ॥ १२ ॥ विभ्रम विविध विलास, मुखनां मटकां हो लटकां अति म ल्यां ॥ गायां वायां गीत, प्रीतम त्रूठे हो मुख पासा ढल्या ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रीतम सुण तुं प्रिया, मनमांहि लीजें हूंश ॥ नवि पूरुं जो आ जथें, तो तुऊ गलाना सूंश ॥ १ ॥ प्रवृत्ति कहे सुण साहिबा, निवृत्ति तारी नार ॥ ते मुऊ हैडामां सही, वेऊ करे ज्युं सार ॥ २ ॥ गोमुख घर णी ए अबे, थाढी शीली सार ॥ वरफतणी पर पीडवे, एनी वात अपार ॥ ३ ॥ तमथी पण गुदरे नहिं, नाजे करण विकार ॥ गरव महेली गेहिनी, एनो उलटो चार ॥ ४ ॥ माता पण बे एहनी, सूवानी सिरदार ॥ वैराग ण शी वावरी, न धरे लोकाचार ॥ ५ ॥ दोपवती जाणी करी, राजा दीधी

गोड ॥ निज पुत्री पण तेहवी, सरखा सरखी जोड ॥ ६ ॥ गीत गान गावे नहिं, हास्य विलास न कोय ॥ स्नान पान वली मान नहिं, व्यसन रसन नवि होय ॥७॥ जो अमनें दीधो अछे, उजगरो अधिवास ॥ देशवटो निवृत्तिने, दीजें ए अरदास ॥ ८ ॥ नागण तो मुख विष कही, वींछण पुछ विष होय ॥ शोक्य नीच कां सापिणी,आदि अंत विष होय ॥ ए ॥ साजतणी परें काढवे, सुतसेंती ए नार ॥ तो अमने सुख ऊपजे, जीवन प्राणाधार ॥ १० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कुंवर इस्यो मन चिंतवे ॥ अथवा ॥ मेरी बहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ ए अरज मानी मंत्रवी, निवृत्ति कीधी विदाय ॥ आपद तेह सती तणी, कविजनथें हो क्युं वरणी जाय ॥ १ ॥ माया मन उत्सव घणो रे ॥ ए टेक ॥ हवे सीध्यां हो सघलांई काज ॥ उद्यम सफल ए हूउ रे, हवे होसी हो मोहकुंवरने राज ॥ माया० ॥ २ ॥ परवश पड्यां जे मानवी, वली कामणी रे हाथ ॥ तसु बुद्धि यामिनीमां सही, नही उगे हो न्यान वासरनाथ ॥ मा०॥ ३ ॥ माता पिता पग लागिनें, निज पुत्र साथें लेह ॥ नीसरी निवृत्ति तिहांथकी, पंथ चाली हो पंथी परे तेह ॥मा०॥ ४ ॥ निष्कंटक राज हवे हुउ, नीसरी निवृत्ति नारी ॥ प्रचंडपवनें प्रेरियो, जेम चाले हो ध्वज अंचल चार ॥ मा० ॥ ५ ॥ इम मन मंत्री दह दिशें, नमी रह्यो अहोनिश तेह ॥ क्षण एक पाछो नवि वले, वधि तृष्णा हो नावे तसु छेह ॥मा०॥ ६ ॥ दुर्बुद्धि माया प्रवृत्तिशुं, नीनो रहे निशि दीस ॥ वली वीनव्यो सघले मली, हवे पूरो हो इतनी जे जगीश ॥मा०॥ ७ ॥ मोहने राजा कीजियें, ए अधिक मन उत्साह ॥ तुफशुं सघलो होयशें, ए अवसर हो लाजीजें कांह ॥मा०॥ ८ ॥ सुत सहित निवृत्ति पण नहिं, सद्बुद्धि राजा दूर ॥ आपणो अधिपति ए किहां, सुख होशे हो सघलां नरपूर ॥मा०॥ए॥ जोरावर ए जोध छे,निजगुणें करि विख्यात॥ आज उदय एनो अछे, ढील न करो हो हवे एहिज वात ॥ मा० ॥ १० ॥ मनमंत्री मानी वारता, मोहने राजा कीध ॥ अति घणां वाजां वाजियां, मनमांहे हो सघलां थइ सिद्ध ॥मा०॥ ११ ॥ होकार करता नरपति, सुरपति सघला जेह ॥ भूजाव्या मोह राजा थये, अति अनमी हो तीन भु

वनमें जेह ॥मा०॥१२॥ मोह राय पण हवे मंत्रवी, मानियो अतिही उदार ॥ क्षण एक अलगो नहिं करे,मुख आगें हो सघलो कामदार ॥मा०॥१३॥ अति सबल राज वध्युं हवे, जेम वधे वड जल पाय ॥ सुख भोगवे मोह भूपति, नीत नवला हो आनंद मन थाय ॥मा०॥ १४ ॥ गुणवंत गुरु पा ठकवरु, श्रीदयाकुशल उल्लास ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर कहे, ए बीजो हो खंम मोहविलास ॥मा०॥ १५ ॥ इति श्रीप्रबोधचिंतामणौ भाषा ढाल प्रबंधे पंमितधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकोत्पत्तिमनःप्रधानोत्पत्तिमोहराज्य स्थापननामा द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ २६२ ॥

॥ अथ तृतीयखंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पार्श्वनाथ प्रसादथें, प्रगटें नवे निधान ॥ अलिय विघ्न दूरें हरे, ज पतां जेहनुं नाम ॥१॥ मोहराय हवे चिंतवें, नगरी अविद्या नाम ॥ पुरी पुराणी बे सही, ते सखरी मुक गाम ॥ २ ॥ साज करी रहियें तिहां, भय केहनो नवि थाय ॥ राजानी ए नीति बे,न रहे एकण गाय ॥३॥ धननीरी धरणी बहु, विविधें करे विचार ॥ गुणवंत ते गाफल नहिं, स्वारथ साधे सार ॥ ४ ॥ इम चिंतवी पुर सज करी, सघलां लोक वसाय ॥ संसारी प्राणी भणी, दीगं आवे दाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पांचमी तपविधि सांभलो ॥ ए देशी ॥ नगरी निरखो मोहनी, नाम अविद्या जासो रे ॥ शोभा सखरी तेहनी, नीको निविड निवासो रे ॥ न गरी० ॥ १ ॥ त्रण अज्ञान त्रिकोट बे, ते नगरीनी पासें रे ॥ कोसीसां सो हे जिहां, कर्म प्रकृति प्रकाशे रे ॥ न० ॥ २ ॥ देव नरक पशु मानवी, ए गति चार प्रतोली रे ॥ तीखी तृष्णा खातिका, अति ऊंमी तसु दोली रे ॥ न० ॥ ३ ॥ रमणी भोग ते वाडियां, मुखकमलें करी सोहे रे ॥ समर कुंवर रमतो रहे, यौवनरूप मन मोहे रे ॥ न० ॥ ४ ॥ पाप अढार तटाक ते, ते अति ऊंमां दीसे रे ॥ शठ हठवाद ते खाल बे, उन्माद जल तिहां हीसे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ क्रीडा वापी कामिनी, शृंगार रस करि गाढी रे ॥ करपदकमलें शोभती, सरखी सुंदर टाढी रे ॥ न० ॥ ६ ॥ कामासन आ

सन जिहां, चोरासी बाजारो रे ॥ परिणाम क्षण क्षण जीवडा, तेहिज घर विस्तारो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरीविच जे लोक छे, ते तो मदरा माता रे ॥ नगरीने छेहडे वसे, ते कछु सरल कहाता रे ॥ न० ॥ ७ ॥ थोडे लाभे लोक जे, मनमां हर्षित थाय रे ॥ थोडे अलाभें जे नरा, दीन थइने जाय रे ॥ न० ॥ ए ॥ ममत्वोपद्रव देवता, नगरीनी रखवाली रे ॥ सान्निध्य खबर भली करे, ज्युं वाडीमां माली रे ॥ न० ॥ १० ॥ नाचे कूदे केइ नरा, केइ वाद विचारे रे ॥ नंदे वंदे केइ स्तवे, केई याचक वारे रे ॥न०॥ ११ ॥ कोपे रोपे गर्वेने, जोपें करण न जीपे रे ॥ आक्रंद रोवन केइ करे, मिथ्या मति अति दीपे रे ॥ न० ॥ १२ ॥ धसमस धंधामां फिरे, शिकथा विकथा कारी रे ॥ गावे वावे केइ नरा, फेरे कपटनी सारी रे ॥ न० ॥ १३ ॥ निर्विचार सहु लोकने, राजाना अति रागी रे ॥ नगरी वर्णी एहवी, मोह राजा वडभागी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १ए ॥

॥ दोहो ॥

॥ हवे राजा वर्णन सुणो, वली एहनो परिवार ॥
कवि कल्पना उपमा करी, कहे सघलो विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी फुंमखडानी ॥ अथवा ॥ रंगी ले सारथी ॥ ए देशी ॥ मूढ संगति परखद भली रे, महेल कुवासना तेथ ॥ महीपति मोहना ॥ सिंहासन मति भ्रंश छे रे, छत्र असंजम जेथ ॥ म० ॥ १ ॥ खड्ग निभ्रंछन कर ग्रहे रे, तेर क्रिया अंगी सार ॥म०॥ पांचे इन्द्रिय परवडी रे, पांचेई हथीयार ॥म०॥ ॥ २ ॥ अरति अने रति बे खडी रे, चामर ढालणहार ॥ म० ॥ पारखंभी बहु पोलिया रे, स्वामी धर्म सिरदार ॥ म० ॥ ३ ॥ बहुविध संज्ञा नट तिहां रे, नाटक करे उदार ॥ म० ॥ कामिक श्रुत तिहां गाइयें रे, राजाने सुखकार ॥ म० ॥४॥ भुजबली भीमतणी परें रे, श्रृंगार सखर करेइ ॥म०॥ चार्वाक मित्र मानतो रे, अधिको मान धरेइ ॥ म० ॥ ५ ॥ पटराणी जडता कही रे, गुण गण रूप रसाल ॥ म० ॥ तस कुखि कंदर केशरी रे, मदन पुत्र वड भाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग द्वेष आरंभ वली रे, ए पण पुत्र छे तास ॥म०॥ जोरावर सघला अछे रे, जींप शके कुण जास ॥ म० ॥ ७ ॥ चिन्ता प्रमुख पुत्री घणी रे, रण करवाने शूर ॥ म० ॥ भाइनी परें भड अ

छे रे, दिन दिन अधिके नूर ॥ म० ॥ ७ ॥ कर्म क्रिया जाणे घणी रें, मंत्री मिथ्यादृष्टि ॥ म० ॥ छाप धरी जेहनी नरा रे, हींमे सघली सृष्टि ॥ म० ॥ ए ॥ डुष्ट योग मनना जिके रे, तेहिज सामंत सार ॥ म० ॥ सात व्यसन सेवे सदा रे, राज्यतणा आधार ॥ म० ॥ १० ॥ मंमलिक राजाने अछे रे, क्रोध मान लोनादि ॥ म० ॥ दंन जोरावर जोध छे रे, पग पग जींपे वाद ॥ म० ॥ ११ ॥ सेनानी परमाद छें रे, क्रुद्ध करणने जोध ॥म० ॥ शान्ति माहा सुनटां नणी रे, जींत्या जेणें रोध ॥म०॥ १२ ॥ चंमनाव कोटवाल छे रे, तस्कर फालणहार ॥ म० ॥ शेठ जिहां व्याक्षेप छे रे, महाजनने सुखकार ॥ म० ॥ १३ ॥ पाप परिग्रह अति घणो रे, तेहिज अधिक नंमार ॥ म० ॥ संग कुसंग दाणी तिहां रे, पुरोहित पाप प्रचार ॥ म० ॥ १४ ॥ आलस शय्यापाल छे रें, शठ हठ छाहलदार ॥ म० ॥ निंदककांनुंगा घणा रे, कुकवि बहु सूत्रार ॥ म० ॥ १५ ॥ तंबोली प्रेम राग ते रे, मुखशोना परकार ॥म०॥ हर्ष शोक बे मल्ल छे रे, क्रीडा कौतुक सार ॥ म० ॥ १६ ॥ विषय विकार चाकर घणा रे, एवो राज्य पमूर ॥ म० ॥ धर्ममंदिर धन ते नरा रे, मोहथकी वसे दूर ॥ म० ॥ १७ ॥ ३७॥

॥ दोहो ॥

॥ हवें निवृत्तिनी वारता, सुणजो नविजन तेह ॥
शील सत्य मनमां धरे, साधवी लक्षण एह ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुंवर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ धर्म सहाय करी कामनी चली रे, निवृत्ति नीके नूर ॥ आपद संपदमां जे स्थिर रहे रे, नरनारी ते शूर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मोह महिपतिने नय नासती रे, पवनतणी परें तेह ॥ सुत सखरो पण साथें शुं करे रे, नावी न चले जेह ॥ धर्म० ॥ २ ॥ मारग लांघ्यो अति धणो कामिनी रे, थाकी राणी थाय ॥ विसामो मन जाणे लीजियें रे, सखरे गाम सुहाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ ब्रह्मपुरी इक नाली नामिनी रे, इहां रहेवानो लाग ॥ मंत्र पवित्र पाणी करी छांटियें रे, पूजीजें वली आग ॥ ध० ॥ ४ ॥ यज्ञस्थंन मांमयो छे यागें करी रे, सकल सफाइ सार ॥ वेदपाठी ब्राह्मण मुख उच्चरे रे, वेदकंठें उच्चार ॥ ध० ॥ ५ ॥ माप अने जव तिल सहु नेलीने रे, होम करे बहु नाति ॥ खीजड पीपल

लाकड मेलियां रे, धर्म तणी मन खांति ॥ ध० ॥ ६ ॥ ढागना कानमां मंत्र नणी करी रे, बलि करे ब्राह्मण तेह ॥ देवने तृप्ति होशे एहथी रे, सरग होशे स्वदेह ॥ ध० ॥ ७ ॥ निवृत्ति एवी हिंसा देखीने रे, मनमां चिन्ते एम ॥ ब्राह्मण ते सम दम क्षमता धरे रे, ज्ञानी निर्मम हेम ॥ध०॥७॥ मन शुचिकारक संतोषी सदा रे, त्यागी करुणावंत ॥ सत्यवादी सूधा ब्रह्म पारखु रे, आरज अनुपम संत ॥ ध० ॥ ए ॥ भ्रमभूला ए ब्राह्मण नामथी रे, गमरी प्रवाहें लोक ॥ वेदमंत्रें करि ढागने स्वर्ग छे रे, मन वंछित लहे थोक ॥ ध० ॥ १० ॥ ढागतणी परें वहालाने करो रे, सखरी गति उपचार ॥ डुर्गतियें कां मूको बापडा रे, वेद उपर एक तार ॥ ध० ॥ ११ ॥ वेदमंत्रें करी कन्या व्याहियें रे, ते पण विधवा थाय ॥ मंत्रतणी जो शक्ति तिहां गई रे, ल्यो परतो मन लाय ॥ ध० ॥ १२ ॥ वेदपाठी ब्राह्मणने ताडतां रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तो ते ढागने पीडा नहिं हुवे रे, मंत्रशक्ति श्रीकार ॥ ध० ॥ १३ ॥ सिंह सर्पनो याग कह्यो नहिं रे, बापडां व करां अनाथ ॥ डुर्बलघाती देव अछे सही रे, नबलाने कोण साथ ॥ ध० ॥ १४ ॥ परमेश्वर ए खावां सरजियां रे, एहवुं बोले एह ॥ खादकथी पण पापी आगलो रे, हिंसा दीपावे तेह ॥ ध० ॥ १५ ॥ यागहिंसाने हिंसा नवि कहे रे, चार्वाक मतना धार ॥ प्राण हरे जो पंचेन्द्रिय तणां रे, लघु जीव केही सार ॥ ध० ॥ १६ ॥ शिव ते सर्ग तीर्थ जलने कहे रे, पूजे गो पशु मंद ॥ गृहधारीने गुरु करी सर्दहे रे, देव अग्नि सुखकंद ॥ ध० ॥ १७ ॥ ए सघला मुऊ शोक्य प्रवृत्तिना रे, पक्षपाती परधान ॥ एम जाणीनें निवृत्ति नीसरी रे, धरे तेम धर्मध्वनि ध्यान ॥ ध० ॥ १७ ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विसामो लेवा नणी, वली जोवुं कोइ गाम ॥ फरतां एक दीतुं तिहां, ब्रह्ममतीनुं गाम ॥ १ ॥ वैरागी बेग घणा, कोपिन वसन धरेइ ॥ हाथ कमंमल दंमधर, जप अक्षमाल धरेइ ॥ २ ॥ स्थानक वारु देखिने, सुतशुं वेगी गाम ॥ एक ब्रह्म जगमां अछे, शब्द सुण्यो ए ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबूद्दीप मऊार, नरत क्षेत्रमांहे ॥ ए देशी ॥ सुत बोल्यो सुण मात, वचन हुवे तीके, जे कोइ तत्त्व सम जाणियें ए ॥ ब्रह्म विना सब जूठ,

एकांत मतधरु, इहां रहेवा मन नाणियें ए ॥ १ ॥ साधक व्यवहार जेह, निरत कारण नखुं, उरहो अवलंब ए सहि ए ॥ निश्चयने ग्रहे एह, कीरिया दूषवे, खोटाछुंवणझे नहिं ए ॥ २ ॥ ग्रंथथकी करे बोध, तप जप खप करे, उद्यम पण सवि आचरे ए ॥ मुखथी बोले एम, ए सहु जूठ ठे, नय प्रमाण नवि उच्चरे ए ॥ ३ ॥ स्याद्वाद नहिं एथ, जे साचो सही, स कल रसायण साधकू ए ॥ कपटी कूडा एह, स्वपर रूपनुं, परमारथना बा धकू ए ॥ ४ ॥ वली कहे जगमां एक, आतम व्यापियो, ब्रह्म स्वरूपी ए हुउ ए ॥ ज्युं आकाशें चन्द, एकज ठे सही, जल प्रतिबिंब जूउ जूउ ए ॥ ५ ॥ उपजे विणसे नूर, जलकल्लोल ज्युं, नाना महोटा दीसता ए ॥ पण ते एक स्वरूप, अवर न को अठें, एह अर्थ कहे हीसता ए ॥ ६ ॥ के उत्तम के नीच, के सुर नारकी, आरज म्लेछ के आखियें ए ॥ के ना री के खंज, के नर तिर्यंच, मोरपिछ सम साखीयें ए ॥ ७ ॥ के पंमित के मूढ, के रंक राजवी, इत्यादिक नेद अनुसरे ए ॥ कर्म न माने हेत, सह ज स्वनाव ए, बदरी कंटकनी परें ए ॥ ८ ॥ आतमगुण पर्याय, अनंत माने नहिं, बोले बालकनी परें ए ॥ परिणामी बे इव्य, आतम पुजल, एक विवेचन ना करे ए ॥ ए ॥ सत्ता शाश्वतरूप, निज निज इव्यनी, मर्यादा मूके नहिं ए ॥ इव्य अने पर्याय, नेदानेद जे, स्याद्वादी समजे सही ए ॥ १० ॥ इहां नव सीके माउ, विवेक सुतें कह्यो, माता वचन प्र माणियो ए ॥ उठि चली पंथमांही, पुत्र प्रेरी थकी, नेद नलो मन आ णीयो ए ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुबुद्धि सुता हवे चालतां, तापस आश्रम दीठ ॥ विसामो इहां ली जियें, सखरी ठाया मीठ ॥ १ ॥ बूढा तापस अति घणा, जटा जूट बहु नार ॥ हाथ अक्षमाला अठे, नाम नारायण सार ॥ २ ॥ शिष्य घणा चिहु दिश जइ, मूल कंद फल लेह ॥ वनत्रीही आणे घणा, नोजन अर्थें तेह ॥ ३ ॥ शुक सारो पंखी नणी, राम नाम शीखाय ॥ पादप सींचे वा रिशुं, धर्म न धर्म उपाय ॥ ४ ॥ निवृत्ति नारी चिंतवे, ए पण मोहें लीन ॥ शम दम करुणा को नहिं, ज्ञान गुणें करि हीन ॥ ५ ॥ शुक्ता नामिनी वे तजी, नजी न अंतर दृष्टि ॥ कोड क्रिया अफली हुवे, ज्युं उखरमें वृष्टि

॥ ६ ॥ आरंभ मिथ्यामति घणा, निरवद्य नहिं ए गाय ॥ भ्रांत थयां प ण ढंकियें, नदीकूलनी छाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मेरे अरहनां ॥ ए देशी ॥ सुबुद्धि सुता वली त्यांथकी रे हां, धरि धीरज मनमांहि ॥ धर्म धुरंधरा ॥ चाली चतुरा चोंपशुं रे हां, काली पुत्रनी बांहि ॥ ध० ॥ १ ॥ तुं सुत सुरतरु छांही, तो सम अवर को नांही ॥ध०॥ ए आंकणी ॥ इक पुर बेठी कामिनी रे हां, कोलधर्म सुणी कान ॥ ध० ॥ विसामो इहां लीजियें रे हां, जो रहे आपणो मान ॥ ध० ॥ २ ॥ ए धर्म सेवे घणुं रे हां, तरुणपणे नर नारि ॥ ध० ॥ आकर्षे लोको भणी रे हां, धर्म शब्द सुखकारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ संत साधु मुख उच्चरे रे हां, आयाने बहु मान ॥ ध० ॥ मंमल मांझे मन रली रे हां, गावे गीत ने ज्ञान ॥ध०॥ ४ ॥ रंभा चंभा दीक्षिता रे हां, धर्म दारा छे एह ॥ ध० ॥ सेव्यां शक्ति होशे सुखी रे हां, मन मत धरो रे संदेह ॥ ध० ॥ ५ ॥ मद्य मांस खातांथकां रे हां, इण गामे दोष नांहिं ॥ ध० ॥ इम सुणी निवृत्ति चिंतवे रे हां, धिक् धिक् एहनी छांहिं ॥ ध० ॥ ६ ॥ मोह मंत्रीना दास ए रे हां, संग भलो न हिं एह ॥ ध० ॥ निवृत्ति तिहां छूटी चली रे हां, शीलवती गुणगेह ॥ ध० ॥ ७ ॥ अवर नगर दीठुं भलुं रे हां, बौधमतीनुं गाम ॥ ध० ॥ आतमनी चर्चा करे रे हां, ए होशे अभिराम ॥ध०॥ ८ ॥ तसु मुख एहवुं सांभल्युं रे हां, आतम क्षण क्षण नांहि ॥ ध० ॥ पुण्य पाप केहने नही रे हां, शून्यपणो जगमांही ॥ ध० ॥ ए ॥ माता पूछे सुत भणी रे हां, एहशुं आखे एम ॥ ध० ॥ विवेक पुत्र तव बोलियो रे हां, सुण माता कहुं तेम ॥ ध०॥ १०॥ बोधने कहियें पुत्र तुं रे हां, पिता भणो छो नांहि ॥ ध० ॥ व्याह भोगवेला जूउ रे हां, एक पिता क्युं सांही ॥ ध०॥ ११॥ अपराध को बीजो करे रे हां, अवर दंमीजें कोइ ॥ ध० ॥ राजनीति पण उलवी रे हां, धर्मभणी किहां होइ ॥ ध० ॥ १२ ॥ शय्या सखरी सूइयें रे हां, पीजें खीर प्रभात ॥ध०॥ भोजन मीठुं कीजियें रे हां, सांख्यमतीनी वात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सौगत मत ए सांभली रे हां, निवृत्ति नारी न सुहाय ॥ ध० ॥ तत्त्व कपूरने कर ग्रह्यां रे हां, दूषण न आवे दाय ॥ ध० ॥ १४ ॥ मुग्ध मानव मृगपाश ए रे हां, भव अटवीमां भूर ॥ ध० ॥ निरखी निरखी पग मंमियें रे हां, इणशुं

रहियें दूर ॥ ध० ॥ १५ ॥ आगें चाली उतावली रे हां, न रही एक पल मात ॥ ध० ॥ कपिल योगी पण मल्यां रे हां, तिणशुं न करी वात ॥ ध० ॥ १६ ॥ सेवक सघला मोहना रे हां, निवृत्ति नारी मन जाण ॥ ध० ॥ वैरीनी परें परहर्या रे हां, भूले नांहि सुजाण ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ए४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ इण परि सघली भूमिका, भमती भमती भूर ॥
विसामो लाधो नहिं, खेद करे जे पूर ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ प्रवचन पुर गइ पाधरी, पुण्य तणे अंकूर लाल रे ॥ निकट भावी निरखे सहि, पापीयडा छे दूर लाल रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ चारित्र प्रासादने उपरें, धर्मध्वज लहकाय लाल रे ॥ दूरथकी पण देखतां, आनंद अंग न माय लाल रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ पुण्य पवित्र परिणामथी, उपदेश नगरमां जोय लाल रे ॥ पाप कर्म चंमालनुं, पग पेसार न कोय लाल रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ साधु शिरोमणि संत जे, नगर मध्यें रहे तेह लाल रे ॥ देशव्रति ने समकिती, बाहिर वसिया अछेह लाल रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रवचन पुर वासी घणा, सघला सुखियां लोक लाल रे ॥ तत्त्वतणे सुख आगलें, तृण सम सुख सुरलोक लाल रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ त्यांथकी मुक्ति पुरी भणी, साथ चले दिन रात लाल रे ॥ चोर चरड लागे नहिं, भीति तणी नहिं वात लाल रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तसु पुरवासें वन अछे, इंद्रियदमन छे नाम लाल रे ॥ निवृत्ति नारी देखियो, अनुपम ए अभिराम लाल रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ साधुवदन ते कुंभ छे, जिन वचनामृत नीर लाल रे ॥ भूर भविक पंथी भणी, जाये भवनी पीर लाल रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ धर्मवचन फल फूटरां, योगी मधुकर सार लाल रे ॥ निवृत्ति विसामो तिहां लियो, खेद गमावणहार लाल रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ योग त्रिभूमि आवास छे, तिहां इक नरने दीठ लाल रे ॥ दिलभर दर्शन तेहनुं, अमृतथकी पण मीठ लाल रे ॥ प्र० ॥ १० ॥ विद्यानो भंमार छे, जाणे सघली वात लाल रे ॥ वंदना कीधी नारियें, जंगम तीरथ जात लाल रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ हाथ जोडीने पूछे सती, कोण तुं स्वामी आख लाल रे ॥ इण वनमांहे क्युं रहे, साचुं सघलुं दाख लाल रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पुरुष कहे सुण सुंदरी, मारी सघली वात लाल रे ॥ वि

मलबोध नामें अबुं, सिद्धपुरुष विख्यात लाल रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ इण पुर मांहे राजवी, अरिहंत नाम छे जास लाल रे ॥ तसु आदेश लही करी, इण वाडीमें वास लाल रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ आवास पहेली नूमिका, वेसीने आराम लाल रे ॥ राखुं सुख नरपूरशुं, वृत्ति हुवे अनिराम लाल रे ॥ प्र० ॥ १५ ॥ राजाना परसादथी, मुजने एहवुं ज्ञान लाल रे ॥ आगम नीगम वारता, सघलांने समाधान लाल रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ कर जोडीने कामिनी, आखे पुरुषने एम लाल रे ॥ उपकारी शिर सेहरो, सुणजे हुं कहुं तेम लाल रे ॥ प्र० ॥ १७ ॥ अबला नारी एकली, नहानो पुत्र ए साथ लाल रे ॥ नमणतणुं दुःख शुं कहुं, इक जाणे जगनाथ लाल रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ मया करीनें जोइयें, ए बालकनो हाथ लाल रे ॥ कहियें होशे एहने, प्रभुता संपद साथ लाल रे ॥ प्र० ॥ १९ ॥ हुं नजरें जे देखशुं, वारु एहनी वार लाल रे ॥ ए सघलुं मुजने कहो, आणी मन उपकार लाल रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ ११५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध पुरुष बोल्यो हवे, सुण नामिनी दुःख तुज ॥ दूर गयां हवे जाणजे, ए वाचा छे मुज ॥ १ ॥ ए बालक जे ताहरो, उत्तम लक्षणवंत ॥ सकल वातनो हुं कहुं, ए माने एकंत ॥ २ ॥ तत्त्वरुचि नामा पुत्रिका, महारी छे मनुहार ॥ शुनाचार दारा कुखें, उपनी ते निर्धार ॥ ३ ॥ तेसेंती तुज पुत्रने, परणावो बहु प्रेम ॥ अविचल जोडी एहनी, होशे कुशल क्षेम ॥ ४ ॥ वर कन्या बेहू नलां, लेहशे जोग संयोग ॥ चंद अने पूनम तणो, पूरण मलियो जोग ॥ ५ ॥ एह वचन सुंदर सुणी, देखी कन्या सार ॥ लावण्य लक्षण देखिने, पामी हर्ष अपार ॥ ६ ॥ नाग्य नलुं मुज पुत्रनुं, ए घर घरणी थाय ॥ घरमें लक्ष्मी आवती, क्युं ठेलीजें पाय ॥ ७ ॥ निडालु शय्या लहे; तरष्यो अमृत पान ॥ नूख्यो पायस नां तजे, लाधो रंक निधान ॥ ८ ॥ निवृत्ति नारी मानियुं, सिद्धवचन शिरदार ॥ लग्न तेह दिन साधियुं, न कर्यो कोइ विचार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ डुलह डुलह किसन हो, डुलहिणी राधिका जी ॥ ए देशी ॥ कुंवर कुंवर विवेक हो, लाधी तत्त्वरुचि जी, परणे परम उल्लास ॥ विलंब विलंब न कीधो हो, वहाले वागमें जी, विस्तरीयो जसवास ॥ कुं० ॥ १ ॥ म

नमें मनमें हो, महोत्सव मांभ्यो अति घणो जी, ते जाणें जगदीश ॥ जुगति जुगति जोडी हो, मिली हेमज्युं जी, वाणी विशवा वीश ॥ कुं० ॥ ॥ २ ॥ माणिक माणिक जोडी हो, हेमनी मुद्दडी जी, बेहुनो नव्य संयोग ॥ संपद संपद मिलतां हो, होवे सोहिली जी, किहां माणस संयोग ॥ कुं० ॥ ३ ॥ विमल विमलबोध कहे, सुण सगी जी, आपद दुःख मन नाण ॥ वाधे डे वाधे डे पण, बीजें चन्द्रमा जी, आतले पंमित वाण ॥ कुं० ॥ ४ ॥ सुखी सुखी हो, आयां आपद नवि रहे जी, राहु मुखें जेम चंद ॥ धीरज धीरज खमजे हो, आपद उपनां जी, वायें न चले गिरिंद ॥ कुं० ॥ ५ ॥ आजथी आजथी होशे हो, एनी शुन्न दशा जी,आपद अलगी थाय ॥ प्रगट प्रगट होशे हो, पुण्य पाधरां जी, सब जनने सुखदाय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ उद्यम उद्यम बतावुं हो, नाल तुऊ फले जी, अनुपम डे उपाय ॥ निष्फल निष्फल न होवे हो, निश्चय जाणजो जी, परतो पूरण थाय ॥ कुं० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवचन पुरनो डे धणी, राजा अरिहंत नाम ॥ नाव शत्रु जित्या जिणें, अतुली बल अनिराम ॥ १ ॥ नुक्ति मुक्ति दाता सकल, अचिंत चिन्तामणि जोय ॥ कामकुंन सुरतरु घणा, ए सम अवर न कोय ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हां हां चन्द्रावती क्यां गइ ॥ ए देशी ॥ शोना साहेबनी घणी, मोपें कहीय न जायो रे ॥ स्थूलदृष्टि करि वर्णवुं, निश्चें अनुनव पायो रे ॥ शो० ॥ १ ॥ तीन डत्र शिर शोनतां, तीन नुवन ठकुराई रे ॥ तीन गढें करी राजतो, रत्न त्रय सुखदाई रे ॥ शो० ॥ २ ॥ सिंहासन उज्ज्वल नलुं, अशोक वृक्ष वलि होय रे ॥ नविजन ताप बुऊायवा, अद्भुत जलधर जोय रे ॥ शो० ॥ ३ ॥ मिथ्या तिमिर नसायवा, सूरज सम डे तेजो रे ॥ धर्मचक्र जसु आगलें, देव धरे धरि हेजो रे ॥ शो० ॥ ४ ॥ ईति नीति जाये सवे, जंवुक ज्युं सिंह सादें रे ॥ फूल फगर वरसा हुवे, वलि सुर दुंडुनिनादें रे ॥ शो० ॥ ५ ॥ जाति वैर मूकी करी, सुरनर नें तिर्यंचो रे ॥ पर्षदमें आवी मले, एवो डे जिहां संचो रे ॥ शो० ॥ ६ ॥ अचरिज मूल जे इन्द्र डे, कोसुरने नवि देखे रे ॥ ते सघला किंकर इहां, निरुपम एह

वशेखें रे ॥ शो० ॥ ७ ॥ अतिशय एहना अतिघणा, कहेतां नावे पारो रे ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, अनंत वध्यो विस्तारो रे ॥ शो० ॥ ८ ॥ जामाता जो एहने, सेवे स्थिरकरि चित्तो रे ॥ ससरें एवुं आखियुं, अनंत हुशे तुज वित्तो रे ॥ शो० ॥ ए ॥ एम सुणी निवृत्ति नारी, हरखी अतिहि उल्लासो रे ॥ मन संदेह विलय गयो, परम प्रतीत प्रकाशो रे ॥ शो० ॥ १० ॥ लइ आदेश उठी करी, पुत्रवधूनी संगें रे ॥ प्रवचनपुर पेसण जणी, निवृत्ति चली मन रंगें रे ॥ शो० ॥ ११ ॥ चित्रारो तारो पामीने, अधिक किरण जानु थाय रे ॥ विवेक तिसि परें देखियो, प्रमदा परणी आय रे ॥ शो० ॥ १२ ॥ नगर नजीक आव्या जिसें, पाखंमी मलिया यारो रे ॥ तब विवेक देखी करी, सुंदर रूप अपारो रे ॥ शो० ॥ १३ ॥ कपट निपट मुख केलवे, बगलानी पर तेहो रे ॥ बोलावे आडा फरी, वश करवा धरि नेहो रे ॥ शो० ॥ १४ ॥ मित्र सुणो इक वारता, बेसी शीतल छाया रे ॥ नगरी लोक गुमान छे, अम घर आवो सुहाया रे ॥ शो० ॥ १५ ॥ संकीर्ण पुरमें अछे, आ रुसनाइ जायगा रे ॥ खिजमत करसां में घणी, हैडे धरि मन रागा रे ॥ शो० ॥ १६ ॥ पुरनृपशुं पण थाहरे, इवडो केहो काजो रे ॥ उनारो नृपनो जलो, आसंग न करो ताजो रे ॥ शो० ॥ १७ ॥ वली ए राजा एहवो, टाढो शीलो होय रे ॥ काम न काढे केहनो, मुनिवर सो मुख जोय रे ॥ शो० ॥ १८ ॥ माया छोडावे मनथकी, प्रीत रीत नवि जाणे रे ॥ शत्रु मित्र सरखा गणे, आप रुखो एक ताणे रे ॥ शो० ॥ १ए ॥ स्वार्थमें पण एहनी, उदासीनता लाजे रे ॥ तुं प्राणी जोलो अछे, बाथ जरे कां आजें रे ॥ शो० ॥ २० ॥ लोकाचार न लेखवे, तोष रोष न जणावे रे ॥ पुरुष वेदन को नहिं, जेदन कोइ न पावे रे ॥ शो० ॥ २१ ॥ निंदा स्तुति बेऊ मली, इम पाखंमी कीधी रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांजलो, विवेकतणी मति सीधी रें ॥ शो० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंमी बोलिया, वीर विवेकने एम ॥ अम ठाकुरने सेवजे, मनवंछित लहे जेम ॥ १ ॥ पाले ताडे फिर करे, हरि हर ब्रह्मा देव ॥ जग सघलोही जुगतिशुं, अहनिश सारें सेव ॥ २ ॥ जीर करे जगतांतणी, अरि नाखे उथेड ॥ सेवक सखरा एहना, को न करे तसु छेड ॥ ३ ॥ तूठ्यां

प्रन्नुता दे सही,रूव्यां ले ज्ञ्जाल ॥ परतो अम देवातणो,आवी नजर नि
हाल ॥४॥ मोक्नणी जो चाह ठे,अलवे देशे एह ॥ शिव दे ठे जिन पण
सही, कष्ट त्यागशुं तेह ॥५॥ खातां पितां विलसतां, जो लान्नीजें मोक् ॥
निज मारग लाधां थकां, कोण ले विषमो दोष ॥६॥ जंगम स्थावर एहना,
सेवक सघला लोक ॥ कोई विरलो होश्सी, जिन रवि दर्शन कोक ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ श्रीचंद्र प्रन्नु प्राहूणा रे ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वदे इस्युं रे, उत्तर
आखुं सार रे ॥ सिंह तणी परें गाजियो रे, पर मत मान उतार रे ॥वी०
॥ १ ॥ मुजनें तुमें केम न्नोलवो रे, सरस्वतीने श्यो पार रे ॥ वचन तमा
रां बावलां रे, चंदन नहिं वंश कार रे ॥ वी० ॥ २ ॥ में मिथ्यामति तुम
तणी रे, जाणी ठे निर्धार रे ॥ धूवाडे करी जाणियें रे, पाप करो उपचार
रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ देवन्नणी थें ठलव्यो रे, उद्द्रित देव प्रकाश रे ॥ मोहतणा
थें मित्र ठो रे, तुमशुं केहो वास रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ देवानो जे देव ठे रे, श्री
वीतराग विशेष रे ॥ पाच ठते कोण काचने रे, हाथ ग्रहे कुण देख रे ॥
वी० ॥ ५ ॥ कंचन पीतल अंतरो रें, खजुअ सूरज जेम रे ॥ तृण तरुवर
नो अंतरो रे, देव कुदेवनो तेम रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ निष्कलंकी जिन देव ठें
रे, उज्ज्वल अनुपम एह रे ॥ दोष वशें करि दूषवो रे, पण ए गुणनो गे
ह रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ दृष्टिराग ठें दोहिलो रे, मूक्यो क्युंहि न जाय रे ॥ मो
हें घेलां माणसां रे, सूधो नावे दाय रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मूको मिथ्यावादनें
रे, गुण ऊपर करो राग रे ॥ शम दम संतरसी खरो रे ॥ कां ठोडो ते
माग रे ॥ वी० ॥ ए ॥ मदन नहिं मद लोन्नता रे, तृष्णा नहिंय तरंग रे ॥
विषय विकार इन्द्रियतणा रे, नहिं रामानो संग रे ॥ वी० ॥ १० ॥ मम
ता रमता रोपता रे, हास्य विलास न तास रे ॥ आशापाश न वासना रे,
एहवा गुण प्रकाश रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ देव न्नलो दिलमां धरो रे, न्नूलो न्नूं
फे न्नमें रे ॥ श्रीवीतराग विना नहिं रे, दाता शिव सुर शर्म रे ॥वी०॥१२॥
संसारी सुख कारणें रे, लीजें वस्तु जिकाय रे ॥ तास परीक्षा सहु करे रे,
एहनी क्युं नवि थाय रे ॥वी०॥१३॥ तत्त्वपरीक्षा जोग ठे रे, मानुष मोटी
जात रे ॥ ते लही परमादें करी रे, न धरे न्नांति उन्नांत रे ॥ वी० ॥ १४ ॥
ते पशु नर रूपें करी रे, शृंग नहिं पुछ कोय रे ॥ न्नूला न्नवअटवीविषे रे,

नूला मृग सम जोय रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ देव तमारा देखिया रे, रागी सा गी एह रे ॥ वामा कामी मोहिया रे, निपट विटंब अछेह रे ॥वी०॥१६॥ मुक्ति हुवा कां अवतरे रे, दैत्य निपाया कांय रे ॥ खेले कां संत होइने रे, मायाशुं मनसाय रे ॥ वी० ॥ १७ ॥ शस्त्र धरे माला धरे रे, नार धरे अंगमांही रे ॥ वाहन बेसी चालतां रे, ए देव शोभा नाहीं रे॥वी०॥१८॥ जगन उपायो तिण समे रे, व्याधि जरा दुःख रोग रें॥नीपाया कां जाणि ने रे, भगवंताने क्रम जोग रे ॥ वी० ॥ १९ ॥ आत्म दिश व्योम काज जे रे, वस्तु अखंडित एह रे ॥ कुण उपजावे एहने रे, आदि न लाभे छेह रे ॥ वी० ॥ २० ॥ मुख्य आत्म द्रव्य आखियां रे, ज्ञान ते सकल स्वरूप रे ॥ एह विना थें जाणजो रे, सघलो छे अंधकूप रे ॥ वी० ॥२१ ॥ सकल पदारथ शाश्वता रे, द्रव्य गुणें करि होय रे ॥ परजाय फिरता रहे रे, एह स्वभाव तुं जोय रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ राजस तामस सत्त्व जे रे, एह उपाधि संसार रे ॥ ज्ञानादिक गुणें शोभतो रे, देव तिको निर्धार रे ॥ वी०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंडी बोलिया, सुण विवेक वर वीड ॥ कर्मभोगमें पण कहां, ते शिव हाथें हीर ॥ १ ॥ जिण जेवो क्रम आचर्यो, तेहवुं फल दे ईश ॥ एह वचन सुणि तिण समे, विवेक वदे मन हींस ॥२॥ कर्मानुसारी तुमत णो, देव हुउ निर्धार ॥ तो क्युं थें कर्मा भणी, नवि मानो सविचार ॥ ३ ॥ कर्मवशें जगजीवडा, सुख दुःख लाभे जोय ॥ पण परमेश्वर केहने, भलो बुरो नहिं होय ॥ ४ ॥ थें आखो जिन देव ए,रूसे तूसे नाहिं ॥ एह वात साची सही, पण अचरिज इणमांहि ॥५॥ भक्त तिके सहजें लहे, अनुपम लील विलास ॥ भक्त नहिं जे जिन तणा, ते लहे बंधन पास ॥ ६ ॥ ऋतु वसंत छाया लहे, तरुवर नवलां पान ॥ वली वारद वूठे थके, सघले वाधें वान ॥ ७ ॥ इणे दृष्टांतें सुख लहे, जिनवर सेवे जेह ॥ सहेजें समियो ला भिने, शिव पण पामे तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ विवेक कहे वली सांभलो, तु मचा देव छे एह रे ॥ पाले ताडे लोकने, शूरा सखरा एह रे ॥ वि०॥१॥ ए गुण देखी रंजिया, तो जग जींत्या राय रे ॥ देव कहे सघला सही, शु

क्ति मुक्तिना दाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ गोपी वहाली जेहने, तेनें कीधो देव रे ॥ मूढमतें एम वर्णवो, मुक्ति दासी करे सेव रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ कोप शाप देवे घणा, अर्धांग राखे नार रे ॥ नाटक हास्य विलासियो, क्युं ते देव विचार रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ पूजा शोभा देखिने, हर्ष धरे मनमांहि रे ॥ खावे पीवे खुश करे, देवपणुं ते नांहीं रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ लोक घणे सेवक भये, तो ते देव न थाय रे ॥ मोहतणा सेवक घणा, देंव करो मन लाय रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारी करणी करे,मग्न रहे मनमांहि रे ॥ देव म जाणो तें हनें, मृगतृष्णाजल नाहीं रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ देव निरंजन ध्याइयें, ध्यान धरी शुद्ध होय रे ॥ अंतर आंख उघाडीने, भात भली परें जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ साचुं रूप जाण्या विना, भूले बे संसार रें ॥ पण परमार्थें प्रीछजो, सीप ए रूपुं सार रे ॥ वि० ॥ ए ॥ साचो देव लही करी, भूगे नावे दाय रे ॥ क्षीरसमुद्र लही करी, खारे जल कोण न्हाय रे ॥ वि० ॥ १० ॥ म्हारुं नाम विवेक बे, समजावुं सब लोय रे ॥ ऊवेरी जाणे आंतरो,काच मणिमें होय रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ २०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण वचनें पारखंभीने,जीपि नगरमें आय ॥ माता मुनिशाला रही, सुत पुर देखे जाय ॥ १ ॥ तिण अवसर हवे निवृत्तिनो, मनमंत्री पियु सार ॥ बहु विरहो न खमी शक्यो, आयो मिलण विचार ॥ २ ॥ पियु बोल्यो सुण हे प्रिया, तुं शुभ नारी होय ॥ मुऊ वचनें तुं नीसरी, रोष न आण्यो कोय ॥ ३ ॥ तुं सत्यवंती साधवी, सूधी सखरी नार ॥ तब में प्रवृत्ति वशें करी,दीधी चित्त उतार ॥ ४ ॥ इक दिन तुऊ गुण सांभख्या, तिणे मिलवाने आय ॥ तुऊ सुत वीसरतो न बे, गुणवंत आवे दाय ॥५॥ तुऊ सुत परण्यो तिणे समे, हुं पण बानो तेथ ॥ गुप्तपणे आव्यो हतो, विमलबोध बे जेथ ॥ ६ ॥ वारु वीर विवेक ए, परणी तत्त्वरुचि नार ॥ करशे काम जिको हवे, तिहां आवीश संभार ॥ ७ ॥ दोष न आण्यो पाबलो, पियुशुं हिलमिल होय ॥ सोवन भागोही मिले, पब्बर न मिले कोय ॥ ८ ॥ एह वचन श्रवणें सुणी, कुलवंतीने कोश ॥ पगशुं पाठा ठेलियें, तोही न आणे रोष ॥ ए ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ इक दिन माता सुत नणी, शीख कहे मन लाय रे॥ सुत सुण सोन्नागी ॥ तुं म्हाह्यो शाणो अछे,मात नणी सुखदाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हित वाणी पाणी नणी, राखण तुं छे जोग रे ॥ सु० ॥ पक्कघडो काचो नहिं, साचो सखर संयोग रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हितवाणी कामधेनु छे, सतपुत्रकाने आय रे ॥ सु० ॥ डुष्ट कुसुत मातं गने, घरमां कहो क्युं जाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सघलांने रुचती नथी, गुरु जन वाणी एह रें ॥ सु० ॥ अमृतथी अधिकी अछे,जाणे स्वादी जेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ शुन्न उपदेश विना फिरे, नर नारी जगमांहि रे॥ सु०॥ लाव ण्य लक्कण बाहिरा, ज्ञान हैये जसु नांहीं रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मात वाणी जाणे सही, अमृत धारा मेह रे ॥ सु० ॥ उखर क्षेत्रतणी परें, मत देखा डे छेह रे॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रवृत्ति शोक्य शमवा नणी, कीजें कोइ उपाय रे ॥ सु० ॥ एह अवस्था तिणे करी, जमवारो क्युं जाय रे॥ सु० ॥ ७ ॥ पियु वियोग स्थान नृंशता, सुबुद्धि तणो नहिं योग रे॥ सु० ॥ ए डुःख सघलां नवि गणुं, शुन्नपुत्रने संयोग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ धन नरिया नंमार जे, खातां खूटी जाय रे ॥ सु० ॥ अक्कयनिधि पुत्र संपदा, संसारीने था य रे॥ सु० ॥ ए ॥ माता सदाइ पुत्रनी, आशा राखे नूर रे ॥ सु० ॥ ते तुऊ पुत्र रतन्नथी, क्युं मन न रहे सनूंर रे॥ सु० ॥ १० ॥ सुकरी रास नीने घणा, पुत्र हुवा शी सिद्ध रे ॥ सु० ॥ सिंहिणी एको सुत जणे, स घलोई सुख दीध रें ॥ सु० ॥ ११ ॥ कुलमंदिर दीपक सही, कुलजामि नी चंद रे॥ सु० ॥ कुलगाडी धुर धवल छे, सुपुत सदा सुखकंद रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ तमरूप वैरी वश करे, मील कमल उल्लास रे ॥ सु० ॥ सुपुत्र सू रज उगे थके, शोन्नावे घरवास रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ हवे तुं ए नगरीनो ध णी, सेव निरंजन देव रे॥सु० ॥ जास प्रसाद लह्यां थकां,सकल करे तुऊ सेव रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ मोह महीपति जीपतां, ऊपर करसी एह रे ॥सु० ॥ सेवक पण एहना अछे, मोह दावानल मेह रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ उलग करजे एहनी, आठ पहोर अप्रमत्त रे ॥ सु० ॥ साचो ऊतरजे सही, सा च नलो जग मित्त रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ न रुचे कूड ए स्वामीने, कांई ति ल तुष मात रे ॥ सु० ॥ सेवा प्रमादने वेर छे, गाय अने वाघ जात रे ॥

॥ सु० ॥ १७ ॥ लक्षण ए ते स्वामीनां, सेवक चूका जाए रे ॥ सु० ॥
मादने वश हुइ रह्या, मोहें लीधा ताए रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ तेन्नणी प्रम
बोडीने, खीजमत करजे खास रे ॥ सु० ॥ प्रस्तावें सघली करे,
पणी जे अरदास रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ शीख इसी माता तणी, शीश चढ
तेण रे ॥ सु० ॥ धर्ममंदिर कहे हवें सुणो, विवेक वदे हरखेण रे ॥सु०॥२

॥ दोहा ॥

॥ पय प्रणमीनें बोलियो, मीग वचन विचार ॥ नर पशु पंखीमें
ही, मात हुवे सुखकार ॥ १ ॥ पण साची माता तिका, आखे शीख सु
न ॥ हेमकोडि हितकारिणी, नहिं ते शीख समान ॥ २ ॥ मानी बे शी
ते सही, मातु जे जे दीध ॥ सुधाकुंन्नमां नाइयें, कामगवी पय पीध
॥ ३ ॥ नंदन वन निरख्यो कियो, बावन चंदन लेप ॥ इणि परें सुख मुग
थयुं, सुणि तुम वचन अपेख ॥४॥ माता वचन उथापशे, सो सत पुत्र
होय ॥ सुख नापे माता नणी, व्याधि रूप ते जोय ॥५॥ इम माता हा
करी, ऊठ्यो कुंवर तिवार ॥ माता हाथ माथे धरी, जाये राजडुवार ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रामचंद्के बाग, चांपो मोरि रह्यो री ॥ ए देशी ॥ परखदा आत
न्नाव, मांहि विराज रह्यो री ॥ श्रीजगनाथ नरेंड्, निरखी हर्ष गह्यो
॥ १ ॥ बत्र ढले सिरदार, सिंहासन पर राजे ॥ धर्म धनुष धरि हाथ,
णी खड्ग ते बाजें ॥ २ ॥ तवना बे कर जोड, पय प्रणमी ने करे री
तीन नुवननो नाथ, अनुपम शोन्न धरे री ॥ ३ ॥ अष्टांग योगना धार,
ग जोग न्नले री ॥ हृदय कमल तुऊ धार, ध्येयशुं जाय मिले री ॥ ४
॥ श्लोक ॥ अष्टांगयोगाः ॥ संयमो नियमश्चैव, करणं च तृतीयकम् ॥ प्राण
यामः प्रत्याहारः, समाधिर्धारिणा तथा ॥ १ ॥ ध्यानं चैतस्य योगस्य, इ
मष्टांगकं बुधैः ॥ पूर्णांगक्रियमाणस्तु, शुक्रमे स्यादशोचता ॥ २ ॥ सुर नर
मरा नूर, सेवे पाय सदा री ॥ तुऊ पयपंकज सार, मनमें अधि
मुदा री ॥ ५ ॥ ज्योतिरूप जगनाथ, केवलरूप नयो री ॥ स्याद्वादी
खरूप, नूप अनूप नयो री ॥ ६ ॥ न्नाव कर्म मल बोडी, आपें रूप विरा
जे ॥ तो सम अवर न कोय, दिन दिन अधिक दिवाजे ॥ ७ ॥ नव नव
न्नमतां आज, दर्शन तुमचो दीगे ॥ आज अधिकआनंद, लोचन अमिय

इहो ॥ ८ ॥ सुरतरु सम तुं राय, बीजा नृप करीरा ॥ तुं जातिनो हेम, अवर ते धातु कथीरा ॥९॥ शम दम सघला भाव, आनंद अधिक घणा री ॥ तम सेव्यां लहे लोक, नहिं कांइ रिद्धि मणा री ॥ १०॥ रविथी नासे घूक, मोरथी नासे भुजंगा ॥ तेम तुझ आणथी दोष, न करे को परसंगा ॥११॥ जंगम स्थावर जीव, तुं सघलां सुखदाइ ॥ मित्र अमित्र समान, ए तुममें अधिकाइ ॥ १२ ॥ तुम गुण केरो पार, कहेतां क्युंहि नावे ॥ पण आपणी मति सार, सेवक भाव जणावे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम स्तवना जिन राजनी, कीनी बे कर जोड ॥ वली पंचांगें पय नमे, मन मद मछर छोड ॥१॥ कृपा कटाक्षें जोइने, इम बोल्या जिनराज ॥ परखद बारां सांभलो, धरि चित्तमांहि समाज ॥२॥ वीर विवेक कहीजियें, तें छे एह कुमार ॥ भांतो भांत भली परें, तत्त्व बुद्धि भंमार ॥ ३ ॥ नायक विना सेना किसी, ज्ञान विना ज्युं वाणि ॥ जल विण सरवर को नहिं, गुण विण लाल कबाण ॥४॥ धर्म कर्म तिम ए विना, सखरो नावे धात ॥ भली बूरी सब भावनी, तुरत लखे ए वात ॥ ५ ॥ विकलेन्द्रियमां ए नहीं, पशु नरकमें नांहि ॥ प्रायः नरमां ए वसे, वली आरज कुलमांहि ॥६॥ त्यां पण को विरला कने, पूरण लाभे एह ॥ छीप घणी सघली नहिं, मोती धारे जेह ॥७॥ अहंकार इणमें नहिं, कृपणभाव नहिं कोय ॥ मीठा बोले मुख हसे, धर्मवंत वलि होय ॥ ८ ॥ लाजवंत मतिवंत ए, पर दोष ढंकणहार ॥ सुखमांहे मूंके नहिं, दीन हीन दुःख चार ॥९॥ विण उपकारें उपकरे, निर्मल गंग तरंग ॥ मुझने ते होय वालहो, जे करे एहनो संग ॥१०॥ मुझ पें आयो ए सही, अधिकार लेवा काज ॥ ते भणी एहने में कियो, इण पुरनो शेठराज ॥ ११ ॥ एह वचन नृपनुं सुणी, सघले कीध प्रमाण ॥ नगरमांहि वासो दियो, कुंवर लहे बहु मान ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ इक दिन अरदासा रे, करे कुंवर प्रकाशा रे, मोह जीपण आशा वासा, आणीयें रे ॥ साहिब जिन राजा रे, अति सबल दिवाजा रे, फिर वेरी हुवा छे ताजा, जाणीयें रे ॥ १ ॥ मन मछरालो रे, दुःख खेतनो मालो रे, अति पापनो जालो आलो, मोह छे रे

॥ अविद्या गढ कीधो रे, निज वंछित सीधो रे, जाणे जल ज्युं पीधो, वड ए मोह छे रे ॥ १ ॥ हाथी जला घोडा रे, वली मानव जोडा रे, बहु राख्या छे होडा, होडी तुम तणी रे ॥ सघलो जग जीत्यो रे, हूउ छे वदीतो रे, वैरी अनीतो छीतो, सहु जणी रे ॥ ३ ॥ मोहराजा जोरें रे, आज स खरो तोरे रे, कहे हरि आवे कोरें, एहने रे ॥ तपसी तप चूके रे, मोह पासें ढूके रे, धर्म सघलो ते लूंटे, जोरे तेहने रे ॥ ४ ॥ कुलवंत कहीजें रे, आचारे छीजें रे, मोहें करी जींजे, रीजे रागमां रे ॥ देव दानव नागा रे, इण आगें जागा रे, पूग वली नावे सरगा, मागमें रे ॥ ५ ॥ वेद मंत्रना पाग रे, तो पण जाये नाग रे, इण मोहना काग जाग, कुण सहे रे ॥ पशु पंखी जीत्या रे, जस खाटे वदीता रे,बहु काल व्यतीता, अंत न को लहे रे ॥ ६ ॥ तुम सेवक जांख्या रे, तो पण मोह राख्या रे, कोइ जोर न चाले पाले, को नहिं रे ॥ अतुली बल दीसे रे, पाप विशवा वीशे रे, सघलानां मन हींसे, छे सही रे ॥ ७ ॥ तमचो मुख जोइ रे, हरखे सब कोइ रे, पर पूठें न होइ, हमणां छे जिस्या रे ॥ मोह राय अलेखे रे, जग सघलो पेखे रे, जाणो विशेषें, हमणां ए दशा रे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली विवेक वांचे घणा, मोहतणा अवदात ॥ जगगुरु तुं सब जाए छे, तो पण सुणजो वात ॥ १ ॥ जीव हणावे लोकपें, कूठ शीखावे जोर ॥ वाट पडावे धन हरे, परदारक अति घोर ॥ २ ॥ छल बल साधे अति घणा, जोडे धननी राश ॥ लोलुप लोजी लंपटी, व्यसन न मूके पास ॥ ३ ॥ शीखावे सघला जणा, पापतणी बहु वात ॥ संतति सखरी होयसी, गरवतणो करो घात ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ वेगवती तिहां बांजणी ॥ ए देशी ॥ मोहतणो महिमा सुणी, जवि जन आतम जावो रे ॥ उदय अधिक आवे छते, वाधे मोहनो दावो रे ॥ मो० ॥ १ ॥ पूजावे पीपलजणी, देवरावे दवदारो रे ॥ पावस पात्रने पोपियें,ए ए मोह विकारो रे ॥ मो० ॥ २ ॥ लाख पीपी फल जेहनां, कृमि कीटकनोगेहो रे ॥ पीपल पीतरा उहरे, ए ए मोह अछेहो रे ॥मो०॥३॥ पूजावे निर्जीवनें, नागतणे आकारो रे ॥ सापतणी हिंसा करे, ए ए मोह

विकारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ शत्रु वडो संसारमां, पावक पाप निधानो रे ॥ पूजीजें पुण्य कारणें,ए ए मोह विधानो रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ आरंभ अधिका जेहथी, वाधे भवजल पूरो रे ॥ कन्यादान कहीजियो, ए ए मोह अंकूरो रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाहिर शुचि जलथी हुवे, तिहां माने धर्मभावो रे ॥ तीर्थंकरजी न आदरे, ए ए मोह सभावो रे ॥मो०॥७॥ माखी मधु दानें दिये, होमे धान्य अपारो रे ॥ धर्म बुद्धि तिणशुं धरे, एए मोह प्रकारो रे ॥मो० ॥ ८ ॥ पति मूकी पर पुरुषने,सेवे साहमी शुद्धि रे ॥ एकाकार करी मली, ए ए मोह कुबुद्धि रे ॥ मो० ॥ ए ॥ सुरभि मुख पुछें कहे,बहु देवोनो वासो रे ॥ शुद्ध कहे मल मूत्रनें, ए ए मोह विलासो रे ॥मो० ॥ १० ॥ संसारी देवां कने, मागे मोक्ष गमारो रे ॥ गेहीने गुरु करि गणे,ए ए मोह विकारो रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ गेही धर्म महोटो सही, जसु आश्रय सब कोयो रे ॥ इम बोले जगमां घणा, मोहें मोह्या लोयो रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ सोनानी सुरभि करी, मंत्र भणी विप्र लेह रे ॥ भाग करी वहेंची लिये, ए पण मोहना गेह रे ॥ मो० ॥ १३ ॥ कर्षणी कहे अम भपरा, धर्मी केहा होय रे ॥ पशु पंखी नर कण ग्रहे, अमथें मोह ए जोय रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ वेद पुराणें पालियो, वली मार्कंम पुराणो रे ॥ निशिभोजन करवुं नहिं, समजो चतुर सुजाणो रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सूरज किरणें फरसियो, गंगारो पण पाणी रे ॥ पीवा योग्य पावन अछे, निशि नवि पीवे धीरो रे ॥ मो० ॥ १६ ॥ एह वचन निज ग्रंथरो, माने नहिय लगारो रे ॥ रसना लोभी हुइ रह्या, ए ए मोहविकारो रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ अवर घरे बेगे पिता, पिंम लहे नहिं भोरा रे ॥ मूढमति मूंफी रह्या, ए ए मोहना दोरा रे ॥ मो० ॥१८॥ तो परभव पहोतो पिता, निज घर बेगे पुत्रो रे ॥ पिंम दियो पहोंचे नहिं, परतिख देख पवित्रो रे ॥ मो० ॥ १ए ॥ परणावे वृद्धा भणी, चेतननी परें जाणी रे ॥ ग्रंथ रचे व्यभिचारना, ए ए मोहनी खाणी रे ॥ मो० ॥ २० ॥ चेतननें माने नहिं,शून्य गिणे संसारो रे॥ क्षणिकवाद केई धरे, मोहतणा विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ काननमां मृगलां रहे, सूकां तृण आहारो रे ॥ ते मृग मारे मानवी, एए मोह प्रकारो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥ मोह सोह बाधा घणी, राज्य वध्यो अति जोरो रे ॥ तमची आणा मानें नहिं, बल बलि कोइ फोरो रे ॥ मो० ॥ २३ ॥ ती

न लोक नायक तमें, मोह ईश पणएमो रे ॥ एक मियानमांहे कदा, ख ङ्ग रहे बे केमो रे ॥ मो० ॥ २४ ॥ तम सेवकपें लीजीयें, भेट भली सो वारो रे ॥ जोरो तोरो जावतो, जाग जितरो विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २५ ॥ वैराजो ए हुइ रह्यो, साहिब गरिबनिवाजो रे ॥ धर्ममंदिक कहे ते सुणो, जे बोल्या जिनराजो रे ॥ मो० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वत्स स्वछ मति ताहरी, तुं विवेक वड वीर ॥ उपकारें ए वीनति, भविकतणी करे भीर ॥ १ ॥ हुं ज्ञानें देखूं अछुं, सघलीही ए वात ॥ कर्म उदय अधिको अछे, तिण नहिं बणती घात ॥ २ ॥ धीर वीर पुरुषें घणो, वध कीधो बहु वार ॥ पण ए फिर फिर पालवे, अनंतकाय अनुहार ॥३॥ महोटो खल ए मोह छे, महोटो रिपु ए जाण ॥ विषम व्याधि वारु नहिं, विष भरियुं ए वाहाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ क्षण लाखेणो रे जाय ॥ फूलडानी देशी ॥ मोहवशें वली मानवी रे, माताशुं करे प्रेम ॥ मदमाती ने कामिनी रे,उलटी चाले एम ॥ विवेकी,धिक् धिक् मोह विकार ॥ संसारी प्राणी भणी रे, भव जल एह अवतार ॥ वि० ॥ १ ॥ पति परदेशें पूछलें रे, पर नरशुं रमे रंग ॥ गर्भ तजे मलनी परें रे, न करे करुणा संग ॥ वि० ॥ २ ॥ जनकतणो वली जोयजो रे, सुतशुं प्रेम उदार ॥ धन प्रछुता लुब्धोथको रे, घात करे अविचार ॥ वि० ॥ ३ ॥ मात पिता मूके सही रे, भाइ बेहेन सगीन ॥ प्राण तजे प्रेमें करी रे, वनिता वचन आधीन ॥ वि० ॥४॥ देश फरे गिरि शिर चढे रे, लंघे न दीय नवाण ॥ जे कामणने कारणें रे, ते पण न करे काण ॥ वि० ॥५॥ प्रेम घणो सुतशुं धरे रे, माता वलिय विशेष ॥ धोवे मल मूत्र धूरथकी रे, विरचे नव नव वेष ॥ वि० ॥ ६ ॥ परणावे प्रेमें करी रे, सुंदरि सुंदर देख ॥ यौवन मदमातोथको रे, न धरे वचननी रेख ॥ वि० ॥ ७ ॥ धरती धन लोभीथकां रे, धंध करे मिलि भाय ॥ कथन कोइ माने नहिं रे, चाले आपणी दाय ॥ वि० ॥ ८ ॥ काया कंचन सारिखी रे, उपरथी देखाय ॥ शारद संध्यावान ज्युं रे, क्षणमें खेरू थाय ॥ वि० ॥ ए ॥ माया छाया सारिखी रे. घन धन मेले रे जेह ॥ स्थिरता ते रहेशे नहिं रे, तडके

लागे त्रेह ॥ वि० ॥ १० ॥ आश्रव अधिका मेलिया रे, नव नव बंधन थाय ॥ काम क्रोध लहरी वधे रे, ज्युं जल पवन पसाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ मात पितादिक एहवा रे, सघला सखायी न होय ॥ पण संसारी प्राणिया रे, प्रायें एहवा जोय ॥ वि० ॥ १२ ॥ ज्युं बीली बिलमें अछे रे, सापां केरो वास ॥ पण आशंका आणियें रे, इम समदिठि उदास ॥ वि० ॥ १३ ॥ सागर तरतां सोहिलो रे, दव उलायो रे जाय ॥ सुर सान्निध्य गिरिनें खणे रे, पण वश मोह न थाय ॥ वि० ॥ १४ ॥ नूख्यो राक्षस राखियो रे, तीखे शत्रु सहाय ॥ मीण दांत लोह चावियो रें, पण ए विषम कहाय ॥ वि० ॥ १५ ॥ सेवक पण जे मोहना रे, स्वामी सरिखा रे तेह ॥ कण कण कीधा फिर मले रे, पारद नारकी जेम ॥ वि० ॥ १६ ॥ अनादि अनंत पण ए सही रे, अनादि सांत पण एह ॥ सादि सान्त पण जे अछे रे, तुमची संगति जेह ॥ वि० ॥ १७ ॥ मोह एह बहु रूपियो रे, सेवक पण बहु रूप ॥ एकाकी प्राणी नणी रे, लागी रह्या वदे नूप ॥ वि० ॥ १८ ॥ तुऊ बेलीथी एहना रे, बेली अनंत अपार ॥ क्युं जीपाये वेगशुं रे, तुंहिज आप विचार ॥ वि० ॥ १९ ॥ नूप करी हमणां ते नणी रे, अवसर समयो देख ॥ शिव साधे समवायशुं रे, ए स्याद्वाद विशेष ॥ वि० ॥ २० ॥ मोहवशें होवे जिणे रे, तेह अछे प्रतिकार ॥ ते पण कहिशुं तो नणी री, सुण एक अपर विचार ॥ वि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक तणे अंते अछे, उंची अनुपम सार ॥ सिद्धपुरी नामें नली, सघलामां सिरदार ॥ १ ॥ नव्यजणी जे योग्य छे, पण करे विरलो वास ॥ हेम संग लाने नहिं, सघली माणिक राश ॥२॥ जन्म जरानुं डुःख नहीं, आपद गर्न न वास ॥ धन मन बंधन को नहीं, आतम सहज विलास ॥ ३ ॥ आधि व्याधि बाधा नहिं, शीत रीत नहिं कांय ॥ नूप धूप रूप रंगशा, विरस फरस नहिं थाय ॥ ४ ॥ केवल केवल ज्ञानमां, परनो नहिं प्रसंग ॥ ज्ञान सुधा करि धापिया, परम उल्लास उतंग ॥ ५ ॥ ते पुरनी इछा करी, यत्न करे बहु लोय ॥ पण फिर मोहतणी पुरी, पामे प्रापत सोय ॥ ६ ॥ शिवपुर मग जाणे नहिं, जूठो मारग चाल ॥ मुग्ध मीन ज्युं मानवी, फसी रहे जग जाल ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया वैराग्य तिम, मारग सू

धो जेह ॥ सर्द्दहणा साची नहिं, न्रामक न्नावे तेह ॥ ० ॥ निकट मुक्ति ढे जेहने, ते पण मोह ढलाय ॥ सागर कंठें पण रह्यो, पोत चलावे वाय ॥ ए ॥ मोहथकी बीये घणुं, शिवपुर जावणहार ॥ बोलावीने तेहने, क रजे हर्ष अपार ॥१०॥ तूं साथें हूआं थकां, नय नहिं तेहने कोय ॥ गरुड पंखीथी नासही, न्नुजंग जाति जे होय ॥ ११ ॥ पहेलां पण शिव पुर तणो, मारग वह्यो एम ॥ इणिपरें राजा आखियो, तहत्ति कियो सब तेम॥१२॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ वधावानी देशी ॥ वधावो हे वीर विवेकने, जगनाथें हे आपणो जाणी दास के ॥ पुण्यरंग पाटण आवियो, राज्य दीधुं हे मानुं न्नानु उल्लास के ॥ व० ॥ १ ॥ सेवक सखरा आपिया, साथ पूरो हे शूरो सुगुण सनूर के ॥ साहिब हुकम कियो वली, तुज ससरो हे विमलबोध पमूर के ॥ व० ॥ २ ॥ तेहने निजपुरनी धरे, कोटवाली हे दीजें सुखकार के ॥ वनपालकता मूकशे, मुज वचनें हे न्यायें सुविचार के ॥ व० ॥ ३ ॥ आदेश लेई तिहांथकी, वीर आयो हे निजपुरने गाम के ॥ धर्म ध्यान ध्वज आगलें, सुख आगें हे आगें करि अन्निराम के ॥ व० ॥ ४ ॥ माता मन आनंदशुं, वलि वनिता हे वनिता लीधी साथ के ॥ प्रेमनिधान प्रतीतनी, घरमांहे हे मांहे प्रथम ए आथ के ॥ व० ॥ ५ ॥ जय जय शब्द हुवे घणा, गुण गावे हे न्नावें गुणि जन सार के ॥ पुण्यरंग पाटणराजियो, सिद्ध विद्या हे विद्याधर ज्युं तार के ॥ व० ॥ ६ ॥ वाजित्र गुरु उपदेशनां, अति वाज्यां हे गाज्यां गुहिर गंन्नीर के ॥ आमंबर अधिको करी, पुर पेठो हे साथें वडवीर के ॥ व० ॥ ७ ॥ महोटा महाजन आविया, राज मुजरो हे कीधो उदार के ॥ आनंद अधिक हुआ घणा, पुरमांहे हे वरत्यो जय जयकार के ॥व० ॥०॥ कोटवाल ससरो कियो, प्रन्नुवाणी हे जाणी कीध प्रमाण के ॥ ढंढेरो करुणा तणो, पुर फेरयो हे फेरयो वीरनी आण के॥ व० ॥ ए ॥ दूर कीया पापी नरा, पुण्य धारी हे सारी नगरनो वास के ॥ डुष्ट डुर्दांत जन काढिया, राख्यो नहिं हे तिहां ढलनो पास के ॥ व० ॥ १० ॥ राज्य न्नलो हवे न्नोगवे, शिव मारग हे मागेनुं सुख तेह के॥ न्नोलावे न्नवि साथने, नववारें हे सारे सुख गुणगेह के ॥ व० ॥ ११ ॥ माताने सुखणी करी, जसु सीखे हे हुआ नवेय निधान के ॥ मन मंत्री पण वेगशुं, आवे जावे हे प्रम

दा प्रेम निधान के ॥ व० ॥ १२ ॥ अचरिज धरतो मंत्रवी, सुत देखी हे पेखी हर्ष अपार के ॥ लाज रहे सुत पुत्रथी, नवि निंदा हे नानोही नरसार के ॥ व० ॥ १३ ॥ वीर विवेक वाध्यो घणुं, सुख पायो हे श्रीजिनचंद पसाय के ॥ त्रीजो खंम पूरो थयो, ए सुणतां हे नविजन आवे दाय के ॥ व० ॥ १४ ॥ दयाकुशल पाठकवरु, तसु शिष्य हे धर्ममंदिर गणिसार के ॥ ए संबंध कियो नलो, सुखदायी हे श्री संघने जयकार के ॥ व० ॥ १५ ॥ इति श्री प्रबोधचिन्तामणौ ढाल नाषा प्रबंधे पंमित धर्ममंदिरगणिविरचिते मोहराजविवेकपाणिग्रहणप्राज्य राज्यप्राप्तिवर्णननामा तृतीयःखंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरु चरण प्रसादथी, लहियें लील विलास ॥ मंगल माला संपजे, दिन दिन अधिक उल्लास ॥ १ ॥ तिण प्रस्तावें मोह हवे, नगरी अविद्यामांही ॥ चार्वाक मित्र नणी कहे, इक दिन वात उछांही ॥ २ ॥ आजसमे मो उपरें, द्वेष धरे नहिं कोय ॥ एक विवेक विना सहु, परम मित्र जग होय ॥ ३ ॥ पहेले पण छल बल करी, मुजने जीत्यो एण ॥ ते वेला मुफ संनरे, नीति रहे छे तेण ॥ ४ ॥ चार्वाक तव बोलियो, मोहराय सुण सिंह ॥ शाल कंगाल विवेक छे, तिणसुं केहो बीह ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वेगें पधारो हो महेलथी ॥ ए देशी ॥ मछराजो मोह बोलियो,चारवाक सुण मित्र ॥ नेद न जाणे तुं एहनो, छानी बुरी ए शत्र ॥म०॥१॥ मनमंत्री मूरख थयो, जीवतो मूक्यो एह ॥ में पण न कह्युं मंत्रीने, केद करी धरो एह ॥म०॥ २ ॥ इण द्वेषी जीवता छतां, क्युं सुख पामे जीव ॥ एको रोगज अंगमां, उन्माद रहे जस जीव ॥ म० ॥ ३ ॥ विरुद्ध वैरी जागतां, निश्चिंत सुए जे राय ॥ बंध हुई ते जाणजो, नीतिवचन कहेवाय ॥ म० ॥ ४ ॥ नानो वैरी न जाणियें, विश्वास न धरो तास ॥ मनमें वलगी कीटिका, हाथीनो करे नाश ॥ म० ॥ ५ ॥ अवगुणियें नहिं रिपु गुणी, नानो सो पण जेह ॥ वृक्ष अंकूर उग्यो थको, प्रासाद पाडे तेह ॥ म० ॥ ६ ॥

दुःख पाम्यो नानो थयो, पर हथ हूउं जोय ॥ हलाहल विष तिल समुं, दुःखदायी क्युं न होय ॥ म० ॥ ७ ॥ कबइक फिरतां जायसी, प्रवचन पुरमां वास ॥ तो हाथे आवे नहिं, जिम सिंह गिरिमां निवास ॥ म० ॥ ८ ॥ राजनीति मांहे कह्युं, वैरी निज वश राख ॥ परवाणी कानें सुणी, दैत्य समोवड नाख ॥ म० ॥ ए ॥ खरी खबर लीधा विना, साल समान ए थाय ॥ खबर नणी चर मूकियें, ए मुफ आवे दाय ॥ म० ॥ १० ॥ मित्र कहे वारु अबे, साहिब एह विचार ॥ तुरत तेडाव्या तिणे क्षणे, आखे सकल प्रकार ॥ म० ॥ ११ ॥ पाखंमादिक दंन वली, सखरा सेवक जेह ॥ शीख कहे नृप तेहने, काम करो ससनेह ॥ म० ॥ १२ ॥ पुत्र सहित निवृत्ति वधू, किहां नाठी किण गाम ॥ जग सघलो ढूंढी करी, खबर करो अनिराम ॥ म० ॥ १३ ॥ स्वामी वचन शीशें धरी, सेवक चाल्या ताम ॥ शूरवीर साहसिकधरु, स्वामीतणुं करे काम ॥ म० ॥ १४ ॥ गाम गाम पुर ते फरे, वन वन तरु तरु तेह ॥ वानरनी परें जोवतां, स्वामी धर्म सस्नेह ॥ म० ॥ १५ ॥ यत्न करी जूवे घणुं, पण को न कहे वात ॥ पग पग पूछ्या अति घणा, न पडी शुद्ध तिल मात ॥ म० ॥ १६ ॥ फरतां दूर देशांतरें, पुण्यरंगपाटण जाय ॥ वात सकल तिहांकिण लही, पण पुरमां न जवाय ॥ म० ॥ १७ ॥ ढाना बाहार बूपी रह्या, को तरुनो लेइ संग ॥ कोटवाल तिहां नीसर्यो, चोकी करतो चंग ॥ म० ॥ १८ ॥ नाग्य जोग आवी जुडी, दूषणा ऊपर चोट ॥ सिद्धि हुवे क्युं तेहने, जसु दिलमांहे खोट ॥ म० ॥ १ए ॥ कोटवाल सम फालिया, काग बांध्या तेह ॥ समकित नटने वश कर्या, ताडन तरजन देह ॥ म० ॥ २० ॥ मिथ्यामती पाखंम वली, दंन प्रमाद विशेष ॥ समकित शूरें कूटिया, मोहतणा दास देख ॥ म० ॥ २१ ॥ विवेकतणी तिण शुद्धि लइ, ताडन पण लही तेथ ॥ हर्ष विषाद बेहु लह्या, पुण्यरंगपाटण जेथ ॥ म० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ढाना नाग तिहांथकी, रही न शक्या तिहां तेह ॥ जिम दावानल देखीने, मृग नासे लेइ देह ॥ १ ॥ मोह नणी आवी मल्या, प्रणम्या स्वामी पाय ॥ विलखाणा ते देखीने, मोह वदे चित्त लाय ॥ २ ॥ तुमचो मुख आखेय बे, नागा आव्या आज ॥ में आगेंही जाणियो, तुमथी नहुवे काज ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी पारधियानी ॥ अथवा ॥ बांगरियानी ॥ अथवा ॥ डुर्गपाल दलेलशुं रे, उत्तर पाछो देह रे॥ पुरोहितजी ॥ ए देशी ॥ वली राजा इम बोलियो रे, मुऊ जट दंज कहाय रे॥ दंज दरिया ॥ ते नवि दीसे स्थानकें रे,जीवन सम मुऊ थाय रे ॥ दं० ॥ मेरे कामित काम करीया, मेरे राज धुराकों धरीया, हुं चाहुं दर्शन तुऊ रे ॥ दं० ॥१॥ ए आंकणी ॥ ते हाथें मुऊ राज्य छे रे, जमणी बांह सहाय रे ॥ दं० ॥ विरुइ वेला एहनी रे, न सुणावे माहाराय रे ॥ दं० ॥२॥ डुष्ट स्वप्न नवि देखियुं रे, अंग न फरक्युं कोय रे ॥ दं० ॥ शकुन विरोधी न ग्रह्यां रे, ए चिंता क्युं होय रे ॥ दं० ॥ ३ ॥ इम सुणि सेवक आपणी रे, मांमी कहे सब वात रे ॥ दं० ॥ दंनें अमने मूकिया रे, इहां रह्यां न बने धात रे॥ दं० ॥ ४ ॥ साहिबने जाइ कहो रे, ए सघलो परकार रे ॥ दं० ॥ हुं छानो वेषांतरें रे, लेशुं सकल विचार रे ॥ दं० ॥ ५ ॥ काचे कामें आवतां रे, न रहे सेवकधर्म रे ॥ दं० ॥ आव्यो मुऊने देखजो रे, वैरीनो लही मर्म रे ॥ दं० ॥ ६ ॥ इम सांजली मोह नृपति रे, आनंद अधिक उत्साह रे ॥ दं० ॥ सजामांहे बेठो थको रे, दंज तणा गुण गाय रे ॥ दं० ॥ ७ ॥ छल बल बुद्धि निधाननो रे, माजी घरनो स्थंज रे ॥ दं० ॥ जीवन तुं चिरंजीवजे रे, थारां चरित्र अचंज रे॥ दं० ॥ ८ ॥ सेवक ए जंबुक थया रे, तुं पंचायण सिंह रे ॥दं०॥ विरुवा वैरी चिहुं दिशें रे, तिहां पण नाणी बीह रे ॥ दं० ॥ए॥ सेवक प्राण जणी गणे रे, तृणसम स्वामी काज रे॥ दं० ॥ ए सेवक धर्म सांजल्यो रे, तें राख्यो ते आज रे ॥ दं० ॥ १० ॥ नृपति जीपत ते करी रे, वैरीनां बहुवृंद रे ॥ दं० ॥ संसारी रीत जामिनी रे, त्यां तुं पूरणचंद रे ॥ दं० ॥ ११ ॥ साटे मांहे तूं सही रे, घाटे हाटें दीठ रे ॥ दं० ॥ राजें काजें धनें वनें रे, सघलेही तुं मीठ रे ॥ दं० ॥ १२ ॥ तुम विण फीका फूस छे रे, लावण्य तुऊ विण नांहिं रे ॥ दं० ॥ कारज सघलां अन्य छे रे, तूं मीठो ते मांही रे ॥ दं० ॥ १३ ॥ वीरसजा ए माहरी रे, मोतीमाला जेम रे ॥ दं० ॥ मध्यनायक मणि तूं अछे रे, हजीय न आयो केम रे ॥ दं० ॥ १४ ॥ एह वचन क्रोधादिकें रे, सुजटें सुणियुं आम रे ॥ दं० ॥ रीष राजानी जाणीने रे, उठी चल्या फिर ताम रे ॥ दं० ॥ १५ ॥ पुण्यरंगपाटण उपवनें रे, छाना रहिया जाय रे

॥ दं० ॥ पूर दरियावतणी परें रे, मांहे पग न देवाय रे ॥ दं० ॥ १६ ॥ कूरगडु साधु क्रोधें ग्रह्यो रे, बाहुबलि मानें तेम रे ॥ दं० ॥ लोन्नें केसरी रुषि ग्रह्यो रे, कामें श्रीरहनेम रे ॥ दं० ॥ १७ ॥ खाली फिरी पाठा गया रे, राजा करशे रीष रे ॥ दं० ॥ एम जाणी ताके घणुं रे, चोर परें निश दीस रे ॥ दं० ॥ १८ ॥ ए सेवक विवेकना रे, बंदी कीधा जाण रे ॥ दं० ॥ जोरो करीने ले चल्या रे, मोह नगरी दिश ताण रे ॥ दं० ॥ १९ ॥ बाहुबली रहनेमजी रे,युद्ध करे तिण साथ रे ॥ दं० ॥ आतम घरे आया वही रे, साचा देखाया हाथ रे ॥ दं० ॥२०॥ कूरगडादिक रुषिने ग्रही रे, मोह पुरें लेइ जाय रे ॥दं०॥ राजासुं मुजरो कस्यो रे,खाट करीने आय रे ॥ दं० ॥ २१ ॥ डुर्गति कारागारमें रे, लेई घाल्या तेह रे ॥ दं० ॥ वैरीने वश ते थया रे, पामे डुःख अठेह रे ॥दं०॥२२॥ वली राजा पूठे कहो रे, दंन्नतणी कोइ वात रे ॥दं०॥ दर्शन दीठे तेहने रे, मुऊने हुवे सुखशात रे ॥दं०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर दंन्न आवियो, अणचिंत्यो तिण ठाम ॥ राजा रुलिआतो थयो, दंन्न देखी अन्निराम ॥ १ ॥ करि प्रणाम बेसे जिसें, आलिंगन दे राय ॥ रोम रोम उल्लस्या घणुं, आनंद अंग न माय ॥ २ ॥ कुशल क्षेम पूठे प्रथम, न्नलें आयो वड वीर ॥ बोल्यो स्वामी पसायतें, तरि आयो रिपु नीर ॥ ३ ॥ सुण साहिब सघलो कहुं, वाततणो विस्तार ॥ राय विवेकनो जाबदो, दीठो अधिक अपार ॥ ४ ॥ कोटवाल करडो तिहां, नगरतणो रखवाल ॥ धर्मरीत राखे खरी, ज्युं पाणी ने पाल ॥ ५ ॥ नगरमांहि पेसण न दे,तब कीधी में बुद्ध ॥ साहिब काम सुधारवा, में वंच्या बहु सुद्ध ॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वहालेसर मुऊ विनति॥गोडीचा राय ॥ ए देशी ॥ पुण्यरंग पाटण पेसवा ॥रंगीला॥ में कीधा जाति न्नेष रे ॥ रंगीला राय ॥ कपट क्रिया करणी करी ॥ रं० ॥ अवसर एवो देख रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १ ॥ न्नूर न्नविक आवी मल्या ॥ रं० ॥ पण न जणाव्यो न्नेद रे ॥ रं० ॥ वचन जिके हूं उच्चरुं ॥ रं० ॥ तहत्ति करे ध्रुवेद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ २ ॥ न्नोजन सखरां में लह्यां ॥ रं० ॥ ते जति न्नेख प्रसाद रे ॥ रं० ॥ सुरमुड्डा पण आदरी ॥ रं० ॥ कीधा बहुला वाद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ३ ॥ कीरति कारण आचस्यां ॥ रं० ॥ आवश्य

क उच्चार रे ॥ रं० ॥ पण अंतर जेद्यो नहीं ॥ रं० ॥ आतम प्रत्यें प्रतिकार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ४ ॥ दीधी बहुली देशना ॥ रं० ॥ पररंजनने काज रे ॥ रं० ॥ मिथ्याजाव मूक्यो नहिं ॥ रं० ॥ महेर करी मोहराज रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ५ ॥ श्रावकनो जेख आदस्यो ॥ रं० ॥ उच्चरतो नवकार रे ॥ रं० ॥ निशि रूपि शाला सूझने ॥रं०॥ उपधि लई कीध विहार रे ॥ रं०॥पु०॥६॥ परजातें पूजा रची ॥ रं० ॥ मुखो मुखशुं लाय रे॥रं०॥ धातु रत्न प्रतिमा ग्रही ॥ रं० ॥ नागो स्वामी पसाय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ७ ॥ याचना मिष करी पेखियो ॥ रं० ॥ घर घर दीठ आचार रे ॥ रं० ॥ कूड कपट बहु के लव्यां ॥ रं० ॥ साहिब सान्निध्यकार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ८ ॥ नर नारी बहु छेतस्यां ॥ रं० ॥ नव नवा कीधा जेख रे ॥ रं० ॥ हवे पुर वर्णन सांजलो ॥ रं० ॥ दीठो जेह विशेष रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ए ॥ नगरीने चिहुं दिशि अछे ॥ रं० ॥ नीयतिको प्राकार रे ॥ रं० ॥ खातिका धर्मनी वासना ॥ रं० ॥ प्रासाद परिणाम सार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१०॥ लेश्या धवली छोहशुं ॥रं०॥ उज्ज्वल कीधी तेह रे ॥ रं० ॥ उंची जूमि निवास छे ॥ रं० ॥ साधु जन धर्म नेह रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ११ ॥ चार जेद धर्म ध्याननां ॥ रं० ॥ तेहज पोळ्यो चार रे ॥ रं० ॥ अनुप्रेक्षा चारे अछे ॥ रं० ॥ दृढ किमाड उदार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १२ ॥ इन्द्र प्रशंसे जेहने ॥ रं० ॥ श्रीसंघ महाजन तेथ रे ॥ रं० ॥ योगासन बाजार छे ॥ रं० ॥ पुण्य करियाणुं जेथ रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १३ ॥ समता शेरी मोकली ॥ रं० ॥ बाधा न लहे कोय रे ॥ रं० ॥ ब्रह्मपुरी सोहे जली ॥ रं० ॥ सुखियां सघलां लोय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१४॥ ज्ञान सरोवर शोजतूं ॥ रं० ॥ गुप्ति जली छे पाल रे ॥ रं० ॥ हंस घणा क्रीडा करे ॥ रं० ॥ शान्ति सरस रस शाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १५ ॥ जीव दया देवी जली ॥ रं० ॥ नगरतणी रखवाल रे ॥ रं० ॥ सखरी चरचा कूपिका ॥ रं० ॥ घर घर नयन निहार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १६ ॥ आतमजावना जावतां ॥ रं० ॥ षट् रुतुहीका चात रे ॥ रं० ॥ केहा गुण तसु दाखवुं ॥ रं० ॥ दीठां आवे धात रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १७ ॥ ते आगल पुर ताहरुं ॥ रं० ॥ दीन हीन ङुःख जाल रे ॥रं०॥ कांइ शोजा धरे नहिं ॥रं०॥ रतन आगल ढेखाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दंन कहे सुणजो वली, नगरी लोक विचार ॥ अंतर ए में देखियुं, सरशव मेरु प्रकार ॥ १ ॥ थीणद्धी निद्रा घणी,तुऊ लोकामें दीठ ॥ जाग रुक ते लोक बे, चेतन चातुर मीठ ॥ २ ॥ अल्प हेत नारत करे, प्रायें ताहरां लोक ॥ वेढ नाम ते नवि लिये, तिलनर नांही शोक ॥ ३ ॥ बंधन बहुलां इहां लहे, ताडन तर्जन जोर ॥ तिहां कोई जाणे नहीं, बंध किस्या परिघोर ॥ ४ ॥ दीन हीनता ए लहे, क्षण क्षण वारोवार ॥ नव नव मंगल ते लहे, सार समाधि विचार ॥ ५ ॥ इहां राजा दंमे घणुं, लोक न आवे दाण ॥ राज प्रजा ते एक बे, हितवत्सल ते खाण ॥ ६ ॥ अबे लोक अति क्लेशसुं, धन पामे बे कोय ॥ सहजें धन पामे घणा, ए अचरिज तिहां जोय ॥ ७ ॥ इहां धन धरती गाडियें, अधोगमनने हेत ॥ तिहां देवल दानें करी, वाहीजें शुन खेत ॥ ८ ॥ लानतणो सांसो इहां, उद्यम अधिका घोर ॥ निश्चें लान तिहां सही, अल्प उद्यमें जोर ॥ ए ॥ इहां बमणे लानें करी, हर्ष धरे सहु कोय ॥ लान अनंतें पण तिहां, आश धरे नहिं जोय ॥१०॥ हीन वस्तुमां पण सही, लान अनंतो थाय ॥ उडद दान दीनां थकां, कंचन कोडी थाय ॥ ११ ॥ नरपति सुरपति ताहरा, सेवक सघला जेह ॥ ते तसु नगरी दास सम, एवडो अंतर एह ॥ १२॥ इहां लोकांने सुत अबे, ते पण वैरी थाय ॥ लोक विदेशी फिरी तिहां, हितवत्सल लघुनाय ॥१३॥ एहवां लोक हूं निरखतो, इक दिन सना मऊार ॥ राजऋद्धि देखण नली, उनो जाय तिवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ साधुनी परखदा ज्योति स्वरूप, तिहां नृप वीर विवेक अनूप ॥ राजा सांनलो, मेरी अरजथकी रिपुने कलो ॥ सत्त्व सिंहासन मांम्युं सार, गुरु आदेश बे बत्राकार ॥ रा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्री ह्रीं वेउ पासें नार आचार,राजाने चामर ढालणहार ॥ रा० ॥ कर्म विवर कनो बे खवास, तिण महाजन आणीजें पास ॥ रा० ॥ २ ॥ ब्रह्मतणा जे जाणणहार, गायन गीत करे विस्तार ॥ रा० ॥ शुन लेश्या ते नटवी नारी, थेइ थेइ नाटक नाचे उदार ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मुख लीधो तास, मीठो अमृतथी असमान ॥ रा० ॥ थिगत हूआ ते सघला

लोय, नीकी नटवी नाचती जोय ॥ रा० ॥ ४ ॥ निश्चें व्यवहार लोचन दोय, तिण करी जोतां आनंद होय ॥ रा० ॥ एह रसायण इणहीज गाम, नहिं को दीसे बीजे गाम ॥ रा० ॥ ५ ॥ सुणवा इच्छा सुणियें जेह, ग्रहण धारण उह कहीयें तेह ॥ रा० ॥ इणिपरें आठे ही गुणसार, पहिर्या मोतिना तिणे हार ॥ रा० ॥ ६ ॥ आ गाथा माहेला आठगुणनां नाम कहे छे १ गर्व न होय, २ निंदा न होय, ३ कटुकभाषी न होय, ४ अप्रिय न होय, ५ बोलवामां क्रोध न होय, ६ काव्य शरीर लक्षण चेष्टाविषये मौनी होय, ७ पूर्वे अवगुण न कहे, ८ स्वात्मा न प्रशंसे ॥ इति ॥ ढाल पूर्वली ॥ सूरितणा गुण छत्रीश होय, आयुध धारे सबला जोय ॥ रा० ॥ सुविचार बालपणानो मित्र, तिणसुं पहिलो राखे चित्त ॥ रा० ॥ ७ ॥ आगाथामां कहेली सूरिना छत्रीश गुणनां नाम कहे छे १ स्वरूपाधिक, २ तेजस्वी, ३ जुगप्रधान, ४ आगम जाण, ५ मधुरवाक्य, ६ गंभीर, ७ बुद्धिवंत, ८ उपदेश देवाने तत्पर, ए परगुणभाषी, १० अवगुण न कहे, ११ सौम्य, १२ शिष्यसंग्रह, १३ अवग्रहवंत विकथात्यागी, १४ चंचलता, रहित उपशांत हृदय, १५ क्षमा सहित, अहंकार रहित, १६ कपट रहित, १७ निर्लोभी, १८ तपस्या करे, १ए संयम पाले, २० सत्य बोले, २१ अदत्तत्यागी, २२ शुद्ध परिणामी, २३ परिग्रह रहित, २४ ब्रह्मचर्य पाले, अने बार भावना भावे, ए छत्रीश गुण पूर्वे ढाल ॥ तत्त्वरूची पटराणी सार, मानुं लक्ष्मीनो अवतार ॥ रा० ॥ भव वैराग्य वडो छे पूत,न्यायें राजनो राखे सूत ॥ रा० ॥ ८ ॥ संवेग निर्वेद पुत्र सुजाण, तेज प्रताप घणो ज्युं भाण ॥ रा० ॥ दुश्मन दूर करे पायमाल, जोरावर जोधा वड भाल ॥ रा० ॥ ॥ ए ॥ पुत्री चारे चतुरां दीठ, करुणा मैत्री मुदता मीठ ॥ रा० ॥ चोथी उपेक्षा नामा सार, सूरि गुणें करी छे सिरदार ॥ रा० ॥ १० ॥ समकित मंत्री छे जसु पास, राजानो पूरण विश्वास ॥ रा० ॥ आर्जव मार्दव ने संतोष, शम रस सामंत नहिं को दोष ॥ रा० ॥ ११ ॥ सात तत्त्व ते साते अंग, राज्यतणा राजे अति चंग ॥ रा० ॥ दानादिक चारे धर्म भेद, चतुरंगसेना नहिं को खेद ॥ रा० ॥ १२ ॥ विमल बोध कोटवाल प्रधान, परमागम भंडार निधान ॥ रा० ॥ क्षायोपशम समकित भाव विलास, दाणी दाण लिये उल्लास

॥ रा० ॥ १३ ॥ न्याय संवाद नामा छे शेठ, सघला लोक छे जेहनें हेठ ॥ रा० ॥ पांचे व्यवहार चोधरी पांच, ऊगडामांहे न करे खांच ॥ रा० ॥ १४ ॥ सामायिक आवश्यक सार, पुरोहित पदवीनो अधिकार ॥ रा० ॥ प्रायश्चित्त ते नीरनी धार, निर्मल करवानो आचार ॥ रा० ॥ १५ ॥ सुख समाध ते शय्यापाल, तंबोली धर्मराग विशाल ॥ रा० ॥ शुद्धाशुद्धप्रणाम पडूर, कोडि ज्ञानें सेवक शूर ॥ रा० ॥ १६ ॥ ए सघला निज स्वामी आण, नवि लंघे कांइ मुखनी वाण ॥ रा० ॥ धर्ममंदिर कहे हवे वली दंन, आगल वात कहे छे अचंज ॥ रा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर तिण परखदा, मांहें कीध पुकार ॥ मोह जिल्ल सेवक करी, चोरी देश मजार ॥१॥ पुरजन जाली लेई गया, आपणी लांघी कार ॥ सांनली नूप विवेक तब, कीधो कोप अपार ॥ २ ॥ मुख बोले वली एहवुं, मेलो मोह नरेश ॥ तीन नुवन राजा थयो, न थइ तृप्ति अजेश ॥ ३ ॥ में प्रजुता निज गुण लही, देखी शके नहिं एह ॥ लोनी लोन वशें करी, लेहशे लंगर छेह ॥ ४ ॥ राज तेज तेहज खरो, ज्यां रहि रिपु उपचार ॥ दिनकर कर दीठां थकां, केम रहे अंधकार ॥ ५ ॥ इण वैरी जनां थकां, प्रजुता न लगे मीठ ॥ माटी कुंज मुखें रह्यो, मोघर नलो न दीठ ॥ ६ ॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलायो नूपाल ॥ मतिनिधान तुं मंत्रवी, प्रजुता वन रखवाल ॥ ७ ॥ छल बल कांइ केलवी, जिपीजें रिपु एह ॥ राज काज स्थिरता रहे, बुद्धि बतावो तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥ मंत्रीसर हो महोटो मतिवंत के,कर जोडीने वीनवे ॥ सुण साहिब हो मुज गुरु छे जाण के, आगम नीगम अनुनवे ॥ १ ॥ ते गुरुने हो में राख्यो पूछ के, राज्य वधे केम रहे ॥ ब्रह्म बोल्यो हो तमचो रिपु मोह के, जोरावर अति गहगहे

आ चौदमी गाथामां लखेला पांच व्यवहारनां नाम कहे छे. १ लज्जावंत, २ प्रायश्चित्त शुद्ध, ३ दोष प्रकाशीन, ४ ग्रंथ निर्वाह, ५ उपत्सर्ग अपवाददर्शी. अथवा कालादिक पांच कारणना नाम कहे छे ॥ कालो सहाव णियइ, पुव्वकयं पुरिसकारणे पंच ॥ मिच्छत्तं तं चेव ऊसग्ग संवुदोति सम्मत्तं. अर्थः–१ काल, २ स्वभाव, २ नियतित, ४ पूर्वकृत,५ पुरिसकार.

॥ २ ॥ गुरुरुवाच ॥ मोह जीत्या हो तुमची वृध्दि होय के, ते तो इण परि जीपियें ॥ पुरवचनें हो जगमांहि विख्यात के, सर्वज्ञ राजा दीपियें ॥ ३ ॥ तसु राणी हो केवलसिरी जाण के, निर्मलरूप निधान छे ॥ तसु लीणो हो रहे निशिदिन राय के, दिन दिन चढतो वान छे ॥ ४ ॥ तसु संवर हो महोटो उमराव के, सामंतमां सिरदार छे ॥ तसु घरणी हो मु मुक्षा नाम के, जोगीसर हैयें हार छे ॥ ५ ॥ तसु पुत्री हो संयमसिरी ना म के, सकल जीवां हितकारिणी ॥ तसु कन्या हो परणो विवेक के, तेह होशे जयकारिणी ॥६॥ कन्यानी हो सखियां सुखकार के, पांच अने त्रण आखीयें ॥ एकेकी हो जीपे छे मोह के, एह वचन गुरु नांखियें ॥ ७ ॥ इरजामुख हो धर्म रुचि अणगार के, करकंमू नाषा आदरी ॥ वेयर स्वामी हो कीधी आहार शुध्दि के, देवनी भिक्षा नही नखी ॥८॥ पडिलेहण हो वल्कलचीरी कीध के, समिति चोथी तिणे अनुसरी ॥ ऋषि ढंढण हो पर ववतां सार के, पांचमी समिति विधें करी ॥ ए ॥ प्रसन्नचन्द्रें हो करी म ननी गुप्ति के, धोयां डुष्कृत ध्यानशुं ॥ मेतारज हो धरि नाषा गुप्ति के,क्रौं च उपर दयावानशुं ॥ १० ॥ तनु निश्चल हो अनुनव तिणे पाय के, चि लातीपुत्र ते परगडो ॥ इणे राखी हो तनुनी शुध्दि गुप्ति के, परमातम ध्यानी वडो ॥ ११ ॥ ए आठे हो सखियां अभिराम के, संयमश्री सार्थे रसी ॥ ए परण्यां हो पीछें विवेक के, मोह नणी करशे वसी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विवेक ए सांजली, मनमां करे विचार ॥ एक म्यानमां क्युं र हे, बे सारी तरवार ॥ १ ॥ सुतवंती शीलधारिणी, घरमां बेठी नार ॥ ते ऊपर क्युं आणियें, साल समान विचार ॥ २ ॥ गाढागारीनी परें, कलहो करशे दोय ॥ घरट समोवड दो घरणी, प्रीत करण सम जोय ॥ ३ ॥ बी जी परणे सुख नणी, मूढ जिको नर होय ॥ इक दिशि ऊग्यो सूर पण,बी जी पडतो जोय ॥ ४ ॥ इम चिंतातुर देखीनें, आइ तत्त्वरुचि नार ॥ मुख हसिने एम उच्चरे, सुण साहिब नरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ वे कर जोडी वीनवुं जी ॥ ए देशी ॥ कर जोडी कामिनी कहे जी, तुं नर नाथ कहाय ॥ चिंता बहु नारी तणी जी, नबला नरने थाय ॥ रा

जेसर प्रमदा परणो तेह ॥ जिण परण्या प्रौढी हुवे जी, आतम रूद्धि अछे ह ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुलवंती कामणी तीका जी, बहु मिलिया, जस लेह ॥ अवधि आया नां तजे जी,फटक न दाखे छेह ॥ रा० ॥ २ ॥ जगति जुगति मूके नहिं जी, जर्त्तारा जली नार ॥ सागर नदियां सो फि रे जी, गंगा महिमा अपार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पुरुष रीति बीजी अछे जी, ना री रीत न कांय ॥ वेली वृक्ष समान छे जी, पण क्युं सरिखा थाय ॥रा० ॥ ४ ॥ वृक्षें हस्ती बांधीयें जी, वेली न धरे जाण ॥ इणि परें पुरुष प्रधा न छे जा, न करो कांही काण ॥ रा० ॥५ ॥ बहु नारी परण्याथकां जी, पुरुष जणी नहिं दोष ॥ संयमश्री आयांथकां जी, हुं न धरुं मन दोष ॥रा०॥६॥ निकला विकल धणी हुवे जी,नारी न तज्यो जाय ॥ डुःख सुख सरसुं माछली जी, सारस सम नवि थाय ॥ रा० ॥ ७ ॥ जिण आयां निज जय हुवे जी, हुं सेवुं तसु पाय ॥ एह वचन सुणि नारीनुं जी, हरखी बोल्यो राय ॥ रा० ॥ ए ॥ शोक्यें एहवुं सहु पढे जी, तो हुइ जयत अपार ॥ विलंब न कीजें तो हवे जी, सुण मंत्री शिरदार ॥ रा० ॥ ॥ ए ॥ अति उज्ज्वल परिणाम छे जी, तेहिज सेवक थाय ॥ परधानें ए मूकियो जी, उलगशे जिण राय ॥ रा० ॥ १० ॥ महिर जली मो उप रे जी, राखे श्रीजिनराज ॥ कन्या तेह देवावशे जी, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ रा० ॥ ११ ॥ मंत्री सज्ज करी नरा जी, मूक्या जिनवर पास ॥ ए वि रतंत सहु लही जी, लई आयो चारुजास ॥ रा० ॥ १२ ॥ मत विश्वास करो हवे जी, वैरी वाध्यो वान ॥ आज राज्य अतुली बली जी, कोइ प्रग ट्यो निधान ॥ रा० ॥१३॥ तसु पुर नर नारी धरे जी, तुमशुं जाति वैर ॥ ॥ मंत्री जापतो उपरा जी, साधे सगलो नयर ॥ रा० ॥ १४ ॥ वस्त्र तजे तप आदरें जी, लिखन पठन ध्यान लीन ॥ कामण टुमण आचरे जी, तुजने करवा क्षीण ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुज नगरी लोकां जणी जी, लोजावे मुख मीठ ॥ आप सरिखा आचरें जी, एवुं अचरिज दीठ ॥ रा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति एहवो, दंज मुखें सुणि वाद ॥ फालभ्रष्ट वानर जि स्यो, पामे चित्त विषाद ॥ १ ॥ वैरी वधतो देखीने, मनमां करे विचार ॥ तिण अवसर हवे मोहसुत, अरज करे अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी कडखानी ॥ तार किरतार, संसार, सागरथकी॥ ए देशी ॥ वात हवे तातजी, सांजलो मयणनी, एवडी चिंत मन, कांइ आणो ॥ मुज स रिखा सुत, सेवक ताहरे, कुण अछे तुज सम, राय राणो ॥वा०॥ १ ॥ वंध नरवृंद, करशुं घणा देख तुं, इन्द्र ने चन्द्र सब, पाय आणुं ॥ सकज सुत घर छते, जनक चिन्ता करे, मूढता केहनी, चित्त जाणुं ॥वा० ॥२ ॥ पुत्र हुं आपनो, तो नवि बीहीजीयें, रवि तणो पुत्र, शनि लोक आखे ॥ छीप सुत मोतीडां, मातनो घात करी, सकज सुत एहनें, कोण दाखे॥वा० ॥ ३ ॥ तातने शात सुख, संपजे जिणथकी, कमलथी जेम सर, सोह पा वे ॥ पुत्रना पदकज, पालणे प्रीछियें, लोक वैरी तिके, जासु गावें॥वा० ॥ ४ ॥ नाम अनिराम, अंगज किस्युं कीजियें, अंगनो मेल, अंगज कहीजें॥ तेह नाखी दिये, वनतणां फूलनें, वास गुणराशि, शिर पर वहीजें ॥ वा० ॥ ५ ॥ धीरता वीरता, मन धरी जे रहे, सांकडे आणीने, शत्रु पाडे ॥ जगतिमें नीर, पावक नणी उंटवे, तेहने वाडवा, ग्नी नसाडे ॥ वा० ॥ ६ ॥ एहवां आकरां, वचन सुणि पुत्रनां, मोहनें मन हुउं, सुख सवायो ॥ सा धु साबाश, साबाश तुं सुत नणी, आज तें पुरुपता, बल जणायो ॥ वा० ॥ ७ ॥ एहवे तेजें करी, वंश दीपाइयो, सन्य संदोह, अंदोह टाल्यो ॥ राज्यनो नार, सुविचार सुत कंध हवे, शत्रु जल गाहवा, पोत नाल्यो ॥वा० ॥ ८ ॥ काष्ठथी घणुं हुउं, धूंम पावकथकी, तनुथकी व्याधि, बुध चन्द्र देखो ॥ वृक्षथी लाख छे, नीरथी पंक छे, एहवा पुत्र, कुपुत्र लेखो ॥वा०॥ ए ॥ धूमथी मेह छे, बिंब पाषाणथी, पंकथी कमल मणि, सर्प माथे ॥ कलश माटीथकी, एहवा पुत्र हुवें, वंश विनूषणा, शोन साथें॥वा०॥१०॥ ताहरी अंग, कळावणी एहवी, शत्रु दल धान, ने घरट नारी ॥ लोक आ नंद करी, तो नणी वर्णवे, जूठ ते दीठ निज, दृग पसारी॥वा० ॥ ११ ॥ हस्ति ज्युं मस्त वली, ताहरे मित्र छे, जगतने जीपतो, मधु कहीजें॥ फू टरां फूल जे, बाण छे ताहरे, रिपु नणी जीपतां, साथ लीजें॥वा०॥ १२ ॥ मनतणा अतिघणा, घोर परिणाम छे, तेहज ताहरा, दास ताजा ॥ सार शृंगार तें, सैन्य साथें लिया, मेघ घनघोर धुनि, तेहज वाजां ॥वा० ॥१३॥ माहरो मंत्री, मिथ्यात्व नामा नलो, तेह पण ताहरे, साथ सारु ॥ रंजती

प्रीति वली, रति भली भारजा,शुद्धनी सिद्ध,अब जात वारु ॥वा०॥ १४ ॥ नारिनी गोठ, ते जोगणी ताहरे, मंत्रनी तंत्रनी,घात जाणे ॥ कुपथ कथा, ग्रहे, लोकने भोलवे, रिपुतणा सैन्यनी, वात आणे ॥वा०॥१५॥ गीतनी रीति ने, नाटक नाचतां,हाव ने भाव, प्रमदा विलासा ॥ चारु मणिहार, हथियार साथें धरे, मुखतणा मागिया, होय पासा ॥ वा० ॥१६॥ हास्य ने जूवटो, बे जणा ताहरा, अंगना चंग, रखवाल राखे ॥ रामत अति घणी,तेह दासी भली, काम ने काज, सब तासु आखे ॥वा०॥१७ ॥ सुख अभिमान, सन्नाह तुं पहेरजे, नेत्रने पान, कुपाटोप धरजे ॥ विषय इंडियतणा, चंचल हय घणा, मत्त उन्माद, मातंग वरजे ॥ वा० ॥ १८ ॥ रथ घणा सावता,जेह मनोरथा, पायक लायक, प्रेम पूरा ॥ नायका साथका, वरसती फोजमां, शोभशे जीपशे, शत्रु शूरा ॥ वा० ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय इणपरें कह्यो, मदनतणो परिवार ॥ राय विवेकने जीपवा, शीख दिये सुविचार ॥ १ ॥ पुत्र सुपूत तुं माहरे, राजनीतिनो जाण ॥ मति वेशासे केहने, ए माहारी छे वाण ॥ २ ॥ थोडुं बोले बहु करे, अति उत्सुक मन होय ॥ धीर वीर होवे खरो, छल बल करजे जोय ॥ ३ ॥ जोगी जंगम जटिलने, नर नारी तिर्यंच ॥ तरुण वृद्धने पीडवे, कां न करे खल खंच ॥ ४ ॥ क्षत्री क्षमा न आदरे, याचक लाज न कांइ ॥ वेश्या प्रेम धरे नहिं, काम अर्थ किम थाय ॥ ५ ॥ अवसर विण गुण दोष छे, दोष हुवे गुणपोष ॥ स्नान समे वस्त्र मूकियें, वांको डुम लहे तोष ॥ ६ ॥ जग सघलो जुगतें फरी, साधे सघलां गाम ॥ प्रवचनपुर मत पेसजे, अरिहंत राजा ठाम ॥७॥ शूरवीर तेहज खरो, जोवे ठाम विशेष ॥ पाडे मयगल भींतने, गिरि पाडे नहिं देख ॥ ८ ॥ एक गाम जीतो नहिं, कां नहिं यशनी हाण ॥ वन घन छाया नहिं नसे, इक तरु छेद्ये जाण ॥ ९ ॥ पिता शीख इणि परें कही,शिर पर धारी मयण ॥ चारवाक पंमित भणी,बोलावी वदे वयण ॥ १० ॥ कुंवर भणी वढवातणो, मुहूरत जोवो सार ॥ चार्वाक हवे बोलियो, सुण साहिब सुविचार ॥ ११ ॥ भोग क्षीर तिण क्षीर कलि, गुरु नारी धिक्कार ॥ वृष्टि वाउलमें अपशकुन, एता गमन निवार ॥१२॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति सांभलो, बीज भली तिथि जोय रे ॥ चन्द्र उदय हूआं थका, गोधूलिक शुभ होय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ माततणे पाये नमी, तिलक करायो हरखी रे ॥ लीधी माता बहेननी, आशिष अधिकी निरखी रे ॥ मो० ॥ २ ॥ आदेश ताततणो ग्रह्यो, भाइशुं बाहु मलिया रे ॥ प्रेमें मित्र कलत्रशुं,लोचन हुवे गलगलियां रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पापश्रुत भट ए भलां, बिरुद भणीजें सारो रे ॥ कुमित्र प्रसंग मातंग छे, तसु पर बेशी कुमारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेना ग्रही, वड वडा योद्धा साथें रे ॥ शूरा पूरा शोभता, जयलक्ष्मी धरे हाथे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ काम तणी कटकी चढी, तिहां नारीसुख शूरा रे ॥ हास्य विलास हेतें करी, अधिका सोहे सनूरा रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाण ते कामक टाक्ष छे, भूहांको धन लीधो रे ॥ ढाल ते घुंघट पट धरी, बाण चलावे सीधो रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रोदन मोदन मदनना, नव नव रंग तरंगो रे ॥ मोहें सुर नर मोहिया, चूक्या इणने संगो रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पशु पंखी प ण जीपियां, एकेन्द्रिय पण जीत्या रे ॥ किंकर काम तणा घणां, परस्था सबल अनीता रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इन्द्राणी रूपें करी, इन्द्रने जीत्यो का मो रे ॥ स्त्रीरयणें जीपवा, चक्रवर्ती अभिरामो रे ॥ मो० ॥ १० ॥ अ नमी आण धरे नहिं, वांकी टेढी पागें रे ॥ जोधा राव घणा अछे, पण किंकर स्त्रीआगें रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ त्रिवल्ली त्रिपथ कहीजियें, नारी उ दरें होवे रे ॥ काम पिशाच तिहां छले, मूढा नर जे जोवे रे ॥मो०॥१२॥ पाधोटे पंमितभणी, शुचिने रुचिकर हसतो रे ॥ अरथ करे धीरज भणी, जिहां तिहां ए धसमसतो रे ॥ मो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामतणी फोजां फरी, चिहुं दिशि सारे जग्ग ॥ कोई शर सांधे नही, योषित जोधें भग्ग ॥ १ ॥ ब्रह्मापुर कानें सुण्यो, राय प्रजापति हो य ॥ ब्रह्म तेज सब जगतनो, जनक कहीजें सोय ॥ २ ॥ एहनो थें टालो करो, आखे आगें वाण ॥ कोइ कालनो भोकरो, छोडो ब्रह्मा जाण ॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग धमाल ॥ अथवा ॥ पर घर गमन निवारियें ॥ ए देशी ॥ इणि

परें बहुपरें वारियो, पण न टल्यो काम कुमार हो ॥ ब्रह्मापुर जाइ ढूकियो, निज तेग जगावणहार हो ॥ इ० ॥१॥ फोज विदा करी नारिनी, चिहुं दिशि पासें लीधो घेर हो ॥ ब्रह्मा पण ध्यान कोटमां, लीणो छे न हुवे जेर हो ॥ इ० ॥ २ ॥ रागदूत विचमें फिरे, आखे मत करजो खेड हो ॥ कोट उंट लीधी अछे, पण मयण न छोडे केड हो ॥ इ० ॥ ३ ॥ तीन जगत ए साधतो, आव्यो छे तुमपें धाय हो ॥ तनक तनक तुझ कोटने, करशे तुझ आण मनाय हो ॥ इ० ॥ ४ ॥ सावंत्री जोध मूकियो, इणसेंती राखो रंग हो ॥ ब्रह्मा पण मन चिन्तव्युं, इण साथें न हुवे जंग हो ॥ इ० ॥ ५ ॥ सावंत्रीसेंती मिल्या, उछीने अंगो अंग हो ॥ चतुर हतो पण चूकियो, जेर दीधो जोर अनंग हो ॥ इ० ॥ ६ ॥ ब्राह्मण सघला बांधिया, वनिता जोध पलमांही हो ॥ अनमी कोइ न पेखियो, धर्म धीरज किणमां नांहिं हो ॥ इ० ॥ ७ ॥ ब्रह्मापुर जीपी चल्यो, आगें ते मयणकुमार हो ॥ जमुनाकांठें आवियो, करतो जग चरित्र अपार हो ॥इ०॥८॥ श्याम वर्ण इक सांजलो, पुरुषोत्तम नाम धराय हो ॥ वैकुंठनाथ वखाणियें, अवतार लिया मन दाय हो ॥ इ० ॥९॥ मत्स्य कूर्म नरसिंहना, वामन बलिराजा बंध हो ॥ भार्गव पण एहिज थयो, नवि राख्यो क्षत्रीगंध हो ॥ इ० ॥ १० ॥ दशरथ सुत पण ए हुवो, रावणने मार्यो एण हो ॥ जादव कुलमें अवतर्यो, विरची माया हरखेण हो ॥ इ० ॥ ११ ॥ कंस हण्यो नाग नाथियो, नवला जसु अवदात हो ॥ दानव मानव जीपिया, कुण आखी शके तसु वात हो ॥ इ० ॥ १२ ॥ सागर मथियो भुजबलें, गिरिवर उपाड्यो जोर हो ॥ पंचजन्य परगट कियो, जस शब्द अछे अति घोर हो ॥ इ० ॥ १३ ॥ चक्र गदा शारंग धरे, इन्द्रसेंती जसु प्रीत हो ॥ आज न को एहवो अछे, इणशुं मांभे अनीत हो ॥ इ० ॥ १४ ॥ ज्ञानी मानी पण सही, मधुसूदन ए गोपाल हो ॥ मयण वयण इम सांभली, अति कोप्यो क्रूर कराल हो ॥ इ० ॥ १५ ॥ गोपी जोधा मूकिया, जीपवाने किसन मुरार हो ॥ नयण बाण तीखे करी, भेद्यो लक्ष्मी भरतार हो ॥ इ० ॥ १६ ॥ हास्य राशि रति केलिशुं, वश कीधो केशवराय हो ॥ छल वल कोइ न केलव्यो, रंगरातो मातो थाय हो ॥ इ०॥१७॥ वृंदावनमें खेलतो, गोपियोनी पूरे आश हो ॥ कुसमां करी शिर सेहरो,

विरचे ज्युं कोइ दास हो ॥ ३० ॥ १७ ॥ थाकी गोपीने धरे, निज हाथे सारिका जेम हो ॥ वस्त्र उपाड्यां तेहनां, प्रगटे तिणशुं बहु प्रेम हो ॥ ३० ॥ १ए ॥ वृक्ष उपर चढीने रहे, गोपियोनां अंबर लेह हो ॥ नव न वि काम विडंबना, करतां नहिं आवे छेह हो ॥ ३० ॥ २० ॥ जोरावर हू तो घणुं, पण हाख्यो एकण सार हो ॥ धर्ममंदिर कहे धन तिके, जे जीपे काम विकार हो ॥ ३० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयंतहब्बा हूई करी,चाल्यो तिहांथी मयण ॥ कोइ अनमी छे वली, इम बोले मुख वयण ॥१॥ किणहिकें आवीने कह्युं, सुण स्वामी मुज वात ॥ अचल एक कैलास छे, तिणपर शंभु कहात ॥ २ ॥ लोक कहे छे तेहने, महोटो श्रीमाहादेव ॥ जटामांहि गंगा वहे, चंद रहे नितमेव ॥ ३ ॥ पास त्रिशूल हथियार धर, वाहन वृषभ विख्यात ॥ जग संहारण जोध छे, अष्टमूर्त्ति कहेवात ॥ ४ ॥ तीन नेत्र छे जेहने, भूषण भस्म भुजंग ॥ जेह कहे में मदननें, जीत्यो कीध अनंग ॥ ५ ॥ एह वचन सुणी कोपियो, मोह कुंवर मछराल ॥ ऊठ्यो मानुं केशरी, देवा रिपुशिर फाल ॥ ६ ॥ मंत्री कहे मूको तमें, जटिल योगनो धार ॥ कहो किम काढीजें कदे, तृण ऊपर तरवार ॥ ७ ॥ काम कहे मूकुं नहिं, मदनशत्रु कहेवाय ॥ सहस्र किरण उग्यांथकां, तिमिर भाव न रहाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ मदन मोह शर सांधियुं, बे ऊौ कीध गिरीश ॥ सलूणो ॥ कुसुम चाप करी चाढियो, शंकर ज्युं करी रीष ॥ स० ॥ म० ॥ १ ॥ धूणीधूप तूं कां सहे, छोड दिगंबर वेश ॥ स० ॥ हरिणाक्षी परणावस्यां, कर सखरो घरवेश ॥ स० ॥ म० ॥ २ ॥ महादेव बोल्या तिसे, तुं मन्मथ विख्यात ॥स०॥ पीछें बुद्धि ए दीजियें,पहेली सुण मुज वात ॥ स० ॥म०॥३॥ प्रेत वनें शंभु वसे, भोजन भिक्षा हाथ ॥स०॥ भाजन मनुज कपाल छे, तिल रति नहिं का आथ ॥स०॥म॥४॥ एह अ वस्था छे सही, कहो किण परघर थाय ॥ स०॥ नारी नदीनुं पूर छे, साग रमांहि समाय ॥स०॥म०॥५ ॥ रुंढ मुंड माला गले, आंख विरूप कहाय ॥ स० ॥ मुजथी नासे कामिनी, हंसी थल न सुहाय ॥ स० ॥ म०॥६॥

शाली दाल घृत घोल ते, नारी चाहे नित्त ॥ स० ॥ इहां भिक्षायें जीमवो, देख घणो इहां मित्त ॥ स० ॥ म० ॥ ७ ॥ मंमन चंदन मागशे, वस्त्र घणां पटकूल ॥ स० ॥ चर्म बिछावण ए अछे, नारी जणी प्रतिकूल ॥स०॥ म० ॥ ८ ॥ हास्य वयण मुख धारती, त्रिवल्ली रंग तरंग ॥ स० ॥ नारी नहिं ज्युं जाणियें, बूडे जे करे संग ॥ स० ॥ म० ॥ ए ॥ लोचन सहस्र तणो धणी, खबर न लाभे कांय ॥ स० ॥ नारी निशा अंधकारमां, अवरने केम कहाय ॥ स० ॥ म० ॥ १० ॥ मन परिणाम ते वानरी, काम किरात करूर ॥ स० ॥ अजगर हास्य विलास छे, नारी अटवी जूर ॥स० ॥ म० ॥ ११ ॥ नारीथकी हुं बीहतो, पर्वत बेठो आय ॥ स० ॥ तपसी जोगी जाणीने, मूक तुं मननी दाय ॥ स० ॥ म० ॥ १२ ॥ मदन कहे नीलकंठने, केड न मूकुं कोय ॥ स० ॥ परण तुं पारवती जणी, शीलवंती ए होय ॥ स० ॥ म० ॥ १३ ॥ मदनवशें माहादेवजी, गोपी परण्या नार ॥ स० ॥ भिक्षा तो भावे नहिं, सांजलजे जरतार ॥ स० ॥ म० ॥ १४ ॥ भिक्षा सखरी भिक्षुने, गेहीने न सुहाय ॥ स० ॥ धान्य घणुं घरमां हुवे, ते कहुं तुऊ उपाय ॥ स० ॥ म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गौरी कहे माहादेवजी, जाउ कृष्णनी पास ॥ क्षेत्रजूमि ते आपशे, बीज धनद परकाश ॥ १ ॥ हल तो हलधर आपशे, यमघर महिष सुचंग ॥ वृषन्न एक तुऊने अछे, खेती कर मन रंग ॥ २ ॥ जातुं हुं लावीश जलुं, इम चलशे घरवास ॥ पण भिक्षा नहिं जीमशुं, इम कीधो उपहास ॥ ३ ॥ काम विटंबन बहु करी, नव नव कर्म विकार ॥ कहेतां अंत न पामियें, इम जाणे किरतार ॥ ४ ॥ पाराशर जमदग्नि वली, चूकाया इणे काम ॥ तीन जुवन जींत्या इणे, फिरि फिरि सघले गाम ॥ ५ ॥ पुण्यरंगपाटणनी दिशें, चाल्यो मदन कुमार ॥ तिण वेला ते नगरमां, प्रगट्यो ए आचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धूंधलो रे लोल ॥ ए देशी ॥ कर जोडी करे विनति रे लोल, मंत्री विवेकने एम रे ॥ राजेसर ॥ पुण्यरंगपाटणमां हुवे रे लोल, उत्पात सघला केम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर ध्रूजियां रे

ोल, नूकंप तारापात रे ॥ रा० ॥ शोणित बिन्दु आकाशथी रे लोल, वू
॥ न वारु वात रे ॥ रा० ॥ क० ॥ २ ॥ तिण अवसर किण आखीयो रे
ोल, आयो मोह कुमार रे ॥ रा० ॥ राजा प्रजा सहु शंकिया रे लोल,
ूमा असुर अपार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ मंत्रीशुं नृप चिंतवे रे लोल, की
जें इणशुं जुऊ रे ॥ रा० ॥ जीतहवा जो हुजीयें रे लोल, तो कीजें ए गु
ऊ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ४ ॥ मंत्री कहे सुण साहिबा रे लोल, गुरुनुं वच
न छे आम रे ॥ रा० ॥ संयम स्त्री परण्या विना रे लोल, कोइ न होवे का
मे रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ मोहतणो हजी जोर छे रे लोल, तिण ए मदन
दीपाय रे ॥ रा० ॥ ब्रह्मादिक जिंत्या इणें रे लोल, कीधा कोडि उपाय रे
॥ रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ अवसरसेंती सिद्ध छे रे लोल, सघली वातामांही रे
॥ रा० ॥ आतम बल विण फोरव्यां रे लोल, कष्ट किया फल नाहिं रे ॥
रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ आपें पण एहनी परें रे लोल, पाम्या पराजय गाम रे
॥ रा० ॥ तो हमणां ए श्रेय छे रे लोल, जाइ प्रवचन गाम रे ॥ रा० ॥
क० ॥ ८ ॥ वरशो संयम कन्यका रे लोल, तो ए छार समान रे ॥ रा० ॥
अरिहंतशुं साचा हुआं रे लोल, वधशे आतम वान रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ए ॥
आपणने कोइ आखशे रे लोल, कायर मूको माण रे ॥ रा० ॥ अवसर
जाणिने आखशे रे लोल, बहुविध लोकनी वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १० ॥
नलराजा पत्नी तजी रे लोल, कष्टें मूकी नूमि रे ॥ रा० ॥ आतमहित
इण आचस्यो रे लोल, नायो अपयश धूम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ राय
विवेक वदे इस्युं रे लोल, ढील न कीजें आज रे ॥ रा० ॥ नाजन नोज
न सिद्ध छे रे लोल, केही कीजें लाज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ तुं पूंठे ते
आवजे रे लोल, सघला लोक लेइ साथ रे ॥ रा० ॥ हुं आगेंथी जाइने
रे लोल, उलगशुं जगनाथ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ इण अवसर नर
आविया रे लोल, पहेला मूक्या जेह रे ॥ रा० ॥ नमन करीने वीनवें रे
लोल, सुण साहिब ससनेह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ महेर घणी तुम उ
परें रे लोल, ते साहिबनी आज रे ॥ रा० ॥ कुशल प्रश्न बहु पूछिया रे
लोल, हर्ष घणो जिनराज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ मिलण नणी आवे
सही रे लोल, अम चरणे एक वार रे ॥ रा० ॥ इम कहीने अम मूकीया
रे लोल, वात नली निर्धार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवक वाणी सांभली, हरख्यो राय विवेक ॥ मनवंछित मुज होय शे, शकुन हुआं अतिरेक ॥ १ ॥ आठ वचन साह्मो हुवे, उत्तम शकुन ते जाण ॥ बोलाव्या पुरुषोत्तमें, केही कीजें काण ॥ २ ॥ विवेकराय हवे चालिने, प्रवचनपुरमें आय ॥ मंत्री पण पूठेंथकी, प्रजा लोक लइ जाय ॥ ३ ॥ सकल लोक राजा मली, अरिहंतनी छत्र छाय ॥ सुख समाधें जई रह्या, भर भय कोय न थाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ इक दिन नमि राजानो हाथी छूट्यो, अति मदमत्तथको ॥ ए देशी ॥ मयण तणां दल पूरां शूरां, पुण्यरंगपाटण आय रहे ॥ हां आय रहे ॥ शूनुं नगर ते दीठुं सघलुं, मयण भणी ते जाय कहे ॥ हां० ॥ १ ॥ मयण कुंवर मन चिन्तवे एवुं, राय विवेक ते नासी गयो ॥ हां० ॥ नाम सुणीने न रह्यो ऊभो, जंबुक कायरकाय थयो ॥ हां० ॥ २ ॥ कुलाचार पण न कस्यो कोइ, क्षत्रीतणो धर्म नाख दियो ॥ हां० ॥ मंत्रीतणो सुत आखर एहज, राजा एहनें कोण कियो ॥ हां० ॥ ३ ॥ जाति उपर गयो न हुउ असली, भींत विना केम चित्र धरे ॥ हां० ॥ नासण विद्या धुरथी शीखी, ते नहिं विसरी चित्त खरे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रणनी होंश रही मनमां हे, इण अवसर शठ ए नाठो ॥ हां० ॥ लोक लाज पण न गणी भोले, काम कियो अतिही माठो ॥ हां० ॥ ५ ॥ जिनवरनो पण भगतो युगतो, निर्मद निर्मम न्याय थियो ॥ हां० ॥ जे जेहवो नर सेवे तेहवो, फल पण हाथोहाथ दीयो ॥ हां० ॥ ६ ॥ जिनवर संगतिथी सिंहादिक, ते पण वैर विरोध तजे ॥ हां० ॥ कां भुरकी ए घाले माथे, शीतल सार समाधि भजे ॥ हां० ॥ ७ ॥ अरिहंत चरण शरण इणें लीधो, झालूं हमणां पुछ ग्रही ॥ हां० ॥ उंदर क्युं बिलमांहे छूटे, जो जब जावे साप वही ॥ हां० ॥ ८ ॥ पण मुज ताततणी ए वाचा, प्रवचन पुर मत जाय कदा ॥ हां० ॥ माहरी कीरति सघले हूइ, जयतपताका पाइ मुदा ॥ हां० ॥ ९ ॥ जयततणां निशान घुरायां, हथियार हवे सब म्यान करे ॥ हां० ॥ नवनवां भेटणां ले तो मन्मथ, निजपुर दिशिने पाउ धरे ॥ हां० ॥ १० ॥ नव रसमां इक सार शृंगारा, काम अयाणे मुख कीयो ॥ हां० ॥ शान्त भणी तें छेहडे थाप्यो,

न्मथ उलस्यो एम हियो ॥ हां० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें आयो अविद्या नग
री, तिहां किणे मेरो आवी दीयो ॥ हां० ॥ मोहरायने दीध वधाइ, सुत
आयो यशपुंज लियो ॥ हां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय मन हरखियो, आयो पुत्र प्रधान ॥ गुरु लघु रीत न का
करी, साह्मो जाय सुजाण ॥ १ ॥ मन्मथ तातजणी तिहां, तुरत कीयो
परणाम ॥ सुत सखरा ते सलहियें, विनयवंत अभिराम ॥ २ ॥ मन
वच काया प्रेम धरी, मलिया मनने रंग ॥ शीतल चंदन चंद ज्युं, सुख
दायी सुत संग ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी काठबानी ॥ अथवा ॥ वाग्यां जांगी ढोल, हे सखी वागा जां
गी ढोल ॥ ए देशी ॥ वाग्यां गुहिर निशान, हे सखी वाग्यां गुहिर निशान,
आयो लायक नंदन मोहरो ॥ हरख्यो सब परिवार ॥ हे सखी० ॥ ह० ॥
निजकुल शेखर दीपे सेंहरो ॥ १ ॥ वंचाणा वचननिनाद ॥ हे० ॥ वं० ॥
तिणे करी अंबर अधिको गाजीयो ॥ पुरजन करे उछरंग ॥ हे० ॥ पु० ॥
धन धन मोह महिपति राजियो ॥ २ ॥ नव नव पाप विकार ॥ हे० ॥ न० ॥
नटुआ नाचे राचे जन मना ॥ हाव जाव सुखकार ॥ हे० ॥ हा० ॥ मंगल
गावे तिहां बहुला जना ॥ ३ ॥ पूर्ण कलश-परधान ॥ हे० ॥ पू० ॥ शृंगार पाणि
करीने अति जस्यो ॥ मलपति सोहव नार ॥ हे० ॥ म० ॥ साह्मी आवी मं
गल जय कस्यो ॥ ४ ॥ आश्रव गोख विशाल ॥ हे० ॥ आ० ॥ तसुपर बेठां
नर नारी घणां ॥ नृपसुत नयण निहाल ॥ हे० ॥ नृ० ॥ बोले ए सुत ते
हनें शी मणा ॥ ५ ॥ पुर पेसारो कीध ॥ हे० ॥ पु० ॥ मोहोलें आयो म
न्मथ मानशुं ॥ मायादिक परिवार ॥ हे० ॥ मा० ॥ हरख्यो निरखी सुत
मुख वानशुं ॥ ६ ॥ युगवर श्रीजिनचंद ॥ हे० ॥ यु० ॥ तास प्रसाद लही
करी में कीयो ॥ चोथो खंम रसाल ॥ हे० ॥ चो० ॥ जणतां गणतां हीसे
मुऊ हीयो ॥ ७ ॥ पावक प्रवर प्रसिद्ध ॥ हे० ॥ पा० ॥ दयाकुशल गणी
गुरु प्रसादथी ॥ धर्ममंदिर कहे एम ॥ हे० ॥ ध० ॥ अर्थ लह्यो ए में आगम
थी ॥ ८ ॥ कर्म विचित्र कहाय ॥ हे० ॥ क० ॥ तेह तणो ए विवरो आ
खियो ॥ जविजनने सुखकार ॥ हे० ॥ ज० ॥ जिनवर वचन सुधारस

दाखियो ॥९॥ इतिश्री प्रबोधचिंतामणौ ढालन्नापाबंधे मोहचरप्रेषण कंदर्प दर्पदिग्विजयवर्णननामा चतुर्थः खंमः संपूर्णः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम खंमस्य प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर सुखकरु, प्रणमूं पारस नाथ ॥ नाम लियंतां जेहनुं, आवे अविचल आथ ॥ १ ॥ इण अवसर मन्मथतणी, कीरति न्नाट करेइ। नव नव छंद स्वछंदथें, वाणी रचना धरेइ ॥ २ ॥ जय जय जगने वल्लहो, जीव जीव चिरंजीव ॥ मोहराय नंदन निपुण, न्नव सुख माण सदीव ॥ ३ ॥ तुं शूरा शिरसेहरो, तुं वीरें विख्यात ॥ कुसुम शरें जीत्यो जगत, कोण कहीजें वात ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र ॥ न्नूर सूर गुरु गरुड पंखि, जोगि जति नरवृन्द ॥५॥ तें जगमें जीत्या घणा, आण मनाई जोर ॥ काम पदारथ शिखव्यो, धर्म अर्थ शिवगोर ॥ ६ ॥ विषयतणां सुख तुं लहे, मात तात सुखकार ॥ इम आशीष सुणी करी, दीधुं दान अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ मात पिता न्नगिनी ने न्नाइ, पूछे मयणने एम जी ॥ जग जीपणनी वात कहीजें, बल बुद्धि कीधी जेम जी ॥ मा० ॥ १ ॥ मन्मथ मांमि कहीजे आगें, जीपणनी सहु वातजी ॥ नागो वीर विवेक विख्यातो, सांन्नलिया अवदात जी ॥ मा० ॥ २ ॥ माता मन हरख्युं अति गाढुं, वखाणे वारंवार जी ॥ तुं चिरंजीवे वंश विन्नूषण, धन धन तुज अवतार जी ॥ मा०॥३ ॥ बेटा बहुला होशे जगमां, पण तुज जोड न कोय जी ॥ तारा बहु आकाशें दीसे, चन्द्र समान न होय जी ॥ मा० ॥ ४ ॥ नयन अमारां चपल चकोरा, तुज मुख चन्द्र समान जी ॥ किण दिन सुत आवीने मलशे, हूतो ए मुज ध्यान जी ॥ मा० ॥ ५ ॥ आज मनोरथ सघला हूआ, सुरुतरु फलियो आज जी ॥ चातक मोर तणीपरें हरख्यो, तुज दर्शन घनगाज जी ॥ मा० ॥ ६ ॥ रति रंगीली तारी नारी, वसंत तारो मित्त जी ॥ स्नेह धरीने दिन दिन जोतां, मारग तारो नित्त जी ॥ मा० ॥ ७॥ रंगरलीशुं सघला मलिया, हू

उअति उछरंग जी ॥ नव नव नाटक गीत विनोदा,कर्म उदय परसंग जी ॥ मा० ॥ ७ ॥ घर घर मयणतणा गुण गरजे, कामकथा विस्तार जी ॥ ली नो जग सघलो कामरागें, काम विकार अपार जी ॥ मा० ॥ ए ॥ उत्सव काम तणा अति कीधा,कहेतां नावे पार जी ॥ नरथी आठ गुणो नारीनें, वल्लभ काम कुमार जी ॥ मा० ॥ १० ॥ बहुलां सुख संसारनां विलसे, धरतो मन उछरंग जी ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन ते नर, कामनो न करे सं ग जी ॥ मा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति चिन्तवे, इक दिन एम विचार ॥ वीर विवेक नासी ग यो, जीवतो दुःख दातार ॥ १ ॥ मंदमति मुज सुत अछे,बालक बुद्धि वि चार ॥ नावी वात न चिन्तवे, ते छलियो संसार ॥ २ ॥ पंमित परखे प लकमें, बाधक साधक वात ॥ छल बल कल जाणे घणा, वीर विवेक कहा त ॥ ३ ॥ पंमित तेहने वर्णवे, जे परिणामें मीठ ॥ काथ कटुक मुखरोग ने, दूर करंतो दीठ ॥ ४ ॥ कारज तेहिज कीजियें, अंतें सुख दातार ॥ स्वाद मुखें किंपाक फल, आपे अधिक विकार ॥ ५ ॥ शत्रुथकां जे राज्य सुख, ते सुख स्वप्न समान ॥ अरिहंत नृपपासें रह्यो, करशे कोइ विज्ञान ॥ ६ ॥ इम मन चिन्तातुर थको, बेठो मोह नरिंद ॥ सघली मलि बेठी स ना, बेठां नरनां वृंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इक दिन माहाजन आवी ए ॥ ए देशी ॥ तिणसमे सेवक वीनवे, सु ण साहिब सनेहो जी ॥ कालो रूप कुरूप छे, उंचो छे तसु देहो जी ॥ त्रूटक ॥ तसु देह उंचो, पुरुष कोइ, आवी उनो, तियां कणे ॥ कलिकाल नामें, नाम धरतो, नृप जणावे, मुख नणे ॥ दीदार तुमचो, देखवा ए,आ यो छे तुम,गुण स्तवे ॥ राजरो हुकम, एथ आवे, तिण समय सेवक, वीन वे ॥ १ ॥ राजा तेहने तेडावियो, दीठो रूप तिवारो जी ॥ मानी वाघत णी परें, लूखो नूखो अपारो जी ॥ त्रू० ॥ अणपार नूख्यो, लोह जडियो, रूप कुरूपी, अति घणुं ॥ ते रूप देखी,सनाजननां, कंपियां मन, अति घ णुं ॥ तिण आय राजा,पाय प्रणम्या, राजा पण, आदर दियो ॥ कर जो डि ऊनो, वदन आगें, राजा तेहने, तेडावियो ॥ २ ॥ तब राजा मुख पू

छियुं, क्षेम कुशल तुम होयो जी ॥ किण कारण चिर कालथी, तुझ दर्शन ए जोयो जी ॥ त्रू० ॥ ए जोय दर्शन, हर्ष पाम्यां, आया थें, कारण कि सें ॥ तव बोलियो ते, पुरुष प्रणमी, हेतु मुझ मन, ए वसे ॥ इक मयण देखुं, जगत जीपी, जेण इवडो, यश लियो ॥ ए मयण देखो, नयन आगें, तव राजा, मुख पूछियो ॥३॥ बीजुं कारण ए अछे, तुझ वेरी छे एको जी ॥ हाथ नायो तुझ पुत्रने, जीवतो नाठो विवेको जी ॥ त्रू०॥ सुविवेक नाठो, तेह चिन्ता, राजन थें, मनमां धरो ॥ तेह चिंता भांजुं, रिपु विनासुं, जो मुझे, सेवक करो ॥ माहरो पण, तेह वैरी, वयर लेशुं, ते पछे ॥ एवो कलि युग, पुरुष बोल्यो, बीजुं कारण, ए अछे ॥ ४ ॥ कलि बोल्यो सुण भूप ति, प्रवचन पुर तुझ दूरो जी ॥ माहरे मन सुगमो अछे, लेउं तुझ हजूरो जी ॥त्रू०॥ हजूर लेउं, देख तूं हवे, ज्ञान रक्षक, बांधशुं ॥ संवेग सामंत, जेह जोधा, तेह सघला, साधशुं ॥ वड वडा वीर, विवेक सघला, सबल हूता, शुभमति ॥ हवे खबर पडशें, अणी माथे, कलि बोल्यो सुण, भूपति ॥ ५॥ देखे हाथ तुं माहारा, प्रवचन पुर उघेडो जी ॥ जोर न भाजे ज्यां लगे, नवि मूकुं तां केडो जी ॥त्रू०॥ केडो न मूकुं, ज्यां लगें, अवक्षीण न हुवे, ए खरो ॥ मुक्तिनो मारग, भांजी नाखुं, मदत जो, माहरी करो ॥ अरिहंत राजा, फे डि नाखूं, धुजावुं, धर्मनी धुरा ॥ कलिकाल महारुं, नाम साचूं, देख हाथ तुं, माहरा ॥ ६ ॥ हरख्यो मोह नरेश ते, सांभली वचन करालो जी ॥ काम कह्यूं नर ए खरो, अरिदलनो ए कालो जी ॥ त्रू० ॥ ए काल अरिदल, तणे माथे, उद्धत नर ए, आकरो ॥ चिर काल एहनी, स्थिति न होसी, तोही ज छे मुझ, काजरो ॥ इम जाणिने निज, पास राख्यो, सार सेवक, सुखकरु ॥ बहु मान दीधो, वडो कीधो, हरख्यो मोह, नरेशरु ॥ ७ ॥

॥ दोहा॥

॥ राज काज लायक घणूं, कलियुग राख्यो राय ॥ रत्नथकी सेवक भ ला, जिणथी अरि जीपाय ॥ १ ॥ समय स्वभावथकी हवे, अरिहंत मोक्ष सिधाय ॥ दिनकर आथमियें थके, तमनो जोरो थाय ॥ २ ॥ कलियुग फोज मुखी हुइ, सेना लेइ अशेष ॥ चिहुं दिशि पसरे पवन ज्युं, प्रवच नमांही विशेष ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मेघ मन कांइ भ्रम भोले ॥ ए देशी ॥ राग द्वेष वली अति घणा जी, बांध्या वड विस्तार ॥ विषयतणी तृष्णा वधी जी, विषनी वेल अपार ॥ भविक जन, सुणजो कलियुग वात ॥ मूको बीजी तांत ॥ भ० ॥ १ ॥ मन पर्याय ते केवल ज्ञानी, क्षपकश्रेणि सुप्रधान ॥ छेहला संयम तीन जे सखरा, उपशम श्रेणि विधान ॥ भ०॥ २ ॥ पुष्कलाक लब्धि ने श्रीजिनकल्पी, चौद पूरव अति मान ॥ आदिम संघयण ने शुक्लध्याना, परम समाधि निधान ॥ भ० ॥ ३ ॥ कलियुग आवते एटलां वानां, दूर कर्यां तिण वार ॥ अनुक्रमें दश पूर्वादिक मेल्यां, पूर्वानुयोग विचार ॥ भ० ॥ ४ ॥ अंतर मुहूर्तेमां पूर्वे गुणतां, ते रही लब्धि विशेष ॥ संघयण सघला ते पण बांध्यां, छेवठो रह्यो देख ॥भ०॥५॥ माहाप्राणायाम ध्यान जे धरता, महोटा श्री ऋषिराय ॥ ते पण दूर कियो कलिकालें, अशुभ ध्यान दीपाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ इणिपरें जाये दिन दिन हीणा, कलियुग कीधूं जोर ॥ काम क्रोध ने वैर विरोधा, रौद्र आर्त अति घोर ॥ भ० ॥ ७ ॥ संप्रति राजा अनुक्रमें हूउ, कलिशुं कीध संग्राम ॥ गाम गाम जिनचैत्य कराया, भाव भक्ति अभिराम ॥ भ० ॥ ८ ॥ देश अनारजमें पण जिनवर, धर्म दीपायो सार ॥ कलियुगने तिण कागो कूट्यो, धर्मराग मन धार ॥ भ० ॥ ९ ॥ ते राजा देवलोक गया पछी, व्याप्यो काल कराल ॥ वडवडा भूपतिनां मन फेर्यां, कीधी मिथ्याजाल ॥ भ० ॥ १० ॥ नव नव प्रगट किया पाखंडी, हिंसा धर्म अपार ॥ दुर्भिक्ष पण कलियुगना सेवक, दोड्या वारोवार ॥ भ० ॥११॥ जिनवर धर्म कियो तिण खंडित, सामाचारी भेद ॥ महेलां मन मुनिवरनां कीधां, सूधो संयम छेद ॥ भ० ॥ १२ ॥ चार अछे अनुयोग जे महोटा, अल्प किया ते काल ॥ लेश देशथी मति श्रुत हूआ, बांध्यो जडता जाल ॥ भ० ॥ १३ ॥ जिनशासननी रक्षा काजें, नावे देवी देव ॥ तप जप ध्यान तणो नहिं महिमा, धर्मतणी नहिं सेव ॥ भ० ॥ १४ ॥ गणगछ भेद किया इण भूंभे, कृषिमें घाली राड ॥ आतमअंगमां थोडा बूझे, वेश भणि धरे वाड ॥ भ० ॥ १५ ॥ सूत्र सकल माने नहिं जी, अर्थतणा करे भेद ॥ सर्दहणा जिन वचनें नांहिं, मिथ्या राखे खेद ॥ भ० ॥ १६ ॥ भूर शूर भो लाया एणें, लोभतणे वश कीध ॥ निर्ग्रंथने पण सग्रंथ कीधा, मूर्छा मति

इणे दीध ॥ भ० ॥ १७ ॥ निज गुणनो खप न करे कांइ, परगुण लेवा जाय ॥ सावद्य शास्त्र भणे घणां जी, कर्मबंध जिणे थाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ लाल पाल ऋषिजी करे जी, अवर जेह नर नार ॥ गजवृत्तिनें मूकी करी जी, लेवें खर आचार ॥ भ० ॥ १९ ॥ विकथा वाद बहु करे जी, आगम न जाणे सार ॥ भाव भेद समजे नहिं जी, बाहिज दृष्टि अपार ॥भ०॥२०॥ समवाये पांचे करी जी, स्याद्वाद सुखकार ॥ ते नवि बूजे धुरथकी जी, जिनमति मूल विचार ॥ भ० ॥ २१ ॥ नय प्रमाण निरखे नहिं जी, निश्चय नय न व्यवहार ॥ द्रव्य अने पर्याय न बूजे, कलियुगने परिवार ॥ भ० ॥ २२ ॥ श्रावक पण वली एहवा हूआ, ए जुगने परसंग ॥ देव न माने गुरु नवि मानें, धर्म उपर नहिं रंग ॥ भ० ॥ २३ ॥ गोगा मोगा ने महमायी, क्षेत्रपाल भली रीत ॥ तेहने सेवे मनशुं सूधा, अरिहंत न धरे चित्त ॥ भ० ॥ २४ ॥ नाटक गीत सुहावे भावे, जिनवाणी न सुहाय ॥ गुरु उपदेश सुणे नहिं कबहूं, घरधंधामां धाय ॥ भ० ॥ २५ ॥ त्याग धर्म करीने युं आखे, फल नव दीठूं कोय ॥ पूरी प्रतीति नाहिं धर्म ऊपर, सिद्ध किहांथी होय ॥ भ० ॥ २६ ॥ दान देइ बहु वंछा इहां राखे, त्याग न राखे भाव ॥ निर्वंछक धर्म मन आचरतां, थाये भवजल नाव ॥ भ० ॥ २७ ॥ माहा मंत्र नवकार तजीने, समरे बीजा मंत्र ॥ पुण्यानुसारी धनने अर्थें, धारे बहुला यंत्र ॥ भ० ॥ २८ ॥ धातुरवादी जूवटे खेले, वांछे धननी राशि ॥ पनरे कर्मादानने सेवे, श्रावक नाम उल्लास ॥ भ० ॥ २९ ॥ वादें कुपात्र मुखें धन खरचे,पात्र न पोष्यो जाय ॥ राजा धन दंमीने लेवे, कोडी दान न थाय ॥ भ० ॥ ३० ॥ आतम रूप न उलखे जी, ज्ञान न आणे चित्त ॥ काम क्रोध भीनो रहे जी, आरंभ अधिको नित्त॥ भ० ॥ ३१ ॥ कलियुग समय स्वभावथी जी, श्रावक एहवा थाय ॥ धर्ममंदिर कहे विण भोगवियां, कर्म न मूक्यां जाय ॥ भ० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवर लोक पण कलियुगें, व्यापी पापी कीध ॥ कूड कपट छल बल घणा, कुमति कदाग्रह गृद्ध ॥ १ ॥ सेवक स्वामी छल करे, पिता पुत्र वली देख ॥ पति पत्नीशुं छल करे, लायें कुलनी रेख ॥२॥ न बनें सासू ने वहू. घरमां कलहो होय ॥ वीठू चटकानी परें, सासूवाणी जोय ॥ ३ ॥

वृद्ध तात हूउ जिसे, कथन न माने कोय ॥ अशन वसन आपे नहिं, पुत्र वधू वश होय ॥ ४ ॥ अल्प जरमने कारणे, खेल करे अति घोर ॥ मन संतोष धरे नहिं, तृष्णा वाधी जोर ॥५॥ जगिनी जात तणे घरे, जन्म लगे रीसाय ॥ जाइ मांहोमांहि वली, परणी जूआ थाय ॥ ६ ॥ सगपण संपन को धरे,सहु स्वारथने थाय॥ परमारथ प्रीछे नहिं,कलियुग व्याप्यो आय॥७॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धर्म हैये धरो ॥ ए देशी ॥ रस कसमां कलि व्यापियो रे, दिन दिन एहवो थाय ॥ मेह घणा वरसे नहिं रे, वाजे अधिका वायो रे॥ कलि कौतुक करे ॥ समयतणो वली जोरो रे, अल्प धर्म हूउ ॥ व्याप्यो पाप अघोरो रे ॥ कलि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पत्नीशुं प्रीत नहिं धरे रे, परनारी लो जाय ॥ शीख जली घरनी दीये रे, ते मन नावे दायो रे ॥क०॥२॥ कपट करावे मित्रशुं रे,जननी जनकशुं जूऊ॥ कुबुद्धि शिखावे पापनी रे,आववा न दिये बूऊो रे ॥क०॥३॥ स्वारथ लगें मैत्री करे रे,नियम संकट लगि जोय ॥ कष्ट पड्यां समकित तजे रे, एहवा धीरज होयो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ थोडी शुन्न संपत्ति हुवे रे, कइयें विणसी जाय ॥ जो जीवे तो निश्चें हुवे रे, योवन धर्मी न थायो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ दंज विना धर्म नवि करें रे, क्रोध सहित तप तुब्ब ॥ मान धरी श्रुतने जणी रे, धन मेले नहिं सुब्बो रे ॥क०॥ ६ ॥ व्यापारी चोरी करें रे, कुलवंत विट सम थाय ॥ कुल नारी गणिका परें रे, हसन वसन मन दायो रे ॥ क० ॥ ७ ॥ मुख मीठी वातां करे रे, कपट हैयामें राख ॥ कर्षणी अति आरंज करे रे, सामी नावे शाखो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ उत्तम फल थोडां हुवे रे, खारां कडुआं लाख ॥ अल्प क्षीर गायां हुवे रे, थोडी संतत शाखो रे ॥ क० ॥ ए ॥ इम कलिपावक बहु करे रे, सुकृति दूधनो शोष ॥ कुमारपाल नृप अवतस्यो रे, करवा दूधने तोषो रे ॥ क० ॥ १० ॥ उपदेशें हेमसूरिने रे, दीपायो जिनधर्म ॥ उत्तम आचरणा करी रे, दूर कियां पाप कर्मो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्टादश देशा विषे रे, मार इसी मुख वाण ॥ कोइ न जांखे नर कदें रे, एवी जेहनी आणो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ जरण पोषण नबलां करे रे, दीन हीन उद्धार ॥ जाव जक्ति धर्म रागियो रे, कीधां चैत्य अपारो रे ॥ क०॥ १३ ॥ कलियुगनुं मुख कालिशुं रे, चौलक रीऊ नरेश ॥ सात व्यसन जट कलितणां रे,

हणियां फाली केशो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ अमार शब्द उद्घोषणा रे, तेह ज तीखां बाण ॥ कलिने लाग्यां अति घणां रे, पण न तज्यां कलिप्राणो रे ॥ क० ॥ १५ ॥ निरुपक्रम ए आउखे रे, वज्ररुषभ क्युं देह ॥ कइ कोइ पारद सेवियो रे, कलियुग नावे छेहो रे ॥ क० ॥ १६ ॥ गलिया ढोरतणी पेरें,रे होय रह्यो तिणिवार ॥ जीवतो मूक्यो नरपति रे,करुणा चित्त मऊारो रे ॥ क० ॥ १७ ॥ चार वर्ण धर्म जिनतणो रे, सेवे नृप आदेश ॥ जीवदया पाले खरी रे, सघला देश विदेशो रे ॥ क० ॥ १८ ॥ अध्यातम गुरु दाखवे रे, जाणी जीव अजीव ॥ निज परगुण परगट कीया रे, धरी स्याद्वाद शुभ दीवो रे ॥ क० ॥ १९ ॥ केटलां वरस गया पछी रे, ते पण देवलोक जाय ॥ फिर जाग्यो कलियुग तदा रे,वलतो वश नवि थायो रे ॥ क० ॥२०॥ काम क्रोध जाग्या घणा रे, धर्मधन लूट्युं जोर ॥ दुर्गति जाये प्राणिया रे, करि करि पाप अघोरो रे ॥ क० ॥ २१॥ बहुत युगतांइम हूउ रे, कलिकेरो अधिकार ॥ ते पण समयो पामिने रे, क्षीण थयो जिणवारो रे ॥ क० ॥ २२ ॥ जिनवर प्रगट हुआ तदा रे, कलियुग पाम्यो नाश ॥ मोह सुणी मन फूरियो रे, सखर थयो मुऊ दासो रे ॥ क० ॥ २३ ॥ अति सखरी मति रूपनो रे, चिरंजीव नवि कोय ॥ में आगेंथी जाणियो रे, स्थिरता वास न होयो रे ॥ क० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जविजन लोक मली करी, जाये अरिहंत पास ॥ कर जोडी उभा कहे, सुण साहिब अरदास ॥ १ ॥ अमल चलाव्यो कलियुगें, करडो संघले गाम ॥ जीव घणा फाली करी, मूक्या मोहने गाम ॥२॥ करुणाकर करुणा करो,मोहतणो मद फेड ॥ जिणविध ए लोकांतणी,वैरी मूके केड ॥३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जी हो मिथिला नगरीनो ए धणी ॥ ए देशी ॥ जी हो जिनपति जगगुरु बोलिया, जी हो करुणानिधि कृपाल ॥ जी हो जविक जणी आश्वासना, जी हो दे जिनवचन रसाल ॥ चतुर नर चेतो चित्त मऊार ॥ जी हो शिव अभिलाषा थाय छे, जी हो फलशे वंछित सार ॥ च० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जी हो कलियुग शिव पुर जावतां,जी हो रोधक थियो असमान ॥ जी हो पापी पचीयो पापशुं, जी हो हवे वधियूं धर्म ध्यान ॥ च० ॥

॥ २ ॥ जी हो मोह विटंबन जे करे, जी हो जाणुं हुं हुं तेह ॥ जी हो अवसर विण उदासीनता, जी हो धर रहिया निज गेह ॥ च० ॥ ३ ॥ जी हो वीर विवेक वारु अछे, जी हो तुम दुःख फेडणहार ॥ जी हो संयमस्त्रीने परणिने, जी हो जीपशे मोह अपार ॥ च० ॥ ४ ॥ जी हो आखे स्वामी विवेकने, जी हो विलंब न कीजें सार ॥ जी हो निज भुज बल देखाडिने, जी हो थाउ संयम भरतार ॥ च० ॥ ५ ॥ जी हो वीरकुलें ए कन्यका, जी हो वीरव्रता गुण धीर ॥ जी हो शूरभणी परणे सही, जी हो कायरशुं नहीं शीर ॥ च० ॥ ६ ॥ जी हो कन्याना गुण सांभलो, जी हो अनुपम रूप निधान ॥ जी हो बीजी नारी तेणि पेरें, जी हो नहिं छे एह विधान ॥ च० ॥ ७ ॥ जी हो बीजी नारी सेवतां, जीहो देवता नासी जाय ॥ जी हो ए कन्या परण्याथकी, जी हो सेवक सुरपति थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जी हो बीजी नारी चालतां, जी हो पग पग बंधन थाय ॥ जी हो ए बंधनने छोडवे, जी हो परमानंद सहाय ॥ च० ॥ ए ॥ जी हो बीजी नारी जुवानने, जी हो वांछे मननी खांत ॥ जी हो ए गरढा नरने खुशी, जी हो एहनी नवली भांत ॥ च० ॥ १० ॥ जी हो लोकनां दूषण जे अछे, जी हो भूषण एहने थाय ॥ जी हो भूख्यो दूबलो एहने, जी हो मनमां आवे दाय ॥ च० ॥ ११ ॥ जी हो अशन वसन वांछे नहीं, जी हो ऊष्ण न वांछे शीत ॥ जी हो केश न गूंथे एकठा, जी हो भूतल शय्या रीत ॥ च० ॥ १२ ॥ जी हो स्नान विना ए शुद्ध छे,जी हो भूषण विण ए रम्य ॥ जी हो विण जम्यां वलि धारती, जी हो गुण गण रयण अगम्य ॥ च० ॥ १३ ॥ जी हो वस्त्र विना गुपती रहे, जी हो सुरत विना सुखदाय ॥ जी हो प्रेम विना प्रीत धारती, जी हो परम समाधि उपाय ॥ च० ॥ १४ ॥ जी हो नरपति सुरपति ना गमे, जी हो हलधर पण न सुहाय ॥ जी हों एक विवेकी शुद्धशुं, जी हो प्रीति करे मन लाय ॥ च० ॥ १५ ॥ जी हो नियम कर्यो छे एणियें, जी हो राधावेध सधाय ॥ जी हो परणुं पियु प्रीछी सही, जी हो ए आव्युं छे दाय ॥ च० ॥ १६ ॥ जी हो ए कन्या हाजर अछे, जी हो वर तुं वीर विवेक ॥ जी हो परणावे संवर पिता, जीहो ढील न करियें छेक ॥ च० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणी हरखियो, अरज करे मन लाय ॥ हुं तुमने शुं वी नवूं, तुं सर्वज्ञ कहाय ॥ १ ॥ सूंहालो सेवक अछूं, टाढो शीलो जोर ॥ क ठिन सुणीजें कन्यका, वज्रतणी परें घोर ॥ २ ॥ पण तुऊ चरण प्रसादथी, अतुली बल मुऊ जोय ॥ मलयाचल संयोगथी, चंदन तरुवर होय ॥ ॥ ३ ॥ हूकम लह्यो संवर सुता, परणावे सुखकार ॥ साधे राधावेधने, ते सुणजो सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बठी ॥

॥ यत्तनीनी देशी ॥ स्वयंवरा मंम्प मंमावे, तिहां वड वडा नूप बो लावे ॥ हीये निहचें थंन रोपे, अति उंचो सबल आटोपे ॥ १ ॥ आठे आ रा आठ कर्म, अति काठ ते नहिं नर्म ॥ वेगें करी फिरता दीसे, मन वी र विवेकनूं हीसें ॥ २ ॥ वाणी गति विषमाकार, फरे चक्रतणे अनुहार ॥ तिणमांहे तत्त्व ते राधा, रूप पूतली कीध अबाधा ॥ ३ ॥ जीवना जे आठ प्रदेशा, निश्चल मध्य रहे सुदेशा ॥ बीजा असंख्याता जेह, ताता तेल तणी परें तेह ॥ ४ ॥ ते स्थंन तणे अति पासें, क्षमा ऊपर लेइ वा से ॥ धर्म नीरें करीने नरियूं, परमागम कुंम्न कर धरियूं ॥ ५ ॥ निज चे तन कीध कबाण, तिहां धूंनो धीरज बाण ॥ इत राताइ बहुला प्राणी, आइ ऊन्ना कबाणने ताणी ॥ ६ ॥ थंनने पण हाथ लगाया, पण तत्त्व कला नवि पाया ॥ नाखीने तार कबाण, घणा नाठा मूढ अजाण ॥७॥ लोकें बहु हासा कीधा, फिर पाठा चाल्या सीधा ॥ हवे वीर विवेकनी वारी, आवि ऊनो करि हुसियारी ॥ ८ ॥ पहिला जगनाथने वंदे, वलतो गु रुचरण आनंदे ॥ वर तत्त्व कला जे राधा, सीखाइ जेण अगाधा ॥ ए ॥ आव्यो तिण कुंम्नी पासें, ऊाले बाण कबाण उल्लासें ॥ सीधो कुंम्नो ह वे थापे, चरम चक्रतणे रूप व्यापे ॥ १० ॥ कर्मचक्र स्वरूपने देखे, कुंम्न दर्पणमांहि विशेषें ॥ लेइ बाण कबाण चढायो, टंकार शब्द सुणायो ॥११॥ उंची दिशि वाणने वांधे, नीची दृग् करुणा वाधे ॥ नावित करुणा करि गाढी, शुद्ध शील कठोटी माढी ॥ १२ ॥ क्रम चक्र फिरंतो धारी, तिहां अं तर ज्ञान विचारी ॥ राधावेधना ज्ञेपने नेदे, शुद्ध आतम अनुनव वेदे ॥ १३ ॥ तव जय जय शब्द नणीजें, वली धवल मंगल पण दीजें ॥ वरसा

वे फूलने देवा, करे वीर विवेकनी सेवा ॥ १४ ॥ वर माला कन्यायें घाली, पासें जली आठे आली ॥ सखियां ए प्रवचन माता, तसु उपनी अधिकी शाता ॥ १५ ॥ हर्षित हूआ अति प्राणी, तरष्यां ज्युं लाधे पाणी ॥ तिहां परम प्रमोद प्रकाशे, शुज जावना जाव निवासे ॥ १६ ॥ परसंगतणो हुउ त्यागी, सूधो मुनि मुख्य वैरागी ॥ संयमस्त्री परणी नारी, अरि जीपणने हुशीयारी ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोरी चढवानी हती, होंश घणी मनमांहि ॥ पूगी तेह विवेकनी, धरि जिनवरनी बांहि ॥ १ ॥ तीन जुवनमें यश थयो, सारो हे संसार ॥ जाग अधिक ए वीरनो, लाधी संयम नार ॥ २ ॥ प्रेम घणो प्रमदा धरे, प्रीतमशुं रसरंग ॥ विलसे वीर विवेकशुं, अनुपम सुख अनंग ॥ ३ ॥ वासुदेव वली चक्रवर्ती, सुरपति नरपति वृंद ॥ एहना सुखथी पण अधिक, सुख शोजा आनंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ श्रीजिनप्रतिमा हो, जिन सरखी कही ॥ ए देशी ॥ वैरागी सोजागी हो, वीर विवेक ठे, निरुपम गुण मणि राशि ॥ उत्तम आतम हो, निज बल फोरियो, अंतर वास सुवास ॥ वै० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी हो, कर्म उदय करी, दोय परिसह धार ॥ दर्शन मोहथी हो, एक परिसहो, वेदनी थाय अग्यार ॥ वै० ॥ २ ॥ एकज होवे हो, अंतराय कर्मथी, चारित्र मोहथी सात ॥ एहवा परिसह हो, बाविश ऊपजे, सहे खमे दृढगात ॥ वै० ॥३॥ पंच महाव्रत हो, मेरु उपाडिया, तृण जिम न गणे जार ॥ बलवंत म होटो हो, रिपुदल जीपवा, चरण करण हथियार ॥ वै० ॥ ४ ॥ दिन दिन अधिको हो, संयम नारीशुं, अधिक अधिक सस्नेह ॥ तप जप तेजें हो, दीपे अति घणुं, क्रोध दावानल मेह ॥ वै० ॥ ५ ॥ करवतनी परें हो, कत्रिवट दोहिली, शरणे राखणहार ॥ जंगम स्थावर हो, समजावें करी, राखे चित्त मकार ॥वै०॥६॥ इक दिन आवी हो, जिनपति वीनव्या, हुकम करो महाराज ॥ अरिदल जांजी हो, जव जव जयहरु, वालुं शिवपुर राज ॥ वै० ॥ ७ ॥ समयें देखी हो, जगवंत जाखियो, न करो ढील लगार ॥ मोह महीपति हो, हवे तूं जीपसी, नाहिं ठे विघ्न विकार ॥ वै० ॥ ८ ॥ अ

चार कहात ॥ ला० ॥ ७ ॥ आप आपणी नारीने ॥ मु० ॥ लेजो सब ली साथ ॥ ला० ॥ जीत हुशे ए शक्तिथी ॥ मु० ॥ कहियो छे जगनाथ ॥ ला० ॥ ८ ॥ प्रशम सामंतें तब ग्रही ॥ मु० ॥ क्षमा नारी जसु नाम ॥ ला० ॥ मार्द्दव वरी प्रिय नम्रता ॥ मु० ॥ साथ हुई अभिराम ॥ ला० ॥ ए ॥ आर्जव सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ प्रसन्नता नामे नार ॥ ला० ॥ संतोष सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ धृति ललना सुखकार ॥ ला० ॥ १० ॥ विमलबोध शुभ मार्गणा ॥ मु० ॥ लीधी सुंदर सार ॥ ला० ॥ पुरोहित आस्तिक्यबुद्धि ने ॥ मु० ॥ लीधी पत्नी तिवार ॥ला०॥११॥ शोहे सत्यवाणी वधू ॥ मु० ॥ वेदकता मंत्री नारि ॥ ला० ॥ भवमंदा पुत्र ते ग्रही ॥ मु० ॥ नारी प्रेम उदार ॥ ला० ॥ १२ ॥ इणि परें सघले साथीयें ॥ मु० ॥ साथें लीधी नार ॥ ला० ॥ हुकम हुवो साहिबतणो ॥ मु० ॥ वेगें हूइ असवार ॥ ला० ॥ १३ ॥ पांचेइ हथीयार बांधिया ॥ मु० ॥ झगमग ज्योति अपार ॥ ला० ॥ उज्ज्वल शुक्ल ध्यान छे ॥ मु० ॥ हथियारमां शिरदार ॥ ला० ॥ १४ ॥ जहर जोसण गुरुशीख ते ॥ मु० ॥ पहेरी रक्षा काज ॥ ला० ॥ सकल सजाइ लेइ करी ॥ मु० ॥ गमन करे माहाराज ॥ ला० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साधु संयम गजराज दृढ, वरदायी वड वीर ॥ प्रवचन पुरथी चालिया, साथ वड वडा धीर ॥१॥ मोह महीपति जीपवा, शूरा पूरा साथ ॥ वीर बलें धरता थका, जय लक्ष्मीना नाथ ॥ २ ॥ नव नव गुणगण भूमिका, आक्रमता तिणि वार ॥ पसरी कीर्त्ति दहदिशें, हरख्यां लोक अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ पास जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥ वरदायी वीर गाइयें, जग सघलेइ यशवासो रे ॥ हिंसक चोर नासी गया, तम नासें सूर प्रकाशो रे ॥ व० ॥ १ ॥ मिथ्याभ्रम दूरें गया, हवे कपट क्रिया रही दूरो रे ॥ अपूर्व करण करतो हवे, प्रतप्यो निज तेज पंमूरो रे ॥ व० ॥ २ ॥ भूर भविक भट कटकमां, आवीने भेला थायो रे ॥ वाहलें जिम नदियां वधे, रिपु जीपण सबल उपायो रे ॥ व० ॥ ३ ॥ गाम नगरनां भेटणां, नव नवला सम रस लेवे रे ॥ नमता खमता तसु देखीने, उपदेश ते शिरपाव देवे रे ॥ व० ॥ ४ ॥ मंत्री सघलाने कहै, सुख थाशे धरो वीर आणो रे ॥ मोहतणो भय

मेट गयो, हवे धरजो मन शुन ध्यानो रे ॥ व० ॥ ५ ॥ डुःख दोहग दूरें
गयां, गया आधि व्याधि विकारो रे ॥ रोध विरोध विलय गया, समतायें
श्रीसुखकारो रे ॥ व० ॥ ६ ॥ परम प्रतीति प्रगट नइ, घन वूगो ज्युं हरि
गयो रे ॥ पाप ताप दूरें गया, नवि लोकांने मन नायो रे ॥ व० ॥ ७ ॥
श्रीजिनचंद सूरीश्वरु, जसु नामें सुख अपारो रे ॥ दयाकुशल पाठकवरु,
गुरु गिरुआ गुण नंमारो रे ॥ व० ॥ ७ ॥ तासु प्रसादें ए रच्यो, खंम पां
चमो नवि उपकारो रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांनव्यां, लानीजें सुख श्रीकारो
॥ व० ॥ ए ॥ इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालनापाप्रबंधे कंदर्पोत्सवकलि
काल आगमविगमविवेक परिणयन प्रस्थानवर्णन नामा पंचमः खंमः ॥५॥

॥ अथ षष्ठ खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनवास सुवास नित, महोटो महिमा निधान ॥ चरण कमल
श्रीपासनां, प्रणमुं परम प्रधान ॥ १ ॥ इण अवसर हवे मोह नृप, चर
मुख सांनली वात ॥ साधे सघला देशने, वीर विवेक विख्यात ॥ २ ॥ मा
नी मठरालो घणूं, पर उन्नत न सुहाय ॥ निज मंत्रीने तेडीने, आखे चित्त
लगाय ॥ ३ ॥ आयो वैरी ठल करी, सिंहतणी परें एह ॥ पाठा पगलां दे
इने, फिर मांम्यो मति गेह ॥ ४ ॥ में पहिलांही जाणियुं, अवसर सा
ध्यो एण ॥ थें मनमां हरख्या घणुं, नागो कायर एण ॥ ५ ॥ मह्नतणो
वल मह्न विण, जाणे नहिं ठे कोय ॥ मुग्धमने थें मृग अठो, ठल वल
हवे श्यो होय ॥ ६ ॥ नयण प्रमुख बोल्या हवे, सुण स्वामी मोहराय ॥
न करो चिन्ता एवडी, करशुं दाय उपाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपतिने इम वी
नवे, कर जोडीने काम ॥ तुऊ मुख आगें वड वडा वीर ठे, धर धीरज अ
निराम ॥ मो० ॥१॥ ए कूकर ज्युं फिरे अब नासतो, देखाडुं हुं शूर ॥ ख
जूउ त्यां लगी ज्योति करे फिरयो, ज्यां नवि उग्यो सूर ॥ मो० ॥ २ ॥ अ
वसरथकी जे तेज लही करी, नीच हूई डुःख जाय ॥ सूरज ज्योति न
दाहक तेहवी, जेहवी वेलू थाय ॥ मो० ॥ ३ ॥ टीटोडी पंखीनी परें

हवे, पाउ धरे छे एह ॥ भिंभकनी परें सोर करे रह्यो, अल्प लहीने मेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ वरसालाना ज्युं वहे वायरा, ओछाना ज्युं नेह ॥ एहनी पण छे परहछ संपदा, झटक दिखाडे छेह ॥ मो० ॥ ५ ॥ आज न कोइ तुझ जोडें अछे, सुरपति नरपति जोय ॥ संसारी प्रभुता पूरी लही, तुझ सम तुंहीज होय ॥ मो० ॥ ६ ॥ हेला खेलामां जग जीपीयो, तुं गिरुइ गंभीर ॥ नहानाशुं थें सुद्ध करो नहिं, सरिखा सरिखी भीर ॥मो०॥७॥ जनकें काढ्यो घरथी एहने, फरियो देश विदेश ॥ अरिहंत नृप सेवाथी इणे लह्यो, ऋद्धितणो लवलेश ॥ मो०॥ ८ ॥ एहनी चिन्ता मनमां मत धरो, मत ल्यो एहनुं नाम ॥ चणक उछलियो भाठि न भांजशे, लोक उखाणो आम ॥ मो० ॥ ९ ॥ इम सुणी मोह महिपति बोलियो, मलकीने मन मांही ॥ हाथ न देख्या छे तें एहना, तो इवडो मद कांही ॥ मो० ॥१०॥ अवगणना एहवी नवि कीजियें, ए कंभा असराल ॥ वैरी व्याधि न नहाना जाणियें, दुःख सरोवरनी पाल ॥ मो० ॥ ११ ॥ मोह नहीं के एह नहिं हुवे, बेहुमांहे एक वात ॥ अवसर आव्यां टालो किम हुवे, ताप मुखें गले धात ॥मो०॥१२॥ सुद्ध कस्या पण क्षत्री धर्म नवि रहे, न धरुं ममता एह ॥ धर्ममंदिर कहे मोह महा बली,हुकम कीयो सुणो तेह ॥मो०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ पाखंडी सेवक भणी, कहेवे छे वड वीर ॥ मिथ्यावाणी भेरी ए, वजडावो धरि धीर ॥ १ ॥ भेरी शब्द सुणी करी, सज्ज हुआ भट वृंद ॥ जय लक्ष्मी वरवा भणी, मन आणे आनंद ॥ २॥ मन्मथ सुत आदें करी, वड वड वीर नरिंद॥ सज्जाइ सबली करे, भांजण अरिदल फन्द ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥राग मारु अथवा ऋषभ देव मोरा हो॥ए देशी॥ अभिमानी हो राजा अभिमानी हो ॥ मोह महिपति कोपियो, मनमां रुद्र ध्यानी हो ॥ राजा अभिमानी ॥हो०॥१॥ जडता नारी तिणे समे, शृंगार बणावे हो ॥ मांगलिक मुख उच्चरे, अघ तिलक करावे हो ॥ रा० ॥ २ ॥ हिंसा हरिणाक्षी मली, जय मंगल गावें हो ॥ बाल गोपाल सहु भणे, मोह चढतें दावे हो॥ रा० ॥ ३ ॥ पाप शास्त्र भट बोलियो, बिरुदावली नीकी हो ॥ विवेक वीर भी जोर जो, सेना सब फीकी हो ॥ रा० ॥४॥ अनरथ दंड कबाण लेई,

ांकी अति तीखी हो ॥ मति अज्ञान नायडा नखा,बाणावलि शीखी हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ ताप स्वनाव ते टोप छे, तर्जन अति लीधी हो ॥ मद ान्नाह ते पहेरियुं, जिनशाली कीधी हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ मिथ्यावाद वा ात्र घणां, वाजे तिण वेला हो ॥ वज्र थइ शूरा सहु,तब हूआ नेला हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारी कर्मतणो उदे, मुहूर्त्त तिहां साध्यो हो ॥ नीच संग ाज पर चढी, जाणे जय वाध्यो हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ पाप विकार प्यादा ाणा,मुख आगें कीधा हो ॥ आर्त्त ध्यान बंधूक लेई, हवे वंछित सीधां हो ॥ ० ॥ ए ॥ पाप मनोरथ रथ नला, सजिया रण सारु हो ॥ काम विका ़ तुरंगमां, वायु वेग ज्युं वारु हो ॥ रा० ॥१०॥ अति अनिमान ते हाथि ा, पर्वत सम दीसे हो ॥ मेघतणी परें गाजता, मोह देखी हीसें हो॥ रा० ॥ ११ ॥ प्रमाद सेनानी कियो, आप मोहें मान्यो हो ॥ चतुरंग सेनायें ारवस्यो, अब नायक जाण्यो हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ नरपति तेडीने कहे, होजे हवे शूरो हो ॥ तें श्रुतज्ञानी पाडिया, परतो तुज पूरो हो ॥ रा० ॥१३॥ मेरुथकी दक्षिण दिशें, प्रायें परमादो हो ॥ बांध्यो मोहप्रसादथी, अधि को उन्मादो हो ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणपरें जोरो मोहनो, सुणियो वीर विवेक ॥ सज्ज हुवे इक तानशुं, जूजणनी धरि टेक ॥ १ ॥ दृग्गोचर दल मोहनां, इक दिन मलियां आ य ॥ पर दल दरियावेल ज्युं, कायरने मन थाय ॥ २ ॥ आनंद अधि को शूर मन, जाणे आज विवाह ॥ आरण नेलणरो करे, मनमांहे उ त्साह ॥ ३ ॥ जबके दामिनीनी परें, कूदावे हथियार ॥ उन्नमिया आषाढ ज्युं, घोरघटा जलधार ॥ ४ ॥ समरावे रणनूमिका, विषम विदारे दूर ॥ वी र विवेकतणो नलो, राजनीति अंकूर ॥ ५ ॥ हवे मनमंत्री पण तिहां, आवे सुतने प्रेम ॥ क्षण विवेक क्षण मोहशुं, जाय मले छे एम ॥ ६ ॥ तिहां जाये तब तेहनो, जय वंछे मन एह ॥ इण अवसर विच आवि या, संधिपाल सुसनेह ॥७॥ इहां छे अध्यवसाय ते, संधिपाल सुखदाय ॥ पहेली वीर विवेकने, अरज करे मन लाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ उठ कलालणी नर घडो हे, नयणे नींद निवार ॥ ए देशी ॥ सुण

साहिब अम वीनति हो, मन देइने आज ॥ सेवक में नहिं केहनो ह
साधुं अवसर काज ॥ रायजादा वीरा हो, थें राजन ठो रढीयाल ॥ रा० ॥१
ए आंकणी ॥ हित वाणी ठे अमतणी हो,हृदय कमल सुविचार ॥ तुं प्र
आज हुउ सही हो, नाग्यतणे अनुसार ॥ रा० ॥ २ ॥ पण ए मोह नृ
आवियो हो, जूनो राजा तेह ॥ अवगणियें क्युं एहने हो, अनंत युगा
जेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ कटक विकट सबलो घणो हो, वली पूरो परिवार
वड शाखा ज्युं विष नख्यो हो, व्यापि रह्यो संसार ॥ रा० ॥ ४ ॥ व
ट खजीनो कां नही हो, ज्युं मानस अंनोज ॥ सकल क्रियामें सुंदरु ह
कुण ले इणरो खोज ॥ रा० ॥ ५ ॥ इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र जे हो, माने
हनी आण ॥ अवर न को एहवो अठे हो, इणशुं साधे वाण ॥ रा
॥ ६ ॥ जो थें मोह न मानियो हो, एने दोष न कोय ॥ हंस नणी वद
लो नहिं हो, मेह क्युं नूंमो होय ॥ रा० ॥ ७ ॥ बहु जनने जे वाल्ह
हो, तिणशुं क्युं रीसाय ॥ अन्न अधिक प्यारो सहु हो, अंत समे न
हाय ॥ रा० ॥ ८ ॥ पग पग देखूं एहनो हो, लश्कर लांगर जोर ॥ मो
सेना सागर जिसी हो, तुऊ दल एको कोर ॥ रा० ॥ ए ॥ तीन नुव
मां ए अठे हो, तुं इक नरमें होय ॥ ते पण आरजमां वसें हो, तिह
पण नविजीव कोय ॥ रा० ॥ १० ॥ तिहां पण शुन्न मतिमां वसे हो
वली रुचि शुद्ध प्रतीत ॥ ते लोकोनो राजियो हो, तुं ठे लोकातीत
रा० ॥ ११ ॥ ताहरी सेना पण सहु हो, तेहने मिलशे जाय ॥ ते सुख
रलो थोनशे हो, अर्क तूल करे न्याय ॥ रा० १२ ॥ कुण न सेवे तेहं
हो, नव्य अनव्य अपार ॥ कोइक विरलो थोनशे हो, तुऊ वेला निरध
र ॥ रा० ॥ १३ ॥ तुं हमणां वाध्यो अठे हो, घटतां नहिं ठे वार ॥
अनादि वाध्यो रहे हो, अमर कीधो अवतार ॥ रा० ॥ १४ ॥ तुं सेवव
ने सुख दिये हो, अखय अगोचर जेह ॥ उ इन्द्रियने सुख दिये हो, मुख
मीठा ठे तेह ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुं सेवकने दाखवे हो, गिरि कंदर वन व
स ॥ उ आपे सेवक नणी हो, मंदिर नारी विलास ॥ रा० ॥ १६ ॥
परिवारने ठोडवे हो, एकाकी ठहराय ॥ उ मेले पुत्र मित्रने हो, लोकोने
मन नाव ॥ रा० ॥ १७ ॥ बूढा सेवक ताहरा हो, जूना जर्जर तेह
अरण तरुण तीखा घणां हो, तसु सेवक सुसनेह ॥ रा० ॥ १८ ॥ तेह

नणी ते सेंती कीसी हो, खस खूटणनी वात ॥ फिरजावो निज घर नणी हो, अम मन एह सुहात ॥ रा० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहीने चूप करि रह्या, संधिपाल तिणवार ॥ हसी करी वीर वदे तिहां, वाह वाह मतिसार ॥ १ ॥ मोहतणो महिमा कही, जाण्यां वचन विशाल ॥ क्युं कर ठानो होयशे, मा आगें मोशाल ॥ २ ॥ में जाण्यो प्रीठ्यो अछे, छल बल एहनुं दीठ ॥ व्याघ्रमुखें ए शियाल छे, तुमने लागे मीठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वलतो कहे जी, सांनलो थें संधिपाल ॥ वीच करो नल माणसां जी, गुण कह्या आलपंपाल ॥ वी० ॥ १ ॥ मेह वहालो सहुने हुवे जी, हंसने न्याय सुहाय ॥ पंख करे दिन तम करे जी, श्याम कव उज्ज्वल थाय ॥ वी० ॥ २ ॥ मानसवाही हंस छे जी, उज्ज्वल मोति आहार ॥ पंख बेहु धवली करे जी, दूध पाणी करे सार ॥ वी० ॥ ३ ॥ कटक घणुं तसु आखियुं जी, डुंगर-तूस सम तेह ॥ त्यां लगी धूली उमे घणी जी, ज्यां लगी वूठो न मेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ लोह सम ते जगमें घणा जी, हेम ते अल्प तुं जोय ॥ चंदन वन वन नवि हुवे जी, गज गज मोती न कोय ॥ वी० ॥ ५ ॥ तिमिरतणी परें ते घणा जी, सूरज एकज थाय ॥ अंकुश केवडो गज किहां जी, शंकुनी वात उहराय ॥ वी० ॥ ६ ॥ रंकनां वृंद श्यां कामनां जी, एकज श्रीमंत सार ॥ सिंह एको बहु त्रासवे जी, शियालनी कांइ नहिं कार ॥ वी० ॥ ७ ॥ अमर थें एहने आखियो जी, देखश्यां ते हवे आज ॥ कसवटी आपथी आखशे जी, जूठी ए शरदनी गाज ॥ वी० ॥ ८ ॥ बाह्य सुख देखिने राचिया जी, एहना सेवक नूर ॥ अन्तर सुख नवि अनुनव्यो जी, आतम अनुनव नूर ॥ वी० ॥ ए ॥ नोग संयोग जे ए दिये जी, तिहां पण महारुं सुख ॥ एहथी निःकेवल नरक छे जी, घोर अति जोर दे डुःख ॥ वी० ॥ १० ॥ नव जल तारण एकला जी, कुटुंबनुं त्यां नहिं काम ॥ राग करी मोहिया मोहशुं जी, जाणियुं नहिं निज धाम ॥ वी० ॥ ११ ॥ थाहरो वांक इहां को नहिं जी, वड वडा नोलव्या धीर ॥ कृष्ण कलेवर लेइ

जम्यो जी,बलजद्र मोह करी वीर ॥वी०॥१२॥ क्रोधथी कंस चूक्यो सही जी, मान डुर्योधन देख ॥ दंन उदायन नृप मारियो जी, लोज संजूम विशेष ॥ वी० ॥ १३ ॥ कंमरिक प्रमादें पाडियो जी, चंमप्रद्योतन काम ॥ राग थी ब्रह्मदत्त डुःख लह्यां जी, द्वेषथी कोणिक आम ॥ वी० ॥ १४ ॥ व्यस नथी कीचक चूकियो जी, कपिल मिथ्यात्वथी जेम ॥ पाखंम संग कुसंग थी जी, बहु नर चूकिया एम ॥ वी० ॥ १५ ॥ जगत जन पीडिया बहु परें जी, मोह निःकारण शत्रु ॥ तेह अन्याय हुं केम सहुं जी, थें सुणो महा रा मित्र ॥ वी० ॥ १६ ॥ माहरे सेवकें को कहें जी, आचस्यो होय अन्या य ॥ तेहनुं नाम लेइ दाखवो जी,शीख देउं सुखदाय ॥ वी० ॥ १७ ॥ ध र्मथी जय हुवे जगतमें जी, पापथी क्षय कहेवाय ॥ एह बेहु वातां अछे जी, आदरो मन तणी दाय ॥ वी० ॥ १८ ॥ जिम जिम खुंद खमे एहना जी, वली कीयां वचन प्रमाण ॥ तेम तेम ए शिर चढि गयो जी, शीख देउं अजिराम ॥ वी० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणि वीरनां, संधिपाल गया धाम ॥ हवे श्री वीरविवेक नृप, योद्धाने कहे आम ॥ १ ॥ शूरा पूरा सांजलो, आयो छे रण एह ॥ हाथ तमारा देखस्यां, अरि दल कादिम एह ॥ २ ॥ साथी हाथी छो तमें, अरिदल एह करीर ॥ जयलक्ष्मी वरस्यां हवे, जो करशो थें जीर ॥ ३ ॥ हार मुकुट केयूरें करी, शोजा शूरा नांहि ॥ रिपु सन्मुख घायें करी, यश पसरे जगमांहि ॥ ४ ॥ असि धारा तीरथ अछे, देवतणी गति देय ॥ निज जुज बल संजारिनें,साम धर्म धरि धेय ॥५॥ अंगज अंग ने अंगना,राज का ज जीव प्राण ॥ त्यां लगी सघला वल्लहा, ज्यां न मिले अरि बाण ॥६॥ वाहन कवचें शस्त्र जरि,वहे आमंबर एम ॥ अंतरंग साहस विना, जय प द प्राप्ति केम ॥ ७ ॥ बोलो कुण क्यां थोजशे, निज निज लेइ परिवार ॥ कोण कोण केहने जीपशे तब बोल्यो सुत सार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग सोरठ ॥ सेवा बाहिरो कहियें को सेवक ॥ ए देशी ॥ नंदन जव वैराग वदे तब, विनयवंत वरदाय ॥ साहिब आगें निज गुण वर्णन, कहो किण कीधो जाई ॥ नं० ॥१॥ पण साहिब जे पूछी वाणी, तसु उत्त

र हुं आखुं ॥ अरि मुख कालुं पहेली अणियें, टेक नली परें राखुं ॥ नं० ॥ २ ॥ चक्रतणी परें नव नव फेरे, चूर नविकने जेह ॥ विपरित नाव अ नाव वडो अरि, हुं वश करशुं तेह ॥ नं० ॥ ३ ॥ शमरस रस आदि क रीने महारा, अंतर सेवक ताजा ॥ करकंडू आदिक देईने, बाहिज सेवक साजा ॥ नं० ॥ ४ ॥ पंचम गुण गणकनी धरती, देश विरति जयदाई ॥ देशें उंणी पूरव कोडी, मान्य कहुं मन लाइ ॥ नं० ॥ ५ ॥ धर्म ध्यान म ध्यम त्यां जाणो, प्रतिमा श्रावक केरी ॥ खट आवश्यक किरिया कीजें, व्रत लघु शुद्ध विहारी ॥ नं० ॥ ६ ॥ सडशठ प्रकृतितणो तिहां बांधी, मोहत णो मद गालूं ॥ अप्रत्याख्यानतणो क्षय कीधो, वैरकदमी वालुं ॥ नं० ॥ ७ ॥ आनंद ने कामदेव कहीजें, ते मुज सेवक सारो ॥ खट आवश्यक पु रोहित केरो, ए रणखेत विचारो ॥ नं० ॥ ८ ॥ हवे संवेग ने निर्वेद वेउ, लघु सुत नोला शूरा ॥ मोह महिपतिनुं दल मोडुं, नुजबली नीम स नूरा ॥ नं० ॥ ए ॥ बहो सत्तम गुणगण धरती, ते रण खेत बुहाखो ॥ अन्तर मुहूर्त्त स्थिति मति बेहु, चढी उतार निहाखो ॥ नं० ॥ १० ॥ त्रेसठ प्रकृति प्रमत्तें बांधे, सत्तर अठावन्ना ॥ मोहतणुं बल पल पल ठीजे, सहु वदे धनधन्ना ॥ नं० ॥ ११ ॥ निरालंब धर्म ध्यान विशुद्धा, तेहिज अंतर वेली ॥ पां चे पांमव बाहिज सेवक, काढे मोहने ठेली ॥ नं० ॥ १२ ॥ अप्रमत्त गुण गणथी करसुं, अपूर्वध्यान विचारी ॥ गुणश्रेणीयें गुण निज संक्रम, क्रिया दूर निवारी ॥ नं० ॥ १३ ॥ सत्तम अंतें शुक्ल ध्याना, सामो आवे शूरो ॥ मोह महीपतिनुं बल बूटे, अनुनव होय सनूरो ॥ नं० ॥ १४ ॥ इणि परें पुत्रें फोजां काव्या, हवे समकित मंत्री बोले ॥ नवजल तारण पोत प्रवी णो, कुण आवे मुज तोलें ॥ नं० ॥ १५ ॥ ए संसार आदि अपारा, मि थ्यानूषण नारी ॥ त्यां नविजनने हाथ ग्रहीने, हुं कतारुं पारी ॥ नं० ॥ १६ ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व देखाउं, नांजुं कर्म विकारा ॥ श्रद्धा करुणा आ त्मक माहरा, अंतर सेवक सारा ॥ नं० ॥ १७ ॥ बाहिज सेवक श्रेणिक केशव, इत्यादिक बहु लहिजें ॥ क्षायिक नाव खजीनो पामी, विरति क्रिया न वहीजें ॥ नं० ॥ १८ ॥ तेत्रीश सागर किंचित् अधिको, मान कहीजें एही ॥ चोथे गुणगणे बहु लाने, धर्मरागी गुण गेही ॥ नं० ॥ १ए ॥ प्रकृति सत्त्योत्तेर चोथे बांधें, नूंकी प्रकृति निवारे ॥ धर्म ध्यान मंदो सहु दीसे,

आरत रौद्र विचारे ॥ नं० ॥ २० ॥ मोहतणो मंत्री मिथ्यादृग्, ते हुं जीपन जोरें ॥ मोहतणुं दल मुडशे तवही, देखाडे निज तोरें ॥नं०॥२१॥ इणिपरें समकित मंत्रीयें आख्यो, मुक बल कीध प्रकाशा ॥ धर्ममंदिर कहे अधिको कीयो, वीर विवेक उल्लासा ॥ नं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपशम शूरो बोलियो, सुण स्वामी मुक वाण ॥ श्रेणिसुथिर रण आरभो, गुणठाणे गुण खाण ॥१॥ आलस निद्रा भय सकल, दूर निवारुं संग ॥ क्रोध जोधने जीपशुं, नव गुणठाणे रंग ॥ २ ॥ क्रोध दावानल क्रूर छे, संताप्यो संसार ॥ हुं सघलाने सुखकरुं, निज गुण अमृत धार ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र सम भावने, अन्तर मुक परिवार ॥ सागरचंद नाग दत्त बहु, बाहिज सेवक सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल छही ॥

॥ बेडले भार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥ नवमे गुणठाणे वली ऊभा, शूरा पूरा सारा ॥ मोहतणो हवे मद उतारूं, शुक्ल ध्यान हथियारा ॥ महोटो मार्दव शूर सुजाण, अरज करे कर जोडी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गाढो अनमी मान जे वैरी, जीपीश हुं रिपु तेहो ॥ प्राणायाम ते अंतर सेवक, अति बल मन वच देहो ॥ म० ॥ २ ॥ बा हुबली गणधर इन्द्रभूता, ए मुक बाहिर शूरा ॥ अहंकार छोडीने दीधो, अनुभव लीध सनूरा ॥ म० ॥ ३ ॥ आर्जव सामंत तिहां किणे बोल्यो, माया जीपणहारो ॥ शरणस्वरूपी शान्ति शिरोमणि, अंतरंग परिवारो ॥ म० ॥ ४ ॥ राजा पूछ्यो तेणे प्रकाश्यो, माया वचन अबोला ॥ क्षुल्ल क कुंवर प्रमुख मुक बाहिज, सेवक राख अमोला ॥ म० ॥ ५ ॥ मोहत णो जे महोटो सेवक, दंभ कहीजें दरियो ॥ ते पण हुं नवमे गुणठाणे, जीपण बीडो धरियो ॥ म० ॥ ६ ॥ संतोष महोटो सामंत कहीजें, ते हवे बोले एमो ॥ तृष्णा तरल तरंगिणी तरशुं, धरशुं धृति रति क्षेमो ॥ म० ॥ ७ ॥ परम समाधि तणो अंकूरो, ते मुक वहालो जोधो ॥ कपि लादिक मुक सेवक सारा, त्यागी अंतर सोधो ॥ म० ॥ ८ ॥ दशम गुणठा ण ठाम लहीने, सूक्ष्म लोभने जीती ॥ संपरायकी कीरिया सघली, तब थें होय वितीति ॥ म० ॥ ए ॥ उछाह सेनानी तिहांकणे बोल्यो, सुण

स्वामी मुऊ वातां ॥ सघली फोजामें हुं फिरछुं, में लाधी तुम धातां ॥ म० ॥ १० ॥ सघला शूराने उपकारुं, वड वड बिरुद संजारुं ॥ वेद विकार निवारण अंतर, सेवक सखरा धारुं ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्डानुज ने महागिरि मुनिवर,बाहिज सेवक शूरा ॥ सघला शुन्न गुणगणमांहे, वजडावूं जयतूरा ॥ म० ॥ १२ ॥ विमलबोध कोटवाल कहे इम, सुण स्वामी मुऊ वाणी ॥ मोहमहिपतिना चर ऊालूं, निर्णय तुरत पिबाणी ॥ म० ॥ १३ ॥ चर्चन अर्चन अंतर सेवक, दृढमति दृढ धर्म धारा ॥ बाहिज सेवक धर्म रुचि प्रमुखा, बहुविध जक्ति विचारा ॥ म० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें बीजो पण तिहां, निज निज बल परकाश ॥ मोहरायने जीपवा, आणे अधिक उल्लास ॥ १ ॥ वनिता पण सुजटां तणी, हरखी बोले एम॥ जिण विध प्रीतम जूऊशे, में पण जूऊं तेम ॥ २ ॥ निज प्रीतम पासें रहि, करश्यां शस्त्र प्रहार ॥ अबला सबला काम में, करश्यां स्वामी तिवार ॥ ३ ॥ इण परें सघला साथरो, साहस सबलो जोय ॥ राजा वीरविवेक तब, अधिको हर्षित होय ॥ ४ ॥ अधिकाधिक परिणामशुं, पर्यालोचन सार ॥ तेहिज वाजां वाजियां, शिवपद मंगलसार ॥ ५ ॥ इणि अवसर हवे मोह नृप, सज्ज हुई सुविचार ॥ सघला जोधाने कहे, सुणजो ए निर्धार ॥ ६ ॥ चढशे वीर विवेक हवे, रण करवाने काज ॥ ढील न कीजें तो जलो, मुजरो द्यो मुऊ आज ॥ ७ ॥ कुण केही फोजें खडो, माजी होशे तेह ॥ नाम लेइने दाखवो, अरि मुऊ ऊाले जेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी विंढीयानी ॥ मयण वयण तब उच्चरे, सुण तातजी साहिब आज रे लाल ॥ आप मुखें करी आपणी, कीर्त्ति करतां हुवे लाज रे लाल ॥ म० ॥ १ ॥ तृणसम अरिदल जाणजो, दावानल सम मुऊ जोर रे लाल ॥ नासोकड हवे न्हासशे, मुऊ आगल ए वे चोर रे लाल ॥ म० ॥ २ ॥ लघु जाइ श्रीनेमरो, वली आषाढ रुषि नंदिषेण रे लाल ॥ आर्द्रकुमर कुलवालूउ, में जीत्या मन हरखेण रे लाल ॥ म० ॥ ३ ॥ वड वडा शूरा एहना, जीत्या कहुं केतां नाम रे लाल ॥ बल बल करीने वेतस्या, मुऊ साथी वे अजिराम रे लाल ॥ स० ॥ ४ ॥ मणिरथ चंद्र प्रद्योतना, म

धु कुमर अने गर्दनिद्ध राय रे लाल ॥ नाम लेइ केता गणुं, सेवक बाहि
ज कहेवाय रे लाल ॥ म० ॥ ५ ॥ फूल वसंत अंबुद घटा, कोकशास्त्र शृं
गार संजोग रे लाल ॥ स्नान अने मद पान ते, मुऊ अंतर सेवक जोग
रे लाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग वदे हवे सांजलो, हुं जतन करुं रागंध रे ला
ल ॥ मयण तणो पण मित्र बुं, जोडुं हुं सघली संध रे लाल ॥ म० ॥७॥
किहां किहां आंख बे, किहां चंड अबे किहां मुख मुग्ध रे लाल ॥ पर
वाला किहां अधर बे, ए उपमा राग निरुद्ध रे लाल ॥ म० ॥८॥ किहां
हीरा किहां दशन बे, किहां कनककलश मांसग्रंथ रे लाल ॥ किहां वापी
किहां नानि बे, पण रागवशें ए संथ रे लाल ॥ म० ॥ ए ॥ सडण पडण
विध्वंस बे, अंग अशुनतणो नंमार रे लाल ॥ ते देखाडी नोलवुं, जोराव
र राग अपार रे लाल ॥ म० ॥ १० ॥ मीठा मन्मथ बोलडा, मिलवो नि
लवो बहु प्रेम रे लाल ॥ अंतर सेवक बे बहु, माहरे जोरावर एम रे ला
ल ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्दुषेण बिन्दुषेण जे, चिलाती चोर इलापुत्र रे लाल॥
बाहिज सेवक माहरा, पहेलाथी महारा मित्र रे लाल ॥ म० ॥ १२ ॥ द्वे
ष वदे हवे सांजलो, हुं करडो शूरो तुऊ रे लाल ॥ कुण अबे जगमें तिको,
जे करशे मुऊशुं जुऊ रे लाल ॥ म० ॥ १३ ॥ चंम रुद्र बिन्नत्समां, दर्शन
अति नयनो हेत रे लाल ॥ सन्मुख कुण जोई शके, रिपु जिपुं उने खेत रे
लाल ॥ म० ॥ १४ ॥ मत्सर निंदा पिशुनता, संग्राम शराप ने मर्म रे ला
ल ॥ आक्रोशन अति चंमता, अंतरसेवक धर्म रे लाल ॥ म० ॥ १५ ॥
कौरव ने चंमकोशियो, पालक ने संगदेव रे लाल ॥ कमठादिक बहु प्राणि
या, साचवे बे माहरी सेव रे लाल ॥ म० ॥ १६ ॥ हवे मिथ्यामंत्री बोलि
यो, सुण मारी शक्ति अनंत रे लाल ॥ तीन जुवनमां प्राणिया, मुऊ स
न्निध्यथी नामंत रे लाल ॥ म० ॥ १७ ॥ जाति योनि कुल कोडी ए, नहि
कोइ बे ते ठाम रे लाल ॥ सेवक वीर विवेकना, बहु काली पीड्या आम
रे लाल ॥ म० ॥ १८ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, वश पड्यां प्राणी जेम रे
लाल ॥ अंतरंग मुऊ कामना, किंकर सघलाये तेह रे लाल ॥ म० ॥१ए॥
मति विपरीत तणा धणी, पालक कपिलादिक तेम रे लाल ॥ बाहिज सेव
क बहु अबे, पार नावे गणतां एम रे लाल ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्याम शरीरी दूबलो, मींघो जोर अनंत ॥ लाल रंग लोचनधरु, त्रासे तेहथी संत ॥ १ ॥ क्रोध जोध ढे एहवो, ते बोल्यो सुण स्वामि ॥ कुण मुक होड करे इहां, तें दाखे तसु नाम ॥ २ ॥ नयण वयण करी हो ठ बहु, ध्रूजावुं हुं जोर ॥ नरक ज्ञुजंगें बहु वसुं, थोडो बीजी गेर ॥ ३ ॥ चंमन्नाव ‐डुर्वचनता, तामस वैर सराप ॥ ए मुक सेवक शाश्वता, कुण सहे एहनो ताप ॥ ४ ॥ संन्यासी शिशुपाल नृप, कुरुड दीपायन जोय ॥ ब्रह्मदत्त आदें करी, बहु सेवक मुक होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राजीमती राणी इणिपरें बोले ॥ ए देशी ॥ सुणजो स्वामी अंतरजामी, हवे अहंकार कहे शिर नामी ॥ सु० ॥ तीन ज्ञुवनमां वासो मेरो, मानवमांहे देखो घणेरो ॥ सु० ॥१॥ विद्या ज्ञान तणो फल हारे, जे नर होवे माहरे सारे ॥ सु० ॥ गुरुजननो पण माहरे लेखो, मयमत्त हाथीनी परें देखो ॥सु०॥२॥ चक्रवर्त्ति आप तप चाख्यो, मेरो स्वरूप इणीपरें न्नाख्यो ॥सु० ॥ दूर विनीत मुक न्नाव सदाइ, सेवक सेवे चित्त लगाइ ॥ सु० ॥ ३ ॥ चमर दानव ने प्रतिवासुदेवा, लाखे ज्ञानें करे मुक सेवा ॥सु०॥ दंन कहे मुक वातां महोटी, अवसर नावे एह हथोटी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीणा सर्पतणी मुक करणी, अंतरमां कातर अनुसरणी ॥सु०॥ मीठुं बोलुं पाशमां पाडुं, सूक्ष्म बादर निगोद देखाडुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ जूठुं बोलुं ठल बल साधूं, वेश्या संघाती डोह आराधुं ॥ सु० ॥ अंगारमर्दक आषाढन्नूता, कपट करा मुनि न्नारे जूता ॥ सु० ॥ ६ ॥ महाबल वनिता गोत्र जे धरियो, पीठ महापीठ तेहिज वरियो ॥ सु० ॥ सेवक सखरा तिर्यंच मांहे, संसार फेरुं फाली वांहे ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोन्न बोल्यो हुं महोटो वीरो, हुं संसारें जाचो हीरो ॥ सु० ॥ आदर मान दीये मुक देवा, नरवर पन्नग सारे सेवा ॥ सु० ॥८॥ जल थल गिरिवर नूमि पराइ, ते अवगाहुं क्षणमें जाइ ॥ सु० ॥ नूख तृपा तप शीत न जाणुं, लालच नें मुख सब लोन्नाणुं ॥ सु० ॥ ए ॥ ममता आरंन्न मूर्ढा महोटी, कृपण साहस ए सेवक कोटी ॥ सु० ॥ सुनूम चक्री अने नृपनंदा, लोन्नउदय केशरी मुनिचंदा ॥ सु० ॥ १० ॥ अंतर बाहिज सेवक जाका, कोइ न लान्ने अमची माका ॥ सु० ॥ हवे प्रमाद ते शूर

सवाइ, राजा आगें बोल्यो धाई ॥ सु० ॥११॥ उंची पदवी कोइक चढियो, माहरी शक्ति तुरत ते पडियो ॥ सु० ॥ चउदे पूर्वधरे केइ मुनीशा, उपशान्तमोही जेह जोगीशा ॥ सु० ॥ १२॥ तेह निगोदें जाये सीधा, प्रमादना संग जेणें लीधा ॥ सु० ॥ स्नान मज्जन जलकेलि शिखाउं, नाटक चेटक बार देखाउं ॥ सु० ॥ १३ ॥ पासें खेलुं विकथा नाखुं, परनी निंदा ते पण दाखुं ॥ सु० ॥ वैर विरोधना वंश वधारुं, आलस उंघ घणेरी धारुं ॥सु०॥ १४ ॥ तेरे काठिया व्यसन जे साते, तिणसुं मेरे मिलती धाते ॥ सु० ॥ नट विट संगति विषया अंशा, अंतर सेवक मुफ अवतंसा ॥ सु० ॥१५॥ मंगू शैलक मरीच वदीतो,कुंमरीक सौदास में जीत्यो ॥सु०॥ बाह्य सेवक इम केता दाखुं, मुफ गुण निज मुख केता नांखुं ॥ सु० ॥ १६ ॥ धर्ममंदिर कहे प्रमाद घोरा, वीर विवेकशुं न चले जोरा ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें सामंत बोलिया,शूरा पूरा साथ ॥ मोह शील हवे पाखयो, नावे केहने हाथ ॥ १ ॥ जूठी ने सत्यामृषा, डुंद दमामा दीध ॥ हलकारे रण जीपवा, अमलकराए कीध ॥ २ ॥ शुजध्यान अपध्यान बे, आमा साहामा होय ॥ शुद्धाशुद्ध उपयोग असि,महिष वृषन शुद्ध जोय ॥ ३ ॥ अपध्यान नर बोलियो, करि पहिलो हथियार ॥ जोरावर मुफ शस्त्र ठे, इणसुं जीत अपार ॥ ४ ॥ रहनेमी नल राय बहु, चूकायां नर नार ॥ मुफ आगें तूं नां टके,नाश मूक हथियार ॥ ५ ॥ शुद्धध्यान बोल्यो हवे, तुं महेलो मनमांहि ॥ शीख इसी शूरा कहे, तुं कायरनी बांहि ॥६॥ दृढप्रहारी चिलातीयसुत, हत्याकारक जेह ॥ में तार्या एक पलकमें, बांह ग्रहीने तेह ॥ ७ ॥ बहुकालें तुं आवियो, सांकडे माहारे साथ ॥ हवे जीपीने मूकशुं, जो करशे जगनाथ ॥ ८ ॥ इणिपरें बेहु कटकमां, सज्ज थई तिण वार ॥ निज निज बल परकाशता, वदे ते वारो वार ॥ ए ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ बूफनो हवे जूफ सुणजो, नविक जन मन लाय रे ॥ अवर जूफे नरक जइयें, एहथी शिव थाय रे ॥ बू० ॥ १ ॥ मिथ्यात्व तेहिज राति बहुली, ज्ञान नानु प्रकाश रे ॥ तिण समे मांहो मांहि अडिया, नीडिया धरिय उल्लास रे ॥ ॥ बू० ॥२॥ जोध

शूरो क्रोधसेंती, जूफे वीर प्रसिद्ध रे ॥ आवश्यक पुरोहित जूफे, जय प्र तिज्ञा कीध रे ॥ बू० ॥ ३ ॥ नइ नाव ते तुरंग बेसी, जूफे मार्दव रुठ रे ॥ सरल असि हथियार लेइ, धायो मानने पूठ रे ॥ बू० ॥ ४ ॥ आर्जव ने संतोष बेहु, विवेकना वड वीर रे ॥ माया लोजशुं सबल जूफे, कां न करे तकसीर रे ॥ बू० ॥ ५ ॥ अतिघोर पहिला रूप जाणो, अनंतानुबंधि या चार रे ॥ छेदवा अपूर्व करणें, हुउ क्षेमाचार रे ॥ बू० ॥ ६ ॥ स्याद्वा द सिंधुर बेसि आवे, मंत्री सम्यक् दृष्टि रे ॥ आस्तिक्य आयुध हाथ लेइ, बोलावे रिपुदृष्टि रे ॥ बू० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व मोहनो मंत्री आयो, पंच रूप विकार रे ॥ एक घायें हण्या पांचे, समकित जोर अपार रे ॥ बू० ॥ ८ ॥ उपशमादिक वीर संग लइ,अप्रत्याख्यानी शत्रु रे ॥ गुणठाण च ढतां नूमि चांपी, अरण्या हरख्या मित्र रे ॥ बू० ॥ ए ॥ हवे तिहां नय वैराग्य वीरें, वही आयो ज्यां मयण रे ॥ सज्ज हूई मदन बोल्यो, सांजल मोरां वयण रे ॥ बू० ॥१०॥ विषमशर हुं जगतजीता, तें सुण्यो नहिं कान रे ॥ माहरां बाण ते उरग सरिखां, उतारुं तुफ मान रे ॥ बू० ॥ ११ ॥ नासवानी कला ताहारी, तातनीशरे थित्त रे ॥ तुं नाश हवणां कहुं तुफने, पस्ताइश तुं चित्त रे ॥ बू० ॥ १२ ॥ पुरुष नारी षंढ वेदें, रूप कीधां म यण रे ॥ वचन ए वैराग सुणिने, कोपियो कहे वयण रे ॥बू० ॥ १३ ॥ तीन रूपें हुं न बीहुं, सांजलजे तुं काम रे ॥ प्रबल पायक ताम दीसे, ज लद नावे जाम रे ॥ बू०॥१४॥ इम कहीने पेहेला, तिणे ते षंढनारी वेद रे ॥ शूर थइ वैराग्य वीरें, अरितणो कियो छेद रे ॥ बू० ॥ १५ ॥ उदासी नता गज राज चढिया, बरछी अनित्यता नाव रे ॥ संवेग नें निर्वेद नाइ, आया तिण प्रस्ताव रे ॥ बू० ॥ १६ ॥ हास्य ने रति अरति शोकां, छेदि या तिण वार रे ॥ पछे तिणें पुंवेद छेद्यो, नाग विषय विकार रे ॥बू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे वलि सम संतोष नट, रणखेत खुंदे जोर ॥ संजलना क्रोधादि सब, छेदें निज बल फोर ॥ १ ॥ विकट कटक नासी गयो, मोहतणुं बल हीण ॥ जीपे धीर विवेकना, सबल शूर परवीण ॥२॥ डुर्नर संजलना न णी, खंम खंम बहु कीध ॥ दशमे गुणगाणे क्षपक, संतोषें यश लीध ॥३॥ आतम उद्यम जागियो, ज्ञान ध्यान नरपूर ॥ हरख्या वीर विवेक नट, मो

ह सुन्नट चकचूर ॥ ४ ॥ मोहकटकनी योषिता,निजपति पडिया देख ॥ ज ल सूकां ज्युं कमलिनी, जीवन विण तनु शेष ॥ ५ ॥ मोहराय मन चिन्त वे, मुऊ न्नट पडिया नूर ॥ न्नोंय न्नारी हवे नासतां, सन्मुख हो तुं शूर ॥ ॥ ६ ॥ शूर न्नणी दोय गति कही, जय अथवा ठे नाश ॥ क्षपक श्रेणी र ण नूमिमां, आवे अधिक उल्लास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी सूंबना गीतनी ॥ अथवा ॥ लागो सबल संग्राम, लागो सबल संग्राम, बे दल जूऊे नगरी बाहिरें हो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति आप, मोह महीपति आप ॥ आवे हो आवे हो, गज पर बेसी जूऊमें हो ॥ स बला करतो नाद ॥ स० ॥ नासो हो नासो हो, अध्यातम मूकी बूऊने हो ॥ १ ॥ देव दानव कुण होड ॥ दे० ॥ आगें हो आगें हो, नाग न्नय खमियो नहिं हो ॥ बीवरावे अति घोर ॥ बीव० ॥ वड वड हो वड वड उप शम शूरा न्नणी सही हो ॥२॥ धूज्या कायर प्राणी ॥धूज्या०॥ आयो हो आयो हो,मोह महीपति आकरो हो ॥ पीपल पान समान ॥पी०॥ धीरज हो धीरज, न रहे कोइ वातरो हो ॥ ३ ॥ अंधारुं आकाश ॥ अं० ॥ ढाई हो ढाई हो, रजें करी सघली दशे दिशा हो ॥ हाक अधिक हूंकार ॥ ॥ हाक०॥ सुन्नटां हो सुन्नटां हो, उपर शूर पडे धसी हो ॥४॥ लागे सबल संग्राम ॥लागे०॥ बे दल हो बे दल हो,जूऊे बूऊे कोविदा हो ॥ घोडा घो डे घेर ॥घो०॥ हाथी हो हाथी हो,हाथीशुं जूऊे तदा हो ॥ ५ ॥ पायक पायक लाग ॥पाय०॥ माली हो माली हो, मालीशुं न्नीडीया न्नला हो ॥ आवे राय विवेक ॥ आवे० ॥ हाथी हो हाथी हो, बेसी चढती कला हो ॥ ६ ॥ बरठी शुकलध्यान ॥ ब० ॥ ऊगमग हो ऊगमग हो, सोहे हाथे जेहने हो ॥ नव वधूनो परिवार ॥ नव० ॥ साथें हो साथें हो, वपुकारे सहु तेहनें हो ॥ ७ ॥ मोह वदे तब आय ॥ मोह० ॥ वीरा हो वीरा हो, धीरा हवे होशो नहिं हो ॥ नाश तुं चतुर सुजाण ॥ नाश० ॥ थारी हो थारी हो, मूलगी वातां ए सही हो ॥ ८ ॥ धर्म धार तुं माग ॥ धर्म०॥ मूको हो मूको हो, जीवतो तुऊने जाणते हो ॥ सुन्नट पड्या मन ज़ाण ॥सु०॥ बेग हो बेग हो, करशुं अमृत आणने हो ॥ए॥ मो हुंते सब कोय ॥ मो हुं० ॥ जीवे हो जीवे हो, जोधा सघला माहरा हो ॥ शुहर व

हनी न्याय ॥धु०॥ शाखा हो शाखा हो, बेद्यां फिर पल्लवधरा हो ॥१०॥ जीत्या हो त्रणे लोक ॥जीत्या०॥ एहवो हो एहवो हो,मन्मथ तें सुणियो हशे हो ॥ तेहनो गुरु हुं तात ॥ ते०॥ जाणे हो जाणे हो, जूगे क्युं आ तम कसे हो ॥ ११ ॥ वज्र गदा हथियार ॥ वज्र० ॥ मुजने हो मुजने हो लागे नहिं ए सदा हो ॥ मंत्र तंत्र विष व्याल ॥ मंत्र० ॥ नावे हो नावे हो, मुज नेडा कोविदा हो ॥ १२ ॥ में बहुलां रण कीध ॥ में० ॥ कागं हो कागं हो, तरकस हाथ बे माहरा हो ॥ तुं शीलो सुखकार ॥ तुं० ॥ कोमल हो कोमल हो, पुजल तन बे ताहरां हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह राय गर्वें चढयो, वली बोले सुण वीर ॥ बहु वेला तुज हाथ मां, पहिराया जंजीर ॥ १ ॥ आदिम चक्री सुत जलो, नाम मरीच विख्या त ॥ सागर कोडाकोडिमें, फेख्यो एम कहात ॥ २ ॥ रसनेन्द्रिय मुज सेव कें, कंमरीक तुज वीर ॥ क्षणमांहे बांधी करी, सातमी मूक्यो मीर ॥ ३ ॥ सत्यकी श्रेणिक आदि दे, तुज सेवक अति सार ॥ अविरति माहरी नारि यें, बांधी लिया तेवार ॥ ४ ॥ जीत्या केता आखियें, तुं पण नागो तेथ ॥ लाज तजी आयो वली, इयुं खाटिश तुं एथ ॥ ५ ॥ इम सुणी वीर विवे क हवे, उत्तर आखे एम॥ निज मुख इइ प्रशंसतो, लघुता न लहे केम ॥६॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ प्रन्नु नरक पडंतो राखी, वाणी जाणी ॥ ए देशी ॥ राजा एसा वच न न बोलिश, गर्वतणुं तुं गेह हो ॥ शारद जलदनी गाज सरिखी, वाणी जाणी एह हो ॥ रा० ॥ १ ॥ मादल महोटा नाद करे बहु, अंतर पोला जाण हो ॥ अंतें साचा ते नहीं काचा, एह वडानी वाण हो ॥रा०॥२॥ पूर्ण कलश नां बलके नरियो, गला गींकर जोइ हो ॥ उबले तोय अल्प पामीनें, ए उत्तम तुज होइ हो ॥ रा० ॥ ३ ॥ पाकां पीपल पानतणी प रें, खड खड करे तुं आज हो॥ ते खडखड हुं आज उतारुं,जो करशे जि नराज हो ॥ रा० ॥ ४ ॥ मत मुजने तुं शीलो जाणे,धूरथकी हूं क्रूर हो॥ अग्नि ज्वाल उपरथी बाले, मूल हणे जलपूर हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ हुं हिम नी परें गाढो गाढो,तुज दल वृक्ष अपार हो ॥ फांखर कीधा पल नरमांहे, हवें तहारी बे वार हो ॥ रा०॥ ६ ॥ हय गय सेवक सघला नागा, खोइश

खजानो तुझ हो ॥ धिक् धिक् तुझने धीठ दूइने, करवा आव्यो जूझ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन वृंदें शूरे संते, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ता हरी सोह हो ॥ रा० ॥९॥ माहरा सेवक मुझशुं रुशी, कोइक तुझपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ नोलवियो तें नरतनणी बहु, पण नूलो नहिं तेह हो ॥ अनुनव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वे ना इ हणिया, ते सहु कर्त्तव्य तुझ हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिश क्युं मुझ हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दृढप्रहारी वलि देख हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अलेख हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुझ हो ॥ निला वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोश्ये नीरस गुझ हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूउ पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें छोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आयो तिहां वाघ ज्युं, बे जूझ्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें बे जणा, जूझे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूउ स सकाय ॥ ४ ॥ झोही तुं सब जगतनो, पापी पाप निवास ॥ विरुइ विष वेली हती, ते नणी कीजें नाश ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे सारे तुझ काज ॥ नवि छूटें तुं झालियो, यझतणो अज आज ॥ ६ ॥ सुत सहोदर कोई अवर, ऊवट चालणहार ॥ नरपति तसु राखे नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, राखि शकें नहिं तोहि ॥ पापतणां फल आइयां, दोष नहिं छे मोहि ॥ ८ ॥ साक्षीधर हुं हुं सही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अघ वृक्षना, ते मारे छे तोय ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तब, ब्रह्मशस्त्रशुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरण्यादिक प्रकृति, सेवक नाग शेष ॥ जय जय शब्द कराइया, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता फूरे रे योषिता, फूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लन्न तुं डुरलंन्न ठे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय ठे, पूरण मननी आश ॥ तुऊ गुण केता रे दाखवूं, तों वि णश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकवाट ठे, तुं वहालो तेल पूर ॥ तुं सरवर में माठली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं वादल में दा मिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दाडुर चात्तक मोर हे, तुं गिरुउ घन मेह ॥ दर्शन प्यास बु ऊाश्यें, इम किम दीजें रे ठेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अठां, तुं ठे चन्द्र समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ७ ॥ इण परें माया रे योषिता, फुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परि वार जे, बीजो पण गयो आम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हर ख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरनें, शिरपर कीधी रे आय ॥ ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, थारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर त णी परें, तुऊ गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत न्नरत विदेहमें, तुं हिज सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवने, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवह्लल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब शिर सेहरो, न्नूर न्नविक सुखकार ॥ न्नवन्नय हरण हरायवा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आ जथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उ गो अव सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंमूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द्र कलंकी रे होय ॥ मणि तो पत्थर आ खियें, सुरतरुने वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जग

में नहिं दीठ ॥ अधिकुं अमृत पानथी, तुऊ दर्शन अम मीठ ॥ ज० ॥ १ ७ ॥ श्रीजिनराज मया करी,ए ऋद्धि आइ रे तोहि ॥ वीरविबुध शिर से हरो, दिन दिन अधिकी रे सोह ॥ज०॥१ए॥ इणि परें सुरनर किन्नरें,गुण गाया धर्म टेक ॥ धर्ममंदिर धन ते सही, सेवे वीर विवेक ॥ ज० ॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ जयत हूइ जाणी करी, हरखी वीरनी मात ॥ पुत्र समीपें आइने, आखें मधुरी वात ॥ १ ॥ चिरंजीव जीवन जगत, तीन नुवन विख्यात ॥ सुत संगम शीतल इस्यो, चंदन चन्द कहात ॥२॥ साची धारा दूधनी, तें धावी ठे मुऊ ॥ स्वल वत्स तुं हवे थयो,शोन्न वधी बहु तुऊ ॥ ३ ॥ चित्त मनोरथ माहरा, नव्य जीव किध एह ॥ सिद्धि प्रतें पाम्या सही, ए ऊपम सस्नेह ॥ ४ ॥ सिंह समा हुं तुऊ सुतें, गंजि शके कुण मोह ॥ वीजानी मा बापडी, कुण जणशे सम तोह ॥ ५ ॥ अविचल ऋद्धि होजो सदा, धर्म नीति आधार ॥ निज कुल दीपायो खरो, सकल जीव सुखकार ॥ ६ ॥ एह वचन निर्वृत्तिनां, सुणियां वीर विवेक ॥ मध्यनाव नावी रह्यो, निजगुण निर्मल टेक ॥ ७ ॥ रण खेतर रह्यो मोहनो, सघलोई परिवार ॥ एक तात मन तिहां किणे, जीवतो दीठ तिवार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ पियु चले परदेश, सबे गुण ले चले ॥ ए देशी ॥ तिण वेलां त्यां वीर विवेकें तातने, निरख्यो परख्यो खीण खरो तसु गातने ॥ नांहि विलेपन कर्म तणो नहिं अति घणो, अति नहिं चंचल अंचल ऊपम किम नणो ॥ १ ॥ मूके बहु निःश्वास आश मन संन्नरे, मोहशुं सबलो स्नेह मेह आंसू ऊरे ॥ आथमियो मोह सूर निशि सहू को कहे, सिंह गयो जिम हरिण वनमां आवी रहे ॥ २ ॥ राज काज सुख साज सहु मुऊ हाथथो, रागादिक परिवार प्रवर्तनो नाथ थो ॥ हैं हैं दोषी देव तें ए वडो शुं कियो, चिन्तामणि मोहराय नन्नासीने दीयो ॥ ३ ॥ नक्ति युगति नरपूर नली परें मुऊ हती,हवे कुण करशे सेव देव मन नावती ॥ विरह विलाप संताप तातने जाणीने, आयो राय विवेक नेक मन आणीने ॥ ४ ॥ वीर कहे सुण वात तात हवे माहरी, ए मार्यो जे मोह सोह सवि ताहरी ॥ तीन नुवन डुःखदाय राय मोह ए हतो, पाप ताप

बहु व्याप कला गुरु ए हतो ॥ ५ ॥ जीव हणाय वणाय वहे जूगे सदा, पर धन हरण परदार सेवे छे ए मुदा ॥ मित्रशुं द्रोह विछोह करी धन मे लवे, निशिदिन मदिरा पान खान छाक्यो लवे ॥ ६ ॥ जीव भणी ए नर क निगोद लइ फेरवे,भूख तृषा तप शीत रीत पण जेरवे ॥ आधि व्याधि बहु साध अगाध समुद्र छे,ज्ञान ध्यान बुध पान भणी मुनि क्षुद्र छे ॥७॥ कर डो एह कपूत कुकर्मतणो धणी, एहना बहु अपराध सह्या में अवगणी ॥ धिक् धिक् तुजने प्रेम जे मोह वधारियो,शान्ति प्रकृति मुज जाण तिहांथी वा रियो ॥ ८ ॥ निवृत्ति ताहरी नारी सारी पुत्र हूं हतो, हवे मुज घरमें आ वणरो कर तुं मतो ॥ लोक कथीरतणी भूषा तुज तनु हती,हेमतणी हित सोह तोहि दूखही रती ॥९॥ देवनिरंजन ध्यायो आयो मुज गेहमें, आल पंपाल विचार विकारे कारमे ॥ लोक कहेशे वाह वाह मंत्री तो भणी, भक्तिभाव भरपूर करश्यां तुम तणी ॥ १० ॥ एह वचन सुणी मंत्री वि चारे मन करी, वीर विवेक विचार कहे छे हित धरी ॥ पण माहरी सुख वात धात मोहशुं मिले, विरशुं नवली प्रीत रीत कहो किम भिले ॥ ११ ॥ एहनी माता शाता मुजथी नवि लही, ते दुःख हियामांही नाहिं कहो किम सही ॥ पुत्रवधूने हाथ साथ जीमण हूशे, आंगुलियानीशान तान मन ने कशे ॥ १२ ॥ भववैराग्य प्रमुख ए कहेशे मो भणी, तात तणो नहीं बाप साप ए घरधणी ॥ पुत्रतणे बहु मान न कोइ विचरशे, तो पण भय णां शान वान उतारशे ॥ १३ ॥ रत्नराय मन भंग मिले कहो किणि परें, शीलभणी कोपाय वास भेलो वसे ॥ साप डंशीशें धार कहो कुण नर र हे, ए उपम अवधार विचार मंत्री कहे ॥ १४ ॥ मोह दशा विपरीत जी त नवि अनुसरी, तो क्युं रहियें नेह गेह किणशुं धरी ॥ मनमेलुं परि वार सार विण रस नहिं, तोशुं ए घर वास दास परनारही ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम आलोची मंत्रवी, दीरघदर्शी एह ॥ वीर विवेक भणी कहे, सुण सुपूत सस्नेह ॥ १ ॥ तुज वाणी हितकारिणी, मीठी अमृत धार ॥ पण परचित्त चिर कालनो, मोह हूतो मनोहार ॥ २ ॥ एह गये थइ ना रहे, मन मंत्री निर्धार ॥ इणशुं वाचा में करी, हुं थारी छुं लार ॥ ३ ॥ बोल कोल किम पलटियें, उत्तम ए आचार ॥ ते संबल सखरो दियो, हितशि

क्षा सुविचार ॥ ४ ॥ तुं आज्ञा दे मंत्रीने, ज्युं करे अग्नि प्रवेश ॥ अति आग्रह कीधां थकां, वींददीयो आदेश ॥ ५ ॥ चढी गुणगणे बारमे, नाव तीर्थ जल स्नान ॥ स्नातक क्षायिक कुंममां, शुद्ध हुयो बहु मान ॥ ६ ॥ अंतराय प्रचला प्रमुख, इंधण कर्म विशेष ॥ शुक्ल ध्यान पायक प्रबल,मन मंत्री शुद्ध शेष ॥ ७ ॥ साखी वीर विवेक हुय,वली बीजो परिवार ॥ गत वीर जग तीवेद हुय, नस्म थयो तिणवार ॥ ८ ॥ मूल ज्योति परगट नइ, प्रगट्यो चेतन राय ॥ इण अवसर हवे मूलगी, चेतन राणी आय ॥ ए ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ थारो केशरियो कसनीनो ॥ ए देशी ॥ अब चेतना श्री वीनवे राणी ॥ सुणजो साहिब जी ॥ आज अवसर पायो मनहर प्राणी ॥ सु० ॥ हुं एटला दिन जे तुमपें नाइ ॥ सु० ॥ ते सब गुनहो वकस्यो मन लाइ ॥ सु० ॥ १ ॥ हुं अविहड नेहो मनमां धरती ॥ सु० ॥ हवे आप मिल्या ज्युं मेहने धरती ॥ सु० ॥ हवे जूआ न हूआ कबही वहाला ॥सु०॥ रूख मारो माया दोषी काहला ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे हुं तुम चरणनी हुइ दासी ॥ सु० ॥ ज्युं मानसरोवर हंसी वासी ॥ सु० ॥ ए मोह अने मन मंत्री थारे ॥ सु० ॥ तब तांइ रुसणो हूतो मारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ इतरा दिन माया जालें बांध्यो ॥ सु० ॥ हवे परमानंद पद पूरण लाध्यो ॥ सु० ॥ इतरा दिन वयरी वश पडियो ॥ सु० ॥ तिहां बंधन संधन सबलो अडियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ हवे ज्ञान गुलाब करी अंग नीनो ॥ सु० ॥ थारो मूलगा रूपरो मुजरो कीनो ॥ सु० ॥ मानुं वादल मूक्यो सूरज शोहे ॥ सु० ॥ मानुं राहें मूक्यो शशिधर मोहे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मानुं निर्धूम पावक प्रबल सुहायो ॥ सु० ॥ मानुं माटीथी ए कंचन आयो ॥ सु० ॥ जाणे खाण खणंतां माणक पायो ॥ सु० ॥ तुं अनुपम दीपक तेज सवायो ॥सु०॥६॥ ए हेम तणो सिंहासन देवा ॥ सु० ॥ रचियो ठे बेसो करशे सेवा ॥ सु० ॥ उपदेशदियो हवे मनने रंगें ॥ सु० ॥ नवि लोक नणी सुख तुमचे संगें ॥ सु० ॥ ७ ॥ इम वयण सुणी पटराणी केरां ॥ सु० ॥ हंस राजाने मन हर्ष घणेरा ॥ सु० ॥ हवे प्यारी केरो विरहो नांही ॥ सु० ॥ निजरूप विराज्यो निज गुणमांही ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय शब्द सहु नणे, धन धन तुं माहाराय ॥ न्यायधर्मे दीपा वियो,तेरम गुणगणां पाय ॥१॥ निज पद प्रजुता पद लह्यो, लाधो मूलगो राग ॥ बंधन अरि दूरें गया, परमहंस नृप राज ॥ २ ॥ सुरपति नरपति नावशुं,मन मद मठर ढोडि ॥ नव नय बंधन मूकवा,सेवे ढे कर जोड ॥३॥ वाणी इणि परें नांखशे, नविजनने उपकार ॥ निज गुण परगुण कर्म रिपु, विवरो धरजो सार ॥ ४ ॥ मोहराय जीत्या विना, शिवपद लहियें केम ॥ जीपणनी विधि में कही, सघली मांफी एम ॥ ५ ॥ विनय विवेक विचार णा, आतमनो गुण एह ॥ वस्तुथकी जोतां थकां, उपावन धरी नेह ॥६॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ कपूर हुवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ ग्रामणी आगें ए कह्यो रे, सघलो ए विरतंत ॥ परम हंस हुं इणी परें रे, हुउं निरख तुं संत रे प्राणी ॥ कर श्री आतमधर्म, जीपीजें ज्युं कर्म रे प्राणी ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हंस नाम ते माहरुं रे, मूल गुणें निर्धार ॥ रूढ नाम ते धर्मरुचि जी, एह अरथ अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ माया मोह ए में किया जी, नाना रूप प्रकार ॥ सुमति विवेक विना सहू जी, नरिया पाप नंमा र रे प्राणी ॥ क० ॥ ३ ॥ आपद संपद नवि लहे जी, ज्ञानतणो कियो मान ॥ नूलो नामक नावशुं जी, न धयो निरंजन ध्यान रे प्राणी ॥ क० ॥ ४ ॥ बहुविध जीवायोनिमें जी, बहुविध धरियां नाम ॥ नानाविध त्यां दुःख सह्यां जी, सघली फरसी गाम रे प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ समयतणो बल साधीनें जी, श्रीपरमेष्ठि पसाय ॥ मलिया विवेक वैराग्यशुं जी, में जी त्यो मोहराय रे प्राणी ॥ क० ॥ ६ ॥ मोह जीप्यो माया गई जी, नागा वि षय विकार ॥ निज गुण मणि करि शोनतो जी, परतिख देख तुं सार रे प्रा णी ॥ क० ॥ ७ ॥ चेतना पटराणी मली जी, नीके निर्मल नूर ॥ सतीय शिरोमणि शोनती जी, दीगे आनंदपूर रे प्राणी ॥ क० ॥ ८ ॥ राणी गुण केता कहुं जी, गणतां नावे पार ॥ अविचल पद हवे एहथी जी, ग्रामणी तुं अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ ए ॥ कर्म नरम दूरें गया जी, आयो आप स्वनाव ॥ ज्ञान सूरज उग्यो सही जी, नागो विकल विनाव रे प्राणी ॥ ॥ क० ॥ १० ॥ इम सुणी ग्रामणी आखशे जी, साची सघली वात ॥ ए

भव मुऊनें तें दीयो जी, नेदाणी मुऊ धात रे प्राणी ॥ क० ॥ ११ ॥ मोह माया करी नवि लख्यो जी, एह स्वरूप विचार ॥ मिथ्या तिमिर दूरें गयां जी, स्वामी मुऊने तार रे प्राणी ॥ क० ॥ १२ ॥ भूर भरम नाशी गया जी, सूरज साचो दीठ ॥ ए विरतंत में अनुभव्यो जी, अमृतथी बहु मीठ रे प्राणी ॥ क० ॥ १३ ॥ आप समोवड मुऊ करो जी, अवधारो अरदास ॥ चरण न बोडुं ताहरां जी, बोडि विभवनो पास रे प्राणी ॥ क० ॥ १४ ॥ संवेग निर्वेद देखिने जी, धर्मरुचि अणगार ॥ देशे दीक्षा तेहने जी, आणी मन उपकार रे प्राणी ॥ क० ॥ १५ ॥ ग्रामणी दीक्षा लेइने जी, रहेशे गुरुनी साथ ॥ तप जप संयम खप करे जी, होशे सहुनो नाथ रे प्राणी ॥ क० ॥ १६ ॥ ग्रामणी कर्म खपाइने जी, लेहशे केवल ज्ञान ॥ लोकालोक विलोकशे जी, अनुपम रूप निधान रे प्राणी ॥ क० ॥ १७ ॥ मुक्ते जाशे मुनिवरु जी, ए जिनधर्म पसाय ॥ धर्ममंदिर गणि तेहनां जी, चरण नमे चित्त लाय रे प्राणी ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी एकदा, अवसर समयो देख ॥ हंसरायने वीनवे, वारू वात विशेष ॥ १ ॥ ज्ञान अंतर दर्शन वली, अनंत वीर्य सुखकार ॥ अविचल पद पुर परगडो, तिहां जइयें अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ अस्थिर आ संपदा रे ॥ ए देशी ॥ काया नगरी कारमी रे, अशुचि तणो भंमार ॥ सात धात नव बारणां रे, मांस रुधिर विस्तार ॥ वालेसर वीनवो रे आ तम तुं अवधार ॥वा०॥ ए आंकणी ॥१॥ चर्म मांस आंता शिरा हाडें करी रे, बंधाणो जस बंध ॥ लाल सिंहासन मल मूत्रशुं रे, वास रह्यो डुर्गंध ॥ वा० ॥ २ ॥ दमक चमक कंचन जिसी रे, परि पुजल परसंग ॥ सुरति मूरति सोहिणी रे, क्षणमें पामे भंग ॥वा०॥३॥ मणिमुक्ताफल ए नहिं रे, कंचन रंग न होय ॥ मोही जन मोही रह्या रे, वार वार मुख जोय ॥वा०॥४॥ अन्न पान घृत गोल जे रे, सखरां फल फूल पान ॥ चूआ चंदन अरगजा रे, तनु संगें मणि जाण ॥ वा० ॥ ५ ॥ नक्र चक्र मछ कछपा रे, नकुल उंदर सिंह साप ॥ भूत प्रेत मंत्र शाकिनी रे, गुल्म ग्रंथि वात ताप ॥वा० ॥६॥ चक्र धनुष बाण खड्ग जे रे, बरछी तुंब बंदूक प्रहार ॥ इत्यादिकथी

नय धरे रे, पग पग विघ्न विकार रे प्राणी ॥ वा० ॥ ७ ॥ रोग शोक रिपु रोषथी रे, सबलो तनु सूकाय ॥ दुष्ट दृष्टि रूपि कोपथी रे, नस्म समोवड थाय रे प्राणी ॥वा०॥७॥ स्नेह राग शोप नयथकी रे, कोमल तनु कुमलाय ॥ अति आहार शीत तापथी रे, घात पात वश थाय रे प्राणी ॥वा०॥ए॥ अंग संग पंक नीरमें रे, वसीयो कमल समान ॥ सर्पशिरें ज्युं मणि रहे रे, आप अलेप सुजाण रे प्राणी ॥ वा० ॥ १० ॥ पांच नूत जड एक मिल्या रे, नाम कर्म संयोग ॥ तुं पवन प्रकार लही करी रे, ज्युं वादलनूं जोर रे प्राणी ॥ वा० ॥ ११ ॥ चिदानंद तुं ज्योति बे रे, अविनाशी अविकार ॥ इहां रहेवुं तुऊने नहिं रे, आपो आप विचार रे प्राणी ॥ वा०॥ १२ ॥ अनंत वार लेइ मूकियां रे, एहवा देहस्वरूप ॥ हवे कांहीं धरवूं नहिं रे, स्वयंरूप चिडूप रे प्राणी ॥ वा०॥ १३ ॥ एह वचन निज नारीनूं रे, मान्यूं आतम राय ॥ परम ब्रह्म पद पामवा रे, कीधो एह उपाय रे प्राणी ॥ वा० ॥१४॥ जोग निरुंधन साचवे रे, तन मन वचन प्रकार ॥ प्रकृति पच्चासी बोडवे रे, लागीथी ज्युं बार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १५ ॥ गुणगण चौदमे स्थिर रहे रे, लघु अक्षर पंच सार ॥ चेतना राणी परवस्यो रे, जाये मुक्ति मऊार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १६ ॥ बाण बुटो जिम धनुषथी रे, निर्लेप तुंबी देख ॥ दीप शिखा उंची धसे रे, युगतें कीध विशेष रे प्राणी ॥ वा० ॥ १७ ॥ अतुली बल ए आतमा रे, एक समयमां जाय ॥ रिजुगति समश्रेणें करी रे, परमानंद पद थाय रे प्राणी ॥ वा० ॥ १७ ॥ परम ध्यान पद पामियो रे, परम मंगल परकाश ॥ धर्ममंदिर कहे ए सुण्यां रे, थाये अधिक उल्लास रे प्राणी ॥ वा० ॥ १ए ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ प्रणमी पास जिनेसर केरा ॥ ए देशी ॥ हवे शिवपद गुण स्थानकगुण गुणियें, आगम अर्थथकी ज्युं सुणियें ॥ अचल अक्षय पद एहज कहियें, चौदे राज शिरोपर वहियें ॥ १ ॥ नर लोक जेती लांबी पहोली, बत्राकारें अतिही धवली ॥ सिद्ध शिला उपर आकाशें, निज निज अवगाहन करी नासे ॥ २ ॥ ज्ञानावरण गयाथी पायो, केवल ज्ञान अनंत समायो ॥ दर्शनावरण गयाथी आयो, दर्शन अनंततणो सुख नायो ॥ ३ ॥ चारित्र क्षायिक

समकित लीधो,बेडु मोहतणो क्षय कीधो ॥ वेदनी जातां अनंत सुख सारा, अनंत वीर्य हूआ विघ्न निवारा ॥ ४ ॥ अक्षय स्थिति हूइ आयु खपाया, क्षायिक पारिणामिक तसु भाया ॥ नाम कर्म गया ते अशरीरी,गोत्र गया अवगाहन धीरी ॥ ५ ॥ गर्भ प्रसवनी वेद न वांही, वेदनी कर्मतणो बल नांहि ॥ विषय कषायतणा भय नावे, योग वियोगनो दुःख न पावे ॥ ६ ॥ लेवा देवा न करे सेवा, धन वन मनरी ममता न धरेवा ॥ जल थल जाउं आवूं जोरा, तिहांकिणे केहनो न चले तोरा ॥ ७ ॥ डंस मसक कुड जीवनी पीडा, माखी भमरी कीडी तीडा ॥ वींबु शाप विरोधी जीवा, नांहीं अंधारो नांही दीवा ॥ ८ ॥ साते भयनी का नहिं भीति, रितुपालटणरी का नहीं रीति ॥ मंत्र यंत्र को जाणां जोशी, नहीं को गायां भेसां घोसी ॥९॥ राजा रंक न कोइ लोका, आधि व्याधि नहिं कोइ शोका ॥ डाकिनी शाकीनी व्यंतर दोषा,आशा पाशा नहीं को शोषा ॥१०॥ अशन वसन नहीं रमणी रंगा, हास विलास तणी नहीं संगा ॥ खाट पाट नहीं पोढी सेजा, रुसे तूसे नहीं को हेजा ॥११॥ भूख तृषा तप शीत न बाधा,कोइ न बोला घाट न वाधा ॥ मंदिर महिल न कोइ विमाना, कोई न करे आदर माना ॥ १२ ॥ तप जप किरिया शील न पाले, दान दया वली कोइ न निहाले ॥ ध्यान नहिं को धर्मनी चर्चा, देवतणी नहिं सेवा अर्चा ॥ १३ ॥ पाप ने पुण्यतणा नहिं बंधा, आश्रव संवरनो नहिं संधा ॥ गुणठाणा नहिं चढण उतारा, ए साधकता नहिंय लगारा ॥ १४ ॥ छेदन भेदन नांहि को खेदा, शोषण तोषण वर्णन वेदा ॥ शब्द रूप रस फरस न गंधा, स्थिति गति सुख दुःख नही प्रतिबंधा ॥ १५ ॥ उपम दीजें एहनी कीकाइ, ते जगमांहे वस्तु न कांइ ॥ ज्योति रूप तणे अनुसारें, पंडित नर मनमें अवधारे ॥ १६ ॥ सुरपति नरपतिनां सुख जेतां, सघलां भेलां कीजें तेतां ॥ तेहथकी अनंत कहीजें, संपूरण सुख ते नवि छीजे ॥ १७ ॥ केवल ज्ञानी शिव सुख देखे, कही न शके ते सुख सुविशेषें ॥ इन्द्रियनां सुख ते दुःख लेखे, संसारी मीठां करि देखे ॥ १८ ॥ स्थिर पद स्थानक इणि परें पायो, भविजन सुणतां सुख सवायो ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन तेहा, ए पद पामे पूरण जेहा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम हंस राजा तिहां, राज करे नितमेव ॥ प्रह उठीने प्रणमतां, मन वंछित ततखेव ॥ १ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ देशी हंसलानी ॥ निश्चें गुण हंस रायना, ते सुणजो हो नविजन मन लाय के ॥ हंस जी नलो नलो ॥ हंस राजा हो अति धवल सुहाय के ॥ हं० ॥ लोकालोक विलोकिने, सुख माने हो निजपद सुपसाय के ॥ हं० ॥ १ ॥ बंधन सवि दूरें गयां, ज्योति प्रगटी हो अतिही उदार के ॥ हं० ॥ अलख अरूपी आतमा, अविनाशी हो परब्रह्म प्रकार के ॥ हं० ॥ २ ॥ अकथ अकर्ता ए सही, चिद्रूपी हो चिदानंद विलास के ॥ हं० ॥ विषयातीत अजीत ए, चिन्मूरति हो चिन्मय सुप्रकाश के ॥ हं० ॥ ३ ॥ अगुरु लघु गुण शोनतो, खेंम रूपी हो माहाधाम निधान के ॥हं०॥ परम प्रबोध प्रकाश ए, संघाती हो शिवरूप प्रधान के ॥ हं० ॥ ४ ॥ ज्ञानादिक गुण शोनता, ज्ञानदृष्टि हो निज सकल स्वरूप के ॥ हं० ॥ निष्कलंकी निर्लेप ए, निःसंगी हो निर्नोगी नूप के ॥ हं० ॥ ५ ॥ द्रव्य गुणें करी एक बे, ज्ञान दर्शन हो चारित्र अनंत के ॥ हं० ॥ संसारी सुख जे धरे, तो तेहने हो दुःख माने संत के ॥ हं० ॥ ६ ॥ अविकारी अविकारनुं, सुख माणे हो निज गुण निर्माय के ॥ हं० ॥ वचन अगोचर एहनां, गुण वर्णन हो केवली न कहाय के ॥ हं० ॥ ७ ॥ संसारी सुख एकठो, सहु कीजें हो मन बुद्धि विज्ञान के ॥ हं० ॥ एहथकी अधिको सही, लवें सत हो सुर सुख निधान के ॥ हं० ॥ ८ ॥ हंस राजा सुख आगलें, अनंत नागें हो हीणो सुख तेह के ॥ हं० ॥ सदा विराजित एहवा, गुण प्रगट्या हो नावे तसु बेह के ॥ हं० ॥ ए ॥ किण इक नृप ज्युं आणियो, निल्ल वननो हो उपकारी जाण के ॥ हं० ॥ सघलां सुख तेहने दियां, नव नवलां हो दियां खान ने पान के ॥ हं० ॥ १० ॥ फिरी ते अटवीमां गयो, आवी मीलियो हो सघलो परिवार के ॥हं०॥ पूबी वार्ता सुखतणी, कही न शके हो सघलो विस्तार के ॥ हं० ॥ ११ ॥ सरखां करीने दाखवे, ते वनमां हो नहिं कांइ वात के ॥ हं० ॥ इणी परें सुख हंस राजनां, कही न शकुं हो सघलां विख्यात के ॥ हं० ॥ १२ ॥ कारमुं सुख संसारनुं, रोग शो

के हो नरियुं नरपूर के ॥ हं० ॥ परम पवित्र प्रधान ए, अघनंजन हो रं जन बहु नूर के ॥ हं० ॥ १३ ॥ महिमा ब्रह्म विलासनी, कही न शके हो सुरगुरु पण एह के ॥ हं० ॥ धर्ममंदिर कहे वंदणा, कर जोडी हो धरि धर्म सनेह के ॥ हं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंगल कारण ए सही, मांगलीक सुखरूप ॥ ज्ञेय ध्येय करी धवल पद, आतम आप स्वरूप ॥ १ ॥ परम देव पण ए सही, तारण तरण सु एह ॥ परम समाधि स्वरूप ए, ज्ञानरतन गुणगेह ॥२॥ ब्रह्मरसायण संग थी, हेम कुधातु विकार ॥ तिम ए अंतर आतमा, परमातमता सार ॥ ३ ॥ त्यां लगि मीठा अवर रस, ज्यां लग ए नव दीठ ॥ ज्यां अमृत चाख्युं नहिं, त्यां जल स्वादो मीठ ॥ ४ ॥ खट् दर्शन नदीयां समां, निज निज नय विस्तार ॥ सघला नय समवायधर, जिन मत सागर सार ॥ ५ ॥ स्याद्वाद मति अनुसरे, ते पामे ब्रह्मरूप ॥ एह विना सघलां गणो, नव संसार स्वरूप ॥ ६ ॥ उद्यम संसारी सकल, सफल निष्फल पण हो य ॥ ए अमोघ फल द्यो सदा, इहां संदेह न कोय ॥ ७ ॥ ज्ञानी ज्ञानें राचशे,अज्ञानी अज्ञान ॥ ज्ञानतणा गुण सेवतां,ज्ञान ध्यान बहु वान ॥८॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ इणिपरें नाव नक्ति मन आणी ॥ ए देशी ॥ धन धन धर्मरुचि श्रीऋषिराया, आत्म धर्म बताया जी ॥ ग्रामिणी प्रमुख नविक जन ताख्या, आतम काम समाख्या जी ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ आतम सुर तरु कामित दाता, काम धेनु विख्याता जी ॥ रत्न चिंतामणि कामित कुंना, आत्म महिमा अचंना जी ॥ ध० ॥ २ ॥ परमातम सेवो नवि प्राणी, ए शिवपद सहि नाणी जी ॥ रसना पामी सफली गणियें, जो जिनधर्म गुण थुणीयें जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ पुण्य पाप बेहुए जवासी, इणथी होय उदासी जी ॥ आतम केरुं रूप निहालो, विषयथकी मन वालो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ निजगुण परगुण बेहू जूके, अंतर गति तसु सूके जी ॥ बाहिज तप जप बहुलां साधे, विरला ज्ञान आराधे जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ देश विराधक ज्ञानी होवे, जो प्रमादने सेवे जी ॥ अज्ञानी किरिया गुण नरियो, देशें आराधक वरियो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ आराधक ज्ञानी आगममें, साचो शुद्ध शम दम

में जा ॥ अज्ञानी आराधक नांहिं, जो तप जप खपमांही जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मांगलीक महोटो धर्म जाणो, मंत्र महा मन आणो जी ॥ नावना सूधी आतम नावो, परमानंद सुख पावो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ ध्येय न गेय न हेय न कोइ, अंतर ज्ञानें जोई जी ॥ प्रह उठीने कीजें प्रणामा, फले मनोरथ कामा जी ॥ ध० ॥ ए ॥ प्रवोधचिंतामणि ग्रंथ प्रसिद्धो, श्रीजयशेखर कीधो जी ॥ मोह विवेकतणा अधिकारा, गिर्वाण वाणी सारा जी ॥ध०॥१०॥ मंदमति जे मनमें आणे, आलस पण अंग आणे जी ॥ तिणे ए ढाला नाषा प्रबंधे, नविजनने सुख संधे जी ॥ ध० ॥ ११ ॥ श्रीजिनधर्म सूरीश्वर राजे, दिन दिन अधिक दिवाजे जी ॥ आदेश तास लही चोमासा, कीधी धर्म उल्लासा जी ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्री मुलतान नगरमें सोहे, पार्श्वनाथ मन मोहे जी ॥ तासु पसायें चोपाइ कीधी, मंगलमाल प्रसिधी जी ॥ ध० ॥ १३ ॥ अध्यातम शैली मन लाइ, सुखानंद सुखदायी जी ॥ धर्म धुरंधर श्रावक संगें, वाधे ज्ञान सुरंगें जी ॥ ध० ॥ १४ ॥ उद्यम आदर एहनो जाणा, ए रचना मन आणी जी ॥ लान थयो मुजने धर्म ध्याना, नविजनने वध्यो ज्ञाना जी ॥ ध०॥ १५ ॥ सतरेशें इकताले वर्षे, उज्ज्वल पक्ष शुन्न दिवसें जी ॥ मागशिर दशमी स्थिर शुनयोगा, चौपाइ थइ सुप्रयोगा जी ॥ ध० ॥ १६ ॥ वडवखती खडतरगण इंदा, युगवर श्रीजिनचंदा जी ॥ नुवनमेरु गणि सुमति सुरंगा, पूज्यतणा शिष्य चंगा जी ॥ ध० ॥ १७ ॥ पुण्य रत्न वाचक परधाना, तासु शिष्य बहु माना जी ॥ दयाकुशल पाठक पद धारी, सुविहित साधु विहारी जी ॥ ध० ॥ १८ ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर गुण गावे, चढती दोलत पावे जी ॥ रूपरत्न सुख संपति वाधे, जो जिनधर्म आराधे जी ॥ ध० ॥ १ए ॥ सुणतां नणतां पाप पलावे, ज्ञान कलादिक पावे जी ॥ जे नर होशे जाण प्रवीणा, ते इण अधिकारें लीणा जी ॥ ध० ॥ २० ॥ मोहतणा जे मेलू होइ, ते इण साहमो न जोइ जी ॥ कहेशे कल्पना कूडी आखी, किण दीठी कुण साखी जी ॥ ध० ॥ २१ ॥ वार विवेकतणा जे नाई, करशे प्रीति सवाइ जी ॥ आत्मज्ञानतणा जे रसिया, तसु मन वचन ए वसिया जी ॥ ध० ॥ २२ ॥ परमादी प्रायें संसारी, शुद्ध उपयोग विसारी जी ॥ आगमथी उपरांठो जे हो, मिछामि डुक्कड तेहो जी ॥ ध० ॥ २३ ॥ ज्ञानतणी ए मंजरी महके,

नव नव ढाले लहके जी ॥ चतुराने ए कंठें ठाजे, आतमगुण धरी राजे जी ॥ ध० ॥ २४ ॥ ब खंमें करी चोपाइ दीपे, मिथ्याजावने जीपे जी ॥ आतमदर्शी अर्थ करेशी, आनंद अंग महेसी जी ॥ ध० ॥ २५ ॥ जाव जक्ति करी जविजन जणशे, जे कोइ आवी सुणशे जी ॥ धर्ममंदिर कहे ए परधाना, आपे नवेइ निधाना जी ॥ ध० ॥ २६ ॥ इतिश्रीप्रबोधचिंतामणौ ढालजाषाप्रबंधे पंमितश्रीधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकसंग्राम हंसराजपरमपदप्राप्ति ब्रह्मस्वरूपवर्णननामा षष्ठः खंमः समाप्तोयम् ॥६॥ अस्मिन्ग्रंथे खंम ६, तन्मध्ये प्रथम खंमे ढाल ७, द्वितीय खंमे ढाल ११, तृतीय खंमे ढाल १६, चतुर्थ खंमे ढाल १३, पंचम खंमे ढाल १०, षष्ठखंमे ढाल १ए, सर्व संख्या ढाल ७६. अस्मिन् ग्रंथे सर्व गाथा संख्या १७१२, श्लोक संख्या २३२५ ॥ इति श्रीपंमितधर्ममंदिरविरचित मोहविवेकरासः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीउपमिति जवप्रपंच आश्रयी धर्मनाथजीनी विनति रूप स्तवन प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित्तवूं, चिंततीर्थंकर चोवीश ॥ जगउपगारी जगतगुरु, ज्योतिरूप जगदीश ॥ १ ॥ आपे आपविचारतां, लहियें आपस्वरूप ॥ प्रगटे ममतातृण बिपे, समता अमृतकूप ॥ २ ॥ जब लग जग जूलो जमे, तब लग शिवपुर दूर ॥ जब लग हृदय न ऊगमे, आतम अनुजव सूर ॥ ३ ॥ मनबंधव विनति करूं, बोडी चपल स्वजाव ॥ सङ्ग थइ संजालियें, आवियें आतम जाव ॥ ४ ॥ केवल चिन्मय चतुर तुं, तूं होंसी तूं हंस ॥ अलख अरूपी अकल गति, अविनाशी अवतंस ॥ ५ ॥ लब्धि सिद्धि लहरी जलधि, महिमानिधि महाराज ॥ मोहादिक वयरी विकट, तिणे लोपी तुऊ लाज ॥६॥ राजकृद्धि तुऊ सवि हरी, दाख्यां डुःख अनेक ॥ अब आतम आलस तजी, चेत चेत धरि टेक ॥७॥ नाम गाम तस दाखवे, उपगारी अरिहंत ॥ आपबलें अरि जीतियें, साहज दे जगवंत ॥ ८ ॥ आराधो आदर करी, अडवडियां आधार ॥ विनय करीने वीनवो, शरणागत साधार ॥ए॥

॥ चोपाइ ॥ पाटणएक अनोपम वसे, नवचक्रज नामें उल्लसे ॥ नयरतणो महोटो विस्तार, आदि नहीं जस अंत न पार ॥ १० ॥ चोविश मारग पोढी पोल, लाख चोरासी चौटां डोल ॥ चौटे चौटे हाट अनेक, वाणिक व्यवहारी नहिं छेक ॥ ११ ॥ व्होरे वणजे वस्तु अनंत, वसे घणा त्यां संत असंत ॥ बहु धनपति निर्धन पण घणा, नाटक कौतुक नी नहिं मणा ॥ १२ ॥ कोइ उपराजे कोइ निर्गमे, जला चतुर त्यां जूला जमे ॥ शेरी शेरी नव नव साथ, विठ्यां साजन नावे हाथ ॥ १३ ॥ थोक थोक जन जोई नाट, जोइ जोइ जाये जुइ जुइ वाट ॥ उपजे विणसे वस्तु असंख्य, तेहतणी कुण जाणे संख्य ॥ १४ ॥ चार नयर ते मांहे रहे, पार एक एकनो कुण लहे ॥ पापी पिंजर पशु संस्थान, मानव वास ने बुद्धिनिधान ॥ १५ ॥ रायाराय करम परिणाम, राज करे त्यां अति उद्दाम ॥ जगमां जस परताप प्रचंम, सबल निबल शिर पाडे दंम ॥ १६ ॥ सेव करे जस राणो राण, त्रिभुवन कोइ न लोपे आण ॥ सूरज शशी करे जस चाकरी, आश आशंक जेनी आकरी ॥ १७ ॥ जे कीडीने कुंजर करे, कीडी कुंजर थइने फरे ॥ करे रांक राजाने धसी, राज दीये निर्धनने हसी ॥ १८ ॥ जन परमेश्वर एहने कहे, ब्रह्म विधाता करि सद्दहे ॥ जाग्य दैव खुदा ए होय, अवर न करता हरता कोय ॥ १९ ॥ आठ बंधवे छे जूपाल, तेमां चार महाविकराल ॥ नाण दंसण आवरण अनंत, विघ्नमोहनी अति बलवंत ॥ २० ॥ ए चारे घनघाती कह्या, आतमरूप रोकीने रह्या ॥ वादल विंट्यो दिनकर जिस्यो, राहें जिम पूनिम शशि ग्रस्यो ॥ २१ ॥ जलमांहे कादव जिम मल्यो, लोहमांहे विश्वानल जल्यो ॥ मणिवैडूर्यज मेलो थयो, गइ ज्योती दर्पण काटयो ॥ २२ ॥ इणिपरें रोकी आतम रूप, उपाडी नाख्यो जवकूप ॥ नाण दंसणावरणे आवर्यो, आतम अज्ञानी थइ फर्यो ॥ २३ ॥ जे अनंतबल ते बल हीन, विघनराय कियो जीव आधीन ॥ मोहनीय तो छे डुरदंत, ते आगल कहिशुं विरतंत ॥२४॥ नाम गोत्र आयुप वेदनी, एह वात समजे जेदनी ॥ पुण्य पाप सुख डुःख थइ मले, पिंजरमां प्रभुने सांकले ॥ २५ ॥ त्रस थावर अति सुक्ष्म थूल, पृथ्वी पाणी वन तरु मूल ॥ अग्निवाय कीडी कंथुउ, नामकर्मथी चेतन हुउ ॥ २६ ॥ माखी मधुकर काछब मीन, गोह भुजंगम उंदर दीन ॥ गाय तुरंग

म ऊंट गयंद, हरिण रोफ शीयाल मयंद ॥ २७ ॥ चातक चकवा चास चकोर, नाम नरेसर अतिहि कगेर ॥ पशुसंस्थान नयर मांहिं न्नख्या,एम प्राणी बहु रूपें कख्या ॥२८॥ निखररूप कीधा नारकी, नामकरम आज्ञा मारकी ॥ विबुध निधान नयर जनघणा, कीधा सुंदर सोहामणा ॥ २९॥ मानववास वसे मानवी,तेहनी पेर किधी नवनवी ॥ कोइ सुंदर कोइ कुत्सित अंग, कोइ गोरा कोइ काजल रंग ॥३०॥ कोइ ऊंचा कोइ अतिवामणा, कोइ सुखिया कोइ डुखी दूमणा ॥ कोइ सुसर कोइ दूसर हुआ, सकल लोक गुण इम जूजुआ ॥ ३१ ॥ गोत्रकर्मनो जुत्तविशेक, निर्मलवंश किया नर एक ॥ एक कीया माणस कुलहीन,निर्बल निर्धन निर्गुण दीन ॥३२॥ आयुरायनो ए अधिकार, हडिबंधन बांध्यो संसार ॥ तेहना हुकम थयाविण सरे, कोइ न्नवांतर नवि संचरे ॥३३॥ रायवेदनी रंगे रमे,सुख असुख थइने परिणमे ॥ ए चारे न्नवना थिर थोन्न, जिम मंदिरना मंन्नन मोन्न ॥ ३४ ॥ हवे कहिशुं मोहनीय नरेश,जिणे जीत्या सवि देशविदेश ॥ जिणे जीत्या सवि सुर नर राय, मुनि केताइ लगाव्या पाय ॥३५॥ एहतणो पोढो परिवार, नाना महोटा सवि फुंफार ॥ एहनुं मन अटवीमां वास, इंडादिक सेवे जिम दास ॥ ३६ ॥ नदी प्रमत्तता डुर्मति नीर, चित्तविक्षेप मंन्नप तस तीर ॥ बेसे चतुर तृष्णा चोतरे, विपर्यास आसन ऊपरें ॥ ३७ ॥ बल साते बंधवनुं एह,पुष्ट करे आणी मन नेह ॥ एहथी राय कर्म परिणाम, राज्य करे अविचल अन्निराम ॥३८॥ मोह तणी पटराणी सार,माहा मूढता नामें नार ॥ कंत कामिनी सबल सनेह,एक जीव दीसे दोइ देह ॥३९॥ मिथ्या दर्शन महेंतो तास, सदा रहे नरपतिने पास ॥ स्वामिन्नक्त सबलो बुधिवंत, राजकाज सवि चलवे तंत ॥ ४० ॥ त्रण जग वरते जेहनी आण, वश कीधा सवि जाण अजाण ॥ मोहरायना सवि आरंन्न, थोन्नावण जाणे थिर थंन्न ॥ ४१ ॥ जे अर्धांगें राखे नार, करे जपमाला कर हथियार ॥ हसे रुवे तुसे दे श्राप, तेवा देव मनाव्या आप ॥ ४२ ॥ जे आरंन्नी जे परिग्रही, जस बहु तृष्णा तृप्ति नहीं ॥ घरबारी जे गुरु पूजाय, ए सवि महेंता तणो उपाय ॥ ४३ ॥ होम हवन हिंसा ज्यां घणी, दया दान मूक्या अवगणी ॥ जिम जग एवे धर्मे धसे, तिम मिथ्यामति महेंतो हसे ॥ ४४ ॥ वीतराग जे निर्मलदेव, तेहनी न करे न्नावे सेव ॥ ब्रह्मचारी विरति गुणवं

त, ते ज्ञानी गुरु नावे चित ॥ ४५ ॥ दयामूल जिन ज्ञाषित धर्म, तेहने जा
णे ए सवि ज्ञर्म ॥ मिथ्यादर्शन महेंता तणा, ए करतूत अछे अतिघणा
॥ ४६ ॥ कुदृष्टिनामें तरुणी तास, सदा रहे जे पियुनी पास ॥ सकल च
लावे घरनो ज्ञार, रमे निचिंतो तस ज्ञरथार ॥ ४७ ॥ केतेइक जिनशास
न लही, महेंतानी आज्ञा शिर वही ॥ सूत्र तजी उत्सूत्रें पड्या, मत वाह्या
ते मोहें नड्या ॥ ४८ ॥ कोई जटाला कोइ शिरमुंम, कोइ रक्तांबर कोइ क
रदंम ॥ छार लगावे मागे ज्ञीख, ए सवि महेंता केरी शीख ॥४९॥ मोहराय
नो कूंवर वडो, राग केशरी अति वांकडो ॥ सबल प्रतापी शक्ति अनंत,
राणी मूढतानो जे कंत ॥ ५० ॥ त्रण रूप ए नरपति तणां, एक ए
कथी बीहामणां ॥ काम स्नेह राग ए दोय, त्रीजो रागदृष्टि तिम जोय
॥ ५१ ॥ विषयतणा रस जे विष जिस्या, ते पहेले रूपें मन वस्या ॥ बीजे
रूपें धन परिवार, ते ऊपर प्रतिबंध अपार ॥ ५२ ॥ त्रीजे रूपें आपआप
णा, महंत सहुमां सोहामणा ॥ ए त्रण रूपें राजकुमार, जेर करी मूक्यो
संसार ॥५३॥ मोहरायनो बीजो पूत, द्वेष गयंद छे ज्ञांगडज्ञूत ॥ वांकूमुख
लोचन विकराल, ऊलहलती जाणे दव झाल ॥ ५४ ॥ निर्विवेकता एनी
नार, धरे अंगगुण पियु अनुसार ॥ इणे रुंध्यो जब हृदय डुवार, तब न
वि आवें विनय विचार ॥ ५५ ॥ रागकेशरीनो विस्तार, चारसुता वलि नंद
न चार ॥ अनंतानुबंधी अपच्चरकाण, पच्चरकाण संजल परमाण ॥ ५६ ॥
पहेली दृढ घनवंशी जिसी, मींढसींग सम बीजी कशी ॥ त्रीजि गोमूत्रिका
सम होय, चोथी छोई सरखी जोय ॥ ५७ ॥ ए चारे वहे नर बलवंत, जा
लें बांध्या जीव अनंत ॥ कूडकपट बहु परें केलवे, नरय तिरयगतिशुं मेल
वे ॥ ५८ ॥ माया चारे ए दीकरी, जिस्यो कुंज्ञ तिसी ठीकरी ॥ पुत्र लोज्ञ
ना एनां नाम, पिता सरीखा सुत परिणाम ॥ ५९ ॥ पहेलोपुत्र रंग करम
जी, बीजो कादव समगत ज्ञजी ॥ त्रीजो दीप मली सम कह्यो, चोथो
हलद रंग सम लह्यो ॥ ६० ॥ द्वेषगजेंद तणा सुत आठ, जेवो तरुअर
तेवो काठ ॥ क्रोध मान ए दो चार चार, अनंतानुबंधादिक धार ॥ ६१ ॥
अनंतानुबंधी जे क्रोध, मोहरायनो सबलो जोध ॥ जाव जीव साधे संग्राम,
गिरिरेखा जिम नावे ठाम ॥६२॥ बीजो वरस लगें नवि मले, शररेखा व
रसालें ज्ञले ॥ त्रीजो रजरेखा सम होय, चोथो जलरेखा सम जोय ॥

॥ ६३ ॥ शैलथंभ सम पेहेलो माण, अस्थिथंभ सम बीजो जाण ॥ त्रीजो काठ सरिखो धीठ, चोथो नेत्रलता जिम ईठ ॥ ६४ ॥ मोहरायना ए पोतरा, सोले नीच जिस्या कूतरा ॥ समकित देशविरति चारित्र, वीतराग पद वीना सत्र ॥ ६५ ॥ फोजदार मोहरायनो, कोइ न कले जेनो मायनो ॥ मदनराय महोटो भूपाल, जिणे जीत्या सुर नर भूपाल ॥ ६६ ॥ राखे पंच कुसुमनां बाण, कंपावे तिहुअणनां प्राण ॥ योध जुवान वडो जग जेठ, दानव देव करावे वेठ ॥ ६७ ॥ रति प्रिती घरणी दोइ तास, जे साथें अविहड घरवास ॥ खटऋतु सेवे जेना पाय, विधु वसंत सुरिजन सुख दाय ॥ ६८ ॥ ब्रह्मा निज पुत्रीशुं रम्यो, इंद्र अहल्या चरणे नम्यो ॥ कृष्ण थया गोपीना दास, ए सवि मन्मथ तणा विलास ॥ ६९ ॥ त्रिजुवन नूप धरे त्रण रूप,पुरुष नपुंसक नारि अनूप ॥ त्रिहूं रूपें त्रण जगने दमे,ए वश लोक घणां डुःख खमे ॥७०॥ अरति हास्य नय शोक डुगंठ, रति ठए सुनट मरोडे मूठ ॥ इणिपरें कामतणो परिवार, करे रणांगण रिपुसंहार ॥ ॥७१॥ राग कुंवरनी सबल जगीश,विषयाभिलाष वडो मंत्रीश ॥ पांचे इंद्रिय जास आधीन, सवि जग जीव कस्या जिणे दीन ॥ ७२ ॥ कृष्ण नील कापोती लेश, त्रण साहेली नवनव वेश ॥ संख्या रहित अशुन परिणाम, सबल शिपाइ करे संग्राम ॥ ७३ ॥ हास्यतणी नारी तुछता,नय नार्या हीण सत्त्वता ॥ नव आस्था बे घरणी शोक, ए त्रिहुं निर्लज कीधां लोक ॥ ७४ ॥ हरख विषाद वडा जूऊार, मोहरायना चामरधार ॥ वलि धनगर्व धरे शिर छत्र, मुखरनाव दे बीडीपत्र ॥ ७५ ॥ विकथा वात सुणावे घणी, चारे चतुरा चिहुंदिशि तणी ॥ अविरति रांधण रांधे अन्न, निज्ञ पोलण करे जतन ॥ ७६ ॥ परनिंदा चंमालिणी नार, सदा बुहारे नव दरबार ॥ खासां साते व्यसन खवास, मोहरायने सोहे पास ॥ ७७ ॥ प्रौढा पापस्थान अढार, अटल उमराव वडा जूऊार ॥ इणिपरें सुनट तणी बहु कोड, सेवे मोहनृपति कर जोड ॥ ७८ ॥ इणिपरें अल्प कह्यो अधिकार, मोहनरेश्वरनो विस्तार ॥ हवे वर्णवुं धर्मनरिंद, राज करे जग सुरतरु कंद ॥ ७९॥ सात्त्विक मानस नामें नगर, अति सुवास जिम महके अगर ॥ ज्यां दानादिक गुणनो वास, ज्यां सहजें शुनमति अन्यास ॥ ८० ॥ गिरिविवेक सोहे तस पास, अति उत्तंग जिस्यो कैलास ॥ ज्यां चढतां लहियें निर

धार, जगत त्रण केरो विस्तार ॥ ७१ ॥ गिरिविवेक ऊपर अति सखर, अ
प्रमत्तता नामें शिखर, नगर जैनपुर त्यां उल्हसे, सदा सुखी त्यां भविज
न वसे ॥ ७२ ॥ तेह नयरमांहे इक चित्त, समाधान मंमप सुपवित्त ॥ ते
ह तले रहेतां संताप, सवि जाये प्रगटे सुख व्याप ॥ ७३ ॥ निःस्पृहता
नामें वेदिका, तिहां विराजे डुख भेदिका ॥ ज्यां वेग विषयादिक भोग, व
स न करे न होये डुःख सोग ॥ ७४ ॥ जीव वीर्य त्यां आसन चंग, ज्यां
उपजे समरंग अभंग ॥ जस अनुभावें चेतन कला, प्रगटे चिहुदिशि अ
ति निर्मला ॥ ७५ ॥ चारित्रधर्म तिहां माहाराज,राज्य करे अति सुंदर सा
ज ॥ वदन अनोपम जेनां चार, दान शील तप भाव उदार ॥ ७६ ॥ इण
रूपें ए जग उद्धरे, सकल जीवने आनंद करे ॥ ऊतारे भवसायर पार,पो
होंचाडे शिवनयर मझार ॥७७॥ विरतिनाम जस नारि अनूप, पियुसरखुं
जस सकल स्वरूप ॥ मुक्तिपंथ देखाडे हसी,तेहने धन जस हैडे वसी ॥७८॥
वडो कुंवर तेनो यतिधर्म, जे सेहजें आपे शिवशर्म ॥ लघुनंदन श्रावक आ
चार, अंग तुंग सोहे जस वार ॥ ७९ ॥ सामायिक छेदवछाव, परीहार सु
विसुद्ध सहाव ॥ सुक्ष्म संपराय अहखाय, पंचरूप वड कुंवर राय ॥८०॥
अवर रूप वलि दश एहनां, नाम सुणो कहियें तेहनां ॥ खंती अज्जव म
द्दव मुत्ति, सत्य शौच तप संयम्र गुत्ति ॥ ८१ ॥ ब्रह्मचर्यने अकिंचन्य, ए
ह रूप सेवे ते धन्य ॥ रूप एकमांहे प्रतिरूप, तेह अनेक धरे वररूप ॥
॥ ८२ ॥ रूप बार सुणियें तपतणां, सतर संयमनां सोहामणां ॥ इणिपरें
कहेतां नावे पार ॥ चारित्रधर्म तणो विस्तार ॥८३॥ तिम सद्भाव सरलता
नार ॥ यतिधर्म घरणी मनुहार ॥ एक एक विना नवि रहे, स्त्रीभरतार स
वल सुख लहे ॥ ८४ ॥ श्रावकधर्म तणी पतिव्रता, बे नारी सद्गुण रक्तता ॥
सम्यग्दर्शन महेंतो धीर ॥ धर्मरायनो वडो वजीर ॥८५॥ सप्ततत्त्व मंदिर
मां रमे, शमसंवेग दया परिणमे ॥ शुभ आस्था वलि भवनिर्वेद, इष्ट मित्र
जसु टाले खेद ॥ ८६ ॥ मैत्री मुदिता करुणा सार, मध्यस्थता सहियर प
रिवार ॥ सुदृष्टिनाम गुणरयणें भरी, महेंताने घर अंतेउरी ॥ ८७ ॥
सारे सवि भविजननां काज, सदा संभाले नरपति राज ॥ देखाडे शिवमा
रग जोग, तेहथी रहियें शुभ संयोग ॥ ८८ ॥ विमलबोध मंत्रीसर वीर, च
तुर विचक्षण साहस धीर ॥ जाणे सकल लोकनी वात, पार नही

जस मति अवदात ॥ ९९ ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, मंत्री जाणे सवि विज्ञान ॥ काल सन्नाव सवि जाणे सोय, इस्यो चतुर नहिं बीजो कोय ॥१००॥ पांच रूप धरे ते वली, श्रुत मति अवधि मनस केवली ॥ पांचे रूपें प्रगट प्रताप, धर्म कर्म सवि दाखे आप ॥ १०१ ॥ अधिगति नामें तस कामिनी, शुन्न परिणाम तणी सामिनी ॥ निज पिशु तणी वधारे लाज, सारे धरमरायनां काज ॥ १०२ ॥ सेनापति साचो संतोष, जेह निवारे सघला दोष ॥ इणिपरें धर्म रायनी फोज, करे नविक मनमांहे सोज ॥ १०३ ॥ कबहिक जोर करे मोहराय, धर्मरायनो टाले गाय ॥ धर्मराय जब करे संग्राम, मोहतणो तव टाले गाम ॥ १०४ ॥ इणिपरे दोय कटक करे जूऊ, नविकलोक मन अहनिशि गूऊ ॥ कोइहारे कोइ जीतें कदा, ए रीते वर्ते ठे सदा ॥ १०५ ॥ उत्कट कर्मी केरे चित्त, मोहराय व्यापी रह्यो नित्त ॥ धर्मराय त्यांथी रह्यो दूर, जिम रजनी मुख नाठो सूर ॥१०६॥ हुए अनुकूल करम परिणाम, नवस्थिति केरो हुए विराम ॥ नियति काल जब मिले स्वन्नाव, उद्यम उपजावे सद्भाव ॥ १०७ ॥ ए पांचे जन टोलें मली, आतम शक्ति करे निर्मली ॥ तब चेतन मन चिंता थई, है है ए गति मुऊशी नई ॥ १०८ ॥ हुं पुरुषोत्तम परम स्वरूप, नाथ निरंजन त्रिभुवन नूप ॥ कीधो करमें हूं सांकडो, मोह महा डुशमन वांकडो ॥ १०९ ॥ राख्यो काल अनंत निगोद, कुगति नमाडी कीधो खोद ॥ रांक तणीपरें जग रोलव्यो ॥ नले धुतारे हूं नोलव्यो ॥ ११० ॥ समजी आव्यो सद गुरु पाय, पूठ्यो शिवपुर तणो उपाय ॥ तब सदगुरु शिव मारग कह्यो, ज्ञान दर्शन चारित्र सद्दह्यो ॥ १११ ॥ देखाड्या मोहादिक दोष, कर्ता कर्म मरमना पोष ॥ तेह तणी देखाडी रीत, लहे राज महोटा रिपु जीत ॥ ११२ ॥ चारित्र धर्म कियो अनुकूल ॥ मोहतणुं उखेड्यूं मूल, धर्म नरेशरनो परिवार ॥ रमे रंग नर हृदय मऊार ॥११३॥ दोहा ॥ जब डुश्मन दूरें गया, विरसा विषयकषाय ॥ राज लहे तब आपणुं, उत्तम आतम राय ॥११४॥ संतोषी सुखियो रहे, सदा सुधारस लीन ॥ इंद्रादिक तसु आगलें, दीसे डःखिया दीन ॥ ११५ ॥ ते सुख नहिं सुररायने, ते नहिं रायां राय ॥ जे आतम सुख अनुन्नवे, सम संतोष पसाय ॥ ११६ ॥ परवशता पाठी वली, गई दीनता दूर ॥ आश पराई जब तजी, जीव ऊीले सुख

पूर ॥ ११७ ॥ फूरीने ऊंखर थया, मुख मूके निःश्वास ॥ कामी कामिनी पग पडे, आश करे इम दास ॥ ११८ ॥ अग्नि आपथी ऊपजे, तृष्ना आप जलाय ॥ आपें आप विचारतां, आपहि आप बुझाय ॥ ११९ ॥ आशा बंधन बांधियो, जग सघलो मूंझाय ॥ रहे उदास जे आश तजि, जीव न्मुक्त कहाय ॥ १२० ॥ आश करो अरिहंतनी, जग थई रहो उदास ॥ विनय अनोपम एह सुख, अनुनव लीलविलास ॥ १२१ ॥ आशी पारागो टको, तापें फाटी जाय ॥ तिम आशा मन मानवी, न लहे मुक्ति उपाय ॥१२२॥ जेह निराशी गोटको, ते होय सहज अनंग ॥ तरुआनो मल अप हरी, रूपूं करे सुरंग ॥ १२३ ॥ तेम निराशी मन हरे, सवि आतम संताप ॥ आतम परमातम हुए, विनयविचारो आप ॥ १२४ ॥ विनय विचारी आदरो, समता शिवपुर वाट ॥ आरति नावे आशनी, उपजे नहीं उच्चाट ॥ १२५ ॥ विरुई आशा विपयनी, ऊखेडो विष वेल ॥ रोपो समता सुरलता, विनय रमो रस खेल ॥ १२६ ॥ काट न लागे कनकने, जिम रहेतां रज पास ॥ तिम कर्मैं नवि नेदियें, आतम राम उदास ॥१२७॥ इम उदास रस चाखतां ॥ शिथिल होय नव बंध ॥ शुकल ध्यान तब ऊपजे, पावन परम सुगंध ॥ १२८ ॥ शुकलध्यान जब थिर करी, चंचल मन कल्लोल ॥ केवल ज्ञान तरंगमां, आतम करे ऊकोल ॥ १२९ ॥ कर्म घनघाति क्षय गयां, तव प्रगटी निज ज्योत ॥ तिम वादल विघटी गया, उदयो रवि उद्योत ॥१३०॥ माखणथी जब जल बल्यूं, तब प्रगटयूं घृत रूप ॥ तिम घनघाती मल बले, प्रगटे ज्ञान अनूप ॥१३१ ॥ मन वच काया थिर करी, परम शुकल धरि ध्यान ॥ चारे कर्म दही लहे, परमानंद निधान॥१३२॥ सिद्ध सदा सुख अनुनवे, अनुपम काल अनंत ॥ अजरामर अविचल रहे, प्रणमूं ते नगवंत॥१३३॥ धरमनाथ आराधतां, ए सवि सीझे काज ॥ अंतरंग रिपु जीतियें, लहियें अविचल राज ॥१३४॥ धर्मनाथ अवधारियें, सेवकनी अरदास ॥ दया करीने दीजीयें, मुक्ति महोदयवास ॥१३५॥ वास न द्यो जो मुक्तिनो, तो द्यो सहज उदास ॥ तेह लही अमें साधशूं, सहेजें शिव अन्यास ॥१३६॥ सत्तरशें सोलोत्तरे, सुरत रही चोमास ॥ स्तवन रच्यूं में अल्पमति, आतम ज्ञान प्रकाश ॥१३७॥ श्रीविजयदेव सूरि पटें, श्रीविजय प्रन्न सूरि ॥ श्रीकीर्त्तिविय वाचक तणो, विनय विनय रसपूरि ॥ १३८ ॥ इति ॥

॥ श्री चरमजिनेश्वराय नमः ॥

अथ

॥ बालावबोधसहिता श्रीसम्यक्त्वसित्तरी प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम

॥ बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरण ॥

॥ अनुष्टुब्वृत्तम् ॥

॥ नत्वा श्रीपार्श्वमर्हंतं, स्मृत्वा च श्रुतदेवताम् ॥ श्रीमत्सम्यक्त्वसप्तत्याः, कुर्वे बालावबोधनम् ॥ १ ॥ अर्थः—त्रेवीशमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने नमस्कार करीने तथा श्रुतदेवतानुं स्मरण करीनें श्रीमत्सम्यक्त्व सप्ततिका ग्रंथना बालावबोधने हुं करुं बुं ॥ १ ॥ मूल गाथा ॥ दंसण सुद्धि पयासं, तिब्रयरमपच्छिमं नमंसित्ता ॥ दंसणसुद्धि सरूवं, कित्तेमि सुआणुसारेण ॥ १ ॥ अर्थः—दर्शन जे सम्यक्त्व, तेनी शुद्धि जे निर्मलपणुं, तेणी जेने केवलज्ञानरूप प्रकाश एटले अजवालुं थयुं वे, एवा अपश्चिम एटले वेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर जे श्रीमहावीरस्वामी तेमने नमस्कार करीने दर्शनशुद्धि जे सम्यक्त्वशुद्धि तेनुं स्वरूप जे लक्षण तेने श्रुतानुसारें एटले आगमने अनुसारें हुं कहुं बुं. अर्थात् हुं मारी मतिथीज कहेतो नथी, किंतु आगमनो नाव लइने हुं कहुं बुं. ए अभिप्रायथी ग्रंथकर्त्तायें पोताने ग्रंथकर्त्तापणानुं अनिमान नथी. एवुं सूचन कर्युं वे ॥ १ ॥

हवे सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे वेः—

॥ दंसणमिह सम्मत्तं, तं पुण तत्तब्रसद्दहणरूवं ॥ खइये खउवसमियं, तहोवसमियं च नायव्वं ॥ १ ॥ अर्थः—इह एटले आ शास्त्रने विषे अथवा जिनशासनने विषे दर्शन जे वे, तेने सम्यक्त्व कहियें. तं पुण एटले ते वली तत्तब्रसद्दहणरूवं एटले ते तत्त्वार्थश्रद्धानरूप वे. एटले आ पदें करी अन्य तीर्थीना दर्शनने सम्यक्त्व न कहियें. एम ग्रंथकारें जणाव्युं, केम के ते अन्य तीर्थमां तत्त्वार्थश्रद्धान नथी.

हवे ते सम्यक्त्वना घणा प्रकार वे, तेमां पण मुख्य त्रण प्रकार वे, ते कहे वेः— एक क्षायिक,बीजुं क्षायोपशमिक, तथा त्रीजुं औपशमिक, एम (नायव्वं के०) जाणवुं ॥ २ ॥

आ गाथामां पहेलुं क्षायिकसम्यक्त्व कह्युं छे. परंतु पहेलुं जीव, औपशमिक सम्यक्त्व पामे छे. ए औपशमिकसम्यक्त्वना बे प्रकार छेः—तेमां एक नैसर्गिक तथा बीजुं आधिगमिक. तिहां जे गुरुना उपदेश प्रमुखनी अपेक्षाविना जातिस्मरण ज्ञानने बलें पूर्वभवना स्मरणादिकें करी प्राप्त थाय छे, तेने नैःसर्गिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें; अने जे गुरुना उपदेशें करी प्राप्त थाय तेने आगमिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें.

ए औपशमिकसम्यक्त्वनी उत्पत्ति आवी रीतें थाय छेः—कोई जीव चारे गतिमांनी कोई पण गतिमां फरतो छतो अकामनिर्जरायें करी यथाप्रवृत्तिकरणें करी ज्ञानावरणादि सात कर्मनी एक कोडाकोडी सागरोपमनी मांहे स्थिति करे;जेम नदीनी पासेंना अथवा नदीमां आवेला पर्वतना पाषाण एक बीजा साथें घसातां घसातां सहजेंज गोलाकार बनी जाय छे, तेम ते पण जाणवुं. ते समय ग्रंथिभेदी अंतरकरण करतोज औपशमिकसम्यक्त्वनुं उपार्जन करे, तेवारें अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनीमांहे शेष संसार करे ॥ यदुक्तं ॥ "अंतो मुहुत्तमित्तं, पिफासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अवड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो" एम ए औपशमिकसम्यक्त्वनो काल अंतर्मुहूर्त्तनो होय छे॥

हवे क्षायोपशमिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—कें जे जीव, अंतरकरण करे नहिं, ते यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण तथा अनिवृत्तिकरण, ए त्रण करणें करी मिणाला कोद्रवना दृष्टांतें मिथ्यात्वदलिकना त्रण पुंज करे. तेमां एक शुद्ध पुंज, बीजो मिश्रपुंज अने त्रीजो अशुद्धपुंज; तिहां जेम मीणाला कोद्रवाने धोइ करी उपरथी मीण उतारी चोखा करीने एक ढगलो करियें, तेम जे मिथ्यात्वना पुद्गलने चोखा करी ढगलो करे, ते शुद्ध पुंज कहियें; तथा वली कांइक धोया कांइक अणधोया रहे, तेवा पुद्गलने मिश्र पुंज कहियें, अने जे सर्वथा अणधोयाज होय, तेने अशुद्ध पुंज कहियें. ए कोद्रवाना दृष्टांतें मिथ्यात्वना दलिक पण जाणी लेवां. ते त्रण पुंज मांहेला शुद्ध पुंजनो वेदनार जीव, क्षायिकोपशमिकसम्यक्त्व पामे.

॥ हवे क्षायिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीयें छैयेंः—जे जीव, अनंतानुबंधीया क्रोध, मान, माया, लोभ तथा मिथ्यामोहनीय, मिश्रमोहनीय अने दर्शन मोहनीय, ए सात प्रकृतिनो क्षय करे, ते जीवने क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. क्षायिकसम्यक्त्व पाम्या पछी तेज भवमां, अथवा बीजा भवमां अ

थवा त्रीजा भवमां अथवा चोथा भवमां ते जीव, मोक्षें जाय छे. पांचमो भव सर्वथा थायज नहीं ॥ यडुक्तं पंचसंग्रहे ॥ " तइय चउब्बे तंमिउ, भवंमि सिझंति दंसणे खीणे ॥ जे देव निरयसंखा, उ चरमदेहेसुते हुंति " ए क्षायिकसम्यक्त्व अपौजलिक होय छे अने औपशमिकसम्यक्त्व तथा क्षायोपशमिकसम्यक्त्व ए पौजलिक होय छे. केम के, ए बन्ने सम्यक्त मिथ्यात्व पुजल चोखा कस्याथी उत्पन्न थाय छे, माटें पौजलिक कह्या छे. वली क्षायिकसम्यक्त्व मुक्तिनेविषे सिद्धना जीवोमां पण पामीयें. ए संक्षेपथी बीजी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ २ ॥

॥ हवे ए सम्यक्त्वनेविषे अन्यतर सम्यक्त्व कहेवा गुण संयुक्त भव्यप्राणी पामे, ते कहे छेः—अवउझियं मिछत्तो, जिणचेइय साहुपूयणुज्जुत्तो ॥ आयारमठ मेयं, जो पालइ तस्स सम्मत्तं ॥ ३ ॥ अर्थः—जेणे मिथ्यात्व छांड्युं छे, एवो भव्य जीव सम्यक्त्वने पामे, ते मिथ्यात्वना पांच प्रकार छेः— एक आभिग्रहिक, बीजो अनभिग्रहिक, त्रीजो आभिनिवेशिक, चोथो सांशयिक, अने पांचमो अनाभोगिक. ए पांच प्रकारना मिथ्यात्वनो सर्वथा त्याग करे. तेवारें जीवने शुद्ध देव, शुद्ध गुरु तथा शुद्ध धर्मनी सद्दहणारूप सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय.

तेमां शुद्ध देव, ते जिन वीतराग जे अढार दोष रहित छे. अने चैत्य ते देव, गृहप्रतिमा स्थापना जिन जाणवा. तथा शुद्ध गुरु ते सुसाधु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, दशविध यतिधर्म संयुक्त होय ते साधु जाणवा. तेउनी पूजाने विषे जे उद्युक्त उजमाल तत्पर होय तथा निःशंकितादिक आठ प्रकारना आचारने पाले, तेने सम्यक्त्व होय ॥ ३ ॥

हवे ते सम्यक्त्व शुद्धिनेविषे दृष्टांतगत आरामनंदननी कथा कहे छेः— आ जंबुद्वीपने विषे अर्द्धचंद्राकार भरत क्षेत्र छे. तेमां लक्ष्मीपुर नामनुं नगर छे, ते एवुं तो सुशोभित छे के, जाणे लक्ष्मीनुं रमण करवानुंज स्थान होय नहिं ! तेमां विक्रम एवे नामें राजा राज्य करतो हतो. एना चार भाइयो हता. तेउनां नामः—विमलबुद्धि, बुद्धिसागर, सुबुद्धि, तथा विशालबुद्धि. ए चारे, पोताना नाम जेवाज परिणाम वाला हता. तेउमांना विशालबुद्धिने पद्मश्री नामनी स्त्री हती. तेमां पण पोताना नामना जेवाज परिणाम हता. कोइ कालें तेना जेठानी स्त्रीना उदरथी पुत्र पुत्रीयोनो

जन्म थयो. तेना निशाल घरेणां, तथा पाणिग्रहण प्रमुख महोत्सव जो इने मनमां अत्यंत दुःखने पामी. अने घरनी वाडीमां जइने रोती थकी कहेवा लागी के हा दैव ! ! ! मारी जेठाणीयोने पुत्र तथा पुत्रीयो छे तेना पाणिग्रहण वगेरेना महोत्सव थाय छे. अने हुं अधन्य तथा अभागिणी छुं के जेथी मनें एक पुत्र के पुत्री कांइ पण नथी,एवा खेदने पामवा ला गी. एम तेने रोती जोइने एक वांदरी पासें आवीने कहेवा लागी के, हे सखि ! तुने एवडुं शुं दुःख थयुं छे के जेथी तुं रडे छे ? ते मने कहे. हुं तारुं दुःख मटाडुं ॥ यतः ॥ दुक्खं तासु कहिज्जइ, जो होइ दुक्ख फेडण सम त्थो ॥ जो नवि दुहिए दुहिउ, तासी किस कहिज्जए दुक्खं॥ त्यारें पद्मश्री बोली के मारी बधी जेठाणीउने बेटा बेटी छे. तेउना जन्मादिकना महो त्सवो थाय छे. अने मारे पुत्री पुत्रादिक कांइ नथी तेथी हुं रडुं छुं. ए दुःख जो ताराथी टली शके तो टाल. एवुं सांभली ते वानरी तरत वनमां जइ ने एक औषधि लावी. ते तेने आपीने कहेवा लागी के हे सखि ! ऋतु स्नानने दिवसें ए औषधिने पाणीमां घसीने पीजे. तो तेज रात्रें तने पुत्र गर्भ थशे. एवां तेनां वचन सांभलीने ते संतोष पामी अने वानरीने कहे वा लागी के जो मने गर्भ थशे. तो तने आ लाख टकानो हार आपीश ! पण तुं वांदरी छतां माणसनी भाषा केम बोले छे ? तेवारें वांदरी बोली के, मारी पासें विद्या छे, तेने योगें मनुष्य भाषा पण जाणुं छुं अने वां दरी भाषा पण जाणुं छुं. एम कहीने ते वांदरी जती रही.

पछी पद्मश्रीयें ऋतु स्नान करी ते औषधि निर्मल पाणीथी घसीने तेनुं पाणी पीधुं. तेज रात्रिनेविषे तेने पुत्र गर्भ रह्यो. अनुक्रमें गर्भनी वृद्धि थतां दिन पूर्ण थएथी वानरनी आकृतिवाला पुत्रनो जन्म थयो. एवुं एक परिचारिकाना मुखथी सांभलीने ते घणुं दुःखने पामी. ने विचारवा लागी के अरे!!! वानर पुत्र थएलो शे अर्थें आवशे ! एथी तो उलटी लो कोमां हांसी थशे. एवो विचार करीने पोतानी दासीना हाथे घरनी पासेना आराममां तेने मूकावी दीधो. तेनें पेली वानरी आवीने लइ गई अने पो ताना स्थानमां जइ पोताना पतिने कहेवा लागी के हुं गूढगर्भा हती तेथी मारो गर्भ कोइने जणायो नही. हाल मास पूरा थयेथी में पुत्र प्रस व्यो छे. एम पोताना पति यूथाधिप वानरनें समजाव्यो. पछी ते वांदर कु

मार स्तनपानविना डुःखी थवा लाग्यो. तेने जोइने वांदरी पोतानी एक सखीने कहेवा लागी. के मारा स्तनोमां दूध आवतुं नथी. माटें तुं आ बालकने धवराव. एवुं तेनुं बोलवुं मानीने ते बीजी वांदरीयें धवराववा मांम्यो, तेथी ते पुष्ट थयो. पछी कोइक समयनेविषे फरी ते पद्मश्री पूर्वोक्त बागमां जइने करुणस्वरें रोवा लागी.

अहो नवि जीवो,ए दाखला उपरथी संसारना जीवोने केहेवां डुःख छे,ते तमारा ध्यानमां आव्यां हशे ! संसारी जीव डुःखीज होय छे. अने जे संसारसंबंधी सुख दीठामां आवे छे ते पण डुःखने सुख मानेलुं छे. जुवो के, गर्न धारण करवो, ते प्रत्यक्ष स्त्रीने डुःख दायक छे केम के, गर्नवती स्त्रीने सुखें ऊंघ आवती नथी, पेट नरी खवातुं नथी. पोतानी इछाप्रमाणे चाली शकातुं नथी, अने वधारे मनने चेन पडतुं नथी वगैरें डुःख थाय छे. तेनें सुख मानीने ते स्त्री मनमां फूलाय छे, अने ज्यारें गर्न धारण करेलो नथी होतो, त्यारें ऊंघ सारी रीतें आवे छे, पेट नरी खवाय छे, पोतानी इछा प्रमाणें गमे त्यां जवाइ अवाइ शकाय छे तथा मनमां चेन रहे छे, एवुं सुख छतां तेने डुःख मानीने चिंता कस्यां करे छे के मने गर्न रहे तो सारुं ! एवा रीतें डुःखने सुख मानी लेवुं ए संसारनुं स्वरूप छे. एनो विचार चतुर नरोयें सारी रीतें करी लेवो जोइयें. हवे ते वांदरीयें पद्मश्रीने रोती सांनली तेथी तेनी पासें आवीने कहेवा लागी के बाइ ! मारी वात सांनल. हुं वांऊणी हती, अने संतान नहीं होवाना डुःखथी महा पीडा पामती हती. तेथी गमे तेम करीने मने संताननी प्राप्ति थाय तो वांऊीयानुं मेणुं टले, एवो विचार करतां अचानक ते दिवस में तने एज कारणसर रोती जोइ ते संधियें मारुं कार्य साधी लेवानी इछाथी तने में एवी औषधि आपी के जेथी वानर पुत्रनोज जन्म थाय. तेम थयाथी मारी इछा में पूर्ण करी लीधी छे. हवे बीजी औषधि हुं तनें आपुं ते पूर्वनी पठें घसीने पान करजे, जेथी तुने मनुष्य पुत्र थशे. एमां संशय आणवो नही. ए बोलवा उपर पद्मश्रीयें विश्वास करीने ऋतुस्नानने दिवसें तेम कीधुं. तेथी गर्न रह्यो ने मास पूरा थयेथी तेने शुन दिवस शुन वार तथा शुन मुहूर्त्तना समयें एक पुत्रनो जन्म थयो. त्यारें विशालबुद्धियें महोटो महोत्सव कस्यो, पुत्र जन्मथी आखा कुटुंबने आनंद थयो. ते पुत्रनुं नाम

आरामनंदन एवुं राख्युं. तेना पालन पोषणने अर्थें सारी सारी धाव राखी, तेथी जेम नंदनवनमां कल्पवृक्ष वृद्धिने पामे, तेम तेपुत्र ऊछरवा लाग्यो. एम अनुक्रमें आठ वर्षनो थयो, त्यारें नीशाले नणवानेमाटे मोकल्यो. केम के, पुत्रनी लालना पांच वर्ष सुधीज करवी, त्यार पछी ते ताडना करवा लायक थाय छे, माटे लालना करवी नहीं. तेम कस्याथी ते बगडी जाय छे. अने खराब टेववालो थाय छे, तेथी ताडनाज करवी जोइयें छे यें. तेम शोल वर्ष सुधी करियें. पछी पुत्रने मित्र जेवो गणियें. कह्युं छे के, " लालयेत् पंचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताडयेत् ॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवत्समाचरेत् " ॥

पछी आरामनंदन, निशालमां नणीने बहोंत्तेर कलानो पारंगामी थयो. एम करतां ते यौवन अवस्थाने पाम्यो. त्यारें मातापितायें महोटा उत्सवथी एक पद्मावती नामनी राजकन्यानी साथें तेनुं लग्न कर्युं. पछी जेम धरणेंद्र अने पद्मावती आनंदथी रमण करे, तेम ते बेहु सुखविलासमां रमवा लाग्या तेथी काल व्यतीत थवानी पण तेनें खबर पडती नथी. केम के, सुखना दिवस गयेला जणाता नथी. यदुक्तं–" तहिं देवा वंतरिया, वर तरुणी गी य वाइय रवेणं ॥ निच्च सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न जाणंति. " कोइ ए क समयने विषे ग्रीष्म ऋतु आवी, त्यारें एवो तो ताप पडवा लाग्यो के, तेथी लोकनें महा संताप उत्पन्न थयो. तेथी आरामनंदन अने पद्मावती ए बन्ने साथें नर्मदानदीमां जलक्रीडा करवा गयां. त्यां क्रीडा करतां पद्मा वतीयें नदीमां तरती एक फूलनी कंचुक दीठी. त्यारें आरामनंदनने क हेवा लागी के हे प्राणप्रिय! पेली, फूलनी कंचुकी तरती जाय छे, ते मने आणी आपो. ए पहेरवानी मने होंश थई छे? ते पूरी करो. आरामनंद न बोल्यो के, अगाध जलमां हुं केम जई शकुं? अने ते कंचुक तने केम लावी आपुं? एवो हठ तुने करवो जोइतो नथी माटे ए वातने तुं मूकी दे, तेवारें पद्मावती बोली के, जो ए कंचुक मने मले तोज हुं जीवुं, अ न्यथा हुं मरण शरण थाइश! कह्युं छे के " बालानामबलानां च, नृपा णां च विशेषतः ॥ तथा च पापसक्तानां, दुर्निवार्यः कदाग्रहः " एटले बा लक, अबला, राजा अने पापासक्त मनुष्यनो कदाग्रह दुःखें करी पण निवारण थाय नहीं. जुवो के, सीताना कदाग्रहथी राम सुवर्णना मृग

मार स्तनपानविना डुःखी थवा लाग्यो. तेने जोइने वांदरी पोतानी एक सखीने कहेवा लागी. के मारा स्तनोमां दूध आवतुं नथी. माटें तुं आ बालकने धवराव. एवुं तेनुं बोलवुं मानीने ते बीजी वांदरीयें धवराववा मांम्यो, तेथी ते पुष्ट थयो. पढी कोइक समयनेविषे फरी ते पद्मश्री पूर्वोक्त बागमां जइने करुणस्वरें रोवा लागी.

अहो नवि जीवो,ए दाखला उपरथी संसारना जीवोने केहेवां डुःख ढे,ते तमारा ध्यानमां आव्यां हशे ! संसारी जीव डुःखीज होय ढे. अनें जे संसारसंबंधी सुख दीगमां आवे ढे ते पण डुःखने सुख मानेलुं ढे. जुवो के, गर्न धारण करवो, ते प्रत्यक्ष स्त्रीने डुःख दायक ढे केम के, गर्नवती स्त्रीनें सुखें ऊंघ आवती नथी, पेट नरी खवातुं नथी. पोतानी इछाप्रमाणे चाली शकातुं नथी, अने वधारे मनने चेन पडतुं नथी वगैरें डुःख थाय ढे. तेनें सुख मानीने ते स्त्री मनमां फूलाय ढे, अने ज्यारें गर्न धारण करेलो नथी होतो, त्यारें ऊंघ सारी रीतें आवे ढे, पेट नरी खवाय ढे, पोतानी इछा प्रमाणें गमे त्यां जवाइ अवाइ शकाय ढे तथा मनमां चेन रहे ढे, एवुं सुख ढतां तेने डुःख मानीने चिंता कर्या करे ढे के मने गर्न रहे तो सारुं ! एवा रीतें डुःखने सुख मानी लेवुं ए संसारनुं स्वरूप ढे. एनो विचार चतुर नरोयें सारी रीतें करी लेवो जोइयें. हवे ते वांदरीयें पद्मश्रीने रोती सांनली तेथी तेनी पासें आवीने कहेवा लागी के बाइ ! मारी वात सांनल. हुं वांऊणी हती, अने संतान नहीं होवाना डुःखथी महा पीडा पामती हती. तेथी गमे तेम करीनें मने संताननी प्राप्ति थाय तो वांऊीयानुं मेणुं टले, एवो विचार करतां अचानक ते दिवस में तने एज कारणसर रोती जोइ ते संधियें मारुं कार्य साधी लेवानी इछाथी तने में एवी औषधि आपी के जेथी वानर पुत्रनोज जन्म थाय. तेम थयाथी मारी इछा में पूर्ण करी लीधी ढे. हवे बीजी औषधि हुं तनें आपुं ते पूर्वनी पठें घसीने पान करजे, जेथी तुने मनुष्य पुत्र थशे. एमां संशय आणवो नही. ए बोलवा उपर पद्मश्रीयें विश्वास करीने ऋतुस्नानने दिवसें तेम कीधुं. तेथी गर्न रह्यो ने मास पूरा थयेथी तेने शुन दिवस शुन वार तथा शुन मुहूर्त्तना समयें एक पुत्रनो जन्म थयो. त्यारें विशालबुद्धियें महोटो महोत्सव कर्यो. पुत्र जन्मथी आखा कुटुंबने आनंद थयो. ते पुत्रनुं नाम

ामनंदन एवुं राख्युं. तेना पालन पोषणने अर्थे न्यारी न्यारी धाव राखी,
ी जेम नंदनवनमां कल्पवृक्ष वृद्धिने पामे. तेम ते पुत्र वधवा लाग्यो.
अनुक्रमें आठ वर्षनो थयो. त्यारें नीशाले भणवानेमाटे मोकल्यो.
के. पुत्रनी लालना पांच वर्ष सुधीज करवी. त्यार पछी ते लाडना
वा लायक थाय छे. माटे लालना करवी नहीं. तेम करवाथी ते बगडी
य छे. अने खराब टेववालो थाय छे. तेथी ताडनाज करवी जोइयें छे
तेम सोल वर्ष सुधी करियें. पछी पुत्रने मित्र जेवो गणियें. कह्युं छे
" लालयेत् पंचवर्षाणि. दशवर्षाणि ताडयेत् ॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं
त्रवत्समाचरेत " ॥
पछी आरामनंदन. निशालमां भणीने बहोंतेर कलानो पारगामी थयो.
ा करतां ते यौवन अवस्थाने पाम्यो. त्यारें मातापितायें महोटा उत्सवथी
पद्मावती नामनी राजकन्यानी साथें तेनुं लग्न कर्युं. पछी जेम धरणेंद्र
त पद्मावती आनंदथी रमण करे, तेम ते बेउ सुखविलासमां रमवा लाग्या
ी काल व्यतीत थवानी पण तेनें खबर पडती नथी. केम के, सुखना
ग्न थयेला जणाता नथी. यदुक्तं—" नहिं देवा वतरिया, वर तरुणी गी
वाइय रवेणं ॥ निच्च सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न जाणंति. " कोइ ए
समयने विषे ग्रीष्म ऋतु आवी. त्यारें एवो तो ताप पडवा लाग्यो के.
ी लोकने महा संताप उत्पन्न थयो. तेथी आरामनंदन अने पद्मावती
बन्ने साथें नर्मदानदीमां जलक्रीडा करवा गयां. त्यां क्रीडा करतां पद्मा
तीयें नदीमां तरती एक फूलनी कंचुक दीठी. त्यारें आरामनंदनने क
ा लागी के हे प्राणप्रिय! पेली. फूलनी कंचुकी तरती जाय छे, ते मने
ाणी आपो. ए पहेरवानी मने होंश थई छे? ते पूरी करो. आरामनंद
बोल्यो के, अगाध जलमां हुं केम जई शकुं? अने ते कंचुक तने केम
वी आपुं? एवो हठ तुने करवो जोइतो नथी माटे ए वातने तुं मूकी
तेवारें पद्मावती बोली के, जो ए कंचुक मने मले तोज हुं जीवुं, अ
्या हुं मरण शरण थाइश! कह्युं छे के " बालानामबलानां च, नृपा
ां च विशेषतः ॥ तथा च पापसक्तानां, दुर्निवार्यः कदाग्रहः " एटले बा
क, अबला, राजा अने पापासक्त मनुष्यनो कदाग्रह दुःखें करी पण
वारण थाय नहीं. जुवो के, सीताना कदाग्रहथी राम सुवर्णना मृग

पाछल दोड्यो, तेम पद्मावतीना कदाग्रहथी आरामनंदन पद्मावतीने त्यांज मूकीने एक नावडीना हाथे प्रवहण सज्ज करावी तेने साथें लई तेणें अगाध जलमां प्रवेश कस्यो. कंचुक आगल तरतुं जाय अने तेनी पाछल नाविका चाली जाय. एम करतां रात्रि पडवा मांडी पण पेलुं कंचुक हाथमां आव्युं नहीं. एटलामां जेम कोई माणस पाणीमां तरतां थाकी गयाथी विशामो लेवाने एक ठेकाणे स्थिर थई रहे, तेम ते कंचुक थंजी रह्युं, त्यारें आराम नंदने ते उचकी लेवाने हाथ घाल्यो एटले ते कंचुक जेना माथामां छे, एवी एक दिव्य स्वरूप हार कुंमलादि आनूषणें मंमित एवी एक स्त्री पेदा थई. तेने जोईने ते कुमार विस्मय पाम्यो. अने पेला ना विकने तथा नावडीने एक कोरें मूकी दईने कौतुक जोवाने अर्थें पेली स्त्रीनी पाछल लाग्यो. कह्युं छे के,:— "विद्यार्थी च धनार्थीच, स्त्रीयार्थी चैव विशेषतः ॥ अलसा न नवंत्येते, तथैवं कौतुकप्रियाः" नावार्थः—विद्यार्थी, धनार्थी, तथा स्त्रीयार्थी ए त्रणे ने आलस थतुं नथी, केम के, तेउने ते उद्योगकौतुकनी जेवो लागे छे.

पछी ते स्त्री ते नदीमांथी निकलीने, ते नदीने किनारे एक कालिका देवीनुं देहेरुं हतुं तेमां जइ, श्रीकालिकानी प्रतिमा हती तेने पेलुं पुष्पनुं कंचुक पहेरावीने कहेवा लागी के हे स्वामिनि! तुं घणा कल्याणनी करना री थजे. एवी प्रार्थना करी, बाहेर नीकलीने अदृष्ट थइ गई. आरामनंदन ते देवीने निर्माल्य थयेलुं कंचुक लइ हर्षने पामीने नदीने किनारें आव्यो. त्यां जुए छे तो नाविक तथा नावडी ए बेमांनुं एके देखायुं नही. त्यारे तेनुं नाम लइ महोटे सादें हाको मारतो थको त्यां नटकवा लाग्यो. ना विक गुम थइ गयो जाणीनें नयने पामवा लाग्यो. तेथी एक पाणीनी प रव हती, तेमां जइने सूतो. कह्युं छे के "अतिजुक्तवतां पुंसां, चिंतार हितचेतसां ॥ अति प्रवासश्रांतानां, निद्राहि सुलना मता" नावार्थः— जेणें अति नोजन कर्युं होय, जेनुं चिंतारहित चित्त होय, अने जे अति थाकेलो होय तेने सहज निद्रा आवी जाय छे. पछी ते परबनी उपर फ रता फरता केटलाएक चोरो आवी चड्या. त्यां पेला पुष्पना कंचुकनो सु वास फेली रह्यो हतो तेथी ते चोरोयें विचार्युं. के आहीं कोइ नोगी पुरुष होवो जोइयें, एवुं अनुमान करीने ते परबमां पेठा. त्यां आरामनंदनने लूटी लेवाना निमित्तें तेनो छाडो लीधो, पण पेला पुष्पना कंचुक विना

बीजुं कांइ तेनी पासेंथी मल्युं नही. तेथी तेज कंचुक लइने पेला चोरो बहेर नीकली चालता थया. कुमर अति थाकेलो होवाथी सुतो तेवोज घोर निद्राने वश थइ जवाने लीधे रातनी चोरोनी हकीगतविषे तेने कांइ पण खबर पडी नही. सवारनो ऊठी जुवे छे तो ते कंचुक देखातुं नथी. तेथी ते अति खेदने पाम्यो. ते विचारवा लाग्यो के हुं कंचुकविना पद्मावतीने मुख केम देखाडी शकीश! एवी चिंतवना करतो शून्य चित्ते भमवा लाग्यो. भमतां भमतां एक लक्ष्मीना निवास जेवा पाटण नामना नगरनी पासें आवी पहोंतो. तेनी मांहिलीकोरें चाल्यो. नगरना चहूटामां आवी जुवे छे तो एक शिखरबंध प्रासाद दीठामां आव्युं. तेमां जिनप्रतिमा जाणी. शुद्धसम्यक्त्वधारी ते माटे हर्षने पाम्यो. अने आकस्मिक महान लाभ थयो. एम जाणीने देव जुहारवाने प्रवेश कर्यो. मांहे जइने चैत्यवंदन कीधुं. ते समयें एक सागर नामना श्रेष्ठीयें तेने दीठो. अने परदेशी जाणीने तेने पोतानी पासें बोलाव्यो. तेनां वचन तथा सौभाग्य जोइने अति खुशी थयो. तेथी आग्रह करीने घेर तेडी गयो. अने स्नान वगेरे करावी सारी सामग्री सहित भोजन कराव्युं. पछी सागर श्रेष्ठीना आग्रहथी जेम पिताने घेर पुत्र रहे.तेम त्यां ते रह्यो. केटला एक दहाडा रह्या पछी वर्षाकाल आव्यो. सारी पेठें वर्षा थइ. समस्त पृथ्वीरूपिणी स्त्रीयें नीलां तृणोरूपी नीलां कंचुक पहेर्यां. सर्व नदी नवाण प्रमुख पाणीथी भरायां.

हवे कोइएक समयनेंविषे लक्ष्मीधर राजानो मुख्य हस्ती पाणी पीने पाछो वल्यो, त्यारें एक स्थलनेविषे कादवमां खूची गयो. तेने कोई कहाडी शके नही. कहाडवाना घणा उपायो कर्या. पण ते बधा निष्फल थया. ते जोइने राजा कहेवा लाग्यो के, आ हाथीने जे कोइ पुरुष कादवमांथी कहाडे, तेने वांछित दान आपुं. एवो शहेरमां पटह पीटाव्यो. ते पटहनो शब्द सांभली ते वातनो आरामनंदनें अंगीकार कर्यो. त्यारें तेनें राजाना नफरो राजानी पासें तेडी गया. अने तेनुं रूप देखीने राजा खुशी थयो. पछी ते कुमार राजाने कहेवा लाग्यो के, तमारा मंत्री प्रमुखजो मने साहाय्य आपे, तो हुं कादवमांथी हाथीने कहाडुं. ते सांभलीने राजायें मंत्रीयोने साथें मोकल्या. तेमनी साथें ते हाथीनी समीप गया. अने मंत्रीयोने कह्युं के सो हाथसुधी आ भूमिकाने इष्टिका (ईंट)

थी बंधावो. मंत्रीयें तत्काल इष्टिकाउ मंगावी अने ते नूमिका बंधावी. त्यारें कुमारें हाथीने खावाने शेरडी मंगावीने हाथीनी पासें नाखतांज तेणे ते यथेष्ट खाधी. तेथी हाथीना अंगमां बल आव्युं. पछी ते तलावमांथी नीक करावीने जे ठेकाणें हाथी खूची गयो हतो ते ठेकाणुं पाणीथी नरावी नाख्युं. अने एक हाथणीने त्यां मंगावीने हाथीनी पासें उन्नी करी. तेने जोई हाथी पोताना शुंढादंम वडे तेनी योनिनो स्पर्श करतो छतो महाकामातुर थयो. त्यारें आरामनंदने मावतने कह्युं के, आ हाथणीने हवे हलवे हलवे दूर खसेडो. त्यारें मावतें पेली हाथणीने त्यां खसेडी कांइक दूर करी. तेनी पाछल हाथी पण बल करीने ते कादवमांथी नीकलवा लाग्यो. एम क्रमें करी ते हाथी आखो नीकलीने हाथणीनी पाछल दोडवा लाग्यो. दोडतो दोडतो गजशालामां ज्यां हाथणी आवी छे तेनी पूठें ते हाथी पण आव्यो. तेने हाथीना सेवकें आलानस्तंनने विषे बांध्यो. आखा नगरमां जय जयकार थयो. राजा कुमारनी बुद्धि देखीने खुशी थयो. पछी तेने पोतानी पासें तेडीने स्वादिष्ठ नोजन कराव्युं, अने कह्युं के वर माग. ते सांनलीने कृतज्ञोनेविषे शिरोमणि जे आरामनंदन ते कहेवा लाग्यो के, महारी तरफथी सागर श्रेष्ठीने तेडावीने नगर शेठनी पदवीयें थापी महत्त्वपणुं आपो. राजायें सागर श्रेष्ठीने तेडावीने तेने श्रेष्ठिपद आप्युं. आखा नगरमां मुख्य कीधो तेथी सागर श्रेष्ठी आनंदने पाम्यो. खुशी थयो थको पोतानी पुत्री कुमरने देवा लाग्यो कुमरें कह्युं के, मारे एक स्त्री पद्मावती छे. तेम छतां बीजीने हुं शुं करुं! तेमां वली में तमने पिता करी मान्या छे, तेथी तमारी पुत्री ते मारी बहेन थइ, तेनी साथें हुं पाणिग्रहण केम करुं?

एवी रीतें आरामनंदन सागर श्रेष्ठीने घेर रहेतां थकां केटलोएक काल वीती गया पछी एक दिवसें ते सागरश्रेष्ठीने कहेवा लाग्यो के, मारे अन्य देशमां व्यापारने अर्थें जवानी मरजी थाय छे, माटें इव्य आपो तो माल लई वहाणोमां नरीने मारी इछा हुं पूर्ण करुं! व्यापारमां जे लान थशे, ते हुं तमने आपीश. मारे तेमांथी कांई पण राखवुं नथी. हुं तो मात्र देशाटन करीने कौतुक जोईश. एवुं तेनुं बोलवुं सांनली अने तेने नाग्यशाली जाणीने ते वात कबूल करी. पछी कुमारें वहाणोमां चोखा नख्या,

आठ हजणी नेंघो चढावी. साकर, सोपारी तथा नागरवेल प्रमुख केट लाएक भोग्य पदार्थो तथा, मुशल, ऊखल, घरंट, प्रमुख उपयोगी पदार्थो साथें लीधा. रांधवासारु ठामडां, सारां सारां वस्त्रो तथा शस्त्रो पण साथें लीधां. एक अर्द्धवृद्धा स्त्री साथें रसोई करवाने लीधी. एवी बधी सामग्री एकज वहाणमां भरी ने वहाण एटलुं तो मोटुं हतुं के तेनी ऊप सात तो सढ चडता हता. ने वहाणना मालेकने मन मान्युं नाणुं आपीने भाडे बांधी लीधुं. पछी शुभ दिवस, शुभ वार तथा शुभ लग्न प्रमुख जोइने ते कुमार प्रवहणनी ऊपर चढ्यो. कह्युं छे के, "न निमित्तद्विषां क्षेमो. नायुर्वैद्यकविद्विषाम् ॥ गुरुद्विषां नहि ज्ञानं, न मुक्तिर्देवविद्विषां" भावार्थः—ज्योतिषना द्वेष करनाराने क्षेम न होय, वैद्यकना द्वेष करनारने आयु न होय, गुरुना द्वेष करनारने ज्ञान न होय, अने देवनो द्वेष करनारने मुक्ति न होय. पछी शुभ मुहूर्त्ते वहाण दरियामां हंकारी दीधुं. दैवयोगें पवन सारो लाग्यो तेथी सारी रीतें पंथनुं उल्लंघन थवा मांड्युं. वहाणमां सर्व भोग्यपदार्थो होवाथी घरनी पेठेज निशान, शरणाई प्रमुख वाद्य वागी रह्यां छे, गणिका नाची रही छे, तेनी साथें मधुर गायन थइ रह्युं छे, अने नाना प्रकारें समुद्रना मोजानी गर्जना थई रही छे, तेथी अति आनंद थइ रह्यो छे. एम करतां कोइक काळें ते वहाण एक द्वीपमां जई पहोतुं. रस्तामां मीठा पाणीनी कांइक ताण थइ जवाथी त्यां जमीन ऊपर ऊतरीने लोको पाणी भरवा लाग्यां. पण आरामनंदने तेम न करतां पोतानुं वहाण त्यांज राखवानो निश्चय कर्यो. त्यारें बीजा सार्थनां वहाणोवाळा तेने कहेवा लाग्या के, आगळ कोण जाणे क्यां पाणी मळशे माटे अंही पाणी भरी लइने अमारा वहाणोनी साथें वहाणने हंकारो, तो सारुं. अहीं अमस्तो काळ गमाववो ते सारुं नथी. ते सांभळीने ते कुमार कहेवा लाग्यो के, मारे तो आहींज रहेवुं छे, तमारे जवुं होय तो सुखेंथी जाओ. त्यारें तेओ बोल्या के, शुं तमारे अहीं समाधि करवी छे ? कुमारें कह्युं के मारा शरीरनी प्रकृति सारी नथी तेथी हुं थोडोएक काळ आहींज कहाडीश. पछी ज्यारें तबीयत सुधरशे, त्यारें आवीश; अथवा तमें ज्यारें पाछा फरशो, त्यारें हुं तमारी साथें चालीश. एवी रीतें सघळाने समजावीने विदाय कर्या. तेओ वहाणो हंकारीने चालता थया.

थी बंधावो. मंत्रीयें तत्काल इष्टिकाउ मंगावी अने ते नूमिका बंधावी. त्या रें कुमारें हाथीने खावाने शेरडी मंगावीने हाथीनी पासें नाखतांज तेणे ते यथेष्ट खाधी. तेथी हाथीना अंगमां बल आव्युं. पछी ते तलावमांथी नीक करावीने जे ठेकाणें हाथी खूची गयो हतो ते ठेकाणुं पाणीथी नरावी नाख्युं. अने एक हाथणीने त्यां मंगावीने हाथीनी पासें ऊनी करी. तेने जोई हाथी पोताना शुंढादंम वडे तेनी योनिनो स्पर्श करतो छतो महाका मातुर थयो. त्यारें आरामनंदने मावतने कह्युं के, आ हाथणीने हवे ह लवे हलवे दूर खसेडो. त्यारें मावतें पेली हाथणीने त्यां खसेडी कांइक दूर करी. तेनी पाछल हाथी पण बल करीने ते कादवमांथी नीकलवा लाग्यो. एम क्रमें करी ते हाथी आखो नीकलीने हाथणीनी पाछल दो डवा लाग्यो. दोडतो दोडतो गजशालामां ज्यां हाथणी आवी छे तेनी पूठें ते हाथी पण आव्यो. तेने हाथीना सेवकें आलानस्तंनने वि षे बांध्यो. आखा नगरमां जय जयकार थयो. राजा कुमारनी बुद्धि दे खीने खुशी थयो. पछी तेने पोतानी पासें तेडीने स्वादिष्ठ नोजन करा व्युं, अने कह्युं के वर माग. ते सांनलीने कृतज्ञोनेविषे शिरोमणि जे आ रामनंदन ते कहेवा लाग्यो के, म्हारी तरफथी सागर श्रेष्ठीने तेडावी ने नगर शेठनी पदवीयें थापी महत्त्वपणुं आपो. राजायें सागर श्रेष्ठीने तेडावीने तेने श्रेष्ठिपद आप्युं. आखा नगरमां मुख्य कीधो तेथी सागर श्रेष्ठी आनंदने पाम्यो. खुशी थयो थको पोतानी पुत्री कुमरने देवा ला ग्यो कुमरें कह्युं के, मारे एक स्त्री पद्मावती छे. तेम छतां बीजीने हुं शुं करुं! तेमां वली में तमने पिता करी मान्या छे, तेथी तमारी पुत्री ते मा री बहेन थइ, तेनी सायें हुं पाणिग्रहण केम करुं?

एवी रीतें आरामनंदन सागर श्रेष्ठीने घेर रहेतां थकां केटलोएक का ल वीती गया पछी एक दिवसें ते सागरश्रेष्ठीने कहेवा लाग्यो के, मारे अन्य देशमां व्यापारने अर्थें जवानी मरजी थाय छे, माटें इव्य आपो तो माल लई वहाणोमां नरीने मारी इछा हुं पूर्ण करुं! व्यापारमां जे लान थशे, ते हुं तमने आपीश. मारे तेमांथी कांई पण राखवुं नथी. हुं तो मात्र देशाटन करीने कौतुक जोईश. एवुं तेनुं बोलवुं सांनली अने तेने नाग्य शाली जाणीने ते वात कबूल करी. पछी कुमारें वहाणोमां चोखा नया,

आव दूजणी नेंपो चढावी. साकर, सोपारी तथा नागरवेल प्रमुख केट लाएक जोग्य पदार्थो नया. मुशल, ऊखल, घरंट, प्रमुख उपयोगी पदार्थो साथें लीधा. रांधवासारु गमडां, सारां सारां वस्त्रो तथा शस्त्रो पण साथें लीधां. एक अर्द्धवृद्धा स्त्री साथें रसोई करवाने लीधी. एवी बधी सामग्री एकज वहाणमां जरी ते वहाण एटलुं तो महोटुं हतुं के तेनी ऊप सात तो सढ चडता हता, ते वहाणना मालेकने मन मानतुं नाणुं आपीने जाडे वांधी लीधुं. पढी शुन्न दिवस, शुन्न वार तथा शुन्न लग्न प्रमुख जोइने ते कुमार प्रवहणनी ऊपर चढ्यो. कह्युं ढे के, " न निमित्तं द्विषां क्षेमो, नायुर्वैद्यकविद्विषाम् ॥ गुरुद्विषां नहि ज्ञानं. न मुक्तिर्देवविद्विषां" जावार्थः—ज्योतिषना द्वेष करनाराने क्षेम न होय, वैद्यकना द्वेष करनारने आयु न होय, गुरुना द्वेष करनारने ज्ञान न होय, अने देवनो द्वेष करनारने मुक्ति न होय. पढी शुन्न मुहूर्त्ते वहाण दरियामां हंकारी दीधुं. दैवयोगें पवन सारो लाग्यो तेथी सारी रीतें पंथनुं उल्लंघन थवा मांड्युं. वहाणमां सर्व जोग्यपदार्थो होवाथी घरनी पठेज निशान. शरणाई प्रमुख वाद्य वागी रह्यां ढे, गणिका नाची रही ढे, तेनी साथें मधुर गायन थइ रह्युं ढे, अने नाना प्रकारें समुद्रना मोजानी गर्जना थई रही ढे, तेथी अति आनंद थइ रह्यो ढे. एम करतां कोइक कालें ते वहाण एक द्वीपमां जई पहोतुं. रस्तामां मीठा पाणीनी कांइक ताण थइ जवाथी त्यां जमीन ऊपर ऊतरीने लोको पाणी जरवा लाग्यां. पण आरामनंदने तेम न करतां पोतानुं वहाण त्यांज राखवानो निश्चय कर्यो. त्यारें बीजा साथेंनां वहाणोवाला तेने कहेवा लाग्या के, आगल कोण जाणे क्यां पाणी मलशे माटे आंही पाणी जरी लइने अमारा वहाणोनी साथें वहाणने हकारो, तो सारुं. अहीं अमस्तो काल गमाववो ते सारुं नथी. ते सांजलीने ते कुमार कहेवा लाग्यो के, मारे तो आहींज रहेवुं ढे, तमारे जवुं होय तो सुखेंथी जाउ. त्यारें तेउ बोल्या के, शुं तमारे अहीं समाधि करवी ढे ? कुमारें कह्युं के मारा शरीरनी प्रकृति सारी नथी तेथी हुं थोडोएक काल आहींज कहाडीश. पढी ज्यारें तबीयत सुधरशे, त्यारें आवीश; अथवा तमें ज्यारें पाढा फरशो, त्यारें हुं तमारी साथें चालीश. एवी रीतें सघलाने समजावीने विदाय कर्या. तेउ वहाणो हकारीने चालता थया.

कुमारें पोतानुं वहाण त्यांज राख्युं. पछी पोताना माणसो पासेंथी चावल प्रमुख जे वस्तुउ साथें लीधेली हती, ते नीचें किनाराऊपर उत रावी. चोखा सारी रीतें साफ कराव्या. भेंषो दोवरावीने दूध कढाव्युं. अने तेने जमावीनें दही कीधुं. तेना करंबा कीधा. ते ज्यारें समुद्रनी रेल आववानो समय थाय, त्यारें पोताना दासोनी मारफतें केटलीएक छाणा नी करेली गरम राख त्यां दिये, तेनी वासथी त्यांना मत्स्य त्यां आवे, अने पोताना देहनी खरज टालवाने अर्थें आलोटवा लागे, ते समयें ते कर्पूरवासित करंब नाखी दिये, तेने खावानेमाटें रसनाना स्वादी जलना जीवो संख्याबद्ध त्यां आवे. एम करतां केटलाएक दिवसो वीती गया. दररोजना सहवासथी ते जलचरो निर्भय थइ गया. अने जेम कमलना गंध ऊपर भ्रमरो आवी मले, तेम ते जलजंतुउ विश्वास राखीने आवी एकठा थाय, अने ते करंबा खावा लाग्या. ते जंतुउ आस्ते आस्ते मनुष्योनो एवो विश्वास करवा लाग्या के, कोइनो भय न राखतां नियम समयें आवीने पोतपोताने ठेकाणे खावा मंन्डी जाय. एक दिवसें सर्वथी आगल एक जलजंतु आवीने पोतानो आहार खाइ ते ठेकाणें एक रत्न नाखीने चालतो थयो. कुमारें ते रत्न लइ लीधुं, ने मनमां घणो हर्ष पा म्यो. ते दिवस बीजा सर्व जलजंतुउयें पोतपोताना करंबा खाईने ते स्थल मां रत्न नाखी जवानो चाल कर्यो. एम दररोज जेटलां रत्नो एकठां थाय तेटलां रत्नो भेंषोनां छाणनां छाणां थापी तेमां नाखी दिये. तेनी चाकरोने पण खबर पडे नहीं. कह्युं छे के, “ अपरीक्ष्य न कुर्वीत,मर्मज्ञः स्वानुजीवि तम् ॥ मर्मज्ञोदुर्जनोलोकः, संतापयति सज्जनं ” भावार्थः—पोताना चाकर नी परीक्षा लीधा विना तेने पोतानो मर्म कहेवो नहीं; केम के, कोई दु र्जन मनुष्य होय तो सज्जनने पीडा करी दिये छे. पेलां रत्न घालीनें छा णां करेलां जूदां राखतो जाय, अने रत्न विनानां जे छाणां करे, ते जुदां राखे. एवी रीतें बुद्धियें करी घणां रत्नो एकठां करीने गुप्त राख्यां.

हवे पूर्वें कंचुको लेवा माटे स्त्रीनी केडे लाग्यो हतो तेवारें पोतानी नाव नावडायाने भलावी हती तिहां ते नावडीयो नाव बांधीने निश्चिंत सूतो तेने निद्रा आवी गइ एवामां समुद्रनी वेलना जोरथी नावना बंधन त्रूटां पाणीना कल्लोलनी प्रेरणायें नाव समुद्रमां पड्युं पछी ते कल्लोलें हणा

तुं हणातुं फरतुं फरतुं कुमरना प्रारब्धना योगें पाछुं तेज द्वीपने विषे आव्युं तेने कुमार जोइने खुशी थयो. नाविक ऊतरी आवीने पोताना ध णीने पगे लागो. अने सर्व हकीगत कही संभळावी. भावी पदार्थ को इनाथी टळतो नथी. एम तेनुं समाधान करीनें मत्स्यो मार्टे तैयार करे ला करंबा जमवाने आप्या. नाविक घणा दिवसोनो भूख्यो हतो तेथी सारी रीतें खाइ धरायो. कुमारें पण पोताने थएली रत्नप्राप्ति विना बाकी नी सघळी हकीगत तेने कही संभळावी.

पेलां साथेनां वहाणो जे देशांतरें गयां हतां, तेउना मालेको पोतानो माल वेचीने प्रारब्धानुसार लाभ मेळवी पाछा ए द्वीपने विषे आव्या. प्रथ मनी पेठें वळी पण पाणी भरवाने नीचें ऊतर्या. पोताना साथीने आवी मल्या. पछी कहेवा लाग्या के, हवे तो तमें अमारी साथें चालशो के नहीं? कुमर बोल्यो के, हा हवे हुं तमारी साथें आववानें तैय्यार छुं. पछी पोता नी सर्व तैय्यारी करवा लाग्यो. बे जातिनां छाणां कर्यांहतां, ते पोताना वहाणमां भर्यां ते जोईने पेला व्यापार करी आवेला वाणीयाउ मश्करी करवा लाग्या, ने कहेवा लाग्या के,आ छाणां वहाणमां शा सारु भरो छो? तेना करतां अमारो माल भरो, तो अमें तमने भाडुं आपीयें. एटली तो पेदाश करी चालो. कुमर बोल्यो के, भाई अमारे एटलुंज घणुं जे पोताने गमे, ते सारुं कहेवाय. कह्युं छे के, "कोईने कांई गमे,कोइने कांई सुहाय॥ गाडूं भर्युं सोपारियें,सेठ वहेडां खाय." पछी संकेत प्रमाणें बधां वहाणो साथें हकार्यां. चालतां चालतां ज्यारें मध्य पंथें आव्यां, एटले डुर्वात व हावा लाग्यो. वहाणो माहादरियामां डुर्वाटें पड्यां. तेथी घणा दिवसो नीक ली गया. त्यारें इंधणां खूट्यां. एटले बधानी नजर पेला छाणां ऊपर गई. अने कुंवरने पूछवा लाग्या के,भाई छाणां अमने आपशो के? कुमर बोल्यो के, भाई एम ते कांई थतुं हशे! पोतानो माल बीजाने कोइ रीतें अपाय नहीं. त्यारें ते बिचारा निराश थया, अने काचुं धान्य खावा लाग्या. ते थी पेटमां दुःखवा मांड्युं. अने रोग उत्पन्न थवानो संभव थयो. त्यारें फ री पूछवा लाग्या के, भाई! थोडाक छाणां वेचातां आपशो? जे कीम्मत मागो, ते अमें आपीयें. कुमर बोल्यो के, एक सरतथी हुं छाणां आपुं. जे वां छाणां हुं तमनें आपुं, तेवां पाछां हुं लेउं! ते तेमणें कबूल कर्युं,अने

ते प्रमाणें खत लखी आप्युं. तेमां साथेंना बीजा माणसोनी साक्षीयो न खावी. पछी जे न्हाना नावमां रत्नरहित छाणां हतां ते गणी आप्यां. तेथी वाणीया खुशी थया. अने कहेवा लाग्या के,जो छाणां हतां तो अमें जीवता रह्या, नहिं तो मरी जात. माटें तमो अमारा उपगारी थया छो. कुमारें कह्युं के, भाई उपकार शानो ! जेवां दीधां तेवां लेशुं. पछी दैवयोगें सारो पवन नीकल्यो, तेथी वहाणो रस्ते चढ्यां. केटलाएक दिवसें क्षेमकुशलें पोताना नगरमां आवी पहोता. वहाणोथी उतरी वधामणीये वधामणी दीधी. व्यवहारीया सामे आव्या. तेमने सारी रीतें मल्या. सागरश्रेष्ठीने वधामणी दीधी. ने कह्युं के, तमारां वहाणें अमारा जीवो बचाव्या छे. जो तमारा वहाणमां छाणां भरेलां न होत तो अमें बधा मरीजात. रस्तामांज आडबंदरें वहाण नांगरी, त्यांज ऊतरी छाणां थापीने भरी लाव्यानुं अमारा प्रारब्धेंज आरामनंदनने सूचव्युं होय नहिं? एम भासे छे. बीजुं कांई कमायो नहीं तो शुं थयुं ! क्यां तमारा घरमां कांई कोइ वस्तुनी कमती छे ! एवां मर्मनां तथा चानकनां तेउनां वचनो सांभलीने सागरश्रेष्ठी मनमां कांईक खिन्न थयो. तेथी ते कुमरनी सामे आव्यो नहीं.

पछी बधा सफर करी आवेला वाणीयाउ पोतपोताना सामर्थ्य प्रमाणें भेट लईने प्रथम लक्ष्मीधर राजाने मलवा गया. तेउनी साथें आरामनंदन आव्यो नहीं, पाछल रही गयो. बधा भेट मूकीने राजाने मल्या तेथी राजा अति हर्षित थयो. अने तेउना मालनुं दाण उछुं कर्युं. एटलामां पेलो कुमार पण एक अति उत्तम रूमालमां छाणां नाखीने राजाने भेट देवा आव्यो. तेवारें बाहेर पोलीयाने कह्युं के, राजाने खबर करो के, आरामनंदन आपने मलवानी चाहना करे छे ? ते वात पोलीयायें राजाने जइ कही. राजायें तुरत तेडावी लीधो. त्यारें तुरत आवीने प्रथम पहेलां छाणांनी चंगेरी राजानी पासें भेट दाखल राखी. राजायें पासें लेई जोई तो मांही छाणां दीठामां आव्यां. ते जोइने लोक सर्व हसवा लाग्यां अने राजायें विचार कर्यो के ए पोतें माहाबुद्धिमान् छे. माटें भेट दाखल छाणां मूकवानुं कांइ प्रयोजन होवुं जोइयें. कह्युं छे के, “निरर्थं न प्रवर्त्तेत,जनो बुद्धिमतांवरः ॥ प्रदोहको नृपस्याग्रे, मृड्पायनमातनोत्” भावार्थः—श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुरुष जे छे, तेउनी प्रवृत्ति प्रयोजन विना होती नथी. एवो विचार

करीने राजायें पेली रूमालनी गांसडीमांथी एक छाणुं काढाड्युं, अने ते कुमारनेज आप्युं, कुमारें राजी थइ लइने ते छाणुं नांग्युं. तेमांथी एक रत्न नीकल्युं. ते अमूल्य रत्न जोइने राजा चमत्कार पाम्यो कुमरने घणुं सन्मान दीधुं अने कह्युं के हे कुमरजी म्हारी पुत्री तमें परणो. कुमरें कह्युं हवे परणीश. एम कही पछी अनुक्रमें सर्व छाणां नांगी देखाड्यां. ते प्रत्येकमां एक एकथी अधिक किम्मतनां रत्नो नीकल्यां. ते वधां राजाने अर्पण करीने कुमर वोल्यो के, महाराजा म्हारी ऊपर कृपा करीने मारो माल जोवाने मारी सायें दरियाना कांठा ऊपर पधारो. ए बोलवुं मान्य करीने राजा समुद्रना किनारापर गयो. त्यां छाणानी राशिमांथी घणांक छाणां नांगी देखाड्यां,तेउमां एक एकथी अधिक किम्मतवालां एवां रत्नो नीकलवा लाग्यां. एम वधां छाणां रत्नोवालां देखीने राजा अति अजायव थयो. अने तेनी सायें पेला वाणीयाउ पण चक्क वनी गया. तेउनां मुख कालां थइ गयां. मनमां चिंता करवा लाग्या के, आवां छाणां ते आपणे क्यांथी आपशुं ! आपणें जे आनी मश्करी करता हता,ते एक कोरें रही अने उलटी आपणी मश्करी थइ. म्हाद्या माणसें कह्युं छे के कोइनी ऊपर हसवुं नही, ते शीखामण आपणे प्रत्यक्ष पाम्या छेयें, हवे आपणी शुं वले थशे?

पछी पेला कुमरें राजानी आज्ञा मागीने ते वधां छाणामांथी रत्नो काढीने सागरश्रेष्ठीने घेर मोकलावी दीधां. ते जोइ सागरश्रेष्ठी अति आनंदित थयो. कह्युं छे के, 'जरथी जवर पण जीताय' तेम राजा तथा सागरश्रेष्ठी ए वन्ने वश थइ गया. गाममां म्होटो अधिकारी सागरश्रेष्ठी जाणी वाणीयाउनां पोतीयां नीकली जवा लाग्यां,अने घेलाना जेवा वनी गया. छेवट ना इलाज थइ सर्व मलीने सागरश्रेष्ठीने घेर आव्या. अने अति करगरीने कहेवा लाग्या के, अमें आरामनंदन पासेंथी छाणां लइने तेथी रसोइ करीने वाली नाख्यां अनें जे राख थइ ते समुद्रमां नाखी दीधी. तेमां कांइ रत्नो अमने दीठामां आव्यां नहिं. तेम छतां अमें लखी आप्युं छे के,तमारां वीजां छाणांनां जेवांज छाणां पाछां आपवां, ते पालवुं जोइयें. अने एटली अमारी शक्ति नथी. बीजो अमारो कोइ इलाज चालनार नथी,मात्र अमारुं जे कांइ माल मता वगेरे छे, ते जोइयें तो तमें लइ लियो. अमें राजी खुशीथी आपवाने तैय्यार छैयें. पण तेवां छाणां अमें क्यांथी

आपीयें ? तेम ढतां जेम आपनी मरजी होय तेम करवाने अमें हाजर ढैयें. एवां अति दीनतानां वचन सांजलीने कुमर बोल्यो के, नाइयो हुं तमने म हारुं लेणुं माफ करुं ढुं. हवे सुखें जइने तमे तमारो माल ऊतारो, अने तेनो विक्रय वगेरे करीने पोताना कृत्यमां लागो. हुं मारुं लेणुं कोइ दहाडे तमा री पासें मागनार नथी. तमें जीवता रह्या, तेथी जे पुण्य कर्म बंधायुं, तेज मारा लेणामां मनें मल्युं. एम हुं मानी लइश. एम कहीने पेलुं लखत फाडी नाख्युं. पान सोपारी मंगावीं बधाने आपीने विदाय कस्या. तेथी ब धा हर्षित थइ कुमारनी कीर्त्ति गाइने पोत पोताने घेर गया.

आरामनंदन विचार करवा लाग्यो के, आजे घणुं ड्व्य मने मल्युं ढे, तेनुं मारे शुं करवुं ! कह्युं ढे के, "दानं नोगोनाश,स्तिस्रोगतयो नवंति वित्त स्य॥ यो न ददाति न नुंक्ते, तस्य तृतीया गतिर्नवति." नावार्थः—वित्त एटले धन तेनी त्रण गति थइ शके ढे. दान, नोग अथवा नाश. तेमां पे हेला बे प्रकार नहीं कस्याथी त्रीजो नाश नामनो प्रकार थाय ढे. माटे शुनकार्यने अर्थें ड्व्य खरचवुं, तेज योग्य ढे. पढी चैत्योपाश्रय, साधर्मि वात्सल्य, साधुजन पोषण, बंदीजनमोचन, दीनोद्धार, तथा याचक जन संतोष, इत्यादिकने विषे लक्ष्मीनो उपयोग करवा लाग्यो. नले दिवसें घणो महोत्सव करी राजकन्या परण्यो, तेनीसाथें सात नूमिना आवास मांहे क्रीडा करतो रहे ढे अमुलिक रत्न वटावी खरचीने यश लीये ढे.

एम करतां कोइ एक समयें अर्द्धरात्रिने विषे निद्रामां सूतो हतो तेमां तेने एक स्वप्न लाधुं, तेमां तेणें एवुं जोयुं के, लक्ष्मीपुर नामना नगरमां न र्मदा नदीना तटनी ऊपर पद्मावतीयें अग्निनी चिता करावी अने तेमां पेस वानी तैय्यारी करी ढे. एटलामां जागी ऊठ्यो. तेवारें माहा डुःखने पामी ने चिंतवना करवा लाग्यो के, मुऊने पुष्पनुं कंचुक मल्युं नहीं, ते तो रह्युं, पण उलटो पद्मावतीनो वियोग थयो. ते विरहथी डुःखी थइ थकी तेणें अ ग्निमां प्रवेश तो नहिं कस्यो होय ? जो एमज थयुं होय तो महारुं जीवि तव्य शा कामनुं ढे ? आटला दिवस सुधी ते खचित जीवती रही नहिंज होय ! तेणें अग्निनी चितामां पडीनेज प्राण खोयां हशे, एमां संशय नथी ! मनें स्वप्न लाधुं ते खरुंज होवुं जोइयें. जो एम थयुं होय तो हुंज खरेख रो स्त्रीघाती थयो ढुं. तेनुं मने पाप लागुं ! हवे मने पण शरीर राखीने शुं

करवुं छे? तेथी कोइ पर्वतने विषे अनशन व्रत लइने प्राणनो त्याग करवो. एवुं चिंतवी राजा अने पोतानी स्त्री तथा सर्व परिवार पासेंथी शीख मागी, राजायें कह्युं इहां सुख मूकीने केम जाउ छे? तमें कहो ते अमें आपीयें! कुमरें कह्युं के हाल म्हारे घेर जवानी उत्कंठा छे माटे रजा आपो हुं फरीने तरत इहां आवीश. पछी सागरश्रेष्ठीनी पासें घेर जवानी रजा लइ विदाय थइने एक पर्वत ऊपर गयो. त्यां एक योगी मंत्र साधना करतो बेठेलो दीठो. तेम योगी पण कुमरने जोइने विनय प्रतिपत्ति करीने कहेवा लाग्यो के, मारा भाग्यने लीधेज तुं आंही आव्यो छो. में पूर्वे मंत्रसाधना करी पण उत्तरसाधकविना सर्वे निःफलथइ हवे जो उत्तर साधना तुं करे, तो म्हारो मंत्र, साध्य थाय.

एवुं ते योगीनुं बोलवुं सांभलीने कुमारें विचार कर्यो के, मरवाने अर्थे तो हुं अहीं आव्योज छुं, तेम करतां परोपकार कांइ थाय तो सारुं छे. परोपकार करवो ए मनुष्य मात्रनो धर्म छे. पछी योगीना कहेवा प्रमाणें उत्तरसाधकपणुं कबूल कर्युं. त्यारें योगी एक अग्निकुंडमां होम करवा लाग्यो अने कुमारने कह्युं के जो भूत, प्रेत, पिशाच तथा वेतालादिक कोई विघ्न करवा आहीं आवे, तो तेनुं तुं निवारण करजे. कुमार हाथमां खड्ग लईने चोकी करतो रह्यो. एटलामां एक वेताल त्यां आव्यो, तेनी सामें कुमार खड्ग लईने दोड्यो. बन्ने बाथोबाथ आव्या. कुमारें वेतालने नीचें नाखी दीधो. अने साहसिक थइ वेतालनी ऊपर चढी बेठो वेताल वश थई रह्यो. अने कहेवा लाग्यो के, हुं ताहारुं पराक्रम जोईने राजी थयो छुं. माटें कांई वर माग, कुमर बोल्यो के ज्यारें हुं तनें संभारुं, त्यारें आवजे ते वात कबूल करीने वेताल जतो रह्यो. पछी कुमर योगीनी पासें जई ऊभो रह्यो. ते समयमां योगीनी पासें मंत्राधिष्ठायक देव आवी कहेवा लाग्यो के, जे तुं कहे, ते करुं! योगी बोल्यो के, जे पुरुष आ अग्निना कुंडमां प्रवेश करे, तेने सोनानो करो. ते तेणें कबूल कर्युं. त्यारें रातां कणेरनां फूलोनी माला ते कुमरना गलामां घाली तथा रतांजलिना रसना छांटा नाख्या. अने कहेवा लाग्यो के, आ कुंडने तुं प्रदक्षिणा कर. त्यारें शुद्धसम्यक्त्ववान् जे पेलो आरामनंदन, ते नवकार मंत्रनुं स्मरण करतो थको प्रदक्षिणा देवा लाग्यो. तेनी पाछल योगी पण प्रदक्षिणा देतो चाल्यो.

नाग फाव्याथी योगीयें कुमरने उपाडीने पेला कुंडमां नाखी दीधो. तेवोज पोताना साहसपणाथी ते फाल देतो बाहिर आवी पड्यो. अने ते योगीने फालीने अग्निना कुंडमां नाखी दीधो. के तत्काल ते योगी सोनानो पुरुष बनी गयो. कुमारें सम्यक्त्व अने नवकार, जापनुं महात्म्य देखीने धर्म उपर अति आस्ता करी. कह्युं ले के, "वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा, रक्षंति पुण्यानि पुराकृतानि" नावार्थः—वनमां, युद्धमां, शत्रुलमां, जलमां, अग्निमां, महार्णवमां, पर्वतना मस्तकने विषे, निद्रामां,प्रमत्त अवस्थाने विषे महासंकटनी अवस्थामां,पूर्वें करेला कर्मो रक्षा करे ले. पली ते कुमार सुवर्णना पुरुषने त्यांज दाटीने त्यां निशानी करीने दक्षिण दिशा तरफ चालतो थयो. रस्तामां जतां एक लेकाणें एक योगीनी चेली, पोतानी बीजी चेलीयोने कहे ले के, तमने आटली बधी वार क्यां लागी ? ते चेलीयो बोली के स्वामिनि ! अमें रस्तामां एक कौतुक दीतुं, त्यां अमने वार लागी. वली ए वात पण आपने सांनलवा जेवी ले. कह्युं ले के, "वार्त्ता च कौतुकवती विषदा च विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनानेः ॥ तैलस्य बिंडुरिव वारिणि डुर्निवार,एतत्त्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम्" पली पेली गुराणी योगिणी तथा एक कोरें ऊनो रहेलो कुमर ए बन्ने सांनले ले, अने पेली चेलीयोमांनी एक चेली बोलें लेः—के आ जंबुद्वीपमांना नरतक्षेत्रमां वैताढ्य नामनो पर्वत ले. तेनी दक्षिण श्रेणीयें एक मंगलावती नगरी ले तेनो विद्युन्माली नामनो विद्याधर राजा अष्टापद पर्वत तरफ जतो हतो. चालतां चालतां ह्रीपुर नामना नगरमां जई पहोतो. त्यां एक उद्याननने विषे महेंद्रराजानी स्त्री रतिसुंदरी पोतानी सखीयोनी साथें जलक्रीडा करती हती, तेने जोवा सारु विद्युन्माली विद्याधर एक महोटा वृक्ष उपर चडीने बेलो. अने तेउनी सर्व रमत जोया करे ले, एटलामां रतिसुंदरी पोतानी क्षेमकरी सखी प्रत्यें पूलवा लागी के, मारा धणीने फूलनुं कंचुक मल्युं के नहीं? क्षेमकरी बोली के तारा पुण्यना योगें मल्युं. रतिसुंदरी बोली के,केम प्राप्त थयुं? क्षेमकरी बोली के, चोरोयें नगरमां चोरी करी, ते वधा पकडाया. तेउने बांधीने कोटवाल राजानी पासें लई गयो. राजायें न्याय करीने तेउनां घर लूटी लेवानुं लराव्युं. अने कह्युं के, जे माल नीकले ते माल धणीयोने आपो, तेउयें पोतपोतानो

माल उलखीने लइ लेवो. एवी राजानी आज्ञाथी ते चोरोनां घर लूंटतां तेमां पुष्पनुं कंचुक नीकल्युं. ते सेवकें राजाने आणी आप्युं. राजा जोइने राजी थयो. ते कंचुक राजायें तारा सारु राख्युं छे. बीजी कोइ स्त्रीने आप्युं नथी. एवी वात सांभलीने रतिसुंदरी कहेवा लागी के, क्षेमंकरी सखी तुं जईने राजानी पासेंथी ते कंचुक लइ आव. जेथी ते कंचुक पहेरीने हुं राजानी पासें जाउं, अने तेना अर्द्धासने जइ बेसुं. ए वात मानी, ते क्षेमंकरी राजानी पासें गइ अने जइने तेनी पासेंथी पेलुं कंचुक मागी लई राजी थती पाछी आवे छे. एटलामां विद्युन्माली विद्याधरें ते कंचुकने अधर हाथमांथी ऊचकी लीधुं. अने पोताना घेर लइ जइ पोतानी मानीती स्त्रीने देवा लाग्यो. ते जोइने बीजी स्त्री बोली के, ए कंचुक जो एने आपशो,तो हुं अग्निमां बलीने मरीश. पछी ते बन्ने शोक्यो कंचुक सारु वढवा लागी. त्यारें पेला विद्याधरें विचार्युं के हमणां ए बन्नेमांनी एकेने कंचुक मलवुं जोइतुं नथी. एम कर्याथी कजीयो मटशे. एवो संकेत करी ते कंचुक लइ कोइ छाने ठेकाणे राखीने पोतें अष्टापद पर्वत तरफ तीर्थयात्रा करवा गयो. ए आश्चर्य जोवाने अमें ऊभी रहीयो हती. तेथी वार लागी. ए अमारो अपराध थयो ते क्षमा करो. एटली वात पेली चेलीयें कही ते आरामनंदन कुमरें सांभली लीधी. अने कंचुकनी खबर मली तेथी खुशी थयो. पण मनमां तर्क थयो के मारी स्त्रीयें अग्निमां प्रवेश कर्यो होय तो कंचुकनी शोध मलेली शे कामें आवे!! पछी मनमां निश्चय कर्यो के जो एम थयुं हशे तो मारे पण योगीना कुंडमां बली मरवुं. हवे शोध केम मले के, पद्मश्री बली मुई के जीवती छे! एनी शोध करवा नगरमां तो जवुं न जोइयें. केम के, त्यां गयाथी जो जीवती होय, तो तो ठीक, पण जो मरण पामी गइ होय तो पाछा फरवुं मुश्कील थाय. अने त्यां प्राण त्याग पण थाय नहीं. ने आखो जन्म दुःखमां कहाडवो पडे, ते आर्तध्यानथी धर्मनी साधना पण थाय नहीं, ने पछी अतोभ्रष्ट ने ततोभ्रष्ट थया जेवुं बने. माटे मनें जे स्वप्न लाधुं, ते खरुं होवुं जोइयें. नहिं तो एवुं स्वप्न केम लाधे. मारी स्त्रीनी सार्थे मारी तीव्र प्रीति हती, तेम तेनी पण माराविषे तीव्र प्रीति हती, तेथीज तेनी प्रीतिना पुद्गल मारा अंतःकरणमां प्रवेश करीने स्वप्न रूपें थया. एवुं खचीत मानवुं जोइयें छेयें.

एवो निश्चय करीने अग्निना कुंमनी पासें ते कुमर आव्यो, अने नवकार मंत्र जपवा लाग्यो. एटलामां एक पासेंना वृक्षमांथी एक लेख ते कुमरनी पासें आवी पड्यो. ते लइने वांचवा लाग्यो. स्वस्तिश्री लक्ष्मीपुरथकी श्रीविक्रमराजा यथास्थाने आरामनंदनप्रति आलिंगन होजो. तारी स्त्री पद्मावती तारा वियोगथी अग्निमां प्रवेश करतां बतां में आठ वर्षनो अवधि करीने जीवती राखी बे. त्यारथी तारी शोध करवाने ठेकाणे ठेकाणे शुक तथा वानरादिकोने मोकल्या बे. माटें जो आठ वर्षमां तुं आवी पोहोंचीश नहीं, तो तारी स्त्री अग्निमां प्रवेश करशे. तेनो दोष अमारे माथे नथी. तेथी जेम बने तेम जलदी घेर आव" ए प्रमाणें वांचीने कुमर मनमां विचार करवा लाग्यो के, स्वप्ननो अर्थ अने आ पत्रनो अर्थ मलतो आव्यो खरो, पण आकाशमांथी लेख केम पड्यो! एवी आशंकाथी ऊपर जोवा लाग्यो, एटले एक वानर दीठामां आव्यो. त्यारें ते नीचें आवीने पगे लाग्यो. अने सघलो समाचार मुखथी कही संजलाव्यो. त्यारें तेनी पाकी खात्री थइ, पण कंचुक विना ठाले हाथे जवुं ते सारुं नहीं. जो कंचुक साथें लइ जाउं, तोज खरी खूबी कहेवाय! एवो निर्धार करी एक वृक्षनुं पत्र लइने तेनी ऊपर एक वल्लीना रसवडे लख्युं के, "मने तमारुं पत्र पहोच्युं. ते वांचीने घणो संतोष थयो बे. हवे हुं शीघ्रज आवी पहोचीश. पद्मावतीने स्वस्थ करी राखजो. अने मह्हारा प्रेमें करी जुहार अंगीकार करजो" एवुं लखी ते पत्र पेला वानरने आपीने विदाय कर्यो, अने पोतें कंचुक लेवाना हेतुथी त्यांथी चालतो थयो.

मार्गमां जतां एक ठेकाणे केटलाएक व्यंतरो वानराउनां रूप धारण करीने रमता हता, ते तेणें दीठा. तेउमां कोइ राजा थयो बे, कोइ मंत्री बन्यो बे, कोइ आमात्य थयो बे, कोइ सचिव थयो बे, कोइ सेनाधिपति थयो बे, कोइ स्वार थया बे, कोइ पदाति थया बे, तथा कोइ जासूद प्रमुख राज्य चर्या करी रह्या बे. एवा समयमां एक अनुचरने राजायें आज्ञा करी के सूतारनी पासें जइने काष्ठना मयूरो घडावी लाव. ते काम ते त्वराथी जइ करी आव्यो, अने राजाने जणाव्युं के माहराज! आपनी आज्ञा प्रमाणे मयूरो सर्व तैय्यार बे. राजायें तरत सर्व मयूरो पोताना मंत्री प्रमुखने वेहेंची आप्या अने एक सारो मोर जोइने पोतें राख्यो. पढी ते मोर ऊ

पर वेगीने पोताना सैन्य सहित वैरीने जीतवाने चाल्यो. तेउनी साथें आ गमनंदन पण कौतुक जोवाने नीकल्यो. चालतां चालतां नीलमुख वान रना वननी पासें आवी पहोच्या. त्यारें मोरनी स्वारीयें जे कालमुख वानर चडी आव्यो हतो, ते पोताना सैन्यसहित वाहनथी नीचें ऊतरी पाय दलरूप तैय्यार थयो अने पेला काष्ठना मोरो एक कोरें राखी मूक्या. ए लश्करने जोईने नीलमुख वानर सामे चडी आव्यो. अने पोतानी साथेंना सैन्यने व्यूहरचनायें करी सज्ज करि राख्युं. पछी परस्पर युद्ध थवा मांड्युं. वानराउ चीचीरीयो करी करी तथा दांत घसी घसीने एकबीजाने मारवा लाग्या. तेउने सेनाधिपतियो हिम्मत देवा लाग्या. एम घणा कालसुधी यु द्ध थयुं, त्यारें बन्ने सैन्योना वानराउ अति थाकी गया. तेथी केटलाएक नासवा लाग्या, अने केटलाएक शिथिल थई गया. एवुं जोईने कालमुख त था नीलमुख ए बन्ने शत्रुउ सामसामे आवी गया, अने आपसमां लडवा लाग्या. तेमां कालमुख वानर जे प्रथम घणुंज अभिमान करीने सामे चा ली आव्यो हतो, तेने नीलमुख वानरें युद्धमां पराजय कर्यो. त्यारें जेम वायुयें करी तृणो विखराइ जाय, तेम कालमुखनुं लश्कर वीखराई गयुं. व धा वानराउ ज्यां त्यां नासवा लाग्या. एवा टांकणामां कुमर, पेला मोरो मांथी एक मोर लईने तेनी उपर बेशी आकाशमार्गें करी वैताढ्य पर्वतनी ऊपर मंगलावती नगरी प्रत्यें गयो. त्यां अवसर जोईने विद्युन्माली विद्या धरना मालीयामां चोथीभूमिना गवाक्षें सुवर्णमय पर्यंक ऊपर पडेलुं कंचुक दीठुं, ते उपाडी चालती वखतें महोटे सादें पोकार करी कहेवा लाग्यो के, हुं आरामनंदन आ महेलमांथी पुष्पनुं कंचुक लई जाऊं छुं. जे वीर सुभट होय ते मारी पाछल वेशक आवे. एम कही मयूर वाहन उपर चडीने पोताना नगर तरफ जवा नीकल्यो. एटलामां विद्युन्माली विद्याध रनी स्त्रीयोयें बुंब करी के, घरमांथी कोई चोर पुष्पनुं कंचुक चोरी लेई जाय छे. तेने पकडीने तेनी पासेंथी ते कंचुक लई लियो. ते सांभलीने कट क एकठुं थयुं, तेने साथें लईने ते बन्ने स्त्रीयो कुमरनी पाछल लागीयो. कुं वरने आवी घेर्यो, त्यारें कुमरें विचार कर्यो के हवे शुं करवुं! पोतानां क र्यां पोताने नड्यां. जो में जाण कर्युं न होत तो आवुं बन्युं न होत. पण ते सारुं कहेवाय नहीं, ने चोरमां खपीयें. माटें जे थयुं ते ठीकज छे. सारुं

नरसुं थवुं कर्मना हाथमां छे! एटलामां पेला वेतालनी वात याद आवी. तेथी तेनुं स्मरण कर्युं के, ते आवी पासें उन्नो रह्यो, अने पूछवा लाग्यो के शुं आज्ञा छे? ते फरमावो. त्यारें आरामनंदने पोतानी वधी हकीगत संन्नलावीने कह्युं के, जो आ कंचुक हवे जलदी मारी स्त्रीने जइ नहीं आपुं,तो ते चितामां पडीने पोताना प्राणनो त्याग करशे. माटें हुं आ आपी आवुं तिहांसुधी आ लश्करने अटकावी राख. एवुं सांन्नलीने वेतालें कह्युं के, में पण आवतां मार्गमां एक नगरनी बाहेर चिता खडकेली जोइ ते ए कारण सरज हशे माटें तमें जलदी जाउ. हुं लश्करने अटकावी राखुं छुं.

एवुं वेतालनुं बोलवुं सांन्नलीने कुमारने वधारे चिंता उत्पन्न थई, केम के, आठ वर्षनो अवधि पूरो थवा आव्यो हतो. पछी कुमर उतावलो चालतो थयो, हवे त्यां पद्मावती पणराजाने कहे छे के आठ वर्ष पूरां थयां तो पण मारो पति आव्यो नहीं,हवे चितामां हुं प्रवेश करीश. एम कही सर्व जनोने यथायोग्य रीतें मलीने तथा पंचपरमेष्ठिनुं स्मरण करीने ते चितामां आवी पडी. एटलामां आकाश मार्गें मयूरना वाहन उपर बेठेलो कुमर आवी पहोतो, अने ते मयूर तथा कंचुकने एक कोरें मूकी नमस्कार मंत्र न्नणी कहेवा लाग्यो के, मारी स्त्री पद्मावती जो सुशील होय अने जो शीलनो महिमा होय तो अमे बन्नेने कल्याणनी प्राप्ति थजो. एम कही तेणे चितामां प्रवेश कर्यो. ते समयें देव सहायथी ते प्रज्वलित अग्नि शीतल पाणीना जेवो थई गयो. त्यारें जेम पाणीमांथी माणस बाहिर नीकले,तेम ते बन्ने स्त्रीपुरुष, बाहेर नीकल्यां. एवुं कौतुक जोइने राजा प्रमुख सर्व नगरनां लोको अति हर्षने पाम्यां; अने आनंदना निशाण वाग्यां. हवे एज समयमां पेलुं कटक वेतालनी साथें युद्ध करतुं करतुं,ए नगर पासें आव्युं. तेने जोतां कुमरें अग्निमां प्रवेश कर्यो तेथी तेउयें जाण्युं के अ माराथी मरीने आम कर्युं जणाय छे. तेथी त्यां पडेलुं ते कंचुक ते विद्याधरनी स्त्रीउयें उपाडी लीधुं पण एटलामां तो अग्नि शीतल थई गयो ने ते बाहेर जेमना तेम नीकल्यां,ते जोईने तेउ विस्मय थया. एवो शीलनो महिमा जोई वधा विद्याधरो तथा मनुष्यो आश्चर्यने पाम्या. कुमरें राजाने आवी नमस्कार कर्यो. माता पिताने आवी पगे लागो. पद्मावती पण सासु ससराने

पगे लागी. तेउयें कह्युं के "हेवधू ! पुत्रवती नव" एवो आशीर्वाद दीधो. सर्वे लोकोने अति हर्ष थयो, जिनधर्मनो महिमा प्रगट थयो.

पछी ते विद्याधरीयोयें कुमरने सर्व वृत्तांत पूछयाथी तेणें अथथी ते इति सुधी सर्व वृत्तांत कही संजलाव्युं, तेथी ते कंचुकविषे कदाग्रह मूकी दइने पोताने हाथे पद्मावतीने ते कंचुक पहेराव्युं. पछी राजा, राणी, कुमर तथा पद्मावती प्रमुख सर्व नगरमां गयां. याचक लोकोने घणां दान दीधां, परिजन प्रमुख सर्व जनोने यथायोग्य पहेरामणी प्रमुख आप्यां. बन्ने विद्याधरीउयें पद्मावतीने बेन करी मानी. ते विद्याधरीयोने तेउना लश्कर सहित केटलाएक दिवस सुधी राखी, सारी रीतें मिजमानी प्रमुख करीने जेम बेनने सासरे मोकलीयें, तेम विदाय करी. पछी आरामनंदनें वेतालने हाथे पेलुं सोनानुं पुतलुं मंगाव्युं. ते शुजमुहूर्त्ते गृहनेविषे लावीने राख्युं, ने पेला वेतालने रजा आपी. हवे ते सोनाना पुतलानो उपयोग एवो कस्यो के, जिनजुवन, जिनबिंब, बिंबप्रतिष्ठा, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविका लक्षण चतुर्विध संघनुं पोषण, साधर्मिक वात्सल्य, प्रमुख श्रेष्ठ कार्यमां इव्यनो खर्च कस्यो.

हवे कोइ एक समयने विषे ते नगरनी बाहिर उद्यानमां ज्ञानजानु नामना आचार्य आवी समवसस्या. तेनी उद्यान पालकें आवी वधामणी दीधी. तेने राजायें पोताना राज्य चिन्ह राखीने बाकीनां जे अंग उपर आजूषण पहेस्यां हतां, ते सर्व वधामणी देवा बदल आपी दीधां. पछी राजा, राणी, कुमर, तथा पद्मावती प्रमुख सर्व जन महा आमंबरथी वांदवा गयां. पंचाजिगम साचव्या, गुरुने वांदी करीने यथा स्थानकें बेठां. आचार्यें धर्मदेशना देवा मांमी. ते सांजलीने राजा अने राणी प्रतिबोधने पाम्यां अने महोटे आमंबरें दीक्षा लीधी. आरामनंदनने राज्य दीधुं पछी कुमार, पेला सोनाना पुतलाना योगथी जिनशासननी उन्नति करवा लाग्यो.

एकदा समयें पद्मावतीयें स्वप्नमां पूर्ण कलश दीठो. ते वृत्तांत आरामनंदनने तेणें कह्युं. त्यारें तेणे कह्युं के हे चतुरा ! तुने पुण्यवान् पुत्र थशे. अनुक्रमें दिन पूरा थयाथी पुत्रनो जन्म थयो. ते समयें जन्ममहोत्सव कस्यो. अने तेनुं नाम पूर्णकलश राख्युं. वली कोइएक समयें आरामनंदनना सम्यक्त्वनी परीक्षा लेवाने अर्थें कोइएक देवांगनायें पूर्णकलशना अंगमां

ज्वर उत्पन्न कर्यो. तेथी ते माहापीडाने पामीने व्याकुल थयो. तेने जोइ ने कुमर तथा पद्मावती अति डुःख करवा लाग्यां. ज्वरनिवृत्तिना घणा उपाय कर्या, पण कोइ उपाय लागे नहीं. एवामां एक मंत्री आव्यो, ते णें एक मंमल मांम्युं. अने एक कन्याने बेसाडी पूछवा लाग्यो. ते कन्या ना मुखद्वारा ते देवता कहेवा लाग्यो जो आरामनंदन निष्कपट भावें यक्ष नी पूजा करे, तो आ बालकने समाधानी थाय. नहीं तो कुमरनुं मरण थशे. त्यारे आरामनंदन बोल्यो के, गमे तेम थाय, पण हुं तो सर्वथा श्री वीतरागदेवनी प्रतिमा विना कोइ बीजी प्रतिमानी पूजा करुं नहिं. देव अरिहंत अने गुरु सुसाधु जे अर्हंतनी आज्ञा पाले छे ते, तथा धर्म अर्हंतनो भांखेलो. ए त्रण तत्त्वनी हुं सर्द्दहणा करुं. जो सारुं थवानुं हशे, तो एथी ज थशे. नहीं तो दैव करे ते खरुं! एवुं तेनुं बोलवुं सांभली सर्व लोक कहेवा लाग्यां के, एवो हठ करवो जोइतो नथी. अने यक्षनी पूजा करवी जोइयें के जेथी पुत्र जीवतो रहे. आरामनंदन बोल्यो के सम्यक्त्वना प्रसादें तथा पद्मावतीना शीलना प्रभावथी सर्व सारुंज थशे. एवुं तमारे निश्चें करी जाणवुं. एवी तेनी सम्यक्त्व उपर दृढता जोइने ते देवांगना राजी थइने कहेवा लागी के, हे आरामनंदन! तुं धन्य छे. के जेणें सम्यक्त्व नेविषे आवी दृढता करी छे. आटली बधी खटपट तारा सम्यक्त्वनी परीक्षा जोवा सारु मेंज करी छे. बीजो कोइ भाव मनमां आणवो नहिं. एवुं कही ते देवता अदृश्य थइ गयो. ते जाणे पोतानी साथें ते ज्वरने पण लइ गयो होय नहिं? एटले पूर्ण कलशने तरत समाधि थइ. पछी ते पुत्र क्रमें करी महोटो थयो, घणी राजकन्याउने परण्यो, तेउनी साथें नाना प्रकारना सुखभोग भोगववा लाग्यो. त्यारें आरामनंदन तथा पद्मावती ए बेहु साथें त्रिकरण शुद्धें सम्यक्त्व सहित श्रावकनो धर्म पालीने स्वर्गें गयां. एवी रीतें सम्यक्त्व उपर आरामनंदननी कथा युक्त सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीने त्रीजी गाथानो अर्थ पूरो कर्यो ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनी शुद्धि केम थाय? ते कहे छे.

॥ तस्स विसुद्धनिमित्तं, नाऊणं सत्तसठि ठाणाइं ॥ पालिज्ज परिहरिज्जाच, जहारिहं इब गाहाउ ॥४॥ अर्थः—ते सम्यक्त्वनी विशुद्धिने निमित्तें तेना (सतसठ्ठिठाणाइं के०) सडशठ स्थानक नाऊणं एटले जाणीने तेमां जे पा

लवा योग्य होय ते पालवां, अने जे त्याग करवा योग्य होय ते त्यागवां. जगतमां जीवादिक सर्व पदार्थ मध्यें केटलाएक ज्ञेय एटले जाणवा योग्य छे. तथा केटलाएक उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य छे, अने केटलाएक हेय एटले त्याग करवा योग्य छे. एम इहां ए गाथामां यथायोग्यें छे.

हवे ते सडसठ बोल बे गाथायें करी कहे छेः—

॥ चउ सद्दहण तिलिंगं, दस विणय तिसुद्धि पंचगय दोसं ॥ अठपभावण भूसण, लरकण पंचविह संजुत्तं ॥ ५ ॥ छविह जयणागारं, छप्भावण भावियं च सम्मत्तं ॥ छठाणा इय सतस, ठि दंसण भेयं विसुद्धं च ॥६॥

अर्थः—चार वस्तुनेविषे सद्दहणा राखवी,तथा सम्यक्त्वना त्रण लिंग जाणवां, दश प्रकारें विनय जाणवो,सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि एटले निर्मलता जाणवी तथा (पंचगयदोसं के०) पांच दूषण जेने विषे निवृत्त थएलां छे, एवुं सम्यक्त्व जाणवुं, आठ प्रकारनी सम्यक्त्वनी प्रभावना जाणवी,एटले आठ प्रकारे सम्यक्त्वनुं भावन दीपन एटले आठ प्रकारें सम्यक्त्व दीपावीयें. तथा सम्यक्त्वना पांच भूषण एटले आभरण जाण

आगलो सांभलनारो वांचनारो भव्य प्राणी जेम समजे. तेवी रीतें कहुं बुं. एनो हेतु ए बे के, सांप्रतकालना मनुष्योनी घणा विस्तृत अर्थ उपर रुचि होती नथी; किंतु संक्षेप अर्थना रुचिवाला घणा बे. तेउने जेवी रीतें पथ्यनी परें हितकारी थाय, तेवी रीतें भावार्थ हुं कहुं बुं ॥ ७ ॥

हवे ए सडसठ भेदमांथी चार सद्दहणाने विवरी देखाडे बेः—

॥ परमब संथवो खलु, सुमुणिय परमब जइ जण निसेवा ॥ वावन्नकुदिठीण य, वज्जण मिह चउह सद्दहणं ॥ ८ ॥ अर्थः—प्रथम परमार्थसंस्तव, ते रहस्यार्थनो तत्त्वभूत जे अर्थ तेनुं ग्रहण करवुं संस्तव परिचय करवो. प्रतिदिन तत्त्वज्ञाननो अभ्यास करवो; तेना उपर प्रीति राखवी; तथा विरस अर्थनो त्याग करवो; अतत्त्वनो परिचय करवो नहीं. अने तेनी उपर रुचि पण राखवी नहीं एटले हंसना जेवी बुद्धि राखवी. जेम क्षीर अने नीर एकठां थई गयेलां होय तेमांथी नीर नाखी दइने हंस क्षीरनुं ग्रहण करे बे; तेम असारनें मूकीनें सारनुं ग्रहण करवुं. माटे हंसना जेवुं थवुं पण भूंम तथा कागडाना जेवुं न थवुं, केम के भूंम तथा कागडानो एवो स्वभाव होय बे के, सार वस्तुनो त्याग करीने असार वस्तुनुं ग्रहण करे बे. तेम जे प्राणी श्रीवीतरागदेवने मूकीने सरागी देवनी पूजा प्रमुख करे, तथा सुगुरु मूकीने कुगुरुनी सेवा करे, विनयमूल तथा दयामूल धर्म मूकीने अविनयमूल तथा हिंसामूल धर्मनो आदर करे, ते पुरुष भूंम तथा कागडाना जेवा जाणवा. माटे तेवा न थतां हंसना जेवुं थवुं.

हवे ते परमार्थ संस्तव केवी रीतें प्राप्त थाय? ते कहे बेः—

(सुमुणिय के०) भला जाण्या बे (परमब के०) परमार्थ जेणें एवा जे (जइजणनिसेवा के०) यतिजन तेनी निरंतर सेवा करवी यडुक्तं, “ तेणं समएणं पासासव विज्जा मुणीपवरा थेरा भगवंतो भाइ संपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रुवसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना उयसी तेअसी वच्चंसी जिअकोहा जिअमाणा जियमाया जियलोहा जियनिद्दा जियइंदिया जिअपरिसहा जीवियास मरण भय विमुक्का जावकुंतियावरण भूया विहरंति तहारुवाणं भंते समणाणं माहणाणं पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा पसत्ता, गोयमा, सवणफला सेणं भंते सवणे किंफले नाण फले. नाणे किंफले विन्नाणे फले. विन्नाणे किंफले प

च्चरकाण फले पच्चरकाणे किंफले संजम फले संजमे किंफले अणेहाय फले अणेहाय किं फले, तव फले, तवे किं फले वोदाण फले, वोदाणे किं फले अकिरियाफले, अकिरिया किं फला सिद्धि पज्जवसाण फला." माटें एवा यति जननी सेवा करवी.

हवे एवा यति जननी सेवा करवानी नावना केम उत्पन्न थाय? तेनो हेतु कहे वे (वावन्नवज्जणं के०) विणठानुं तथाकुदृष्टिनुं वर्ज्जन एटले त्याग करवाथी एवो नाव उत्पन्न थाय वे. एटले सम्यक्त्व तथा चारित्रथी ज्रष्ट थयेला एवा जे कुमत्यादिक वे तेने विणठा कहीयें, तेउनो त्याग करवो. यतः "नठो देवायव्वो, वसही आसन्न असइ पुत्तोय ॥ गुरुदेवाणय डुठो, निद्धम्मा पंच पसुत्ता." नावार्थः–एमनो संग करवाथी सम्यक्त्व मलिन थाय वे, माटें एउनुं वर्जन करवुं जोइयें. जेम काजलना संगथी सारुं उज्ज्वल वस्त्र पण कालुं थाय, ते पावुं टले नहीं तेम कुमत्यादिकनी सायें व्यापार, सेठ वाणोत्तरी, विवाह, उजाणी, प्रमुख परिचय करवो नहीं, एकठा सायें वेसवुं नहीं, सायें जवुं आववुं नही, तेनी सायें लेण देण करवी नहिं इत्यादिक वीजो पण कोइ प्रकारनो व्यवहार तेनी सायें करवो नहिं. यडुक्तं "त्यज डुर्जन संसर्गं, नज साधु समागमम्॥ कुरु पुण्य महोरात्रं, स्मर नित्य मनित्यताम् ॥ नावार्थः–डुर्जनना संसर्गनो त्याग कर, साधुनो समागम कर, रात्रि दिवस पुण्य कर, अने सारासारनो विवेक कर. एटलाज कारणमाटें शास्त्रमां कह्युं वे कें, जे कुमत्यादिकनी धर्मकरणीनी प्रशंसा करवाथी तेउनी वृद्धि करवा जेवुं थाय वे, अने तेउनी सायें परिचय करवाथी तेउनी धर्म करणीनुं अनुमोदन करवा जेवुं थाय वे; माटे कोई प्रकारें तेउनो परिचयज न करवो. कह्युं वे के, "अंवस्सय निंवस्सय डुण्हंवि समागयाइ मुल्लाइं ॥ संसग्गीय विणठो, अंवो लिंवत्तणं पत्तो" जेम लींवडाना जाडना संसर्गथी आंवानो विनाश थाय वे, तेम नरसी संगतिथी बुद्धिच्रंश थाय वे. जेम कांजीथी दूध फाटीने विणसी जाय वे, पण कांजीमां कांई वणसवुंज नथी. केम के, ते तो प्रथमथीज वणसेली वे. तेम नरशी संगतिथी साराने माघ लागे वे, पण नरसाने कांई थतुं नथी. केम के,ते तो प्रथमथीज नरसो होय वे. माटें चतुर लोको विचारी जो जो.

चोथी सद्दहणा, ते (कुदिठ्ठिणय के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि जीवो तेनी संगतिनो त्याग करवो. जेम कुमत्यादिकना संगतिनां दूषण कह्यां, तेमज मिथ्यादृष्टिना संगतिनां पण दूषणो जाणी लेवां. अहीं कोई आशंका करशे के बन्ने सरखी रीतें त्याग करवा योग्य छे, अने बन्नेनां दूषणो पण सरखां छे त्यारें पासत्था अने मिथ्यादृष्टिने जुदा जुदा कहेवानुं कारण शुं? तेनो उत्तर आवी रीतें छेः—के अभिनिवेश मिथ्यात्वनो धणी कुमति होय ते कुमतिनो उपदेश देतो थको अनंत संसारनी वृद्धि करे. तथा श्रीतीर्थंकर देव अने सुविहित आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करे छे, वली वखाण करतां रौद्रअध्यवसायी थाय छे. केम के, ते व्याख्यान करतां प्रसंगें जेथी पोताना मतनुं स्थापन थतुं होय, तेनी अधिक प्रशंसा करे तेथी अनादि कालनो परंपरायें चाल्यो आवेलो जे सुमतिमार्ग, तेनी उत्थापना थाय, इत्यादि अध्यवसायवालो अनंत संसार वधारे छे. एमां कांई आश्चर्य नथी. अने मिथ्यादृष्टिने तो श्रीतीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी,श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करवानो प्रसंग आवतो नथी. तेम छतां जो मिथ्यादृष्टियें करीने आशातना करे, तो पण कुमतिमांज खपे. अने तेनीज पंक्तिमां गणाय. तेमज मिथ्यादृष्टिने उत्सूत्र भाषानो पण प्रसंग आवतो नथी, केम के, ते सूत्रोने जाणतो होय तो तेने विषे उत्सूत्र भाषणनो संभव थाय; पण ते श्रीजिनशासनमांहे प्रवीण नथी माटे प्रतिमादिकनी उत्थापना करवाथी ते रौद्र अध्यवसायवाला थता नथी. माटे वावन्न एटले मिथ्यात्वमां व्यापन्न अने कुदृष्टि ए बे जुदा कह्या. ए चार बोलनेविषे सद्दहणा राखे, एटले जे करवा योग्य होय ते करे अने जे छांमवा योग्य अर्थात् न करवा योग्य होय तेनो त्याग करे ॥ ८ ॥

हवे फरी एहिज परमत्थसंथवो एटले परमार्थ संस्तवनुं वर्णन करे छेः—

॥ जीवाइ पयत्थाणं, संतपयाईहिं सत्तहिं पएहिं ॥ बुद्धाणवि पुणस्सवणं, चित्तणं संथवो होइ ॥ ए ॥ अर्थः—(जीवाइ पयत्थाणं संत पयाईहिं पएहिं के०) संतपदआदि दई सात पदें करी जीवादिक छ पदार्थोनुं स्वरूप जाणवा माटे (पुणस्सवणं के०) पुनः पुनः तेनुं श्रवण करवुं, (बुद्धाणवि के०) बुद्धजे पंमितो होयते पण नवा नवा गीतार्थना मुखथी सांभल्या

करे ते श्रवण करीने तेनुं (चित्तणं के०) चिंतववुं चिंतन अथवा मनन करवुं, अने पछी तेने दृढ धारी राखवुं. एटले फरी ते वीसरी जाय नहीं एवो पाको निदध्यास करवो. बुद्धिमां सारी रीतें ठसावी राखवुं, तेम न करवा थी ते निष्फल थाय छे,जेम पर्वत ऊपर वर्षा थयाथी ते पाणी तरत सूका इ जाय छे, तेथी कांइ फलनी उत्पत्ति थती नथी,अने मालवानी स्निग्ध चीकणी भूमिनेविषे वर्षाद थइ छतां त्यां पाणी तरत सूकाइ जतुं नथी, तेथी गोधूम, चणक, तथा शेलडी प्रमुख नाना प्रकारनी भली भली वस्तु उ नीपजे, माटें श्रोतायें डुंगरनी जमीन जेवुं न थवुं, किंतु मालवानी भ मिन जेवुं थवुं. के जेथी श्रोताजनने सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय. पछी ते स म्यक्त्वनी वृद्धि थयाथी देशविरति, सर्व विरति, उपशमश्रेणी, क्षपक श्रेणी तथा केवलज्ञानादिकनी निष्पत्ति थाय. एवी रीतें (संथवो होइ के०) संस्तव थाय छे. हवे मूलमां कह्युं छे के, संत पदादिकें करी जीवादिक छ पदार्थों जाणवा. ते कहे छेः– " संतपय परूवणया, दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालो य अंतरं चेव, भावे अप्पाबहुं तहा. " एनो अर्थ क हीयें छैयें. प्रथम सत्यपदनी एटले छतापदनी प्ररूपणा करवी; त्यां जीव द्रव्य छतुं छे केम के ए शुद्ध पद छे माटे सत्य छे. जे शुद्ध पद होय छे, ते सत्य होय छे. जेम घट पद शुद्ध छे एक पदपणामाटे ते सत्य छे. जे एक पद होय ते सत्य होय छे, एटले जेनी साथें बीजुं पद मलीने समा सांत थयेलुं न होय ते एकाकी पद कहेवाय छे, ते सत्य होय छे. जेम 'घट' ए पद एकाकी छे एटले समास वगरनुं छे, माटे सत्य छे. केम के, ए पद सत्य पदार्थने विषय करे छे, अने जे संयोगी पद होय ते सत्य प ण होय छे ने असत्य पण होय छे. जेम के, 'आकाशकुसुमं' ए पद आ काश अने कुसुम ए बे पदोना संयोगथी थयुं छे, माटे असत्य छे, तेमज गर्दभश्रृंग प्रमुख असत्य पदार्थोनें विषय करनारां जे पद होय ते सर्व अ सत्य एटले अछतांज जाणवां, अने राजपुत्र प्रमुख सत्य वस्तुने विषय करवावालुं संयोगी पद पण सत्यज होय छे. परंतु वस्तुने विषय करनारुं ए क पद तो नियमथी सत्यज होय छे. ए युक्तिथी जीवपद एकाकी होवाथी सत्य छे,एवी रीतें अस्तित्व पदनी जे प्ररूपणा करवी ते प्रथम पद जाणवुं.

बीजुं दव्वपमाणं एटले द्रव्यनुं प्रमाण करवुं त्यां जीवद्रव्य अनंत छे,

चोथी सद्दहणा, ते (कुदिठ्ठिणय के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि जीवो ते नी संगतिनो त्याग करवो. जेम कुमत्यादिकना संगतिनां दूषण कह्यां, ते मज मिथ्यादृष्टिना संगतिनां पण दूषणो जाणी लेवां. अहीं कोई आशंका करशे के बन्ने सरखी रीतें त्याग करवा योग्य छे, अने बन्नेनां दूषणो पण सरखां छे त्यारें पासडा अने मिथ्यादृष्टिने जुदा जुदा कहेवानुं कारण शुं? तेनो उत्तर आवी रीतें छेः—के अभिनिवेश मिथ्यात्वनो धणी कुमति होय ते कुमतिनो उपदेश देतो थको अनंत संसारनी वृद्धि करे. तथा श्रीतीर्थंकर देव अने सुविहित आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करे छे, वली वखाण करतां रौद्रअध्यवसायी थाय छे. केम के, ते व्याख्यान करतां प्रसंगें जेथी पोताना मतनुं स्थापन थतुं होय, तेनी अधिक प्रशंसा करे तेथी अनादि कालनो परंपरायें चाल्यो आवेलो जे सुमतिमार्ग, तेनी उत्थापना थाय, इत्यादि अध्यवसायवालो अनंत संसार वधारे छे. एमां कांई आश्चर्य नथी. अने मिथ्यादृष्टिने तो श्रीतीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करवानो प्रसंग आवतो नथी. तेम छतां जो मिथ्यादृष्टियें करीने आशातना करे, तो पण कुमतिमांज खपे. अने तेनीज पंक्तिमां गणाय. तेमज मिथ्यादृष्टिने उत्सूत्र भाषानो पण प्रसंग आवतो नथी, केम के, ते सूत्रोने जाणतो होय तो तेने विषे उत्सूत्र भाषणनो संभव थाय; पण ते श्रीजिनशासनमांहे प्रवीण नथी माटे प्रतिमादिकनी उत्थापना कस्याथी ते रौद्र अध्यवसायवाला थता नथी. माटे वावन्न एटले मिथ्यात्वमां व्यापन्न अने कुदृष्टि ए बे जुदा कह्या. ए चार बोलनेविषे सद्दहणा राखे, एटले जे करवा योग्य होय ते करे अने जे छांमवा योग्य अर्थात् न करवा योग्य होय तेनो त्याग करे ॥ ८ ॥

हवे फरी एहिज परमत्थसंथवो एटले परमार्थ संस्तवनुं वर्णन करे छेः—

॥ जीवाइ पयत्थाणं, संतपयाईहिं सत्तहिं पएहिं ॥ बुद्धाणवि पुणस्सवणं, चित्तणं संथवो होइ ॥ ए ॥ अर्थः—(जीवाइ पयत्थाणं संत पयाईहिं पएहिं के०) संतपदआदि दई सात पदें करी जीवादिक छ पदार्थोनुं स्वरूप जाणवा माटे (पुणस्सवणं के०) पुनः पुनः तेनुं श्रवण करवुं, (बुद्धाण वि के०) बुद्धजे पंमितो होयते पण नवा नवा गीतार्थना मुखथी सांजल्या

करे ते श्रवण करीने तेनुं (चिन्तणं के०) चिंतववुं चिंतन अथवा मनन करवुं, अने पछी तेने दृढ धारी राखवुं. एटले फरी ते वीसरी जाय नहीं एवो पाको निदध्यास करवो. बुद्धिमां सारी रीतें ठसावी राखवुं, तेम न कस्याथी ते निष्फल थाय छे,जेम पर्वत ऊपर वर्षा थयाथी ते पाणी तरत सूकाइ जाय छे, तेथी कांइ फलनी उत्पत्ति थती नथी,अने मालवानी स्निग्ध चीकणी नूमिनेविषे वर्षाद थइ छतां त्यां पाणी तरत सूकाइ जतुं नथी, तेथी गोधूम, चणक, तथा शेलडी प्रमुख नाना प्रकारनी नली नली वस्तु उ नीपजे, माटें श्रोतायें रुंगरनी जमीन जेवुं न थवुं, किंतु मालवानी जमिन जेवुं थवुं. के जेथी श्रोताजनने सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय. पछी ते सम्यक्त्वनी वृद्धि थयाथी देशविरति, सर्व विरति, उपशमश्रेणी, क्षपक श्रेणी तथा केवलज्ञानादिकनी निष्पत्ति थाय. एवी रीतें (संथवो होइ के०) संस्तव थाय छे. हवे मूलमां कह्युं छे के, संत पदादिकें करी जीवादिक छ पदार्थो जाणवा. ते कहे छेः– " संतपय परूवणया, दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालो य अंतरं चेव, नावे अप्पावहुं तहा. " एनो अर्थ कहीयें छैयें. प्रथम सत्यपदनी एटले छतापदनी प्ररूपणा करवी; त्यां जीव द्रव्य छतुं छे केम के ए शुद्ध पद छे माटे सत्य छे. जे शुद्ध पद होय छे, ते सत्य होय छे. जेम घट पद शुद्ध छे एक पदपणामाटें ते सत्य छे. जे एक पद होय ते सत्य होय छे, एटले जेनी साथें बीजुं पद मलीने समासांत थयेलुं न होय ते एकाकी पद कहेवाय छे, ते सत्य होय छे. जेम ' घट ' ए पद एकाकी छे एटले समास वगरनुं छे, माटे सत्य छे. केम के, ए पद सत्य पदार्थने विषय करे छे, अने जे संयोगी पद होय ते सत्य पण होय छे ने असत्य पण होय छे. जेम के, ' आकाशकुसुमं ' ए पद आकाश अने कुसुम ए बे पदोना संयोगथी थयुं छे, माटे असत्य छे, तेमज गर्दन्नशृंग प्रमुख असत्य पदार्थोने विषय करनारां जे पद होय ते सर्व असत्य एटले अछतांज जाणवां, अने राजपुत्र प्रमुख सत्य वस्तुने विषय करवावालुं संयोगी पद पण सत्यज होय छे. परंतु वस्तुने विषय करनारुं एक पद तो नियमथी सत्यज होय छे. ए युक्तिथी जीवपद एकाकी होवाथी सत्य छे,एवी रीतें अस्तित्व पदनी जे प्ररूपणा करवी ते प्रथम पद जाणवुं.

बीजुं दव्वपमाणं एटले द्रव्यनुं प्रमाण करवुं त्यां जीवद्रव्य अनंत छे,

ते प्रत्येक जीवद्रव्यना लोकाकाश प्रदेशना प्रमाणनी परें असंख्यात प्रदेश डे, एटले जीवद्रव्य अनंत मली अनंत प्रदेशमय डे, एवी रीतें जीवद्रव्यनुं जे प्रमाण करवुं, ते बीजुं द्रव्य प्रमाण पद जाणवुं.

त्रीजो खित्तफुसणाय एटले क्षेत्रस्पर्शना चौद ते रज्ज्वात्मक जीव लोकनी डे.एटले जीवद्रव्य मात्र चौद रज्ज्वात्मक लोकमां डे,पण अलोकमां जीवद्रव्य नथी. अथवा ज्यारें केवली भगवान् केवल समुद्घात करे डे, त्यारें आत्मप्रदेशें करी चौद रज्ज्वात्मक जीवलोकनेज स्पर्शे डे, पण अलोकनेविषे स्पर्शना करे नहिं. केम के,आत्माना प्रदेश लोकाकाशना प्रदेशो जेटलाज डे,माटें तेटलीज स्पर्शना थइ शके डे,ए रीतें त्रीजुं क्षेत्रस्पर्शन जाणवुं.

चोथो कालोय एटले कालथी जीवनी आदि नथी, तेम अंत पण नथी, माटे अनादि अनंत डे. ए रीतें चोथुं कालपद जाणवुं.

पांचमो अंतरद्वार ते सर्व जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशवाला डे, माटें तुल्य डे. अने तेउना ज्ञानादिक पर्यायो प्रत्येक जीवना जुदा जुदा डे एम द्रव्यनी अपेक्षायें सर्व जीवद्रव्य अंतर रहित डे, अने पर्यायोनी अपेक्षायें अंतर सहित डे. तथा बीजे प्रकारें अंतर विचारीयें तो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, तथा त्रसकाय. ए चारे कायना जीवो असंख्याता उत्पन्न थाय डे, अने चवे तो पण असंख्याता चवे डे,तेमज वनस्पतिकायमां एक समयमां अनंत जीव ऊपजे ने चवे डे. तथा त्रसकायमां एक समयमां असंख्याता जीव उपजे तथा असंख्याता चवे, पण जीव कोइ एक समयमां उपजे चवे नहीं एवो आंतरो नथी एटले विरह काल नथी॥ यतः ॥ "अडी अनंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उववज्ञंति चयंति य, पुणोवि तडेव तडेव" ए पांचमुं अंतरद्वार जाणवुं.

हवे डहुं भावद्वार कहे डे. ते भाव ड प्रकारनो डेः— औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक तथा सान्निपातिक, एवं ड. तेमां जीवने जीवत्व डे ते पारिणामिक भावे डे.केम के,भव्यजीवो जे डे ते भव्यज डे अनें अभव्य ते अभव्यज डे. परंतु भव्य ते अभव्य थाय नहीं,अने अभव्य ते भव्य थाय नहिं. माटें पारिणामिक भावें कहेवाय डे, ए डहुं भावपद जाणवुं.

तथा सातमुं अल्पबहुत्वद्वार ते पृथ्वीकायथी अप्काय जीवो अधिक,

अपकायथी तेउकाय जीवो अधिक. तेउकायथी वायुकाय जीवो अधिक, तथा वायुकायथी वनस्पतिकाय जीवो अधिक छे. एम जीवनुं अल्प तथा बहुत्व जाणवुं. एवी रीतें जीवादिक पदार्थो यथा पदो साथें विचारवा अने तेउनो पुनः पुन. जे विचार करवो, तेने परमार्थ संस्तव कहियें ॥ए॥

हवे ए उपर जिनदास श्रावकनुं उदाहरण कहे छेः—

॥ आ जंबुद्वीपमांना जरत क्षेत्रमां एक मथुरा नामनी नगरी छे. तेमां जिनदास नामनो एक श्रावक हतो. ते शेठ श्रावकना एकवीश गुणोयें करी संयुक्त हतो. आठम प्रमुख पारवीने दिवसें पोपध करवामां तत्पर रहेतो. ए शिवाय सर्व प्रकारें धर्मनो एवो तो रागी हतो के, जेवा श्री जगवती सूत्रनेविषे तुंगीया नगरीना श्रावको वखाण्या छे तेना जेवी योग्यता वालो हतो, तेउनी तुल्यना करनारो हतो. तेनी साधुदासी नामनी स्त्री हती, तेमां पण नामना जेवाज गुणो हता. अने तेवाज परिणामो पण हता. ते स्त्रीपुरुष बन्नेयें गुरुना मुखें बार व्रत उच्चारतां घरे चतुःपद बांध्याथी घणो आरंज थाय छे. तेथी तेनां पच्चरकाण लीधां हतां. एवी रीतें शुद्ध सम्यक्त्वनुं मूल जे बार व्रत तेने पालतां छतां सुखें कालक्रमण करे छे.

हवे तेने घेर प्रतिदिवस एक आहिरणी, दहीं, दूध तथा घृत, देवाने आवती हती, तेनी साथें लेवड देवडनो संबंध थयो. कोइएक समयें ते आहिरीणीनी छोकरीना विवाहनो अवसर आव्यो, त्यारें तेने घेर जिनदासें पापड, वडी, फाफडा,सेव, तथा खारां सालणां प्रमुख वस्तु मोकली दीधी. ए वस्तुउ तेने विवाहमां घणी उपयोगमां आवी तेथी विवाह दीप्त थयो अने ते आजीरी पण मनमां घणी संतोपने पामी. विवाह वीती गया पछी पोतानी उपर थएलो उपकार फेडवाने अर्थे कजला दूध जेवा त्रण त्रण वर्षना बे वाछडां लईने जिनदासने न कलवा देतां आंगणामां आवी बांधी गइ. पछी ते अत्यंत उज्ज्वल अने गंगाजल जेवा निर्मल वाछडां जिनदासना जोवामां आव्यां अने मनमां जाण्युं के, पेली आहिरिणी प्रत्युपकार करवाने आ बांधी गई छे. हवे एनुं करवुं शुं ! जो ए पशुउने पालुं, तो व्रत जंग थाय,अने जो मूकी देउं तो ए बेहु जीव हलादिकमां जोडाइने डुःखी थाय, तेनुं पाप मने लागे "इतो व्याघ्र इतस्तटी" ए न्यायप्रमाणें मने थयुं छे. त्यारें तेना स्त्रीयें कह्युं के,आपणो नियम जंग तो थाय के जो पो

ताना स्वार्थें एउने वहेल गाडा प्रमुखमां जोतरीयें ? परंतु अनुकंपा बुद्धियें पालतां नियम भंग थतो नथी. माटें मूकी देवा करतां दयाबुद्धियें पाल्याथी कांइ दोष नथी. एम तेणे गुरु लाघव विचार करीने बेहु वाबडां राखी लीधां. तेउने पोषवा सारु खावा पीवाने फासु पाणी तथा फासु चारो आपे. एम करतां अनुक्रमें ते अत्यंत श्रेष्ठ बलद थया. जिनदास श्रावक आठम पाखीना चोविहार पोसह प्रमुख करे, धर्मशास्त्र वांचे, तेनी संगतिथी ते बलदो पण श्रावक थया. पोताना धणीनी साथें आठम पाखी प्रमुखना चोविहार उपवास करवा लाग्या. कह्युं छे के, संगत छे ते, महोटी वस्तु छे, यतः ॥ अंजणचरकु संगेण, मालासंगेण सुत्त हियएणं ॥ तहा सज्जणसंगेणं, सव्ववत्थुण गोरवं ” जेम चक्षुनी संगतिथी अंजन नेत्रमां वास करी शके छे, मालानी संगतथी सूत्र हृदय उपर रही शके छे, तेम सज्जनना संगतिथी सर्व वस्तुने गौरव आवे छे. पछी ते बलदोनुं एवुं स्वरूप जाणीने जिनदास शेठ तेउनुं पुत्रनी पठें वधारे पालण पोषण करवा लाग्यो. कोइएक समयें भिंफीरमण नामना यक्षनी यात्रा आवी, त्यां लोको पोतपोतानी वहेलोमां बेशीने जवा लाग्या. ते अवसरें जिनदासनो एक मित्र हतो, ते तेने पूछ्याविना वाछडां छोडी गयो. अने तेउने पोतानी वहेलमां जोडीने चोगानमांहे घणा दोडाव्यां. लाकडीथी घणो मार माख्यो, परोणाना प्रहार दीधा, एम निर्दयपणे तेउने घणो संताप कस्यो. तेथी त्रूटा पड्या, पछी तेणें पाछा आवी आंगणे गमाणमां बांधी मूक्या, अने पोतें चालतो थयो. जिनदास शेठ आवी जूवे छे तो बलदोना अंग उपर रुधिर वही रह्युं छे; अने अति वेदना पामी रह्या छे. तेथी ते घणुं दुःख पाम्यो. ते बलदोनी आगल चारो पाणी मूक्युं, पण तेउनाथी कांइ खवायुं पीवायुं नहीं. त्यारें दूध तथा साकर प्रमुखनुं पाणी पीवरावत्रा लाग्या, पण तेने तेउ, सामे पण जुए शेना! त्यारें शेठें जाण्युं के ए हवे जीववाना नथी पछी तेमनी अनशननी मनसा जाणीने अनशन व्रत कराव्युं, नमस्कारमंत्र दीधा, ते तेउयें सद्दह्या. एम मननी समाधिसहित काल करीने ते नागकुमारनी जातिमां देवो थया. पछी जेम पुत्रना मरणथी दुःख थाय तेनी पेठें ते शेठ अने शेठाणी बन्नेने अति मातुं लाग्युं. ते बन्ने बलद कंबल अने शंबल एवां नामे नागकुमार देवो थया. कोइ एक समयें

श्रीमाहावीर जगवान नावमां वेठेला ठतां कोइ सुदास नामना मिथ्यात्व दृष्टि देवें तेमने मरणांत उपसर्ग करवा मांफ्यो. ते वखतें कंबल आवीने ते मिथ्यादृष्टि देवनी सार्थे लडवा लाग्यो, अने संबलें ते नाव सुखेंथी पहेले पार पहोचाड्युं. सुदाढदेव हारीने नाशी गयो. अने जगवंतनो मरणांत उपसर्ग तेणें टाल्यो. पठी श्री जगवंतने वंदना करीने कंबल अने शंबल पोताने ठेकाणें गया. पणे जिणदासश्रेष्ठी तथा तेनी स्त्री साधुदासी श्राविका वेहु जण वृषजना विरहें करी अति दुःखित थयां थकां वैराग्यने पाम्यां. अने विशेषथी श्राद्धधर्म आराधी आगमार्थनो परिचय करतां मरण पामीने स्वर्गनेविषे गयां. त्यार पठी अनुक्रमें मोक्ष पामशे. ए चार सद्दहणामांहेली पहेली सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं ॥

हवे सद्दहणानो बीजो जेद कहे ठेः—

॥ गीयह्नियं चरित्तय, सेवा वहुमाण विणय परिसुद्धी ॥ तत्तावबोह जोगा, सम्मत्तं निम्मलं कुणइ ॥ १० ॥ अर्थः—गीतार्थ तिहां गीत एटले सूत्र अने अह्न एटले तेनी वृत्ति, जाष्य, निर्युक्ति तथा चूर्णि प्रमुख पंचांगीरूप अर्थना जाणनारा जे होय तेने गीतार्थ कहीयें ॥ यतः ॥ गीयं जन्नइ सुत्तं, अह्नो तस्सेव होइ वरकाणं ॥ उन्नएणय संजुत्तो, सो गीयह्नो मुणेयव्वो ॥

तया (चरित्तय के०) सर्व विरतिरूप चारित्र जाणवुं. ए बन्ने एटले गीतार्थ ठतां चारित्रवंत जे होय, तेने सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहियें. मात्र जे ज्ञानवान होय ते सुविहित कहेवाय नहिं, तेम मात्र क्रियावान् पण शुद्ध प्ररूपक न होय; माटें ज्ञान अने क्रिया ए बन्ने साथें मले, तोज सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहेवाय. कह्युं ठे के, “ हेयं नाण कियाहीणं, हेया अन्नाणउ किया ॥ पासंतो पंगुलो दह्वो, धावमाणो य अंधउ ॥ १ ॥ संजोगसिद्धीइं फलं वयंति, न एगचक्केण रहो पयाइ॥ अंधोय पंगूयवणेसमिच्चा, ते संपउता नयरं पविह्ना ॥ २ ॥ क्रियाहीन ज्ञानी त्याग करवा योग्य ठे, अने ज्ञान विना मात्र क्रियावंत पण त्याग करवा योग्य ठे, केम के ज्ञान पांगला जेवुं ठे, अने क्रिया आंधला जेवी ठे. ज्ञानवानने बधुं जाण्यामां आवे, पण क्रिया विना कार्य सिद्ध करी शके नहीं; अने क्रियावान् कार्य सिद्ध करवाने समर्थ ठे. पण अज्ञानी होवाथी तेने मार्गने मार्गनी खबर नथी. जेम आंधलो चालवा समर्थ ठे अने पांगलो

मार्ग देखाडवा समर्थ छे. एम बेहु मल्यां वांछित नगरें पहोंचे. तेम जे ज्ञान अने क्रिया बन्नेयें करी युक्त होय, तेज सुविहित गीतार्थ कहेवाय. तेनी सेवा करवी एटले परिचर्या करवी; ते सेवा बहु मानें करी अंतर्गत बहु प्रीतियें करी करवी. विनय एटले मन, वचन, तथा कायायें करी. आनंदें करी स्तुति तथा अन्युत्थान प्रमुख करवुं. ए बन्ने प्रकारें निर्मल सेवा थाय छे. ते आगमना रहस्य जाणनाराने योग्य छे. एथी सम्यक्त्वनी निर्मलता थाय छे, माटें सुविहित गीतार्थ होय तेनांज सेवा तथा विनय प्रमुख करवां; एना योगथकीज निर्मल सम्यक्त्व थाय छे ॥ १० ॥

॥ एनी उपर पुष्पचूला साध्वीनुं उदाहरण कहे छेः– आ लाख योजन प्रमाणवाला पूर्णचंद्राकार जंबुद्वीपमां तेना एकशो ने नेवुंमा भाग जेटलुं आ भरत क्षेत्र छे. तेमां एक पुष्पभद्रिका नामनी नगरी छे. ते गंगाना तट उपर छे. तेमां पुष्पकेतु नामनो राजा राज्य करतो हवो. तेनी पुष्पवती नामनी राणी विनयवंत तथा शीलवान् होती हवी; तेनी साथें विषय सुख भोगवतां एक पुत्र अने एक पुत्रीनो जन्म थयो. तेउनां नाम पुष्पचूल तथा पुष्पचूला राख्यां. ए भाई बेन बन्ने रूपें सरखां, शरीरें सरखां, तथा गुणें करी सरखां हतां. ते कालांतरें तरुण अवस्थाने पाम्यां. एटले तेउनां लग्न करवानो विचार चाल्यो. राणी प्रमुख सर्व स्वजनोयें संसारनी रीति प्रमाणें पोतपोताना अभिप्रायो जणाव्या. ते योग्य छतां राजा पापबुद्धिने वश थई सर्वनें लोपीने भाइ बेनने परणावी दीधां. कह्युं छे के "न गुणंति कुलं न गुणं, ति पावयं पुणमविय न गुणंति ॥ इस्सरिएणहि मत्ता, तहेव परलोयमिह लोयं" जे स्त्रीने विषे मत्त थएला पुरुषो छे ते, कुल, पाप, तथा पुण्य, कांइ गणता नथी. तेमज तेने आ लोक अने परलोक सरखाज छे. हवे पुष्पचूल अने पुष्पचूला बेहु धणी धणीयाणी विषय भोगवतां जोइ पुष्पवती राणीयें राजाने अन्याय करतो वार्यो, पण राजायें कांहिं मान्युं नहिं. त्यारें तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी अनुक्रमें सारी रीतें दीक्षा पाली स्त्रीवेद छेदीने देवनी गतिनें प्राप्त थइ. त्यां अवधिज्ञान प्रयुंज्युं. ते समयें ते भाइ तथा बेननो संभोग देखीने तेउने प्रतिबोध करवाना हेतुथी पुष्पचूलाने स्वप्नमां नरकनुं दुःख देखाडवा लागी. एटले ते साते नरकपृथ्वीनां दुःख देखीने महा भयने पामवा लागी. जाग्या पछी पण जेनुं शरीर कंपवा ला

ग्युं. ते सर्व दुःख पोताना पति पुष्पचूलनी पासें कहेवा लागी. एवुं प्रति दिने थवा लाग्युं. त्यारें पुष्पचूलें सर्व अन्य दर्शनीयोने तेडावीने ते स्वप्न नो खुलासो पूछ्यो, त्यारें ते सर्व पोतपोताना मत प्रमाणें नरकनां दुःख कहेवा लाग्यां. पण तेमांनुं एके स्वप्नना अनुसारें मले नहीं, तेथी पुष्प चूलानुं मन माने नहीं. पछी राजायें अन्निका पुत्र नामना जैन आचार्यने तेडावीने पूछ्युं, के तमारा दर्शनमां नरकनां दुःख कहेवां कह्यां छे? त्या रें आचार्यें निःशंकपणे जैनमतमां जेवां साते नरकनां दुःख कह्यां छे. ते विस्तारें कही देखाड्यां, ते सांभलीने राणी कहेवा लागी के मारी पठें तमें पण स्वप्नमां दुःख देखो छो, एवुं जणाय छे! आचार्यें कह्युं के, अमें स्वप्न मां नरकनां दुःख देखता नथी, पण अमारा जैनशास्त्रना अनुसारें जाणी यें छैयें. राणीयें कह्युं,के ते शास्त्र कयां छे? ते कहो. तेवारें आचार्यें निरया वलिका नामना उपांगना आलावा कही संभलाव्या. त्यारें राणीयें पूछ्युं के, एवां नरकनां दुःख कोण पामे? आचार्य बोल्या,सांभलोः- "कहणं भं ते जीवा नेरइयाउ अत्ताए कम्मं पकरंति,गोयमा महारंभयाए महापरिग्ग हयाए कुणिमाहारेणं पंचिंदिय वहेणं इच्चेएहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयाउ अ त्ताए कम्मं पकरंति" एवुं सांभलीने राणी कहेवा लागी के, तमें मारो सं शय निवृत्त कर्यो. तमारी वार्त्ता मारा स्वप्नने मलती आवी. पछी राणीयें घणा आदरें करीने ते गुरुनी वंदना करी, अने तेमने उपाश्रये पहोंचता कीधा. त्यार पछी वली कोइएक समयें पेलो पुष्पावतीनो जीव थएलो देव, ते पुष्पचूलाने स्वप्नमां बार देव लोकनां सुख देखाडवा लाग्यो. ते वा त पण ते पोताना पतिने कहेवा लागी. तेथी फरी तेणें अन्यदर्शनीयोने तेडाव्या, ने तेउने स्वर्गनां सुख केहवां छे? एम पूछ्युं. त्यारें तेउयें कह्युं के रूडुं खावुं,सारुं पीवुं, स्त्रीविलास प्रमुख सुख भोगवियें, आनंदमां रहि यें, एज स्वर्गनां सुख छे. एवी वातो पुष्पचूलाना मनमां बेसे नहीं. त्यारें राजायें अन्निकापुत्र आचार्यने तेडीने पूछ्युं. के तमारा शास्त्रमां स्व र्गनां सुखविषे केवी रीतें कह्युं छे? त्यारें तेमणें शास्त्रने अनुसारें बार देव लोकनो विचार, नव ग्रैवयेक पांच अनुत्तर विमाननो विचार कहेवानो आरंभ कर्यो. ते पेली राणी लक्ष दइने सांभलवा लागी. तो पोताना स्व प्ननी साथें बधी वातो मलती आवे छे. एम जाणीने ते अति राजी थइ.

ने ते आचार्यने पूछ्युं के एवा सुखनी प्राप्ति केम थाय? आचार्यें कह्युं के सांभळोः– कहणं भंते जीवा सुहं कम्मं बंधंति, गोयमा सम्मद्दंसणसु द्धीए पसन्न मण वयण काय जोगेणं इंदिय निग्गहेणं कोह विजएणं धम्म सुक्कझाणेण आयरिय उवझायाणं साहु साहम्मियाण भत्तीए दाण सी ल तव भावण प्पभावणाए वेरग्गेणं निस्संगयाए संविभागेणं इच्चेएहिं दसहिं ठाणेहिं जीवा सुहं कम्मं बंधंति" ए शुभ कर्म बंधथकी जी व स्वर्गनां आयु बांधे, काळ करी स्वर्गे जाय. तथा "एगदिवसंपि जी वो, पवज्ज मुवागउ अणुसमणो॥ जइवि न पावइ मुरकं, अवस्स वेमाणिउ होई." एवी रीतें जीव स्वर्गनां सुख पामे छे. एवुं सांभळीने पुष्पचूला कहेवा लागी के, स्वामी! आप उपाश्रयनविषे पधारो. हुं मारा धणीने समजावीने त्यां आवी दीक्षा लईश मारा धर्माचार्य आप छो, माटें मा रे आपनी पासेंज दीक्षा लेवी छे. कह्युं छे के, "सम्मत्तदायगाणं, डुप्पडि यारं भवेसु बहुएसु॥ सवगुण मेलियाहिवि, उवयार सहस्स कोडीहिं." ए वुं कही गुरुने वांदीने उपाश्रयें विदाय कर्या. पछी पुष्पचूल राजाने सारी रीतें समझावीने पुष्पचूला राणीयें तेज आचार्यनी कने महामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. अने राजाना आग्रहथी त्यांज गुरु रह्या. अन्यदा प्रस्तावें आगळ बार वर्षनो डुष्काळ पडशे, एवुं ज्ञानवडे जाणीने ते आचार्य सर्व साधुउने सुभिक्ष देशनेविषे विहार कराववा लाग्या, त्या रें पुष्पचूला साध्वीयें कह्युं के, सुखें करी समस्त यतिने देशांतरने विषे विहार करावो. हुं आपनुं वेयावच्च करीश. ते सांभळी तथा लाभ जाणी ने पडिवज्ज्युं. पछी पुष्पचूला घणी भक्तियें करी सेवा प्रमुख करवा ला गी. प्रतिदिन मनोज्ञ आहार पाणी लावी आपे; अने गुरुने सारी रीतें साचवे. यतः "पुत्तेहि चोइया पुरकडेहिं, सिरि भायणं भविय सत्ता॥ गु रुमागमेसिभद्दा, देवयमिव पज्जुवासंति." एम करतां सदैव गुरुभक्तिना अध्यवसायें करी ते पुष्पचूला साध्वी, शुभ भावनायें करी क्षपक श्रे णि पामी; अनुक्रमें केवळ ज्ञान उपन्युं. तो पण तेविषे गुरुने कांई न जणावतां प्रथमनी पठेंज गुरुभक्तिमां तत्पर रही. यतः "जो जस्स य जा रिसयं, पुविं भत्तिं कुणंतिउ होइ॥ सो तस्स तारिसियं, कुणेइ जाणज्ज इ न नाणी." ते साध्वी गुरुना मननो अभिप्राय जाणीने जे वस्तुनी ते

मने इच्छा होय, ते लावी आपे. ते जोईने गुरुने आश्चर्य थाय. तेथी पूछे के, मारी इच्छाप्रमाणेंज तुने क्रिया करवानुं केम सूझे छे ? त्यारें ते साध्वी कहे के जे जेनी सदैव सेवा करे, ते तेनी प्रकृति स्वभाव जाणी लिये छे. एक समयनेविषे मेघ, वृष्टि करतां छतां ते साध्वीयें गुरुनी इच्छाने अनुकूल आहार आणी आप्यो. गुरुयें पूछ्युं के, वर्षा छतां केम आहार आण्यो ? साध्वीयें कह्युं के, स्वामी ! अचित्त अप्कायना मार्गें हींमतां आहार मल्यो, ते आण्यो छे. ए निर्दोष छे. गुरुयें पूछ्युं के, अचित्त अप्कायनो मार्ग तें केम जाण्यो ? साध्वीयें कह्युं के, आपना प्रसादें करी जाण्यो. गुरुयें कह्युं कांई ज्ञान ? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. गुरुयें पूछ्युं, प्रतिपाति के अप्रतिपाति ? साध्वीयें कह्युं, अप्रतिपाति. गुरुयें पूछ्युं, केवलज्ञान ? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. त्यारें ते आचार्यें कह्युं के, में केवलीनी आशातना करी. केम के केवली पासेंथी विनयवैयावच्च प्रमुख कराव्यां. एवी रीतें पोताने निंदवा लाग्या. घणी चिंता करवा लाग्या. जे मने हजी केवलज्ञान उत्पन्न थयुं नथी. अने ए साध्वी धन्य छे, के एने थोडा कालमां केवलज्ञान ऊपनुं ! एवो ते आचार्यना मननो आशय साध्वी केवलज्ञानथी जाणीने कहेवा लागी के, हे गुरुजी ! आप खेद नहिं करो, आपने गंगानदी ऊतरतां केवलज्ञान ऊपजशे. हवे आचार्य गंगानदीना तीर ऊपर जई पेले पार ऊतरवामाटे एक नावमां बेठा, तेमां बीजा पण केटलाएक लोक बेठा हता, जे बाजु आचार्य बेठेला हता, ते बाजुयें एक मिथ्यादृष्टि देवांगना आवी नावने डूबाडवा लागी अने नावमां पाणी भरावा लाग्युं,त्यारें लोकोयें ते आचार्यने त्यांथी ऊठाडीने बीजे ठेकाणें बेसाड्या. त्यारें ते ठेकाणें पाणी भरावा लाग्युं;अने ते ठेकाणेथी नाव बूडवा लाग्युं. एवी रीतें लोको जुदे जुदे ठेकाणें ते आचार्यने बेसाडे, ते ठेकाणें नाव बूडवा लागे,एम थवा लाग्युं. तेथी लोकोयें आचार्यने ऊपाडीने पाणीमां नाखी दीधा. त्यारें पेली देवागनायें नीचे त्रिशूल धर्युं. ते शरीरमां भोकायाथी त्रिशूल लोहीयें भराई गयुं, तेथी अप्कायनी विराधना थवा लागी. ते पापनी ते गुरुनिंदा करवा लाग्या. एटले मारा रुधिरथी अप्कायनी विराधना थाय छे ! तेथी हुं हिंसक ठरुं छुं. एवी रीतें जीवदयाना शुभ अध्यवसायने लीधे क्षपकश्रेणि आरोहीने अंतगड केवली थया. ते स

मयें देवोयें केवल ज्ञाननो महोत्सव कस्यो. त्यां प्रयाग एवे नामें तीर्थ थयुं. ते लोकने कामित दानथकी ते तीर्थनो महिमा वध्यो. हवे पुष्पचूला साध्वी पण अनुक्रमें वेदनीय, नाम, गोत्र अने आयु, ए चार कर्म क्षय करीने मोक्षें पहोती. एवी रीतें " सुमुणिय परमब जइ जणनिसेवा, ए सद्दहणानो बीजो नेद उक्त दृष्टांत सहित जाणवो. "

हवे वावन्न वज्जणं, ए सद्दहणानो त्रीजो नेद कहे ठेः—

॥ वावन्न दंसणाणं, निण्हव हाठंद कुग्गह ह्याणं ॥ उम्मग्गु वएसेहिं, बलावि मइलिज्ज ए सम्मं ॥ ११ ॥ अर्थः—मिथ्यात्वें करी व्यापन्न एटले नष्ट,दर्शन अर्थात् मिथ्यात्वें करी व्याप्त ठे सम्यक्त्व जेनुं तेने वावन्न दंसण एटले व्यापन्नदर्शन कहियें. तेना धरनारा एवा निन्हव एटले नगवंत श्रीवीतराग देवनां वचनोना उबापनार. यथाठंद एटले पोतानी इब्रायें प्रवर्त्ते, गुरुनी इब्राप्रमाणें चाले नहीं ते. एविषे श्रीप्रवचनसारोद्धार सूत्रमां कह्युं ठे के, " पासबो उस्सन्नो, होइ कुसीलो तहेव संसत्तो ॥ अह ठंदोवि य एवं, अवंदणिज्जा जिणमयंमि " तेमां पासबाना बे प्रकार ठेः— एक देशपासबो, बीजो सर्वपासबो, तेमां जे शय्यातर पिंम सामे आवेलो पिंम, नित्यपिंम तथा अग्रपिंम कारण विना लिये, ते देशथी पासबो कहेवाय. अने केवल लिंगधारी होय ते सर्वथी पासबो जाणवो.

उस्सन्नना पण बे प्रकार ठेः— एक देशोत्सन्न बीजो सर्वोत्सन्न. तेमां " आवस्सय सज्ञाए, पडिलेहण जाण निरक अनत्तठे ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे निस्सीयण तुयट्टे " नावार्थः—आवश्यक सज्ञायादिक करे नहीं, अनें जो करे तो अधिका उंगा करे. तेने देशथकी उस्सन्नो कहियें. अने ऋतुबद्ध कालनेविषे पीठ फलग निःकारण वावरे, तथा स्थापनापिंम नोगवे, संथारो पाथस्यो राखे, तेने सर्वथकी उसन्नो कहियें.

कुशीलीयाना त्रण प्रकार ठेः— ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील, तथा चारित्रकुशील. तेमां जे " काले विणये बहुमाणे " इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार विराधे, तेने ज्ञानकुशील कहियें, " निस्संकिय निकंखिय " इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचार जे विराधे, तेने दर्शन कुशील कहियें, अने " पणिहाण जोगजुत्ता " इत्यादिक आठ चारित्राचार विराधे, तथा

कारण विना मंत्र, यंत्र अने तंत्र प्रमुख कोइने करी आपे, निमित्त कहे, तथा औषधादिक उपचार करे, तेने चारित्र कुशील कहियें.

अने संसक्त एटलें जेम बलदनी आगल तेना खाणनो सूंडलो राख्यो होय, ते खाण ते बलदें खाधुं होय, तेथी ते सुंडलो कांइक उच्छिष्ट खाण थी खरडायेलो होय, ने कांइ अनुच्छिष्टथी खरड्यो होय. तेम जे कांइक मूलगुण तथा उत्तरगुणनो विराधक होय ने कांइक अविराधक होय, तेने संसत्तो जाणवो. तेना बे नेद ठेः– एक संक्लिष्ट अने बीजो असंक्लिष्ट. तेमां जे पांच आश्रवनेविषे प्रसक्त होय, त्रण गारवें करी प्रतिबद्ध होय, कोइ गृहस्थ तथा गृहस्थिणीना ठोकरा ठोकरीनी चिंता करे, अने तेउना दुःखें दुःखी अने तेउना सुखें सुखी थाय. तेने संक्लिष्ट संसक्त कहियें, तथा कोइ पासह्रो मले तो पोतें पण तेनी साथें पासह्रो बनी जाय, संवेगी मले तो संवेगी जेवो थइ जाय, एवी रीतें जे जेवो मले तेनी साथें स्फटिक मणिनी परें अथवा तेजनी परें तेवो थइ जाय. तेने असंक्लिष्ट संसक्त कहियें.

अहाठंदविषे कहे ठेः– " उस्सत्त मायरंतो, उस्सुत्तं चेव पन्नवेमाणं ॥ एसोहु अहाठंदो, इह्राठंदोत्ति एगठा " नावार्थः– जे पोतानी इह्रायें चाले, तेने इह्रा ठंद कहियें. हवे ' कुग्गह हयाणं ' खोटे हठे करी हणायेला, जे कदाग्रहनी शास्त्र साख दिये नहिं, तथा सुविहित शुद्ध प्ररूपक आचार्य पण साख दिये नहीं एवो हठ पकडीने बेसी रहे, पोतानो हठ मूके नहीं, तेने कुग्रह हत कहियें. एवाना ' उम्मग्गुवएसेहिं ' एटले उन्मार्गना उपदेशें करी (बलावि के०) बलात्कारपणे प्रथमथीज (ए सम्मं के०) ए सम्यक्त्व (मइलिज्ज के०) मलिन थाय ठे, माटे तेवानी देशना प्रमुख पण सांनलवी नहीं. केम के, नरसी वात सांनल्याथी पण पाप लागे ठे. जेम मशिनो घणो संग करनाराना कपडां कालां थाय ठे. तथा लशण खाधाथी मुख गंधाय ठे, तेम एवानी संगत कस्याथी सम्यक्त्व मलीन थाय ठे ॥ ११ ॥

॥ एनी उपर जमालीनुं दृष्टांत कहे ठेः–"आजीवगगणनेया, रज्जसिरिं पयहिऊणय जमाली ॥ हियमप्पणो करित्तो, नयवयणिज्जे इह पडंत्तो " इति उपदेशमालायां. ब्राह्मणकुंम गामनी पश्चिम दिशानेविषे एक क्षत्रियकुंम नामें गाम ठे. त्यां जमाली नामनो क्षत्रिय अति ऋद्धिमान् होतो हवो. ते नगवंत श्रीमहावीरस्वामीनी पुत्रीने परण्यो. तेनी साथें पांचे इं

ड्रियोनां विषयसुख नोगववा लाग्यो, हवे कोइ एक समयें त्यां श्रीमहावीरस्वामी पधास्या. तेमने नंदीवर्द्धन राजा प्रमुख वांदवा आव्या; त्यारें जमाली क्षत्रिय पण वांदवा आव्यो, ने धर्मदेशना सांनलीने प्रतिबोध पाम्यो. पठी घेर जइ पोताना माता पिताने समजावी पोतानी स्त्री सहित महोटा महोत्सवें करी दीक्षा लीधी. तेनी साथें बीजा पांचशें क्षत्रिकुमरें दीक्षा लीधी. अनुक्रमें अग्यार अंग नण्यो. एक दहाडे श्रीनगवंत प्रत्यें पूठ्युं के स्वामी ! आपनी आज्ञा होय, तो हुं आ पांचशें यतिनी साथें देशमां विहार करुं? ते सांनलीने नगवान् मौन धारण करी रह्या गया. कांइ जबाव वाल्यो नहिं. फरी बीजी वार पूठ्युं, तेनो पण उत्तर वाल्यो नहिं; तेमज त्रीजी वार पूठ्युं तो पण तेमज मौनपणे रह्या. केम के, केवली जे वातमां लान जाणे, तेनीज आज्ञा आपे. अने जेने आज्ञा मानतो जाणे, तेनेज निवारे. नगवंतें जाण्युं के मारो वार्यो रहेशे नहिं. ए विहार करवाने अति उत्सुक थयो ठे तेने हुं शा सारु वारुं? माटें नगवंतें मौन धारण कर्युं. त्यारें आज्ञा लीधा विनाज जमालीयें नगवंतथी जुदो विहार कस्यो. ते फरतो फरतो सावत्री नगरीमां आवी पहोतो. त्यां कोष्टक चैत्यमां पांचशें यतियोनी साथें आवी ऊतस्यो. अने नगवान् श्रीमहावीर, चंपानगरीमां पधास्या. जमालीने अरसाहार, विरसाहार, अंताहार, पंताहार तथा तुछाहारें करी शरीरनेविषे तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेनी वेदना खमाय नहिं.त्यारें एक वेयावच्चकरनार यतिने कह्युं के हुं बेशी शकतो नथी, माटें एक संथारुं पाथरो. ते सांनली यति संथारुं पाथरवा गयो. त्यां कांइक वार लागी. तिहां सुधी जमालीथी वेदनाने लीधे बेसायुं नहिं. तेथी वारंवार पूठवा लाग्यो के,अरे संथारुं पाथस्युं के नहिं? यतियें कह्युं के, हा पाथस्युं. त्यारें ते त्यांथी ऊठीने ज्यां पेलो यति संथारुं पाथरतो हतो, त्यां गयो. जुवे ठे तो हजी संथारुं पथराय ठे. तेथी पेला यतिने कह्युं के, तें केम कह्युं जे में संथारुं पाथस्युं ? यतियें कह्युं के, पाथरवा मांम्युं, ते पाथस्युं कहेवाय. ते समयें जमालीना मनमां एवो संकल्प ऊपनो के, श्रीनगवान् महावीरस्वामीयें जे करवा मांम्युं ते कीधुं, एवुं जे वचन कहेलुं ठे, ते खोटुं ठे. जे कीधुं तेज कीधुं कहेवाय. माटे चलमाणेचलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहि

णे,छिज्जमाणे छिन्ने, निज्जमाणे निन्ने, दज्झमाणे दड्डे, मेज्जमाणे मेए, तथा निज्जरिज्जमाणे निज्जरणे. ए नवे पद असत्य छे. केम के, जे चाल्युं तेज चाल्युं कहेवाय: एमज नवे पद जाणी लेवां.

पछी ते पोतानुं मत यतियोने समजाववा लाग्यो. तेमां केटलाएक जे मुग्ध यतियो हता, तेउयें तो तेनुं मत मानी लीधुं. अने केटलाएक जेउ समजु हता तेउयें मान्युं नहिं. तेउ मनमां विचार करवा लाग्या के, जग वान् श्रीमहावीर केवलज्ञानजास्कर तेमनां वचन खोटां केम थाय? एम जाणी पोतानी सद्दहणाथी चल्या नहिं. केटलाएक दिवस पछी जमालीने समाधि थइ. त्यारें फरी विहार करवा लाग्यो. तेनी साथें जे तेना मतने मलता यति हता, तेउ रह्या अने जेउ अणमलता हता, तेउ त्यांथी नीक ली जइने चंपानगरीमां ज्यां जगवंत हता, त्यां आवी प्रजुने वांदीने रह्या. केटला एक दिवस पछी जमाली पण चंपानगरीमां श्रीवीरजगवंतनी पासें आव्यो. अने अति दूर पण नहिं तेम अति पासें पण नहिं एवा मेलमां रहीने पूछवा लाग्यो के, जेम तमारा बीजा यतियो छद्मस्थपणे विहार करीने छद्मस्थपणेज रह्या छे. तेवो हुं नथी. हुं तो छद्मस्थपणे विहार क रीने केवलीपणे विचरुं छुं, जेम तमें केवली छो, तेम हुं पण केवली छुं. एवी रीतें बराबरी करवा लाग्यो, तें वात गौतमस्वामी सांखी शक्या न हिं. ने मनमां विचारवा लाग्या के,महोटुं आश्चर्य छे. उस, जे सूर्यनी बराबरी करे? गरुड, शेषनागनी बराबरी करे? तेम ए जगवाननी बराबरी करे छे. एम जाणी गौतम तेने पूछवा लाग्या. अरे जमाली! जोतुं केवली छो तो मारा प्रश्ननो उत्तर आप. लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे? अने जीव शाश्वत छे के, अशाश्वत छे? एवुं सांजलीने जेम मंत्रथी वश थएलो साप हाली शके नहीं. जेम खील्यो अग्नि आघो चाली न शके,तेम ते गौतमना प्रताप नामकर्मने लीधे तेनी आगल जमाली मूकनी पठें बनी गयो. कांहि जबाप देवायो नहीं.बोल्या विना एमने एम रही गयो. कांइ प्रत्युत्तर देवानुं सूझे नहीं एम जाणीने तेने जगवंत कहेवा लाग्या के,ए प्रश्ननो उत्तर तो मारा छद्मस्थ शिष्यो पण दइ शके. तो तुं केवली छतां केम ताराथी उत्तर देवातो नथी? एवुं सांजलीने जमालीने घणुं मातुं लाग्युं,तेथी जगवाननी आज्ञा उल्लंघी त्यांथी नीकलीने निन्हवपणे विचरवा लाग्यो. अने केट

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा वर्ष सुधी निन्ह्वपणुं जोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्कमे थके काल करीने बघा लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे ढेडनी बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांजली श्रीजगवान् प्रत्यें पूछ्युं के, हे जगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? जगवाने कह्युं, मह्रारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो छे. उक्तंच ॥ जमालिणाम कुसिस्से आयरिय पडणिए, उवञ्चायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, संघपडणिए, आयरिय उवञ्चायाणं अजसकारए, अवस्तुकारए, अप्पाणं च परंच तडुजयं च वुग्घाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं वासाइं समणं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासिआए संलेह्णाए, तेसिं जत्ताइं, अणसणाए छेदित्ता,तस्स गणस्स अणालोइय, अप्पडिक्कंते, कालमासे, काले किच्चा लंतए कप्पे उववस्सुं, जमालिणं जंते ताउ देवलोगाउ आउरकएणं जवरकएणं विइरकएणं कहिंउववञ्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिरक जोणिय मणुस्स देवजवग्गह्णाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पछा सिज्झहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति जगवतीसूत्रे ॥

ह्वे जमालीना जव आश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें छेयें. "आयरियपरंपरए,ण आयगजोउ आणुपुव्वीए ॥ कोवेइ छेयवाइ,जमालिमांसं स नासिहिं ॥ १ ॥ व्याख्याः– आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूषयति एटले कोपतो दूषवतो कहेवो थको? तोके (छेयवाइ के०) छेकवादी एटले हुं माह्यो छुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्ह्व ते नासनी पेरें कयमाणेकडे इत्यादि जगवंतना वचन उछापन करतो थको ते नाठो एटले संसारचक्रवालमांहे परिभ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी स्वमत कदाग्रहें करी एके वचननुं उत्सूत्र जापण करशे (सनासिहिं के०) ते नासशे. एटले संसारचक्रवालमांहे जमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इव्यलिंगें करी निन्ह्वना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें गंमी माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो आपणा

त्मानो हितवंछक थयो होत, तो नगवानना "कयमाणेकडे" इत्यादिक वचन उछापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीनें लोक वगोएं करत नहिं. पण नगवंतनां वचन उछापीने निन्हव थयो, लोकोमां निंदा पाम्यो, वगोवाणो अने नगवानें कुशिष्य करी बोलाव्यो, वली संसारमां अनंता नव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं छे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक नवभ्रमण करीने दुरंत घणाकालें श्रीमाहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं छे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पछी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार नमीने छेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरनगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बूज्यो नहीं, निन्हव थयो घणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही छे. तथा श्रीनगवतीसूत्रानुसारें पन्नरनव संसारमां करवा कह्या छे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना नव आश्रयी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो, त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य छे. छेवट केवलीयें दीतुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण छे, एम कहेजो. जेथी तूटकबारो थाय पण पोताना हठथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठें करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिभ्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां बेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्जन रूप सद्दहणानो चोथो नेद वखाणे छेः—

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुद्दिट्ठि पयणेहिं गुविल ढंढेहिं ॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः—(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुच्छ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो छे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्प्पना मणिने सर्प्पनी दाढा संबंधी

जे विष छे, तेनी संगति लागेज नहिं. सहामुं विषने उतारी नाखे, परंतु केटला एक जीव वस्त्र सरिखा छे ते जेम वस्त्रने जेहवा रंगमां नाखीयें तेवो रंग लागी जाय. तेम केटला एक मनुष्यो पण वस्त्रनी पेठेंज " जब गया तब रंगिआ " एटले ज्यां गया त्यां रंगाइ जाय, एवा छे. तेमने मोह पमाडीयें, ते शेणें करी मोह पमाडीयें ? तो के (कुदिठिवयणेहिं के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि त्रणशें त्रेशठ पाखंमीयो छे, तेमने वचनें करी ॥ यतः ॥ असिइसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइ चुलसीई ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणं तु बत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा कुदृष्टिनां वचन जे रामायण भारतादिक शास्त्रें करी मुग्धमति जीवोने मोह पमाडीयें, तेने आगम शास्त्र सांभळतां मीठां न लागे अने कुशास्त्र सांभळवाने उजाता जाय.

हवे ते कुदृष्टिनां वचन कहेवां छे ? तो के (गुविलढंढेहिं के०) गहन गहनांतर कपटनां प्रतिपादक छे, जे शास्त्रोमां पूर्वापर संबंध मळे नहिं एवा वचनोनी रचना करेली छे, एवां छे माटे ते जीवने मिथ्यात्वमां पाडे, तेथी ते कुदृष्टिनां वचन (दूरेण वज्जियव्वा के०) दूरथी वर्जवां. अर्थात् सांभळवां नहीं. उक्तं च उपदेशमालायां ॥ आलावा संलावा, विसंभो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सव्वजिणंदेहि पडिकुठो ॥ १ ॥ (तेण के०) ते कारणमाटे (इमे के०) ए कुदृष्टिनां वचन जे छे, तेने (सुद्धबुद्धीहिं के०) शुद्ध एटले निर्मळ बुद्धिवाळा जीवें, सांभळवां नहिं ए सद्दहणानो चोथो भेद कह्यो ॥ १२ ॥

हवे एनी उपर गिरिशुक अने पुष्प शुकनो दृष्टांत कहे छेः—

॥ कादंबरी अटवीमां वटवृक्ष उपर सूडानां बे बच्चां हतां, ते बेहु सहोदर हतां, तेमांथी एक बच्चांने भिल्ल लइ गयो ते पर्वतनी पाळीमां वध्यो ते भणी तेनुं गिरिशुक नाम थयुं. अने बीजुं तापसें लीधुं ते तापसोना पुष्प वाडीमां महोटुं थयुं तेथी तेनुं नाम पुष्पशुक पाड्युं. एकदा वसंतपुरनो स्वामी वक्रशिक्षित घोडायें अपहर्यो थको अटवीमां आव्यो, ते राजाने देखी भिल्लनो पाळेलो शुक बोल्यो के, अरे भिल्लो हुसीयार थाओ कोइक असवार रूडा आभरणें अलंकृत थको एकलो जाय छे, माटे तेने लूंटो, मारो, फाडो. ते वचन सांभळी राजा भयभ्रांत थयो थको घोडाने उतावळो चलावतो आगळ तापसोने आश्रमें आव्यो, तेने दूरथी आ

तो देखी पुष्पचुक कुलपतिने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! कोइ एक रू डो असवार अतिथि आपणी पासें आवे छे, माटे आसन आपो. खान पान तैय्यार करी एनी परोणागत करो. ते सांजली तापस सावधान थया. राजाने आसन आपी आगल वनफलादिक मूक्यां. राजा वनफल आरोगी स्वस्थ थइ पछी बेहु सूडाना बोलवामां महोटो तफावत जाणी आश्चर्य पाम्यो थको पूछवा लाग्यो. के तमें बेहु सूडा सरखा देखाउ छो. तेम छतां गुण दोषमां एवडो श्यो अंतर पड्यो? ते सांजली पुष्पचुक कहेवा लाग्यो के हे राजन्! अमारा माता पिता एकज छे, साथेंज जन्म्या छैयें, पण तेणे रात्रिदिवस चोरोनी संगति करी छे,अने मने तापसोनी संगत छे. माटे जेवी संगत तेवी बुद्धि थाय छे,ते वचन सांजली राजा हर्ष पाम्यो,एटलामां राजानुं लश्कर पण त्यां आवी पहोच्युं, पछी राजा तापसो पासेंथी रजा मागी पोतानी नगरीयें आव्यो, अने संगतने लीधे दोप गुण प्राप्तिनी प्रशंसा करवा लाग्यो. इति कथा ॥ ए सुविहित शुद्ध प्ररूपकना मुखथी शास्त्र सांजलवां पण अन्य दर्शनीउना कुशास्त्र सांजलवां नहिं. एवो सद्दहणानो चोथो नेद दृष्टांतसहित कह्यो ॥

इतिश्रीतपागछालंकार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार श्रीविजयसेनसूरीश्वर पट्टप्रानाविक श्रीविजयदेवसूरि विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिशिष्य श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिउपांगवृत्तिकारक महोपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्रीसम्यक्त्व रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दशाष्टम्यादिपर्वसु अप्रमत्त तपपौषध प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यक्रत्नप्रकाशिनामनि श्रीसम्यक् सप्ततिप्रकरणबालावबोधे चतुर्नेदश्रद्धानस्वरूपनिरूपणनामा प्रथमोऽधिकारः संपूर्णः ॥ १ ॥

हवे समकेतना त्रण लिंग कहे छेः—

॥ परमागम सुस्सूसा,अणुराउ धम्म साहणे परमो ॥ जिणेव गुरु वेयावच्चे, नियमो सम्मत लिंगाइ ॥ १३ ॥ अर्थः—प्रथम (परमागम सुस्सूसा के०) परम प्रकृष्ट आगमने विषे शुश्रूषा एटले सांजलवानी वांछा होय यतः ॥ सुस्सूसइ पडिपुछइ, सुणेइ गिण्हईय एयावि ॥ तत्तो अपोह एवा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ यदागमः ॥ सवणे नाणेय विन्नाणे,पच्चरकाणेय सं

जमे ॥ अनिएहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥१॥ समकेत धारी होय ते आगम सांभलवा वांछे. ए सम्यक्त्वनुं पहेलुं लिंग एटले चिन्ह जाणवुं.

बीजुं (अणुराउधम्मसाहणे परमो के०) धर्मसाधनने विषे मनना प रम प्रीति पूर्वक परम अनुराग होय, एटले धर्म करवाने विषे उत्कृष्ट उज माल होय, धर्मकार्यमां अंतराय न करे, जे धर्म करतो होय तेहने सहा य आपे, ए बीजुं धर्म साधनने विषे अनुराग रूप लिंग जाणवुं ॥

त्रीजुं (जिणेव के०) रागादिक अढारदोषें रहित एवा जिनेश्वर देव च केतां वली (गुरु के०) पंचाचारना प्रतिपालक गुरु, तेमना (वे यावच्चे के०) वेयावच्च करवाने विषे (नियमो के०) नियमवंत होय एटले म हारे आ अमुक वेयावच्च अवश्य करवुंज. ए रीतें सम्यक्त्व धारीने श्रीजिनदेव तथा गुरु जे सुसाधु तेना वेयावच्चने विषे राग होय. ते त्रीजुं लिंग जाणवुं ॥ उक्तं च ॥ दसविहे वेयावच्चे पण्णत्ते तं जहा आयरिय वेयावच्चे,उवज्झाय वेयाव च्चे, थेर, तवस्सि, सेह, गिलाण, कुल, गण, संघ, साहम्मिय वेयावच्चे॥इति स्थानांगसूत्रे ॥ वेयावच्चेणं भंते जीवे किं जणइ, वेयावच्चेणं तित्थयर नाम गोय कम्म निबंधइ ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए त्रण (समत्तलिंगाइं के०) सम्यक्दृष्टिनां लिंग एटले चिन्ह जाणवां ॥

हवे एज त्रण लिंगनुं विशेषें स्वरूप कहे छेः—

॥ तरुणो सुही वियड्ढो, रागी पियपणयिणीजुउ सोउं॥ इच्छइ जह सुरगी यं, तउहिया समय सुस्सूसा ॥ १४ ॥ अर्थः—(तरुण के०) युवान वय वालो वली(सुही के०) सुखी होय तेवा पुरुषने स्वभावेंज गीत नाट्या दिक वल्लभ होय यतः ॥ नवि अत्थि नवि अहोहि,पाएण तिहुअणंमि सो जीवो ॥ जो जुव्वण मणुपत्तो, वियारहीउ सया होइ ॥ इति ॥ १ ॥ तथा (वियड्ढो के०) विदग्ध एटले दक्ष होय एटले तरुण तथा सुखी होय परं तु जो विदग्ध एटले दक्ष चतुर न होय तो तेने गीतादिक वल्लभ न होय माटे जेम तरुण तथा सुखी कह्यो तेम वली डाह्यो चतुर पण कह्यो ॥ यतः ॥ भणी न जाणे गणी न जाणे,उंचो बेठो माले ॥ महीषी आगल किन्नर गाये, ऊंघे ने उगाले ॥१॥ तेमाटे विदग्ध पण कह्यो वली कहेवो होय ? तोके (रागी के०) वसंत भैरवादिक छत्रीश राग तथा ते रागनी मूर्छना त था ऋषभ प्रमुख सात स्वर, त्रण ग्राम, त्रण मात्रा प्रमुखनो जाण होय,

तेने रागी कहीयें जेमाटे कोइ विदग्ध होय पण जो राग रागणीनो जाण न होय तोपण तेटली तेमां चतुराइ न्यून कहेवाय. केम के सर्व चातुर्यमां रागनुं चातुर्य आवडवुं ते अत्यंत दुष्कर ठे,तेमाटे ते रागनो जाणनारो पण होय ए पण विशेषण लीधुं,वली कहेवो होय? तोके जेम श्रीरामचंइने सीता वल्लन्न हती, पांमवोने डौपदी वल्लन्न हती, श्रीकृष्णने राधा, ईश्वरने पार्वती, इंइने इंड्राणी, नल राजाने दमयंती राणी, अत्यंत वल्लन्न हती तेम ते पण (पियपणयिणी के०) अत्यंत प्रिय एवी प्रणयिनी एटले स्त्री तेणे करी (जुर्ठ के०) युक्त होय एटले मुख तो पूर्णचंइाकार होय, न्नाल अर्द्धचंइ समान होय, होठ प्रवालाना रंग जेवा होय, नासिका दीपशिखा समान होय, तथा मुखमांहे जाणे हंसनी पंक्तिज बेठी होय नहिं? एवा दांत होय, विशाल नीलोत्पल समान नेत्र होय, कामराजाने हिंचकवाना हिंमोला सरखा कान होय, तेमज हार, अर्द्धहार, कुंमल, बाजुबंध, कटिमेखला, कंकण, मुड्रिका, नेपुर आदिक अनेक आन्नरणें करी अलंकृत होय,एवी स्त्री ते पूर्वोक्त पुरुषनी पासें बेठी थकी पाननी बीडी करी आपती होय, कटाक्ष बाणें करी मारती होय, एवो पुरुष (जह के०) जेम (सुरगीयं के०) सुर जे देवता तेहना गीत प्रत्यें (सोउं के०) सांन्नलवाने (इब्रइ के०) इछे ठे एटले मनुष्यने देवतानां गीत क्यांथी सांन्नलवामां आवे तेमाटे जेवा देवतानां गीत होय तेवां गीत सांन्नलवानी इब्रा करे. एवो अर्थ करवो ए जेम पूर्वोक्त तरुणादि गुणवालो ते देवता संबंधी गीत सांन्नलवानी इब्रा करे तेम उत्तम श्रावकने (तर्ठहिया के०) तेथकी पण अधिक (समय के०) सूत्र सिद्धांत तेने विषे (सुस्सूसा के०) शुश्रूषा एटले सांन्नलवानी इब्रा होय ॥ १४ ॥

हवे ए शुश्रूषा धर्म उपरें सुंदर्शनशेठ अने अर्जुनमालीनो दृष्टांत कहे ठेः– एहज जंबूद्दीपें दक्षिणन्नरतक्षेत्रने विषे मगधदेशें राजगृही नगरीमां श्रेणिकराजा राज्य करे ठे, तेनो अन्नयकुमार मंत्रीश्वर ठे, ते राज्यनीति चलावे ठे. तिहां अर्जुन नामें एक महर्द्धिक माली वसे ठे. ते प्रतिदिन जलपानानिग्रह संयुक्त पोतानो कुलदेवता मुजरपाणि नामें यक्ष ठे, तेनी पूजा करे ठे. एकदा प्रस्तावें ते माली हाथमां करंमीयो लइ पोतानी न्नार्या सहित फूल लेवाने माटे उद्यानमां गयो, तिहां फूल लइ यक्ष प्रत्यें पू

जवा निमित्तें देवगृहमांहे पेंठो, एनी बंधुमती नामें स्त्री अत्यंत रूपें करी सुंदर ठे.
एवामां राजगृहनगरीने विषे ठ गोष्ठील पुरुष वसे ठे. ते सात व्यसनना सेवनारा ठे, तेउ अर्जुनमालीनी स्त्रीने घणा दिवसथी ताके ठे, पण अवसर पामता नथी. ते आजे अवसर पामी मुजरपाणि यक्तना देरासरमां हे ठाना रह्या ठे, ते जेवो अर्जुनमालीयें देरासरमां प्रवेश कस्यो, तेवोज ते ठ पुरुषें तेने हालीचाली शके नहिं. एवा आकरा बंधने बांध्यो, अने ते मालीने देखतां तेनी स्त्री बंधुमती साथें नोग नोगवा लाग्या, ते देखी मालीने घणो क्रोध चड्यो, पण करे शुं? जे पोतें बांध्यो पड्यो ठे उठी शक्तो नथी ॥ यतः ॥ सह्यंते प्राणिनिः सर्वैः, पितृमातृपरानवाः ॥ नार्यापरानवं सोढुं, तिर्यंचोऽपि नहि क्षमाः ॥ १ ॥
पठी ते माली, यक्तप्रत्यें उलंनो देवालाग्यो के हे यक्त! तुं मह्वारो कुलदेवता ठो, तह्वारी प्रतिदिवस हुं पूजा करुं ठुं. तेम ठतां तह्वारा देखतां मुजने बंधने बांधीने मह्वारी स्त्रीनी साथें स्वेछायें रमे ठे, तेथी हुं जाणुं ठुं जे तुजमां कांइ शक्तिज नथी निरर्थक हुं पाषाणज पूजुंठुं. एवुं सांनलतां ज यक्त कोपायमान थयो थको मालीना शरीरमांहे संक्रम्यो तेवारें जेम सडेली दोरी त्रोडी नाखीयें तेम ते बंधन त्रोडी नाख्यां, अने पल्यसहस्त्र प्रमाण लोहनो मुजर यक्तनी प्रतिमाना हाथमां हतो ते एणे हाथमां लीधो, ते मुजरें करी बंधुमती सहित ठ गोष्ठीलपुरुषने मारी नाख्या, पठी प्रति दिवस ठ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणसने मारे, तेवारें क्रोध उपशमे, तेथी आखी राजगृही नगरीमां हाहाकार थयो. राजायें पडह वजडाव्यो के ज्यांसुधी अर्जुन माली सात माणसनें मारीने पोताने स्थानकें न गयो होय, तिहांसुधी कोइ माणसे बाहिर निकलवुं नहीं एम ठ महीना वीत्या.
एवामां नामे पण सुदर्शन अने परिणामें पण सुदर्शन एवो सुदर्शन नामे शेठ तिहां वसे ठे. ते धर्मनें विषे परमरागी ठे आगम सुणवानें रुचिवंत ठे, दश प्रकारना मिथ्यात्वनो ठांमनार ठे, हवे ते सुदर्शनशेठ नगवंत आव्या सांनली मातपिता प्रत्यें मह्वाकष्टें समजावीने प्रनुने वांदवा निकल्यो. तेवामां यक्तावेशें अर्जुनमाली पण हाथमां मुजर उपाडीने सुदर्शन शेठने मारवा दोड्यो तेने आवतो देखी उत्तरासंगें नूमिका पूंजी नगवंत

ने नमस्कार करी,अरिहंतादिक चारनुं शरण करी चोराशी लाख जीवायो नि खमावी, अढार पापस्थानक आलोइ, नंदी, सागारिक अणसण करी, महासमाधिवंत थको उपशमनो आगार, सकलगुणसागर एवो थको काउ स्सग्गें ऊनो रह्यो. तेना महिमाथकी ते यक्ष मुजर लेइ मालीना शरीरमां थी निकली पोताने स्थानकें गयो, तेथी ते माली अचेतन काष्ठनी पेठें निःसत्त्व थइ धरतीयें पड्यो, तेवारें सुदर्शनशेठ काउस्सग्ग पारी माली पासें जइ तेने शीतलोपचारें करी सावधान कस्यो, तेथी माली ऊठी ऊनो थयो अनें कहेवा लाग्यो के, हे शेठ ! तमें क्यां जाउ गो ? शेठें कह्युं कें, हुं उद्यानने विषे श्रीमहावीर देव पधास्या ठे तेने वांदवा तथा तेनी पासें धर्म सांजलवा जाउं बुं. माली कहेवा लाग्यो मुजने पण धर्म सांजलवानी अने जगवंतनां दर्शन करवानी इछा ठे, माटे मने पण तेडी जाउ. तेवा रें सुदर्शन शेठ तथा माली वेहु जण समवसरणें गया. तिहां प्रजुने वांदी ने यथायोग्य स्थानकें वेठा,बार पर्षदा मली. जगवान् पण देशना वचना मृतसुधारस वरसाववा लाग्या. मालीने वैराग्य उपन्यो अने सोचना कर वा लाग्यो. जे एवडुं में पाप कस्युं, माटे हा हा इति खेदे हुं नरकें जइश !!!

॥ यतः ॥ जय के जिवा सोयणिया,जवंति गोयमा अपामिय जिणदिरका उ, असुअसिद्धंत वयणाउ, अवोहिलाजाउ, अकयधम्माउ, अगहियअणु व्वयाउ. अठमय पंच पमाय चउक्कसाय संजुत्ताउ,अखामिय सव्वजीवाउ,अ णालोइय सव्व पावाउ, जे जीवा परलोयं गछंति, ते सोयणिया हवंति, ज उ अणंत संसारे सयल डुहनिदाणे, निच्चं हं अणुहवंता चिठंति.

हवे जगवंत अर्जुनमाली प्रत्यें कहे ठे के, हे अर्जुन ! तुं शोच म कर. हजी सावधान था. यतः ॥ पछावि ते पयाया, खिप्पं गछंति अमर जव णाइं ॥ जेसिंपिउवोसं,जमोय खंतिय बंजचेरं च ॥ १ ॥ जेमाटे दीक्षा ल इ तप करीने कर्मक्षय करवाने तुं समर्थ ठे, एवुं जगवंतनुं वचन सांजली अर्जुनमालीयें दीक्षा लीधी, ठठ अठम दशम डुवालसादिक तप करी, लो कना आक्रोश निंदा, प्रहारादिकनी कदर्थना प्रमुख खमतो थको ठ मही नामां बे महीनानुं अनशन करी शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी आठ कर्म रूप काष्ठने बाली मोक्ष नगरें पहोतो.

सुदर्शन शेठ पण प्रतिदिन आगम श्रवण करतो साधु साध्वीने अश

न, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, ओषध, भेषजादिक प्रति लाजतो थको श्रावकनां बार व्रत पालीने स्वर्गे गयो. ए आगम शुश्रूषाने वषे सुदर्शन शेठनो संबंध कह्यो ॥ १४ ॥

हवे अणुराहोधम्मसाहणे परमो, ए सम्यक्त्वनुं वीजुं लिंग वखाणीयें बैयें.

॥ कंतारुत्तिण दीउ, घयपुस्से भुत्तुमिञ्चइ बुहिउ ॥ जह तह सदणुठाणे, अणुरागो धम्मराउत्ति ॥१५॥ अर्थः-(कंतारुत्तिण के०) कांतार जे अटवीउ तेने उतरी आव्यो एवो (दीउ के०) द्विज जे ब्राह्मण तेनें प्रायें भोजन वाहालुं होय यतः ॥ वाटिका यत्र लभ्यंते, न दूरं पंचयोजनं ॥ मोदका यत्र लभ्यंते, न दूरं दशयोजनं ॥ ते माटे ब्राह्मण कह्यो, हवे ते ब्राह्मण (घयपुस्से के०) घृतें करीने पूर्ण जेनी ऊपर एक आंगुलनो उत्तम साकरनो भुको होय, एवा घेवर प्रत्यें (भुत्तुं के०) भोक्तुं एटले जमवाने (इञ्चइ के०) इबे बे. वली ते ब्राह्मण कहेवो होय? तो के (बुहिउ के०) क्षुधितो एटले भूख्यो होय जे कारण माटें धरायाने कोई खावानी वस्तु वल्लभ न होय अने भूख्याने विशेषें वल्लभ होयज. माटे भूख्यो कह्यो (जह के०) जेम ए अटवीथी उतरेलो अने भूख्यो एवो ब्राह्मण ते घेवर जमवानी इञ्चा करे (तह के०) तेम एज दृष्टांतें श्रावकने (सदणुठाणे के०) भला अनुष्ठान एवा जे पडिक्कमण, पोसह, सामायिक, देवभक्ति, गुरुभक्ति, साधर्मिकनी भक्ति प्रमुख भलां कार्य तेनें विषे (अणुरागो के०) अनुराग होय चित्त संबंधिनी अंतरंग प्रीति होय. तेने (धम्मराउत्ति के०) धर्मराग कहीयें तिहां जे दृष्टिरागथी तथा लोकदेखामणीयें करे. ते लेखामां गणाय नहीं ॥ यतः॥ गुणाः सर्वत्रमान्याः स्युः, किंतु नाडंबरो महान् ॥ विक्रियंते न घंटाभि, गोविः क्षिरविवर्जिता ॥ १ ॥ किंपरजणबहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इय भरह चक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥१॥ तथा धम्मासद्धाएणं भंते जीवे किं जणइ, गोयमा धम्मासद्धाएणं सातासुक्खेसुविरज्जमाणे विहरइ ॥ आगारधम्मंचणं चयति, अणगारेणं जीवे सरीरमाणसाणं डुरकाणं बेदण भेदण संजोगादिणं वोब्बेय करेइ. अव्वाबाहं चणं सुहं निवत्तेति ॥ १५ ॥

हवे एनें विषे आरोग्यद्विजनो दृष्टांत कहे बेः-उज्जयणी नगरीयें देवगुप्त नामा ब्राह्मण तेने घेर जगतने आनंदनी करनारी एवी नंदा नामें भा

यी छे, ते स्त्री नरतारने विषय सुख जोगवतां एक पुत्र थयो, पण ते पूर्व कृत अशुजकर्मनें योगें रोगीयो थयो, तेना शरीरमांथी एके रोग जाय न हिं. तेथी लोकोयें तेनो रोगी ब्राह्मण एवुं नाम दीधुं ॥ यतः ॥ ठुंटत्तं मूअ त्तं, वहिरंते चेव चरकु हीणत्तं ॥ डुहियत्त डुप्नगत्तं,जीवहिं साफलं नेयं ॥१॥ तथा ॥ तिहिंगणेहिं जीवा,असुजदाहाउ अत्ताए कम्मं पकरेंति तं जहा पाणे इवाइत्ता जवइ, सुसंवाइत्ता जवइ,तहारूवं समणं वा माहणं वा हिलित्ता, नंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अविमन्नित्ता, अमणुन्नेणं, अपीइकारगेणं, असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाजेत्ता जवइ ॥ इच्चेहि गणेहिं जीवा अ सुजदीहाउ अत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

हवे एकदा प्रस्तावें तेहने घेर साधु वहोरवा आव्या. तेवारें ब्राह्मणें पोतें उठीने रुडे अन्नपानें करी तेनी पडिलाजना करी ॥ यतः॥ दानं स्यान्नि जहस्तेन, मातृहस्तेन जोजनम् ॥ तिलकं गुरुहस्तेन, परहस्तेन मर्दन म् ॥ १ ॥ ते साधुने अन्न पान देइने पोताना रोगीपुत्रने तेडी साधुने वं दाव्यो, पगे लागाड्यो अने पूछवा लाग्यो के,स्वामी! एवो कोइ औषध प्र साद करो के जेथकी आ महारा पुत्रनें समाधि थाय. साधु बोल्या के गो चरीयें आव्या अमें कांइ पण कहीयें नहीं. माटें अमें जिहां उतस्या छैयें. तिहां प्रस्तावें आवो. तो वांदजो.

वली ते ब्राह्मण बे पहोर पछी पुत्रने लइ साधुनी पासें गयो. तेमने साधुयें कह्युं के, एणे पाछले जवें प्राणिवध कीधो छे, तेनुं ए फल पाम्यो छे. जेमाटे ॥ वह मारण अप्नरकाणं, वाणं परधण विलोवणाईणं ॥ सव्व जहणो उदउ, दसगुणिउ इक्कसिकयाणं ॥ १ ॥ तेमाटे तमें हवे धर्म क रो, के जेना पसायथी रोग नाश पामे. एम कही ते साधुयें एक साधुनो धर्म अने बीजो श्रावकनो धर्म एम बे प्रकारनो धर्म कह्यो. ते सांजलीने पिता पुत्रें बेहु जणे श्रावकधर्म अंगीकार करी बार व्रत उच्चरी साधुने वांदी,बेहु घेर आव्या. पछी जेम चिंतामणि रत्न पामीनें तेनो आदर करियें,तेम ते बेहु समकेतरत्न पामीने आदर सहित धर्म आराधन करता हवा.

हवे एकदा प्रस्तावें इंड्महाराज सन्नामांहे ते ब्राह्मणोनी एवी प्रशंसा करवा लाग्यो के एमने कोइ पण धर्मथकी चलावी शके नहीं. एवा ते दृ ढधर्मी छे. ते सांजली बे देवता ते रोगीया ब्राह्मणनी परीक्षा करवा माटें

वैद्यनुं रूप धारण करी तेना घर आगल आव्या, अने कहेवा लाग्या के अमारुं औषध ले, तो तुऊने समाधि थाय. तेने ब्राह्मणें पूछ्युं के, कयुं औषध खवरावो ठे ? तेवारे वैद्य बोल्या के, प्रथम प्रहरें मध खावुं, अने पाछले प्रहरें मद्यपान करवुं, तथा रात्रियें माखणमिश्रित कूरनो करंबो खावो, तेनी उपर वली मांस खावुं. एवा चारे अनक्ष्य विगयनां औषधो सांजलीने ब्राह्मण पोताना मनमां ध्रूज्यो अने विचार्युं जे एवडुं महोटुं पाप करीने पछी नरकमां जइ पडवुं ठे, जे माटें ॥ मज्जे महुंमि मसंमि, नवणीयं चउब्बए ॥ उवऊंति असंखा, तवणा तब जंतुणो ॥ १ ॥ ते माटें ए सावद्य औषध न करवुं. ए मने जे रोग थयो ठे, ते तो एकज नवमां डुःख आपनारो ठे, पण व्रतनंग करवानां माहापाप शास्त्रमां कह्यां ठे ॥ यतः ॥ वयनंगे गुरुदोसो, थोवस्सवि पालणं गुणकरिय ॥ गुरुलाघवं च नेयं, धम्मंमि अउय आगारा ॥ १ ॥ इति पंचाशकसूत्रे ॥ ते माटें सर्वथा व्रतनंग नहींज करुं. एवो तेनो हठ जोइने माता, पिता तथा राजा प्रमुख वडेरा लोको कहेवा लाग्या के, तुं ए औषध कर के जेथी घणा काल ना रोगनी समाधि थशे तो पछी नीरोगी शरीरथी घणा प्रकारना धर्मकार्य करीश, अने व्रतनंग थशे तेनुं प्रायश्चित्त लेंजे. तेवारें ब्राह्मण बोल्यो ॥ यतः ॥ जइ जीवियस्स इक्कस्स, कारणे हणइ जीव कोडीउ ॥ ता की सासयनावं, तमिब्बपडिवज्जएकहवि ॥ १ ॥ माटे जो एम करवाथी लान्न थतो होय तो सनत्कुमार नामा चोथो चक्रवर्ती हतो, तेणें शा माटें औषध कर्युं नहीं ? पण तेणें एवुंज विचार्युं जे आ रणीयुं आव्युं ठे तेनो रण आपी समजावीने उगाडी मूकीयें ? तों रूडुं थाय. तेम मुऊने पण ए रोग वेदवाथी पूर्वकृत कर्म क्षय थाय ठे, माटें सर्वथा सावद्य न करुं. पण रीश करी हांकी काहाढीयें, तो मातुं लागे, ते माटें ए कर्मनुं रुण आपी दइयें, तो रूडुं देखाय. एम कह्या नंतर वली पण देवोयें घणोये चलाववा मांड्यो पण सर्वथा रंचमात्र चलाय मान थयो नहीं. तेवारें देवो प्रगट थइ पगे लागी कहेवा लाग्या के, धन्य ठे तुऊने अने धन्य ठे तहारा दृढधर्मने, जेवी इंद्रमहाराजें तहारी प्रशंसा कीधी तेवोज तुं ठो. एवुं कही तेना शरीरसंबंधी सर्व रोग मटाडी तेना घरने विषे रत्ननी वृष्टि करी देवता पोताने स्थानकें गया. नगरमांहे श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा

थइ. लोकोयें तेनुं आरोग्यद्विज एवुं नाम पाड्युं, ते ब्राह्मण घणा वर्ष पर्यंत श्रावकधर्म पाली स्वर्गे पहोतो. अनुक्रमें मोक्षमां पण जाशे. ए धर्मरागनी उपर आरोग्यद्विजनी कथा कही ॥

हवे देवगुवरुनुं वेयावच्च रूप समकेतनुं त्रीजुं लिंग कहे ठेः—

॥ पूयाइए जिणाणं, गुरुणा विसमणाइए विविहे ॥ अंगीकारो नियमो ,वेयावच्चे जहा सत्ती ॥ १६ ॥ अर्थः—(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्वरनी (पूयाइए के०) पूजा ते वे प्रकारें ठे एक इव्यस्तवरूप अने बीजी नावस्तव रूप, तिहां श्रावकने तो इव्यस्तव अने नावस्तव ए वेहु उचित ठे अने साधुने तो एकज नावस्तव उचित ठे. इहां अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी अने एकवीश प्रकारी पूजा आदिक ए सर्व इव्यस्तव कहीयें. यतः ॥ उक्कोसं दवथयं, आराहिय जाइ आवुअं जाव ॥ नावबएण पावइ, अंतमुहूत्तेण निवाणं ॥ १ ॥ तथापि इव्यस्तव जे ठे, ते नावस्तवनुं कारण ठे. ॥ यतः ॥ समयंमि दवसद्दो, पायंसोजो गया ए रूढो त्तिणि, रुवम चरित्तो बहुहा, पउग नेउपलंनाउ ॥ १ ॥ मिउपिंमो दवघडो, सुसावगो तहय दवसाहुत्ति ॥ साहुय दवदेवो, ए माइजउ सुए नणियं ॥ १ ॥ तानावब पहेक, जो सो दवबउ इहं इठो ॥ जो पुणऐवं नूउ, सअप्पहाणो परं होति ॥ १ ॥ इति षष्ठे इव्यस्तव नावस्तव नामा पंचाशके ॥

जे साधु थइने इव्यस्तव करे, ते आज्ञा विराधक थाय ॥ यतः ॥ नयवं जेणं केइ साहू वा साहुणीवा, निग्गंथे अणगारे दवबयं कुजा तेणं किं आलोवेज्जा ॥ गोयमा सेणं अजएवा, असंजए वा, देवनोइवा,देव गाचगे वा, जावणं उमग्गपए इवा, डुसन्निय सीलेइवा, कुसीलेवा, सछंदचारिएवा,आलो वेज्ञा ॥ इति माहानिशीथे ॥ तेमाटें साधुने इव्यस्तव न करवुं अनें श्रावकने इव्यस्तव कीधा पढी नावस्तव करवुं. ए देव आश्रयी कह्युं.

हवे (गुरुणाविसामणाइए के०)गुरुनो विश्रामणादिक (विविहे के०) विविध प्रकारनुं वेयावच्चनो अंगीकार करे,तेने विषे निश्चल होय एटले गुरुने यथाशक्तियें शुद्धमान अशनादिक आपवा तथा कारणें इव्य, क्षेत्र, काल, नाव, विचारीने तेमज पात्र, अपात्र, गीतार्थ, अगीतार्थ, प्रमुख उत्सर्ग अपवाद विचारीने जो सर्वथा शुद्धमान वस्तुनी अप्राप्ति देखाय, तो अशुद्धमान पण आणी आपे ॥ यतः ॥ संघरणंमि असुद्धं, डुण्हंवि

गिएहं तदित पाणहियं ॥ आउरदिहं तेणे, ते चेवहिय असंघरणे ॥ १ ॥ तेने गुरुसंबंधि वेयावच्च कहीयें, तेने विषे (नियमो के०) नियम होय, एटले आटलुं वैयावच्च करवुंज एवो होय पण यथाशक्तियें नियम करे, केम के केटलाएकने द्रव्यनी शक्ति होय पण कायानी शक्ति न होय, तथा केटलाएकने कायशक्ति होय, पण द्रव्यनी शक्ति न होय. तेमज केटला एकने द्रव्य अने काय बेहु शक्ति होय अने केटलाएकने बेहुमांहेली एके शक्ति न होय, तेमाटे यथाशक्तियें वेयावच्च करवुं कह्युं, पण यथा शक्तियें न करे तो तेने दोष लागे ॥ १६ ॥

ए उपर दृष्टांतरूप कथा कहे ठेः— माहाविदेहक्षेत्रे वज्रनाभ राजा चक्रवर्त्ती पदवी जोगवी वैराग्य पामी दीक्षा लइ चौद पूर्व जणी आचार्य पदवी पामी विहार करता हवा. तेना बाहु, सुबाहु, पीठ अने महापीठ, ए चार लघु जाइ ठे, तेमणें पण दीक्षा लीधेली ठे. अगीयार अंगना जणनारा ठे. ते चारमां बाहुमुनीश्वर ठे, ते पांचशें साधुनुं वेयावच्च करे, नित्यप्रत्यें यथेष्ट शुद्धमान अशनादिक गृहस्थना घरथी लावी आपे, लगारमात्र रीश न करे, अजिमान न करे, कोइने तुं कार रेकार न करे, देइने पश्चात्ताप न करे, ईर्ष्या न करे, पांचशें साधुने रूडां मिष्ट वचने बोलावी रूडा मिष्ट जातपाणी आपी संतोष पमाडे, अने सुबाहुमुनि महाजक्तिपूर्वक पांचशें साधुने विश्रामण करे.

अने पीठ तथा महापीठ ए बे साधु सद्यायध्यान काउस्सग्गादिक क्रिया करता थका सुखें चारित्र पाले, एकदा वज्रनाभ आचार्य बाहु अने सुबाहु ए बेहु साधुउना साचा गुणनी प्रशंसा करता थका कहेवा लाग्या के, माहारा गह्नने विषे ए बे साधु धोरी ठे, जेमाटे बाहुसाधु तो पांचशें साधुउने अशनादिक शुद्धमान आहारें करी पोषे ठे, अने सुबाहुमुनि पांचशें साधुनुं वेयावच्च करे ठे. एवी गुरुना मुखथी यती प्रशंसा सांजलीने पीठ अने महापीठ, ए बे साधु मत्सर धरवा लाग्या जे आपना गुरु ए साधुउनाज गुणनुं वर्णन शुं करे ठे ? एवी ईर्ष्या करता हवा. अने माया कपटथी वधारे तप करवा लाग्या. अंतें आचार्यसहित पांचे जण चारित्र पाली तपस्याकरी ठेहले अनशन करी सर्वार्थसिद्धि विमाने पहोता. तिहांथी चवीने वज्रनाभनो जीव, श्रीआदिनाथ प्रथम तीर्थंकर थया अने

बाहुनो जीव चवी भरतचक्रवर्त्ती थयो. तथा सुबाहुनो जीव चवी बाहुब ली थयो. तथा पीठनो जीव चवी भरतचक्रवर्त्तीनी सुंदरी नामें भगिनी थ इ. तथा महापीठनो जीव बाहुबलीनी भगिनी थइ. ईर्ष्या करवा माटें मा यातपना प्रभावें स्त्रीवेद पाम्या ॥

भरतनो जीव, पांचशें साधुनी भक्ति करवाथी चक्रवर्त्तीनी पदवी पा म्यो. अने आ अवसर्प्पिणीमां प्रसादप्रतिष्ठा बिंबप्रतिष्ठाने विषे तथा संघ वीनां तिलकने विषे आदि करी अने बाहुबल पांचशें साधुनुं वेयावच्च कर वाथी अतुल पराक्रमी थयो. संग्राम करतां भरतचक्रवर्त्तीने पण हराव्यो, अने तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. तेमज ब्राह्मीयें पण श्री ऋषभदेव पासेंथी दीक्षा लीधी अने सुंदरी दीक्षा लेती हती. तेने भरतचक्रवर्त्तीयें रू पसुंदर जाणी स्त्रीरत्न करवा माटें दीक्षा लेवा न दीधी पण भरतदिग्वि जय करवा गया पछी सुंदरीयें श्रीऋषभदेवने पूछ्युं जे, स्त्रीरत्न मरीने क्यां जाय? भगवानें कह्युं के, छठी नरकें जाय. ते सांभली खेद पामी थकी साठ हजार वर्षपर्यंत आंबिल तप कर्युं तेथी शरीर डुर्बल थइ गयुं, भरत आव्या पछी डुर्बलतानुं कारण कुटुंबीयोना मुखथी सांभली सुंदरीने दीक्षा लेवानी इच्छा जाणी आज्ञा आपी, पोतें वैताढ्यथी स्त्रीरत्न लाव्या. अनु क्रमें पांचे जीव मोक्षें पहोता माटे वेयावच्चना एवां फल जाणी गुरुनुं वे यावच्च करवुं. ए सम्यक्त्वना त्रण लिंगनो बीजो अधिकार कह्यो.

इति श्रीतपागच्छीय शांतिचंद्रगणिशिष्य रत्नचंद्रगणिविरचित श्रीसम्यक्त्व रत्नप्रकाश नामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वलिंगत्र यस्वरूपनिरूपणनामा द्वितीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥ २ ॥

हवे दशप्रकारना विनय करवारूप त्रीजो अधिकार कहीयें छैयें.

॥ अरिहंत सिद्ध चेइय,सूएय धम्मेय साहुवग्गेय ॥ आयरिय उवज्झाए, पवयणे दंसणे विणउ ॥ १७ ॥ अर्थः—एक अरिहंतनो विनय, बीजो सिद्धनो विनय, त्रीजो चैत्यनो विनय, चोथो (सूएय के०) द्वादशांगी रूप श्रुतनो विनय, पांचमो धर्मनो विनय. छठो (साहुवग्गेय के०) सा धुवर्गनो विनय, सातमो आचार्यनो विनय, आठमो उपाध्यायनो विनय, नवमो प्रवचननो विनय अने दशमो (दंसणे के०) दर्शन एटले सम्यक् दर्शन तेनो (विणउ के०) विनय जाणवो ॥ १७ ॥

१ श्रीसीमंधरादिक वीश विहारमान तीर्थंकरनां नामस्मरणादिकें करी, तेमना चरित्र वांचवे करी, गुणस्तुति करवे करी, जे भक्ति करवी ते अरिहंतनो विनय जाणवो.

२ नमो सिद्धाणं ए पद गणवे करी सिद्धनी अवस्था ध्यायी पूजा करवे करी सिद्धनो विनय थाय.

३ चैत्योद्धार करवे करी,प्रसाद करावदे करी, बिंबप्रतिष्ठा,बिंबपूजा, बिंबने मल टालवे करी, सत्तरभेदें पूजा करवे करी, बिंबने राज्यभय, अग्निभय, जलभयादिकथी राखवे करी, चैत्यपुंजवे करी, चैत्यने चुंनादिकथी धोलवे करी एम अनेक प्रकारें चैत्यनो विनय जाणवो ॥

४ श्रुतलखाववे करी, पुस्तक साचववे करी,पुस्तकने शोधवे करी, ज्ञान भणवे भणाववे करी, पाठां पूंजणी रुमाल विटांगणा प्रमुख पुस्तकना उपकरण करवे करी, पुस्तकने अग्निभय जलभयादिकथी राखवे करी इत्यादिक अनेक प्रकारें श्रुतनो विनय थाय.

५ धर्मनी प्रशंसा करवे करी, मुग्धजनने धर्म पमाडवे करी, धर्मनी स्थापना करवे करी, पौषध सामायिक प्रमुख धर्म करवे करी, श्रावकना द्वादश व्रत पालवे करी, दशविध यतिधर्म पालवे करी धर्मनो विनय जाणवो.

६ साधुवर्गने अशनादिक आपवे करी,वातादिक विकारें तेलमर्दनादिक करवे करी,रोग उपने थके वैद्य तेडी लावी औषध कराववे करी,सन्निपातादिक रोगविशेषें आकरी चिकित्सा कराववे करी,परिश्रांत साधुने विश्रामण करवे करी,कांटा काढवे करी,ए रीतें विचित्र प्रकारें साधुवर्गनो विनय जाणवो.

७ आचार्य आवते थके तेमनी साह्मा जाववें करी, कर्पूर तथा सुवर्णादिकना पुष्पोथी पूजवें करी, ग्रीष्मऋतुने विषे विलेपन करवे करी, आचार्यने योग्य एवा शुद्धमान वस्त्रादिक वहोराववे करी, आचार्य आवे थके उना थावे करी, पुस्तक लखावीने आपवे करी, गुणप्रशंसा करवे करी इत्यादि अनेक प्रकारें आचार्यनो विनय जाणवो ॥

८ उपाध्यायनो विनय पण आचार्यनी पेठेंज जाणवो.

९ प्रवचननी प्रशंसा करवे करी, प्रवचननो उड्डाड टालवे करी, प्रतिष्ठादिक महोटा कार्य करवे करी, प्रवचनने दीपाववे करी, राजा तथा महन्यने प्रतिबोधवे करी इत्यादि अनेक प्रकारें प्रवचननो विनय थाय.

१० निःशंकितादिक गुणें करी शुद्धसमकित पालवाथी, नवा व्यवहारीयाने प्रतिबोधी तेने समकेत आपवे करी, सम्यक्त्वना भूषणनुं स्वरूप जाणीने तेने आदरवे करी तथा सम्यक्त्वना दूषणनुं स्वरूप जाणी तेने परिहरवे करी दर्शननो विनय जाणवो. ए दश प्रकारनो विनय जाणवो ॥

हवे चार गाथायें करी ए दशनुं स्वरूप समजावे छे.

॥ अरिहंता विहरंता, सिद्धा कम्मरकया सिवं पत्ता ॥ पडिमाउ चेइआइं, सुयं तु सामाइया ईयं ॥ १७ ॥ धम्मोचरित्त धम्मो, आहारो तस्स साहुवग्गत्ति ॥ आयरिय उवज्झाया, विसेस गुणसंपया तह ॥ १९ ॥ पवयणमसेस संघो, दंसण मिहंति इह सम्मत्तं ॥ विणउ दस्सएह्मिमेसि, कायव्वो होइ एवं उ ॥ २० ॥ भत्तिबहुमाणोवन्न, जणण नासण मवस्सवायस्सं ॥ आसायण परिहारो, विणउ संखेवउ एसो ॥ २१ ॥ अर्थः—(अरिहंता के०) अरिहंत ते कोने कहीयें जे (विहरंता के०) विहरमान तीर्थंकर सीमंधर प्रमुख जे कालें जे विचरता होय, तीर्थंकर नामकर्म उदय प्राप्त थयुं होय, समवसरणादिक ऋद्धि भोगवता होय, तेने अरिहंत कहीयें. यतः ॥ सत्तरिसयमुक्कोसं, जहन्न वीसम्मदस विहरंति ॥ जम्मंपइ उक्कोसं, वीस दस हुंति हु जहन्ना ॥ १ ॥ इति ॥

(सिद्धा के०) सिद्ध कोने कहीयें? के जे (कम्मरकया के०) अष्टकर्मनो सर्वथा क्षय करीने (सिवंपत्ता के०) मोक्ष नगरें पहोता तेने सिद्ध कहीयें ते " जिणअजिणतिछतिछा " ए गाथाथी पन्नर भेदें जाणवा.

३ (पडिमाउ चेइयाइं के०) चैत्य ते प्रतिमा जाणवी, ते प्रतिमाने बेसवानां जे घर तेनें पण चैत्य कहीयें ॥ यतः ॥ देवेसु कोडिसयं, कोडी बावन्नु लरक चउणवइ ॥ सह चउआलीसं, सत्तसया सिद्धि अन्नहिया ॥ १ ॥ लरकतिगं एगनउइं, सहस्स विसाहिया य तिन्निसया ॥ जोइसिय वज्जिऊणं, तिरिय जिणबिंब संखइमा ॥ २ ॥ तेरस कोडि सयाइं, गुण नउइ कोडि सद्धि लरकाई ॥ भवणपईणं मझे, जोइसिएसु य असंखा ॥ ३ ॥ कोडि सयाइ पनरस, कोडी बायाल लरक अडवन्ना ॥ लरका बत्तीसंपुण, असीइ अहियाउ सव्वग्गं ॥ ४ ॥ ए शाश्वती प्रतिमानुं मान जाणवुं. ज्योतिषना विमानो असंख्यातां छे, तिहां चैत्य तथा जिनप्रतिमा पण असंख्याती छे.

४ (सुयंतु के०) श्रुत तें वली (सामाइयं ईयं के०) करेमि भंते सामाइयं

थी मांमीने यावत् दृष्टिथी वाद पर्यंत जाणवुं. आचारांगादिक अगीयार अंग अने बारमो दृष्टि वाद, ए सर्व श्रुत जाणवुं ॥ १७ ॥

५-६ (धम्मो के०) धर्म ते (चरित्तधम्मो के०) चारित्रधर्म जाणवो बहो (तस्स के०) ते चारित्रधर्मनो (आहारो के०) आधार ते (साहुवग्गत्ति के०) साधुनो वर्ग छे इति एटले एम जाणवो. जे कारण माटें जेवारें कोइ पण साधु न पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण न पामीयें, अने जेवारें साधु पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण पामीयें ॥ यतः ॥ पुरिमंतिम अहंं, तरेसु तिबस्स नहि वुछेउ ॥ मप्तिवएसु सत्तसु, इतिय कालं तु वुछेउ ॥ १ ॥ चउनागं चउनागो, तिन्निय चउनाग पलिय चउनागो ॥ तिन्नेव य चउनागो, चउबनागोय चउनागो ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे ॥

७ (आयरिय के०) आचार्य ते जे ज्ञानाचारादिक पंचाचार पालवाने विषे तत्पर होय, बत्रीश गुणें करी बिराजमान सुविहित शुद्धप्ररूपक, सारणा, वारणा चोयणा पडिचोयणाने विषे तत्पर सांप्रत विजयमान,तपागछाधिराज श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकारहार हीर श्रीविजयदेवसूरीश्वर प्रमुख जाणवा ॥ यतः ॥ सम्मत्त नाण चरणा, पत्तेयं अहअह नेइज्ञा ॥ बारस्स नेउ य तवो, सूरि गुणा हुंति बत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा ॥ आचाराइ य अठउ,तहचेव दसविहो उ ठियकप्पो ॥ बारस तव छावस्सग, सूरिगुणा हुंति छत्तिसं ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे. ए छत्रीशीयो घणा प्रकारें छे.

७ (उवझाया के०) उपाध्याय ते जेनी पासें आवीनें सूत्र नणीयें, ते जाणवा. (तह के०) तिहां आचार्य अने उपाध्यायने विषे साधु थकी (विसेसगुणसंपया के०) विशेष गुण संपदा छे, माटें साधुथकी जूदा कह्या छे ॥ यतः ॥ पडिरूवो तेयस्सी, जुगप्पहाणंगमो महुरवक्को ॥ गंनीरो धीइमंतो, उवएसपरो य आयरीउ ॥ १ ॥ अपरिस्साविं सोमो, संगहसीलो अनिग्गह मईय ॥ अविकंचणो अचवलो, संपंत हियउ गुरू होई ॥ २ ॥ एवा श्रीआचार्य नगवान् तेना पदने जे योग्य होय,तेहने उपाध्याय पद देवाय. तेमाटें उपाध्याय पण एवाज गुणवंत जोइयें ॥ १ए ॥

ए (पवयण के०) प्रवचन ते (असेससंघो के०) अशेष एटले समस्त श्रीसंघनें कहीयें जेमाटें साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका, ए चारे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा पाले आज्ञायुक्त होय ते प्रवचन कहीयें ॥ यतः

॥ एगो साहु एगा, य साहूणी सावउ य सङ्ढीवा ॥ आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अहि संघाउ ॥ १ ॥ तो सगचूउ सूरि, डुप्पसहा साहुणीय फग्गुसिरी ॥ नाइलसङ्ढो सङ्ढी, सवसिरी अंतिमो संघो ॥ २ ॥ दसपालिय जियकप्पा, वस्सय अणुउंगदार नंदिधरो ॥ सययं इदाइनउ, बङ्ग तवो ड ह्ब तएू ॥ ३ ॥ गिहिवय गुरुत्त बारस्स, चउ चउ वरिसोकयहमो अंते ॥ सोहम्मि सागराऊ, होई तउ सिचिहि नरहे ॥ ४ ॥ सुयसूार संघ धम्मो, पुव्वएहे बिज्ञहीय गणिसायं ॥ निवविमलवाहणो सुहु,म मंति नयधम्म मज्ञएहे ॥ ५ ॥ वीसाणवास सहसा, नवसय तिमास पंचदिण पहरा ॥ इक्का घडिया दो पल, अरकर इगुयाल जिणधम्मो ॥ ६ ॥ इबं डुस्सम कालो, होइ इगवीस वास सहसेहिं ॥ डुस्सम डुस्सम कालो, एवइ माणोय नायव्वो ॥ ७ ॥ इति दीवालीकल्पे ॥ तेमाटें तीर्थंकरनी आज्ञा रहित जो घणोए संघ होय, तो पण तेने असंघ कहीयें. एटले टोलुं कहीयें.

१० (इबं के०) ए श्रीजिनशासनने विषे सिद्धांतना जाण पुरुषो छे, ते (दंसणमिछंतिसम्मत्तं के०) समकेतदर्शनने इछंति एटले वांछे छे,ते समकेत क्षायिकादिक पांच भेदें जाणवुं. जेमाटें जे शुद्धदेवने देवबुद्धियें, गुरुने गुरुबुद्धियें अने धर्मने धर्मबुद्धियें ग्रहण करे, तेने सूधुं समकेत कहीयें ॥

(विणउदस्सणहिमेसि के०) दशनो विनय यथायोग्य पणे जेहनो जेम करवो घटे, तेनो तेम विनय (कायव्वोहोइ के०) करवो होय ते (एवंतु के०) ए आगल कहेशे ते चार प्रकारें विनय करवो ॥ २० ॥

हवे चार प्रकारें विनयकरवो कह्यो, ते चार प्रकार कहे छेः—

एक (भत्ति के०) भक्ति करवे करी, बीजो (बहुमाणो के०) बहुमान करवे करी, त्रीजो (वण्णजणण के०) वर्णजनन ते प्रशंसा करवे करी,अने (नासणमवण्णवायस्स के०) अवर्णवादनुं नासण एटले टालवुं ते करवे करी एटले अवर्णवादने अणबोलवे करी,चोथो (आसायणपरिहारो के०) आशातनाना परिहारने करवे करी, (विणउसंखेवउएसो के०) ए विनय में शंक्षेपथकी कह्यो. बीजा ग्रंथोने विषे विस्तारें छे पण इहां अल्पमति तुछमति जीवोने संक्षेपें कहीयें तो समजे माटे संक्षेपें कह्यो ॥ २१ ॥

हवे ए चार भेदनां लक्षण कहे छेः—

भत्ति बहिं पडिवत्ति, बहुमाणो मणसि निब्भरापिई ॥ वण्णजणणं तु तेसिं,

अइसयगुण कित्तणाईहिं ॥ २२ ॥ उड्डाह गोवणाई, जणियं नासण मवण्ण वायस्स ॥ आसायण परिहारो, उचियासण सेवणाईहिं ॥ २३ ॥ अर्थः— (जत्तिबहिंपडिवत्ति के०) जे बाह्यप्रतिपत्ति करवी ते जक्ति कहीयें. जेम के उठी उन्ना थावुं. अशन,पान,खादिम,स्वादिमनो खप करी आणी आपवुं, पग धोवा, विश्रामणा करवी, तैलमर्दनादिक करवुं, औषध जैपज्य आणी आपवुं. इत्यादिक जेहने जे योग्य होय तेनी तेप्रमाणें जक्ति करवी. ते बाह्यप्रतिपत्ति जक्ति कहीयें ॥ यतः ॥ न देवपूजा न च पात्रदानं, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयारण्यविलापतुल्यम् ॥ १ ॥ इति ॥

२बीजो (बहुमाणोमणसिनिप्नरापीई के०) बहु मान ते मनसि एटले मनने विषे निर्नर अंतरंग प्रीति राखवी केम के बहुमान विना जे कांइ करवुं ते सर्व निरर्थक जाणवुं ॥ यतः ॥ आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोसि जक्त्या ॥ यातोस्मि तेन जनबांधव डुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति न जावशून्याः ॥ १ ॥

३ (तु के०) वली (तेसिं के०) तेनुं एटले पूर्वोक्त अरिहंतादिक दशेनुं (वण्णजणणंतु के०) वर्ण जनन एटले प्रशंसा करवे करी,श्रीजिन शासननी दीप्ति करवी (अइसयगुणकित्तणाईहिं के०) अतिशय गुणते जे मांहे जे दीप्ता गुण होय तेना कीर्तनादिकें करी दीपावी देखाडवा ॥यतः॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलनबोहियत्ताए कम्म पकरेंति तं जहा ॥ अरिहंताणं वन्नवयमाणे, अरिहंत पन्नत्तस्स धम्मस्स वन्नवयमाणे, आयरियउवद्यायाणं वन्नवयमाणे, चाउवन्नस्स संघस्स वन्नवयमाणे, विवक्कतवबंनचेराणे देवाणं वन्नवयमाणे ॥ २२ ॥ तथा

(उड्डाहगोवणाई के०) उड्डाहने गोपवादिकें करी विनय थाय . (जणियं के०) कह्युं ढे एटले श्रीजिनशासननो उड्डाह सर्वथा ढाकवो प्रगट न करवो कदापि कोइवारें प्रगट थयो होय तो पण टालवो ॥ चेइय दव्व विणासे, इसिघाय पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थ मूलग्गी बोहिलान्नस्स ॥ १ ॥ तथा (नासण मवण्णवायस्स के०) अवर्णवादनुं नासण एटले टालवुं सर्वथा अवर्णवाद न बोलवो ॥ कहंणं जंते किंजीवा देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो नवंति. गोयमा जे इमे

य पडिणिया, उवज्झाय पडिणिया, गण पडिणिया, संघ पडिणिया, आयरिय उवज्झायाणं अयसकरा, अवन्नकरा, अकित्तिकरा, बहुहे असप्पावुप्पावणाहिं मिछत्ताभिनिवेसेहिय अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा, बहुहिं वासाइं सामण्णपरियाय पाउणंति पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कमितिए सुवा तिसागरोवम ठितिएसुवा तेरससागरोवम ठितिएसु वा ॥ इति नगवत्यंगे ॥

४ (आसायणपरिहारो के०) आशातनानो परिहार करवो, पूर्वोक्त अरिहंतादिक दशनी आशातना न करवी, तेमां जेहनी जेवी रीतें आशातना लागती होय तेनी तेवीरीतें आशातना करवानो परिहार एटले त्याग करवो. जेम जिनमंदिरनी जघन्यथी तांबूलादिक दशआशातना तथा उत्कृष्टी खेल आदिक चोराशी आशातना टालवी, तथा १ अरिहंताणं आसायणाए २ सिद्धाणं आसायणाए ३ आयरियाणं आ० ४ उवज्झायाणं आ० ५ साहूणं आ० ६ साहूणीणं आ० ७ सावयाणं आ० ८ सावियाणं आ० ए देवाणं आ० १० देविणं आ० ११ इहलोगस्स आ० १२ परलोगस्स आ० १३ केवलिपन्नत्त धम्मस्स आ० १४ सदेव मणुआ सुरलोगस्स आ० १५ सव पाणनूअ जीव सत्ताणं आ० १६ कालस्स आ० १७ सुयस्स आ० १८ सुयदेवयाए आ० १ए वायणायरियस्स आ० ॥ २० जंवाइद्ध आ० २१ वच्चामेलियं आ० २२ हीणरकरं आ० २३ अच्चरकरं आ० २४ पयहीणं आ० ५ विणयहीणं आ० २६ जोगहीणं आ० २७ घोसहीणं आ० २८ सुदिन्नं आ० २ए दुठुपडिछियं आ० ३० अकाले कउ सद्याउ आ० ३१ ाले न कउ सद्याउ आ० ३२ असद्याए सद्यायं आ० ३३ सद्याए न ज्ञायं आ० ए तेत्रीश आशातना जाणवी. तथा गुरु संबंधिनी तेत्रीश ाशातना जे नाष्य सूत्रादिकने विषे कही बे, ते पण त्यागवी ॥ यतः ॥ ासायण मिछत्तं, आसायण वज्जणाउ सम्मत्तं ॥ आसायणा निमित्तं, वइ दीहं च संसारे ॥ १ ॥

हवे ए आशातनानो परिहार केम करवो? तें कहे बेः—(उचियासणसे णाईहिं के०) उचित एटले योग्य एवा आसनने सेवनादिकें करी करवो यतः ॥ वंदंतिजिण दाहिण, दिसिठिया वाम पुरिस दिसि नारी ॥ नवकर

जहन्नु सहि,कर जिठ मक्कुग्गहो सेसो ॥ तथा ॥ चउदिसि गुरुग्गहो इह,अहु ठ तेरस करे सपर परके ॥ अणनुन्नाय ससबा,न कप्पए तब पविसेउं ॥ २३॥

॥दसन्नेय विणय मेयं, कुणमाणो मणुवोवि गयमाणो ॥ सद्दहइ विणय मूलं, धम्मंति विसोहए सम्मं ॥ २४ ॥ अर्थः—(दसन्नेयविणयमेयं के०) ए दश नेदनो विनय ते प्रत्यें (कुणमाणो के०) करतो थको एवो (म णुवो के०) मनुष्य उत्तम नव्यजीव ते कहेवो होय? तोके (विगयमाणो के०) विगतमान एटले गयुं ठे अनिमान जेनाथकी एवो होय ॥ यतः ॥ कोहो पीई पणासेइ, माणो विणय नासणो ॥ मायामित्तिणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥ १ ॥ तथा ॥ मर्द्दयमानमत्तगजदर्प्पी, विनयसरीरविना शनसर्प्पी ॥ क्ष्णोदर्प्पहेषवादनोपी, यस्य न तुल्यो नुवनेऽकोपि ॥ २ ॥ ए आमराजाने अनिमान टालवा माटे बप्पनट्टसूरिनुं कहेलुं वाक्य ठे ते संबंध बप्पनट्टसूरिना प्रबंधथकी जाणवो ॥

ते पुरुष (विणयमूलधम्मं के०) विनय ठे मूल जेनुं एवो जे धर्म तेनें (सद्दहइ के०) सर्द्दहे (इति के०) ए प्रकारें (सम्मं के०) समकेत प्र त्यें (विसोहए के०) विशुद्ध करे निर्मल करे ॥ यतः॥ इणमेव निग्गंथ पा वयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउ असंसद्धं सल्लंकत्तणं सिद्धिम ग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितह मवि संधिसव्वडुरकपहीणम ग्गं इबठिया जीवा सिद्धंति बुझंति मुच्चंति परिनिग्घायंति सव्वडुरकाणमंतं कर ति. एम सम्यक्त्व शुद्ध करे. श्रीजिनशासननेविषे विन यमूलधर्म जाणवो.

ग्रंथांतरें बावन प्रकारें विनय कह्यो ठे ॥ यतः ॥ तिब्रयर सिद्ध कुलग ण, संघ किरिय धम्म नाण नाणीणं ॥ आयरिय गुरुवज्झाय, गणीणं तेर स पयाइं ॥ १ ॥ अणासायणाय नत्ति, बहुमाणो तहय वन्नु संजलणा ॥ तिब्रयराइ तेरस, चउगुणा हुंति बावन्ना ॥२॥ इति प्रवचनसारोद्धारे ॥२४॥

हवे विनय उपर कथा कहे ठे. आ नरतक्षेत्रने विषे कुसुमनामा नग र ठे, तिहां जेम अलका नगरीने विषे धनद तथा जेम देवलोकने विषे इंद्र अने आकाशने विषे चंद्रमा शोने,तेम ते नगरीने विषे धनद एवे ना में राजा राज्य करे ठे. तेने पद्मावती एवे नामें स्त्री ठे, ते स्त्री नर्त्तार सं सार संबंधी सुख नोगवतां घणे मनोरथें तेमने घेर पुत्रनो जन्म थयो, ते नुं नुवनतिलक एवुं नाम दीधुं. पठी ते कुमर अनुक्रमें जेम शुक्लपक्षनो

चंद्रमा वधे,तेम मह्रोटो थयो. तेने निशालें नणवा मोकल्यो ते सर्व. क लामां प्रवीण थयो, राजधुरंधर थयो.

एकदा प्रस्तावें राजा राज्यसना नरी बेठो छे. एवामां सुवर्णदंम हस्त धार पोलीयो आवी विनति करवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! रत्नस्थलपुर नो स्वामी अमरचंद्रराजा छे तेनो प्रधान आव्यो छे, ते तमारा दर्शन वां छे छे माटें शी आज्ञा आपो छो ? राजायें कह्युं एने तेडी लावो. प्रतिहा र तेडी आव्यो. प्रधानें प्रणाम करी विनति करी के हे स्वामी! रत्नस्थल पुरनो स्वामी अमरचंद्रराजा तेहने यशोमती एवे नामें पुत्री छे, ते तमारा पुत्र नुवनतिलक कुमरना गुण सांनली तेनी ऊपर गुणानुरागिणी थइ छे. अने कहे छे के परणुं तो नुवनतिलक कुमरनेज परणुं अन्यथा बीजाने पर णुं नहीं माटें तमने अमरचंद्रराजायें विवाहनी विनति करवा मुजने मो कल्यो छे, ते वात सांनली राजा हर्ष पाम्यो अने चतुरंगिणी सेना सहित तथा कंठरव एवे नामें सामंतसहित नुवनतिलककुमरने अमरचंद्रराजाना प्रधानपुरुषनी साथें मोकलतो हवो. ते अनुक्रमें सिद्धपुरनगरनी नजीक जइ उतस्या, लोक फेरा तंबु दीये छे, जमवानी सज्जाइ करे छे, एवामां अकस्मात् ते कुमर पोताना रथ उपरथी ढली पड्यो अने मूर्बा आवी गइ. पाषाणशिलानी पेठें अचेतन थइ पड्यो. तेवारें त्यां हाहाकार थइ रह्यो. तिहां अनेक वैद्य मांत्रिक तांत्रिक मल्या, तेणें घणा उपचारो कीधा, पण ते सर्व उषर नूमिकायें जेम वर्षाद निःफल थाय, तेनी पेरें निःफल थया. कंठरव सामंत घणुंज दुःख धरवा लाग्यो ॥यतः॥ कम्माणंविइजीवा, ए गइ तह पुग्गलाण परिणामं ॥ सव्वणु चेव जाणइ, अहवा सव्वणुसरि सावि ॥१॥ नच्चंता कीडंता, कम्मं कुवंति निग्घणा जीवा ॥ पच्छा तस्स वि वागा, रुअंति कलुणं महा दुस्का ॥ २ ॥

एवामां नाग्ययोगें ते उद्याननें विषे कोइ केवलज्ञानी साधु पधास्या, दे वतायें सुवर्णकमल रच्युं, तेनी ऊपर बेसी धर्मदेशना आपे छे. ते सांनली राजा प्रमुख सर्वलोक तेमने वांदवा गया अने कंठरव सामंतपण कुमरनें तेडी तिहां केवली पासें आव्यो. पंचानिगम साचवी देशना सांनलवा बे ठा. देशनामां केवलीयें कर्मस्थितिनो विचार कह्यो, तेवारें कंठरव सामंतें

पूछ्युं के हे भगवन् ! आ भुवनतिलककुमरें श्यां कर्मकीधां छे ? के जेने योगें एने अकस्मात् महारोग उपनो ?

तेवारें केवलीभगवान् ते कुमरना पाछला भवनी कथा कहेवा लाग्या धातकीखंमना भरतक्षेत्रने विषे भुवनागार नामें नगर छे. तिहां एकदा प्रस्तावें आचार्य घणा साधुना परिवारें परवस्था थका पधास्था. ते गछमांहे वासव एवे नामें शिष्य घणो अविनीत छे, मुनिराजरूप हंसनी मांहे बगला सरखो छे, संक्लिष्ट अध्यवसायवालो महाकषायी विपरीत शिक्षित अश्वनी पेरें छे, तेने एकवार गुरुयें कह्युं के हे महानुभाव ! तमें साधुउनो विनय करो, जेथी तमने रुडुं थाय ॥ यतः ॥ विणउ आवहइ सिरी, लहइ विणउ ज सं च कित्तिं च ॥ न कयाइ डुव्विणीउ, सुकज्ज सिंधि वियाणाइं ॥ मुलाउ खंधप्पभावो डुमस्स, खंधाउ पछा समुविंति साहा ॥ साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तउसे पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥ एवं धम्मस्स विणउ,मूलं परमो से मुखो ॥ जिणकित्ति सूअं सिंधि, निस्सेसं चाभिगछइ ॥ २ ॥

हवे ते शिष्य गुरुनी शिक्षा सांभली तेवारें कोपें बलतो थको बोलवा लाग्यो, के तमें एकला मनेज शुं कहो छो ? बीजा अटला बेठा छे. तेने केम नथी कहेता ? एकला महारी पछवाडेज काछडो बांधी लाग्यो छो? इत्यादि वचन बोलतो प्रद्वेष वहेवा लाग्यो. साधु ऊपर डुष्टात्मा थको साधुने मारवाने अर्थे उठयो, तेने बीजे साधुयें वारी राख्यो. पछी ते प्रद्वेषें करी पाणिपात्रमांहे तिलपुट विष नाखतो हवो. ते विष नाखीनें वली बिहीतो थको उठीने नाशि गयो, मुग्ध यति पाणी पीवा लाग्यो, तेने शासनदेवतायें वारी राख्यो, अने कह्युं के हे साधु ! तमें ए पाणी म पीयो. एमां पहेला पापीयें विष नाख्युं छे, पछी साधुयें ते पाणी जयणायें परठव्युं.

हवे ते वासव नामें कुशिष्य जे पोतानी मेलेंज भय पाम्यो थको नाशी गयो हतो, ते अरण्यने विषे भूख तृषा खमतो दावाग्निमांहे बल्यो, रौद्रध्यानें बाल मरण करी सातमी नरकपृथ्वीने विषे तेत्रीश सागरोपमने आउखे नारकी थयो ॥ यतः ॥ संतिमेयं डुवेठाणं, अरकाया मारणंतिया ॥ अकाम मरणं चेव, सकाम मरणं तहा ॥ १ ॥ बालाणं आकामं तुमा, मरणं असतीभवे ॥ पंमियाणं सकामं तु, उक्कोसेणं सतीभवे ॥ २ ॥ इति श्रीउत्तराध्ययनसूत्रे ॥

हवे सातमी नरकथी चवी मत्स्यादिक तिर्यंचादिकना माहा ञूंमा नव ञोगवतो थको साधुघातनी मनसानुं कर्म जे हतुं, तेने अकामनिर्ज्जरायें क्षय प्राय करतो करतो हमणां धनदराजानो पुत्र ञुवनतिलक एवे नामें थयो छे. ऋषिघातनुं कांइक कर्म शेष रह्युं हतुं, ते हमणां उदय आव्युं. तेमाटें अकस्मात् रोग उपनो, जेमाटें कर्म तथा रण ए बे सरखांज छे. जेम मागनार प्रस्ताव पामे अवश्य रण मागे, तेम कर्म पण प्रस्ताव पामे अवश्य उदय आवेज. तेवारें कुमरें केवलीप्रत्यें पूछ्युं, के महाराज ! ए महारो रोग क्यारें उपशम थाशे ? तेवारें केवलीयें कह्युं के तें कर्मनो घणो ञाग ञोगव्यो, माटें हवे तरत क्षय थइ जाशे, पण तहारें हजी बीजां कर्म घणां छे, माटें ते तो जो तुं दीक्षा ले, तोज क्षय थाय. तिहां पूर्वञव सांञलवाथी कुमरने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी वैराग्य पाम्यो. तेवारें कंठरवादिक सामंतोनी साथें दीक्षा लीधी. पहेले ञवें अरिहंतादिक दशेनी आशातना करी हती, तेहनी आलोयणाने अर्थें श्री अरिहंतादिक दशेनो विनय करवो अंगीकार कर्यो.

हवे दीक्षा लीधी सांञलीने यशोमती मूर्छा खाइ ञूमियें पडी तेने सखीयें शीतलोपचारें करी सावधान करी तेवारें विलाप करवा लागी, तेने सखीयें कह्युं के चिंता म कर. ए वर गयो तो जवा दे. अमें तुऊने बीजो राजकुमर जोइने पाणिग्रहण करावी देशुं. तेवारें यशोमती बोली के हे सखीयो ! तमें ए असत्य वचन म कहो. महारे तो आ ञवमां पति पण एज अने गुरु पण एज छे, माटें जो महारो पति न थयो, तो हवे हुं एने महारो गुरु करीश. एवुं कही ते कुमरी, माता पितानी आज्ञा मागी, दीक्षा लेइ विकृष्ट तपश्चर्या करती विचरवा लागी.

हवे कुमरनो परिवार पाछो वली गयो, तेणें जइ कुमरना माता पितानी आगल सर्व वात कही, ते सांञली कुमरना विरहथी राजा डुःख पाम्यो, अने दीक्षा लीधी, तेमाटें हर्ष पण पाम्यो ॥ यतः ॥ ते धन्ना ते साहू, तेसिं पसंसा सुरेहिं किज्जंति ॥ जेसिं कुडुंब मज्झे, पुत्ताई लिंति पवज्जं ॥१॥ ते धन्ना ते साहु, पवज्जंताण पुत्तपुत्तीणं ॥ वीवाहम हुसमिवं, कुणंति पवज्जमहिमं जे ॥

हवे ते ऋषि समस्तसाधुनुं एकाकीपणे वेयावच्च करवा लाग्यो, तेनी केवलज्ञानी साधु पण प्रशंसा करवा लाग्या. जेम ञरतचक्री अने बाहुबलीयें

साधुना विनयवैयावच्च कीधां, तेम एणें दशेनुं वेयावच्च कर्युं तेमां वली सा धुनुं विशेषथी विनय वेयावच्च करवा लाग्यो. तेम वली घणा भव्यजीवोने केवलकर्मनी निर्जरा थवाना कारण माटें पोतानाज पूर्वला भवना करेलां कर्मनी धर्मकथा उपदेशमां संभलावीने प्रतिबोध देतो हवो. ते साधु जे कांइ धर्मोपदेश आपे तथा तप,जप, विनय वेयावच्चादिक जे कांइ करे, ते सर्व कर्म निर्जरा हेतुयें करे, परंतु कांइ इह लोकना स्वार्थमाटें करे नहीं, जे माटें जे कोइ साधु इह लोकना स्वार्थें धर्मोपदेश करे,ते गृहस्थें सांभलवा पण नहीं ॥ यतः ॥ से भिरकूधम्म किट्टेमाणे, णो अन्नस्स हेउ धम्मं आ इरकेजा. णो पाणस्स हेउ धम्मं आइरकेजा. णो वत्थस्स हेउ धम्मं आइ रकेजा. णो लेणस्स हेउ धम्मं आइरकेजा. णो सयणस्स हेउ धम्मं आइ रकेजा. णो अन्नेसिविरुवाईणं कामभोगाणं हेउ धम्म माइरकेजा. णो अगिलाए धम्म माइरकेजा. नन्नछ कम्मं निज्जरठियाए धम्म माइरकेजा. इहखलु तस्स भिरकूस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उठाय वीराअस्सि धम्मे समुठिया ते तस्स भिरकुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उठाणेणं उठाय ते वीराएवं सव्वोपगता ते एवं सव्वोविरता ते एवं सव्वोवसंता परिनि वुढा ॥ इति द्वितीयसूत्र कृतांगे ॥

हवे ते भुवनतिलक साधु निरपेक्षपणे दश प्रकारें विनय करी निरपेक्ष पणे तप करी, निरपेक्षपणे धर्मोपदेश आपी, पादोपगमन अणसण क री, सकलकर्म क्षय करी. आठ लाख पूर्व गृहस्थपणे, बहोंतेर लाख पूर्व साधुपणे, सर्व एंशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मोक्षें पहोता. ए दश विनय नी उपर भुवनतिलक साधुनो दृष्टांत सांभलीने भव्यजीवें पण दश प्रकार नो विनय करवो. एज सांभलवानो सार छे. इति श्रीतपोगच्छाधिराज वि जय देवसूरीश्वर विजयमान राज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिविरचि ते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि श्रीसम्यक्त्वप्रकरणबालावबोधे दशप्रका रविनयस्वरूप वर्णननाम्ना तृतीयोधिकारः संपूर्णः ॥ ३ ॥

हवे त्रण शुद्धिनुं द्वार कहे छे.

॥ मण वाया कायाणं, सुद्धी सम्मत्त सोहिणी तछ ॥ मण सुद्धि जिण जिणमय, वज्ज मसारं मुणइ लोयं ॥ २५ ॥ अर्थः—प्रथम मन प्रशस्त राखवुं अने दर्शनना निःशंकितादिक आठ आचार छे, ते मनें करी पाल

वा. तेने (मण के०) मनःशुद्धि कहीयें. अने एज आठ आचार जे प्रश स्त वचनें करी पाले, ते (वाया के०) वाचा एटले वचनशुद्धि जाणवी. तेमज प्रशस्त कायायें करी पाले, ते (कायाणं के०) कायसंबंधी (सुद्धी के०) शुद्धि जाणवी ॥ यतः ॥ मनः संवृणु हे विद्व, न्नसंवृतमना यतः ॥ याति तंदुलमत्स्योऽङाक्, सप्तमी नरकावनिम् ॥१॥ प्रसन्न चंद्रराजर्षे, मनः प्रसरसंवरौ ॥ नरकस्य शिवस्यापि, हेतुभूतौ क्षणादपि ॥ २ ॥ सार्थं निर र्थकं वा यन्, मनः सुध्यानयंत्रितम् ॥ विरतं दुर्विकल्पेभ्यः, पारंगांस्तां स्तुवे यतीन् ॥ ३ ॥ इति अध्यात्मकल्पद्रुमे ॥

ए त्रणे शुद्धि कहेवी ले ? तोके (सम्मत्तसोहिणी के०) सम्यक्त्वने शोधनारी ले. जो मनःशुद्धि होय तो समकेत शुद्धि थाय ते विना शुद्धि थाय नहीं. जेम के अनंतानुबंधीया चार कषाय क्षय थई जाय, तो जीव समकेत पामे, अने वली पाछुं समकेत जाय, तेवारें पण अनंतानुबंधीया ना उदयथकी जाय, जेमाटें अनंतानुबंधीया चार कषाय, ते समकेतने घात करे, अने अप्रत्याख्यानीया चार कषाय ते देशविरतिने घात करे, तथा प्रत्याख्यानीया चार कषाय ते चारित्रने घात करे, तथा संजलना चार कषाय ते यथाख्यात चारित्रने घात करे, तेमाटें जिहां अनंतानुबंधी या चार कषाय होय, तिहां समकेत न होय तेथी त्यां मनःशुद्धि कहेवा य नहीं. केम के मनःशुद्धि जे ले, ते समकेतनी शोधनारी ले.

(तब के०) तिहां ते सम्यक्दृष्टि जीव (मणसुद्धि के०) मनःशुद्धि करीज (जिण के०) श्रीवीतरागदेव अने (जिणमय के०) जिनमत ते श्री वीतरागदेवें प्ररूप्यो जे धर्म ए बेहुने (वज्ज के०) वर्जीनें ते विना सर्व लोक प्रत्यें (मसारं के०) असार करी (मुणइ के०) जाणे एटले जगत मांहे सार ते एक श्रीवीतरागदेव अने बीजो श्रीवीतरागनो प्ररूपेलो धर्म ए बे वानां ले बीजो सर्व आलपंपाल ले ॥ यतः ॥ श्रीवीतरागान्नपरोस्ति देव, स्तद्धर्मतोनास्त्यपरोहि धर्मः ॥ सम्यक्त्वलाभान्न परोस्ति लाभो,मोक्षा भिलाषान्न परोभिलाषः ॥१॥ तथा अयसाउसो एस अट्ठे एसपरमट्ठे एस्से अणट्ठे। इति द्वीतियांगे ॥ २५ ॥

हवे मनःशुद्धि उपर नरवर्मराजानो दृष्टांत कहीयें ठैयें. आ जंबूद्वीप मांहेला दक्षिणार्द्ध भरतने विषे विजयवती नामें नगरी तिहां नरवर्म नामें

राजा राज्य करे छे, तेने रतिसुंदरी नामें प्राणवल्लना स्त्री छें, तेनी साथें विषयसुख भोगवतां तेने हरिदत्त नामें पुत्र थयो. हवे राजाने महाबुद्धिमान् एवा मतिसागर प्रमुख घणा प्रधान छे, तेमने राजभार सोंपी राजा पोतें प्रतिदिन पंडितनी साथें गोष्टि करे ॥ यतः ॥ गीतनाद विनोदेन, कालो गछति धीमताम् ॥ व्यसनेन हि मूर्खेण, निद्रया कलहेन वा ॥ १ ॥

एकदा प्रस्तावें राजा सजाभरी बेठा छे, घणा पंडितो आव्या छे तेनी साथें मंत्रीश्वरो धर्मवाद करे छे. तेमां एक बोल्यो के, दाक्षिण्य औदार्यथी परोपकार करवो, लोक विरुद्ध वातनो त्याग करवो, ते धर्म छे. बीजो बोल्यो वेदमां कह्या प्रमाणें अग्निहोत्रादिक कर्मोनुं अनुष्ठान करवुं ते धर्म छे.त्रीजो बोल्यो जे,कुलक्रमागत चाल्यो आवे छे,ते धर्म जाणवो.चोथो नास्तिक बोल्यो के,धर्म नथी, अधर्म नथी, स्वर्ग नथी, नरक नथी, परभव नथी, पुण्यपापनो भोक्ता नथी, स्वर्ग नरकनो भोक्ता कोइ नथी, एवी रीतें नाना प्रकारना वाद चाल्या, पण ते मांहेली एके वात राजाना चित्तनेविषे बेठी नहीं, जे कारणमाटें मिथ्यावाद चर्चा खमे नहीं. कोड्वाना लोटना मांडा थाय नहिं. कह्युं छे के ॥ ताण्यूं जे खमे नहीं ताणीयें तो त्रूटी जाय ॥ मांडा थाय तो गोधूमना थाय केम के ते ताण्युं खमे. पछी राजा विचारे छे जे ए सहु कोइ पोतपोताने मन मान्यो धर्म कहे छे. ए सर्व मिथ्यावाद छे. पण महाराचित्तें प्रतिजासतो नथी. ए सर्व कोड्वाना लोट सरखो छें. अने जे सम्यक् वाद छे ते गोधूमनी पडसूदी बराबर छे. एम राजा धर्मना संदेहमां हे पड्यो छे. पण तेमांनो कोइ जासतो नथी. एहवी राजाने मार्गानुसारिणी मति आवी छे तेमतिथी तत्त्वाजिनिवेश थाय,ते तत्त्वाजिनिवेशथी रूडी चेष्टा थाय ॥ यतः ॥ मग्गाणुसारिणोखलु, तत्ताजणिवेसउ सुहा चेव ॥ होइ सम्मता चेठा, असुहाविय निरणुबंधंति ॥ १ ॥ इति यात्रापंचाशके ॥

हवें राजा शुद्धधर्मना कथकनी वांछा करे छे, एवामां प्रतिहारें आवी विनति करी के हे स्वामिन्! तमारो आ जन्मनो मित्र मदनदत्तशेठ छे, ते सिंहद्वारें आवी उजो रह्यो छे, तमारा दर्शनने वांछे छे. राजायें कह्युं के तेने तेडी लावो. प्रतिहार तेडी आव्यो. शेठ पण राजाने प्रणाम करी राजाना आपेला आसनें बेठो. राजायें पूछयुं एटला वर्ष कया कया देशने विषे तमें परिभ्रमण कीधुं? अने केटलुं धन उपार्ज्युं? तेवारें मदनदत्त

बोल्यो के, हुं घणा देशोने विषे जम्यो अने तमारे प्रसादें घणुं धन पण पेदा कीधुं, तथा वली आ एकावली हार पाम्यो छुं, ते हे राजन्! तमें जूउ. ते हारने देखी राजा चमत्कार पाम्यो, अने पूछतो हवो के, देवताने पहेरवा योग्य आ हार तुजने केम मल्यो? ए वात म्हारी आगल कहे. तेवारें मदनदत्त कहेतो हवो के, वातनो रस हुंकार छे अने वढवाडनो रस तुंकार छे, तथा तिरस्कारनो रस थुकार छे, निंदानो रस रकार, मित्राइनो रस हेकार, वेदनो रस ॐकार, यंत्रनो रस क्रोंकार छे, माटें सावधान थइ हुंकार आपो, तो वात कहुं. ते प्रमाणें राजायें कबूल करवाथी मदनदत्त कहेवा लाग्यो. हे स्वामी! तमारी पासेंथी शीख मागी चाल्यो, ते पृथ्वीमंमल जोतो कुपदिका नामें अटवीमां गयो, तिहां तृषा लागी गलुं तथा तालवुं सूकावा लाग्युं, पण पाणी किहांय मल्युं नहिं.

एवामां सकलगुणना आगार, क्षमासागर, अनेक देवतायें परवस्या देशनामृतें करी जव्यवृक्षने सींचता एवा श्रीगणधरनामा सूरिने में दीठा, तिहां में एकावलीहार तथा बीजां पण केटलाएक दिव्यआजूषणें शोजित अने पोतानी देवी सहित एवो एक देवताने धर्म श्रवण करतो दीठो,तेवारें हुं सूरिने वांदी देशना सांजलवा बेठो. मने परम हर्ष ऊपनो. तिहां ते देवता पोताना जाइनी पेरें प्रीतियें करीने म्हारी साहामुं जोइ रह्यो, अने निर्मलबुद्धियें करी परमानंद पामीने आचार्यप्रत्यें पूछवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! आ पुरुष दीठाथी मुजने प्रीति उपजे छे, तेनुं कारण शुं?

तेवारें आचार्य कहेवा लाग्या,के हुं तुजने ए वात कहुं छुं ते तुं एकाग्र मनथी सांजल. कोसंबी नगरीयें विजयनामें राजा राज्य करे छे,तेने एक विजय बीजो विजयंत, एवे नामे बे पुत्रो छे. तेमनी बालपणामांज जननी मृत्यु पामी छे तेथी बेहु जाई धावमातायें धवरावता थका म्होटा थया. यौवन पाम्या, तेवारें राजायें युवराज पदवी आपवानी मरजी करी.

एकदा ते बेहु जाई क्रीडा करवाने उद्यानमां गया छे, एवामां उरमान मातायें विचार्युं जे आ बे छोकराने मारी नाखुं, तो म्हारा छोकराने राज मलशे. नहिंका ए म्होटा छे, तेथी राजना मालेक थशे. एम विचारी छल पामीने लाडुआमां विष जेली धावनी साथें मोकल्या, ते लाडु निष्कपट पणे बेहु जाइयें खाधा, तेथी विषव्याप्त थया, तेने योगे मूर्छा आवी गइ,

परंतु एना भाग्यनेयोग्यें तिहां कोइ दिवाकर नामा ऋषि निश्चल ध्यानक रीने अध्ययन करवा बेठा छे, तेना प्रभावथी जेनी ध्वजानेविषे गरुड छे एवो गुरुडध्वज नामें देवता त्यां आव्यो, एकाग्रपणे अध्ययन सांभलता थकां ते गुरुड देवताना महिमाथी बेहुभाइने विष उतरी गयुं. बे भाइ सावधान थया, तेवारें दिवाकर साधुनें जइ वांद्या, तेमने गुरुडदेवतायें कह्युं के साधुयें गुरुडोपपात अध्ययन गण्युं,तेना महात्म्यथी हुं आव्यो,तेथी तमारुं विष उतरी गयुं, तमें जीवता रह्या. नहींकां उरमान मातायें आपेला विषथी मरण पामीने दुर्गतियें जवुं पडत. माटे आ साधुनो उपकार मानो. ते कुमरोने देवताना वचनथी अने साधुना उपदेशथी वैराग्य उपनो तेथी दीक्षा लीधी. घणा वर्षपर्यंत चारित्र पाली तपश्चरणा करी अंतें समाधि मरण पामी सौधर्मदेवलोकने विषे विद्युत्प्रभ अने विद्युत्सुंदर एवे नामे देवता थया.

विद्युत्प्रभ तिहांथी चवीने विजयवती नगरीने विषे मदनदत्त एवे नामें व्यवहारीयानो पुत्र थयो, पूर्वभवना अभ्यास माटें ए मदनदत्तने देखवाथी तुजने आनंद उपजे छे ॥ यतः ॥ नयणे कहिज्ज पेमं, नयणे दोसंपि परिफुडं कहइ ॥ नयणे कहिज्ज कामं, नयणे वेरग्गमुवदिसइ ॥ १ ॥

पछी ते देवता ए वृत्तांत सांभलीने हर्ष पाम्यो थको एकावली हार महारा कंठमां पहेरावतो हवो. वली ते देवता साधुप्रत्यें पूछतो हवो के, हे स्वामी! मुजने आलस घणुं आवे छे तेनुं शुं कारण हशे? महारो कल्पवृक्ष प्रकंपायमान थाय छे,महारां वस्त्र रजें करी मलिन थाय छे. तेवारें साधुयें कह्युं के तहारुं आयुष्य हवे शेष अल्प रह्युं छे. देवतायें पूछ्युं के हुं चवीने क्यां उपजीश? साधुयें कह्युं तुं विजयवती नगरीयें नरवर्मराजाने घेर हरिदत्त एवे नामें पुत्र थाइश. तिहां तुं मदनना कंठनेविषे एज हार देखीने प्रतिबोध पामीश. एवुं साधुनुं वचन सांभली देवता हर्षवंत थयो थको साधुने वांदीने स्वर्गे गयो.

पाछलथी मदनदत्तें साधुने पूछ्युं, कहो स्वामी! ए हार देवता क्यां थकी पाम्यो? तेवारें साधु कहेवा लाग्या के,पूर्वें चमरचंचा राजधानीनेविषे नवो चमरेंद्र उपनो, तेणें अवधिज्ञानें जोयुं, तो पोताना मस्तक उपर सौधर्मेंद्रनुं सिंहासन दीठुं; तेवारें अमर्ष ऊपनो जे महारा मस्तक ऊपर कोण चढी बेठो छे? तेने लोकपालादिक कहेवा लाग्या के, स्वामी! ए सौध

मेंद्र छे. अनादिकालनी ए स्थिति छे, कोइथी टली जाय नहीं. इंद्रें कह्युं, पूर्वें सर्वे इंद्र असमर्थ थया. कोइ टाली शक्यो नहीं,पण हुं टालीश. एम कही ते रीशने वशें सर्वेनुं कहेण अवगुणीने सुसीमार पुरना उद्यानने विषे श्रीमहावीरजगवान प्रतिमायें रह्या छे, तेनुं शरण करी चाल्यो ॥ य तः ॥ किंनिस्साएणं जंते असुरकुमार देवा उड्ढउप्पयंति गोयमा ॥ अरिहं तेवा, अरिहंत चेइयाणि वा, अणगारे वा जाविअप्पाणो निस्सियाए उड्ढ उप्पयत्तित्ति. ते समयने विषे श्रीमहावीर विद्यमान हता माटें तेमनुं शर ण करी चाल्यो. महाजयंकररूप विकूर्वी सौधर्मदेवलोकनेविषे गयो. तिहां जयंकररूप देखी देवांगना त्रास पामी सौधर्मदेवलोकनेविषे हालकल्लो ल थई रह्यो, इंद्रें अवधिज्ञानें करी जोयुं तो चमरेंद्रने दीगे, तेने आवतो जाणी वज्र मूक्युं, ते देखी अधोमुख फरी नागो, तेवारें तेना कंठथकी आ हार इहांथी असंख्यातमे द्वीपें धरती उपर जई पड्यो.

हवे आगल चमरेंद्र नागो जाय,ते केडें वज्र चाल्यो जाय. एटले इंद्रें वि चार्युं जे, चमरेंद्र सौधर्मदेवलोकमां आवे तेवारें एक श्री अरिहंत, बीजुं अरिहंतनुं चैत्य, तथा त्रीजुं जावितात्मा अणगार.ए त्रणनी निश्रायें आवी शके, अन्यथा ते आवी शके नहिं. ए चमरेंद्र श्रीमहावीर विद्यमान अरिहंत नी नीश्रायें आव्यो छे, तेमाटें रखे मारुं वज्र जगवंतनी आशातना करे! एहवुं विचारी इंद्र पण केडे थयो, तेथी चमरेंद्र अत्यंत सूक्ष्मरूप करी ज गवंतना पग वचें पेगे ने वज्र जेटले जगवंतना पगनी ढूंकडुं आव्युं, एट ले तो इंद्रे आवी लइ लीधुं. ते जगवंतना शरण कस्या, माटे चमरेंद्रने सौधर्मेंद्रें मूक्यो. पछी जगवंतने नमस्कार करी खमावी सौधर्मेंद्र सौधर्मदेव लोकें गयो. चमरेंद्र हास्यो तेथी श्याममुख थयो थको चमरचचा राजधानी यें आव्यो. ते चमरेंद्रनो हार विद्युत्प्रजदेवता पाम्यो. तेणें जाइनो प्रेम माटे विद्युत्सुंदर लघुजाइने ते हार आप्यो ने ते लघुजाइयें वली तुजने आप्यो, एवुं सांजली गुरुने नमस्कार करी तिहांथी चाल्यो, ते पच्चीश वर्ष लगण पृथ्वी उपर पर्यटन करी घणुं धन कमाइने तमारी पासें आव्यो छुं. हवे ते विद्युत्सुंदरदेव देवलोकथी चवी ताहरे घेर पुत्र पणे थयो छे.के नथी थयो? एवुं सांजली राजायें हरिदत्तकुमरने तेडावीने ते हार देखाड्यो. ने तेने ते

द्दार देखतांज जातिस्मरण उपनुं. तेथी पूर्वभव स्वरूप दीठुं, ने जेह्वुं मदनदत्तें कह्युं हतुं, तेवुंज राजा आगल तेणें स्वरूप कह्युं.

ह्वे राजा चिंतववा लाग्यो के, जे प्रथम धर्मनो विवाद थयो, ते पुत्रनुं वृत्तांत सांभलवाथी मह्वारो सर्व संदेह् पोतानी मेलें छेदाइ गयो. माटें आ त्रणे जगतमां एक श्रीअरिहंतनो धर्मज भव्यजीवोने संसारनी बीकने छेदनारो तथा स्वर्ग अने मोक्षना सुखनो दातार छे, एवो निश्चय कर्यो. एवा समयमां वनपालकें आवीने राजानें वधामणी आपी के, हे स्वामी! आजे नगर बाह्रिर पुष्पावतंसक नामा वनने विषे घणा शिष्यना परिवारें परवर्या, चार ज्ञानना धारक, सुरासुरें सेवित एवा गणधर नामें गुरु समवसर्या छे, एवुं सांभलीने जेम मेघनो शब्द सांभली मोर हर्ष पामे, तेम राजा हर्ष पाम्यो थको वनपालकने वधामणी आपी संतोषित करी पोतें हस्ती उपर बेशी पुत्र, मित्रादिकेंसहित तेमज चतुरंगिणी सेना संघातें लइ आचार्यने वांदवा गयो, आचार्य प्रति पंचाभिगम साचवी वांदीने योग्य स्थानकें बेसी धर्मदेशना सांभलवा लाग्यो. तिहां गुरु कहेवा लाग्या के, हे भव्यजीवो! सर्वधर्मनुं मूल द्वार एटले बारणांरूप, धर्मनो आधार, धर्मनुं भाजन, धर्मनो निधान, ते समकितज छे, तिहां जे देवनेविषे देवनी बुद्धि, अने गुरुनेविषे गुरुनी बुद्धि तथा धर्मनेविषे धर्मनी बुद्धि, ते सम्यक्त्व जाणवुं. अने जे तेथी विपरीत ते मिथ्यात्व जाणवुं. ते माटें सम्यक्त्व विना मोक्षप्राप्ति नहिं, अने मिथ्यात्वविना संसारनी वृद्धि नहीं.

तिहां देव ते रागद्वेषरह्वित श्रीजिनेश्वर जाणवा, तथा जे पंचमहाव्रतधारी साधु ते गुरु जाणवा, अने श्री भगवंतनो कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म जाणवो, ए त्रण तत्त्वना आराधनरूप समकेत पाले छते, ते पुरुषने नरक अने तिर्यंचनी गति केवारें पण प्राप्त न थाय, तथा देवगतिनां सुख, मनुष्यगतिनां सुख अने मोक्षनां सुख वश थाय, जे प्राणी एक अंतर्मुहूर्त्तमात्र पण समकेतने फरसे, ते निश्चेंथी अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन मांहे सिद्धि पामे. एवो धर्म,गुरुपासेंथी सांभलीने राजा पोताना पुत्रसहित समकेतपूर्वक श्रावकनोधर्म अंगीकारकरी हर्षधरतो पोताने घेर आव्यो.

एकदा देवलोकमां इंद्रमहाराजें नरवर्माराजानी प्रशंसा करी जे ए राजा समकेतमां एवो दृढ थयेलो छे,के देवताथी पण चलाव्यो चले नहिं,

तेवारें सुवेगनामें देवता ते वचन खमी शक्यो नहिं, नें विचार्युं के हुं जइ तेने समकेतथकी चलावुं,पछी त्यां आवी अनाचारी साधुउनुं टोळुं बनाव्युं एहवे नरवर्माराजा अश्वक्रीडायें निसर्या, तेणे ते टोळुं दीठुं. तेमां एक साधु, मदिरापान करे छे, एक साधु वेश्या संघातें क्रीडा करे छे,एक साधु उंघो कडें बांधी धनुष तीर ताणी मृगकेडें थयो छे. एम विचित्र प्रकारें साधुनां कुश्चेष्टित दीठां, त्यारें राजायें पूछ्युं के,ए तमारो शो व्यापार? साधुउ कहेवा लाग्या के, अमो जे लोकने धर्मोपदेश दहियें छैयें, ते धूतीयें छैयें, परंतु अमें पोतें तो ए करणी करीयें छैयें. राजा चिंतवे छे जे, जिनशासन मार्ग विषम छे,पण मोक्षनो मार्ग छे. ए मार्गथकी जे पड्यो तो तेहनुं अनाग्य,ने जे ए मार्ग पामी पाधरो चाल्यो,पड्यो नहिं,तेहनुं नाग्य समजवुं. एम उलटुं राजानुं सम्यक्त्व दीपतुं थयुं, पण लवलेशमात्र मलिन न थयुं. जेम सुवर्ण अग्निमांहे घालीयें तो दीप्त थाय, तेम राजानुं सम्यक्त्व थयुं,पछी राजायें ते यतियोने शिखामण दीधी, के आवुं चारित्र पामीने कां एवां नूंडां आचरण आचरो छो? तमें डुरंत नरक पामशो,एहवुं कही पापथकी निवर्त्तावतो हवो. देवता अवधि ज्ञानें करी जुवे छे तो राजानुं सम्यक्त्व चडतुं दीठुं, पण लेशमात्र पडतो परिणाम न दीठो.तेथी हर्ष पामी रूप प्रगट करी आवी पगें लाग्यो, ने कहेवा लाग्यो के, धन्य तमारो अवतार, जेवी सनामां बेठा इंद्रमहाराजें तमारी प्रशंसा करी तेहथकी सवाई प्रशंसाने तमे योग्य छो, एहवुं कही माथानो मुकुट आपी राजानी गुणस्तुति करतो थको स्वर्गें गयो. ने इंद्र आगल जेहवी वात हती तेहवी कही. ते दिनथकी राजा निर्मल सम्यक्त्व पालतो हवो. छेहडे हरिदत्त कुमर संघातें दीक्षा लेइ संयम पाली तप तपी स्वर्गें पहोतो, अनुक्रमें मोक्षपद पामशे. ए सम्यक्त्वने विषे मनःशुद्धि उपर नरवर्माराजानुं चरित्र सांनली मनःशुद्धि करवी.

हवे वचनशुद्धिनुं स्वरूप कहे छे.

॥ तिछंकर चलणारा, हणेण जं मह्य सिद्यइ न कज्जं ॥ पछेमि तछ नन्नं, देवविसेसेहिं वयणसुद्धि ॥ १६ ॥ अर्थः—(तिछंकरचलणाराहणेण के०) श्री तीर्थंकरना चरण कमलने आराधवे करी पूजवे करी (जं के०)जे (मह्य के०) महारा अंतराय कर्मने योगें करी पुत्र अथवा लक्ष्मी आदिक वस्तुसंबंधी कोइ पण (कज्जं के०) कार्य ते (नसिद्यइ के०) सिद्ध न थयुं.

तो (तब के०) ते कार्यनेविषे (पडेमिनन्नं के०) अन्य देवप्रत्यें आराधन करवा जाउं नहीं. ते अन्य देवनां नाम कहे डे. हरि, हर, ब्रह्मा, चंमी, चामुंमा, क्षेत्रपालादिक (देवविसेसेहिं के०) देवविशेष जाणवा, एटले वचनथी एवुं बोलुं, के नगवंतना पदकमल आराधतां अर्थसिद्धि थाउ. अथवा महारा पूर्वकृत सबल अशुनकर्मने योगें ते अर्थसिद्धि न थाउ. तथापि हुं अन्यदेवनी याचना करुं नहीं. ए (वयणसुद्धि के०) वचनशुद्धि जाणवी ॥ ३६ ॥

हवे ए वचनशुद्धि उपर धनपाल पंमितनो दृष्टांत कहियें डैयें. सकल देशमंमन श्रीमालवदेश डे, तेमां उज्जयणी नगरीयें नोजराजा राज्य करे डे. अने तेहज नगरीनेविषे वेदाध्यायी षट्कर्मनेविषे निरत एवो सोमचंड नामें ब्राह्मण रहे डे. तेने सोमश्री एवे नामें नार्या डे, ते जेम चंड्रमाने रोहिणी वल्लन डे, तेम ते ब्राह्मणनें पण ते स्त्री अत्यंत वल्लन डे. सर्वगुणनी पात्र डे, तेने एक धनपाल अने बीजो शोनन, ए बे पुत्र डे. ते बेहु महोटा पंमित, सर्वशास्त्रना पारंगामी अने नोजराजानी सनाना मंमन डे.

हवे मध्यदेशने विषे वाराणसी नगरीमां गौतमगोत्री कृष्णगुप्त ब्राह्मण रहे डे, तेना बे पुत्र डे, एक महोटो नाइ श्रीधर अने बीजो लघुनाइ श्रीपति डे, ते बेहु नाइ परस्पर प्रेमवंत चौद विद्याना जाण डे, ते प्रतिदिवस गंगास्नान करी ईश्वरनी पूजा करे. एकदा प्रस्तावें तेमने सोमेश्वर महादेवनी यात्रा करवानी मनीषा थइ. तेवारें बेहु नाइ पोताना खन्नानेविषे प्रज्वलित दीवा मूकी सोमेश्वरनी यात्रायें चाल्या, अनुक्रमें गुजरात देशें वर्द्धमान नगरें आवी रात वासो वस्या, तिहां बे पहोर रात्रि वीत्या केडें एक पुरुष दीगे, तेणे मस्तकें जटा मुकुटधारेलो डे, सर्वांगने विषे विनूति लगाडी, गले वासुकी नागनो हार पहेरेलो डे, नालस्थलनेविषे त्रीजुं लोचन धरे डे, आर्धांगें पार्वती डे, हाथमां त्रिशूल डे, महापुष्ट शरीर अने उज्ज्वल वृषननुं वाहन डे, एवो ते पुरुष पहेला बे नाइयोनी आगल आवी उनो रह्यो. तेने देखतांज बेहु नाइउ चमत्कार पाम्या थका तेने दंमवत् नमस्कार करी नाना प्रकारना छंदजातिनां नवां काव्य रची स्तववा लाग्या, तेवारें सोमेश्वर बोल्या के, तमें महारी यात्रा करवा आव्या गे? अने तमारो अत्यंतनाव महारा उपर डे, एवुं जाणीने हुं तमारी साहामो आव्यो बुं. हवे तमारी यात्रा फलीनूत थइ. हुं तुष्टमान थयो जे मागो ते

आपुं. ते वात सांभली बेहु भाइ हर्ष पाम्या थका कहेवा लाग्या के, आ कायायें अमोने शिववास आपो, तेवारें सोमेश्वरें कह्युं के, जो तमोने शिववासनी इच्छा होय, तो एहिज नगरमां श्रीवर्द्धमानसूरि छे जेमनी धरणींद्र तथा पद्मावती सेवा करे छे. तेनी तमें पण सेवा करो अने तेना कहेवा प्रमाणें चालो,के जेथी अजरामर शिववास पामो. एवुं कही माहादेव अदृश्य थया. प्रभात समयें ते बेहु भाइ पूछता पूछता पौषधशालायें आव्या, तिहां साधुउने नाना प्रकारनां तप करता सद्याय करता दीठा, तथा केटलाएक साधु काउस्सग्ग धारी, एकादशांगी अध्ययन करता दीठा, जेवारें पौषधशालाना मध्यभागें आव्या, तेवारें महोटा पादपीठ सहित सिंहासन उपर बेठेला अने विद्यायें करी साक्षात् बृहस्पति समान एवा श्रीवर्द्धमान सूरीश्वर प्रत्यें देखीने बेहु भाइ आवी तेमने पगें लाग्या. दर्शन देखतांज हर्ष पाम्या. आचार्यें पूछ्युं तमें कोण छो ? तेवारें तेणें सर्व वात अथथी ते इति पर्यंत मांभीने कही, ते सांभली वर्द्धमानसूरि खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के, प्रथम तमें श्रीजिनशासननो मार्ग समजीने पछी दीक्षा ल्यो. एम कही बे भाइउने गुरुयें विनयमूल एवो श्रीजिनशासननो मार्ग समजाव्यो, तेथी जेम सूर्यनां किरण पसरवाथी अंधकारनो नाश थाय, तेम ते बे भाइनुं अज्ञान नाश पाम्युं अने सद्ज्ञाननो उद्योत थयो. तेवारें ते बेहु भाइयें दीक्षा लीधी. आचार्यें एकनुं जिनेश्वर अने बीजानुं बुद्धिसागर एवां बे नामो पाड्यां. ते बे साधु सर्वत्र विख्याति पाम्या, अनुक्रमें जिनागमना पारंगामी थया. सूरिना छत्रीश गुणें बिराजमान जाणी बेहु भाइउने आचार्यपद दीधां. अने श्री वर्द्धमानसूरीश्वर कहेवा लाग्या के, हे वत्सो ! तमें अणहिलवाड पाटण जाउ. तिहां चैत्यवासी छे,ते सुविहित साधुने पेसवा देता नथी, माटें तमें राजाने प्रतिबोध आपीने जेम सुविहित साधु तिहां सुखें विहार करी शके, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी पाटण गया पण तिहां रहेवाने कोइ स्थानकज मले नहीं.

हवे तिहां दुर्लभराजानो पुरोहित सोमेश्वर भट्ट छे,तेने घेर गया. ते पोताना पुत्रने वेद भणावे छे. पण वेदना अर्थ विषम छे, ते कहेता स्खलाय छे, तेवारें जिनेश्वरसूरियें ते वेदनी कांभीनो अर्थ अस्खलितपणे कह्यो, ते जोइ ब्राह्मण चमत्कार पामतो थको विचारवा लाग्यो के आ कोइ सा

त्कार ब्रह्मानुं रूप लइनेज आव्यो छे. तेवारें आचार्यने पूछवा लाग्यो के, तमें आ वेदनी कांमीना विषम अर्थ केवी रीतें जाणो छो ? तेने आचार्यें कह्युं, अमें ब्राह्मण हता हमणां जैनी दीक्षा लीधी छे,तेवारें सोमेश्वर भट्टें कह्युं के, तमें इहां रहो आपणे शास्त्रनी गोष्टि करियें आचार्यें कह्युं, चैत्य वासी अमोने रहेवा दीये नहीं. माटें अमाराथी इहां केम रहेवाय ?तेवारें ते भट्टें पोतानी वेदशालामां आचार्योने राख्या. शुद्धमान अशनादिक आपी गोष्टि करतां सर्वशास्त्रोनेविषे दक्षपणुं देखी सोमेश्वर खुशी थयो.

एवामां चैत्यवासीना नफर आव्या ते आचार्यने काढवा लागा, तेवारें सोमेश्वरें डुर्लभराजाने जइ कह्युं के, तमारा राज्यने विषे तमो आम्रवृक्ष तो उन्मूली नाखो छो. अने अर्कतरु वावो छो. राजायें कह्युं ते केवी रीतें ? सोमेश्वरें कह्युं के आ सुविहित साधु सर्वशास्त्रना पारंगामी छे तेने गामथी बाहेर काहाडो छो अने चैत्यवासी जे सर्व वातें हीण छे,तेने राखो छो,एविपरीत छे.

एवी वात सांभलीने राजायें सर्व चैत्यवासीयोनें कहेवरावी मोकल्युं के, जे कोइ ए सुविहित साधुने पराभव करशे, तेने हुं महारा नगरमांथी बाहिर काहाडी मूकाश ? एवी रीतें डुर्लभराजानो आदेश पामी, ते बेहु आचार्य तिहां पाटणमां चोमासुं रह्या, पछी बीजा पण घणा सुविहित तिहां आववा लाग्या. ते सांभली श्रीवर्द्धमानसूरि घणो हर्ष पाम्या.

हवे जिनेश्वरसूरि विहार करता उज्जयणी नगरीनेविषे गया, तिहां सोमचंद्रब्राह्मणनी सार्थे प्रीति थइ. तेमना मुखथी चार वेदनां व्याख्यान सांभली, सोमचंद्र खुशी थयो. प्रतिदिवस आवी ज्ञानगोष्टि करवा लाग्यो. एक दिवसें सोमचंद्रें कह्युं के,तमारा जेवा महोटा पुरुषो सार्थे माहारे प्रीति थयेली छे छतां जो तमें माहारा पूर्वजोयें निधान दाटेलुं छे, ते देखाडी नहीं आपो,तो ते प्रीति शा कामनी ? वली जो आप महारा पूर्वजोयें दाटेलुं निधान देखाडो ? तो तेमांथी अर्द्ध भाग तमोने आपुं. एवुं वचन सांभली गुरुयें तेमां लाभ जाणीने श्रुतज्ञानने बलें निधाननुं स्थानक देखाड्युं, प्रमाण पण कह्युं. ब्राह्मणें ते निधान खोदावी तत्काल प्रगट कीधुं, हर्ष पाम्यो थको गुरुने कहेवा लाग्यो के,एनो अर्द्धभाग तमें ल्यो. गुरुयें कह्युं के, अमें तो निधान मूकीने दीक्षा लीधी छे. माटें एने लइने शुं करीयें ? सोमचंद्रें कह्युं महारी प्रतिज्ञाना क्यारें पण भंग न थाय, माटें तमें ल्यो.

लइने तमारुं मन माने तेम करजो. पण म्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण करो.
गुरुयें कह्युं के, सर्वथा अमारे द्रव्यनो कांइ पण खप नथी. परंतु जो त ह्मारे प्रतिज्ञानो प्रतिबंध छे, तो तह्मारा बे पुत्रमांथी एक अमने वहोरावी आप, के जेथी तह्मारी प्रतिज्ञा पूर्ण थाय. सोमचंद्रें विचार करीने ते वचन अंगीकार कर्युं. पछी विचारीने निधान बे पुत्रने समन्नागें वहेंची आप्युं. पण बेहु पुत्र महामिथ्याग्रस्त छे माटे तेनी आगल वात करी शके नहीं अने पुत्रो पण राज्यमानी, विद्या पारंगामी तथा धनाढ्य ए त्रणे गुणे करी अभिमानवंत छे, तेथी कहेवाय नहीं एम करतां सोमचंद्र छेल्ली अवस्थायें जेवारें रोगें पीडित थयो, तेवारें बेहु पुत्र आवी कहेवा लाग्या के, हे तातजी! तमारे जे कांइ इछा होय, ते कहो, तो पूर्ण करीयें. तेवारें सोमचंद्रें कह्युं के, म्हारी उपर रण छे, ते उपर राखीने मरुं छुं माटें तमें सुपुत्र छो, ते म्हारुं रण उतारो. पुत्रोयें पूछ्युं के, तमारी उपर शुं रण छे? कोइनुं कांइ लीधुं होय तो कहो अमें तेने आपीने रणथी छोडावीयें? पितायें सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें पुत्रो बोल्या, अमें तमारुं रण जरूर उतारशुं. तमें तेनी कांइ पण चिंता राखशो नहीं. एवुं पुत्रोनुं वचन सांभली सोमचंद्र हर्ष पाम्यो, अनुक्रमें परलोकें पहोतो. तेनी उत्तरक्रिया सर्व बेहु पुत्रें करी.

हवे बे भाइ विचार करे छे, के महाधूर्त्त श्वेतांबरें आपणा पिताने छेतर्यो छे, धूत्यो छे, छलमांहे पाड्यो छे, एटलाजमाटें जो हाथी मारमार करतो साहामो आवे तो पण श्वेतांबरनी पोशालमांहे पेसवुंज नहीं. हवे ए कार्य आपणने करवुं पडशे, नहीं कां पितानो बोल शी रीतें पले? पछी बे भाइउमांथी धनपालें कह्युं, हुं पितानुं रण उतारवा माटें श्वेतांबर थाइश? अने तुं घरमां रहे, तेवारें शोभन बोल्यो, महाराथी घरनो भार उपडे नहीं. माटे तुं घरमां रहे अने हुं श्वेतांबरनुं वचन अंगीकार करीश. पछी समस्त स्वजनने पूछीने शोभन ब्राह्मण श्रीजिनेश्वरसूरि पासें आव्यो, तेने गुरुयें पू. हे शोभन! तुं केम आव्यो? तेवारें शोभनें कह्युं के, मुझने जैनदर्शन उपर श्रद्धा नथी. पण म्हारा बापनुं रण उतारवा आव्यो छुं, माटें जे ो, ते करुं. तेवारें गुरुयें कह्युं के, श्रद्धाविना अमें कोइने दीक्षा आपता ी, माटें अमारी पासें रहीने अमारो मार्ग समजी लइ पछी तह्मारुं मन माने, तो दीक्षा लेजे. एम कही तेने गुरुयें पोतानी पासें राख्यो. पछी

जेम जेम जिनशासननो मार्ग समजातो जाय तेम तेम मिथ्यात्व ऊछुं थतुं जाय. एम जैनशास्त्र जणतां जणतां तेने जैनशासन उपर आस्था आवी, तेथी जेम सूर्य उग्याथी हिमनुं तेज गली जाय, तेम तेनुं मिथ्यात्व सर्व गली गयुं. तेवारें गुरुयें कह्युं, हे शोजन ! हवे तहारी इच्छा होय, तेम कर. तहारुं मन माने, तो दीक्षा ले. शोजन बोल्यो, मुजने दीक्षा आपो महारे कांइ संसारनी गरज नथी. गुरुयें पण तेने रूडो दिवस जोइने दीक्षा आपी. पछी ते शोजन मुनि, शास्त्र जणतां जणतां महाप्राज्ञ समस्त शास्त्रना पारं गामी थया. पण धनपाल पंमितें काव्यशक्तियें राजा जोजने वश करीजा इना डुःख माटे बार वर्ष पर्यंत पोताना देशमां यतिनो विहार बंध कीधो.

एकदा प्रस्तावें शोजनसाधु गोचरीयें गया छे, पण हजी गोचरीनो व खत थयो नथी, तेवामां देहरामां देव वांदवामाटे नवी थोइ करीने देव वांद्या. तिहां चोवीश तीर्थंकरनी स्तुति जोडवानुं ध्यान लाग्युं. हवे गोचरी पण करवी अने थोइ पण जोडवी. एम करतां कोइएक गृहस्थना घरने विषे गया, तिहां आहार लेवाने जोलीमांथी पातरां बाहेर काढ्यां, तेमां आहार लइने फरी पाछा पात्रां जोलीमां नाख्यां. तिहां एक पाषाणनी लोढी पडी हती, ते पण ते जोलीमांहे घालीने उपाश्रयें आव्या अने गुरु आगल गोचरी आलोइ पात्रां जोलीमांहेथी बाहिर काहाढ्यां तेवारें ते मांथी लोढी नीकली, गुरुयें पूछ्युं. हे वत्स! आ शुं लाव्यो? तेवारें शोजन मुनि सावधान थयो, अने गुरु आगलें कह्युं के हुं थोयो जोडवाना ध्यान मां हतो तेथीलोढी नाखवानुं ध्यान रह्युं नहीं. तेवारें गुरुयें पूछ्युं थोइ केवा प्रकारनी जोडी छे ते कही संजलावो. शोजनें कह्युं, "जव्यांजोज विबोधनै कतरणेविस्तारिकर्मावली" इत्यादि चोवीश जोडाना यमकबंध छन्नुं काव्य कही संजलाव्यां ते सांजली गुरु हर्ष पाम्या घणीक साबाशी दीधी.

एकदा गुरुयें कह्युं के, हे शोजनमुनि ! तमें मालवे जइ धारानगरीने विषे धनपाल पंमितने प्रतिबोधीने जेम मालवामां यतिनो विहार थाय, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी शोजनसाधु धारानगरीयें गया. ते वखत तिहां धनपालपंमित तंबोल चावतो रक्त होठें अश्वक्रीडायें निकल्यो छे, ते मार्गमां सामो मल्यो. हवे शोजनसाधुना आगला दांत महोटा छे ते देखी ने ए शोजन छे एवुं कांइ जाणतो नथी तेथी धनपाल हास्य करी कहेवा

लाग्यो के "गर्द्दनदंत! नमस्ते" ते सांभली शोभनने विचार्युं जे जो पाछो उत्तर न आपुं, तो म्हारी पंडिताइ शा कामनी? एम चिंतवी शोभने कह्युं, "मर्कटास्य वयस्य सुखं" एवी रीतें पाछी बराबरीनी गाल सांभली, वैरीनाघा सरखी हैये लागी, पण पंडित जाणीने हर्ष पाम्यो थको कहेवा लाग्यो, "कस्य गृहे वसतिस्तव साधो?" तेवारें शोभनें कह्युं, "यस्य ममोपरि रुचिस्तस्य गृहे"

एवुं सांभली साधुनां वचन जाणीनें धनपालें पोतानुं माणस साथें मोकलीनें ते साधुने पोताना घरना डेला उपर उतारो दीधो. अने केटलिक वार पछी अश्वक्रीडा करी पोतें पण घरें आव्यो. अने शोभननी साथें गोष्ठि करवा बेठो. साधुने पूछ्युं जे तमें म्हारा भाइने ओलखो छो? शोभने कह्युं "तमें दीठे ओलखो!" तेवारें चमत्कार पाम्यो थको कहेवा लाग्यो के, शोभनसाधु तमेज छो के? शोभने कह्युं हुंज छुं. अने तमने वंदाववा आव्यो छुं. ते सांभली हर्षवंत थयो थको आहारने अर्थे पोताने घेर तेडी गयो. तिहां ते साधु शुद्धमान आहार लीयें, अने प्रतिदिन ज्ञाननी गोष्ठि करे.

एकदिवस शोभनसाधु वहोरवा गया तेने वहोराववा माटे मइकरीमां त्रण दिवसनुं खाटुं दहीं आण्युं. तेवारें साधुयें कह्युं, ए अमारे कल्पे नहीं. तेने धनपालें कह्युं तमे ए खटपट मूको. खरुं कारण तो ए छे जे ए त्रण दिवसनुं दही खाटुं थइ गयुं छे,ते तमोने भावे नहीं तेमाटे ना कहो छो.

साधुयें कह्युं एमां जीवोत्पत्ति थइ छे धनपालें कह्युं जो एमां जीवो देखाडो तो तमारी वात सत्य मानुं? अन्यथा मानुं नहीं. तमें कपट करो छो.

साधु बोल्या,अमें कपट करता नथी ज्यो तमोने परीक्षा करवी होय तो जीवो देखाडी आपुं छुं. एम कही एक स्थालिकामां दधि लइ तेमां अलता पोथी पलाली नाखी अनें ते स्थालिका तडके मूकी तेने योगें सूक्ष्म बेंद्रियजीव अलता उपरें प्रगट दीसवा लाग्या. ते धनपालने देखाड्या धनपाल देखीने यतिनां वचन उपर आस्थावंत थयो.

एम प्रतिदिन श्रीजिनधर्मना रहस्य समजावतां धनपालने धर्मउपर आस्था आवती गइ, अने मिथ्यात्व अंधकारदल टलतुं गयुं तेथी सम्यक्त्व उद्योत प्रगट थयो तेवारें पोतें कुटुंबसहित गुरुपासें सम्यक्त्वमूल बार व्रत उच्चर्यां प्रतिदिवस प्रथम श्रीजिनबिंबनी पूजा करे, पछी पाणी

पीये. पूजा कर्याविना कांइ पण चीज मुखमां प्रक्षेपे नहीं. एम समकेतनी दृढता थइ. तेथी तेने मिथ्यात्व, दीतुं पण रुचे नहीं एवो थयो.

हवे एकदा प्रस्तावें नोजराजा आहेडे चड्यो ठे. ते महोटो आहेडो कर्या पठी परिश्रांत थयो एक वृक्षनी नीचें आवी बेठो, अने पंमितोने कहेवा लाग्यो कें, आखेटकनुं वर्णन करो तेवारें सर्व पंमितोयें जेने जेवी रीतें मनमां युक्तियो आवी, तेणें तेवी रीतें आखेटकनुं वर्णन कर्युं. पठी राजायें धनपालपंमितनी साहामुं जोयुं, पण धनपालपंमित तो शुद्ध समकेत धारी नवतत्त्वनो जाण ठे, ते आखेटकनुं केम वर्णन करे? तेथी धनपालें विचार करीने नीचेंप्रमाणे काव्य कह्युं.

॥ श्रीनोजे मृगयां गतेपि सहसा चापे समारोपिते, ऽप्याकर्णांतगतेपि लक्ष्निहिते प्येणांकलक्ष्मेपि च ॥ न त्रस्तं न पलायितं न चलितं नोत्कूर्दितं नो त्प्लुतं, मृग्यां मद्दशिनां करोति दयितां कामोऽयमित्याशया ॥१॥ अर्थः— श्रीनोजराजा मृगया करवा गया त्यां तत्काल धनुष्य उपर बाण चढावी लक्ष आपीने हरणनी पासें बाण आव्यो तो पण ते हरण नयने पाम्यो नहिं, तथा नासी पण न गयो, तथा ते स्थानक पण मूकी गयो नहिं, तथा शब्द पण बोल्यो नहिं, तथा उंची फाल पण मारी नहिं. कारण के ते मृगें एवो विचार कर्यो जे आ राजा ठे तेज एक कामदेव ठे ते मने वाहाली एवी मारी हरणी वश करी आपशे? एवी इछाथी त्यांज स्थिर थइ रह्यो.

॥ किं कारणं तुकविराज मृगा यदेते, व्योमोत्पतंति विलिखंति नुवं वराहाः ॥ देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजाति, मेके मृगांकमृगमादिवराहमन्ये ॥ २ ॥ अर्थः—राजायें प्रश्न कर्यो जे, हे कविराज ! हरणो आकाशमां रुफाल मारे ठे,अने सूवरो नूमि विदारण करे ठे,एनुं शुं कारण हशे ? त्यारें धनपाल कवि तेनो उत्तर कहे ठे के, हे राजन् ! तारा शस्त्रनुं अत्यंत तीक्ष्ण तेज जोइने नयनीत थया थका स्वजातीय एटले ए मृगनी जातीनो जे चंद्रमामां रहेलो मृग, तेनो आश्रय लेवासारु मृगो आकाशमां उंची फालो मारे ठे, अने सुवरो ते पोतानी स्वजातीनो मूल पुरुष जे आदि वाराह ते पातालमां ठे तेनो आश्रय लेवामाटे पृथ्वी खोदे ठे.

एम सांनलीने कोई द्वेषीयें राजाने कह्युं जे ए कवि जैनी ठे, तेथी मृग

यानुं वर्णन करशो नहिं,ते माटे एने मृगयानुं वर्णन करवाने कहो. ते सांजलीने राजायें तेम कह्युं, ते उपरथी धनपाल बोल्यो.

॥ रसातलं यातु यदत्र पौरुषं,कुनीतिरेषाऽशरणोह्यदोषवान् ॥ प्रहन्यते यद्बलिनाति दुर्बलो, हाहा महाकष्टमराजकं जगत् ॥ ३ ॥ अर्थः—जीवनी हिंसा करवी एवुं जे पराक्रम तेनो नाश थाउ. अरेरे ! ए महोटा कष्टनी वात ढे अने आ जगत् पण राजरहित देखाय ढे, जेमां अशरण तथा दोष रहित दुर्बल एवा पशुउने बलवान् मारवा जाय ढे माटे ए अनीति ढे.

ए काव्य सांजली राजा कोपायमान थयो अने लालचोल लोचन करी बोल्यो, हे धनपाल ! ए तें शुं कह्युं ? तेवारें धनपाल आ प्रमाणें बोल्यो ॥

॥ वैरिणोपिहि मुच्यंते, प्राणांते तृणनक्षणात् ॥ तृणाहाराः सदैवैते, हन्यंते पशवः कथं ॥ १ ॥ अर्थः—जो मुखमां तृण लइ शत्रु आवे, तो तेने तेनो वैरी मारतो नथी तो निरंतर तृण नक्षण करनार एवा पशुउने मारवां ते शुं कहेवाय ? ए श्लोक सांजली राजा नोजने करुणा उपनी तेथी धनुष्य नांगी नाख्युं, बाण नांग्या अनें जावजीवसुधी आखेटकनुं पच्चरकाण कीधुं. राजा खुशी थयो धनपालनें सिरपाव आप्यो, पहेरामणी करी, साबासी दीधी, अने कह्युं के तें मुजने पापथकी निवर्त्ताव्यो, माटें तुं महारो उपकारी ढो.

पढी राजा आहेडाथी पाढो फरी पोताने घेर आवे ढे. तिहां मार्गमां घणा ब्राह्मणोयें मली यज्ञमां होमवा सारु यज्ञस्तंजने विषे ढाग बांध्यो ढे, ते करुणास्वरें बुंबारव करे ढे, ते जोइ राजा धनपालने पूढे ढे के, आ बकरो शुं कहे ढे ? तेवारें धनपाल पंमितें नीचेंप्रमाणें एक काव्य कह्युं.

॥ नाहं स्वर्गफलोपनोगतृषितोनाभ्यर्थितस्त्वं मया, संतुष्टस्तृणनक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गे यांति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृनिःपुत्रैस्तथा बांधवैः ॥१॥ अर्थः—हे राजा,आ बकरो एम कहे ढे जे हुं स्वर्गनो अनिलाषी नथी तथा तेना सुखनी प्राप्ति करवाने माटे तमारी पासें में याचना पण कीधी नथी,केवल तृणनक्षण करीने सदा संतुष्ट एवो निरपराधी हुं ढउं, ढतां हे साधु ! मारी तमें हिंसा करो ढो, ए कर्म तमने योग्य नथी. अने यज्ञमां जीवनी हिं

सा करवाथी जो ते जीवने स्वर्गप्राप्ति थती होय तो माता, पिता, पुत्र, भाइयोयें करीनें यज्ञ केम करता नथी ?

ए श्लोक सांभलीनें राजायें पूछ्युं के,त्यारें शुं यज्ञ करवाथी स्वर्गनी प्राप्ति नहिं थाय ? त्यारें कवि बोल्यो.

॥यूपं छित्वा पशून् हत्वा,कृत्वा रुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ६ ॥ अर्थः—यज्ञनो स्तंभ तोडी नाखवाथी तथा पशुउंनी हत्या करवाथी; तथा रुधिरनो कीचड करवाथी जो स्वर्गनी प्राप्ति थती होय, तो पछी नरकमां कोण जाय ? वली राजायें पूछ्युं के, यज्ञ केवी रीतनो करवो? ते कही संभलावो. त्यारें कवि वाल्यो.

॥ सत्यं यूपं तपोह्यग्निः, प्राणास्तु समिधो मम ॥ अहिंसामाहुतिं दद्या, देष यज्ञः सनातनः ॥७॥ अर्थः—सत्यरूप यज्ञस्तंभ तथा तपश्चर्यारूप अग्नि अने पोतानां प्राणरूप समिध,अहिंसारूप आहुति,एवी रीतनो जे यज्ञ,तेज नाश रहित निर्दोष यज्ञ जाणवो. अने यज्ञ पण तेनेज कहेवो. अनें हिंसा कारक जे यज्ञ, ते निंदवा योग्य छे. त्यारें राजायें पूछ्युं के, ए वात बीजाउंने केम गमती नथी ? तेनो उत्तर कवि बोल्या.

थ्यात्व छे, ते सांजली धनपालने जूगो पाडवामाटे राजायें कह्युं के, आ प्रासादनां त्रण द्वार छे, ते मांहेला हुं कया द्वारमांथी पाछो नीकलीश? ते सांजली धनपाल पंमितें एक माटीना गोलामांहे कागल नाखीने थगीधरना हाथमां आप्यो. अने थगीधरने कह्युं के,राजा बाहिर निकल्या पछी तुं आ गोलो राजाने आपजे. एम कही थगीधरने शीख दीधी. राजायें विचार्युं जे, त्रण द्वारमांथी एक द्वारनुं नाम एणें लख्युं हशे. माटे त्रणे द्वारने पडतां मूकी शिलाटने तेडावी मंमपनी शिला पाछी हटावी उपरली वाटें राजा निकल्यो, निकल्या पछी थगीधरें माटीनो गोलो राजानें आप्यो राजायें ते गोलो जांजी मांहेथी कागल काढाढीने जोयुं, तो तेमां एवुं लखेलुं हतुं जे राजा शिलाट तेडी मंमपनी शिला पाछी करावी उपर द्वार करी निकलशे? ते वात वांचीने राजा चमत्कार पाम्यो अने धनपालने घणुं दान दइने श्रीजिनशासनने प्रशंसवा लाग्यो.

वली एकदा प्रस्तावें तेज शिवप्रासादने विषे धनपालपंमितने साथें तेडीने राजा गयो. त्यां राजायें तथा बीजा सर्व लोकोयें महादेवने नमस्कार कर्यो, अनें धनपालपंमितें न कर्यो, तेवारें राजायें कविने पूछ्युं के, तुं केम नमस्कार करतो नथी? तेवारें कवियें आ प्रमाणें कह्युं.

ते ब्रह्मा हो, वा विष्णु हो, वा महेश्वर हो, अथवा जिनेश्वर हो, तेने मारो नमस्कार होजो. ए श्लोकथी पण राजा बराबर प्रसन्न थयेलो न दीठो, तेवारें धनपालें राजानो अभिप्राय जाणीने विचार्युं जे राजा खुशी थाय तेम करुं? पण श्रीजिनेंद्रविना अन्य देवनी स्तुति तो कदापि करुं नहिं.

हवे राजा महादेवनुं देहरुं मूकी पोताना घर नणी चाल्यो, मार्गमां एक वृद्धा मोशी मस्तक कंपावती हाथ धूजावती साहमी मली,ते जोइ राजायें पोतानी साथेंना सर्व पंमितोने पूछ्युं जे आ मोकरी शिर धूणावती कर कंपावती शुं कहे छे? ते सांनली पंमितो कहेवा लाग्या.

तेमांएक पंमित बोल्यो ॥ दोहा ॥ कर कंपावे शिर धुणे, बूढी काहुं कहेइ ॥ हकारंता जम नडह, नन्नंकार करेइ ॥ १ ॥ बीजो पंमित बोल्यो के ॥ श्लोक ॥ जरायष्टिप्रहारेण,कुब्जीनूता हि वामना ॥ गतं तारुण्यमाणिक्यं,निरीक्षत पदे पदे ॥ २ ॥ पछी राजायें धनपालनी साहामुं जोयुं, तेवारें धनपाल नीचें प्रमाणें श्लोक बोल्यो,

॥ श्लोक ॥ किं नंदी किं मुरारिः किमु रतिरमणः किं विधुः किं विधाता, किंवा विद्याधरोऽयं किमुत सुरपतिः किं नलः किं कुबेरः ॥ नायं नायं न चायं न खलु नहि न वा नैव चासौ न चासौ,क्रीडां कर्त्तुं प्रवृत्तः स्वयमिह हि तले नूपतिर्नोजदेवः ॥ ११ ॥ अर्थः—हे राजन्! आ मोशी तमोने जोइने एम कहे छे, जे आ कोण रुद्र छे? अथवा साक्षात् विष्णु छे? के कामदेव छे? तथा चंद्र छे? के ब्रह्मा छे? के कोइ गंधर्व छे? के इंद्र छे? के नलराजा छे? के कुबेर छे? नहिं नहिं आ रुद्र न होय, विष्णु न होय, मदन न होय, चंद्र न होय, ब्रह्मा, गंधर्व, इंद्र, नल, कुबेर एमांनो कोइ नथी! पण आ पृथ्वीपर क्रीडा करवासारु नोजराजा आवेला छे.

ए काव्य सांनली राजा घणो हर्ष पाम्यो. अने कहेवा लाग्यो के,हे धनपाल! वर माग. जे माग ते आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं के,चक्षु युगल आपो. ते सांनली राजा धनपालमां मनोगत नाव ज्ञान देखी चमत्कार पाम्यो,पछी घणुं दान आपीने धनपालने खुशी कर्यो.

हवे धनपालपंमितें श्रीऋषनदेवना वर्णनमय श्रीऋषनपंचाशिका नामें ग्रंथ कर्यो, तेने शिलामां कोरवाने सरस्वतीकंठानरण प्रासादनेविषे स्थाप्यो. एकदा नोजराजानुं काव्य करी नोजराजाने संनलाव्युं, ते कहे छे.

॥अभ्युद्धृता वसुमती दलितं रिपूरः क्रोडीकृता बलवता रिपुराज्य लक्ष्मीः ॥ एकत्र जन्मनि कृतं तदनेन यूना, जन्मत्रये यदकरोत्पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

अर्थः—त्रण जन्में करी पुराणपुरुष जे विष्णु,ते जे कार्य करता हवा, तें त्रण कार्य युवान एवा भोजराजायें कर्यां,ते जेम के,विष्णुयें वाराहावतार मां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, अने भोजराजें आ जन्ममां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, विष्णुयें नृसिंहावतारमां हिरण्यकशिपुनुं उरःस्थल फाड्युं, आणे आ जन्में करी दुशमननुं हृदय स्फोटन कर्युं, विष्णुयें वामनावतारमां बलिराजानी सर्व राज्य लक्ष्मी लीधी, ने भोजराजाये आज जन्ममां दुशमननी राज्यलक्ष्मी लीधी छे. एवुं पोतानुं वर्णन सांभली राजा हर्ष पाम्यो थको ते रूपनपंचाशिकानी शिला उपरें मणिमय कलश स्थापतो हवो.

एक दिवसें राजायें धनपालने पूछ्युं के, केम हमणां तमें राजसभाने विषे स्वल्प आव जाव करो छो? धनपालें कह्युं, स्वामी! में भरत राजानी कथा रचवा मांमी छे, तेमां वखत रोकवो पडे छे माटे बराबर अवातुं नथी. राजायें कह्युं,तो ते मुजने संभलावो. तेवारें धनपालें कह्युं. कया वखतें संभलावुं? तेनो निर्धार करी आपो. राजायें रात्रिनो वखत ठेराव्यो. पछी नित्यप्रत्यें रात्रिनी वखतें धनपाल कथा संभलाववा आवे, ते सांभलतां थकां राजाने एवो रस उपन्यो के रखे ने आ ग्रंथनो रस अन्यत्र जाय? एवा हेतुथी सोनानो थाल नीचें मंमाव्यो.

एकदा राजायें कह्युं के,हे धनपाल! तमें भरतने स्थानकें महारुं वर्णन करो. अने आयोध्याने स्थानकें उज्जयणी नगरीनुं वर्णन करो. तथा चरित्रने स्थानकने विषे महाकालनुं वर्णन करो, तो हुं तमोने घणुंज द्रव्य आपुं. अने मानमहत्त्व पण आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं ॥ यतः ॥ जम्मह जिण पयपंकय, आराहणाउ न होइ मणइठ्ठं ॥ तेणे नहु महकज्जं, कया वि इय रायमरकीवइ ॥ १ ॥ ते सांभली राजा क्रोधायमान थयो थको तें मूलपुस्तक लइ अग्निमांहे नाखी दीधुं, तेथी धनपालने दुःख लाग्युं, त्यांथी पोताने घेर आवी जुना मांचा उपर सुइ रह्यो, एवामां तेमनी पुत्री तिलकमंजरीयें आवीने पूछ्युं के, हे तातजी! तमोने एवडुं दुःख प्राप्त थयुं तेनुं शुं कारण छे? तेवारें धनपालें निःश्वास मूकी सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभली तिलकमंजरी बोली, हे तातजी! तमें दुःख म करो. ए सर्व कथा

मह्वारे मुखाग्रें बे, में सांनली बे, तेवीज हैयामां धारी राखी बे. हुं तमोने लखावीश. ते सांनली धनपाल हर्ष पाम्यो थको स्नान करी देवपूजा कीधी. पबी ते कथारत्न, तिलकमंजरीयें लखाव्युं; माटें ते ग्रंथनुं नाम पण तिलक मंजरी एवुं राख्युं. पबी धनपालपंमित त्यांथी रीसाइने सांचोर नगरें गयो.

एवामां नोजराजानी सनाने विषे परदेशी वादी वाद करवा आव्यो, तेमणे नोजराजानी सनामांहेला सर्व पंमितोनें हराव्या, कोइनी पंमिताइ तेनी आगल टकी शकी नहीं. तेवारें राजाने धनपालपंमित सांनरी आव्यो माटे तेने तेडुं मोकल्युं, पण धनपालें कह्युं के, जो राजा पोतें आहीं तेड वासारु आवे, तो हुं आवुं, नहीं तो सर्वथा आवुं नहीं. तेवारें राजा पोतें जइ मनावीने तेडी लाव्यो, घणुंज मान महत्त्व दीधुं. धनपालनुं आववुं सांनलीने वादी चिंतातुर थयो. तेने रात्रियें सरस्वतीयें आवीने कह्युं के एक धनपालविना बीजा सर्वत्रस्थानकें तह्वारो जय बे, माटें धनपालपंमितनी साथें तुं वाद करीश नहीं. एवुं सरस्वती देवीनुं वचन सांनली ते वादी रात्रिनोज तिहांथी बानो मानो चालतो थयो. तेथी धनपालनो जय थयो. सर्वत्र कीर्त्ति पसरी, यशोवाद पाम्यो.

हवे धनपालपंमित एक श्रीवीतरागदेवनी स्तुति करे तेविना अन्यदेवनी स्तुति सर्वथा करेज नहीं. एवी वचनशुद्धिपूर्वक समकेत तथा बारव्रत पाली अंतसमयें अणसण आराधी स्वर्गें गयो. अनुक्रमें मोक्ष सुख पामशे? ए वचनशुद्धि उपर धनपालपंमितनी कथा कही. माटें वचनशुद्धिनुं आराधन करवुं. ए वचनशुद्धिनुं बीजुं द्वार कह्युं ॥ २६ ॥

हवे त्रीजुं कायशुद्धिनुं द्वार कहे बे.

॥ बिज्जंतो निज्जंतो, पीलिज्जंतो य दप्तमाणोवि ॥ जिणवज्ज देवयाणं, ण णमइ जो तस्स तणुसुद्धि ॥ २७ ॥ अर्थः—खड्गादिकें करी (बिज्जंतो के०) बेदातो थको तथा कुंत नालादिकें करी (निज्जंतो के०) नेदातो थको तथा घाणीमांहे घाली (पीलिज्जंतो के०) पीलातो थको हु इति निश्चें (य के०) वली अग्निमांहे (दप्तमाणेवि के०) दाजतो बलतो थको पण (जिणवज्जदेवयाणं के०) श्रीजिनेश्वरदेवने वर्जीने बीजा अन्य मिथ्यादृष्टि देवोने (जो के०) जे पुरुष (ण णमइ के०) न नमे, (तस्सतणु सुद्धि के०) तेने तनुशुद्धि कहीयें. एटले कायशुद्धि कहीयें. अर्थात् एक श्रीअरिहंत दे

वने तथा श्रीअरिहंतनी आज्ञाना प्रतिपालक जे साधु तेने प्रणाम करवो, पण वीजाने प्रणाम न करवो. एवो प्रथम प्रतिमापन्न श्रावकनी पेरें नियम राखे, तेने "रायाभिओगेणं" इत्यादिक छ आगार मोकळां न होय तेने निरागार समकेत कहीयें. अने जे छ आगार मोकळां राखे, तेने सागार समकेत कहीयें. प्रतिमाधर श्रावकनें निरागार समकेत होय. एवी रीतें जे मनःशुद्धि वचनशुद्धि अने कायशुद्धियें करी समकेत पाळे अनुक्रमें तेने क्षायिक समकेत पण आवे ॥ २७ ॥

हवे कायशुद्धिनी उपर वज्रकरणराजानो दृष्टांत कहे छे. अवंती देशमां दशपुर नामा नगरनो वज्रकरणनामें राजा छे, ते एकदा आहेडे क्रीडा करवा गयो, तिहां घणी जीवहिंसा करी, तेमां एक सगर्भा मृगलीने मारी नाखी, तेनो गर्भ तडफडतो त्रूटी पड्यो, ते देखी राजा धूज्यो; अने पश्चात्ताप करवा लाग्यो के हा हा ! ! में ए शुं अकार्य कर्युं, अरे मुज पातकीनी शी गती थाशे ! ! !

एवामां त्यां एक शिलापाट उपरें ध्यानारूढ थयेलो साधु दीठो तेने राजायें जइ नमस्कार कर्यो, यतियें धर्मलाभ दीधो. राजा वेसीने साधुप्रत्यें पूछवा लाग्यो के, तमें इहां आ शुं करो छो? साधुयें कह्युं के, अमें अमारा आत्मानुं हित करीयें छैयें. तेवारें राजा हसीने वोल्यो के, तमें भूख तृषा शीत तापादिक सहन करो छो, ए शुं आत्महित करो छो ? साधुयें कह्युं, जिहां अल्पकष्टथी घणुं सुख पामीयें, तेने आत्महित कहीयें; परंतु स्त्रीसंभोग मद्यमांसादि आहार करतां अनेक जीववध करवे स्वल्प सुख भोगवी पछी परभवें हजारो लाखो गमे वर्षो पर्यंत नरककुंभमांहे पचवुं पडे. हे राजन् ! तेने आत्महित न कहीयें. इत्यादिक धर्मनुं रहस्य कहीने ते साधुयें राजाने समजाव्यो. राजा धर्म पाम्यो समकेत उच्चर्युं, अने एवो नियम कर्यो के, आजपछी मिथ्यादृष्टि देव तथा गुरु प्रमुखने हुं महारी कायायें करी प्रणाम करुं नहीं एवो निश्चयथी दृढधर्म अंगीकार कर्यो.

हवे उज्जयणी नगरीयें सिंहरथ राजा छे, तेणें वज्रकरण राजाने पोतानी सेवा निमित्तें तेडाव्यो, पण वज्रकरण नियमभंगनी बीकथी पोताना हाथनी मुद्रिकामां रत्नमय श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनी प्रतिमा थापीने नमस्कार करती वखतें ते प्रतिमा सन्मुख प्रणाम करे, तेथी नियम अखंड

रहे. एवामां कोइक दुर्जनें ते सिंहरथराजा आगल चाडी करी जे वज्रक
णराजा कांइ तमने नमस्कार करतो नथी, पण वींटीमां गोठवेली पोत
ना देवनी प्रतिमाने प्रणाम करे ले. ए वात सांजली राजा कोप्यो अ
विचाखुं जे प्रजातें जइने एने काष्ठपंजरमां नाखुं, जो प्रणाम करे नो
मूकुं. एम सिंहरथराजाने ते रात्रियें उंघ आवती नथी तेवारें राणीयें पू
ब्युं, स्वामी तमोने एवडी शी चिंता उपनी ले के उंघपण आवती नथी?
राजायें वज्रकरणनी वार्त्ता सर्व राणी आगल कही संजलावी.

एवामां देवकुंजपुरनगरनो रहेवासी गुणसमुद्र नामें वणिक तेनी यमु
ना नामें जार्या ले, तेनो चिबुक नामें पुत्र ले, ते घणा करियाणां लइ उज्ज
यणी नगरीयें आव्यो ले. अने ते नगरमां वखार जाडे लइ व्यापार करतो
अनंगलता वेश्यानी साथें लुब्ध थयो थको तेणे सर्व द्रव्यनो व्यय करी
नाख्यो. एकदा अनंगलतायें वणिकने कह्युं के, तुं राजानी राणीनां आज
रण मने लावी आप, तो हुं तहारी साथें विषय सुख जोगवुं. तेवारें तेने
संतोषवामाटें ते वणिक, राजाना मंदिरमां चोरी करवा पेठो, ते वखत
ते राजानां वचन तेणे सांजल्यां. ते वणिक कर्मवशें चोरी करवा पेठो ले,
पण जातें परम श्रावक ले, तेथी तेणें विचाखुं जे महारो स्वामी वज्रक
रणराजा समकेत धारी ले,ते रखे ने बंधीखाने पडे, माटे चोरी पडती मू
कीने एक वार तेने जइ खबर आपुं. पली ते त्यांथी निकल्यो. दशपुरे आ
वी वज्रकरण राजानी आगल वात कही,तेणें पूब्युं तहारा जाणवामां के
म आव्युं? वणिकें पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्युं, तेवारें वज्रकरणराजा धान्य
पाणीनो संग्रह करी कोटना दरवाजा बंधक री पोते मांहे रह्यो.

एवामां सिंहरथराजा पण चडी आव्यो. ते पण दशपुरना गढने वीं
टी पडाव नाखी बेठो. केटलाएक दिवस पली ते देश सर्व उजडजेवो थइ
गयो. एवामां श्रीरामचंद्र, लक्ष्मण अने सीता ए त्रणे जण दक्षिणदेश त
रफ जतां ते देशमां आव्या. रामचंद्रजीयें जरेला घर, हाट, सर्व सूना दे
खीने ते देशवासी कोइ दरिद्री पुरुषने तेनुं कारण पूबवाथी तेणें सर्व हकी
गत कही. ते सांजली रामचंद्रजीयें ते पुरुषने दान आपी विसर्ज्यो. पली
लक्ष्मणजीप्रत्यें कहेता हवा के, वज्रकरण राजा आपणो साहामी जाइ शु
द्धसमकेतधारी ले, माटें एनुं सहाय करवुं. एम कही ते त्रणे जण दश पुर

नगरें आव्या. तिहां उद्यानमां उतारो करी लक्ष्मणने वज्रकरण पासें मोकल्यो, तेने देखी वज्रकरण उठी उन्नो थयो, आसन आपी सर्व पोतानुं वृत्तांत कह्युं. नोजननी सामग्रि करावी तेवारें लक्ष्मणें कह्युं के, मह्यरो स्वामी रामचंद्रजी सीताजीनी साथें उद्यानमां बेठा ठे, तेमने मूकीनें हुं नोजन न करुं. ते सांनली वज्रकरणराजा सर्व रसवती साथें लइ लक्ष्मणसहित उद्याननेवि षे आव्यो. सर्वजणायें हर्षसहित नोजन कर्युं. रामचंद्रजीयें सिंहरथरा जा पासें लक्ष्मणने मोकल्यो, तेणें जइ कह्युं के, हुं अयोध्यापति नरतरा जानो मोकलेलो दूत ढुं. अने वज्रकरणराजा नरतराजानो साहामी नाई थाय ठे, माटे तमें एनी साथें मेलाप करो, अने युद्ध म करो. जो मेल न हीं करशो, तो तमारुं कर्युं तमें नोगवशो.

एवां लक्ष्मणनां वचन सांनलतांज सिंहरथें नृकुटि चडावीने नफरने हु कम कर्यो के, आ दूत ढतां मह्यरी साहामुं चडी चडी बोले ठे, माटें एने गलुं जाली बाहेर काढी मूको. ते सांनली नफर उठ्या, एटलामां लक्ष्मण एक आलानस्तंन उपाडी सर्व नफरोने हतप्रहत करी सिंहरथनो मुकुट नांगी चोटली पकडी सिंहासनथी नीचें नाखी बेहु बाह्य बांधीने उघाडे पगे रामचंद्रजी पासें लइ आव्यो. तिहां सिंहरथ कहेतो हवो के, हे स्वामी! में तुमने उलख्या नहिं, मह्यरी नूल थइ माटें अपराध क्षमा करो. तेने रामचंद्रजीयें कह्युं के, वज्रकरणनी साथें मेलाप करी चालजे, अने आज पढी प्रणाम करवा बाबत एनुं नाम पण लईश नहिं. ते वात सिंहरथें कबूल करी. वज्रकरण साथें मेलाप कीधो. सिंहरथराजा रामचंद्रजीनी घणी नक्ति करवा लाग्यो, केटलाएक दिवस तेना आग्रहथी तिहां रही, पढी द क्षिणदेश नणी चाल्या. सिंहरथ उज्जयणीयें आव्यो, अने वज्रकरण दशपु रें गयो. तिहां खबर आपनार वणिकने आनरण आपी विदाय कर्यो. ते वज्रकरणराजा मन, वचन अने कायानी शुद्धियें समकेत पाली स्वर्गें प होतो. अनुक्रमें मोक्षसुख पामशे. ए कायशुद्धि उपर वज्रकरणनो दृष्टांत सांनली मन, वचन अने कायानी शुद्धिपूर्वक समकेत पालवुं ॥

इति तपागह्यालंकार श्री शांतिचंद्रगणिशिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्री सम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे त्रिशुद्धिस्व रूपनिरूपणनामा चतुर्थोधिकारः ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं पांच दोष टालवानुं द्वार कहे ले.

॥ डुसिज्जइ जेइ इमं, ते दोसा पंच वज्जणिज्जाउ ॥ संका कंख विगिच्छा, परतिच्छ पसंस संथवणं ॥ २७ ॥ अर्थः—(जेइ के०) जे जीव, पांच दोषें करीने (इमं के०) आ समकेतने (डुसिज्जइ के०) दूषवे एटले दोष सहित करे, ते जेम कादवें करी वस्त्र मलिन करे तेम पांच दोषें करी समकेत मलिन करे ले. (ते दोसा पंच के०) ते पांच दोष (वज्जणिज्जाउ के०) वर्जवा ते पांच दोषनां नाम कहे ले. एक शंका, बीजो कांक्षा, त्रीजो वितिगिच्छा, चोथो परतीर्थिनी प्रशंसा अने पांचमो परतीर्थिनो संस्तव, परिचय.

हवे शंकादि दूषणोनुं स्वरूप कहे ले.

॥ देव गुरुम्मि तत्ते, अच्छि न वच्छित्ति संसउ संका ॥ कंखा कुमयहिलासो, दयादिगुणे लेस देसणउ ॥ २९ ॥ अर्थः—प्रथम शंकानुं स्वरूप गाथाना पूर्वार्द्धें करी कहे लेः—(देव के०) देवने विषे (गुरुम्मि के०) गुरुने विषे (तत्ते के०) नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे (अच्छिनवच्छित्ति के०) अस्ति एटले, ले किंवा नास्ति एटले नथी इति एटले एवो जे (संसउ के०) संशय तेने (संका के०) शंका एवे नामें दूषण कहीयें. ते शंकाना बे भेद ले. एक सर्वथकी शंका अने बीजी देशथकी शंका जाणवी. तिहां धर्म अस्ति अथवा नास्ति एवी जे शंका ते सर्वप्रकारें शंका जाणवी. तथा बीजी देशथकी शंका ते धर्मपदार्थ तो ले परंतु आ धर्म जे कहे ले, ते खरो ले, किंवा आ अमुक धर्माचार्य जे धर्म कहे ले, ते खरो ले? वली जिहां जइ बेसीयें लैयें तिहां सहु पोतपोताना धर्म दीपावी देखाडे ले. तो हवे कयो धर्म खरो करी मानीयें? एवी तेनी शंका टलेज नहीं. पली आपणपुं शंका आणीने बीजा घणा जीवोने श्रीजिनधर्मनी उपरें शंका उपजावे, तेथी सम्यक्त्वमोहनी कर्म बांधे, जमतां जमतां एकने अनाजमांहे माखीना पांखनी शंका आवी तेनी तेने भ्रांति थाय, पली तेनाथी वली बीजा पासें बेठा होय तेने पण भ्रांति थाय. ए दृष्टांतें जाणवी. तेमाटे देव श्रीअरिहंत अढार दोषरहित, अने गुरुसुविहित शुद्धप्ररूपक संप्रति विजयमान श्रीतपागच्छाधिराज श्रीविजयदेवसूरि प्रमुख जाणवा. तथा धर्म तो श्रीअरिहंतभाषित जाणवो. ए त्रण तत्त्व निःशंकपणे अंगीकार करवां. एमां लगारमात्र पण शंका आणवी नहिं. जे निःशंकपणे समकेत पाले, ते दर्शनसंपन्न क

ह्रीयें ॥ यतः ॥ दंसणसंपन्नयाएणं नंते जीवे किं जणयइ, दंसणसंपन्नाया एणं नवमिछ्त्त छेयणं करिंति परं नउज्जाति परं अणुज्जाएमाणे, अणुत्तरे णं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोए माणे सम्मंनावे माणेणं विहरतित्ति ॥

हवे एनेविषे आषाढनूति आचार्यनो दृष्टांत कहे छे. आ नरतक्षेत्रें अयोध्यानगरीयें आषाढनूति आचार्य आव्या, तेणें घणा चेला कस्या. तें सर्वे चेलानी पासेंथी वचन लीधुं के, तमें देवता थाउ. तो मुजने आवी कहेजो. पण देवोमां उपना पछी सर्वे विषयासक्त थया थका कोइ पण आचार्य पासें कहेवा सारु आवे नहिं. एकदा एक प्राणप्रिय परमवल्लन चेलो हतो, तेनी पासेंथी वचन लीधुं अने ते चेलायें काल करती वखतें कबूल कीधुं, जे हुं अवश्य तमारी पासें आवीश. पछी गुरुयें घणा दिवस वाट जोइ पण शिष्य आव्यो नहिं. तेथी गुरुने तत्त्वनी तथा परलोकनी आस्त उतरी गइ, नास्तिकमती थयो. चारित्र मूकीने स्वछंदी थको विचरवा लाग्यो. छ कायनी उपेक्षा करी पण वेष साधुनो राख्यो छे, उतास्यो नथी.

हवे पहेला देवता थयेला शिष्यें अवधिज्ञानें करी जोयुं तो गुरुने नास्तिकपणे विचरता दीठा. पछी गुरुने प्रतिबोधवाने अर्थें एक महोटुं स्थानक विकूर्व्युं. तिहां पोतें देवतायें आवी नाटक करवा मांड्युं. एक गाम वालाने ते नाटक जोतां छ महीना वीती गया, ते नाटक जोतां नूख तृषा आवे नहिं. पछी ते देवता बालकनुं रूप लेइ घणां आनूषण पहेरीने गुरु आगल आव्यो. गुरुयें पूछ्युं के, तुं कोण छो ? तेणें कह्युं जे महारुं नाम पृथ्वीकाइयो छे, गुरुयें तेनुं गलुं मरडीने सर्वे आनरण लइ लीधां. वली केटलेक दूर जइ बालकनुं रूप लइ अटवीमां गुरु पासें आव्यो, तेवारें गुरुयें पूछ्युं तहारुं नाम शुं छे ? छोकरायें कह्युं के महारुं नाम अप्काइयो छे, तेनां पण तेमज आनरण लइ लीधां. वली तेमज आगले जइ तेउकाइयो, पछी वली वायुकाइयो, वली वनस्पतिकाइयो, पछी त्रसकाइयो, एम आगल आगल जइ जूदे जूदे नामें बालकने वेषें गुरुने मल्यो अने गुरुयें पण तेने मारीने प्रत्येक वखतें आनरण उतारी लीधां. वली आगल ते देव एक साध्वीनुं रूप विकूर्वी आंखमां अंजन नाखी कंकणादिक सर्वे आनरण पहेरी उनो. गुरुयें तेने जोइने कह्युं के, तुं महारी दृष्टिथी वेगली जती रहे. केम के तुं जिनशासनने विषे उड्डाहनी करनारी छो. ते सांनली

साध्वी बोली जे तमें म्हारां बिड् जूउ बो, पण तमारी जोलीमां शुं बे, तेतो तपासो ? एवा मर्मनां वचन साध्वीना मुखथी सांनलीने शंका पा म्यो थको आगल चाल्यो, एवामां देवतायें राजानुं रूप बनाव्युं ते राजाने आचार्यें साहामो आवतो दीगे. ते राजा प्रथमथीज ए आचार्यनो नक्त बे एवा राजानुं रूप कर्युं बे तेणे आवीने आचार्यने खमासमण देइने वांद्या, अने सुखडीनी निमंत्रणा करवा लाग्यो पण आचार्यें जाण्युं जे पात्रुं उघा डीश तो आ आनरण राजाना दीगमां आवशे, माटें आहार लेवानो खप नथी, एम राजाने कह्युं. तो पण राजायें बलात्कारें सुखडी नाखवाने मिषें जोलीमां हाथ घाल्यो, एटले आनरण हाथमां आव्यां. ते जोइ रा जा क्रोधवंत थइ बोल्यो के,अरे पापिष्ट! म्हारा ब बालक तेंज मार्या बे, आ आनरण सर्व म्हारा बालकोनां बे. ते सांनली नयथी कंपतो थको आचार्य तिहांज ऊनो रह्यो. कांइ पण जवाब देइ शक्यो नहीं. तेवारें ते देवता पण चेलानुं रूप लइ आचार्यनी आगल आवी उनो रह्यो. अने पगे लागी कहेवा लाग्यो के,हे स्वामी ! आ नाटकादि कर्त्तव्य जे तमें जो यां ते सर्व मेंज करी देखाड्यां. तेने गुरुयें कह्युं में तहारी घणीए वाट जो इ पण तुं आव्यो नहिं, तेथी म्हारी धर्म उपरथी आस्ता उतरी गइ, अ ने में नास्तिक मत आदर्यो. तेने देवतायें कह्युं देवलोकनां विषयसुख मू कीने आ मनुष्यक्षेत्ररूप उकरडामां कोण आवे? एकेकुं विषयसुख नोग वतां शेंकडा वर्ष वहीजाय. एटलामां तो मनुष्यना तुब आउखां पूरां थइ जाय, पण हुंज तमारा स्नेहनो बांध्यो इहां आव्यो बुं. जूउ तमने एक म्हारुं नाटक जोतां मात्र ब महीना वीती गया. ए दृष्टांतें बीजा पण दे वलोक संबंधी सुख जाणी लेजो. माटें तमें हवे कांहि पण श्रीजिनधर्मने विषे शंका करशो नहिं. हुं देवतानी ऋद्धि पाम्यो बुं, ते एज धर्मना पसा यथी जाणी लेजो. ए प्रमाणें गुरुने प्रतिबोध आपीने देवता स्वर्गें गयो.

गुरु पण अलोयणा प्रायश्चित्त लइने गब्रवासमांहे आवी चारित्र पाल वा लाग्यो. तीर्थंकरनी आज्ञा पालतां तथा गुरुनी आज्ञा पालतां आरा धक थाय. जे कारणमाटे आज्ञायें धर्म बे. यतः ॥ आणारुइणोचरणं, आणाएच्चियं इमंतिवयणाउ ॥ एतो अणान्नोगंमिवि, पसु वणिज्जो इमो होइ ॥ १॥ एसा परायणाहिं, पयडा जं गुरुकुलं च मोत्तव्वं ॥ आयार पढम

सुत्ते, ए तोच्चिय दंसियं एयं ॥ २ ॥ एयंमि परिचत्ते, आणाखलु भगवंतो परिच्चत्ता ॥ तिएय परिचाए, दोएह्वि लोगाण चाउत्ती ॥ ३ ॥ नाणचरण परिणामे, एयं असमंजसं इमं होइ ॥ आसण सिद्धीयाणं, जीवाण तहाय भणियमिणं ॥ ४ ॥ नाणस्स होय भागी, थिरचरउ दंसणे चरित्ते अ ॥ धन्नु आवकहाए, गुरु कुलवासं न मुचंति ॥ ५ ॥ इति श्रीएकादश पंचाशके ॥ एम आपाढभूतिनो दृष्टांत सांभली त्रणे तत्त्वने विषे शंका टालवी.

हवे कांक्षा नामें बीजा दूषणनुं स्वरूप कहीये छैयें.

(कंखाकुमयहिलासो के०) जे कुमतीनो अभिलाप होय, वांछा होय तेने कांक्षा कहीयें. ते कांक्षा शायकी थाय? तोके अन्यदर्शनीयोमां (दयादिगुणे लेस देसणाउ के०) दयादिक जे गुण तेनो लेश देखवा थकी कांक्षा थाय, एटले कोइक कुमति मिथ्यादृष्टि जीवमां दया, तप, संयमादिक बाह्यगुण होय, ते देखीने मूढपणाथी एवुं जाणे जे आ पण रूडुं करे छे, माटें एने आदरीयें तो पण भलुंज छे, एनी भक्ति युक्ति करीयें, तो सारी वात छे. एवी अन्यदर्शनीनेविषे अभिलापा करे, ते कांक्षा कहीयें. ए थकी कांक्षा मोहनीयकर्म बंधाय, माटे एहवी सद्दहणा करवी के जे प्राणी श्रीजिनेश्वरदेवनी आज्ञा युक्त तप, जप, संयम, क्रिया, अनुष्ठान करे; तेहिज प्रमाण छे. अन्यथा तो अंधना गमननी बराबरी थाय. एटले अंध पुरुष घणुयें उजाय तो पण मार्ग पामे नहीं. तेम श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा रहित जे कांइ करवुं, ते सर्व उन्मार्ग प्रस्थित कहीयें. तेनी करणी सर्वे अज्ञान कष्टमांहे गणाय माटें अन्यदर्शनीयोनां तप, जप, क्रिया अनुष्ठान देखीने कांक्षा न करवी ॥ यतः ॥ तेसि बहु माणेणं, उमग्ग णुमोयणा अनिठ्ठफलं ॥ तम्हातिछगराणा, ठिएसु जुत्तोछ बहुमाणो ॥ १ ॥ तेपुण समिया तिगत्ता, पियदढधम्मा जीइंदियकसाया ॥ गंभीरा धीमंता, पन्नु वणिज्ञा महासत्ता ॥ २ ॥ उसग्ग ववायाणा, वियाणगा सेवगा जहा सत्ती ॥ भावविसुद्धि समेया, आणारुइणोय सम्मत्ति ॥ ३ ॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥ २९ ॥

हवे एने विषे जितशत्रुराजा अने मतिसागर नामें प्रधाननी कथा कहे छे. भरत क्षेत्रने विषे वसंतपुर नामें नगर तिहां जितशत्रुराजा राज्य करे छे, ते नामें करी यथार्थज छे तेने मतिसागर नामें प्रधान छे, तेनुं

नाम पण यथार्थज छे. एकदा प्रस्तावें राजा सभा भरी बेठो छे, एवामां कोइक अश्वनो व्यापारी नाना देश तथा नानाजातिना घोडा लइ आव्यो छे, तेनी प्रतिहारें आवी खबर करी. राजायें व्यापारीने पासें बोलाव्यो तेणे पण पोताना घोडा राजाने देखाड्या तेमांथी जोइने चंडकीर्णवर्णें बे हांसला घोडा राजायें लीधा. पछी राजा, भोजन करी ते घोडानी परीक्षा करवाने अर्थें मंत्रीश्वरनी साथें अश्वक्रीडा करवा चाल्यो. एक अश्व उपर राजा बेठो अने एकनी उपर प्रधान बेठो. आगल चालतां ते घोडा विपरीतशिक्षित निवड्या तेथी ते राजा अने प्रधान बेहु जण निर्मनुष्य अटवीमां जइ पड्या. वली घोडा पण घणा दोड्या, माटें बेहु मरण पाम्या. अने राजा तथा प्रधान बन्ने भूख्या तरस्या अटवीनें विषे भमता भमता एक जलस्थानक पाम्या. तिहां स्नान, मज्जन करी निर्मल जल पीधुं. अने केटलाएक दिवस तिहां भूख्या बेसी रह्या.

राजानुं सैन्य पण खबर लेतुं लेतुं तिहां आवी पहोच्युं. सर्व जनोयें राजानें नमस्कार कस्यो. हवे राजा घणा दिवसनो भूख्यो हतो, तेणें मूखाइथी कंदोइने तेडी कह्युं के, महारा खावामाटे चणा, अडद अने चोला वगेरेना मोदक तथा वटक प्रमुख रसवती करो. कंदोइयें पण तेमज चणक प्रमुख धान्यना मोदक तथा वटक प्रमुख सुस्वादिष्ट कीधां. राजायें श्राद्धना ब्राह्मणनी पेठें अतृप्तो थको घणादिवसनी भूख मटाडवामाटे चणानी रसवती खाधी. वली अडदनी रसवती खाधी. वली ते आस्वादिने चोलानी रसवती आस्वादी, एम अतृप्तथको घणो आहार राजायें कस्यो. वैद्यादिकें वास्यो तो पण निवर्त्त्यो नहीं. एम घणी जातिना पुष्ट आहार संपूर्ण कस्या. तेथी राजाने अजीर्ण रोग थयो, ते रोगनी घणी वेदना भोगवी आर्त्तध्यानी थको काल करी दुर्गति पाम्यो.

हवे मतिसागर प्रधान पोताना शरीरनुं स्वरूप जाणतो हतो, वमन विरेचन प्रमुख करतो हतो, जलदोष काहाढी वैद्योक्तमार्गें अहार लेतो हतो. तेथी शरीरपाटव पामी घणा वर्ष पर्यंत सुख भोगवी अंतें समाधि मरण करी स्वर्ग सुखनो भाजन थयो.

हवे एनो उपनय कहे छेः—राजामात्य ते संसारी जीव जाणवा. तेमां राजा आहार लंपटी हतो तेथी चणकमाषादि कना मोदकादिक आरोगी अ

जीर्णादिक रोगें करी दुःखी थइ दुर्गति पाम्यो. तेम इहां ते राजाना जेवा जीव ते सार जिनधर्म मूकी अज्ञानदर्शनाभिलाप करी मरण पामी दुर्गति पामशे अने जेम मंत्रीश्वर वमनविरेचनादिकें जलदोष टाली पथ्याहार सेवी घणा दिवस सुख भोगवी समाधिमरण करी स्वर्गनुं भाजन थयो, तेम ते मंत्री जेवा जे जीव ते तपश्चरणादिकें करी कर्मदोष टाली एकाग्रमनें श्रीजिनधर्म आराधी पंमित मरण करी स्वर्ग तथा मोक्षनां सुख पामशे. एम कांक्षानेविषे नृप मंत्री कथा सांभलीने अन्यदर्शननी अभिलाषा न करवी.

हवे चिकित्सा दोष कहीयें छेयें.

॥ विचिगिछा स फलं पइ, संदेहो मुणिजणंमि उ दुगंठा ॥ गुणकित्तणं पसंसा, परिचय करणं तु संथवणा ॥ ३० ॥ अर्थः– श्रीजिनवचननो आराधन करवाना (फलं के०) फल (पइ के०) प्रत्यें जे (संदेहो के०) संदेह करवो (स के०) तेने (विचिगिछा के०) विचिकित्सा कहीयें. एटले मासक्षपण पक्षक्षपण छठ अष्टमादिक जे तप करीयें छेयें, तेथकी फल प्राप्ति थाशे ? किंवा नही थाय ? एवो संदेह आणवो नहीं; परंतु श्रीअरिहंतनी आज्ञा पूर्वक जे तप जपादिक शुभकरणी करवी तेनां फल स्वर्गापवर्गादिक छेज. एवो निश्चय राखवो ॥ यतः ॥ जोजहवायं न कुणइ,मिछद्दिठि तउहुको अन्नो ॥ वढइय मिछत्तं, परसंसं कक्कमाणेवि ॥ १ ॥ पूर्वें जे शंका दूषण कह्युं ते श्रीजिनभाषित नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे संदेह रूप जाणवुं, अने तपश्चरणादिकना फल संबंधि संदेहरूप आ विचिकित्सा दूषण जाणवुं ए रीतें शंकाथकी विचिकित्सानो भेद समजवो.

हवे वली विचिकित्सानो बीजो भेद कहे छेः–(उ के०) तु एटले पुनः (मुणिजणंमि के०) मुनिजनने विषे (दुगंछा के०) दुगंछा करवी. ते जेम के, यतिना मलें करीने मलिन थयेलां एवां गात्र तथा वस्त्र देखीने नाक मरोडे अथवा एम कहे के,प्रासुक पाणीथी स्नान करे तथा वस्त्र धोइ नाखें तो शी हरकत छे ? एवी मनमां चिंतवणा करे, ते दुगंछा कहेवाय. पण यतिनें तो भगवाने अस्नानी तथा अदंतधावन वाला कह्या छे एवा भगवंतना वचननी अनास्ता आवी तेमाटे एने विचिकित्सा दोष कहीयें. एणे करी समकेत दूषाय तेथी आगले भवें कुरूप दुर्गंधपणुं पामे, अनंतसंसारपणे परिभ्रमण करवापणुं पामे ॥ यतः ॥ चत्तारि दुहं सिक्का पसुता तं

जहा ॥ तउ मा खलु पढमाउ डुहसेद्या पसुत्ता तं जहा सेणंमुंम्हे नवित्ता, आगराउ अणगारीयं पवइए निग्गंथे पावयणं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोचयइ णिग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मणं उच्चावचं नियच्छइ विणिग्घाय मावज्जाइ पढमा डुहसिज्जात्ति ॥

तथा चत्तारि सुहसिसेद्याउ पसुत्ता तं जहा ॥ सेणमुंम्हे निग्गंथे पावयणे निग्गंथं वा पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे णो मणं उच्चावचं नियच्छइ णोविणिग्घाय मावद्याइ पढमा सुहसिद्यात्ति ॥ इति स्थानांगे चतुर्थस्थानके ॥

हवे एनेविषे शुनमतिराणीनो संबंध कहीयें ठेयें. जंबुद्दीपना नरतक्षेत्रे वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिने विषे गजपुर नामा नगरें जयसूरि विद्याधराधिपति राज्य करे ठे, तेने शुनमति नामें प्रिय अग्रमहीषी ठे, ते स्त्रीनो नरतारनी सार्थे विषयसमुद्रमां जीलतां सुखें काल जाय ठे, एकदा प्रस्तावें कोइक जीव देवलोकथी चवीने शुनमतिनी कूखरूप शुक्तिकापुटनेविषे मोतीपणे आवी उपनो, ते गर्नने प्रनावें राणीने अष्टापदादिक तीर्थनी यात्रा करवानो दोहलो उपनो, तेवारें राणीयें राजानी आगल आवीने कह्युं के, स्वामी ! तमारी संघातें मुजने अष्टापदादिक तीर्थनेविषे जइने देवपूजा करवानो नाव ठे. ते सांनली जयसूरि राजा पूजानी सामग्री लइ शुनमतिने पण सार्थे विमानमां बेसाडी अष्टापद नणी चाल्यो. तिहां जइ विविध प्रकारें नगवाननी पूजा करी, दोहलो पूर्ण कस्यो. अष्टापदथी पाठा वल्या. पठी मार्गमां आवतां एक वनने विषे डुर्गंध उठल्यो ते नासिकाथी खम्यो जाय नहीं. तेवारें राणी पतिने पूठवा लागी, के आवा चंपकादि तरुवनने विषे डुर्गंध स्यो उठले ठे ? के जे नासिकाथी खम्यो जातो नथी. तेवारें राजायें कह्युं जे आगली शिलापट्टने विषे ऊर्ध्वनुजादंम सूर्यनिवेशित दृष्टियुग एवा यति प्रत्यें तुं नथी देखती के शुं ? ए महाऋषिना शरीरनो डुर्गंध उठले ठे.

ते सांनली शुनमति कहे ठे, के श्रीजिनशासनने विषे जेम सर्व विधि विधान रूडां कह्यां ठे तेम जो यतिने प्राशुक जलथी स्नान करवुं कह्युं हत, तो शी हरकत हती? तेवारें राजायें कह्युं ए वचन बोलीश मां. जे कारण माटे कह्युं ठे के ॥ शुचिर्नूमिगतं तोयं, शुचिर्नारी पतिव्रता ॥ शुचिर्न्यायरतो राजा, ब्रह्मचारी शुचिः सदा ॥ १ ॥ माटे ए यतिमहानुनावने अस्ना

नी थकां पण चारित्रगुणें करी पवित्रज कहीयें, तेवारें शुभमति कहेवा लागी के, घणादिवसनो मल शरीरने विषे निबिड थइ वेगो छे, तेने पाणी यें धोइने आपणे मल टालीयें एवी महारी इच्छा छे, एवां स्त्रीनां वचने करी राजायें पद्मिनीनी पुठें निझरणाना शुद्ध पाणी मगावीने यतिनुं शरीर पोताना हाथें पखाली पखालीने सर्व मलनो नाश कस्यो. ते यतिना मेल टालवानी साथें पोताना शुभभाव छे माटें पोतानुं कर्म पण नाश कस्युं, पछी प्रधान, बावना चंदन लइ केशरथी घसी तेनां विलेपन कस्यां. एम ते यतिनुं शरीर सोनानी प्रतिमा सरखुं कस्युं. पछी ते बेहु यतिने वांदी विमानें बेशी अन्यतीर्थें यात्रा करवा भणी चाल्यां. तिहांथी पाछा वलतां तेहिज रस्ते आव्यां. तिहां शुभमतियें यतिने घणाए जोया, पण दीठा नहिं. तेवारें प्रियपतिने कहेवा लागी के हे स्वामी! यति केम देखाता नथी? तेवारें राजायें कह्युं आ जूउ यतिना शरीरने तो भमरायें वींटी लीधुं छे, तेणे करी दग्धस्तंभ सरिखा देखाय छे आपणे जे श्रीखंम केशरादिकें करी विलेपन कीधुं, तेतो उलटुं यतिनें परिसहनुं कारण थयुं, तेथी भमरायें यतिने संताप्या, माटें हाहा!! गुण, ते दोषने अर्थें थयो.

पछी विद्याधर राजा तिहां आवीने यतिना शरीरथी भमराने अलगा करवा लाग्यो, एटलामां ते यतिने पण विषम परिसह सहन करतां घाती चार कर्मनुं क्षय थइ गयुं अने केवलज्ञान उपनुं, तत्काल चार निकायना देवता मल्या, सहस्र पांखडीनुं सुवर्णकमल रच्युं तेनी उपर बेसी केवली, धर्मदेशना देवा लाग्या. जयसूरिराजायें पगे लागीने कह्युं के, स्वामी! में तमोने परीसहनुं कारण कीधुं माटें महारो अपराध क्षमा करो. तेवारें साधु बोल्या के, तें तो भक्ति करी पण ते भक्तिनुं फल मुझने परीसह पणे परिणम्युं, ते माहारा पूर्वकृत कर्मने योगें जाणवुं ॥ यतः ॥ कोडाणं कम्माणं, डुविसाणं डुपडिक्कंताणं ॥ चइत्ता मुरको नत्थि, पुण अ वेइत्ता तवसी वाजो ॥ १ ॥ तथापि ॥ छियक्को मल मइलं, मुणिमणे कुणइ जिण मयवुगछं ॥ सो डुसिए सम्मत्तो, भवे भवे पावइ डुगछं ॥ २ ॥

एवुं गुरुनुं वचन सांभलीने शुभमति राणी पण गुरुप्रत्यें खमाववा लागी. मनमांहे खेद करवा लागी, तेने गुरुयें कह्युं के, हे शुभमति! तुं खेद म कर. तुझने निंदता गर्हतां खमतां मिछामिडुक्कड देतां घणुं कर्म विलय थ

इ गयुं. हवे एकजवें जोगववा जेटलुं शेष कर्म रह्युं ठे, पढी ते स्त्री जरतार केवलीने वांदी पोताने नगरें आव्यां, अनुक्रमें पुत्रने राज्य आपी बेहु जणें दीक्षा लीधी. ते निरवद्य दीक्षा पाली बेहु सौधर्म देवलोकें देवदेवी थयां. हवे देवांगना चवीने सुरपुर नगरें सिंहरथ राजानी मदनावली नामें ते राजानी अत्यंत प्राणप्रिय स्त्री थइ, ते बेहु जण विषयसुख जोगवतां मदनावलीने पूर्वोक्त यतिनी डुगंबानुं कर्म उदय आव्युं, तेथी अकस्मात् तेना शरीरमांथी डुर्गंध उबल्यो ते घ्राणेंडियें खम्यो जाय नहिं. तेथी तेनी पासें कोइ रही शके नहिं. वैद्यने पूढ्युं तेवारें वैद्यें कह्युं के ए रोग अमारा अनुजव प्रमाणें असाध्य जणाय ठे, ते सांजली राजायें अरण्यमांहे प्रासाद करावी आप्युं, तिहां ते राणी रही; अने राजायें ते महेलनी चारे दिशायें सुजटोने रक्षा करवा राख्या, राणी पोताना कर्मदोषनो वांक देखी तिहां रही.

एकदा ते प्रासादने विषे सूडा अने सूडीनुं जोडलुं आव्युं तेमां रात्रिने समे सूडी सूडाने कहे ठे के, हे स्वामी ! कोइ एवी रूडी वार्त्ता कहो, के जेथकी आपणी रात्रि सुखें वीती जाय, तेने सूडायें कह्युं के, कथा बे प्रकारनी ठे. एक चरिया अने बीजी कप्पिया तेमांथी तमने कइ कथा सांजलवानी इहा ठे ? तेवारें सूडीयें कह्युं चरिता कथा कहो. ते सांजली सूडो कथा कहेतो हवो. अने सूडी तथा मदनावली राणी ए बेहु सांजले ठे.

पूर्वें वैताढ्यपर्वतने विषे जयशूरविद्याधर राजा हतो, तेनी शुजमति नामें जार्या ते अष्टापदनी यात्रा करी पाढी वली तेवारें मार्गमां यतिना मलमलिन गात्र देखी डुगंबा करवा लागी,पढी पतिना कहेवाथी डुगंबाथी निवृत्तिने यतिनी पूजा करी, ते श्रावकधर्म पाली दीक्षा लइ सौधर्म देवलोकें देवांगना थइ. तिहांथकी चवीने सिंहरथराजानी मदनावली नामें स्त्री थइ ठे. ए कथा सांजलतांज मदनावलीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेथी पोतानो पूर्वजव दीठो,तेवारें पोतानुं कर्म निंदवा लागी. वली सूडीयें पूढ्युं, स्वामी! ते मदनावली हमणां क्यां ठे ? सूडायें कह्युं, आ प्रासादनेविषे बेठी ठे पूर्वले जवें यतिनी डुगंबा करवाथी डुर्गंध शरीर पामी ठे. हवे जो ए सात दिवस सुधी त्रिकाल जिनपूजा करे,तो एनी डुर्गंध विलय थइ जाय. कपूर,कस्तूरी, जेवो शरीरनो गंध थाय. ते सांजली मदनावली हर्ष पामी; सूडी आगल पोतानुं वृत्तांत कह्युं. ए कथा कहीने सूडो सूडी बेहु अदृश्य

थइ गयां, अने मदनावलीयें विचार्युं जे ए सूडायें म्हारा पूर्वला भव शी रीतें जाण्या हशे? एम चिंतवी पछी सात दिवस सुधी एकाग्रमनें करी त्रिसंध्य जिनपूजा करी. तेवारें सातमे दिवसें शरीरथकी दुर्गंध नाश पाम्यो. अने कर्पूर, कस्तूरी, कमलगंध प्रगट थयो. तेनी सुभटोयें जइ राजाने वधामणी आपी. राजायें तेमने हर्षदान आप्युं. पछी राणीने हाथी उपर बेसाडी वाजते गाजते नगरमांहे पेसारो करी घेर तेडी लाव्या.

एकदा उद्यानपालकें आवी राजाने विनति करी के स्वामी! तमारा मनोरथ उद्याननें विषे एक साधुने केवलज्ञान उपनुं छे. तेनो देवता महोत्सव करे छे, तेवारें मदनावलीयें कह्युं के स्वामी! चालो केवलीने वांदीयें. धर्मदेशना सांभलीयें अने आपणा मनना संदेह भांजीयें, पछी उद्यानपालने वधामणी आपी राजा राणी बेहु वांदवा गयां. तिहां पंचाभिगम सांचवी पंचांग प्रणाम करी धर्मदेशना सांभलवा बेठां. देशना पूर्ण थयानंतर मदनावलीयें पूछ्युं स्वामी! जेणें मुझ दुःखणीने प्रतिबोध दीधो, ते सूडो कोण हतो? केवलीयें कह्युं के तहारो पूर्वला भवनो भरतार ते सूडाने रूपें आवी तुझने उपकार करी गयो. मदनावलीयें पूछ्युं ते देवता हमणां तमारी सभामां आव्यो छे? केवलीयें कह्युं आ म्हारी सन्मुख बेठो छे. तेवारें सुवर्णाभरणें भूपितथकी मदनावली बे हाथ जोडी देवता प्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामी! तमें अवसर जोइ म्हारी उपर घणोज रूडो उपकार कीधो. देवतायें कह्युं के, हुं हवे आजथी सातमे दिवसें चवीने विद्याधरनो पुत्र थाइश. तिहां तुं आवीने मुझने प्रतिबोध करजे. मदनावलीयें कह्युं के मने जाणवामां आवशे तो प्रतिबोध आपीश. ते सांभली देवता केवलीने वांदी स्वर्गें गयो.

हवे मदनावली वैराग्य पामीथकी राजाने समझावी दीक्षा लेती हवी. राजायें श्रावकधर्म पडिवज्ज्यो अने पोताने नगरें आव्यो. मदनावली साध्वी विविध प्रकारनां तप करती विचरे छे. एकदा ते साध्वी रात्रिने समयें द्वारदेशें काउस्सग्गमां उभी रही छे. एवामां ते देवतानो जीव चवीने मृगांक एवे नामें विद्याधरनो पुत्र थयो छे. ते यौवन पामी विद्याशक्तिवंत थयो छे. ते विद्याधर पण तिहां आव्यो अने काउस्सग्ग धारिणी दुःष्करकारिणी एवी मदनावली साध्वीने यौवनवंती देखीने कामें पीडित थयो थको प्रार्थना करवा लाग्यो के, हे मदनावली! तुं आवी म्हारा वि

मानमां बेस. आपणे बेहु यौवननो लाहो लहीयें, तुं आ तपस्यारूपी कुहाडे करीने शरीररूपी कल्पवेलीने शा सारु छेदी नाखे छे ? ताह्‌रे यौवने मह्‌ारुं यौवन अनें मह्‌ारे यौवनें तह्‌ारुं यौवन फलवंत थाय, एम कर. इत्यादि घणी युक्तियें करी प्रार्थना करी पण मेरु पर्वतनी चूलिका जेम वायरे करी चलायमान थाय नहिं. तेम ते साध्वी पण चलायमान थइ नहीं. तेवारें वली अनुकूल परिसह करवा लाग्यो. तेम छतां अग्निथकी जेम सुवर्ण दीपे, तेम ते परिसहथी साध्वीनुं ध्यान दीपतुं थयुं. ते शुभध्यानने योगें साध्वीने तिहांज केवलज्ञान उपनुं. तेनो देवतायें मह्‌ोछव कीधो. ते मह्‌ोछव देखी मृगांक विद्याधर चमत्कार पाम्यो. पछी केवली थयेली साध्वीयें तेने पूर्वभव संभलावी प्रतिबोध आपीने कह्युं के, तुं सांसारिक मोह त्यागीने निःकेवल श्रीजिनधर्मनेविषे प्रीति कर. विद्याधरने पोताना पूर्वला भव सांभलवाथी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं. तेथी वैराग्य पामी स्वयमेव लोच करी प्रव्रज्या लइ बेठो. अने साध्वीनें कहेवा लाग्यो जे तमें रूडो प्रत्युपकार करी पोतानो बोल पाल्यो. पछी ते चारित्र आराधी तपस्या करी कर्म निर्घाटन करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पह्‌ोच्यो. तेमज मदनावली साध्वी पण घणा दिवसपर्यंत केवलपर्याय पाली मोक्षें पह्‌ोची. ए विचिकित्सा उपर शुभमतिनो दृष्टांत सांभली विचिकित्सा करवी नहीं.

हवे चोथो प्रशंसा दोष कहीयें छैयें.

(गुणकित्तणंपसंसा के०) जे मिथ्यादृष्टिना गुणोनुं कीर्त्तन करवुं, तेने प्रशंसा कहीयें. तेमनी प्रशंसा करवा थकी मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय, तथा मिथ्यात्वसंबंधी करणी करवानी इछा उपजे, एटले ए पण करणी रूडी छे, एवुं जाणी मिथ्यात्वनी करणी विशेषथकी करे ॥ यतः॥ आणाएअ वट्टंते, जो ववूहेइनोह दोसेणं ॥ सो आणा अणवछं,मिछत्त विराहणं पावो ॥१॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥

हवे ते प्रशंसा बे प्रकारनी छे. एक देशथकी अने बीजी सर्वथकी; तेमां जे सहु पोत पोतानो धर्म करें, तें रूडो छे, एवुं बोलवुं ते सर्वथकी प्रशंसा कहीयें, अने जे मिथ्यादृष्टिनुं एकीकरण वखाणवुं ते देशथकी प्रशंसा कहीयें. जेम जे कोइ चोरने वखाणे ते चोर होय जेम अभयकुमारें चोर वखाण्या ते जातें चांमाल हतो तेने बोध आपी आंबानी चोरी मनावी

पण ते जातें चोर न हतो तेम जे मिथ्यादृष्टिने वखाणे ते मिथ्यादृष्टिमांहे गणे. तथा जे अनाचारीने वखाणे तेने अनाचारी कहीयें ॥ यतः ॥ नवहिंगणाहिं समणे निग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे नाइक्कम्मइ तं जहा ॥ आयरिय पडिणीयं, उवज्झाय पडिणीयं, थेरपडिणीयं, साहु कुल गण संघ नाण दंसण चरित्तपडिणीयं. जे घणीज मिथ्यादृष्टिनी अने कुमतिनी प्रशंसा करे ते दर्शन प्रत्यनीक मांहे गणाय. तेमाटे मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा न करवी ॥ यतः ॥ जे भिक्खुवा भिक्खुणीवा परपासंमाणं पसंसं करेज्जा, जे विपणंनिण्हगाणं पसंसं करेज्जा, जेनिण्हगाणं अणुकूलं भासेज्जा, जेणनि ण्हगाणं आययणंविसेज्जा, जे निण्हगाणंगायं सज्झं पयरकरंवा परुवेज्जा,जे णेनिण्हगाणं संतीए कायकिलेसाइए तवेइवा संजमेइवा माणेइवा विखा णेइवा सुएवा पडिचेइएवा अविसुद्धमुद्धपरिणामगए सलाहिज्जो सेवियणं परमाहम्मि एसु उववज्जेजाणं जहा सुमति ॥ इति महानिशीथे चतुर्थाध्ययने॥

हवे ए मिथ्यादृष्ट्यादिकनी प्रशंसा करवानेविषे सुमतिनो दृष्टांत अने प्रशंसा अणकरवानेविषे नागीलनो दृष्टांत कथा रूपें कहीयें बेयें.

आ भरतक्षेत्रे मगधदेशें कुशस्थलपुरनगरने विषे जीवादिक नवतत्त्व ना जाण एवा सुमति अने नागील एवे नामें बे भाइ घणा धनाढ्य वसे बे. अन्यदा अंतराय कर्मने योगें तेमनी पासेंथी धन जतुं रह्युं, तो पण पोतानुं सत्य मूकता नथी. कूड कपट बल बद्म नथी करता. प्रतिक्रमण पौषधादिक शुभकरणी कर्या करे, तेने कदापि मूके नहीं. एम करतां जेवारें अत्यंत द्रव्यहीन थया अने सगा सणेजाना स्वार्थ पहोंचता रह्या अने मान महत्त्वपणुं पण उबुं थयुं, तेवारें बे भाइ विचार करवा लाग्या के, आपणे धनहीन थया तेथी सर्वत्र मानहीन थया ॥ यतः॥ जा वीहो ता पुरिसस्स, होइ आणावडिछउ लोउ ॥ गलीउ दयंघणं वि, जला विदूरं परिचयइ ॥ १ ॥ तेमाटे हवे आपणें परदेश जइयें के ज्यां आपणने कोइ उलखे नही. एवुं विचारी ते बेहु भाइ परदेशें चाल्या. वाटें चालतां चालतां पांच साधु तथा एक श्रावकने मार्गे जता दीठा. तेवारें नागीलें कह्युं के, हे भाइ सुमति ! आपणने ए सथवारो रूडो मल्यो माटें ए साधुनी सायें जइयें. ते वात सुमतियें कबूल करीने बेहु भाइ तेमनी संघातें चाल्या. आगल चालतां ते साधुनी नागीलें परीक्षा करी अने तेणे ते साधुमां केटला एक अपलक्षण

दीठां. जेम खराब झवेरात होय ते झवेरीनी परीक्षायें पहोंचे नहीं, तेम ते साधुउने पण नागीलें पाखंमी कपटी जाण्या. परीक्षायें पोहोता नहीं तेवारें पोताना नाइ सुमतिने कहेवा लाग्यो के, आपणे एनी साथें जइशुं नहीं, कारण के बावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ नगवानना मुखथी में सां नव्युं ठे, के ॥ जहा एवंविहे अणगारे रुवे नवंति तेअकुसीले तेविहीएविनि रीसिउ,ण कप्पंतीति ॥ कुसिलोसन्न पासडो, सछंदो सिढिलो तहा ॥ दिठी एवी इमं पंच, गोयमा न निरीसए ॥ १ ॥

तेमाटें ए सथवारो मूकी बीजो सथवारो जोइशुं, जे माटें एमनी साथें जातां पण आलापसंलापादिक थाय,ते थातां श्रीतीर्थंकरनी आज्ञानो अति क्रम थाय,तेथी जीव अनंत संसारी थाय ॥ यतः ॥ पमाएणं च रत्ताणं,णंत संसार वड्ढणं ॥ जम्मालि हुआ सावद्य,आयरिया ईण तिडयं ॥ १ ॥ आणाइविय सरणं, तप्नंगे जाण किं न नग्गंति॥आणं च अइक्कंतो,कम्मादेसा कुणइ सवं २

ते सांनली सुमतियें नागीलने कह्युं के, तुं ए साधुउनो सथवारो मूकी जावा चाहातो होतो सुखें जा. परंतु हुं तो ए सथवारो मूकीश नहीं. तुं घेलो थयो ठो. जे ए साधुउमां दोष देखे ठे. पण ए साधुउ निर्दोष म हानुनाव ठे. एम बेहु नाइ परस्पर विरोध बोलता थका पोतपोतामां अ प्रीति थावा लागी, तेवारें नागील कहेवा लाग्यो ॥ यतः ॥ जीवाणं चिय ए थं, दोस कमढजाल कसियाणं ॥ जे चउगइ निप्फिडणं, हेउवएसं न बुज्झं ति ॥ १ ॥ नोवेमि तुम्न दोसं, नायावि कालस्स देमिदोसमहं ॥ जहिय बु द्धिएस, होयरावि नणिया पकुप्पंति ॥ २ ॥

एवुं नागीलनुं वचन सांनलीने सुमति जे ठे,ते परिणामें कुमेति ठे, ते नागिलप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, एक तुंहीज शास्त्रवादी आव्यो जे आवा म हानुनावना अवर्णवाद बोले ठे. हुंतो जाणुं बुं जे ए साधुउनी उपरांत कोइ ठेज नहीं. जे विचित्र प्रकारनां तप करे ठे, गोचरीनी शुद्धि करे ठे, तपें करी डुर्बल शरीरवाला थया ठे, अने तुं महोटो श्रावक थइ पड्यो ठो, के जे एवा महानुनावने कुशीलीया अने अनाचारी करी दीये ठे. तेवा रें नागील बोल्यो जे, मुजने एनी उपर कांइ लगारमात्र पण द्वेषबुद्धि नथी. पण तीर्थंकर पासेंथी सांनव्युं ठे, जे एवा लक्षणें लक्षित जे होय, तेने कु शीलीया कहीयें, माटे तेवानुं मोहोढुं पण न जोवुं.

तेवारें सुमति बोल्यो के, जेहवो तुं निर्बुद्धि छो तेवो तह्यारो तीर्थंकर पण निर्बुद्धिज हशे, के जेणें एवा साधुउंनी साथें संगत करवामाटे तुजने निवार्यो छे. एटलुं बोलतांज सुमतिनुं मह्योढुं नागीलें पोताने हाथें करी ढांक्युं अने कहेवा लाग्यो के, हे नाइ! एवुं वचन मुखथी न बोल. श्री तीर्थंकरदेवनी आशातना करी अनंतसंसारी कां थाय छे? तुं ए साधुउनां तप क्रिया अनुष्ठान वखाणे छे पण हुं तो एमने बालतपस्वी जाणुं छुं, जेमाटें एमां कांइ साधुना गुण देखाता नथी, केम के गइकालें एमणे एक उढण विनानी स्त्री दीठी, तेने जोवा लाग्या पण तेनी उपरथी पोतानी दृष्टि पाछी खेंची लीधी नहीं. तेमाटे कह्युं छे के ॥ यतः ॥ चित्तभित्ति न निज्झाए, नारीवासु अलंकियं ॥ नरकरंपिव दिठूणं, दिठि पडिसमाहरे ॥ १ ॥ तथा वली तेने देखीने आलोयुं पडिक्कम्युं पण नहीं तथा आजे प्रनातें वस्त्रने छेहडे हरिकायनो संघट कीधो तथा काचा पाणीनो परिसंनोग कीधो, इत्यादिक एनां घणांज विपरीत आचरण में दीठां. तेमाटें तुजने कहुं छुं के, एनी संगति करवी तथा प्रशंसा करवी रूडी नथी.

ते सांनली सुमति बोल्यो के, नाइ! ए साधु कुशीलिया हो अथवा सुशीलिया हो, पण मह्यारे तो एनी साथेंज जावुं छे. माटें मह्यारो हाथ मूक. ए पछी ए लांबा निकली जशे तो हुं एमने मली शकीश नहीं. तेवारें नागीलें तेनो हाथ मूकी दीधो, सुमति त्यांथी जइने पहेला साधुउने मल्यो. अनुक्रमें ते साधुउनी पासेंथी ते सुमतियें दीक्षा पण लीधी. एम कुशीलीये कुशीलीया एकठा मल्या; जेम काजलमां काजल मली जाय तेनी पेरें जाणवुं. अनुक्रमें बार वर्ष पर्यंत महारौरव डुष्काल पड्यो. ते मांहे पांचे साधु घणा अनाचरण सेवी अंते अणालोइ अपडिक्कमी काल करी पिशाचादिक व्यंतरदेवोनां वाहनपणें उपना. तिहांथी चवी म्लेछदेशमां उपजशे. तिहां घणा जीवोनो वध करी मद्यमांस नक्षण करी सातमी नरकपृथ्वीयें जाशें. तिहांथकी चवी घणाकाल नमी त्रीजी चोवीशीयें वली समकेत पामशे. ते समकेत पाम्या पछीना नवथकी त्रीजे नवें पांच साधुउमांथी चार साधु मोक्षें जाशे, अने पांचमो जे सर्वथकी मह्योटो छे ते तो अनव्य छे एकांत मिथ्यादृष्टि छे, ते केवारें मोक्ष पामशे नहीं.

वली गौतमस्वामीयें पूछ्युं के, हे नगवन्! सुमतिनो जीव नव्य छे के

अनव्य छे? नगवंतें कह्युं नव्य छे. तेवारें गौतमें पूछ्युं जो नव्य छे, तो ते काल करी किहां जइ उपन्यो ? नगवान् बोल्या, परमाधामी देवनेविषे जइ उपन्यो. गौतमे पूछ्युं, हे स्वामी! नव्यजीव होय, ते परमाधामी देवमां उप जे ? नगवाने कह्युं, हा उपजे. गौतमें पूछ्युं, कोण जीव उपजे ? नगवाने कह्युं के, जे जीव माहामिथ्यात्वने उदयें करी पोताना गुरुनो तथा पोतानो उपरी जे आपणी उपर परम हितचिंतवतो होय तेनो परम हितोपदेश न माने ते द्वादशांगी रूप श्रुतज्ञान विराधी सिद्धांतनो मार्ग जाणी अणजा णी अनाचार प्रशंसीने परमाधार्मिक देवोनी जातिमांहे जइ उपजे, तेम ए सुमति पण अनाचारीनी प्रशंसा करी श्रीतीर्थंकरनी आशातना करी पर माधार्मिक देवमां जइ उपनो छे. वली श्रीगौतमे पूछ्युं आगल एनी शीग ति थाशे ? नगवान् बोल्या, एणें अनाचारनी प्रशंसा करी तेथकी सन्मार्ग प्रनाशन वखाण्युं, ते कर्मना उदयथी अनंतसंसारीपणुं उपार्ज्युं, तेमाटे हुं एना केटला नव तुजने कहुं. एतो अनेक पुजलपरावर्त्त नमतां नमतां पण संसार परिज्रमणनो पार पामशे नहीं. तो पण तुजने एना संक्षेपथी स्वल्प नव कहुं छुं, ते तुं सांजल.

आ जंबूद्वीपने वींटी रह्यो जे लवणसमुद्र तेमां जे स्थानकें गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीयें प्रवेश कस्यो छे, ते स्थानकथकी दक्षिणदिशिना नागें वेदिकाथकी पंचावन योजन गया. पछी साडाबार योजन प्रमाण हाथीना कुंनस्थलनें आकारें साडात्रण योजन उंचो द्वीप छे, तिहां अत्यं त घोर अंधकारमय घडीयालने आकारें सुडतालीश गुफा छे. ते गुफाउने विषे जलचारी मनुष्य वसे छे. ते मनुष्य वज्रऋषननाराच संघयणवाला, माहाबलिष्ट पराक्रमवंत, साडाबार हाथ प्रमाण शरीरवाला, संख्याता वर्ष आउखाना धणी छे, तेमने मद्य मांस प्रिय छे, स्वज्ञावेंज परस्त्री लंपट छे, देखवामां काले वर्णें, डुर्वर्ण, डुर्गंध, खरस्पर्शवाला माजार, राक्षसना जेवी कठिण नाषाना बोलनारा, एवा अंतरंग गोलीया मनुष्य छे तेनी अंतरंग गोली लेइ चमरी गायना श्वेतवालनी साथें गुंथी बेहु काने बांधी समुद्रमां हे प्रवेश करीयें तो तेना महिमायें करी जलहस्ती, मघरमछ, कछप, सुसु मार, ग्रहादिक जलजंतुउथी नय थाय नहीं. अने समुद्रमांहे पेशी समुद्र अवगाहीनें मनोवांछित रत्न लेइ घरे आवे. पण ते मनुष्योनी गोली काढा

डतां लेतां घणुं दुःख उपजे, ते दुःख नारकीना दुःखनी साथें मेलवीयें ते टलां छे पण ते जीवतांथकां तेहनी गोली काढी शकाय नहीं, जे कारण माटे ते मनुष्यो महाबलवंत होय छे.

इहां श्रीगौतमस्वामीयें पूछ्युं के, हे भगवन्! ते मनुष्यनी गोली कया प्रकारें लेवाय? तेवारें भगवानें कह्युं, हे गौतम! तेहज लवणसमुद्रनेविषे वज्रमय शिलासंपुट महाघरट्टने आकारें छे. ते शिलासंपुट उघाडीने तेमां मधु, मद्य, मांसना भाजन मूके ते मूकनार रत्नद्वीपना वाणीया पापना प्राणीया एवा मनुष्य छे. ते मनुष्यने आवतां जेटले ते देखे, तेटले ते रत्नवाणीयाने मारवाने अर्थे उजाता धाइ आवे अने रत्नवाणीया पण जेवारें तेमने आवता देखे, तेवारें मधु, मद्य, मांसना खंभें भरेला तुंबडा नाखतां नाखतां ते रत्नवाणीयां पाछा नासे. अने पहेला अंतरंगगोलीया मनुष्य ते मधुआदिकने खावामाटे तिहां ते शिलासंपुटमांज रहे. ते खाइ रह्या नंतर फरी पण तेमनी पछवाडे दोडे. तेवारें वली पण ते तेवीज रीतें मद्यमांस नाखे. ए प्रमाणें जे स्थानकें वज्रमय शिलाघरट्ट उघाडा करी मूक्या छे, तेमांहे मांसादिक गंधना खेंच्या खावामाटें प्रवेश करे अने रत्नवाणीया पण ते स्थानकें आवे, पछी सात आठ दिवस केडें सर्व हथीयारें सहित सन्नाह पहेरी ते शिलाघरट्टने चारें वाजु सात मांफले वींटी केटलाएक ते शिलासंपुट एकठा मेलवे जो ते मांहेथी पण ते निकलवा पामे तो ते मनुष्यो सघलाये रत्नवाणीयानो प्रलय करे, एवा ते बलवंत छे. आखो रत्नद्वीप उजड करे, पण ते घरट्टसंपुटमांहे आव्याथका पण मरे नहीं. अने तेनां हाड काना खंभ पण थाय नहीं. एवा ते दुर्भेर छे, तेमनां हाड पण वज्रमय छे.

हवे ते रत्नवाणीया महाबलवंत वृषभ जोतरी अरहट्टनी पेरें ते वज्रशिलासंपुट भमाडे. एवुं एकवर्ष पर्यंत करे, तिहां अंतरंग गोलिया एक वर्षसुधी महोटी वेदनाने अनुभवीने जो काल करे, तोपण तेना हाथ पग प्रमुखनां संधाण त्रूटें परंतु हाड खंभोखंभ थाय नहीं. एटले हाडना कटके कटका थाय नहीं. हवे जेवारें ते मनुष्योना आंगुलि प्रमुख अवयव आटानी पेठें बाहेर पडता देखे, तेवारें रत्नवाणीया, ते शिलासंपुटनो उपरलो पुट परहो करे अने शोधी करीने तेहनी गोलीयो उपाडी लीये.

इहां गौतमस्वामी पूछवा लाग्या के, भूख्या तरस्या छता एवी वेदनाने

अनुज्ञवता थका पण एक वर्ष पर्यंत केम जीवता रही शके ढे? ज्ञगवाने कह्युं स्वकृतकर्मना उदयथकी जीवता रहे ढे. हे गौतम! ते सुमतिनो जीव परमाधार्मिक देवतामांहेथी चवीने अंतरंग गोलिया मनुष्यमांहे आवी उपजशे, तिहां वेदना ज्ञोगवी वली पण तेहज अवतार लेशे. एम अनुक्रमें सात ज्ञव तिहांज करशे. पढी नवमे ज्ञवें व्यंतरदेव थाशे, दशमो वनस्पतिमां लींबडानो अवतार लेशे, अगीयारमो मनुष्यमां स्त्रीपणे उपजशे. बारमो तिहांथी ढठी नरकपृथ्वीयें जाशे. १३ तिहांथी चवी कोढीयो मनुष्य थशे. १४ तिहांथी चवी यूथाधिपति हस्तिपणे उपजशे. १५ तिहांथी चवी अनंतकाय वनस्पतिमांहे. १६ तिहां अनंतो काल परिज्ञ्रमण करशे. १७ तिहांथी निकली मनुष्य थशे. १८ तिहांथी चवी स्वयंज्ञुरमण समुड्ने विषे माहामत्स्य थशे. १९ तिहांथी मरी सातमी नरकपृथ्वीयें जशे. २० तिहांथी चवी बलदपणे उपजशे. २१ बलद मरीने मनुष्य थाशे. ए प्रमाणें घणा ज्ञव करी महाइन्यकुलनेविषे अवतार पामी दीक्षा लेशे. २२ तिहांथी अनुत्तरविमानें देवता थशे. २३ तिहांथी चक्रवर्त्ती महासम्यग्दृष्टि थाशे, ते चक्रवर्त्तीनी पदवी ज्ञोगवी पढी दीक्षा लइ यथोपदिष्ट दीक्षा पाली केवलज्ञान पामी २४ मोक्षें जशे. माटे हे गौतम! ए सुमतियें कुशीलियानी संगति करी वली ते कुशीलियानी प्रशंसा करीने तीर्थंकरदेवनी आशातना करी तेथी अनंता ज्ञव संसारमां परिज्ञ्रमण करशे. अंतरंग गोलियानां छुःख पामशे, तेमाटें मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी प्रशंसा न करवी ॥ इति महानिशीथना चोथा अध्ययनगत सुमतिनी कथा ॥

हवे पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते दोष कहे ढे. मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी साथें जे (परिचयकरणंतु संथवणं के०) परिचयनुं करवुं तेने संस्तवन कहीयें, माटे ते सम्यक्दृष्टियें वर्जवुं. केम के मिथ्यादृष्टिनी साथें परिचय करतां थकां बोधबीज जाय अने परिचय करवाथी एवा परिणाम थाय जेम के एनो धर्म पण रूडो ढे. एवुं बोलतां थकां मिथ्यात्व तथा कुमतिनी वृद्धि थाय माटे मिथ्यादृष्ट्यादिकनो संस्तव टालवो ॥ ३० ॥

ए उपर सौराष्ट्रवासी श्रावकनो संबंध कहीये ढैयें. सौराष्ट्रदेशने विषे कोणिक आचार्यनो उपासक, एक श्रावक ज्ञानादिक तत्त्वनो जाण ढे. अन्यदा छुष्काल पडवाथी ते श्रावक मालवा ज्ञणी चाल्यो, मार्गमां बौध लो

को मल्या तेनी सायें जवा लाग्यो. तेवारें बौद्धोयें कह्युं के, आ अमारो उ पधि उपाडो तो तमोने खावा सारु आपीयें ते तेणें अंगीकार कर्युं. पठी तेनी सायें परिचय करतां तेनो परिणाम एने परिणम्यो. अनुक्रमें चालतां मार्गमां असाध्य रोग ऊपनो, तेवारें तेने मार्गमां पडतो मूकी रक्त वस्त्र उढाडीने बौद्धो चालता थया, ते मरीने यक्षदेव थयो. तिहां अवधिज्ञान नो उपयोग दीधो. तेवारें रक्तवस्त्रें ढाकेलुं पोतानुं शरीर दीठुं, ते देखीने वि चारवा लाग्यो जे,बौद्धना पसायथी हुं यक्ष थयो छुं,तो हवे बौद्धना शास ननो महिमा वधारुं. एम चिंतवी जिहां बौद्ध नोजन करवा बेठा हता, ति हां जइने कंकण, केयूर, मुद्रामंमित पोतानो हाथ देखाड्यो, अने पोता नी सर्व हकीगत कही. वली लाडु तथा घेवर प्रमुख बौद्धोने खावासारु निरंतर आपवा लाग्यो. एवो प्रनाव देखी घणा लोक बौद्धना नक्त थया. सर्व कहेवा लाग्या जे बौद्धनुं शासन घणुं सारुं ठे. जेमाटे एमने देवता आवीने गाडवा जेवडा लाडवा आपे ठे.

एकदा उज्जयणी नगरीयें कोणिक आचार्य आव्या तेनी आगल श्राव कलोकोयें सर्व वृत्तांत कह्युं के, स्वामी! आ प्रकारें कुमतियोनी वृद्धि थाय ठे. ते सांनली आचार्यें पोताना यतियोने शीखावी मोकल्या के, जेवारें हाथ निकले तेवारें कहेजो के हे यक्षोत्तम! तुं प्रतिबोध पाम. अने पंच परमेष्ठी नमस्कार संनार. तुं उत्तम श्रावक हतो ठतां मिथ्यात्वनी वृद्धि केम करे ठे? एवी आचार्यनी शिखामण सांनलीने यतियो तिहां गया ति हां यक्षनो हाथ निकल्यो तेने यतियोयें पकडी राख्यो अने गुरुयें कहेलो संदेशो कह्यो, ते सांनली यक्ष प्रतिबोध पाम्यो. तेना हृदयमांथी मिथ्या त्व ज्ञान गयुं. अने सम्यक्ज्ञान तेना हृदयमां आव्युं, तेवारें ते यक्षें उज्ज यणीयें गुरुसमीपें आवीने पाप आलोववा कह्युं. गुरुयें तेने कह्युं के, पाप नी आलोयणा एहज ठे के तहारामां मिथ्यात्व व्याप्युं ठे, तेनो त्याग कर. ते पण तेमज निरंतर तिहां आवीने सर्वजनने कहेवा लाग्यो के बीजां सर्व दर्शन मिथ्या ठे एक श्रीजैनदर्शन ठे, तेहज मुक्तिनुं अर्थी ठे, माटे तेनेज आदरो. एम सर्वनी आगल प्रतिदिन श्रीजिनशासनना गुण बोल तो विचरवा लाग्यो, तेथी घणालोको प्रतिबोध पामी बौद्धमत मूकीने श्री जिनधर्मना रागी थया. एवी सौराष्ट्रवासी श्रावकनी कथा सांनली अन्य

दर्शनीनो परिचय टालवो जेम धंतुरानी संगतथी तैल विणसी जाय तेम मिथ्यात्वनी संगतथी समकेतनो विनाश थाय. तथा जेम मोघरानी संगतथी तैलमां सुगंध थाय, तेम सुगुरु तथा साधर्मीनी संगतथी समकेत सुगंधी थाय.

इति तपागछालंकारश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्यश्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे शंकादिपंच दूषणस्वरूपनिरूपणनामा पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे बठुं आठ प्रानाविकोनुं द्वार कहे बे.

॥ सम्मं दंसण जुत्तो, स सई सत्ति प्पनावगो होई ॥ सो पुण इब विसिठो, निद्दिठो सुत्त निईए ॥ ३१ ॥ अर्थः—जे (सम्मंदंसणजुत्तो के०) निरतिचार पणे सम्यक्त दर्शनें करीने युक्त होय (स के०) ते पुरुष (सईसत्ति के०) बतिशक्तियें (प्पनावगोहोई के०) प्रानाविक होय श्रीजिनशासननी दीप्ति करे, (सोपुण के०) ते पुरुष वली (इब के०) इहां श्रीजिनागमप्रणीतसूत्रने विषे ज्ञानादिक गुणें करी (विसिठो के०) विशिष्ट प्रधान वचनादिक लब्धिनो धणी एवो (निद्दिठो के०) कह्यो बे ते जेम आकाशने विषे सूर्य, चंद्र अने घरने विषे जेम दीपक शोने बे, अजवालुं करे बे. तेम श्रीजिनशासनरूप आकाश तथा घर तेनेविषे सूर्य, चंद्र तथा दीपक समान ते पुरुष जाणवो. (सुत्तनिईए के०) सूत्रनी नीतियें करी जाणवो, सूत्र जे आगल पावयणी प्रमुख कहेशे, ते सूत्रने न्यायें कह्यो ॥३१॥

हवे ते प्रानाविक आठ नेदें बे, ते आठ नेद कहे बेः—

॥ पावयणी धम्मकही, वाई निमित्तिउ तवस्सी य ॥ विद्या सिद्धो य कई, अठेव पनावगा नणिया ॥ ३२ ॥ अर्थः—एक (पावयणी के०) प्रावचनिक, बीजो (धम्मकही के०) धर्म कथिक, त्रीजो (वाई के०) वादी, चोथो (निमित्तिउ के०) नैमित्तिक, पांचमो (तवस्सी के०) तपस्वी, (य के०) वली बठो (विद्या के०) विद्यावान्, सातमो (सिद्धो के०) सिद्ध (य के०) अने आठमो (कई के०) कवि ए (अठेव के०) आठज (पनावगा के०) प्रानाविक श्रीवीतरागें (नणिया के०) कह्या बे ॥ ३२ ॥

हवे प्रकरणकर्त्ता ए आठनुं स्वरूप कहे बेः—

॥ कालुच्चिय सुत्तधरो, पावयणी तिबवाहगो सूरी ॥ पडिबोहिय नवज

णो, धम्मकही कहण लद्धिल्लो ॥ ३३ ॥ अर्थः—(कालुच्चिय के०) कालोचित एटले जे कालें जेटलो उचित अर्थात् योग्य होय, तेटला वर्त्तमान (सुत्तधरो के०) सूत्रनो धारक होय उपलक्षणथी तेटला श्रुतना अर्थनो धारक पण लेवो, जेमाटे सूत्र अने अर्थ संयुक्त जोइयें. केम के अर्थविना सूत्र नथी अने सूत्र विना अर्थ नथी, जेम घृतविना दूध नथी अने दूध विना घृत नथी. ए दृष्टांतें जाणवो. ते (पावयणी के०) प्रावचनिक कहियें. एटले प्रवचन द्वादशांग गणिपिटक छे, जेहने ते प्रावचनिक जाणवुं उत्तम आचार्यादिकें प्रवचननो अभ्यास करवो. केम के प्रवचनना अभ्यास विना आलोचना दानादिक कल्पे नहिं. तेमाटे अर्थसहित द्वादशांगीनो जे धारक होय, तेनें प्राभाविकाचार्य कहीयें ॥ यतः ॥ चत्तारि आयरिया पन्नत्ता, तं जहा सुत्तधरे एगे नामं णो अछधरे, अछधरे एगे नामं णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरेवि अछधरेवि, एगेणो सुत्तधरे णो अछधरे ॥ इति ॥

ते प्रावचनिक कहेवो होय? तोके (तिछवाहगो के०) तीर्थ जे चतुर्विध श्रीसंघ तेनो वाहक एटले प्रवर्त्तक होय एटले चतुर्विध संघने शुन्न मार्गने विषे प्रवर्त्तावे एवो (सूरी के०) आचार्य कहीयें. एटले जिनशासन ज्ञानवंतने आधारिक कह्यो ॥ यतः ॥ जयणाए इकम्मं, खवेई बहुआइं वा सकोडीहिं ॥ तन्नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ ऊस्सासमाए नवे ॥ १ ॥ तथा ॥ जा जयमाणस्स नवे, विराहणा सुत्तविहि समग्गस्स ॥ सहोइ निक्करफला, अप्नविसोहिय जुत्तस्स ॥ १ ॥ ए प्राभाविकनो पहेलो नेद कह्यो.

हवे प्राभाविकनो बीजो नेद कहे छेः—(पडिबोहिय नवजणो के०) प्रतिबोध्या छे नव्यजनोने जेणें एवो (धम्मकही के०) धर्मकथिक नामें बीजो प्राभाविक कहीयें जे माटे (कहणलद्धिल्लो के०) कथनलब्धिवंतनो उपदेश लागे एटले लब्धिवंतना कथनथी सांनलनारने उपदेश लागे ते उपदेश पण नव्यने देवो कह्यो, तेनुं कारण ए छे जे अनव्यने तो उपदेश लागेज नहीं. परंतु नव्यनें पण सामग्री मलेज उपदेश लागे ॥ यतः ॥ सामग्गी अनावाउ, ववहारिय रासि अप्पवेसाउ ॥ नवावि ते अणंता, जे मुरक सुहं न पावंति ॥ १ ॥ माटे नव्यने पण एम छे तो अनव्यने तो मुक्तिनी वार्त्ताज करवी नथी. एटलामाटे मुक्तिगमन योग्य एवा व्यवहारराशिया जीव लेवा तेमां पण जे संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता मनुष्य जाति

लेवा तेमां पण आचार, देश, कुल, धर्मश्रवण, श्रद्धानादिक पाम्या होय एवा भव्यजीव उपदेशने योग्य कह्या छे. तेने पण जे खीराश्रव, लब्धाश्रवादि लब्धिवंत होय तेहनो उपदेश लागे ॥ यतः ॥ जो हेउवायपरकंमि, हेउउ आगमंमि आगमिउ ॥ सो समय पन्नवउ, सिद्धंत विराहगो अन्ना ॥ १ ॥ एटला माटे कथनलब्धिवंत जोइयें एटले कथन करवानी लब्धि जेमां होय तेनोज उपदेश लागे, कारण के, केटलाएक भणेला पण होय छे परंतु ते वखाण करी जाणे नहीं. छाश बाकला जेवो अर्थ करे, तेथी लोक एवुं जाणे जे ए भण्याज नथी, तेमाटे ए विशेषण सार्थकज जाणवुं ॥ २२ ॥

॥ हवे ए प्रावचनिक तथा धर्मकथिक ए बेहु गुणने विषे श्रीवज्रस्वामीनो संबंध कहीयें छैयें. भरतक्षेत्रें अयवंती नामें देश तेमां तुंबवन नामे सन्निवेश छे. तिहां एक धनगिरिनामें इभ्यसुत वसे छे. ते स्वभावेंज वैराग्यवंत छे, तेनां माता पिता पाणिग्रहण करवानुं कहे पण ते माने नहीं. हवे तेज नगरमां धनपालशेठनी पुत्री सुनंदा छे, ते पोताना माता पिताने कहेवा लागी जे, हुं जो परणुं तो धनगिरिने परणुं, पण तेने धनगिरियें कह्युं, हुं वैरागी छुं माटें म्हारो प्रतिबंध म कर, जिहां त्हारा भाइयें दीक्षा लीधी छे, तिहां हुं पण दीक्षा लइश, एवुं जाणी जो मुजने परणे तो सुखें परण. सुनंदायें कह्युं एक वार पाणिग्रहण करो, पछी भावें तेम करजो. तेवारें धनगिरियें तेनो अत्यंत राग जाणीने पाणिग्रहण कीधुं. पण कह्युं के हुं दीक्षा लइश. तोपण स्त्रीनी जाति मायावी थाय छे, माटें मायायें करी धनगिरिने कहेवा लागी के जो एक पुत्र थाय, तो म्हारे आधारभूत थाय माटे म्हारी सार्थे विषयसुख भोगवो. पछी दीक्षा लेजो. ए वात मानीने धनगिरि पण तेनी सार्थे संसारसुख भोगववा लाग्यो. एम करतां तेने उधान रह्युं अष्टापद तीर्थनेविषे गौतमस्वामी प्रतिबोधित तिर्यग्जृंभक देवतानो जीव देवपणाथी चवीने शुभस्वप्नें सूचित गर्भपणे आवी उपनो तेवारें धनगिरियें कह्युं के स्वप्नें अनुसारें त्हारे उत्तम पुत्र थाशे. एवात निश्चय जाणीने हवे तुं मुजने दीक्षा लेवा दे. एम कही स्त्रीने समजावीने सिंहगिरिजी आचार्य पासें जइ धनगिरियें दीक्षा लीधी.

अनुक्रमें पुत्र जन्म थयो, तेवारें पाडोसण कहेवा लागी के आज जो एनो बाप होत तो पुत्रजन्मनो म्होटो महोत्सव करत, बापविना बीजो

काण महोत्सव करे ? एने बापें तो दीक्षा लीधी छे. ए वचन सांभळतांज पहेला बाळकने जातिस्मरण उपनुं, तेवारें विचारवा लाग्यो जे, मुजने दीक्षा उदय आवे, एवो उपाय करुं. एवुं मनमां धारीने रुदन करवा लाग्यो, माताने संतापवा लाग्यो, माता एना रुदनथी सुइ शके नहीं, बेसी शके नहीं, भोजन करी शके नहीं, ए रीतें माताने घणुंज संताप करतो हवो. माता घणो उद्वेग पामी महोटे कष्टें करी छ महीना अतिक्रम्या.

एवामां उद्याननने विषे श्रीसिंहगिरि आचार्य पधास्था. तिहां आर्यसमित अने धनगिरि ए बे साधु सद्याय करी, उपयोग देइ गोचरीनी आज्ञा मागवा गुरुनी पासें आव्या. आचार्यें कह्युं आज तमोने उत्तम निमित्त उपनो छे, तेथी कोइ अपूर्व वस्तुनो लाभ जोइयें, माटे सचित्तवस्तु पामो ते लेजो. नाकारो करशो मां. एम आज्ञा मागी गोचरीयें पधास्था, ते सुनंदाने घरे आव्या तेवारें छोकरे रोवा मांम्युं, माताने संतापवा मांम्यो तेवारें सुनंदा करसंपुटें करी पुत्र आपवा लागी अने कहेवा लागी के आ लियो तमारो बेटो? एनाथी तमेंज सुख भोगवो. तेने धनगिरियें कह्युं के हमणां तो तुं आपे छे, पण पछी पश्चात्ताप करीश. तेवारें पाछो मागवा आवीश, तो हुं आपीश नहीं. सुनंदायें कह्युं महारे एनो खप नथी. हुं तमोने आपुं छुं; सुखें लइ जाउ. तेवारें धनगिरियें पडोशी लोकोने साक्षी करीने बाळकने झोळीमांहे लीधो. लइने पाधरा उपाशरे गुरु समीपें आवी झोळी मूकी. गुरुयें झोळी उपाडी जोइ तो तेमां भार घणो जाण्यो, तेवारें बोल्या के, आ शुं वज्र छे के ? एवुं कहीने झोळी उघाडी तो मांहे दिव्यस्वरूप बाळक दीठो. पछी तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं. उपाशरामां आव्या पछी बाळकें रुदन करवुं बंध कीधुं. गुरुयें ते बाळक साध्वीयोने आप्यो साध्वीयें सय्यातरनी आपनारी श्राविकाने धवरावदामाटे ते बाळक सोंप्यो. तेणे धवरावी पाछो उपाश्रयें आवी पारणामां राख्यो. गुरु अन्यत्र विहार करी गया. हवे तिहां शाळामां साध्वीउ भण्या करे छे, अने ए बाळक छ महीनानो पारणामां पोढेलो छतां ते साध्वीउना पाठ सांभळीने पारणामां रह्यां थकां बाळकें अगीयार अंगभणी मुख पाठें करी लीधां.

अनुक्रमें जेवारें ते बाळक त्रणवर्षनो थयो तेवारें तेमां बत्रीशवर्षना माह्या पुरुषमां जेटलुं चातुर्य कळा विज्ञान होय, तेटलुं दीसवा लाग्युं. ते

देखीने सुनंदानुं मन चलायमान थयुं. अने कहेवा लागी जे हुं महारो पुत्र पाछो लइ जइश. तेने संघें कह्युं के ए गुरुनो माल छे, ते कोइथी ले वाय नहीं अमाराथी अपाय पण नहीं तेवारें कजीयो करवा लागी छेव ट बालक नहीं मलवाथी राजदरबारमां गइ, गुरु पण अन्यत्र विहार करी पाछा आव्या. श्रीसंघनी विनतिथी गुरु पण राजदरबारमां गया. राजायें एवो न्याय कर्यो के, तमो बेहुजण पोतपोतानी तरफथी जुदी जुदी वस्तु ड बालकने आपो. तेमां जेनी वस्तुड ए बालक लइ लेशे, तेने ए पुत्र आ पशुं. तेवारें सुनंदायें सुखडी तथा रमकडां प्रमुख बालकनी आगल मू क्यां पण बालकें तेनी साहामुं पण जोयुं नहीं. पछी धनगिरिजीयें रजोह रण, मुहपत्ति तथा नोकरवाली प्रमुख धर्मोपकरणरूप रमकडां बालकनी आगल मूक्यां, अने कह्युं के हे, कुमर ! अमारी पासें तो ए धर्मनी रमत छे तहारुं मन माने, तो ले. ए रमत तुजने नहीं गमे, तो संसारनी रमत ले. तेवारें कुमर रजोहरण प्रमुख सर्व वस्तु लइ तेनें मस्तकें चडावी नाचवा कु दवा लाग्यो. ते देखी संघमांहें जयजयकार थयो. सर्व बोल्या जे आ बाल क पण श्रीजिनासननो प्रानाविक थयो. राजायें कह्युं के न्याय थइ चूक्यो. आ बालक गुरुने आपी द्यो. पछी तेने साध्वीउने उपाशरे राख्यो. केटलि एक प्रतमां आ ठेकाणे साध्वीउने नणतां नणतां बालकने अगीयार अंग मुख पाठें थयां, एवुं लख्युं छे. अने केटलिकमां पूर्वें बालकनी छ महीनानी अ वस्थामां ए वात लखी छे, माटे जेम सुज्ञोने जाणमां होय ते प्रमाणे वांचवी.

पछी जेवारें वज्रकुमर आठ वर्षनो थयो तेवारें गुरुयें तेने दीक्षा दीधी, तेवखत सुनंदायें विचार्युं जे हुं हवें घरमां कोने अर्थें रहुं. एम चिंतवी सिंहगिरि आचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी.

आचार्य अनुक्रमें उज्जयणीयें विहार करतां मार्गमां वज्रमुनिना पूर्वन व संबंधिनो मित्र जृंनक देवता हतो ते वज्रमुनिने देखी हर्ष पाम्यो. पछी परीक्षा करवामाटे वाणीयानो सथवारो विकूर्वीने नोजननिमित्तें गुरुने आग्रह करवा आव्यो के महाराज! शुद्धमान रसवती छे, माटे चेलाने मो कलो. गुरुयें आज्ञा आपी वज्रमुनि वहोरवा गया परंतु सूक्ष्ममेघ वृष्टि दे खी पाछा वल्या, तेवारें देवतायें वृष्टि रोकी राखी अने कहेवा लाग्यो के हवे पधारो. वज्रमुनि वहोरवा गया, तिहां तेणे कोलाफलनी निक्षा देवा

मांमी. तेवारें वज्रमुनियें उपयोग दीधो, जे हमणां वर्षाऋतुमां कोलानां फल क्यांथी लाव्या हशे? तेनो हेतु समजातो नथी वली आना पग नूमिने अडता नथी माटे ए कोइ देवतायें छल कर्युं जणाय छे, तेथी मुजने वैक्रियपिंम अकल्प छे एवुं कही, त्यांथी पाछा वल्या. एवी रीतनी आहारसंबंधी शुद्धि जोइने देवता हर्ष पाम्यो. पछी प्रगट थइ मुनिने वंदना करी कहेवा लाग्यो के में तमारी आहारशुद्धिनी परीक्षा करवामाटे आ कृत कर्युं, पण तमें महोटा यति छो, माटे चूक्या नहीं तो हवे माहारा अनुग्रहने अर्थें वैक्रिय बहुरूपिणी विद्या ल्यो. तेवारें वज्रमुनियें श्रीजिनशासननी प्रजावनाने अर्थें ते विद्या लीधी. देवता वांदीने पोताने स्थानकें गयो.

एकदा ज्येष्ठमासमां वज्रमुनि बाहेर गया छे, तेवारें तेहज देवता तत्कालना साकरचूर्णें नरेला घेवर लइने मुनिनें निमंत्रणा करतो हवो. ते पण मुनियें उपयोग देइ उनालो जाणी लीधां नहीं, तेवारें देवतायें संतुष्ट थइने मानुष्योत्तर पर्वतपर्यंत जावानी आकाशगामिनी विद्या आपी.

एकदा गुरु थंमिलनूमियें गया छे अने बीजा साधुउ पण सर्वे गोचरी प्रमुखें बाहेर गया छे, तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना संथारादिक चारे बाजु मूकी, पाथरी, पोतें तेनी वचमां बेसीने गाढे स्वरें जेवी रीतें गुरु वाचना आपे, तेवी रीतें अनुक्रमें जूदी जूदी अगीयारे अंगनी वांचना देवा लाग्यो. एवामां गुरु आव्या तेमणे बारणे छाना उन्ना रहीने सर्व वांचना सांजली ने घणो हर्ष पाम्या. पछी ते बालकने कांइ पण शंका न पडे तेवी रीतें गुरुयें महोटा स्वरथी निसिही कही, एटले वज्रमुनियें पण सर्व उपधि, स्थानकें मूकीने द्वार उघाड्यां, गुरुना पग पूंज्या, दांमो हाथथकी लीधो.

हवे गुरुयें विचार्युं जे एनी विद्या प्रगट करवी जोइयें, एम निर्धारी सर्व यतियोने तेडी कह्युं के, अमें गामडे विहार करशुं. तिहां सात आठ यति सार्थे लइशुं. बाकी तमो सर्व यतियो इहां रहेजो. तेवारें यतियोयें कह्युं अमने वाचना कोण देशे? गुरुयें कह्युं वज्रमुनि देशे. यतियें तहत्ति कही ॥ यतः ॥ सीहगिरिसुसिसाणं, जदं गुरुवयण सद्दहंताणं ॥ वयरो किरंदाई, वायणंति नवि कोवियं वियणं ॥ १ ॥ गुरुयें विहार कर्यो पाछल साधुउ सर्वे विनयवान् छे माटें गुरुनुं वचन प्रमाण करी विनयपूर्वक वज्रमुनि पासें वाचना लेता हवा. वज्रमुनियें ते साधुउने एवी युक्तिथी वाचना आपी के

जेथकी गुरु घणा दिवस वाचना आपवाथी जेटलुं भणावे, तेटलुं वज्रमुनियें एक वाचनामां भणावी दीधुं. तेथी साधुउ एवी चाहना करवा लाग्या के आपणा गुरु आववाने हजी चार दिवस वधारे लागे तो सारुं थाय, तो तेटलामां अमारुं अमुक श्रुतस्कंध पूर्ण थइ जाय.

पठी केटलाएक दिवस वीत्या केडे गुरु आव्या तेमनी साहामा साधुउ तेडवाने गया, तेवारें गुरुयें पूढ्युं, भो साधुउ ! तमारे वाचना सुखें थइ? साधुउ बोल्या, हा महाराज ! तमारे प्रसादें थइ. हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रमुनिज होजो. यतियोयें वज्रमुनिनी घणी प्रशंसा करी तेवारें गुरुयें अगीयारे अंग वज्रने आपीने वांचनाचार्य कस्यो. अनुक्रमें गुरु दशपुर नगरें आव्या, अने वज्रमुनिनी पदानुसारिणी लब्धि देखी विचास्युं जे ए पूर्वाध्ययनने योग्य ठे. ए अमाराथी अधिक थाशे ॥ यतः ॥ चत्तारि सीसा पसुत्ता अइजाए समजाए अणुजाए कुलिंगाले. ए चारमां वज्रमुनि अतिजात ठे माटे एने पूर्वाभ्यास करावीयें.

ते समयें दश पूर्वी श्रीभद्रगुप्ताचार्य अयवंतीमां ठे, ते विहार करवा असमर्थ ठे माटे तिहांज रहे ठे, एवुं विचारीने गुरुयें यतियोना संघनी साथें वज्रमुनिने उज्जयणीयें मोकल्यो. श्रीभद्रगुप्ताचार्यें तेनो विनय देखीने हर्ष सहित पूर्व भणाववा लाग्या. महाप्राज्ञ ठे माटे स्वल्पकालमां दश पूर्व भणी गया. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्य वली पण दशपुरें पधास्या अने विचास्युं के वज्रमुनिने जिहां पूर्व भणवानो उद्देश कीधो तिहांज अनुज्ञा करीयें. एम चिंतवी श्रीवज्रस्वामीने दशपुरनगरें तेडाव्या ॥ यतः ॥ जह्नुद्देसा गुन्नावि, तह किज्जई कमो इम्मो अह्नि ॥ दिठिवाय महागम, सुत्तह्णाणं तउ पह्ना ॥ १ ॥ पठी तिहां वज्रसाधुने आचार्यपद स्थापनाने विषे तिर्यक् जृंभक जातिना देवता महोत्सव करता हवा. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्यें गह्ननो भार सर्व वज्रस्वामीने आपी पोतें स्वर्गें गया. वज्रस्वामी पांचशें साधुना समुदाय साथें गाम नगरादिकें विहार करता हवा.

हवे पाडलीपुर नगरें धनो नामें शेठ वसे ठे तेने मनोज्ञ नामें स्त्री ठे तेनी रुक्मिणीनामा पुत्री ते रूपें करी श्रीकृष्णपत्नी रुक्मिणी समान ठे. ते शेठने घरे साध्वीउ उतरी ठे, तेमनी पासें भणातां थकां रुक्मिणीयें वज्रस्वामीना गुण तथा रूपनुं वखाण सांभलीने ते कुमरीयें वज्रस्वामीनी

सार्थेज पाणिग्रहण करवानी प्रतिज्ञा करी, एटले परणुं तो एनेज परणुं, नहींकां बीजा कोइनी साथें परणुं नहीं एवो निश्चय कस्यो.

एवामां श्रीवज्रस्वामी पण पाडलीपुरें पधास्या, राजा साहामो तेडवा गयो तेने यतिनां वृंद साहामां मले, तेमांहे जेने रूपवंत देखे तेने ए वज्र स्वामी छे एम मानीने राजा नमस्कार करी वंदना करे, तेवारें साधुउ कहे ता जाय के, गुरु पाछलथी आवे छे एम करतां अनुक्रमें गुरु आव्या, तेम नुं सर्वातिशायी रूप देखी राजा घणो हर्ष पाम्या. गुरुने वांदी गुणस्तुति करी, गुरु उद्यानें उतस्या, राजायें वसंतरागादिकना आलापें धर्मदेशना सांभली फरी वांदीने राजा पोताने आवासें गयो. तिहां पोताना अंतःपुर नी आगल गुरुना रूप स्वरादिकनो वर्णव कस्यो. अंतःपुरें कह्युं जे अमोने गुरु देखाडो. पछी पालखी, सुखासन, रथ प्रमुखमां बेसी अंतःपुर वांदवा निकल्यो. अनुक्रमें चालतां गुरुपासें आवीने वंदना करी राणी सर्व हर्ष पामी.

धनश्रेष्ठी पण कोटिसुवर्णें भस्या रथ साथें पोतानी रुक्मिणी पुत्रीने लइ गुरुपासें आव्यो. गुरुयें विचास्युं जे महारुं रूप देखी घणी स्त्रीयो कर्मबंध करशे, माटें रूप परावर्त्तन करी बेठा थका धर्मदेशना दीये छे. तिहां सर्व स्त्रीजन वातो करवा लागी, के हा, हा विधाता चूक्यो छे, के जेणे कोकिलना कंठथी पण अधिक एवो एमनो स्वर कीधो, पण रूप मातुं कीधुं. तेथीज विधातायें कोकिलनो दृष्टांत जगतमां प्रसिद्ध कीधो छे. जेम कोकिल काली छे तेमां स्वर मूक्यो छे, तेम रूप हंसपक्षीमां मूक्युं छे. विधाता पण एवो अवलो छे. एवुं लोकोना मुखथी साधुयोयें सांभल्युं जे गुरुनी देशना तो अमृत सरखी छे, पण रूप तो सामान्य छे, ते आलाप संलाप गुरुयें सांभ ल्यो तेवारें श्रीजिनशासननी प्रभावनाने अर्थें बीजे दिवसें सुवर्णसहस्रपत्र कमल उपर तेजना पुंज जेहवुं स्वाभाविक रूप छे तेवा रूपें व्याख्यान करवा बेठा, ते देखी सर्व लोक चमत्कार पाम्यां. अने घणा जीव प्रतिबोध पाम्या ॥ यतः ॥ दोहो ॥ किंहिं परिमल किंहिं तुछदल, किंहिं दल किंहिं नवि गंध ॥ रे चंपय तुहिं तिन्नि गुण, सदल सुरूव सुगंध ॥ १ ॥

हवे धनश्रेष्ठी बोल्यो जे सातपेढी सुधी द्रव्य खातां खूटे नहीं, एटला द्रव्यनी साथें महारी रुक्मिणी कन्यानुं पाणिग्रहण करीने सातभूमिया आवासनेविषे पधारो, यौवननो लाहो ल्यो. गुरुयें कह्युं अमें विषयना

लोनी नथी विषयसुखने तो विष समान जाणी पडता मूकीने अमें दीक्षा लीधी ले. एम कही ते कन्याने प्रतिबोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्य णी करी. एम वज्राचार्यें श्रीजिनशासननी प्रनावना करी.

हवे एकदा प्रस्तावें गुरुयें पूर्वदेशथी उत्तरदेशें विहार कस्यो. तिहां न वितव्यताने योगें काल कराल डुःकाल पड्यो, कोइ रांक पण आगल बा हेर निकली शके नहीं. तेवारें श्रीसंघें विनति करी के महाराज! तमें अ मारे माथे गुरु उतां अमो डुःकालमां नूख मराथी डुःखी थशुं माटें एनी लाज तमोने ले ॥ यतः ॥ रयणायर तीर परठि, याण पुरिसाण जं च दा लिद्दं ॥ सा रयणायर लज्जा, नहु लज्जा इयर पुरिसाणं ॥ १ ॥ ते सांन ली आचार्य पण लान जाणी कपडाना पट्ट उपरें पोतें वचमां बेग अने चारे बाजु श्रीसंघ बेगे. पठी गंधर्वगीत गाते आकाशमार्गें चाल्या ॥ यतः ॥ साहाम्मिय वल्लंमि, उजया उजया य सज्झाए ॥ चरण करणेसुयरया, तिबस्स पनावमाएण ॥ १ ॥ एवामां एक पडोसी ब्राह्मणे ते पट्ट जातो देखी गुरु प्रत्यें कहेवा लाग्यो महाराज ! हुं पण तमारो शय्यांतर बुं. तो मुजने एकलाने कां मूकी जाउ गे ? गुरुयें कृपा आणी तेने पण पट्टमांहे बेसाड्यो, अनुक्रमें आकाशें रह्या थका थानकें थानकें जिन चैत्यवंदावता गुरु सुनिक्ष देशनेविषे महानिशिनामा नगरीयें पट्ट लइ गया. तिहां राजा दिक सर्व बौध्धधर्मी ले ते जेवारें पजोसणना दिवसो आव्या तेवारें बौध लोकोयें राजाने कहीने सर्व मालिलोकोने कहेवराव्युं जे जैनी लोकोने फूल आपवां नहीं. तेवारें उशीयाला थया थका श्रीसंघें वज्रस्वामीने विन ति करी के, महाराज ! फूल मली शकतां नथी ते सांनली गुरुयें विचास्युं जे ए कर्त्तव्य यतिने करवा योग्य नथी तथापि केवल श्रीजिनप्रवचननी उ न्नति करवाथी माहालान ले. एवुं जाणीने आकाशगामिनी विद्याने बलें मालवदेशें महेश्वरी नगरीनेविषे हुताशन व्यंतर चैत्यनी पासेंना उद्याननें विषे गया. तिहां तडित नामें माली ते आचार्यना पिता धनगिरिजीनो मि त्र ले, तेणे आचार्यने नमस्कार कस्यो, अने आव्यानुं कारण पूछ्युं. तेनें गुरुयें कह्युं फूल जोइये छैयें ते एकगं करी राखजो वलता आविशुं तेवारें लेता जइशुं. एवुं कहीने पठी गुरु, हिमाचलपर्वतें पद्मद्रहनिवासिनी श्री देवीनी पासें गया. तेमने श्रीदेवीयें वांद्या अने पोतानी पासें आव्यानुं

प्रयोजन पूछ्युं. आचार्यें कह्युं कमल जोइयें छैयें. ते समयें तेणे देवार्चा निमित्तें एकलक्ष कमल आण्यां हतां, तेज आप्यां. ते कमल लइने पाछा मालवाना वननेविषे आव्या, तिहांथी माली पासेंथी वीश लाख फूल लइ पूर्वनवना मित्र जूंनकदेवतायें विमान रच्युं, तेमां बेसिने देवडुंडुनि वाजते महानिशीपुरी नगरीयें आव्या.तिहांफूल, श्रावकोने आप्यां. श्रीजिनमंदिर ने विषे देवतायें तथा श्रावकें महोटी पूजा करी. राजायें मालीने पूछ्युं के, महारी आज्ञाविना फूल कोणें आप्यां ? मालीयें कह्युं अमें आप्यां नथी. पछी अनुक्रमें गुरुनुं माहात्म्य सांभली राजा पोतें वांदवा आव्यो. तिहां गुरुनुं रूप देखी धर्मदेशना सांभली राजा प्रतिबोध पाम्यो, श्रावक थयो. बीजा पण घणां लोक प्रतिबोध पाम्यां अने श्रावक थया.

एक दिवस दक्षिण मार्गमां जातां थकां श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं, तेवारें साधुउनी पासेंथी गोचरीमां सुंठ मगावी ते साधुउ लइ आव्या, तेने पोतें कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशुं, पण नूलमां एमज रही गइ, खवाणी नहीं. ते पडिक्कमणुं करती वखतें खमासमण देतां पडिलेहणां करतां नीचें पडी गइ, तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दशपूर्वधर छुं तेने आवी नूल ते वली केम पडी ? एथी जाण्युं जे हवे महारुं आयुष्य स्वल्प रहेलुं जणाय छे, माटें अनशन करवुं योग्य छे. अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे, तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तुनें पूछे के सुभिक्ष क्यारें थशे ? तेवारें ताहरे एम ध्यनमां राखवुं के जे दिवसें लाख मौल्यनी एक हांमी चडे, ते दिवसथी बीजे दिवसें सुगाल थाशे. एमविचारी जवाब आपजो अमें तो हवे अनशनकशुं. एम कहीने वज्रसेनने विहार कराव्यो. पोतानी पासें रहेला साधुउ जेवारें भिक्षा नहिं मले, तेवारें लब्धियें विद्यापिंम करीने केटलाएकने माड्या, पछी एक दिवसें साधुउने कह्युं के जो चारित्रने दोष लगाडी जमो तो ए विद्यापिंम ल्यो. तेवारें साधु बोल्या अमारे चारित्र साथें अर्थ छे, माटें ए पिंम लेशुं नहीं. पछी वज्राचार्यजी, पांचशें साधुउने लइने अनशन करवाने माटें चाल्या. तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने गुरूयें वार्यो तुं अनशन करीश नहीं तेणें कह्युं हुं अशुद्ध पिंम लइश नहीं तो पण ने नोलव्यो के तुं इहां बेश, हुं आवुं छुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं

हुं तो तमारी पछवाडे आवीश. तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो, तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय, तेम करुं तो ठीक. एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला उपर ते चेलायें अनशन करी लीधुं, ते बालक हतो माटें सुकुमार पणाथी तत्काल मिणनी पेठें गली गयो. शुभध्यानें मरण पामी देवलोक गयो. देवताउयें नेला थइने तेनो महिमा कस्यो, तेवारें बीजा साधुउयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कस्यां,परंतु मिथ्यात्वी देवीयो श्राविकाउनां रूप करी तिहां आवीने साधुउने अनशनमां मोदकादिकनी निमंत्रणा करवा लागी. अने बोली के,हे महाराज ! आ शुद्ध निर्दोष आहार छे ते ल्यो. तेवारें साधुउने अप्रीति उपनी जाणी नजीकना बीजा पर्वतनी शिलापट्ट उपर जइने निर्विघ्नपणे अनशन कस्युं, शुभध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इंद्र माहाराजें रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुउने वांद्या. तिहां ते इंद्र माहाराजना रथनी रेखा मंडाणी, तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त्त एवुं नाम थयुं. तथा तिहांना वृक्ष पण साधुउने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे एमने पाटें वज्रसेनाचार्य पण महाप्राभाविक थया. श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमुं पूर्व तथा चोथुं अर्द्धनाराच संघयण विछेद गयुं ॥ इति प्रावचनिक तथा धर्मकथिक प्राभाविकयुगलेंवज्राचार्यनी कथा ॥ हवे त्रीजो वादी प्राभाविक तथा चोथो नैमित्तिक प्राभाविक कहे छे.

॥ वाईपमाणं कुसलो, रायडुवारेवि लद्ध माहप्पो ॥ निमित्तिउ निमित्तं, कह्मि पउंजए निउणं ॥३४॥ अर्थः—(वाई के०) जे वादी होय ते (पमाणं के०) प्रमाण एटले तर्कशास्त्रनेविषे (कुसलो के०) कुशल विचक्षण जोइयें. जैनप्रमाणने विषे तथा सर्व प्रमाणने विषे निपुण होय जेमाटें अज्ञातप्रमाण जे होय ते वाद करी शके नहीं. जेम दाढारहित सर्प्प होय ते पराभव करी शके नहीं. ए प्रमाण शास्त्रथकी अजेय थाय जेम मेदपाट देशें आहडपुरी नगरीयें वत्रीश दिगम्बराचार्य साथें वाद करीने श्रीजगच्चंद्रसूरि हता, ते हीरला जगच्चंद्र एवुं विरुद पाम्या. तेमज श्रीमुनिसुंदर सूरि श्रीस्तंभनक तीर्थें ब्राह्मणोनी साथें वाद करीने दफतरखाननी सभाने विषे " वादिगोकुलसंढ " एवुं विरुद पाम्या ॥ यतः ॥ समणस्स भगवउ

महावीरस्स चत्तारिस्सया वाईणं सदेव मणुआ सुराए परिसाए अपराजि याणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था॥ एम चोवीशे तीर्थंकरने वादीनी संपदा छे.

जिहां उत्तम वन होय, तिहां कांटाला वृक्षनी वाड पण जोइयें. तेम गछनायकने वादीनी वाड जोइयें. जे शास्त्रने वादें बोलतो थाके नहीं, किहांएक चालवुं पडे, तो चालवे पण थाके नही, भूख्युं तरस्युं रहेवुं जोइयें. तिहां भूख तृषाथी मरे नहीं. ते माटे कह्युं के (रायडुवारेविलद्धमाहप्पो के०) राजद्वारने विषे पण लब्ध एटले विशेषें पाम्युं छे माहात्म्य जेणें अर्थात् घणावाद जीतीने राजसभानेविषे प्रसिद्ध थयो होय, जेम घणा संग्राममां जय पामीने सुभट प्रसिद्ध थयो होय तेम ए जाणवो.

ए वादी प्राभाविकनी ऊपर मल्लवादीनो संबंध कहीयें छेयें. भरतक्षेत्रने विषे भृगुकछ नामें नगरें श्रीजिणाणंदसूरि चोमासुं रह्या हता ते समय तिहां बौद्धदर्शनी घणा रहेता हता, तेमनो जिणाणंदसूरि सायें वाद थयो, ते वखत राजानी समक्ष बेहु पक्ष वालायें एवो ठेराव कर्यो के, जे वादी हारे तेने देशोटो आपवो अने जे जीते ते देशमां रहे. तिहां वाद करतां भवितव्यताने योगें जैनमती हार्या अने बौद्धमती जीत्या, तेवारें जैनमती तिहांथी चाल्या ते वल्लभी नगरीयें आव्या, तिहां जिणाणंदसूरि घणा चिंतातुर थका रह्या, ते जिणाणंदसूरिनी दुर्लभदेवी एवे नामें बहेन छे तेना एक अजितयशा, बीजो यक्ष अने त्रीजो मल्ल एवा त्रण पुत्र छे, तेनो धणी कालधर्म पामे थके दुर्लभदेवीयें वैराग्य पामी, त्रणे पुत्रोनी सायें दीक्षा लीधी. ते साध्वीयें गुरु तथा संघने पोताना गुणें करी वश कीधा, पुस्तकना भंडारनी अधिकारिणी थइ. पोतें पुस्तकोनें लखावे, छोडे, बांधे, संभारी राखे; एम सर्व भंडार तेणें पोताने हाथे राख्यो. गुरुये त्रणे चेलाने समस्त शास्त्र भणाव्यां, पण एक नयचक्र नामें प्रमाण ग्रंथ भणाव्यो नहीं. कारण के पूर्वाचार्यें प्रमाणवाद नामा पूर्वमांथी सारोद्धार करीने नयचक्र शास्त्र रच्युं छे. ते देवताधिष्ठित छे माटें जेणे श्रुतदेवतानुं आराधन करी ते देवतानी आज्ञा लीधी होय, तेनाथी भणाय. एवा हेतुथी भणाव्युं नहीं.

हवे ते त्रण शिष्यमांथी गुरुयें एक मल्लवादीने योग्य जाणीने नयचक्र ग्रंथ साध्वीना हाथ आप्यो. अने जाण्युं जे भाग्याधिक हशे, तो पोतानी मेलें वांचशे. अने जाणपणुं करशे. पछी त्रणे चेला साध्वीनी पासें मूकी

ने गुरुयें तिहांथी विहार कस्यो. हवे मल्लवादीने इच्छा उपनी जे ए ग्रंथ हुं वांचुं. गुरुयें मुजने शा माटें जणाव्यो नही होय? पछी ते ग्रंथ साध्वी थी पण छानो जंमारामांथी लइने वांचवा लाग्यो. तेमां पहेली आर्या वांचे छे, ते आवी रीतें:-विधिनियमजंगवृत्ति, व्यतिरिक्तत्वादनर्थकं बोध्यम् ॥ जैनादन्यच्छासनमनृतं जवतीति वैधर्म्यं ॥ १ ॥ ए आर्यानो अर्थ समजीने हर्ष पाम्यो थको आंख मीची एवामां श्रुतदेवी तेना हाथमांथी पुस्तक लइने अदृश्य थइ गइ. आंख उघाडी जुए छे तो हाथमां पुस्तक छे नहीं. तेवारें चिंतातुर थको विचारवा लाग्यो के में गुरुनी अनाज्ञायें पुस्तक वांच्युं, तेनुं फल हुं पाम्यो.

पछी ते वात मल्लवादीयें साध्वीनी आगल कही, साध्वीयें श्रीसंघने कह्युं श्रीसंघ घणुं डुःख धरवा लाग्यो. मल्लवादीयें एवो अजिग्रह कस्यो, के जो ए पुस्तक मने पाछुं मले, तो हुं आहारमांहे विगय वहोरुं, तिहां सुधी धान्यमां एक वाल खावा मोकला राख्या तथा ज्यांसुधी पुस्तक न मले तिहां सुधी वनमांहेज रहेवुं एवो निश्चय कस्यो. पछी श्रीसंघें आग्रह करीने मल्लवादीनी देह रक्षाने अर्थें विगय मोकलुं राखवानुं कह्युं. मल्लवादीयें पण संघनुं कहेण मान्युं यतः ॥ कयकिच्चेहिवि तिहुयण, गुरुहिसिर हरिय पाणी पउमेहिं ॥ जं मन्निज्जइ संघो, आणं को तस्स लंघेइ ॥ १ ॥ पछी वल्लजी नगरीनी पासें एक पर्वत हतो, तिहां जइ रह्या. एक वाल नामे धाननुं जोजन करे, श्रीसंघ पण प्रतिदिवस श्रुतदेवतानुं आराधन करे.

॥ हवे एकदा प्रस्तावें रात्रिने समयें मल्लवादी जागे छे, नयचक्र शास्त्रनी पहेली आर्यानो अर्थ विचारे छे. एवामां श्रुतदेवीयें आवी पूछ्युं के इष्टं ? मल्लें कह्युं जाग्य वल्युं. वली छ महिना पछी तेज जगायें तेज वखतें श्रुतदेवीयें पूछ्युं "कान्यां" कोनी साथें मल्लें कह्युं "घृतगुडान्यां" घृत गोल सायें एवी धारणा शक्ति देखी श्रुतदेवी चमत्कार पामी अने प्रत्यक्ष थइ कहेवा लागी के, माग. माग. हुं संतुष्ट थइ छुं. मल्लें कह्युं के, नयचक्रशास्त्रनुं पुस्तक आपो. श्रुतदेवीयें पुस्तक आप्युं अने कह्युं के तुं वादने विषे अजय थाइश, एवो वर आपी देवी अदृश्य थइ. पछी श्रीसंघें महोटा आम्बरसहित मल्लने नगरमां प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. तथा वली श्रीसंघें जिणाणंदसूरिने पण परदेशथी आग्रह करी तेडी आव्या. त्र

णे नाइने आचार्यपद देवराव्यां. मल्ल बोल्यो के, नरुअच्छमां जइ बौद्धनी साथें वाद करी बौद्धने देश त्याग करावुं, तोज म्हारुं नणुं प्रमाण नहीं कां अप्रमाण जाणवुं.

एवी प्रतिज्ञा करी श्रीसंघनी आज्ञा मागी, नरुअच्छ नगरें आवी राजाने जइ मल्या, तिहां नविन काव्यादिक रची, राजाने खुसी करीने कह्युं के, हे राजन्! बौद्धने तेडावो,हुं तेमनी साथें वाद करीश. राजायें बुद्धाणंद नामें बौद्धमतना आचार्यने तेडीने कह्युं के आ मल्लसाथें वाद करो. नहींकां देशवटो ल्यो. तेणें पण वाद करवो कबूल कस्यो. पछी वादी, प्रतिवादी, साक्षी अने सन्नापति, ए चार परठव्या नंतर राजायें पूछ्युं जे तमारामांथी प्रथम प्रश्न कोण करशे? तेवारें नवितव्यताने योगें बौद्धें कह्युं के प्रथम वादी बोले, पछी प्रतिवादी बोले. राजायें मल्लवादीने कह्युं तमे प्रथम बोलो. मल्लवादीयें ते वात प्रमाण करीने नयचक्र शास्त्रनी युक्तिनो उच्चार कस्यो, जेम समुद्र गर्जना करे, तेम गर्जना करतो जेम जेम बोलतो जाय, तेम तेम तेनो स्वर मेघनी पेरें गंनीर थतो दीगमां आव्यो. एम छ दिवसपर्यंत वादी अने प्रतिवादी आपस आपसमां बोल्या. तेमां छठे दिवसें मल्लवादीयें एवो पूर्वपक्ष कीधो, के जे थकी बौद्धानंदने थरहरावी नाख्यो. जुवाब आपी शक्यो नहीं. तेवारें परिश्रांत थयो थको सातमा दिवसनो वायदो राख्यो, सन्नाजनो उठी ने सर्व पोतपोताने घेर गया. मल्लवादी गुरु हर्षसहित उपाश्रये आव्या, बौद्धानंदें खडी (चाक) ना कटकाथी मल्लवादीनो पूर्वपक्ष लखवा मांम्यो, पण सांन्नरे नहीं. तेथी चिंतातुर थयो रात्रि उजागरो करवो पड्यो, उंघ आवी नहीं. हृदयस्फोट थयो. तेवारें खडीनो कटको हाथमां थकांज मरण पाम्यो.

प्रनातें दातण पाणी करी तांबूल खाइ राजा सन्नामांहे आव्यो, मल्लवादी गुरु पण हर्षसहित सद्याय करी राज्य सन्नायें आवी बेठा. सर्वसना मली तेवारें पूछ्युं बौद्धानंद, हजी आव्या नथी तेनुं कारण शुं? घणीवार वाट जोतां पण नाव्यो तेवारें तेने तेडवामाटे राजायें माणस मोकल्युं. तेणे जइ उरडो उघाडी जोयुं तो आगल पाटलो पडेलो छे, तेनी ऊपर खडीथी अक्षरो लखेला छे हाथमां खडीनो कटको रहेलो छे एवो थको मुवो पड्यो छे. ते जोइ राजपुरुषें आवीने राजा आगल यथास्थित

ात कही. तेवारें राजायें बौद्धोने देशवटो दीधो. ते दिवसना बौद्ध गया, ते हजी हिंदुस्थानमां आव्या नथी.

पठी राजायें जिणाणंदसूरि प्रमुख सर्व संघने निशान सहित गाजते वाजते गाममांहे आण्यो. ते दिवसथी राजायें मल्लनुं नाम मल्लवादी एवुं स्थापन कर्युं. ए रीतें श्रीजिनशासननी घणी प्रनावना करीने मल्लवादी सूरि स्वर्गें गया. ए त्रीजा वादी प्रानाविक ऊपर मल्लवादी सूरिनी कथा कही ॥

हवे चोथो निमित्त प्रानाविक कह्यो, ठे तेनी व्याख्या करे ठे.

(निमित्तिउ निमित्तं के०) तेहवा दीप्त श्रीजिनशासनना कार्यने विषे जे निमित्तना जाण होय ते निमित्त प्रयुंजे, ते निमित्त आठ प्रकारनां ठे १ आदिव्य, २ औत्पातिक, ३ आंतरिक्ष, ४ नौम, ५ अंगफुरकण, ६ स्वर, ७ लक्षण, ८ व्यंजन, परिज्ञान रूप इहां जे कोइ अकारणे निमित्त प्रयुंजे, तो ते विराधक जाणवो ॥ यतः ॥ जोइस निमित्त अरकर, कोउ आएसनूइंक धमेहिं ॥ करणाणुमोयणेहिय, साहुस्स तवरकउ होइ ॥ १ ॥ तेमाटे (कज्जंमि के०) कार्यें एटले जिहां श्रीजिनशासननी महत्प्रनावना थाती होय एवा कार्यमां निमित्त (पउंजए के०) प्रयुंजे ते पण कोण प्रयुंजे के जे (निउण के०) निपुण माह्यो होय ते प्रयुंजे. कारण के जे कोइने कांइ निमित्त कह्युं अने ते जो मले नहीं तो उलटी श्रीजिनशासननी अपनाजना थाय, माटे तेम न करवुं ॥ ३४ ॥

हवे ए निमित्त प्रानाविक ऊपर श्रीनद्रबाहु स्वामीनो दृष्टांत कहीयें ठैयें. आ नरतक्षेत्रे महाराष्ट्रदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे वाराहमिहिर अने नद्रबाहु ए नामें बे ब्राह्मण नाइउ रहेता हता, ते चौद विद्याना पारंगामी ठे, एकदा प्रस्तावें विहार करतां श्रीयशोनद्रसूरि तिहां उद्यानने विषे आवी समोसर्या, तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा जाय ठे, ते जोइ एवे नाइ ब्राह्मण पण वांदवा गया. तिहां गुरुनी देशना सांनली नद्रबाहु वैराग्य पाम्यो, तेवारें वाराहमिहिरने कह्युं के, हुं तो दीक्षा लइश, वाराहमिहरें कह्युं हुं पण तहारी साथें दीक्षा लइश. परस्पर प्रेम ठे, माटे बेहु नाइयें दीक्षा लीधी. बेहु नाइ गुरुपासें चौद पूर्व नण्या तेमां नद्रबाहु तो सुविहित चूडामणि थयो.

हवे जो पण वाराहमिहिर महोटो नाइ ठे, तो पण तेने श्रीयशोनद्र

सर्वे आचार्यपदने अयोग्य जाणीने आचार्यपद आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ वुड्ढोगणहर सद्दो, गोयम माईहिं धीरपुरिसेहिं ॥ जो तंठवइ अपत्ते, जाणंतो सोइ महापावो ॥१॥ जे माटे आचार्यपद तो गणधरोयें धारण कर्युं ने जो अविनीत अयोग्यने आपे, तो आपनार पण अनंत संसारी थाय. एवुं जाणीने गुरुयें श्रीवराहमिहिरजी तथा श्रीभद्रबाहुजी ए बेहुने परस्पर प्रीति जाणी तथा आचार्यपदने योग्य जाणी बेहुने पट्टधर कीधा. भद्रबाहुने आचार्यपद मळ्युं जोइने वराहमिहिर अभिमान आणी पूर्वे जे बार वर्षपर्यंत चारित्र पाळ्युं हतुं ते कर्मोदयथी सर्वे चारित्रथी भ्रष्ट थयो. ॥ यतः ॥ कत्थवि जीवो बलिउ, कत्थवि कम्माइं हुंति बलियाइं ॥ जीवस्सय कम्मस्सय, पुव्वनिबद्धाइं वेराइं ॥ १ ॥ हवे वराहमिहिर लोभाकुलित थयो थको गच्छथी बाहेर नीकळीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो, वळी पूर्वे भणेलो हतो माटे चंद्रपन्नत्ति, सूर्यपन्नत्ति प्रमुख जैनशास्त्रना ज्योतिष ग्रंथो जोइ ने उपरथी बीजा नवीन ज्योतिषनां वाराहीसंहिता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगळ निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो, तेने लोक पूछे के एटलुं तमे क्यांथी जाण्या ? तेवारें लोकोनी आगळ एवुं कहे के मे एक दिवस नगरनी बाहेर लग्न कुंडली मांडी, ते कुंडलीने भांग्या विना एम ज पाछो चाली निकल्यो. पछी ज्यारें याद आव्युं, त्यारें कुंडाळी भांगवा गयो अने तिहां जइने जोउं तो कुंडलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह ते पूठडुं वधारीने उपर बेठो. ते पछी मे लग्ननी भक्तिने लीधे महारी छाती कठिण करीने सिंहनी नीचे घुसीने लग्न कुंडाळी भांग्युं. महारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते तिहां आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के, माग. माग. तेवारें मे कह्युं, मुजने नक्षत्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो. पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंडल चारमां मुजने लइ गयो. तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण काळनी वात जाणुं छुं. एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे. एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या. एवा अवसरमां श्रीभद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा

करुणा आणीने शासनदेवी पासेंथी मूकाव्यो. राजायें ते वात सांभली प्रधानने दुष्ट जाणी देशबाहेर काढी मूक्यो. नमुचि तिहांथी निकल्यो थको हस्तीनागपुरें गयो, तिहां कलाना योगें महापद्म कुमारनो प्रधान थयो.

हवे तिहां कोइक सिंहबल नामें फटाइयो राजा छे ते धाड लइ महापद्मकुमारना गामोमां लूंट फाट करे छे. गाम भांजे छे, मार्गमां पंथीजनोने लूंटे छे, तेवारें महापद्में कह्युं के, कोइ सिंहबलराजाने बांधी लावे, एवो छे? नमुचियें तेने जीतवा बीडुं लीधुं अने राजानुं कटक लइ सिंहबलसाथें युद्ध करवा गयो, तिहां युद्ध करी सिंहबलने बांधी लावीने महापद्मने आवी सोंप्यो. तेवारें महापद्म प्रसन्न थइ कहेवा लाग्यो के वर माग! नमुचियें कह्युं के, हाल भंमारे राखो. जेवारे काम पडशे, तेवारें हुं मागी लइश. एवुं कहीने नमुचि पोताने घेर गयो.

हवे एकदा महापद्मनी माता ज्वालायें श्रीअरिहंतनो रथ फेरववा तैयार कीधो छे,अने तेनी शोक्य लक्ष्मी नामें छे,ते मिथ्यामतिवाली छे,माटें तेणें ब्रह्मानो रथ फेरववा माटे तैयार कीधो छे, तिहां ज्वालायें कह्युं, प्रथम महारो रथ नगरमां निकलशे अने लक्ष्मीयें कह्युं प्रथम महारो रथ नगरमां फरवा निकलशे, एम बे शोक्योने मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो तेथी पद्मोत्तरराजायें क्लेश मटाडवा सारु बेहु रथ फेरववामाटे मनाइ करी. तेवारें महापद्मकुमर पोतानी मातानो मनोरथ भंग थयो देखीने देशांतर भणी चाली निकल्यो, ते कुमर भाग्यवंत छे माटें ज्यां जाय त्यां तेनी अनेक राजा सेवा करे, तेणें अनेक राज्य कुमरीयोनां पाणिग्रहण कर्यां. अनुक्रमें पितानी वृद्धावस्था जाणी पाछो हस्तिनागपुर भणी आव्यो. तेने पितायें राज्य आपी पोतें सुव्रताचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी. तेनी साथेंज विष्णुकुमारें पण दीक्षा लीधी.

पाछल महापद्म चक्ररत्न पामी भरतक्षेत्रनी छ खंम पृथ्वी साधीने हस्तिनागपुरें आव्यो. सर्व राजायें मली बार पर्षपर्यंत राज्याभिषेकनो महोत्सव कीधो. पछी महापद्मचक्रवर्त्तियें लक्ष्मी जे पोतानी मातानी शोक्य छे, तेनो रथ रोकीने पोतानी माता ज्वालायें तैयार करेलो श्रीअरिहंतनो रथ नगरमांहे फेरव्यो. श्रीजिनशासननी प्रभावना करी, गाम गाम श्रीजिनप्रासाद कराव्यां.

हवे पद्मोत्तर साधु इंद्रियजय करी नाना प्रकारनां तप करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पहोता. अने विष्णुकुमर मासखमण पक्खमणादिक घणां प्रकारना तप करता थका वैक्रियादिक समस्त लब्धिउ पाम्या, मेरुपर्वत उपर जइने तपस्या करता थका काउस्सग्ग ध्याने रहे छे.

एकदा सुव्रताचार्य, श्रीहस्तिनागपुरें आवी चोमासुं रह्या छे, तिहां महापद्मचक्रवर्त्तिपासें नमुचि प्रधान छे, ते जे करे, ते थाय. तेनो हालहुकम चाले छे, ते नमुचि पूर्वेलुं वैर स्मरण करी अधिकद्वेष आचार्यनी उपर चिंतववा लाग्यो अने संधान जोइ चक्रवर्त्ती पासें जइ पूर्वेला भंमारें मूकेला वरदानने वदले सात दिवसपर्यंत राज मागी लीधुं. कोइक आचार्य वली एवुं कहे छे के छ महीना सुधी नमुचियें राज्य मागी लीधुं छे. चक्रवर्त्ती तो नमुचिनुं कूडकपट कांइ जाणतो नथी, तेथी वरदानने वदले राज्य आप्युं. नमुचि राजगादीयें वेठो अने चक्रवर्त्ती पोताना महेलमांहे रह्यो.

तिहां नमुचियें यज्ञ मंमाव्यो. तेवारें सर्व पाखंमीदर्शनीउ तेने आशीर्वाद देवा आवें, दान लेवा आवे, अने जैनना यतितो सर्व निःस्पृही छे, माटे कोइ दान लेवा आव्या नहीं. ते छल पामीने नमुचियें सुव्रताचार्यने तेडावीने कह्युं के हुं राजें वेठो छुं, यज्ञ कीधो छे. तिहां मने सर्व मलवा आव्या,अने तमें मलवा आव्या नहीं माटे जाउ इहांथी महारा देशमां तमारे रहेवुं नहीं. तेने गुरु घणां मिष्ट वचनें करी समजावता हवा,पण कोइ रीतें समजे नहीं. अने कह्युं के सातदिवसनो अवधि आपुं छुं. एटलामां जो नहीं जाशो अने आठमे दिवसें हुं तमोने देखीश तो मारी नाखीश.

आचार्य पोताने स्थानकें आवी सर्व यतियोने पूछवा लाग्या जे आपणामां कोण शक्तिवंत साधु छे? जे ए नमुचिने समजावे. यतियोयें कह्युं विष्णुकुमार एने समजावशे. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमारने मेरु उपरथी तेडी आवे, एवो कोइ यति शक्तिमान् छे, तेवारें एक यतियें कह्युं के, महारामां मेरुपर्वतें जवानी शक्तितो छे पण पाछुं आववानी शक्ति नथी. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमार तुजने तेडी आवशे, ते सांभली यति गुरुनी आज्ञा लइ लब्धि साधन करी मेरुपर्वतें विष्णुकुमरपासें, जइ वांदीने सर्व समाचार संभलाव्या, तेवारें विष्णुकुमार पण ते मुनिनी साथे तेडी गुरुनी पासें आव्या, गुरुने वंदना करी पूछ्युं. महाराज जे कार्य करवानुं होय ते कहो. गुरुयें कह्युं

जिनशासननुं कार्य करवाथी महोटो लाभ छे, माटे नमुचिने समजावो.

विष्णुकुमार पण नमुचिनी राजसभाये जइ घणे मीठे वचने तेने सम जावता हवा, पण शीलानी पेरें ते दुष्ट समजे नहीं.

विष्णुकुमारें कह्युं भरतक्षेत्रमां तो तहारुं सर्वत्र राज्य छे, माटे ते मूकीने ए साधुउ क्यां जाय? तेने नमुचियें कह्युं त्रण पगलां भूमि आपुं छुं. पण तेनी बाहिर कोइ यतिने देखीश तो मारी नाखीश. ते वचन सांभली विष्णुकुमार कोपायमान थयो थको लब्धिने बले लक्ष योजननुं रूप करी बे पगें करी सर्व पृथ्वी रोकी मूकी अने कह्युं के,अरे नमुचि! हवे त्रीजो पग हुं किहां मूकुं? एम कही नमुचिना मस्तक उपर मुक्युं ते नमुचिविष्णुकुमरना पगथी आक्रम्यो थको काल करीने नरकने विषे गयो ते रूप करवाथी सर्व पृथ्वी आक्रमी,पर्वत चलाचल थया, इंद्रमहाराजें मेरुसमानरूप देखी भयभ्रांत थइ अवधिज्ञान प्रयुंजी सर्ववृत्तांत जाण्युं. पछी समाधान करवा माटे गंधर्व देवांगना मोकली तेणें आवी वीणानादे मधुरस्वरें गीतगान करी विनति कीधी के स्वामी! प्रसन्न थाउ कोप मूको. सुव्रताचार्यें पण आवीने कह्युं हवे कोप मूको. नमुचि जिनशासननो अपराधी हतो, तेनें शिक्षा दीधी. हवे रूप संकोच करो वली महापद्मचक्रवर्त्ती पण आवीने पगें लाग्यो अने कहेवा लाग्यो जे में अयोग्यने राज्य आप्युं, मांजारीने दूध सोप्युं ते विणशें पण सुधरे नहीं तद्रूप महारो अपराध खमो. तेवारें विष्णुकुमारें वैक्रियरूप संहरीने पोतानुं सहज रूप आदर्युं. महापद्मने उलंभो देइ कह्युं के तें जिनशासनना द्वेषीने सर्वस्व स्वाधीन करीने तुं पोतें महेलमां जइ बेसी रह्यो, यतियोनी कांइ पण खबर लीधी नहीं, एटले तहारो वांक छे माटे उलंभो देउं छुं. चक्रवर्त्तीयें कह्युं महारो गुनो बक्षो. आज पछी कदापि एवो गुनो करुं नहीं. ए रीतें तेने उपशांत करी पगे लागी चक्रवर्त्ती पोताने घेर गयो. सुव्रताचार्य साथें विष्णुकुमार उपाश्रयें आवी गुरुपासेंथी आलोयणा लइ पडिक्कमीने स्फाटिकनी पेरे निर्मल थयो ॥ यतः ॥ आयरिय गछंमि य,कुल गण संघेय चेइय विणासे ॥ आलोइय पडिक्कंतो, सुद्धो जं निज्जराविउला ॥ १ ॥

तिहां विष्णुकुमार त्रिविक्रम एवुं नाम पाम्यो. घणा वर्ष लगण शुद्ध दीक्षा पाली तपश्चरणे करी जिनप्रवचन दीपावी केवलज्ञान उपार्जी मो

र्गे गयो. ए रीतें तपस्वी प्रजाविकने विषे विष्णु कुमारनो वृत्तांत कह्यो.

हवे बहो विद्याप्रजाविक कहे बेः—

(सिद्धिवहुविज्ञमंतो के०) सिद्धि पामी बे घणी विद्याउ जेहने एटले प्रज्ञप्त्यादिक शोल विद्याउ तथा सिद्धि पाम्या बे घणा मंत्र एटले सूरिमंत्रादिक जेहने एवो जे होय ते (विज्ञावंतोय के०) विद्यावंत प्रजाविक मांहे जले तिहां जेमां स्त्री देव अधिष्ठायक होय ते विद्या कहीयें अने पुरुष देव अधिष्ठायिक होय ते मंत्र कहीयें तथा (उचियणो के०) उचितनो जाण जोइयें. जो ए विद्यामंत्रने जो जिनशासनदीपाववा अर्थें फोरवे तो आराधक थाय अने तेनेज यथातथा फोरवे तो विराधक थाय ॥ यतः ॥ विज्ञंमंतं जोगं, तेगिह्नं कुणई जूई कम्मं च ॥ अरकरनिमित्तजिवी, आरंज परिग्गहे रमइ ॥ १ ॥ इतिउपदेशमालायां ॥ ३५ ॥

एनी उपर आर्य खपटाचार्यनो दृष्टांत कहे बे. श्रीवर्द्धमान स्वामीना शासनने विषे विद्यामंत्र बलवंत आर्य खपटाचार्य बे. एकदा प्रस्तावें विहार करतां जृगुकहें पधास्या. तिहां बौद्धमत वासित बलमित्र राजा बे माटे तिहां बौद्धाचार्य प्रतिदिन जैननी निंदामय वखाण करे एवो बे तेथी जृगुकह्नना संघें मलीने गुरुने विनति करी के अमे बौद्धनी आगलें महोटुं कष्ट सहन करता रहीयें बैयें ! ए नित्य प्रत्यें जैननी निंदा करे बे माटे एनी साथें वाद करीने एनुं मुखजंग करो तो रुडुं थाय ॥ यतः ॥ कंटकानां द्विजिह्वानां, द्विविधैव प्रतिक्रिया ॥ उपानमुखजंगोवा, दूरतोवापसर्प्पणं ॥ १ ॥ ते सांजली आचार्य बोल्या, अमें क्लेश वाद करीयें नहीं. ते वखत आचार्यनो जाणेज जुवन नामें बे, ते वादविवादमां शूरवीर बे, माटे ते जइने बौद्धोनी सायें वाद करे अने बौद्धने हरावे तेथी बौद्ध नासता फरे.

ते वात सांजलीने अन्यगामथी कोइक वृद्धकर नामें बौद्धनो आचार्य आव्यो तेणे प्रथम तो जुवनसाधुनी सायें राजासमक्ष वाद करवा मांम्यो, तिहां बौद्ध हास्या अने जुवन जीत्यो, तेवारें वृद्धकर बौद्धाचार्यें विचास्युं जे ए जैनाचार्यना शिष्यथी हुं हास्यो तो हवे महोढुं शुं देखाडुं ? तेथी तेणे अनशन लइ जैनना साधु उपरें प्रद्वेष वहेतां थकां काल कीधो, ते मरीने कोइएक नगरना उद्याननें विषे यक्ष थयो. ते यक्ष जैनना श्रावकोने मारी प्रमुखना रोग उपजावी, उपद्रव करी संतापवा लाग्यो श्रावकोयें आ

वीने आचार्यने कह्युं त्यारें खपटाचार्यतेय क्ना चैत्यने विषे जइने जुना खा सडां ते यक्ने कानें वलगाड्यां. पछी तेनी पलोंठी ऊपर पग मूकी समस्त अवयव ढांकीने सूइ रह्या घोरनिद्रा घोरावबा लाग्या.

एवामां ते देराशरनो पूजारो आव्यो. तेणे आचार्यने घणुंए जोर करी जगाडवा मांम्यो, पण आचार्य जाग्या नहीं तेवारें पूजारे जइने राजानी आगल पोकार कस्यो. राजा पोतें तिहां आव्यो अने पोते आचार्यनुं वस्त्र दूर करे तो ते वस्त्र बमणु महोटुं थाय तेवारें ताजणाना प्रहार देवा मांम्या. ते प्रहार राजाना अंतःपुरमां जइ लाग्या अंतःपुरमां सोर बकोर थइ रह्यो. ते जोइ राजायें विचाखुं जे ए कोइ सामान्य पुरुष नथी एम जाणी राजा आवी पगे लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के,स्वामी प्रसन्न थाउ. महारो अपराध माफ करो. तेवारें आचार्य तिहांथी उठ्या अने राजाने धर्मलान आपी जवा लाग्या यक्ने कहेवा लाग्या के अरे यक् उठ महारी साथें चाल ते सांनली यक् पण आचार्यनी साथें चाल्यो तिहां चैत्यनी आगल महोटी बे शिला पडी हती ते पण यक्नी पछवाडे चाली ते चमत्कार राजा प्रमुख सर्व लोके दीठो पछी राजा आचार्यने पगें पडीने कहेवा लाग्यो के,स्वामी सिलाथी यक् घसायछे एने डुःख थाय छे माटे कृपाकरीने मूको तेवारें खपटाचार्य बोल्या एणे अमारा संघने घणो संताप्यो छे.राजायें कह्युं हवे नहीं संतापे एवी राजानी विनति सांनली यक्ने मूक्यो यक् जइ पोताने स्थानकें बेठो,शिला पण स्थिर थइ. राजायें महोटा महोत्सवसहित गुरुने नगरमां प्रवेश कराव्यो गुरुनी देशना सांनली राजा प्रतिबोध पाम्यो. गुरुयें विहार कस्यो.

एकदा प्रस्तावें नृगुकछथी श्रीसंघना मोकलेला बे यति आवीने गुरुने विनति करवालाग्या के, स्वामी ! कोइक डुर्विनीत शिष्य छे तेणे ड्व्यानुयोगमय आगमनां पानां नंमारमांहेथी काढीने वांच्यां तें मांहेथी आकृष्टी विद्या काढी तेने साधीने तेना बले विविध प्रकारनां पकवान्नफलादिक अणावीने खावा मांम्यां तेने गीतार्थें वार्यां थकां तेमनी साथें वढवाड करीने बौद्धमतनेविपे जइ बौद्धनी साथें मल्या ते बौधना पात्र आकाशें मोकली वलता नरीने मगावे. बौधनें सूखडी प्रमुख यथा वांछित खवरावे छे. ते चमत्कार देखीने घणां लोक बौद्ध दर्शनी थायछे तेमाटे अमोने श्रीसंघे मली आपनी पासेंमोकल्या छे ते वचन सांनलीने ते यतियुगलनी साथें आचार्य नृगुकछें पधास्या.

तिहां विद्याने बलें करी आचार्यें ते शिष्यनां पात्रां विविध प्रकारनी मुनद्र नक्तिकायें नयां, आकाशमार्गेथी आवता हता तेने आवतांज आकाशथकी आकर्षी शिलातलने विषे आस्फाल्या थका नांगीने कटके कटका थइ नूमिने विषे पड्या ते देखीने पहेलो कुशिष्य तथा डुष्ट बौद्धो ते सर्वे जेम वायराथी आक नाश पामे तेम नाशिगया.

पठी आर्यखपटचार्य बौद्धना चैत्यने विषे गया तिहां बौधोयें कह्युं के प्रतिमाने नमस्कार करो आचार्य क्रोधें नखा थका बोल्या के अरे बौद्धो तमें सत्वर उठीने म्हारे पगें लागो. एवुं कहेतां वारज बौद्धदेव बौद्धिसत्वनी प्रतिमा आवी गुरुने पगें लागी ते केटलाएक दिवसपर्यंत तेमज गुरुना पगमां लागी रही एवो चमत्कार देखीने घणा बौद्धलोक प्रतिबोध पाम्या. केटलाएक दिवस तिहां रहीने गुरुयें अन्यत्र विहार कस्यो.

हवे पाडलीपुर नगरने विषे वाहड नामें राजा ते केवल विप्रनक्त ठे ते राजा सर्व दर्शनीउने तेडीने कहे के तमें विप्रने पगे लागो तो म्हारा नगरमांहे रहो नहींकां नगर मूकी चालता थाउ एवा राजाना आदेशथी सर्व दर्शनी विप्रने पगे लागीने तिहां रह्या. परंतु जैनना साधुउयें सात दिवसनी अवधि मागी ते राजायें पण आपी पठी उपाश्रयें आवी विचार करवा लाग्या के हमणा आपणामां जैनशासननो प्रनाविक थाय एवो कोण ठे?

तेवारें एक शिष्य बोल्यो जे खपटाचार्यना शिष्य महेंइ उपाध्याय हाल आपणा देशमां पधास्या ठे, ते प्रनाविक ठे ते सांनलीने श्रीसंघे तेमने तेडवामाटे बे यति मोकल्या. यतियें तिहां जइ सर्व वार्त्ता कही संनलावी तेवारें महेंइ उपाध्याय पण ते यतियुगलनी सायें पाडलीपुरें आव्या तिहां आहार करी स्वस्थ थइ घणा यतियोने परिवारें परवस्या थका करवीर वृक्षनी लांबी बे काम हाथमां राखी राजद्वारें गया राजा पण सिंहासने आवीने बेठा. राजानी बेहु बाजुयें पलोंठी वाली हस्त कर्णे ललाट प्रमुख अंगनेविषे लांबां लांबां टीलां काढीने ब्राह्मणोनी पंक्तियो बेठी ठे, उपाध्यायने राजायें कह्युं के ब्राह्मणोने नमस्कार करो. उपाध्यायें कह्युं, कइ पंक्तिना ब्राह्मणोने नमस्कार करीयें? राजायें कह्युं, ब्राह्मण सर्व पूजनीयज ठे माटे बेहु पंक्तिना ब्राह्मणोने पगें लागो. तेवारें महेंइ उपा

ध्यायें बेहु कांब ब्राह्मणनी बेहु पंक्तियें फेरवी तेथी विप्रोनां मस्तको द डानी पेठें आगले जइ पड्यां. ते देखी राजा प्रमुख सर्वलोक त्रास पाम्या; गाममां हाहाकार थइ रह्यो. राजा पोते सिंहासनथी ऊठीने उपाध्यायनें पगें लागो अने कह्युं के स्वामी,म्हारी भूल थइ ते माफ करो.

उपाध्यायें कह्युं, वली पण कहे के विप्रने पगें लागो. राजा बोल्यो महाराज म्हारो एकवार थयेलो अपराध खमो उपाध्यायें कह्युं तहारो अपराध माफ करुं बुं. पण हवे तुं विप्रनी वातमां पडीश नहीं,राजायें क ह्युं तमे दयालु बो माटे विप्रोने जीवितदान आपो एवामां अकाशवाणी थ इजे सर्व विप्रो दीक्षा लीये, तो जीवता रहे ते वात शेष विप्रोयें अंगीकार करी तेवारें उपाध्यायें तत्काल ते सर्व विप्रोनां मस्तक गला ऊपर मूकाव्यां ते मूकतावेंतज पोताने स्थानकें यथातथ्य बेसी गया ब्राह्मण सघला जीव ता रह्या. अने दीक्षा लीधी. राजायें पण श्रावकधर्म अंगिकार कस्रो.

ब्राह्मणोने दीक्षा देइ श्रीजिनशासनना प्रभाविक महेंद्र उपाध्याय भृगु कबें आव्या तिहां पोताना गुरुने वांदी बेठा. आर्यखपटाचार्यें श्रीमुनिसु व्रत स्वामीना चैत्यनी प्रतिष्ठा करी श्रीमहेंद्र उपाध्यायने आचार्य पदें स्था पी गछानुज्ञा दीधी. पोतें उत्तमार्थ साधीस्वर्गेपहोता तेमने पाटें महेंद्राचार्य पण महाप्रभाविक थया. आम्रवृक्षनां फलपण आम्रज होय ए दृष्टांतें जा णवुं. ए विद्यामंत्रप्राभाविक ऊपर आर्यश्रीखपटाचार्यनुं चरित्र कह्युं ॥

हवे सातमा सिद्धप्राभाविक तथा आठमा कविप्राभाविकनुं स्वरूप कहे ठे.

॥ संघाइ कज्जसाहग, चूसुंजन जोग सिद्धउ सिद्धे ॥ भूअब सबगाथी, जिण सासण जाणउ सुकई ॥ ३६ ॥ अर्थः—(संघाइ के०) संघ ते सा धु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका लक्षण जाणवो तथा आदि शब्द थकी जिनगृह, जिनबिंब, उपाश्रय, ज्ञानभंमार प्रमुख (कज्ज के०) कार्य लेवां ते कार्यना (साहग के०) साधक जे (चूसुंजनजोग के०) चूर्ण तथा अं जन अने योग तेणें करीने जे (सिद्धउ के०) सिद्ध थयो तेने (सिद्धे के०) सिद्ध कहीयें. एटले एटला वानां जेनां करेला साचा थाय पण खो टा नथाय विघटे नहीं तेने सिद्ध कहीयें. हवे चूर्ण ते शुं कहीयें, तो के जे थकी सुवर्णसिद्धि, रजतसिद्धि थाय एवा चूर्ण होय ठे जेम कालिकाचार्यें सोनानो इटवाह करी शाकराजानुं कटक सर्व संतोष्युं, ते चूर्ण जाणवुं.

हवे अंजननुं स्वरूप कहे छेः– आंखमां अंजन करवायका निधान देखी यें नूरव्यो होयने राजा प्रमुखनी थालिमां वेसी जमे तोपण कोइ देखे न हीं वली बीजापण एवा चिंतितकार्य करीयें. ते सर्व अंजन कहीयें.

तथा योग ते औषधिने योगें पादलेप करवाथी आकाशगामिनी गति आवे,तीर्थयात्रा करीयें तथा जे औषधिने योगें सौभाग्य पामीयें दौर्भाग्य पामीयें.एवा ए औषधादिकना योग कह्या छे. पण जे जाणकार होय ते मात्र संघादिकना कार्यने अर्थेंज फोरवे. ते गुरुनी तथा श्रीतीर्थंकरनी आज्ञायें फोरवे केमके श्रीजिनशासनने विषे सर्वक्रिया आज्ञा प्रधान छे ॥ यतः॥ छछ मदसम, दूवालसेहिं मासद्व मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिउ होइ ॥ १ ॥ इति पंचम प्रत्याख्यान पंचाशके ॥

हवे एनी उपर पादलिप्ताचार्यनो दृष्टांत कहे छेः– एहज भरतक्षेत्रने वि षे अयोध्यानगरीयें फलक नामें श्रेष्ठी धनाढ्य छे तेने पडिमा नामें स्त्री छे, तेणें पुत्र थवामाटे वैरुट्या देवीने आराधी देवीयें स्वप्नमां आवीने कह्युं के तुं श्रीनागहस्ति आचार्यनुं पगधोयण पीजे, तेथी तुजने घणा पुत्र थाशे ए वुं कहीने देवी अदृश्य थइ. प्रभातें पडिमा श्राविका पडिक्कमणुं करी, देव जुहारी, उपाश्रयें आवी एटले गुरुनो पगधोयण परठववाने वेयावच्ची साधु बाहेर निकल्यो छे तेने पडिमा श्राविकायें पूछ्युं आ शुं छे ? साधुयें कह्युं गुरु नुं पगधोयण छे, श्राविकायें कह्युं ए मुजने आपो महारे एनो खप छे ते धो यण साधुयें आप्युं घेर जइ श्राविकायें पीधुं ते पीकरीने पाछी उपाश्रयमां आवी गुरुने वांदी करी सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें गुरुयें श्रुतोपयोग देइ कह्युं के हे श्राविका, तुजने जे पहेलो पुत्र थाशे तेने छोडीने तुं यमुनाना तटउपर दशवर्षपर्यंत वास करजे,तो ए पुत्र जीवशे अन्यथा पहेलोपुत्र जीवशे नहीं.

ते सांभली श्राविकायें कह्युं एटलुं महाराथी बनशे नहीं. माटें प्रथम पुत्र जे थाशे, ते हुं तमोने आपीश गुरुयें कह्युं एम करीश तो चिरंजीवी थाशे. एवी वात अंगीकार करी ते श्राविका घेर आवीने फलकशेठनी आ गल सर्ववात कही, तेणेपण ते वात अंगीकार करी पछी ते श्राविकाने ते हिज रात्रीयें नागलोकथकी चवी रत्नमयनागदर्शन स्वप्न सूचित देवता ग र्भपणे आवी उपनो. स्त्रीयें स्वप्ननुं वृत्तांत शेठने प्रभातें आवी कह्युं शेठ बोल्या तुजने उत्तम पुत्र थाशे. अनुक्रमे सातमे महिने ते स्त्राने एवो दो

होलो उपनो जे हुं उद्याननेविषे जइ दान आपुं, तेवात शेठ आगल कही शेठें उद्याननेविषे दान देवरावी दोहोलो पूर्ण कस्यो.

हवे दिवस पूर्ण थये थके पुत्रनो जन्म थयो,शेठें जन्ममहोत्सव कीधो रत्नमय नाग स्वप्नमां दीठो तेमाटे तेनु नाम पण नागेंद्र दीधुं पछी ते पुत्र लइ गाजते वाजते उपाश्रयें आवी गुरुने अर्पण कस्यो. तेने गुरुयें कह्युं, अमारो थको आठ वर्ष लगण तमें पालण पोषण करो, पछी अमे दीक्षा देशुं एवुं गुरुनु बोलवुं सांभली ते पुत्रने घेर लइ आव्या ते अनुक्रमें वधतो आठ वर्षनो थयो, तेवारें तेनें महामहोत्सवे गुरुयें दीक्षा दीधी. पडिमा श्राविकाने बीजा पण राजहंस सरखा घणा पुत्र थया ते कुलना आधार भूत थया अने प्रथम पुत्र गछनो आधरभूत थयो.

हवे ते न्हानो चेलो पासेना घरथकी आछण वहोरी आव्यो तेने गुरुयें पूछ्युं चेला तुं आलोइ जाणे छे चेलायें कह्युं हा महाराज तमारा प्रसादें हुं जाणुं छुं. गुरुयें कह्युं केवी रीतें आलोइयें? चेलो बोल्यो ॥ अंबतंबछीए, अपुप्फिअं पुप्फदंतपंतीए ॥ नवसालीकं जीयं, नववहूइ कुडएण महदिन्नं ॥ १ ॥ ए आर्यामां श्रृंगार पोषण कस्यो माटें गुरु खीज्या थका बोल्या हे "पलीत !" तेवारें चेलायें कह्युं एक मात्रा अधिक आपो एम तेनी चतुराइयें गुरु संतोषवंता थयाथका "पालित्त" एवो नाम देता हवा.

हवे ते शिष्य पोतानी प्रज्ञाने बलें करी जे कांइ सांभले ते सर्व जाणे एना मुखपाठेंज छें एम बहुश्रुत थयो जाणीने गुरुयें तेनें सूरिपद दीधुं गछानुज्ञा दाधी. पछी ते शिष्य सर्वत्र स्वदर्शन, परदर्शनमां जाणीतो थयो गुरुयें तेने योग्यजाणीने पादलेप विद्या आपी जेनाथी आकाशमां गमन करवानी शक्ति आवे तेथकी पादलिप्त सूरि कहेवाणा.

एकदा गुरुनी आज्ञा मागी पादलिप्तसूरि साधुना समूहसहित पाडलीपुरें आव्या.तिहां मुरुड नामे राजा राज्य करे छे तेने कोणिकें सूत्रनो दडो आप्यो छे. ते घणाजनोने देखाड्यो, पण तेनो कोइ तार काढी शके नहीं उखेडी शके नहीं पछी राजाये पादलिप्तसूरि आव्या जाणीने तेडाव्या.सूरि पण सभामां आवी बेठा राजायें सूत्रनो दडो आपी कह्युं ए दडो उखेली आपो. आचार्यें उष्णपाणीमांहे दडो मूक्यो तेवारे ते उष्णपाणीने योगें दडा उपर चडावेलुं मीण उतरी गयुं. तार मली आव्यो दडो उखेली आप्यो.

राजा खुशी थयो वली राजायें एक दावडो उघाडवा माटें आप्यो तेने पण गुरुयें तेमज उष्ण पाणीमां मूक्यो उष्णताने योगें लाख उतरी गइ तेथी संधीबंधी प्रगट थइ तेवारे दावलो उघाडी आप्यो.

हवे गुरुयें एक तूंबडूं रत्ने नरी शीवीने राजाना हाथमां उघाडवा आप्युं राजायें उघाडवा माटे घणा उपाय कस्या पण शीववानो मूलस्थानक पाम्यो नहीं ए प्रकारें राजा गुरुनी चतुराइ देखी चमत्कार पाम्यो.

एकदा राजाने असाध्य रोग थयो वली मस्तकें शूल थयुं, वैद्य तथा योगी प्रमुख घणा आव्या, पण वेदना शमे नहीं तेवारें आचार्यने तेडाव्या गुरुयें कह्युं तिहां आववानुं शुं कामछे ? तमे तिहां जइने राजाने अमारी सन्मुख सुवरावो अमे इहांज बेगं वेदना समावी देशुं तेवारें प्रधाने राजा ने गुरुनी साहामो सुवास्यो गुरुयें तिहां बेगं राजाना जानु ऊपर आंगुली फेरवी के राजानी वेदना तरत शमी गइ राजायें महोटो महोत्सव कस्यो पोतें श्रावकधर्म अंगीकार करी गुरुनो परमभक्त थयो.

हवे गुरु तिहांथी संघनीसाथें विहार करी मथुरा नगरीयें आव्या,तिहां देवताना करेला थूभने विषे देव जुहास्या तिहांथकी संघनी सायें गुजरात मांहें ॐकारपुरने विषे आव्या. तिहां देवयात्रा करी तिहांथी खेडपुरें आव्या, तिहां चार पाहुडा पाम्या, जेमां पूर्वना अधिकार विशेष होय तेने पाहुड कहियें. योनिपाहुड, निमित्तपाहुड, विद्यापाहुड अने सिद्धपाहुड तेमां,प्रथम योनिपाहुडमांहे तो विविध औषधीनेयोगें करी जीवनी तथा अजीवनी उत्पत्तिना प्रकार पामीयें. बीजा निमित्तपाहुडमांहे अष्टांग निमित्त पामीयें. त्रीजा विद्या पाहुडने विषे मंत्रविद्यानी साधना तथा तेनां फल कह्यां छे. चोथा सिद्धपाहुडने विषे सर्व सुवर्णसिद्धि रूपसिद्धि प्रमुख सिद्धि पामीयें ए चार पाहुड पामीने पादलिप्तसूरि देवदाणवने पण अजेय थया.

हवे ते समयें दक्षिणदेशे खेडपुर, लाटदेशें भृगुकछ, सोरठदेशें वल्लभी नगरी तथा सूरासनदेशें मथुरानगरी ए चार नगरने विषे जैननो संघ घणो पामीयें तिहां खेडपुरनो संघ मली गुरुने अन्यत्र विहार करवा आपे नहीं. कारण के तिहांनो राजा उग्र छे ते ए गुरुविना बीजा कोइने वश नावे.

एवामां भृगुकछने विषे ब्राह्मणो मली श्रावकोनें पूजादिक कार्य करवा दीये नहीं. तेमाटे संघे गुरुने विनंति लखी मोकली जे आप अत्र पधारजो

घणी जिनशासननी उन्नत्ति थाशे. तेवारें गुरुयें कह्युं कार्त्तिकवदि प्रतिपदाने दिवसें भरुअच्चें आवी देवजुहारवानो अमारो भाव छे एवुं सांभळीने श्री संघे पण ते दिवसें भेगाथइने महोटा विस्तारसहित पूजा मांमी.

आचार्यें पण एक प्रहर लगण वखाण वांचीने खेडपुरथकी पादलिप्त विद्यायें भृगुकच्छें पधास्या. तिहां पण समस्त संघ वाट जोतो बेठो छे एट लामां अश्वावबोध तीर्थने विषे गुरु आव्या दीठा, तेवारें संघ हर्ष पाम्यो थको आवीने गुरुने वंदना करी राजादिकने पण सूरि आव्यानी खबर थइ तेवारे राजा तथा ब्राह्मण प्रमुख समस्त लोक आवी गुरुने पगे लाग्या, संघें पण राजा प्रमुख समस्त लोकने वस्त्रादिक आपवे करी संतोष पमाड्या. राजायें गुरुने कह्युं के महारो शो वांक छे के आप महारा नगरमां पधार ता नथी? गुरुयें कह्युं खेडपुरनो संघ आववा देतो नथी, तेने डुहवीने अवाय नहिं. माटे अमे हवे आहार पाणी तिहांज जइ करशुं.

राजायें वीनव्यो के जो तमे प्रतिदिवस देव जुहारवा प्रधारो, तो हुं आठ दिवसपर्यंत महोटा विस्तारपूर्वक पूजा रचावुं. ए विनति गुरुयें अंगी कार कीधी. अनुक्रमें वल्लभी नगरीयें आव्या, तिहां शत्रुंजय गिरनार प्रमु ख तीर्थोनी यात्रा करी पछी ढंकपुरनगरें आवी देव जुहास्या.

ते ढंकपुरमां एक नागार्जुन योगी छे तेणे सुवर्णसिद्धिना योगथी घणा लोकने संतोष्या छे तेमाटे तेनी अत्यंत प्रसिद्धि थयेली छे ते योगी आवी आग्रह करीने गुरुने पोताना मठमां तेडी गयो, तिहां तेणे गुरुना प्रासुक पाणीयें पग धोइने भक्ति करी ते भक्तिनी साथें विनति पण करी के स्वामी मथुरामां आठ दिवस तमारे देरासरें पूजा महोत्सव छे, माटें प्रतिदिन प धारवुं. तेनुं वचन मान्य करीने गुरु, मथुरायें पधास्या. तिहां देवजुहारी खेडपुरनगरें आवी आहार करे एटला सर्व कार्य त्रण पहोरमांहे करे. एवी पादलेपशक्ति छे एम आठ दिवस लगण उपर कहेला सर्व स्थानकें यात्रा करी फरी खेडपुरमां आवी आहार करे.

हवे नागार्जुन योगीयें गुरुना पग धोयणने सूंघीने ते मांहेथी १०७ औष धीना नाम जाणीने ते कागळ उपर लखी लीधा पछी ते एकशोने सात औषधी सायें आठमुं पाणी भेळी पोताने पगें लेपकरी उडवा लाग्यो पण उडीने वळी पडीजाय एम परिश्रम करतां ते योगीना शरीरें चांदां पड्यां तेजोइ गुरुयें

तेने चांदा पञ्यानुं वृत्तांत पूछ्युं, तेवारें तेणे यथास्थित वार्त्ता कही दीधी. गुरु तेनुं ज्ञान देखी चमत्कार पामी कहेवा लाग्या के, तें सर्व औषध जाण्यां. पण गुरुज्ञान रह्यो छे. तेवारें नागार्जुन पगेलागी वीनवतो हवो के, महाराज! हुं सुवर्णसिद्धि तमने आपुं, पण मुजने ए विद्या आपो. गुरुयें कह्युं सुवर्णसिद्धिने अमे शुं करीयें एवुं कही गुरु चालता थया. जोगी तेमने वोलाववा आव्यो तिहां कुंनारनो इंटनिवाह छे, ते इंटनिवाहनी उपरें गुरुयें चूर्ण नाख्युं अने नागार्जुनने कह्युं तुं प्रनातें ए इंटनिवाह जोजे एवुं कही मथुरा नणी आकाशमार्गें चाल्या. प्रनातें योगी आवीने जूए छे, तो पहेलुं घर वधुं सुवर्णमय दीठुं ते जोइने योगीनुं मन चलायमान थयुं अने मनमां विचार्युं जे एनी आगल महारी शी गणती छे.

वली एकदा प्रस्तावें गुरु श्रीशत्रुंजय पधार्या जाणीने नागार्जुनें आवी गुरुने पगें लागी कह्युं, स्वामी! विद्या आपो गुरुयें कह्युं तुं श्रीजिनधर्म अंगीकार करे तो हुं विद्या आपुं अन्यथा न आपुं पछी ते नागार्जुने श्रावकधर्म आदर्यो, तेने श्रावकधर्म आपी पादलेप विद्या पण आपी ते नागार्जुन धर्म पामी तथा विद्या पामी हर्ष पाम्यो थको शत्रुंजयनी तलहटीयें गुरुने नामे पालीताणुनगर वसाव्युं गुरुनुं नाम पादलिप्त हतो तेनो अपभ्रंश शब्द थइने पालीताणु नाम थयुं, पछी ते नागार्जुन हर्षवंत थको परम जैनधर्म पालतो परम श्रावक थयो.

हवे पयठाणपुरने विषे शालिवाहन राजा राज्य करे छे. तेनी सनामां हे चार पंमित लक्षलक्ष श्लोक प्रमाण शास्त्र रचीने आव्या तेमां आत्रेय कवियें एक लक्ष प्रमाण वैद्यकशास्त्र कर्युं तथा कपिल कवियें एक लक्ष प्रमाण धर्मशास्त्र रच्युं तथा वृहस्पतियें एक लक्ष प्रमाण नीतिशास्त्र रच्युं, तथा पंचाल कवियें एक लक्ष प्रमाण कामशास्त्र रच्यु. ते चारे जण आवीने राजाने कहेवा लाग्या के अमे शास्त्र रच्यां छे, ते तमारे सांनलवां जोइयें. राजायें कह्युं एवडां महोटां शास्त्र सांनलतां हुं क्यारे परवारुं ते माटे एक पद " आद्यंताभ्यां " एटले एकेका पदमां कविनुं नाम बीजुं आद्यशास्त्रनुं नाम, रहस्य आणीने मुजने समजावो जेम हुं सांनलुं.

तेवारें ते चारे पंमित एकेका पदमांहे नामगर्भित शास्त्रनुं रहस्य करी लाव्या ॥ तद्यथा ॥ जीर्णेनोजन मात्रेयः, कपिलप्राणिनां दया ॥ वृहस्पतिरविश्वासः,

पंचाग्नः स्त्रीषु मार्द्दवं ॥ १ ॥ ते सांभली राजा हर्ष पाम्यो. दान आपी रा जा शिवशासननी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी भोगवती नामें श्राविका छे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद गयघडा मय नरेण डुप्पिछा ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउ समूल सइ ॥ १ ॥ राजायें पूछ्युं ते पादलिप्तसूरि कोण छे? राणीयें सर्व तेनुं वृत्तांत आद्यथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना शंकरनामा प्र धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें जइ गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आमंबरसहित नगरमां प्रवेश करवानो महोत्सव कर्यो. पछी राजायें चारे पंमितनी साहामुं जोयुं त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करशुं, पछी राजा नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली घृत थी भरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे पण थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण छे माटे ल्यो.

गुरुयें अंतरंगभाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे पात ली सुइ घाली ते उपरथी एवो भाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे बारीक सूइ घालीने घृत भेद्युं छे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म भेद करीश. हीरा यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने बृ हस्पतिनो मद गल्यो काष्ठनी पेठें निश्चेष्ट थयो अने विचार्युं जे ए आचार्य नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.

हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधराव्या प्रतिदिवस राजा पण तेमनो रचेलो ग्रंथ सांभले तेथी राजा गुरुनो परमभक्त थयो चारे ब्राह्मणने बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें भराणो थको राजाने कहेवा लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे छे. राजायें पूछ्युं ते केम ? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठें छे राजायें कह्युं, ते केम जणाय ? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांभली ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संभलाव्यो. रा जायें ते सत्य करी मान्यो.

हवे ए वातथी संघने लज्जानुं काण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी प्ति करवाने अर्थें गुरुयें उपाय कर्यो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ण पाम्या, तेमनें श्रावको महोटा आडंबरथी बाहेर परठवानो उपाय क रवा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजलीने नगरनां लोक सर्व तेमना गुण सं जारी संजारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद्य था ॥ सीसे कहवि न फूटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुह नि ऊराउ, तरंगलोला नईवुढा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजली गुरु बेग थया श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो महोत्सव कर्यो. गुरुने लोकें पू ब्युं साहेब! आप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना वचनामृतथी जीवतो थयो बुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो बे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा जानो कलुषजाव दूर कर्यो. ए वातथी राजायें पण जाण्युं जे मुजने पंचा लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ चार्यें, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पबी उ पकार कर्यो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो. ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, बेवट आउखानो अं तसमय जाणी अनशन आदरी इंडनी सजाना मंमन थया. ए सिद्धप्राजा विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्राजाविक कहे बेः—

(जूयबसब के०) जूतार्थ शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेहवा जाव कह्या बे, तेवाज जावें प्ररूपणा करी नवा शा स्त्रोनी (गथा के०) गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यमय जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउ के०) श्रीजिनशास नना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो जक्त एवो जे होय, तेने (सुकई के०) सुकवि कहायें ते जिनशासननो प्राजाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रजावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें बैयें. विद्याधरगबने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य बे, ते विहार करता गौडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्रा ह्मण गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो; जेमाटे "यथा चतुर्जिःकनकं परीक्ष्यते, निघर्षण बेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविदुषा परीक्ष्यते, श्रुते न शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥" ते ब्राह्मणें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

अने दया ए चार वानां मांहेलुं एके वानुं पण शिवशासनमांहे शुद्ध न थी. तेमज वली ते शासनमां अभिनिवेश मिथ्यात्व तो बेज, माटे तेनां ए चार वानां शुद्ध पण कहेवाय नहीं. अने जैनना ए चारे वानां शुद्ध बे. एम ते वैराग्य पाम्यो थको दीक्षा लेतो हवो. हवे ते मुकुंदचंद नामा साधु हरहमेश ढच्चर शब्द करतो शास्त्र गोखतो रहे.

तेने गुरुयें वार्यो के, हे महानुभाव! रात्रियें महोटे शब्दें गोखवुं नहीं. जेमाटे महोटे शब्दें गोखवाथी जो अनार्यलोक जागे तो दलवा, खांमवा, पीसवा प्रमुख आरंभमां प्रवर्त्ते ॥ यतः ॥ जागरिया धम्मिणं, अहम्मीणंतु सुत्तया सेया ॥ वत्ताहिव भगिणीए, अकही सुजिणो जयंतीणं ॥ १ ॥ इति भगवती सूत्रना भावनी गाथा तथा यतिदिनचर्या ग्रंथमां पण ए गाथा बे.

पबी ते साधुयें रात्रें गोखवुं मूकी दइने दिवसेंज महोटे ढच्चर स्वरें गोखे. ते लोकोने अनिष्ट लागे तेमज न्हाना चेला तथा गृहस्थना बोकरा तेनी उपर हसे, एकदिवस तेने केटलाएकें कह्युं के आ वृद्धपणमां आकरे शब्दें गोखीने शुं मूसलो फूलावशो एवुं हांसुं सांभलीने ते विद्यानो अर्थी बतो सरस्वती देवीना चैत्यें जइ बेगो तिहां एकवीश उपवास कस्या, तेना भाग्य योगें सरस्वती प्रगट थइ ने कह्युं के हे आर्य! तुं सर्वविद्यानो पारंगामी था. एवुं कही देवी अदृश थइ.

पबी ते साधुनी जेवारें कोइयें हांसी करी तेवारें एणे कह्युं आवो मूसलो फूलावी देखाडुं. पबी चउटामां जइ स्थूल मूशलो अणावी तेने मंत्र शक्तियें करी पत्र पुष्प फलादिकें करी फूलावी देखाड्यो अने कहेवा लाग्यो के जे महारी साथें वादें आवे तेनी उपर पत्रावलंबन कीधुं बे. एम कहे. स्कंदिलाचार्यें तेने प्राभाविक जाणी आचार्य पद आप्युं. तेमनुं वृद्धवादी एवुं नाम दीधुं अने पोतें अनशन करी देवसभाना भूषण थया. एकदा श्रीवृद्धवादी सूरि भरुअच्चें पधास्या तिहां तेमनो घणो महिमा वध्यो.

हवे उज्जयणी नगरीयें विक्रमादित्यराजा राज्य करे बे. तेनो प्रधान देवऋषि ब्राह्मणनी देवसिका स्त्री बे, तेनो सिद्धसेननामा पुत्र बे, ते सकल विद्यानो पारंगामी बे परंतु अहंकारी बे तेथी तेणे एवी प्रतिज्ञा करी बे के मुजने जे जीते, तेनो हुं शिष्य थाउं. पबी तेणे वृद्धवादी सूरिनुं पत्रावलंबन सांभली सुखासने बेगे थको घणा बात्रें परवस्यो थको भृगुकच्छे आवे बे.

एवामां वृद्धवादीसूरि पण कोइ कार्यथैं घणा शिष्यने परिवारें बाहिर निकल्या छे. तेवारें सिद्धसेनें छात्रोने पूछ्युं ए कोण श्वेतांबर जाय छे? छात्रें कह्युं ए वृद्धवादी सूरि वादि मदभंजन जाय छे.

ते सांभली सिद्धसेन, तेमनी पासें आव्या अने कहेता हवा के तमारी सायें हुं वाद करीश. आचार्यें कह्युं इहां रानमां श्यो वाद करवो, इहां पोकार करवाथी शुं वळवानुं छे चालो नगरमां जइ राज्यसभायें वाद करीयें. सिद्धसेने कह्युं आ गोवालीया आपणा साक्षी छे एज हार जीत कहेशे, ते आपणने प्रमाण छे. गुरुयें विचार्युं जे ए पंडित तो छे पण उतावळीयो छे. तेवारें गुरुयें कह्युं पूर्वपक्ष कर.

पछी सिद्धसेनें गाढे स्वरें पूर्वपक्ष कर्यो, अने संस्कृतभाषामां कठिण काव्य बोलवा लाग्यो, गोवालीया बोल्या एने तो भूत लाग्युं जणाय छे? कोइ रीतें ए बोलतो रहेतो नथी। मह्योटे सादें बोलीनें अमारा कानने पीडा करे छे हवे ते वारंवार तर्कवादें जेवारें आरडी थाक्यो? तेवारें वृद्धवादीने कहेवा लाग्यो के हवे तमें उत्तरपक्ष करो.

वृद्धवादीयें मनमां चिंतव्युं जे आ गोवालीयानी सभामां श्यो तर्कवाद करीयें? इहां तो आंधलाने आरीसो देखाडवानो न्याय थाय, माटें विचार करीने काछडो बांधी रजोहरण केडमां बांधी घीहीणीछंदनी राशि भणता कांइक नाचता कूदता थका मुखथी एवी रीतें कहेता हवा. तद्यथा ॥ नवी मारीयें नवी चोरीयें परदारा गमन निवारीयें, थोवाथोवुं दाइयें, तो सर्गें दडवडी जाइयें ॥ १ ॥ कालुंकांबल नीचोवट्ट, छाशें भरीयो दीवडो थट्ट ॥ एवड पडीयो नीले जाड, अवर किश्युं छे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ इत्यादिक छंद भणता जाय अने दांडो उछाली नाचता जाय, तेवारें गोवालीया पण लाकडी उछाली गुरुने प्रदक्षिणा देता नाचता हुवा अने कहेता हवा के आ वृद्धवादी गुरु मह्योटा पंडित छे अने आ बापडो बांभणीयो तो मात्र मह्योटा पोकार करी जाणे छे, पण कांइ भण्यो नथी.

एवुं गोवालीयानुं वचन सांभली सिद्धसेन ब्राह्मण आवी गुरुने पगें लागीने कहेवा लाग्यो जे हुं तमारो शिष्य थयो मुझने दीक्षा आपो तमें समयना जाण छो अने हुं समयनो जाण नथी माटें हुं मूर्ख छुं तेथी हुं हार्यो अने तमें जीत्या तेने गुरुयें कह्युं एथी तुं कांइ हार्यो नथी अने हुं

जीत्यो पण नथी एतो मात्र आपणे रमततुल्य चर्चा थइ माटे चालो आ पणे राज्यसन्नामां जइ वाद करीयें, तिहां जे जीतदार थाय ते बेहुने प्रमाण छे. सिद्धसेनजीयें कह्युं के में प्रतिज्ञा करेली छे के जे मुजने हरावे तेनो हुं शिष्य थाउं माटें दीक्षा आपो. पछी गुरु नगरमां तेडी आव्या राजसन्नामां वादें जीतीने रूडुं मुहूर्त्त जोइ तेने दीक्षा आपी. राजायें ते वात सांन्नलीने जिहां गुरुयें तालोटा दीधा हता तिहां तालारस नामें गाम वसाव्युं तिहां श्रीरुषन्नदेवनुं प्रासाद कराव्युं तेनी वृद्धवादी सूरियें प्रतिष्ठा करी.

मुकुंदचंद साधुनुं नाम सिद्धसेन थाप्युं अनुक्रमे पूर्वगत आम्नाय मां हेली केटलिएक विद्याउ नण्या माटे योग्य जाणी गुरुयें तेमने आचार्य पद आपतां सिद्धसेनदिवाकर एवुं नाम दीधुं ॥ यतः ॥ वाईय खमासम णे, दिवायरे वायगित्ति एगठा ॥ सूत्ते पूव्वगयंमि, एए सद्दाय पयट्टती ॥१॥

एकदा सिद्धसेनसूरि गुरुनी आज्ञा मागी उज्जयणीयें आव्या तिहां श्रा वकोयें महोटे महोत्सवें पेसारो कराव्यो नगरीना चोकमां आव्या तेवारें राजा विक्रमादित्य पण हाथी उपर चडेला एमने सामा मल्या अने पू छ्युं, ए कोण आवे छे? श्रावकोयें कह्युं सर्वज्ञ पुत्र आवे छे. राजायें तेनी परीक्षा करवा निमित्ते हाथी उपर चड्यो छतां मनथी प्रणाम कस्यो गुरुयें तेनें महोटे स्वरें धर्मलान्न दीधो. राजा समज्यो जे मुजने महोटो जाणी धर्मलान्न दीधो हशे. एम विचार करी गुरुने पूछ्युं तमोने जे नमस्कार क रे, तेने तमें धर्मलान्न द्यो छो के जे नही नमे, तेने पण धर्मलान्न द्यो छो ? शुं तमारो धर्मलान्न घणुं सस्तो छे? गुरुयें कह्युं अमारो धर्मलान्न कोडी चिं तामणि रत्नोथी पण अधिक महर्घ्य छे माटे जे नमे तेनेज आपीयें तमे मनमां न्नावथी नमस्कार कस्यो माटे तमोने धर्मलान्न दीधो, जेमाटे प्रधा नपणु न्नावनमस्कारने छे ॥ यतः ॥ वावाराणं गुरुउ, मण वावारो जिणेहि पसुतो ॥ जो नेइ सत्तमिवा, अहवा मुरकं पराणेइं ॥१॥ ते सांन्नली राजा ह र्ष पाम्यो हाथीथकी उतरीने वंदना करी कोडीसुवर्ण नाणक आगल मूक्यां. गुरुयें कह्युं अमें ए सुवर्णने शुं करीयें अमें तो निर्ग्रंथ छैयें. राजा बोल्यो में ए धर्मादा कल्प्यो माटे हवे महारें नंमारमां ए इव्य खप आवे नहीं. पछी ते इव्य राजायें जीर्णचैत्योद्धार निमित्तें श्रावकोने न्नलावी, अने वहीमां आवी रीतें धर्मलान्ने लखाव्युं ॥ यतः ॥ धर्मलान्न इति प्रोक्ते दूराडूच्छ्रितपाणये ॥

सूरये सिद्धसेनाय, ददौकोटि धराधिपः ॥१॥ पुत्ते वास सहस्से, सयंमि व रिसाण नवनवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुहविक्कमराय सारिच्छो ॥ १ ॥ राजा विक्रम गुरुनो नक्त थयो पछी गुरु अनुक्रमें विहार करतां चित्रकूटें आव्या. तिहां प्रासादें देव जुहारी समस्त प्रासाद जोतां एक प्रासादें लेखमय स्तंन दीठो वृद्धश्रावकने पूछ्युं ए शुं छे ? श्रावकें कह्युं ए पूर्वाचार्यें मंत्राक्षरमय पुस्तक नाखी लीपमय स्तंन कीधो छे. एने कोइ उघाडी शके नहीं. गुरु प्रतिदिन देरासरें आवी स्तंनने सूंघे. एम सुंघता तेनी सर्व औषधियो जाणवामां आवी,पछी तेनी प्रतिपक्षी औषधि पाम्या ते औषधि उनो रस छांट्यो तेथी पाका चीनडानी पेरें स्तंन फाटी पड्यो,तेमांहेथी एक पानुं काहाडी वांच्युं तेमांथी एक सरशवविद्या अने बीजी सुवर्ण विद्या ए बे विद्या मली एटलामां थांनो फाटेलो हतो ते मली वज्रमय थइ गयो. अने आकाशवाणी एवी थयी जे हे आचार्य ! ए विद्याने तुं अयोग्य छो माटे चपलस्वनाव मूक नहींका जीवितना संदेहमां पडीश. बे विद्या पाम्या तेमां सरशव विद्या तो कोइ काम पडे तो जेटला सरशवना दाणा मंत्रीनें जलाशयमां नाखीयें तेटला असवार बेंहेंतालीश प्रकारना हथीयारें सहित बाहेर निकलीने लडाइना मेदानमां खडा थइ आवी उना रहे. ते शत्रुनी सेनानो नंग करी पछी अदृश्य थइ जाय अने सुवर्णविद्याथी वगर प्रयासें जेटलुं सुवर्ण जोइयें तेटलुं तयार थइ जाय. ए बे विद्या गुरुने मली पछी तिहांथी विहार करीने गुरु,पूर्वदिशें कुमारपुरने विषे गया तिहां देवपाल नामें राजा छे तेने प्रतिबोधीने पाको जैनधर्मी कर्यो. ते प्रतिदिन एमनी पासें वखाण सांनलवा आवे, तेथी परस्पर प्रीति थइ एम केटलोएक काल व्यतीत थयो. एकदा राजाने चिंतातुर देखी गुरुयें चिंतानुं कारण पूछ्युं, राजायें कह्युं स्वामी ! महारा घणा वैरी एकठा थइ कटक लइ आवे छे, माटे हवे महारे शुं करवुं ? गुरुयें कह्युं कांइ चिंता म करो. सर्व रूडुं थाशे.

केटलाएक दिवस पछी वैरीउयें आवी राजानुं नगर वींट्युं गुरुयें पाणीयें नरेलुं कुंडुं अणावी तेमां विद्यायें अनिमंत्रित सरशव मूक्या, तेमां जेटला सरशव हता तेटला समस्त आयुधें सहित असवार निकल्या तेणे वैरीना सवारो सायें युद्ध करी हतप्रहत कीधा नंतर पोतानी मेलें अदृश्य थइ गया. राजायें, जयनंना वजडावी सूरिनी पासें आवी पगे लागीने

कह्युं महाराज ! तमें मुजने जीवाड्यो अने आ राज्य पण तमें आप्युं.

हवे राज्यमान पामीने शिद्धसेन सिथिलाचारी थया. दरवाजा आगल असवार ऊभा रहे, कोइ श्रावकमांहे जइ शके नहीं ॥

हवे श्रीवृद्धवादिसूरि शिद्धसेननुं सिथिलाचार सांभली दया आणी प्रतिबोध देवा माटे तिहां आवी दरवाजा आगल ऊभा रही कहेवराव्युं जे एक बुढोवादी आव्यो छे. ते सांभली सिद्धसेने तेमने बोलावीने पोतानी आगल बेसाड्यो. तेवारें वृद्धवादी पोतानुं सर्व शरीर वस्त्रोथी ढाकीनें बोल्या. अणफूलिय फूल म तोडहिं, मारोवा मोडहिंमणुकुसुमेहिं ॥ अच्चिनिरंजणंजिण,हिंम्फइकाइवणेण विणु ॥२१॥ ए गाथा सांभलीने सिद्धसेने विचार कर्यो पण गाथानुं अर्थ न पाम्यो तेवारें विचार्युं के शुं आ महारा गुरु वृद्धवादी छे ? के जेनी कहेली गाथानो हुं अर्थ समजी शकतो नथी. पछी वारंवार तेमना साहामुं जोवा लाग्यो. तेवारें जाण्युं जे ए महारा गुरु छे तेथी नमस्कार करी क्षमापन मागी पूर्वोक्त श्लोकनो अर्थ पूछ्यो तेवारें वृद्धवादीजीयें कह्युं के अप्राप्त फूलोने तुं त्रोडी म नाख. भावार्थ ए छे के योग जे छे ते कल्पवृक्ष छे जेमां यम नियम तो मूल छे अने ध्यानरूप महोटो स्कंध छे तथा समतापणुं, वक्ता, यश, प्रताप, मारण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरणादिक सिद्धिउनुं जे सामर्थ्य ते फूल छे अनें केवलज्ञानरूप फल छे तेमां हजी तो मात्र योगकल्पवृक्षना फूलज लागां छे ते केवलज्ञान रूप फले करीने आगल फलशे माटे जे फूलोमां फल प्राप्त थयां नथी एवा अप्राप्त फल पुष्पोने तुं शामाटे त्रोडे छे ? अर्थात् म त्रोड,एवो भावार्थ छे. तथा "मारोवामोडेहिं" ज्यां पांच महाव्रत आरोप्या छे तेने मरोडी म नाख. तथा मणुकुसुमेत्यादिनुं अर्थ आम छे जे मनरूप कुसुमें करी निरंजनजिनने पूज. तथा " वनात्वनंकिंहिंम्से " एटले राज सेवादिक मागें नीरस फल कां करे छे ? ए सांभली सिद्धसेनसूरि गुरुनी आज्ञा पोताना शिर उपर चडावी राजाने पूछी गुरुनी साथें विहार कर्यो अने निविड चारित्र धारण कर्युं. एम गुरुयें प्रतिवोधी समजावी राज सेवा मूकावी पोतानी साथें तेडी गया, प्रायश्चित्त आपी चारित्र शुद्ध कीधुं हवे सिद्धसेनसूरि अन्य आचार्य पासेंथी पूर्वगत विद्या लेइने श्रुतधर थया. अनुक्रमें श्रीवृद्धवादी आत्मार्थ साधी देवसभामांहे जइ वेगा.

एकदा सिद्धसेनसूरि अहंकारमां मग्न थया थका श्रीसंघने कहेवा ला ग्या के तमे कहो तो सर्व सिद्धांतनो प्राकृत भाषा टालीने संस्कृत करुं जे म लोक आपणने हसे नहीं ते सांभली श्रीसंघें कह्युं के तमोने प्रायश्चित्त उपनुं जेमाटें सर्वाक्षर सन्निपात लब्धिना धणी एवा श्रीगणधर देव तेमांहे संस्कृत भाषा करवानी शक्ति हती तथापि लोकोपकारने अर्थें सिद्धांतो प्रा कृत भाषामां कर्यां छे, तेथी श्रीतीर्थंकरनी तथा गणधरनी आशातना तमें करी, माटे तमोने पारांचिक नामें प्रायश्चित्त उपनुं तेथी केम छूटशो ?

तेवारें पश्चात्ताप करता श्रीसंघने विनति करता हवा के दशमुं प्रायश्चि त्त विछिन्न थयुं छे तो पण श्रीसंघनी आज्ञा होय तो तुल्यना रूप दशमुं प्रा यश्चित्त हुं आदरुं. संघें कह्युं जेम तमारो भाव होय तेम करो. पछी सिद्धसेन सूरियें मौन आदरी रजोहरण मुहपत्ति गोपवी अवधूतनो वेश धारण करी जेम कोइ ओलखे नहीं एवी रीतें बार वर्षपर्यंत भमवानो निर्धार कर्यो. जेमाटे कोइ ओलखे तो वली बीजी वार बार वर्षपर्यंत एमज करवुं पडे, तेमाटे अज्ञात थका भमवा लाग्या एम आठ वर्ष वीत्या केडे उज्जयणीयें आवी महाकालने प्रासादें लिंग उपरें पग राखी पछेडी ओढीने सूता. पूजा रे उगाडवा माटे घणुं जोर कर्युं पण उठ्या नहीं तेवारें राजाने खबर करी राजा विक्रमादित्यें पोतें आवी उठाड्या तोपण उठ्या नहीं तेवारें राजायें ताजणानो मार देवा मांड्यो, ते ताजणा सर्व राजाना अंतःपुरने लाग्यां तिहांथी बूमो आवी राजायें विचार्युं ए सामान्यपुरुष नथी सिद्धपुरुष छे, तेमाटे पगे लागीने उठाड्या पछी राजायें कह्युं आ देव छे एनी स्तवना करीये पण एने रुसवीयें नहीं. सिद्धसेने कह्युं ए देव म्हारी स्तुति खमी शके नहीं जो हुं स्तुति करुं, तो ए लिंग फाटी पडे.

राजायें कह्युं स्तुति करतां जे थाउ ते भलें थाउ. कपूर खातां दांत प डी जाय, तो पण कपूर खावुं. सिद्धसेनजीयें कह्युं हमणां तो एम कहो छो पण पछी तमोने दुःख उपजशे, दुःहवाशो. राजायें कह्युं मुजने दुःख न हीं उपजे तमे एनी स्तुति करो, एवुं कहे थके सिद्धसेनदिवाकरें श्रीमहा वीरनी स्तुतिरूप बत्रीशी करी तेनो पहेलोज श्लोक कहेतां लिंगमांथी धू म्र निकल्यां पछी श्रीपार्श्वनाथनो महिमा जाणी कल्याणमंदिरस्तोत्र कह्युं, तिहां " यस्मिन् हरप्रभृतयोपि हतप्रभावा " ए अगीयारमुं काव्य कहेतां

धूम्रज्वाला प्रगट थइ. ते जोइ मिथ्यात्वी लोकें कह्युं के महादेवनुं त्रीजुं नेत्र प्रगट थयुं हवे आ भिक्षुकने बाली भस्म करशे. तेवारें तो वली तड तडाट करतो अग्नि निकल्यो. पछी कल्याणमंदिरनुं तेरमुं काव्य कहेतां थकां लिंग फाटी पड्युं, धरणेंद्रना सहाय थकी श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमा पगट थइ. पछी कल्याणमंदिर पूर्ण चुम्मालीकाव्य प्रमाण कर्युं प्रभुनी स्तवना करी भगवान् पासेंथी क्षमापन माग्युं तेवारें राजायें पूछ्युं के, हे भगव न्! आ शुं अपूर्व अदृश्य दीठामां आव्युं? आ ते वली कयो नवीन देव छे अने आ शी रीतें प्रगट थयो? तेवारें सिद्धसेनजीयें अयवंतिसुकुमार नो पुत्र माहाकाल हतो, तेणें पोताना पिताना नामथी अयवंती पार्श्व नाथनुं मंदिर बंधावी तेमां श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति स्थापी, तेनी केटलाए क वर्षपर्यंत लोकोयें पूजा करी. पछी अवसर पामीने ब्राह्मणोयें पोता नुं जोर वधेलुं जाणी श्रीजिनप्रतिमानें नीचें दाबीने तेनी ऊपर आ शि वनुं लिंग स्थापन कर्युं छे. इत्यादि जे कांइ वृत्तांत हतुं, ते सर्व राजानें कही संभलाव्युं. वली हे राजन्! आ महारी स्तुतिथी शासन देवतायें शिवनुं लिंग फाडीनें वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी दीधी. हवे तमें स त्यासत्यनो निर्णय करी ल्यो. तेवारें राजायें सो गाम मंदिरनो खरच च लाववामाटे आप्यां. अने देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण कर्यां. अने श्रीसिद्धसेनसूरिनो महोटो महिमा वधारीने पोताने स्थानकें गया. वादींद्रसिद्धसेन दिवाकरनी पदवी आपी राजा प्रतिबोध पाम्यो. घणाएक मिथ्यात्वी जीवो मिथ्यात्व मूकीने श्रावक थया. तिहां अयवंति पार्श्वनाथ नुं तीर्थ स्थापन थयुं. ते श्रीजिनशासननुं महोटुं कार्य कीधुं, माटें श्रीसं घें शेष चार वर्षनुं प्रायश्चित्त बक्षीसमां मूक्युं. तेवारें संघना कहेणथी ड घो, मुहपत्ति, लइ गछमांहे आव्या. घणा नविन ग्रंथो रचीने श्रीजिनशा सननी प्रभावना करी. हवे एकदा प्रस्तावें सिद्धसेन दिवाकर विहार करता करता मालवामां ॐकार नामें नगरें आव्या. ते नगरना भक्त श्रावकोयें विनतिकरी जे हे भगवन! आ नगरनी समीपें एक गाम हतुं, तेमां सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी हतो, तेने बे स्त्री हती, तेमां एक स्त्रीयें प्रथम पु त्री जन्मीने ते वखतें तेनी शोक पण प्रसुतवान हती तेथी ते स्त्रीयें मन मां खीजीने विचार कर्यो जे महारीशोक जो पुत्र न प्रसवे तो ठीक. केम के

जो तेने पुत्र प्रसवथशे तो ते पतिनी वल्लन्न थाशे, तेथी तेणे दाइनी साथें मलीनें जेवो तेनी शोकें पुत्र प्रसव्यो, तेवोज बहार नाखी दीधो. अने तुरत नो मरी गयेलो बोकरो तेनी पासें राखी दीधो. पबी जे पुत्रने बहार नाखी दीधो हतो, तेने कुलदेवीयें गायनुं रूप करीने पाल्यो, ने ज्यारें ते आठ वर्षनो थयो, त्यारें ॐकार नगरना शिवन्नवनना अधिकारी न्नरडे, तेने देखीने पोतानो चेलो बनाव्यो. एकदा प्रस्तावें कान्यकुब्ज देशनो राजा आंखे आंधलो बे, तेणे दिग् विजय कार्यथी त्यां पडाव कस्यो, तेवामां रात्रियें शिवन्नक्त व्यंतर देवतायें ते बोटा चेलानें कह्युं के शेषन्नोग राजानें देवाथी तेनी आंख सारी थाशे. ने तेणें तेम कस्याथी राजानी आंख सारी थइ तेथी राजायें मंदिरना खरचसारु सो गाम तेने आप्यां, ने आ महोटां शिवमंदिर बे ते पण, तेणें बनाव्यां बे. अने अमें आ नगरमां रहीयें बैयें परंतु मिथ्यादृष्टियो बलवान् होवाथी अमोने जिनमंदिर बनाववा देता नथी, ते वास्ते आपने विनति करीयें बैयें के, आ शिवमंदिरोथी अधिक इहां जैनमंदिर बने तो ठीक थाय. आपतो सर्व रीतें समर्थ बो. एवां श्रावकोनां वचन सांन्नलीने, वादीन्द्रअवंतीमां आव्या अने चार श्लोक हाथमां लइने विक्रमादित्यना द्वार पासें आवी द्वारपालनी साथे राजाने कहेवराव्युं जे " दिदृक्षुर्निक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारवारितः ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः, किमागबतु गबतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांन्नलीने विक्रमादित्यें तेना बदलामां बीजो श्लोक लखीने मोकल्यो जे " दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोको, यदागबतु गबतु ॥२॥ ते श्लोक सांन्नलीने आचार्यें कहेवराव्युं के निक्षु तमने मलवा चाहे बे, परंतु धन लेवा आव्या नथी, त्यारें राजायें तेने सन्मुख बोलाव्या ने उलखीने कहेवा लाग्या के गुरुजी ; घणो दिवसें आजे दर्शन दीधां ? त्यारें आचार्य कहेवा लाग्या के धर्मकार्य करवामां घणोकाल रोकाण थवाथी आपनी पासें आवी शक्यो नही. हवे चार श्लोक हुं कहुं बुं ते सांन्नलो ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, न्नवता शिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समन्येति, गुणोयाति दिगंतरें ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्त्तिः किंकुपित राजन्, येन देशांतारंगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्ते जातजाड्येव, चतुरंन्नोधिमज्जनात् ॥ आतपाय ध

रानाथ, गता मार्त्तंडमंडलम् ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्या संस्तूयसे जनैः ॥ नारयो लेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥

ए चार श्लोक सांभलीने राजा नानाप्रकारना वस्त्र देवा लाग्यो, गुरुयें कह्युं तुं राजा छो, माटें तहारां वस्त्र अमने कल्पे नहीं. राजायें कह्युं तो तमें शुं कहो छो? जे आप कहो, ते हुं करुं. आपनी आगल हाथ जोडी उभो बुं. गुरुयें कह्युं ॐकारपुरनेविषे महादेवना प्रासाद थकी उंचुं जैन नुं प्रासाद करावी तिहां जइने तेनी प्रतिष्ठा करावो.राजायें तेमज प्रासाद कराव्युं अने सिद्धसेनसूरीश्वरने हाथें तेनी प्रतिष्ठा करावी. तेथी तिहां भ रडा लोकोना श्यामवदन थयां. श्रावकजनो घणुंज हर्ष पाम्या. एम सिद्धसेनसूरियें गाम गाम जिनशासननी प्रभावना करी.

पछी प्रतिष्ठान नगरें आव्या, तिहां आयुष्य पूर्ण थयुं जाणी अनशन व्रत करी अतिचार आलोइ पृथ्वीने विषे जिनशासनना प्राभाविक थइ,स्वर्ग लोकें जिनशासननी प्रभावना करवा गया. श्रीसंघे महोटो महोत्सव कर्यो.

पछी संघें गुरु देवगति पाम्या तेना समाचार जणाववाने अर्थें चित्र कूट गामें भाट मोकल्यो, ते भाटें जइने आचार्यनां वखाण कह्यां, ते आवी रीतें ॥ स्फूरंति वादिखद्योताः, सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ वारं वार एवुं कहेवा थी तिहां सिद्धसेन दिवाकरनी न्हानी बहेन बालसरस्वती एवे नामें हती, तेणें पूर्वलां बे पद सांभलीने आगलां बे पद कह्यां, ते कहे छेः– नुनमस्तं गतोवादी, सिद्धसेनदिवाकरः ॥ १ ॥ ते सांभलीने चित्रकूटना संघने घणु ज दुःख उपनुं. भाटने संतोषी वीसर्ज्यो. ए कविप्राभाविकआश्रयी श्रीसिद्धसेनदिवाकरनो संबंध कह्यो.

हवे प्रकारांतरें प्राभाविकना भेद कहे छेः–

॥ सव्वे पभावगा ते, जिणसासण संसकारिणा जे उ ॥ भंगंतरेणवि जउ, ए ए भणिया जिणमयम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थः–(सव्वेपभावगाते के०) ते सर्वे प्रभावक कहीयें (तु के०) वली (जे के०) जेणे प्रकारें (जिणसासणसंसकारिणा के०) श्रीजिनशासननी श्लाघाना करनारा (जउ के०) जे कारण माटे कह्युं छे के (भंगंतरेणवि के०) भंगांतरें एटले प्रकारांतरें पण (एएभणिया के०) ए प्राभाविक आठ प्रकारें कह्या छे. (जिणमयम्मि के०) श्रीजिनमतनेविषे ते आगली बे गाथायें कहेछे ॥ ३७ ॥

॥ अइसेसित्ता इङ्कि, धम्मकहि वाइ आयरिय खवग ॥ निमित्त विद्या राया, गणसंमउ अ तिब्र पन्नाविंति ॥ ३० ॥ ॥ इय संपत्ति अन्नावे, जत्ता पूआइ जिण मणोरमणं ॥ जिणजइवि सयं सयत्तं, पन्नावणा सुद्ध नावेणां ॥ ३ए ॥ अर्थः-(अइसेसित्ता के०) अतिशेपिता एटले परम उत्कर्ष पामी छे जंघाचारण, विद्याचारण, आशिःविप, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, प्रमुखनी (इङ्कि के०) रुद्धि जेणे एवा जे होय तेने अतिशेष रुद्धि प्रान्नाविक कहीयें. ए प्रथम प्रान्नाविक जाणवो.

तथा बीजो (धम्मकहि के०) धर्मकथिक ते व्याख्यान करवानी लब्धि वंत प्रान्नाविक जाणवो. त्रीजो जे परवादीनें जीतीने जय पामे, ते (वाइ के०) वादी प्रान्नाविक कहीयें. चोथो बारशें ने छन्नुं आचार्यना गुण तेणे करी अलंकृत जे होय ते (आयरिय के०) आचार्य प्रान्नाविक कहीयें. पांचमो जे विकृष्ट तपस्यानो करनार होय, ते (खवग के०) क्षपक प्रान्नाविक जाणवो. छठो जे त्रिकाल निमित्तनो जाण होय, ते (निमित्तं के०) नैमित्तिक प्रान्नाविक जाणवो. सातमो जे नाना प्रकारनी विद्या मंत्रादिक नो जाण होय, ते (विद्या के०) विद्यावंत प्रान्नाविक जाणवो. आठमुं जे (राया के०) राजाउनो (गण के०) समूह तेने (संमउ के०) संमतो एटले वल्लन्न होय ते (तिबंपन्नाविंति के०) तीर्थ प्रन्नाविक एटले श्रीजिन शासन प्रत्यें प्रन्नावना करे दीपावे ते तीर्थप्रान्नाविक कहीयें ॥३०॥

हवे कालना विषम पणा थकी कदापि ए आठ प्रान्नाविक न होय, तो प्रान्नावकपणुं केम थाय ? ते कहे छेः-(इय के०) ए पाछल वे प्रकारें कह्या एवा जे प्रन्नाविको तेनी (संपत्ति के०) संपदा तेने (अन्नावे के०) अन्नावे एटले पाछल कहेला प्रान्नाविक जेवा कोइ प्रान्नाविक कदापि कोइ कालादि कनें दोपें न लान्ने तो ते समयें आ प्रमाणेना कार्य करनारा जे पुरुषो होय, तेने पण श्रीजिनशासनना प्रान्नाविक कहीयें. ते जेम के श्रीशत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल, प्रमुख तीर्थोनी (जत्ता के०) यात्रा महोटा महोटा संघने साथें तेडीने करवी, केम के एवी यात्रा घणा जीवने प्रतिबोधवानुं कारण थाय. जेम श्रीन्नरतचक्रवर्त्तियें संघने यात्रा करावी, जेमाटें आ अवसर्प्पिणीने विषे प्रथम संघवी न्नरतचक्रवर्त्ती थयो ते श्री अष्टापदें प्रथम प्रासाद वंधावी तेनी आचार्यपासें प्रतिष्ठा करावीनें प्रान्नाविक थयो.

तथा (पूआइ के०) पूजादि ते श्रीअरिहंतनी तथा अरिहंतनी प्रतिमानी, गुरु जे आचार्य उपाध्याय प्रमुखनी यथायोग्य पूजा करवी. तेमज आदि शब्द थकी सर्वजीवने अभयदान देवानी पटह उद्घोषणा करवी,अद्भुत प्रासाद निर्म्मापण, ए शिवाय बीजां पण श्रीजिनशासनना अद्भुत कार्य लेवां.

तथा जेथकी (जनमणोरमणं के०) लोकना चित्त हर्ष पामे, घणा योजन थकी अभिग्रह धरीने लोक यात्रा करवा माटे चाली आवे, तेवा कार्य करवा तेने जनमनोरमण कार्य कहियें.

तथा (जिणजइ विसयं सयलं के०) श्रीजिन अने यति एटले साधु ते संबंधिया सकलकार्यनुं करवुं, ते जिनशासननी प्रभावना कहीयें, पण ए (पभावणा के०) प्रभावना केवी रीतें करवी ? तो के (सुद्धभावेणं के०) शुद्धभावनाथी एटलें निर्मायपणे दृष्टिराग रहितपणे केवल गुणानुरागीपणे करवी. पोताना चित्तमांहे लेशमात्र पण रागद्वेषनो परिणाम आणवो नहीं ते शुद्धभाव कहीयें. तेवा भावें करी करवी यतः ॥ शैथिल्यमात्सर्यकदाग्रहः क्रुधोनुतापमानाविधि गौरवाणि च ॥ प्रमाददंभौ कुगुरुः कुसंगतिः, श्लाघार्थिता वासुकृतांतदा इमे ॥ १ ॥

तथा वली जे कार्य करे, ते श्रीतीर्थंकरनी तथा प्रवर्त्तमान गछनायकनी आज्ञायें करे, जेमाटें आज्ञा विना करे, ते निष्फल थाय यतः ॥ समिति पवित्तिसव्वा, आणावज्झंति भवफला चेव ॥ तिछ गुरुद्देसे णवि, ण तत्त उ सा तदुद्देसा ॥१॥ मूढा अणादिमोहा, तहा तहा एछ संपयट्टंता ॥ तं चेव यमसुंता, अवमणंता ण याणंति ॥२॥ मोरकबीणा तउ तह, आणाए चेव सव जेतेण ॥ सवछ विजय इयवं, सम्मंति कयं पसंगेणं ॥ ३ ॥ इतिश्रीअष्टम प्रतिष्ठापंचाशके ॥ ३ए ॥

हवे एनी उपर संघपति श्रावकोमांहे रत्नसमान रत्नश्रावकनो संबंध कहीयें बैयें. एज भरतक्षेत्रें काश्मिर देशें नवफूल नामा पाटण तिहां नवहंस नामा राजा राज्य करे ढे. तेने विजयादेवी पटराणी ढे.

हवे तेहज नगरने विषे पूर्णचंद्रनामा शेठ वसे ढे. तेना त्रण पुत्ररत्न ढे, एक रत्न, बीजो मदन अने त्रीजो पूर्णसिंह, एवं त्रण पुत्र ढे. तेमां रत्नने पोमिणी नामें स्त्री ढे, तेनो कोमल नामें पुत्र ढे.

हवे श्रीनेमीश्वरना निर्वाण पढी आठसहस्र वर्ष वीत्या केडें पट्टमहा

देव नामें केवली साधु घणा साधुने परिवारें परवर्या. नवफूल नगरना उ द्यानने विषे आव्या देवकृत सहस्रपांखडीनुं कमल तद्रूप सिंहासने बेग थका देशना देवा लाग्या, उद्यानपालकें राजाने खबर आपी. राजा पण तिहां आवी बेगे, रत्नप्रमुख त्रण नाइ पण परिवार सहित वांदवा आ व्या. धर्मदेशना सांजलवा बेग. तिहां केवली जगवान् देशनामां तीर्थ यात्राना फल वर्णवता हवा ॥ तद्यथा ॥ अहो तीर्थस्य माहात्म्यं, पुंमरीक मिहागिरेः ॥ पशवोपि हि यत्रस्था, लन्यंते सुरसंपदम् ॥ १ ॥ ततोपि रेवत गिरेः, कृता सेवा महाफला ॥ विमलाचलदेशत्वा, त्तद्रूपोयं यतःस्मृतः ॥ २ ॥ विशेषतस्त्वयं नेमिः, पवित्रं कृतवान्निजः ॥ प्रव्रज्याज्ञाननिर्वाण, कल्याणिक महामतिः ॥ ३ ॥ श्रीमद्वैवेयमाहात्म्यं, ब्रुवंति लौकिकाअपि ॥ श्रूयंते च प्रना साख्य, पुराणे वदतांवर ॥ १ ॥ पद्मासन समासीने, श्याममूर्त्ति दिगंबरं ॥ नेमनाथं शिवेत्येवं,नाम चक्रेऽस्य वामनः॥ २ ॥ कलिकाले महाघोरे, सर्व कल्मष नाशकः ॥ दर्शनात् स्पर्शना देव, कोटियज्ञफलप्रदः ॥ ३ ॥ तेमाटे जेणें नावशुद्धियें श्रीशत्रुंजय रेवताचलनी यात्रा करी तेणे मोक्षकमला वरी. इत्यादि धर्मदेशना सांजली रत्नश्रावक गुरुनें पगे लागी अनिग्रहधारी थयो. जे हुं श्रीशत्रुंजय तथा गिरनार तीर्थनी यात्रा करुं तोज बीजी विगय ले उं तथा तिहां सुधी ब्रह्मचर्य पालुं. एवो अनिग्रह करी घेर जइ सजाइ करी अने श्रीसंघने खोला पाथरी अरजी करी. संघ सर्व यात्रा माटे तैय्यार थ यो. शाह रत्नसिंह राजानी आज्ञा मागवा गयो.राजायें कह्युं के घोडा, हाथी, मेरा, निशान, जे जोश्यें, ते ल्यो. अने शीघ्र यात्राना मनोरथ पूर्ण करी आवजो. एम कहीने राजायें नालिकेर प्रमुख आपीने विदाय कर्यो.

हवे एनी स्त्री पोमिणी ते राजानी विजयापटराणीने मलवा गइ. वि दायगिरी मागी, तेणे पण घणी आगता स्वागता करी. श्रीफल पटकूल आपी पोमिणीने विदाय करी. पछी रूडुं मुहूर्त्त लग्न साचवी रत्नशाह घ णा संघनी साथें निशान गाजते प्रयाण कर्युं, तेमनी साथें पट्टमहादेवसू रि पण यात्रायें चाल्या. प्रतिदिन व्याख्यान सांजले देवपूजा स्नात्रादिक कार्यमां प्रवर्त्ते, रत्नशाह सर्व संघनी आगल चोकी करतो चाले अने म दन तथा पूर्णसिंह ए बे नाइ श्रीसंघनी बेहु पासें रखवाल करे. तथा रत्न शाहनो पुत्र कोमल छे, ते श्रीसंघनी पछवाडे चोकी करतो चाले. एम अ

विछिन्न प्रयाणें चालतां पंथमां लोल अने तोल एवे नामें बे पर्वत आव्या. तिहां संघें उतारो कस्यो, भोजन करी रात्रियें संघ तिहांज रह्यो.

प्रभातें प्रयाणभंभानाद साथें संघ चालवा लाग्यो, एटले कज्जल वर्णें महोटा दांत महोटी दाढें करी भयंकर माहाकाय मुख वाघनी पेरें प सारी रहेलो छे. एवो राक्स, खाउं खाउं करतो प्रगट थयो. स्त्री प्रमुख लोक सर्व नासवा लाग्यां. आगल फोजना सुभटो हता तेणें आवी पूछ्युं के अरे तुं कोण छो ? तेणें कह्युं के हुं राक्स छुं. मुजने समजाव्या विना जो आगल जाशो तो हुं सर्वलोकने भक्षण करीश. एवामां रत्नशाह आ वी ऊभो रह्यो. तेमने सुभटें सर्व हकीगत कही संभलावी. केटलाएकें कह्युं पाछा वलीयें. केटलाएकें कह्युं एनी साथें युद्ध करीयें; रत्नशाहें कह्युं पाछा तो सर्वथा नज वलीयें, श्रीनेमीश्वरनी यात्रा तो अवश्य करवी.

पछी रत्नशाहें तेने समजाववा कह्युं के तमें जइने एने जेम तेम सम जावो. भाट तेने समजाववा गयो. राक्सें कह्युं एक माणस मुजने आपी ने बीजा सर्व कुशलें जाउ. ते राक्सनो एवो निश्चय जाणी भाटें आवी शेठने कह्युं तेवारें रत्नशेठें समस्त श्रीसंघने कह्युं तमें जाउ सुखें समाधें यात्रा करो. हुं आहीं राक्सपासें रहुं छुं. तेवारें शेठना बे भाइ तथा पुत्रें कह्युं तमें संघवी छो, माटें तमारे आगल चालवुं जोइयें, तेथी तमें जाउ अने अमेज ए राक्सना मुख आगल रहीशुं. रत्नशेठें ते सर्वने समजावी तेमने संघनी साथें चालता करी साहसिकपणुं आदरी श्रीनेमिनाथनुं श रण पडिवज्जी कायोत्सर्ग करीने पोतें तिहांज रह्या. तेनी साथें पोमिणी संघवीयण तथा कोमलपुत्र ए बेहु जण पण रत्नशाह न जाणे तेवी रीतें कायोत्सर्ग करीने छाना तिहांज शेठनी पासें रह्या.

हवे ते राक्सें, संघवीने तिहांथी उपाडीने पर्वतनी गुफामांहे घाली बा हेर शिला देइ बेसाड्यो अने ते डुष्ट राक्स अट्टाट्टहास्य करी बीहीवरा ववा लाग्यो. संघवीयें श्रीनेमीश्वरनुं ध्यान धर्युं.

एवा अवसरें श्रीगिरनारजीने विषे मेघनाद, कालमेघ, गिरिविदारण, कपाट, सिंहनाद, खाटिक, रैवतक, एवे नामें सातक्षेत्रपाल श्रीअंबिकादेवीने नमस्कार करवा आव्या छे एटलामां रैवताचल जाणीयें त्रूटीज पडशे एवो कंपवा लागो, साते क्षेत्रपाल श्रीअंबिकाजी प्रत्यें कहेवा लाग्या के हे स्वा

मिनि! शा कारण माटें श्रीगिरनारजी कंपायमान थाय छे? तेवारें अंबिकाजीयें ज्ञानें करी जोयुं तो शाहरत्नशंघवीने उपद्रव थतो दीठो. ते जोइ अंबिकाजी साते क्षेत्रपालनी साथें तिहां आवीने राक्षसने पगे लाली जेटले शिलातलें पछाडवा लागी, एटलामां पोतानी आगल दिव्याभरणें भूषित एवा एक मनुष्यने देखती हवी तथा शाहरत्न संघवीनी स्त्री पोमिणी अने कोमलपुत्र ए बेहु जणने पण आगल उनां रह्यां दीठां.

हवें ते दिव्यस्वरूपी नर अंबिकाजीने कहेवा लाग्यो के हुं शंकरनामा वैमानिक देव छुं. पट्टमहादेवसूरियें गिरनारनुं माहात्म्य कह्युं. ते सांभली रत्नशाहें अभिग्रह कीधो. जे गिरनारजीनी यात्रा अवश्य करवी, तिहां सुधी बीजी विगय लेवी नहीं, तेवारें हुं सभामां बेठो हतो, ते में ए शेठनी परीक्षा करवा माटे एटला वानां कर्यां. ए त्रणे मनुष्य रत्न जेवांज छे, जे माटें ए लेश मात्र सत्त्वथी चलायमान थया नहीं. वली ते देवता, अंबिकाजी तथा सातक्षेत्रपालने कहेवा लाग्यो के, धन्य छे तमोने जे तमें संघवीनुं सहाय करवा आव्या. हुं जो तमारी साथें युद्ध करुं तो तमारुं कांइ म्हारी आगल चाले नहीं कारण के हुं वैमानिक देव छुं. तो पण तमारा साहसनी प्रशंसा करुं छुं. एवुं कही संघवीने पगे लागी अपराध खमावी त्रणे जणनें उपाडी संघमांहे मूकीने देवता पोताने स्थानकें गयो.

इहां सर्वने हर्ष उपनो हर्षभंभा वजडावी अंबिका अने क्षेत्रपाल पण गिरनारें आव्या ते पण संघवीनी साथें गिरनारना पाहाड उपर चड्या. श्रीनेमीश्वर भगवानने प्रणाम कीधो. गजेंद्रपदकुंडे जइ स्नान करी सोनाना तथा रूपाना कलश भरी गंधोदकें महमिकायें अभिषेक कर्यो, रत्नाशाहें कोइक लेपमय बिंबने अजाणतां घणा सुगंध जलें करी न्हवण पूजा करतां ते प्रतिमा गली गइ तेवारें संघवी पश्चात्ताप करतो कहेवा लाग्यो के हा हा मुजने तीर्थभंगनुं पाप लागुं! हवे हुं ए पापथी केम छूटीश!!! एवो खेद करी अभिग्रह कीधो के जेवारे हुं ए तीर्थोद्धार करुं ते वारेंज भोजन करुं तिहांसुधी म्हारे भोजन करवुं नहीं.

एवो निश्चय करी संघना रखोपा माटे पोताना बे भाइनें राखीने पोतें अंबिका देवी आगल जइ बेठा. बे माससुधी उपवास थया तेवारें अंबिकाजीयें आवी कह्युं हे वत्स! उठ अने म्हारी साथें कंचनबलानक तीर्थे

ने विषे चाल. एम कही अंबिकाजी आगल चाल्यां अने तेमनी पाछल र त्नशाह चाल्यो जाय अनुक्रमें कंचनबलानक तीर्थें गया तिहां अढार प्रतिमा रत्नमय अढार हेममय, अढार वज्रमय अने अढार रौप्यमय एम बहोत्तेर प्रतिमा दीठी, तेवारें हर्ष उपनो तेथी नूख तृषा सर्व वीसरी गइ.

हवे शेठने अंबिकायें कह्युं तहारुं मन माने ते एक प्रतिमा ले. शेठें रत्न मयबिंब लीधुं अंबिकायें कह्युं आगल काल विषम आवशे म्लेछराजा था शे तेवारें ए प्रतिमा रही शकशे नहीं तेमाटे वज्रशिलामय बिंब ले. शेठें पण ते वचन सत्य जाणीने वज्रशिलामय बिंब लीधुं अने देवीने पूछ्युं ए बिंब वज्रमय घणुं नारी छे माटे केवीरीतें लइ जाउं? देवीयें कह्युं काचें सूत्रें वींटी सूत्रनो छेहडो हाथमां जाली चाल्यो जा, पण पाछुं वली जोइश मां. शेठ एमज लइ चाल्यो घणी नूमि उलंघी पण हाथमां लगार मात्र नार जणायो नहीं तेथी संघवीयें जाण्युं प्रतिमा आवे छे के नथी आवती? ए वी शंका आणी पाछुं वली जोयुं तो बिंब तिहांज स्थिर थइ रह्युं घणा प्र कारें उद्यम कस्यो पण बिलकुल हाले नहीं, तेवारें तिहांज प्रासादनी रच ना करी; श्रीनेमिनाथजीनी प्रतिमानी पूजा करीने पछी पारणुं कस्युं, सर्व संघें पण पूजा करी. एम तिहां घणा दिवस रही मनना मनोरथ पूर्ण करी पछी संघवी श्रीशेत्रुंजयनी यात्रा करवा चाल्या.

अनुक्रमे श्रीशत्रुंजयें आव्या. यात्रा कीधी साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख कार्य कस्यां. एवी रीतें घणा तीर्थोनी यात्रा करी क्षेमकुशलें काश्मीरदेशें नवफूल पाटणे पोताने घरे आव्या. राजायें नगर प्रवेशादिक महोत्सव कस्या. पछी ते शेठ, नवानवां जिनशासननां कार्य करी जिनशासननो प्रानाविक थयो. एम यात्रादिक कार्यें करी पण श्रीजिनशासननो प्रानाविक थाय, ए रत्न संघवीने दृष्टांतें जनमनोरमण कार्य जे करें, ते प्रानाविक थाय ॥

इति तपागछालंकार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरिश्वर क्रमात् पट्टप्रनाकर श्रीविजय देवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीशकलचंद्रगणि शि ष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीस म्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकावालावबोधे अष्टप्रानाविकस्वरूप निरूपण नामा षष्ठोधिकारः समाप्तः ॥ ६ ॥

हवे समकेतनां पांच नूषणनुं सातमुं द्वार कहे छेः—

॥ समत्त नूसणाइं, कोसलं तिब सेवणं नत्ती ॥ थिरया पन्नावणाविय, नावबं तेसि वुल्लामि ॥ ४० ॥ अर्थः—ए आगल कहेशे ते पांच (समत्तनूसणाइं के०) समकेतनां नूषण कहीयें. जेम पुरुषने मुकुट, कुंमल, हार, अर्द्धहार,कटिसूत्र, मुडिकादिक नूषण छे तेणें करी पुरुष शोनायमान देखाय छे तेम समकेत पण ए पांच नूषणें करी शोनायमान देखाय ते पांचे नूषणनां नाम कहे छे.

१ एक (कोसलं के०) कुशलपणुं एटले श्रीसमकेतना क्षायिक, क्षयोपशमादिक जे नेद कह्या छे तेना जाणवाने विषे दक्षपणुं होय. तथा बीजा पण दिनकृत्य,रात्रिकृत्य,पक्षकृत्य, चातुर्मासिककृत्य, संवत्सरकृत्य, जन्मकृत्यादिकने विषें जे निपुणपणुं होय तेने कौशल्य कहीयें.

२ बीजुं (तिबसेवणं के०) तीर्थ जे जिनजन्मादिक कल्याणकनी नूमि तेनुं सेवन करवुं ॥ उक्तं च ॥ जम्म दिरका नाणं, तिबयराणं महाणुनावाणं ॥ जबयकिर निवाणं, आगाढं दंसणं होइ ॥ १ ॥ अथवा जंगम तीर्थ जे आचार्य, उपाध्याय, महानुनाव अणगार, तेमना विनय वेयावच्चादिकनुं करवुं ते तीर्थसेवन कहीयें.

३ त्रीजुं (नत्ती के०) नक्ति करवी ते जे समकेतधारी होय तेनो विनय वेयावच्च श्लाघा करवी तेने नक्ति कहीयें तिहां देवगुरुनी नक्ति करवी.

४ चोथुं (थिरया के०) स्थिरता ते कोइ देव दानव आवीने चलावे तो पण चले नहीं मनमां विचारे के जेवारें तेवारें जीव मोक्ष फल जे पामशे ते ए समकेतथीज पामशे, माटे एनी आस्था राखवी. यतः ॥ चारित्रयाने नग्नेपि, गुणमाणिक्यपूरिते ॥ तरंत्येव महांनोधौ, सम्यक्त्वफलकग्रहात् ॥१॥ ध्यानं डःखनिधानमेव तपसः संतापमात्रं फलं, स्वाध्यायोपि हि वध्य एव कुधियां तेन्निग्रहाः कुग्रहाः ॥ अश्लाध्या खलुदान शीलतुलना स्तीर्थादियात्रा वृथाः, सम्यक्त्वेन विनैवस्यादपिच यत्तत्सर्वमंतर्गडुः ॥ २ ॥ एवी समकेतने विषे श्रेणिकादिकनी पेरें स्थिरता राखवी.

पांचमुं (पन्नावणाविय के०) प्रनावना ते श्रीजिनशासननी उन्नत्तिनुं करवुं मनमां ए प्रमाणे विचार राखवो के जेणे करी श्रीजिनशासननी दीप्ति थाय एवो प्रकार कह्यो छे, तेनीज शोधमां रहेवुं अने छतीसामर्थ्यें ते

जिनशासननी दीप्ति पण करे तेने प्रभावना कहीयें. (तेसिं के०) तेनो (भावन्न के०) भावार्थ आगली गाथायें (वुच्छामि के०) कहीशुं. ४०

हवे पांच भूषणमांहेला पहेला कौशल्यनुं स्वरूप कहे छेः—

॥ वंदण संवरणाइ, किरिया निउणत्तणं तु कोसल्लं ॥ तिच्छनिसेवाय सयं, सविग्गं जणेण संसग्गी ॥४१॥ अर्थः—(वंदण के०) देववंदना, गुरुवंदना तथा (संवरणाइ के०) संवरण ते पच्चरकाण प्रमुख आदि शब्दथकी पडावश्यक, पौषध, सामायिक, स्नात्रविधि, सत्तरभेदें पूजानोविधि प्रमुख सर्व कार्य लेवां. ते संबंधि जे (किरिया के०) क्रिया तेने विषे जे (निउणत्तणं के०) निपुणपणुं होय ते (तु के०) वली (कोसल्लं के०) कौसल्यपणुं कहीयें जेमाटे श्रावक जो सर्वक्रियाने विषे निपुण होय तो अनार्यदेशने विषे पण धर्मप्रवृत्ति चलावे जो एक श्रावक निपुण होय तो घणाजीवोनें समकेत तथा देशविरति सर्वविरति पमाडवानुं कारणभूत थाय जे श्रीजिनशासनने विषे निपुण होय तेनां त्रणवानां प्रशस्त थाय ॥ यतः ॥ तउ गणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सुगुणस्स समेरस्स सुपच्चरकाण पोसहोववासस्स पासत्था भवंति तंजहा १ अस्सिलोए पसत्थे भवति २ उववाए पसत्थे भवति ३ आयातिपसत्था भवति, एवं तउ गणानि सीलस्स निवयस्स निगुणस्स निमेरस्स निपच्चरकाणपोसहोववासस्स गरहिया भवंति तं जहा १ असीलोए गरहिए भवति २ उववाए गरहिए भवति ३ आयाति गरहिया भवतित्ति ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ कह्यो उत्तरार्द्धनो अर्थ कथा आव्या पछी कहेवाशे.

हवे ए कौशल्यताने विषे उदायी राजानो संबंध कहीयें छैयें. राजगृही नगरीयें श्रेणिकराजानो पुत्र अशोकचंद तथा अपरनाम कोणिक राज्य पाले छे. तेने पद्मावती नामें पटराणी छे तेनी साथें विषयसुख भोगवतां कोइ देवतानो जीव पुण्यवंत आवी गर्भपणे उपनो ते गर्भे रह्या पछी राजानो घणो उदय थयो माटे ते पुत्र जन्म्या पछी तेनुं नाम उदायिन दीधुं. एकदा प्रस्तावें माबी साथल उपर पुत्रने लइ श्रेणिकनोपुत्र अशोकचंद राजा भोजन करवा बेठो छे एवामां बालक मूतरवा लाग्यो ते मूतरनी धारा भोजननी थालीमांहे पडी तो पण पुत्र उपर प्रेम छे माटे विचार्युं जे रखेने ए बालकने मूत्रनो रोध थाय ? एवुं चिंतवी एमज मूतरवा दीधो.

पछी ते मूत्रधारासहित भोजन छांमीने थाली अणधोइ हाथ अण

धोया थका बीजी रसवती लइ जमवा लागो. ते देखी चेलणामाताने हासुं आव्युं, तेवारें कोणिकें हास्यनुं कारण पूछवाथी चेलणामाता कहेवा लागी के सांजल हे पुत्र! तुं जेवारें गर्नमां आव्यो, तेवारें मुजने श्रेणिकराजाना कालजां खावानो दोहोलो उपन्यो ते अजयकुमारें श्रेणिकने सूवाडी तेना हिया ऊपर मांस पाथरी कापी कापी मांसना खंम मुजने आपीने महारो दोहोलो पूर्ण कस्यो. अनुक्रमें तहारो जन्म थयो, तेवारें में जाण्युं जे ए पुत्र पितानो घातक थाशे, तेमाटे में तुजने उकरडे नखाव्यो ते वात श्रेणिकें जाणी मुजनें गालो दइने उकरडाथकी पाछो अणाव्यो. उकरडामां तहारी आंगलि कोइक जीवे करडी ते आंगलि पाकी तेनी वेदनाथी तुं रडवा लाग्यो त्यारें श्रेणिकें तहारी आंगुली मुखमांहे घाली राखी तेथी तुजने शाता थइ अने उंघ आवी ते वखत तहारी आंगुली पाकी हती ते फूटी पडी तेना परुथी राजानुं महोडुं जराणुं तो पण विचास्युं जे आंगुली मुखमांथी काहाडीश तो रखेने ए बालकनी उंघ जती रहे? तेमाटे मुखमांथी काढी नहीं तुं जाग्यो तेपछी आंगुली काढीने मुखथुंकी परु बाहेर नाख्युं, तुजने वेदना समी गइ ते आंगुली मुखमां राखतां राखतां रुजी ने सारी थइ एवी रीतनो तहारा उपर तहारा बापनो प्रेम हतो ते आज तुं तहारा बापने काष्टपिंजरमां नाखीने दिनप्रत्यें नाडी मरावे छे अने तुं सुखें जोजन करवा बेठो छो. ए कारण माटे संसारनुं स्वरूप मातुं देखीने मुजने हासुं आव्युं.

ते वात सांजली कोणिक, लोहनो दंमलेइने काष्टपिंजर जांजवामाटे बापने बाहेर काढवा चाल्यो. तेनें आवतो देखतांज श्रेणिकें जाण्युं जे मुजने मारवा आवे छे ते अपमृत्युना जयथी तालपुट विष खाइने श्रेणिकें काल कस्यो. आयुखानो निकाचितबंध हतो माटे मरीने नरकें गयो. तेथी कोणिकने घणुंज डुःख लागुं, शोक करवा लागो, पछी ते जग्या देखे तेवारें बाप सांजरी आवे तेथी कोणिकें विचास्युं जे महारे आंहीं न रहेवुं पछीएक सुजगा जोइने चंपानगरी वासी राजगृही नगरी मूकी चंपामां आवी रह्यो.

अनुक्रमें कोणिकें त्रण खंम साध्या कारिमा चौद रत्न करी तेरमो चक्रवर्त्ती कहेवाउं. एवी बुद्धिथी वैताढ्यनी तिमिस्त्रागुफाने दंमरत्नेंकरी उघाडवा गयो गुफाने दंमरत्ननो प्रहार दीधो. तिहां गुफाधिपति जे कृतमाल देवताते कोपें चडयो छतो तेणें कोणिकनें सैन्यसहित बाली जस्म कीधो को

णिक मरीने छठी नरकपृथ्वीयें गयो. तेने पाटें उदायी राजा राज्यें बेठो.

हवे उदायीराजाने पितानां दुःखने लीधे चंपानगरीमां रहेवुं सोहाय नहीं. तेथी प्रधानने कह्युं के कोइ रूडुं स्थानक जूउ. तिहां नगरवसावीने रहीयें.

मंत्रीश्वरें स्थानक जोतां जोतां गंगातटें अन्निकासुत आचार्यनी करोडी पडी हती तिहां पाडलवृक्ष ऊग्यो छे तेनी पासें आव्या तिहां एक सूडो मुखवि कासी रह्यो छे तेना मुखमांहे सहेजें आवी जीवडा पडे छे तेनो सूडाने आहार थाय छे ए वृत्तांत देखीने प्रधाने विचार्युं जे इहां सूडाना मुखमांहे सहेजें प्रयासविना जीव आवी पडे छे तेहज सूडाने आहार थाय छे तेम ए जगायें नगर वसावीने वास करवाथी राजा अने प्रजा बेहुने सुखें प्रया सविना आजीविका चालशे. एवुं निर्धारी नगरस्थापनाने काजें सूत्र दीधुं. नगर वसाव्युं पाडलवृक्ष तिहां हतुं माटे पाडलीपुर नाम दीधुं. उदायी राजा तिहां आवी वश्यो ते उदायीयें घणीपृथ्वी जीतीने पोताने वश करी, गुरुसमीपें सम्यक्त्व मूलद्वादशव्रत उच्चार करी परमश्रावक थयो. चार पर्वेना अहोरत्ता पौषध करे प्रतिदिवस देवपूजा कस्या पछी मुखमां पाणी घाले घरमां पोषधशालायें उन्नय संध्यायें पडिक्कमणुं करे. तेथी उदायीरा जा रुषि कहेवाणो उदायिराजर्षी एवुं नाम पड्युं, जिनशासननो परमन्नक्त थयो, जिनशासननी सर्वक्रियाने विषे निपुण थयो.

हवे उदायीराजायें युद्ध करीने कोणिक राजाने मास्यो तेहनुं सर्वस्व ली धुं तेनो पुत्र असमर्थथको उज्जयणीना राजानी चाकरी करवा लाग्यो. तेणे एकदा प्रस्तावें उज्जयणीना राजाने कह्युं जो तमे सहाय करी महारुं राज्य पाछुं अपावो तो हुं उदायीराजाने मारी आवुं, उज्जयणीना राजायें जाण्युं जे सहेजें माथाथकी वैरी जाय छे तो हवे बीजुं शुं जोइयें ? एवुं विचारी तेने संबल आप्युं ते दुष्टात्मा तिहां आवी उदायीराजाने मारवा ना घणा उपाय करे छे, पण लाग पामतो नथी पछी उदायीना घरमां यतिउनो प्रवेश निर्गमन देखी विचार्युं जे एवो वेष धारण करवाथी महारुं कार्य थाशे तेवारें कपट वैराग्य देखाडी गुरुनी पासेंथी दीक्षा लीधी. पांच समिति त्रणगुप्ति शीखे, गुरुने खुशी करे, विनयवैय्यावच्च करी गुरुने वश करे, एम शोल वर्षसुधी कपट दीक्षा पाली, पण जातें अन्नव्य छे माटे करुणारसें रोम मात्र न्नेदाय नहीं. केवलराजाने मारवाने अर्थे चारित्रशुद्ध पाले छे.

एकदा आचार्य पाडलीपुर पधाखा छे. उदायीराजा पर्वदिवसने विषे प्रनातें उठी, प्रतिक्रमण करी श्रीमहावीरनी प्रतिमा पूजी, उपाश्रयें आवी, गुरुमुखें पौषध उच्चरी, १७२ स्थानक साचवतो,द्वादशावर्त्त वंदन देइ, व्याख्यान सांजली, चैत्यपरिपाटी करी, आपणा महोलने विषे पौषधशालायें जइ पुस्तक वांचनायें करी पोषध आराधे. संध्यायें प्रतिक्रमण करावबा गुरुने तेडुं मोकल्युं, गुरुयें साधुउने कह्युं कोण यतिपरवाखा छे जे महारी साथें आवे? तेवारें ते अनव्यसाधु उपधि लइने तैयार थयो कहे पधारो स्वामी! हुं आपनी साथें आवुं बुं. गुरु नडकनावें कपट अणजाणतो साथें तेडी गयो. तिहां रजोहरणें करी राजाने प्रतिक्रमण करावे, राजा प्रतिक्रमण करी, सद्याय करी, पोरिसी नणावी, विधि संथारो पाथरी, संथराविधि नणी, चउसरण गणी, नवकरवाली गणी, धर्मजागरण करी, कुर्कुटनी पेरें पग पसारीने सूतो, क्रियाध्यायें थाक्या माटें उंघ आवी गइ तेमज गुरुने पण उंघ आवी गइ. तेवारें पहेलो अनव्य साधु कपटनिद्रा करी उठयो कंकोलहनी पाली गुप्त राखी हती ते काढीने राजाना कंठमां मारी राजायें स्मरणसहित काल कीधो. अने पहेलो अनव्यसाधु शरीर बाधानुं मिषकरीने तेनुं कारण द्वारपालने समजावीने बाहेर नीकली गयो.

रुधिरप्रवाह गुरुने संथारे आव्यो. गुरु जाग्या अजवाली रात्रि हती माटे अजवाले जोयुं तो रुधिर वहेतुं दीठुं तेनुं मूल जोवा लाग्या तो राजाने गले पाली दीठी, पासें जोयुं तो कुशिष्य देखातो नथी तेवारें गुरुयें विचाखुं जे ए कुशिष्यनुंज काम करेलुं छे. पछी गुरुयें विचाखुं जे प्रनातें जिनशासननो उड्डाह थाशे, माटें अमने पण एज श्रेयस्कर छे. एम निरधारी गुरुयें पण अणसण आराधना करी गलें पाली नरावी काल कीधो. राजा तथा गुरु बेहु आराधक थइ स्वर्गें गया. प्रनातें कुशिष्यनो उड्डाह थयो. ते अनव्यने घणुए शोध्यो पण किहांय मल्यो नहीं. नासीनें उज्जयणीयें जतो रह्यो. उज्जयणीना राजानी आगल स्वरूप कह्युं. राजायें तेने महा अधर्मी दुष्ट जैनशासननो उड्डाहकारक जाणी देश बाहिर काढी मूक्यो. जे माटे पापीने क्यांय जगा मले नहीं. अने धर्मीनी सर्वत्र जय छे ए समकेतना कौशल्य नामें नूषणनी उपर उदायी राजानुं दृष्टांत कह्युं.

हवे गाथाना पाछला बे पदना अर्थें करी बीजुं तीर्थसेवा भूषण कहे छे.

(तिछ के०) तीर्थ जे श्रीशत्रुंजय, उद्यंतगिरि, अष्टापद प्रमुखनी निरंतर (सेवाय के०) सेवा ते (सयं के०) स्वयं पोतें करवी यात्रायें जइ तिहां केटलाएक दिवस रही पूजा करवी जो सामग्री होय तो अंतसमय जाणी पुत्रादिकने घरनो भार सोंपी पोतें निश्चिंत थइ संबल लेइ तीर्थनी सेवा करवी तथा (संविग्गजणेणसंसग्गी के०) संविग्नजन एटले संवेगी जननी साथें संसर्ग करवो. जेमाटें संवेगीनो संसग्गी करतां थकां पोताने संवेगनी प्राप्ति थाय. तेथी वली बीजा घणा जीवोने ते संवेगी करे, जेम फूल स्वयं सौगंधिक तो हतां ते तेलने सौगंधिक करे तेथकी मोघरेल चंपेलादिक तेल लगाडे थके पुरुषमां सुगंध थाय ए दृष्टांते जाणवुं ॥ यतः ॥ वसइ गुरुकुले निच्चं, जो गवं उवहाणवं ॥ पियंकरे पियंवाइ, से सिरकं लद्धु मरहइ ॥ १ ॥ इति उत्तराध्ययने ॥ तथा ॥ एसोपुण संविग्गं, संविग्गं सेसया ण जणयंतो ॥ कुग्गह विरहेण लद्धु, पावेइ मोरकं सया सोरकं ॥ १ ॥ इति एकादशे साधुपंचाशके ॥

जेम श्रीगौतमस्वामी तथा केशीगणधर ए बेहु मले थके तेनो धर्मवाद सांभलीने घणा जीव संवेग पाम्या. तेमाटें सुविहित, शुद्धप्ररूपक, ज्ञानवंतनी साथें गोष्ठि करवी. पण मिथ्यादृष्टि तथा भ्रष्टाचारी कुमत्यादिकनो संसर्ग न करवो. केम के तेनुं ज्ञानपण नरकपातने अर्थें थाय ॥

हवे एने विषे नागदत्तनुं दृष्टांत कहीयें छैयें. कुसुमपुर नगरने विषे धने करी धनद समान एवा नागचंद्र नामा शेठ वसे छे तेनी नागश्री नामें भार्या छे, तेने घणा मनोरथें नागदत्त नामें पुत्र थयो. ते बालपणे पण प्रियधर्मे दृढ धर्मी थयो. बालपणामां बार व्रत पालनार, तप करनार, उपधान वहेनार देवभक्ति, गुरुभक्ति कारक नवतत्त्वज्ञाननो विज्ञानवंत थयो.

एकदा प्रस्तावें नागदत्त चैत्यपरिपाटी करतां कोइ एकने श्रीजिनभवनने विषे अपूर्व आभरण, अपूर्व फूल, श्रीखंड, केसर, कर्पूर, अगरु, धूप, अने दीपश्रेणियें करी महोटे विस्तारें पूजा करतो देखीने चमत्कार पाम्यो. अने मनोरथ करवा लाग्यो के एवी पूजा हुं पण करुं तो मने आनंद थाय. ॥ यतः ॥ स्वर्गस्थितानामिहजीव लोके, चत्वारि चिन्हानि वसंति देहे ॥ दान प्रसंगो मधुरा च वाणी, देवार्चनं सद्गुरुसेवनं च ॥ १ ॥

पछी ते वात पोताना पिता नागचंद्रशेठनी आगल करी, के हे पिताजी! आजे रुषनदत्तशेठनो पुत्र जिनदत्त नामें छे,ते प्रवहणथकी घणुं द्रव्य उपार्जी आव्यो छे. तेणे देवगृहमां अपूर्व पूजा करी छे. एवी पूजा आजपर्यंत में क्यांहिपण दीठी नथी तेमाटे एवी पूजा करवानो मुजने नाव छे,तेने नागचंद्रश्रेष्ठियें कह्युं,आपणी पासें पण द्रव्य घणुं छे माटे सुखें पूजानो मनोरथ पूर्ण करो. नागदत्तें कह्युं तमारा द्रव्यें हुं मनोरथ पूर्ण न करुं, हुं पण प्रवहण लेइ परदेशें जइ द्रव्य कमावी एवी पूजा करुं तो मनोरथपण पूर्ण थाय.

शेठें पुत्रनो हठ जाणी प्रवहणे चढवानी आज्ञा दीधी, तेणें पांचशो वाहाण करियाणांनां नर्यां.गाममां पडह वजडाव्यो के जेने प्रवहणें चडी देशांतरें जावुं होय ते सुखें आवजो. जे जेम केशे,तेम नाडावगेरेनो ठीक बंदोबस्त करी आपीशुं, माटें कोइ वातें सीदाववुं नहीं. एवुं सांनली घणां लोक तेनी सार्थे चालवाने तैय्यार थइ वाहणें बेठां. अनुक्रमें रूडे मुहूर्त्तें सर्व सामग्री करी पांचशें वाहण लइ चाल्यो. वाहणो वेगें चाल्यां जाय छे, एवामां अकस्मात् वादलां थयां मेह अंधारो तोफान लागवाथी वाहण उन्मार्गें पड्यां. जेम उन्मत्तशिष्य गुरुनी आज्ञाना वशथकी टली जाय, तेम नाखवाना वशथकी वाहाण टली गयां. पर्वतोनी वचमां आवी गया. एवामां एक वाहाण बूडयुं ते वाहाणमांहेला मरीगयेला माणसोने पाणीमां तरतां लोकोयें दीठां, ते जोइ सर्व वहाणोनां लोक नयभ्रांत थयां.

एवामां एक वाणीयो कंठगतप्राण थयो हतो, तेणें हाथनी संज्ञायें पाणी माग्युं, नागदत्तें तेने पाणी लावी पीवराव्युं. तेथी कांइक स्वस्थ थयो थको नागदत्तें पूछयुं के,तुं कोण छो? तेणे कह्युं हुं कोसंबी नगरीनो रहेवासी धनश्रेष्ठीनो पुत्र छुं. हुं एकशो वहाण लइने चाल्यो, ते पापने उदयें वायरे करी प्रेर्यां प्रवहण गिरिकुंमलने विषे पड्यां. इहां चारे बाजु पर्वत आवी गया, माटें वायरानो संचार न होवाथी वहाण गमनां गम पडी रह्यां हाले चाले नहीं. अनुक्रमें नातुं पाणी खुटुं नूख तृषायें माणस सर्व मरण पाम्यां. हुं एक जीवतो रह्यो छुं. ए में महारुं वृत्तांत कह्युं. हवे तुं मुजने परलोकनो संबल आप. तेवारें तेने नागदत्तें ॥ पाणाइवायं मलियं,चोरिकं मेहुणं दविण मुछं ॥ कोह माणं मायं, लोनं पिज्जं तहा दोसं ॥ १ ॥ कलहं अप्नरकाणं, पेसुन्नं रई अरइ समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया मोसं मिछ

त्तसहन्नं च ॥ २ ॥ वोसीरिस्सूइमाइ, मुरक मागसंसग्ग विग्घनूयाइं ॥ डुग्गइ निबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥३॥ एगो हं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाणं मणुसासउ ॥ ४ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरानावा, सव्वे संजोग लरकणा ॥ ॥ ५ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ६ ॥ अरिहंतो महदेवो, जावजीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ ७ ॥

ए प्रमाणें ते कुमरें संबल आप्युं तेने लइने शुनध्यानें परलोकें पहोतो. देवलोकें जइ उपनो. तिहां देवांगना साथें रमवा लागो. ए वृत्तांत सांजली सर्वलोक नयभ्रांत थयां थकां नागदत्तने गालो देवा लाग्यां. कहेतां हवां के तें अमने आपदामां नाख्यां अमें इहां नूख तरषथी मरण पामशुं.

एवा समयें सिंहलद्वीपना राजायें एवी प्रतिज्ञा करेली ले, के कोइ पण पुरुष आपदामां पड्यो होय, ते वात राजाना सांजलवामां आवे, तो तेनी आपदा टाल्या विना राजा जमतो नथी. ते पांचशें वहाण पर्वत कुंनलने विषे पडेलां देखी राजाना पुत्रें जइ पोताना पितानी आगल, ए वात कही. ते सांजली राजायें पडह वजडाव्यो के जे कोइ प्रवहणने इहां लइ आवे, तेने हुं लक्ष टका सुवर्णना आपुं. ते पडहने एक वृद्ध नाखवो ब्व्यो तेणें राजानी पासेंथी लक्ष सुवर्ण लइ पोताना पुत्रने आप्यां. पोतें पुत्रपासेंथी विदायगिरि मागी एक लघु प्रवहण लइने समुद्रमांहे चालतो नागदत्तनी पासें आव्यो, तेने देखी नागदत्त हर्ष पाम्यो.

पली ते वृद्ध नावडीउ वहाणने बाहेर काहाढवा माटें उपाय कहेवा लाग्यो जे आ पर्वतना शिखरने विषे एक महोटुं चैत्य ले, तिहां महोटी नंनिका ले ते शिखरनी उपर तमारामांथी कोइएक पुरुष चडीने ढक्का वजाडे, ते ढक्काना शब्दथी तिहां नारंम पंखी घणां ले, ते उडशे तेनी पांखोना वायराने योगें सर्व वहाणो चालवा मांमशे. ते पाधरा इहांथी सिंहलद्वीप ढूकडो ले, तिहां जाशो. तिहां गया पली सर्वजनोने कल्याण ले. परंतु जे एक जण ढक्का वजाडवा जाशे, तेनुं मरण थाशे. कारण के तिहां कांइ फल जल अन्न, मलशे नहीं. एटलुं बोलीने नावडीयो लानो रही गयो.

पली कुमरें सर्वजनोने पर्वतना शिखर उपर चडवा माटे पूठ्युं, पण

कोइ हा जणे नहीं. तेवारें कुमरें विचार्यु जे एक म्हारा मरणथी घणा लोक जीवता रहेशे, माटें हुंज जाउं. एवुं साहस आदरी पर्वतना शिखर ने विषे चडीने ढक्का वजडावी, तेना नाद थकी घणां जारंम पंखी उड्यां, तेनी पांखना वायराने योगें वहाण चालतां थयां ते सिंहलद्वीपें आव्यां. राजा हर्ष पाम्यो कोइ पासेंथी दाण पण लीधुं नहीं पण वहाणना मुख्य वेपारी नागदत्त न आव्यानी खबर सांजलीने खेद पामतो बीजानी उपर अजाव करवा लाग्यो सर्वलोकोयें वसाणां वेची नवां करियाणां लइने वहाणो जर्यां. घणो लाज लइने पोताना नगरने विषे आव्यां, नागचंद शेठ तेमनी साहामो आव्यो पण पुत्रने दीठो नहीं अने लोकोना मुखथी नागदत्तनुं वृत्तांत सांजली घणुंज दुःख पामतो देखी बीजा वाणीया कहेवा लाग्या के, हे शेठ ! तहारा पुत्रें साहस अंगीकार करीने अमो सर्वने जीवता राख्या, अमें अमारे घरें कुशलें आवी पहोता, ते नाग दत्तना पसायथी समजजो. एवुं कही सर्वलोक दुःख धरे छे.

एवामां आकाशमार्गें एक विमान आवतुं दीठुं, तेने सर्वलोक उंची न जर करी जोवा लाग्यां. थोडीशी वारमां विमान पण जूमियें उतरी आ व्युं, तेमांथी नागदत्तकुमर स्त्री सार्थे उतरी आवीने पिताने पगे लागो, तेने जोइ सर्वलोको चमत्कार पाम्यां. तिहां नागदत्त पोतानुं वृत्तांत कहे तो हवो, के हुं सत्त्व आदरी पर्वत शिखरें चढी ढक्का वजाडी तिहांथी पाछो उतरी नीचें श्रीरूषजदेवजीने देहरे जइने प्रतिमाने वांदी पूजी उप वास करी बेठो. केटलाएक दिवस वीत्या पछी तिहां आजरणालंकृत शरी रवालो दिव्यरूप धारण करनारो एवो एक पुरुष आव्यो,ते पण प्रतिमाने वांदी पूजी बाहिर आव्यो तेने में हाथ जोडी पूछयुं स्वामी ! तमें कोण छो? तेणें कह्युं के हुं वैताढ्यपर्वतनो रहेवासी विद्युत्प्रजनामा विद्याधर छुं हमणां हुं नंदीश्वरद्वीपें देव वांदवा गयो हतो तिहांथी फरी आहीं देव वांदवा आव्यो. हुं इहां तुजने देखी अवलोकनी विद्याने पूछयुं,ए पुरुष कोण छे? वि द्यायें तहारुं सर्ववृत्तांत कह्युं ताहारुं चरित्र सांजलीने हुं हर्ष पाम्यो. हुं म हारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करवा तमोने विनति करुं छुं. तथा वली तेनी सार्थे हुं तमोने आकाशगामिनी विद्या आपुं, ते पण ल्यो. एम कही ते विद्याधरें विद्याशक्तियें करी तिहां पोतानी पुत्री अणावी परणावी दीधी, तिहांथकी

रनां नोजन अणावी मुझने घणादिवसना उपवासनुं पारणुं कराव्युं. आ काशगामिनी विद्या आपी, महोटा पुरुष प्रसन्न थया तो शुं न करे?

पढी में कह्युं म्हारा माता पिता घणुं डुःख करतां हशे, माटें म्हारे न गरें पहोचतो करो. तेवारें तेणें मुझने घणी ऋद्धिसहित विमान आपी इ हां पहोंचाड्यो. ते वात सांजली सर्वलोक हर्ष पाम्यां. महोत्सव सहि त कुमरने नगरप्रवेश कराव्यो.

हवे नागदत्तें विचार्युं जे जेहने अर्थें हुं देशांतर गयो हतो, तेना पसा यथी हुं घणी रूद्धि पामीने कुशलें क्षेमें घेर आव्यो, तो हवे महोटा वि स्तारें श्रीजिनेश्वरनी पूजा करुं. एम चिंतवी जिनमंदिरमां नित्यप्रत्यें नव नवा विस्तारपूर्वक नवनवा प्रकारनी पूजा करे. तेथी घणा जीव बोधबी ज पामे. वली साधुजनने शुद्धमान अशन, पान,खादिम, स्वादिम,वस्त्र,पा त्रादिकने दानें करी लक्ष्मीने कृतार्थ करे. एम केहले समयें वैराग्य पामी सु स्थित आचार्यनी पासेंथी दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी अंतें अनशन आ राधि स्वर्गरूप श्रेष्ठपद पाम्या. ए तीर्थ सेवाने विषे नागदत्तशेठनी कथा कही.

हवे नक्तिनूषण तथा प्रनावनानूषणनुं दृष्टांत कहे ठे.

॥ नत्तिं आयर करणं, जहोचियं जिणवरिंद साहूणं ॥ थिरया दढ स म्मत्तं, पनावणुस्सप्पणा करणं ॥ ४१ ॥ अर्थः–(नत्तिं के०) नक्ति ते (आयरकरणं के०) आदरनुं करवुं, (जहोचियं के०) यथोचितपणे (जि णवरिंद के०) श्रीजिनवरेंद्र तथा तेमनी आज्ञायें युक्त एवा जे (साहूणं के०) साधुजनो तेमनी नक्ति एटले आदर करवो. हवे जिननक्ति केवी री तें होय ते? कहे ठे ॥ यतः ॥ तिन्निनिसिहि तिन्निउ,पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ॥ तिविहा पूया य तहा, अवब तिय नावणं चेव ॥ १ ॥ ति दिसि निरखण विरइ, पयनूमि पमज्जणं च तिरकुत्तो ॥ वस्राइ तियं मुद्दा, तियंच तिविहं च पणिहाणं ॥ २ ॥ इयदसतियं संजुत्तं, वंदणयं जो जिणाण तिकालं ॥ कुणइ नरो उवउत्तो,सो पावइ सासयं गणं ॥३॥ ए जिननक्ति. कही अने साधुनी नक्ति तो वली साधु आवता जाणी सन्मुखजावुं, मस्तकें अंजलि बंध करवो, आसन देवुं, वंदन पर्युपासनानुगमन करवुं, दश प्रकारनुं वैय्यावच्च करवुं, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, पीठ, फलकनुं देवुं, औषध नैषज्य पथ्यादिक सामग्रीना संप्रदान प्रमुख करवें करी साधुनी नक्ति थाय ॥ यतः ॥

भक्तिर्जिनेंद्रस्य गुरोः सुसेवा, क्रियापरत्वं व्यवहारशुद्धिः ॥ जितेंद्रियत्वं सुकृताश्रयत्वं, धन्यस्य धर्मो हृदि वर्त्त तेऽसौ ॥ १ ॥

हवे एने विषे बाह्याभ्यंतररूप कामिनीनो दृष्टांत कहे छेः— राजगृह नगरें अमिततेज नामें राजा छे तिहां एक पारिव्राजक रहे छे. ते विद्या मंत्रें करी जे कांइ नगरने विषे सार वस्तु देखे, तथा स्त्रीरत्न देखे तेने चोरी लइ जाय. तेवारें समस्त पुरनां लोक एकठां मली राजानी आगल पोकार करवा गयां. राजायें तेमने कह्युं के तमें सहु पोतपोताने घेर जइ निश्चिंत थइने सूइ रहो. हुं पांच दिवसमांहे ते चोर पकडीने जो शिक्षा न करुं, तो अग्निमां प्रवेश करुं! एवुं कही लोकोने विसर्जन कस्थां. पछी राजायें ते चोरनी शुद्धिने अर्थें पोतानां घणां माणसो मोकल्यां, पण चोर हाथ लागो नहीं. एम चार दिवस वीती गया. पांचमे दिवसें राजा पोतें हाथमां तरवार लइने चोरने शोधवा निकल्यो. तेणें संध्या समयें पहेला पारिव्राजकने तंबोलीनी डुकानें पाननां वीडां लेतो दीठो तिहांथी वली सरईयाने हाटें मोघरेल, चंबेली अने केवडानां तेल लेतो दीठो. राजायें विचार्युं जे चोर तो एज जणाय छे. पछी राजा प्रच्छन्नवृत्तियें तेहनी पछवाडें लाग्यो.

ते पारिव्राजक नगर बाहेर जइने एक जगायें शिला उघाडी भूमिगृह मांहे पेठो. राजा पण तेनी पछवाडे उघाडी तरवार सहित गयो, तिहां चोरीनी सर्व वस्तु दीठी, ते पारिव्राजकें राजाने आव्यो देखी तेने मारवा दोड्यो, राजायें लघुलाघवी कलायें ते पारिव्राजकनी चोटली झाली वश आणी शिर छेदी नाख्युं. पछी राजा ते रात्रियें तिहांज रह्यो, प्रभातें सर्व नगरनां लोकोने तेडीने कह्युं के सहु कोइ पोतपोतानी चीज उलखी ल्यो. तेवारें जेनी जेनी जे जे वस्तुउ हती, तथा स्त्रीयो हती ते सहुयें पोतपोतानी लइ लीधी. तिहां राजानी कीर्त्ति विस्तार पामी.

हवे ते स्त्रीयोमांथी एक स्त्रीने ते पारिव्राजकें कामण कीधां हतां, तेथी ते पोताना पतिने वश थइ नहीं. पतिनी साथें बोले पण नहीं तेवारें तेना धणीयें घणा मंत्र तंत्रना जाणने पूछ्युं. एकें कह्युं के एने पारिव्राजकें कामण कीधां छे, माटें ए पारिव्राजकना हाड दूधमां धोइने एने पीवरावो तो एनां कामण उतरे, तेवारें पारिव्राजक उपरथी राग उतरी जाशे, अने पो

ताना धणी उपर रागिणी थशे. पढी तेना पतियें तेमज कर्युं. तेथी तेनां कामण उतरी गयां, अने पोताना धणी उपर रागी थइ.

हवे एनो उपनय कहे ठे. जेम ए स्त्री कामणने योगें ते पारिव्राजकने मूकी अन्य कोइनी उपर अभिलाषा न करे, तेम जे सुश्रावक होय ते पण निःकेवल श्रीजिनधर्मभावित ढतो केवल श्रीजिनवर तथा सुसाधुनी उपर प्रेम राखे, परंतु अन्य कोइनी उपर भक्तिराग राखे नहीं. ए त्रीजुं भक्तिराग नामें समकेतनुं भूषण कह्युं.

हवे चोथुं स्थिरता नामें भूषण कहे ठे. (थिरया के०) स्थिरता निश्चलता तेने (दढसम्मत्तं के०) दृढ समकेत कहीयें, जे माटे दृढसम्यक्त्ववान् पुरुषने जो देव, दानव,चलाववा भगाववा आवे, तो पण ते चले नहीं समकेतथकी खसे नहीं. अन्यदर्शननी अत्यंत पूजा प्रभावना थती देखे तो पण तेनो लेशमात्र रोमोत्कंप न थाय. समकेत विना बीजा सर्व अज्ञानमार्ग ठे, एम माने, वायराथी जेम पूणी उडी जाय ठे तेम ए अज्ञानी मिथ्यादृष्टियो संसारचक्रने विषे उडता फरशे एवुं माने ॥ यदुक्तं ॥ चत्तारि पुरिस जाया पसुत्ता तं जहा ॥ एगेपिय धम्मे नो दढधम्मे. दढधम्मे णाम एगे नोपिय धम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि. एगे पियधम्मे नो दढधम्मे ॥ इति ठाणांगसूत्रे ॥

हवे ए स्थिरता भूषण उपर सुलसानो दृष्टांत कहीयें ठैयें, मगधदेशें राजगृहि नगरें प्रसेनजितराजा राज्य करें ठे, तेनो नाग एवे नामें सारथिनी प्रियात्मा सुलसानामें स्त्री हती ते नागसारथिने पुत्र नथी तेनो डुःख धरतो शोकातुर थको रहे. तेने सुलसा कहे के हे स्वामी ! तमें डुःख म करो. जे कर्ममां लख्युं हशे, ते थाशे, ते अन्यथा थनार नथी. एम करतां पण जो आपने स्थिरता न रहे, तो अन्यस्त्रीनुं पाणिग्रहण करो, के जेम तेथकी पुत्रप्राप्ति थाय, तो पण रूडुं ठे. तेनें नागें कह्युं अन्यस्त्रीनुं पाणिग्रहण तो हुं सर्वथा नहींज करुं परंतु अन्यदेव जे खेत्रपालादिक ठे तेमनी मानता पूजा करिशुं. जे थकी आपणने पुत्र प्राप्ति थाशे.

सुलसायें कह्युं एक श्रीवीतरागदेवने पूजतां जे थाउ ते भलें थाउ, पण सर्वथा अन्यदेवनुं आराधन तो हुं मन, वचन अने काया ए त्रणे योगें करुंज नहीं. हवे सुलसा एकाग्र मनें त्रिकाल देवपूजा करे, विशेष

थकी साधु नक्ति करे. एकदा प्रस्तावें इंद्रमहाराजें सनामां बेठा. सुलसानी जिनधर्मने विषे स्थिरतासंबंधि प्रशंसा करी. ते एक मिथ्यादृष्टि अदेखा देवतायें सद्दही नहीं. पछी ते देव साधुनुं रूप करी सुलसाने घरे आव्यो. ध र्मलान दइ उन्नो रह्यो. ते साधुने आवता देखी सुलसा नक्ति रागें उन्नी थइने वंदन कर्युं अने पूछ्युं स्वामी! शे कामें पधार्या छो? साधुयें कह्युं के ग्लान साधुना वेयावच्चने माटे लक्षपाक तेल जोइयें छेयें ते तहारे घेर छे, एवुं सांनलीने लेवा आव्यो छुं. एवुं वचन साधुनुं सांनली हर्ष पामती थकी घरमां जइ सुलसायें तेलनो घडो नरेलो आण्यो पण देवप्रनावें ते हाथथी विछूटो थयो, तेथी घडो नांगी पड्यो. तेवारें बीजो घडो लइ आववा लागी, ते पण देवप्रनावें हाथमांथी छूटी नांगी पड्यो, एम सात घडा आण्या ते साते नांगी पड्या, तो पण सुलसानो चित्तरूपी घट नांग्यो नहीं. घडा नांगी पड्या तेनुं लगार मात्र पण मनमां चिंतवण थयुं नहीं. जे आ अनागीयो कोण तेल लेवा आव्यो छे, के जेना आववाथकी महारा सात घडा तेलना फूटी पडया? एवी वातनी चिंतवणा लगार पण मनमां आवी नहीं. परंतु उलटी एवी चिंतवणा करवा लागी जे धिक्कार छे मुजने हुं अल्पपुण्यवान् छुं जेमाटे महारुं तेल साधुने अर्थे काममां न आव्युं कारज साध्य न थयुं! एम पश्चात्ताप करवा लागी.

एवी रीतें सुलसानुं मन साधु नक्ति उपर अत्यंत रागी थयेलुं जोइने हार अर्द्धहारें मंमित पहेलो साधु देवरूपें थइ उन्नो रह्यो अने सुलसा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के माग. माग. हुं तहारी उपर संतुष्टमान थयो छुं. जे हवा देवसनामांहे इंद्रमहाराजें तहारा गुण वखाण्या, तेथकी पण तहारामां अधिक गुण छे. एवुं देवतानुं बोलवुं सांनलीने सुलसायें कह्युं महारे पुत्र नथी ते तमें प्रसन्न थाउ. जेम महारे पुत्र थाय एवुं कहे छते देवतायें बत्रीश गोली आपी अने कह्युं जे एक गोली खावाथी एक पुत्र थशे एम अनुक्रमें बत्रीश गोली खावाथी बत्रीश पुत्र थाशे. वली पण काम पडे, तेवारें मुजने संनारजे हुं आवीश. एम कही देवता अदृश्य थयो.

पाछलथी सुलसायें विचार्युं जे एकेक गोली खावाथी बत्रीश वखत सूवावड करवानां दुःख नोगववां पडशे माटें बत्रीशें गोलीने एकजवार आरोगी जाउं के जेथकी एकज बत्रीश लक्षणो पुत्र थाय, तो बहु सारुं. जेमा

टे क्रमी सरखां घणां छोकरां थयां तो पण शुं ? अने न थयां तो पण शुं? ॥ यतः ॥ एकेनापिहि पुत्रेण, सिंहः स्वपिति निर्भयं ॥ सदैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी ॥ १ ॥ एवुं विचारी बत्रीशे गोळी एकठी साथे खाधी, तेने लीधे बत्रीश गर्भ एकठा साथें रह्या. तेनो भार खमी शकायो नहीं. तेवारें देवताने संभाख्यो तेणें आवीने कह्युं के, हे सुलसा ! आ तें शुं कर्युं ? हवे तहारे बत्रीश पुत्र महाबलवान् थाशे. परंतु जेम बत्रीशेनो जन्म साथें एकज वखतें थाशे, तेम एमनुं मरण पण समकालें एकठुंज थाशे. ए भवितव्यता कोइ टाळी शके नहीं, माटें हवे तहारे चिंता न करवी, तहारी गर्भसंबंधि वेदना हुं टाळीश. एम कही ते देव वेदना टाळी ने जतो रह्यो. पूर्ण मासें सुलसाने बत्रीश पुत्रनो जन्म थयो, नागसारथि हर्ष पाम्यो, तेणें जन्ममहोत्सव कर्यो, अनुक्रमें महोटा थया यौवन पाम्या, श्रेणिकराजाने ते बत्रीशे परमवल्लभ थया. सदैव श्रेणिकनी पासें रहे.

हवे चेडामहाराजानी सुज्येष्ठा तथा चेलणा प्रमुख सात पुत्री छे ते मां सुज्येष्ठायें श्रेणिकनुं रूप सांभळीने पोतानी पासें छानो तेडाव्यो छे, ते वारें श्रेणिकराजा सलंग खोदावी रथ तैयार करी, तेमां बेसी सुलसाना बत्रीश छोकराने साथें लइने सलंगने रस्तेथी संकेत करेला स्थानकें आ व्यो. सुज्येष्ठाने चेलणा साथें घणो प्रेम छे माटें चेलणा आगल ते वा त कही, तेवारें चेलणायें कह्युं हुं पण तहारी साथें आवीश ! बे जणी रथ ऊपर बेसी चालती थइ संकेतस्थानकें आवी सुज्येष्ठायें कह्युं महारो आभरणनो करंडियो वीसरी गयो छे, माटें रथनें आहीं राखजो, हुं लइ आवुं छुं. एम कही ते करंडीयो लेवा गइ, तेने विलंब थयो तेवारें सुल साना बत्रीश पुत्रें श्रेणिकने कह्युं महाराज ! इहां वैरीनां स्थानकें आपण ने रहेवानुं काम नथी, जो चेडो महाराजा जाणशे, तो आपणने जीवता जावुं मुशकील थाशे. माटें रथ चलावीयें, तेवारें चेलणानो रथ आवतो जोइ तेने सुज्येष्ठा जाणी सलंगना अंधारामां पोताना रथमां बेसाडी ली धी. अने श्रेणिकें रथ चलाव्यो. पाछल बत्रीश रखवाला रह्या, एवामां सु ज्येष्ठा आवी तेणें रथ दीठो नहीं, तेवारें मनमांहे चिंतव्युं जे महारा म नोरथ फल्या नहीं, माटें हुं पोकार करुं. एवुं विचारी पोकार कर्यो के चे लणाने श्रेणिक लइ जाय छे, ते सांभळी चेडो महाराजा युद्ध करवा स

क्ष थयो. तेवारें तेनो वैरंगिक सुनट चढ्यो तेणें सलंगमांहेथी जाता दीठा, तेथी बाण ताणीने मूक्युं, ते एके वाणे सुलसाना बत्रीशे पुत्र मरण पाम्या. श्रेणिक रथने आकरो चलावी आगल निकली गयो, अने वैरंगिक सुनट पण सुलसाना बत्रीश पुत्र मुवा पड्या हता, तेथी सलंगमांहे आगल पहोंची शक्यो नहीं, पाछो वली गयो. श्रेणिकें राजगृहीमां आवी गंधर्वविवाहें चेलणाने परणी.

हवे नागसारथि अने सुलसा बेहु जण पोताना बत्रीश पुत्रोनुं मरण सांनली दुःख करवा लाग्यां, श्रेणिकें तेमने घेर जइ धीरज आपी समजाव्यां, शोक निवर्त्ताव्यो. पछी ते बेहु कर्मना कटुकविपाक जाणी विशेषथकी श्रीजिनधर्मने आराधता थयां.

एकदा श्रीमहावीरस्वामी चंपा नगरीयें समोसर्या छे, तिहां अंबडपरिव्राजकवेषी श्रीवीरदेवनो परम श्रावक छे, ते राजगृहि नगरें जावा लाग्यो, तेवारें नगवानने पूछतो हवो के स्वामी! हुं राजगृही नगरें जाउं छुं. आपने कोइने कांइ संदेशो कहेवो छे? नगवानें कह्युं सुलसा श्राविकाने अमारो धर्मलान्न कहेजो. हवे अंबडपारिव्राजक वीरने वांदीनें चाल्यो. विचार्युं जे सुलसामां श्यो गुण छे के बीजा अनेक श्रावक श्राविकाने मूकीने नीरागी पुरुष सुलसानेज धर्मलान्न कहेवरावे छे? माटे कांइ विशेष गुण होवो जोइयें. हुं सुलसाना गुणनी परीक्षा करुं. एम चिंतवतो राजगृहीमां पाधरो सुलसाने घेर आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने निक्षा आपो. हवे सुलसानें एवी प्रतिज्ञा छे जे सुपात्र टाली अन्यदर्शनीने निक्षा न आपवी, तेमाटें व्रतन्नंग थवाना नयथी तेने निक्षा न आपी, अने ते पारिव्राजकनी सामुं पण जोयुं नहीं. तेवारें ते तेमज पाछो वली गामनी पूर्व दिशिनी पोलें चार नुजावालो हंसना वाहन उपर बेसी ब्रह्मानुं रूप लइने बेठो. पासें सावित्री बेठी छे, राजगृही नगरीना लोक सर्व नमस्कार करवा गयां. पण सुलसा वांदवा आवी नहीं. बीजे दिवसें गामनी दक्षिणदिशिनी पोलें गरुडासन शंख, चक्र, गदादिक धारक कृष्णनुं रूप लइ बेठो, तेने जोवाने तथा नमस्कार करवाने सर्व लोक गयां, पण सुलसा गइ नहीं. त्रीजे दिवसें पश्चिमदिशिनी पोलें वृषन्नवाहन, शूलपाणि, कपालधर, जटाधारी, अर्द्धांगें पार्वतीसहित माहादेवनुं रूप लइ बेठो. तिहां प

ए सर्व लोक वांदवा आव्यां, पण सुलसा आवी नहीं. चोथें दिवसें उत्तर दिशिनी पोलें समवसरण प्राकार त्रय चामर अशोकवृक्षादिक रुद्धियें करी बिराजमान पच्चीशमो तीर्थंकर थइ बेठो. जैनलोको कहेवा लागां के पच्चीशमा तीर्थंकर समोसस्या छे, चालो तेमने वांदवा जइयें, पण सुलसायें कह्युं पच्चीशमो तीर्थंकर होयज नहीं. एतो कोइ माया करी बेठो छे. महारो देव तो चोवीशमो तीर्थंकर श्रीवीर विराजमान चंपानगरीयें समोसस्या छे तेज छे.

एवी सुलसानी परीक्षा जोइने अंबडें विचार्युं जे एवा गुण एमां छे तो ज भगवंत नीरागी पुरुषें धर्मलाभ कहेवराव्यो छे, माटें ते योग्यज छे. पछी वैक्रियलब्धि विसर्जिने अंबड सुलसाने घेर आव्यो, अने कह्युं जे श्रीमहावीरें तुजने धर्मलाभ कह्यो छे. एटलुं सांभलतां तेनी साहामुं जोयुं. हर्षित थइ बेसवाने आसन मूक्युं. कुशलादिक पूछवा लागी देरासरें देव जुहास्या, परस्परें हर्षवार्त्ता करी अंबड पोताने स्थानकें गयो. एम स्थिरता नामा भूषणने विषे सुलसा श्राविकानी कथा कही.

हवे पांचमा प्रभावना नामा भूषणनुं स्वरूप कहे छेः—(पउस्सप्पणा करणं के०) श्रीजिनशासनोनुं जे ते प्रकारें करीने प्रोत्सर्प्पणा एटले प्रसिद्धिनुं करवुं तथा धारवुं तेने (पभावणा के०) प्रभावना कहीयें. साधुसाध्वीनी शक्तियें करी प्रभावना करे तथा श्रावक श्राविकानी शक्तियें करी प्रभावना करे. पण छतीशक्ति गोपवे नहीं ॥ ४१ ॥

हवे ए प्रभावनानेविषे कालिकाचार्यनो दृष्टांत कहीयें छैयें. भरतक्षेत्रें धारावास नामें नगर तिहां वैरिसिंह नामें राजा छे, तेनी सुरसुंदरी नामें पटराणी छे, तेमनो समस्त कला तथा रूपनो निधान एवो कालिक नामें पुत्र छे, ते एकदा प्रस्तावें अश्वक्रीडायें निकल्यो, ते घणा वखत सुधी अश्व क्रीडा करी विश्रांत थयो. उद्यानमांहे बेसवा माटें सारी छांयडानी जगायें जाय छे, एटलामां देशनामृतमेघें वर्षता एवा गुणसुंदर नामें आचार्यने दीठा, तेमने वंदना करीने कालकुमार पण देशनामृत पीवा बेठो. आचार्य पण योग्यजीव जाणी उपशम, संवेग, निरवद्यादिकनी करवा वाली धर्मदेशना आपता हवा. ते सांभली कुमर प्रतिबोध पाम्यो, तेवारें हाथ जोडीने आचार्यप्रत्यें विनववा लाग्यो के तमें इहां रहो. हुं माहरां माता पिताने समजावीने दीक्षा लइश. सूरियें कह्युं "जहासुखं देवाणुप्पिया माहापडिबंध करे

ह" पढी कुमर आचार्यने वांदी घेर गयो, मातापिताने समजाववा लागो पण ते समजे नहीं. अने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपे नहीं, तेवारें कुमरें कह्युं मुजने नरक तिर्यंचनां दुःख तथा रोग शोक आवे तेना जामीन थइ ने घरमां राखो अने कहो के ए दुःखने तम्हारी पासें अमें आववा नहीं दे शुं? एवी जामीनगरी लखी आपो.

माता पितायें कह्युं ए वातोनो कोइ जामीन थायज नहीं, कुमरें कह्युं श्रीगुणसुंदर आचार्य जामीन थाय छे, अने कहे छे के हुं कहुं ते प्रमाणे कर, तो नरकादिकनां दुःख तथा रोगशोकादिक क्यारें पण न आवे, तेमाटे हुं तेमनी पासें जाइश, अने जो तमें जामीन थइ राखो, तो हुं तमारी पासेंज रहुं. एम महत्कष्टें मात पिताने समजावी महामहोत्सवपूर्वक पांचशें राजपुत्रसहित गुरु समीपें आवीने दीक्षा लीधी. अनुक्रमें प्रज्ञा बलें करी सकल आगमशास्त्रना पारंगामी थया. योग्य जाणी गुरुयें आचार्यपद दीधुं.

अनुक्रमें विहार करतां धारावास नगरें आव्या, तेमने समस्त स्वजनवर्गे वांदवा आव्यो. गुरुयें धर्मदेशना दीधी, पोतानी न्हानी बेहेन सरस्वती नामें हती. तेने प्रतिबोधीने दीक्षा दीधी, अनुक्रमें विहार करतां पांचशें साधुयें परिवर्या थका जवितव्यताने योगें उज्जणीनगरीयें आव्या. उद्यान नेविषे उतर्या, नगरनां लोक सर्व वांदवा आव्यां. गुरुयें धर्मदेशना दीधी. सर्व लोक देशना सांजली गुरुने वांदी पोतपोतानें घेर गयां.

एकदा प्रस्तावें सरस्वती साध्वी गुरुने वांदवामाटे उपासरे आवे छे, तेवामां गर्द्दजिल्लराजानी सवारी निकली, ते राजानी दृष्टि सरस्वती साध्वी उपर पडी अत्यंत सुंदर रूप देखी कामजूतें ग्रस्यो थको सुजटने हाथे साध्वीने पकडी पोताना अंतःपुरमां रखावी तिहां जेम सींचाणे ग्रहण करेली चीडी पुकार करे, तेम सरस्वती साध्वी पोकार करवा लागी. घणा विलाप करती हवी. अनुक्रमें ते वात आचार्यें सांजली, तेवारें गर्द्दजिल्लराजानी पासें जइ न्यायरीतें समजाव्यो राजरीतें, धर्मरीतें समजाव्यो. एम अनेक प्रकारें समजाव्यो तो पण जेम सन्निपातग्रस्त रोगीने कोइ औषध लागे नहीं, तेम राजाने उपदेश लाग्यो नहीं. गर्द्दजिल्ल ते खरेखरो गर्द्दजज थयो. जेमाटे पशुजातिमां पण सर्व पशुजातिने शिक्षा लागे, पण एक गधेडाने शिक्षा लागे नहीं. तेम ए राजाने पण शिखामण लागी नहीं. तेवारें गुरु पाछा वली

आव्या. श्रीसंघने सर्व वात कही. सर्व संघ मलीने ते राजाने समजाववा गयो, पण राजा महेलथी बाहिर निकल्योज नहीं. तो पढी कोनी आगल जइ विनति करे! सर्व प्रधानो मली समजाववा गया, तेवारें तेने कह्युं के तमें जाउ तमारा मात पिताने उपदेश आपो. मुझने तमारो उपदेश लागे नहीं. तेवारें श्रीसंघनी समक्ष गुरुयें प्रतिज्ञा करी ॥ यतः ॥ जे संघपवय णीया, पवयण उवघायगा नरा जेहा ॥ संघें उवघाय करा, तंडुवेस्का का रिणोजेय ॥ १ ॥ तेसि वच्चामिगइ, जई एयं गद्दन्निल्ल रायमहं ॥ उम्मूलेमि णसहसा, रक्काउ नह मक्कायं ॥२॥ जे माटे आगममांहे कह्युं ढे ॥ यतः ॥ साहूण चेइयाणय, पडिणियंतह अवन्नवायेव ॥ जिण पवयणस्स अ हियं, सवच्चामे ण वारेइ ॥ ३ ॥

एम संघ समक्ष प्रतिज्ञा करीनें पढी घेलानी पेठें नगरमांहे जमतां फरे, अने कहेता जाय के ए गर्दन्निल्ल राजा ते म्हारी आगल शा हिसाबमां हुं एनो राज्यछेद करी म्हारी बहेनने पाढी लइश. एम बोलतां चहुटा मांहे फस्या करे, लोक सर्व गर्दन्निल्लराजाने वगोवे, अने कहे के राजा अन्याय करे ढे, एनुं राज्य हवे रहेशे नहीं. ए राजा माहाडुष्ट ढे, साध्वीना शीलनो खंमनार थयो, माटें हवे कांइ ए राजा राज्य उपर रही शकशे नहीं. जे साध्वीना विरहथी कालिकाचार्य जेवा पण घेला थया. माटे ए महापापी राजा ढे, महोटां पाप करे ढे. इत्यादिक लोको परस्पर वातो करे, ते पण राजा सांजले, तो पण ते वात मनमां आणे नहीं.

हवे कालिकाचार्य राजाने समजाववो सर्वथा असाध्य जाणीने गच्छनो जार गीतार्थने जलावी तिहांथी चाल्या ते अनुक्रमें जतां जतां शाककुलने विषे गया. तिहां प्रथम सांइना प्रधानने मल्या, तेनी साथें वार्त्ताविनोदें करी सलाहसंप कीधो, ते प्रधाने पोताना सांइसाथें आचार्यनो मेलाप करा व्यो. पढी प्रतिदिन सांइनी पासें जाय मंत्रतंत्रादिकें तेने वस कस्यो.

एकदा प्रस्तावें आचार्य सांइनी साथें गोष्टि करे ढे, एवामां पडिहारे आवी सांइने विनव्यो, के हे स्वामी! आपणा साहनो जे सांइ तेनो दूत आव्यो ढे. सांइयें कह्युं इहां तेडी लावो. तेवारें द्वारपाल तेने तेडी लाव्यो. आवी प्रणाम करीने सांइ पासें उन्नो रह्यो, अने कहेवा लाग्यो के साह ना साइयें ढन्नुसांइने नेटणुं मोकल्युं ढे, एवुं कहीने डुरीनुं नेटणुं सांइनी

आगल मूक्युं. ते नेटणुं देखी वर्षाकालें जेम आकाश श्याम थइ जाय, तेम ते सांइनुं श्यामवदन थयुं. आचार्यें पूछ्युं हर्ष थवो जोइयें, ते स्थानकें विषाद श्यो? तेवारें ते सांइयें कह्युं के अमारा प्रन्नु सांइ जेनी उपर रुसे, तेने तेनी नामांकित छूरी मोकले. तेमाटे शुं जाणुं जे शे कारणें म्हारी ऊपरें कोप करीने छुरी मोकली छे? हवे तेनी आज्ञा उल्लंघीयें तो समस्त कुटुंब परिवार सहित अमने मारी नाखे, तेमाटे गले छुरी लीधी जोइयें. कारण के अमारो स्वामी उग्रदंम छे. आचार्यें पूछ्युं के, एकला तमारा उपरज रुष्ट थयो छे, किंवा बीजा घणा उपर रूठो छे? तेवारें सांइयें कह्युं म्हारी छुरीनी उपर छन्नुमो आंक छे तेमाटे बीजा पंचाणुं सांइ उपरें छुरी आवी छे. ते पंचाणुं सांइ सर्व गले छुरी लेशे अने छन्नुमो हुं पण गले छुरी लइश.

तेने गुरुयें कह्युं मरवामांहे नली वार नथी, जो जीवता रहेशो, तो सेंकडा गमे कल्याण देखशो. तेमाटे तमें सर्व पंचाणुए सांइने दूत मोकलीने तेडावो तो हुं तमो सुधां छन्नुं सांइने हिंडुस्थानमां तेडी जाउं, अने तमोने राज्य अपावुं. एवुं आचार्यनुं वचन सांनली पंचाणुं सांइने दूत मोकली तेडावी लीधा, ते पण सर्वने आचार्यें समजाव्या. सर्वे छन्नु एकमते थया. पछी शाहाना सांइना दूत विसर्जिने समस्त कुटुंबपरिवार साथें लइ गुरुने आगल करी यानपात्र मंमावी सिंधुनदी उतस्या. सिंधुदेशमांहे थइ सोरठदेशें आव्या. तिहां सोरठना राजाने वश करी सोरठ लीधी. एवामां वर्षा काल आव्यो, तेवारें छन्नुं जणे मली छन्नुनागें सोरठ वेहेंची लीधो. जूदा जूदा परगणामां रह्या सुखीया थया तिहां सुखमां वर्षाकाल व्यतिक्रम्यो अनुक्रमें शरत्काल आव्यो, धान्य नीपनां, मार्ग चोखा थया.

तेवारें कालिकाचार्यें कह्युं हुं तमोने ए देश अपाववा सारु तेडी नथी आव्यो, परंतु माहारी साथें चालो हुं तमने मालवदेश जे सर्वदेशोनुं मंमन छे. जिहां घणा गोल, गहूं, शाली, अफिम प्रमुख उपजे छे, ते देश तमोने लइ आपुं. तेवारे सांइयो बोल्या के, जो ड्रव्यनो खजानो होय तो कटकाइ थाय. ते खजानो खूटो छे तमारा माटें देश लूंटी शकता नथी इहां सोरठमां तो अमें नोजन मात्र पामीयें छैयें, पण खजानो थतो नथी अने खजानाविना कटकाइ पण थाय नहीं. आचार्यें ते वात मान्य

करीने एक कुंनारनो ईंटवाह वेचातो लइ तेमां एक चपटीमात्र चूर्ण प्रक्षेप कर्युं. तेथी ते आखो ईंटवाह सोनानो थइ गयो, अने कह्युं के सुवर्णनो ईंटवाह वेहेंची ल्यो. ते बन्नुं साइयें वेहेंची लीधो. गुरुनी कला देखी हर्ष पामीने सर्व लश्करनी तैयारी करी चालता थया. ते अनुक्रमें लाटदेशने विषे आव्या. तिहां नृगुकछें बलमित्र नानुमित्रराजाने साथें लइ अनुक्रमें मालवानी गडासंधी लगें आव्या, तेवारें गर्दनिल्लें सांनल्युं जे कटक लइने कालिकाचार्य आवे छे. तेवारें पोतें पण सज्ज थइ लश्कर लइने साहामो लडवा चाली आव्यो, परस्पर युद्ध थयुं. गर्दनिल्ल हार्यो थको अयवंतीना कोटमां पेसी पोल देइने मांहे बेसी रह्यो. कटकें आवीने चारे बाजुयें कोट वींटी लीधो. कोटनी मांहे धान्य पाणि चारो प्रमुख जइ शके नहीं प्रतिदिवस युद्ध थाय.

एकदा सांइनुं कटक चडयुं पण मांहे कोट शूनो दीठो, कोइ साहामो लडवा चडी आव्यो नहीं, तेवारें आचार्यने सांइयोयें पूछ्युं के कोट सूनो देखाय छे, अने गर्दनिल्ल गर्दन देखातो नथी, तेनुं शुं कारण हशे ? तेवारें गुरुयें कह्युं आज आठमनो दिवस छे तेथी ए गर्दनी विद्या साधे छे, माटे तमें जूर्ज कोटनी अटाली ऊपर गर्दनी हशे. पछी तेणें ऊंचा चडी जोयुं तो गर्दनी दीठी, गुरुने कह्युं स्वामी गर्दनी देखाय छे ? तेवारें गुरुयें कह्युं ए गर्दनी विद्या साधीने ए गर्दनी मूकशे तेनो शब्द जे कोइ द्विपद अथवा चतुष्पद जीवो सांनलशे, ते सर्व लोही वमता नूमियें पडशे. तेमाटे आपणो द्विपद तथा चतुष्पद सर्व कटक जे होय, ते इहांथी ऊसरीने गर्दनीनो शब्द कानें न पडे, एटला दूर जइ वेशो जेम ए गर्दनीनो शब्द आपणे सांनलीयें नहीं. एवुं आचार्यें कहे छते सर्व कटक बे गाउ दूर जतो रह्यो.

वली आचार्यें कह्युं के एकशो आठ धनुर्धर शब्दवेधी होय ते महारी साथें आवो. पछी तेमांथी १०८ शब्दवेधी अचूकबाणलक्ष वेधी एवा सुनट शोधी तेने पोतानी साथें लइ गुरु पण बाण लइ कोट समीपें गया अने सर्व १०८ ने कह्युं, के जेवारें ए गर्दनी नूंकवा माटें मुख पसारे. एटले समकालें एकसाथेंज बाण मूकजो. ए गधेडीनुं मुख बाणोथी नरी मूकजो के जेम ए बोली शके नहीं, तेम करजो जो चूकशो तो एनो शब्द सांनलतांज तमारुं मरण छे, एम निश्चय जाणजो. तेमाटे घणी खबरदारीथी

सावधान रहेजो, रखे चूकी जाउ. गुरुयें एवुं कहे थके जेवुं गधेडीयें नृक वामाटें मुख पसार्खुं, तेवांज एकसो ने आठ बाण समकालें तूट्यां तेथी ते गधेडीनुं महोढुं नराइ गयुं. नूंकी शकी नहीं. तेवारें ते गर्दनी विष्टा, गर्द निल्लराजाना मुखमां मूत्र तथा लींमां करी लात मारी जती रही, गुरुयें कह्युं ए राजानुं बल एटलुंज हतुं ते गयुं. हवे सर्व जण सामटा एकठा थइ नगरना कोटने नेलो, गुरु आगल थइ कटक लइने कोट नेल्यो,गुरुयें कह्युं लूंटशो मां. कोइने मारशो मां. निःकेवल गर्दनिल्लने जीवतो पकडजो. एवुं कही वडासाहनी आण वर्त्तावी गर्दनिल्लने जीवतो गुरुनी आगल मूक्यो. के आ तमारो वैरी छे, माटे तमारुं मन माने ते करो.

गुरुयें कह्युं अरे पापिष्ट ! अरे निर्लज्ज ! अरे डुष्ट ! अरे अकार्य कारक ! हवे साध्वीनुं शीलनंग कर्खुं, तेनुं फल तुं पाम. एम कही वली करुणा आणीने कह्युं तें अमारुं वचन न मान्युं, तथा संघनुं वचन न मान्युं, सा ध्वीना शीलनुं खंमन कीधुं तेमाटें नरक तिर्यंच गतिने विषे अनंत संसार नमीश ॥ यतः ॥ जो अवगस्मइ संघं, पावोसोवपि माणमयलित्तो ॥ सो अ प्पाणं बोलइ, डुरकमहासागरे नीमे ॥ १ ॥ सिरिसमणसंघ यसा, यणाए पा वंति जं डुहं जीवा ॥ तं साहिउ समछो, जइ परनयवंति णो होइ ॥२॥ ते माटें ए पाप आलोइ प्रायश्चित्त कर, तो बूटीश, एवुं कहे थके जेम सन्निपा तियाने डुग्धादिकनुं पान करवाथी विष व्यापे, तेम ते राजाने ए शीखाम ण वचन रुच्यां नहीं, तेवारें जैनयतिनी एवी मर्यादा छे के वैरीने पण मा रवो नहीं. एवुं विचारी करुणा आणी तेने मूकी दीधो अने कह्युं के तहारे हवें आ देशमां रहेवुं नहीं. एम कही विसर्जन कस्यो. ते गर्दनिल्ल राज्य न्रष्ट थयो थको इहलोकने विषे घणां डुःख पामी काल करीने नरक निगो दादिकनी गतिने विषे अनंता काल पर्यंत अनंता नव नमशे.

हवे गुरुयें जे सांइने प्रथम जइ मल्या हता, ते सांइने अयवंतीनुं राज्य आप्युं अने बीजा पंचाणुं सांइने सामंत पणे तेनी चाकरीमां राख्या, प ण ते सर्वेगुरुनी आज्ञा मानवा लाग्या. पछी ते शाककुलमांथी आव्या मा टें शाक वंश कहेवाणो. सरस्वती साध्वीने पाछुं मूलथकी चारित्र थापीने शुद्ध कर्खुं. पोतें पण आलोइ पडिक्कमीने पाछा गछमांहे आव्या. हवे सर स्वती साधवी तथा आचार्य सुखें चारित्र पालवा लाग्या, जिनशासननी उ

न्नति करवाथी समस्त देशनो तथा नगरनो संघ सर्व हर्ष पाम्यो. जेम को इनुं निधान गयुं होय, तेने कोइ पाबुं वाली आपे, ते जेम हर्ष पामे, तेम सरस्वती साध्वी पोतानुं गयेलुं शील तथा गयेलुं चारित्र पामी हर्ष पामी.

हवे नृगुकच्छने विषे श्रीकालिकाचार्यना जाणेज बलजानु कुमार राज्य करे छे. ते आचार्यनी जगिनी जानुश्रीना पुत्र छे, ते बलमित्र जानु कुमारें गुरुने तेडवाने अर्थे मतिसागर नामा प्रधानने मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के स्वामी ! तमारा जाणेजें तमोने घणी विनति करी कहेवराव्युं छे, के एक वार श्रीजरुचें चैत्य जुहारवाने पधारो जेम अमारी उत्कंठा पूर्ण थाय, ते सांजली घणे कष्टें शाकराजाने समजावी गुरु जरुचें पधार्या. जाणे जे घणा महोत्सवे पेसारो कराव्यो. स्वजनवर्गने हर्ष ऊपनो. गुरु प्रतिदिवस धर्मदेशना दीये, ते देशना सांजली बलजानु कुमार प्रतिबोध पाम्यो. कह्युं के मुजने दीक्षा आपो, गुरुयें समस्त स्वजनवर्गनें समजावी दीक्षा दीधी.

हवे गुरुनी देशना सर्वजनोने मीठी लागे, पण एक राजाना पुरोहित ने कडवी लागे, जेम सूर्य उग्यो ते सर्व कोइने रुचे, पण एक घूडने रु चे नहीं, ए दृष्टांतें जाणी लेवुं.

ते पुरोहित गुरुनी संघाते वांकुं बोले, तेम तेने 'वांकुं लक्कड वांकुं वहे' ए उ खाणो जाणीनें गुरुपण प्रश्न प्रमुख करें वलतुं ते बोली न शके एवो करी मूके.

हवे ते पुरोहित मनमां प्रद्वेष वहेतो थको राजाप्रत्यें कहे के हे स्वा मी ! ए महातपस्वी यति माहाशीलवंत सत्यवंत छे, पण ए यतिना पद आक्रमे माहा प्रायश्चित्त लागे, तेमाटें जे वाटें ए जाय तेवाटें तमारे जावुं युक्त नथी. राजा पण डुब्बलकसा थाय माटे जेम कोइ कहे तेम तेने का ने लागे, परंतु तत्त्वातत्त्व विचारे नहीं ॥ यतः ॥ बहीनरिंद चित्तं, वरका णं पाणियं च महिलाउ ॥ तब्बय वच्चंति सया, जब्बय धुत्तेहि निज्जंति ॥ १ ॥ राजायें पुरोहितने पूछ्युं एना पदनुं आक्रमण केम टले ? पुरोहितें कह्युं अनेपणा करावीयें, तो टले.

राजा पुरोहितने वचनें कामण्यो थको जाणे पुरोहितें कामण कीधां होय नहिं एवो थको कहेतो हवो के हे पुरोहित ! तुं जाणे तेम कर. जे म ए गुरु जता रहे ते उपाय कर, इहां दूध मांजारने जलाव्युं, ते दृष्टांत आवी मल्युं. पछी ते पुरोहित लोकोने उपदेश दीये जे गुरुने आधाकर्मी

आहार आपीयें. तो आपणने आप्यानुं फलज होय, पण ए वातमां पाप नथी, तेवारें लोक पण नइक ते आधाकर्मी नेली नेली वस्तु गुरुने वहोरावे. यति जिहां जिहां वहोरवा जाय, तिहां सर्वत्र अनेपणीय आहार देखे, ते आवी गुरुने कहे, तेवारें गुरुयें पण राजारूपी दूध ते पुरोहितरूपी आठणने योगें विनष्ट थयुं जाण्युं, तेमाटे हवे इहां रहेवानो लाग नथी ॥ यतः ॥ असिवे क्रणोयरिए, रायासप्पेन्नएय गेलन्ने ॥ एएहिं कारणेहिं, अपत्ते होइ निग्गमणं ॥ १ ॥ एवुं विचारी गुरु पजोसण कस्या विनाज चालता थया. जपज्या नगवंतने न गणे चोमासुं, ए जखाणो साचव्यो. अनुक्रमें चालतां चालतां मरहठदेशें पइठाणपुरना संघने आगलथी जणाव्युं, के अमो आवीयें ठैयें. जिहां सुधी अमे आवीयें नहीं तिहां सुधी तमे पजोसण करशो मां. अमो आव्या पठी पजोसण करशुं. हवे तिहां परमश्रावक शालिवाहन राजा ठे ते गुरुनुं आगमन सांनली हर्ष पाम्यो थको, श्रीसंघनी साथें घणे आमंबरें साहामो आव्यो, घणे विस्तारें नगरप्रवेश महोत्सव कीधो. शालिवाहन राजा प्रमुख प्रतिदिन धर्मदेशना सांनले. घणा धर्ममहोत्सव थाय. अनुक्रमें पजोसणपर्व नजीक आव्यां. गुरुयें राजाप्रत्यें कह्युं नादरवा शुदि पंचमीने दिवसें पजोसण ठे. राजायें कह्युं तेहीज दिवसें इंइमहोत्सव ठे माटे लोकानुवृत्ति ते दिवस साचव्यो जोइयें. तेमाटे पजोसणनां कर्त्तव्य जे पूजा स्नात्रादिक ठे, ते सचवाय नहीं. तेथी प्रसाद करीने ठठने दिवसें पजोसण करो के, जेम पजोसणनां कर्त्तव्य सर्व सुखें सचवाय. गुरु कहे ॥ अविचलइ मेरुचूला, सूरो वा उग्गमिज्ज अवराए ॥ नयपंचमीइ रयणी, पज्जूसवणा अइक्कमई ॥ १ ॥ जहाणं नगवंमहावीरे वासाणं वासइ राएमासेविइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ तहाणं गणहराविं, जहाणं गणहरा तहाणं गणहरसीसा, जहाणंगणहरसीसा तहाणं अम्मगुरुणो, जहाणं अम्मगुरुणो तहाणं अम्मेवि वासावासं पज्जोसवेमो तं रयणि णोअइक्कमिज्जा ॥

एवुंसांनली राजायें कह्युं चोथें पजोसण करो, तेवारें सूरि कहे एमज हो. चोथें पजोसण करतां दोष नथी " अंतराविअसेकप्पइ णोतं रयणिं उवायणाविं तए " ए श्रीकल्पसूत्रना अक्षरने मेले चोथें पंजोसण करतां दोप नथी, ते वचन सांनली राजा प्रमुख सकल संघ हर्ष पाम्यो. राजायें जइ अंतःपुरमांहे वात कही. अंतःपुरी हर्ष पामती कहेवा लागी नलुं थयुं जे

अमावास्यायें तो उपवास छे, तेने पारणे साधु अठ्ठम तपनुं उत्तर पारणुं करशे तेने प्रतिलाभना करी पछी पारणुं करीशुं. तेथी महोटो लाभथाशे, ॥यतः॥ पइसंतगिलाणेसु, आगमगाहीसु तहय कयलोए ॥ उत्तर पारणगं मि य, दिन्नंसु बहु फलं होइ ॥ १ ॥

पछी ते लोक हर्ष पाम्यां थकां साधुभक्ति विशेष करे मरहठ्ठदेशें ते दिवसें साधुनी पूजानो महोत्सव प्रवर्त्त्यो. ए कारणें श्रीकालिकाचार्यें चोथे पजोसण आण्युं, ते सर्वसंघें मान्युं ॥ यतः ॥ असढाइण न वज्जं,गीयछवारियंति मछछ ॥ आयरणविहु आणंति, वयणउ सुबहुमणंति ॥ १ ॥ तेवारें ते समयें जेटला सुविहित आचार्य हता, तेणें कालिकाचार्यनुं वचन प्रमाण कीधुं. जेमाटें जेणे सुविहिताचार्यनुं वचन न मान्युं तेणें तीर्थंकरनुं वचन पण न मान्युं, अने जेणें तीर्थंकरनुं वचन न मान्युं तेणे सुविहित आचार्यनुं वचन पण न मान्युं एम परस्पर संबंध जाणवो.

तथा चोथ प्रमाण करवाने अर्थें चोमासा त्रण पण चौदशें कीधां अन्यथा चोमासा त्रण पूनमें हतां. एम कालिकाचार्यनुं वचन सघला गछवासी आचार्यें मान्युं, पछी घणाकालांतरे एटले संवत् ११५९ वर्षे पूनमीयो मत प्रगट थयो. तेमांथी वली संवत् १२०४ना वर्षे आंचलीयो मत प्रगट थयो, पण कालिकाचार्यना वखत मांहेला कोइ पांचमीया देखाता नथी ते माटे जाणीयें छैयें जे चोथनुं पजोसण ते शुद्ध छे अने पंचमीयें करे ते मिथ्यावाद छे. एम उत्तममतिना धणीयें विचारवुं. तथा अधिक मास आवे श्रावण महिने पजोसण करे छे, ते पण घटमान नथी जेमाटे पजोसण भादरवा शुक्लपक्ष प्रतिबंध छे माटे श्रावणनां पजोसण करवां ते पण एक मत वादज कहेवाय, पण गछपरंपरा न कहेवाय. ए पण विचारजो.

हवे कालिकाचार्य अनुक्रमें विहार करता कर्मयोगें तेमना सघला शिष्य डुर्विनीत थया, कोइ आज्ञा माने नहीं, अने शास्त्रमां तो आज्ञा तेज प्रमाण छे ॥ यतः ॥ छठ्ठम दसम डुवालसेहिं मासद्ध मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिउ होइ ॥ १ ॥ गुरुआणा भंगाउ, रसं कउं तवंपि काकणं ॥ तहविहु पत्तो नरयं, सो कुलअवालूउ साहू ॥२॥ गुरुआणाअइक्कमणे, आयाविंतो करेइ वित्तत्तं ॥ तहवि न पावइ मोरकं, पुबभवे दोवई चेव ॥

हवे आचार्य शिखामण आपे, तेवारें शिष्य उल्लंठ वचन बोले ते सांभली

गुरु विचारे ॥ यतः ॥ तारिसा मम सीसाउ, जारिसा गलिगद्दहा ॥ गलिग द्दहे चइत्ताणं, दढं गिराहइ संजमं ॥ १ ॥ तहा बंदेण आगाउ, चिठएइ अ बंदेण॥बंदेअ वढमाणोवि, सिसे बंदेण मुत्तवे ॥ २ ॥ हुं एमने बोडी जाउं तो महारुं चारित्र सुखें पले अने ए शिष्यनी शुद्धि पण ठेकाणे आवी जा य. एवुं चिंतवी ते परमार्थ शय्यातर श्रावकने कही वली एवुं कह्युं के, अमे अमारा शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद आचार्य छे तेमनी पासें जाशुं. तमोने महारा शिष्यो घणाज अमारा अर्थीथका पूछे तो जवाब आपजो नहीं, कां सहेज साज पूछे तिहांसुधी जवाब आपशो नहीं. एम शय्यातर श्राव कने समजावीनें रात्रियें शिष्योने सूता मूकी आचार्य चाल्या, ते अविछि न्नप्रयाणे चालतां सागरचंद्राचार्य पासें गया. सागरचंद्राचार्यें जाएयुं जे को इक मोसो आव्यो छे, माटें अवज्ञायें उठी उना थया नहीं. वेसवाने आ सन पण आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ अपुवं दंठुणं, अप्नुठाणं तु होइ कायवं ॥ साहुम्मि दिठपुवे, जहारियं जस्स जं जोगं ॥ १ ॥ एवो आगमोक्त आचार छे ते अहंकारथी संनाख्यो नहीं. आचार्य आवी पासें बेठा, सागरचंद्राचा र्यें वखाण कर्युं, वखाण पूर्ण थये थके कालिकाचार्य प्रत्यें पूछ्युं जे में केवुं वखाण कीधुं? आचार्यें कह्युं रूडुं कीधुं.

पढी कालिकाचार्यने पूछता हवा के मने विषमभाव व्याख्यान पूछो? तेने गुरुयें कह्युं धर्मास्तिकाय वादनुं वखाण करो. तेवारें गुरुसंघाते धर्मा स्तिकायवादनी प्रमाणवार्दे चर्चा करी, पण गुरुयें पोतानुं नाम तथा स्व रूप प्रकट न कर्युं ॥ यतः ॥ देवतानां गुरूणां च, नाम नोपपदं विना ॥ उ च्चरेन्नैव जायायाः, कथंचिन्नात्मनस्तथा ॥ १ ॥ ए प्रकारें गुरु सागरचंद्राचार्य पासें रह्या पण कोइ उलखे नहीं.

पाछलथी तिहां ते डुष्ट शिष्य प्रभातें जाग्या थका आचार्य प्रत्यें न दी ठा, तेवारें शोधवा लाग्या, शोधतां न मल्या, ते वखत शय्यातर श्रावक पासें जइ पूछवा लाग्या के आचार्य किहां गया? श्रावकें कह्युं हुं शुं जा णुं? तमारा गुरुनी वात तमें जाणो. तेवारें शिष्य बोल्या जिहां गया हशे तिहां तमने कहिने गया हशे. तमने कह्या विना जाय नहीं. ते सांभली श्रावक भमुह चडावी बोल्यो अरे अविनीतो! तमें गुरुनी आज्ञा मानता न हता, अने गुरुनी साथें विरुद्ध वचन बोलता हता, तेवारें गुरु तमथी

वाजें आवी चाल्या गया. हवे गुरु विना अबद्ध थका रडता फरो ॥ यतः ॥ रुसइ चोइज्जतो, वहइ हियएण अणुसयं भणिउ ॥ नव कहिंकरणिज्जे, गुरुस्स आलोण सो सीसो ॥ १ ॥ जीहाएविलिहिंतो, न भद्दउ सारणा जहिं त ह्वि ॥ दंमेण य वि णेहो, गुरुकुलवासेण कित्तस्स ॥ २ ॥ एम शय्यातर श्रावकें घणुंये हंकाख्या ठता भय पाम्या थका बोल्या जे अमने गुरुनो वरांसो पड्यो आज पछी अविनीतपणुं नहिं करीयें, माटे अमने गुरुनी शुद्धि कहो, तो तिहां जइ गुरुने पगे लागी अविनय खमावी गुरुनी आज्ञामां रहीयें!

त्यारें शय्यातर श्रावकें ते सघला चेलाने पाधरा थया जाणीने कह्युं के गुरु आहींथी अमुक नगरें गुरुना शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्राचार्य ठे, तेमनी पासें गया ठे, तिहां तमें जाउ.

पछी ते सर्व शिष्योनो समुदाय तिहां चाल्यो. मार्गमां लोक पूछे ए कोण जाय ठे ? तेने कहे के ए कालिकाचार्य जाय ठे. एम परंपरायें सागरचंद्राचार्यें सांभल्युं, जे म्हारा गुरुना गुरु कालिकाचार्य आवे ठे. तेवारें हर्ष पाम्यो थको पासें बेठेला तेहिज कालिकाचार्य ठे, तो पण पोतें अजाण ठे, माटें तेमनेज कहे ठे, के आज म्हारा पितामह आवशे, ते वारें तेणें कह्युं में पण ए वात सांभली ठे. एम करतां केटलिएक वेलायें साधुनो समुदाय आव्यो. सागरचंद्राचार्य पोताना गुरु आव्या जाणी उठी उभा थया, तेवारें साधुउ बोल्या तमें बेसो. अमें तो सर्व यति ठैयें, अने आचार्य तो पहेलाज घणा दिवस थया तमारी पासें आव्या ठे. सागरचंद्राचार्यें कह्युं इहां तो एक मोसो साधु आव्यो ठे, आचार्य तो आव्या नथी. एम वात करे ठे, एटलामांज गुरु पण बाहिर थंमिलें गया हता, ते आवी पहोता. तेमने साधुसमुदाय जइ पगे लाग्यो. सागरचंद्राचार्यें कह्युं ए कोण ठे ? शिष्य बोल्या ए कालिकाचार्य आपणा गुरु ठे. ते सांभली सागरचंद्राचार्य लज्जा पामीने खमावता हवा. अने घणुं जूरवा लाग्या के हा हा में चिंतामणिरत्न म्हारा हाथमां आव्युं पण जाण्युं नहीं !!! गुरुयें कह्युं ए तहारो वांक नथी, परंतु अज्ञाननो वांक ठे. पछी तेणे अज्ञान दोष खमावी गुरुने द्वादशावर्त्त वंदन करी अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिकें भक्ति करी.

हवे गुरु वखाण करे अने सागरचंद्राचार्य पासें बेसे ते सागरचंदें प्रथम ज्ञाननो गर्व कीधो ठे, माटे ज्ञानगर्व उतारवानें अर्थें वखाणमां गुरु

दृष्टांत देखाडवा सारुं एक पाथो ते जाजनविशेष गुरुयें नदीनी वालुकायें जराव्यो: वली खाली कराव्यो वली जराव्यो वली खाली कराव्यो एम करतां वालुका सर्व उडी गइ, अने पाथो खाली रही गयो. सागरचंद्राचार्ये पूछ्युं के स्वामी! ए श्यो विनोद कर्यो? तेवारें गुरुयें तेना उपर नय देखाड्यो के सांजल! हे वत्स! जेम वालुकायें जरेलो पहेलो संपूर्ण पाथो तेम सुधर्मा स्वामी कने प्रतिपूर्ण श्रुत पामीयें, ते पण वली सातिशय पामीयें. तेनी अपेक्षायें जंबुस्वामीमां कांइक न्यून अल्पातिशय पामीयें. जे कारण माटे छठाणवडीया साधु छे ए प्रकारें श्रुत न्यून थातां थातां यावत् महारायकी तहारा गुरुपासें अति हीनश्रुत, अने तेयकी वली तहारे विषे हीनतर पामीयें ते पण दुःसमकालना अनुजावयकी प्रणष्टातिशय पामीये. तेमाटे हवे श्रुतनो गर्व न करवो ॥ यतः ॥ आसवणं मईउ, तर तम जोगेण हुंति मइविजवा ॥ मा वहउ कोवि गवं, अहमे को पिंमिउ इहं ॥ १ ॥ एवुं कहे थके सागरचंद्राचार्य श्रुतगर्वनुं मिछामिछुक्कड देइ गुरुने खमाव्या. पछी गुरु घणा शिष्यने परिवारें परिवर्या तिहांथी विहार करी जिनशासनने प्रजावता पृथ्वीतलने पवित्र करता पइछाणपुरने विषे आव्या.

हवे एकदा सौधर्माधिपति शक्रेंद्र माहाविदेहने विषे सीमंधरस्वामीनां वखाण सांजले छे, तिहां अधिकार विशेषें निगोदना स्वरूपनो विचार चाल्यो ॥ यतः ॥ गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोहउ हवइ गोलो ॥ इक्कंमि निगोयए, अणंत जीवा मुणेयवा ॥१॥ अछि अणंता जीवा, जहिं न पत्ता तसाइ परिणामो ॥ उवज्जंति चयंति य, पुणोवि तछेव तछेव ॥ २ ॥ इत्यादि सौधर्मेंद्र निगोदना विचार सांजली हर्ष पाम्यो थको प्रजुने पूछतो हवो. हे स्वामी! आजना समयमां जरतक्षेत्रनेविषे एवा निगोदना विचार कहेनार कोइ छे किंवा नथी? तेवारें जगवाने कह्युं हे सौधर्माधिप! जेवो अमो निगोदनो विचार कह्यो,तेवो विचार कहेनार जरतक्षेत्रमां एककालिकाचार्य छे.

ते वात सांजली इंद्र आश्चर्य पाम्यो थको वृद्धब्राह्मणनुं रूप धारण करी ललाटें महोटुं टीलुं करी बाहुयुग तथा हृदयमां तिलक करी महोटी, धोली, सर्वत्र सरखी जे दाढा, तेणें करी शोजायमान थइने कालिकाचार्य पासें आवी वेगे अने पूछ्युं, कहो स्वामीजी! श्रीजिनशासननेविषे निगोदना विचार केवी रीतना कह्या छे? आचार्यें हर्ष पामीने जेहवा सीमंधर

वाजें आवी चाल्या गया. हवे गुरु विना अबद्ध थका रडता फरो ॥ यतः ॥ रुसइ चोइज्जंतो, वहइ हियएण अणुसयं भणिउ ॥ नव कहिंकरणिज्जे, गुरुस्स आलोण सो सीसो ॥ १ ॥ जीहाएविलिहिंतो, न भद्दउ सारणा जहिं त त्थि ॥ दंमेण य वि पोहो, गुरुकुलवासेण कित्तस्स ॥ २ ॥ एम शय्यातर श्रावकें घणुंये ठंकाख्या ठता भय पाम्या थका बोल्या जे अमने गुरुनो वरांसो पज्यो आज पठी अविनीतपणुं नहिं करीयें, माटे अमने गुरुनी शुद्धि कहो, तो तिहां जइ गुरुने पगे लागी अविनय खमावी गुरुनी आज्ञामां रहीयें!

त्यारें शय्यातर श्रावकें ते सघला चेलाने पाधरा थया जाणीने कह्युं कें गुरु आहींथी अमुक नगरें गुरुना शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्राचार्य ठे, तेमनी पासें गया ठे, तिहां तमें जाउ.

पठी ते सर्व शिष्योनो समुदाय तिहां चाल्यो. मार्गमां लोक पूछे ए कोण जाय ठे ? तेनें कहे के ए कालिकाचार्य जाय ठे. एम परंपरायें साग रचंद्राचार्यें सांजल्युं, जे म्हारा गुरुना गुरु कालिकाचार्य आवे ठे. तेवा रें हर्ष पाम्यो थको पासें बेठेला तेहिज कालिकाचार्य ठे, तो पण पोतें अजाण ठे, माटें तेमनेज कहे ठे, के आज म्हारा पितामह आवशे, ते वारें तेणें कह्युं में पण ए वात सांजली ठे. एम करतां केटलिएक वेलायें साधुनो समुदाय आव्यो. सागरचंद्राचार्य पोताना गुरु आव्या जाणी उठी उना थया, तेवारें साधुउ बोल्या तमें बेसो. अमें तो सर्व यति ठैयें, अने आचार्य तो पहेलाज घणा दिवस थया तमारी पासें आव्या ठे. सागरचंद्रा चार्यें कह्युं इहां तो एक मोसो साधु आव्यो ठे, आचार्य तो आव्या नथी. एम वात करे ठे, एटलामांज गुरु पण बाहिर थंमिलें गया हता, ते आ वी पहोता. तेमने साधुसमुदाय जइ पगे लाग्यो. सागरचंद्राचार्यें कह्युं ए कोण ठे ? शिष्य बोल्या ए कालिकाचार्य आपणा गुरु ठे. ते सांजली साग रचंद्राचार्य लज्जा पामीने खमावता हवा. अने घणुं फूरवा लाग्या के हा हा में चिंतामणिरत्न म्हारा हाथमां आव्युं पण जाण्युं नहीं !!! गुरुयें कह्युं ए तहारो वांक नथी,परंतु अज्ञाननो वांक ठे. पठी तेणे अज्ञान दोष खमावी गुरुने द्वादशावर्त्त वंदन करी अशन, पान, खादिम,स्वादिमादिकें भक्ति करी.

हवे गुरु वखाण करे अने सागरचंद्राचार्य पासें वेसे ते सागरचंद्रें प्र थम ज्ञाननो गर्व कीधो ठे, माटे ज्ञानगर्व उतारवानें अर्थें वखाणमां गुरु

दृष्टांत देखाडवा सारुं एक पाथो ते जाजनविशेष गुरुयें नदीनी वालुकायें जराव्यो: वली खाली कराव्यो वली जराव्यो वली खाली कराव्यो एम करतां वालुका सर्व उडी गइ, अने पाथो खाली रही गयो. सागरचंडाचार्यें पूछ्युं के स्वामी! ए श्यो विनोद कस्यो? तेवारें गुरुयें तेना उपर नय देखाड्यो के सांजल! हे वत्स! जेम वालुकायें जरेलो पहेलो संपूर्ण पाथो तेम सुधर्मा स्वामी कने प्रतिपूर्ण श्रुत पामीयें, ते पण वली सातिशय पामीयें. तेनी अपेक्षायें जंबुस्वामीमां कांइक न्यून अल्पातिशय पामीयें. जे कारण माटे बहाणवडीया साधु छे ए प्रकारें श्रुत न्यून थातां थातां यावत् महारायकी तहारा गुरुपासें अति हीनश्रुत, अने तेथकी वली तहारे विषे हीनतर पामीयें ते पण दुःसमकालना अनुजावथकी प्रणष्टातिशय पामीये. तेमाटे हवे श्रुतनो गर्व न करवो ॥ यतः ॥ आसन्नएणं मईत्ते, तरतम जोगेण हुंति मइविजवा ॥ मा वहउ कोवि गवं, अहसे को पिंम्ति इहं ॥ १ ॥ एवुं कहे थके सागरचंडाचार्य श्रुतगर्वेनुं मिछामिडुक्कड देइ गुरुने खमाव्या. पछी गुरु घणा शिष्यने परिवारें परिवस्या तिहांथी विहार करी जिनशासनने प्रजावता पृथ्वीतलने पवित्र करता पइठाणपुरने विषे आव्या.

हवे एकदा सौधर्माधिपति शक्रेंद्र माहाविदेहने विषे सीमंधरस्वामीनां वखाण सांजले छे, तिहां अधिकार विशेषें निगोदना स्वरूपनो विचार चाल्यो ॥ यतः ॥ गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोहउ हवइ गोलो ॥ इक्कंमि निगोयए, अणंत जीवा मुणेयव्वा ॥१॥ अछि अणंता जीवा, जहिं न पत्ता तसाइ परिणामो ॥ उवज्जंति चयंति य, पुणोवि तछेव तछेव ॥ २ ॥ इत्यादि सौधर्मेंड् निगोदना विचार सांजली हर्ष पाम्यो थको प्रजुने पूछतो हवो. हे स्वामी! आजना समयमां जरतक्षेत्रनेविषे एवा निगोदना विचार कहेनार कोइ छे किंवा नथी? तेवारें जगवाने कह्युं हे सौधर्माधिप! जेवो अमो निगोदनो विचार कह्यो, तेवो विचार कहेनार जरतक्षेत्रमां एककालिकाचार्य छे.

ते वात सांजली इंड आश्चर्य पाम्यो थको वृद्धब्राह्मणनुं रूप धारण करे. ललाटें महोटुं टीलुं करी बाहुयुग तथा हृदयमां तिलक करी महोटी धोली, सर्वत्र सरखी जे दाढा, तेणें करी शोजायमान थइने कालिकाचार्य पासें आवी बेठो अने पूछ्युं, कहो स्वामीजी! श्रीजिनशासननेविषे निगोदना विचार केवी रीतना कह्या छे? आचार्यें हर्ष पामीने जेहवा सीमंधर

स्वामीयें विचार कह्या तेवाज कही संभलाव्या. इंइें वली विशेष ज्ञान जोवा माटें पूछ्युं, के स्वामी ! हुं वृद्ध छुं अणसण करवा वांछुं छुं. माटें महारुं आयुष्य शेष केटलुं छे ? एवुं कहीनें हाथ देखाडवा मांड्यो तेवारें आचार्यें श्रुतोपयोग देइ पक्ष, मास, वर्ष, पल्योपमादिकनी वृद्धि करतां बे सागरोपमायु कह्युं, ते सांभली इंइें कह्युं महाराज ! मनुष्यनुं एटलुं आयुष्य क्यांथी होय ? आचार्यें कह्युं मनुष्यनुं आयुष्य एटलुं न होय पण तुं तो इंइ छो. एवो आचार्यनो ज्ञानातिशय देखी हर्षित थयो थको इंइ बोल्यो, स्वामी ! धन्य छे तमारा ज्ञानने जेना श्रुतज्ञाननी सीमंधरस्वामीयें पण साक्षी पूरी, एम कही घणी प्रशंसा करी कहेवा लाग्यो, स्वामी ! मुज सेवकने कांइ कार्य प्रसाद करो. आचार्यें कह्युं जे कार्य करवानुं हतुं ते करी बेठा छैयें, बीजुं निःस्पृहीने वली शुं कार्य कराववुं होय ? एवुं आचार्यें कहे थके यतिउ सर्व गोचरीयें गया हता, तेमने जाण कराववामाटे इंइ महाराज उपाश्रयनुं बारणुं फेरवी गुरुने वांदीने स्वर्गें गया.

केटलिएक वेला पछी यतियो वहोरी आव्या पण उपाश्रयनुं बारणुं देखे नहीं, तेने गुरुयें आवी देखाड्युं अने इंइ आव्या संबंधि सर्ववृत्तांत यतियो आगल कही संभलाव्युं. यति तथा श्रावक लोक सर्व आश्चर्य पाम्यां, श्रीजिनशासननी प्रभावना थइ. एम जिनशासननी घणी प्रभावना करी आयुनो अंत आव्यो जाणी अनशन आदरी आहीं मनुष्योने प्रतिबोधी पछी देवसभामां जइ तिहां देवताने प्रतिबोध देवा गया. ए प्रभावनारूप सम्यक्त्वनुं पांचमुं भूषण तेनेविषे कालिकाचार्यनुं दृष्टांत कह्युं.

इहां एक शंका रहे छे के कालिकाचार्यजी त्रण थया छे, तेमां प्रथम श्रीविक्रमाजितना संवत्नी आगल श्रीपन्नवणाजी सूत्रना कर्त्ता जे कालिकाचार्यजी महाराज थया छे, तेमने इंइमहाराज निगोदना विचार पूछवा आवेला छे, एवुं महारा सांभलवामां आव्युं छे, अने आ कालिकाचार्यजी महाराज, लग भग विक्रम संवत्ना एए३ वर्षे विद्यमान हता, माटे तेमनुं तथा एमनुं अगीयारशें वर्षनुं लगभग आंतरुं छे, तेम छतां जे प्रत उपरथी ए पुस्तकमें छाप्युं छे, ते प्रतमां ए वात लखेली हती तेथी में छापी छे. पछी जेम बीजी प्रतोमां अथवा अन्यग्रंथोमां वृद्धवचन होय ते प्रमाण छे.

इतिश्री तपागछालंकारोपाध्याय श्रीशांतिचंइ गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्न

चंद्रगणि श्रीसम्यक्त रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरस्थादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दश्यष्टम्यादिपर्वसु वांचनार्थं अप्रमत्त तथा पौषध प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यक्तरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्व सप्ततिकाबालावबोधे पंच सम्यक्त्व नूषणस्वरूपनिरूपण नामा सप्तमोऽधिकारः समाप्तः ॥ ७ ॥

हवे समकेतना पांच लक्षणनुं आठमुं अधिकार कहे छे.

॥ लखिज्जइ सम्मत्तं, हियय गयं जेहिं ताइ पंचेवा ॥ उवसम संवेगो तह, निव्वेयणुकंप अछिक्कं ॥ ४२ ॥ अर्थः– (जेहिं के०) जेणें हेतुयें करी (हिययगयं के०) हृदयगत (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्वने (लखिज्जइ के०) लखीयें जाणीयें जे आ अमुक नव्यजीवना हृदयमां उपशमादिक समकेत छे, एवुं जाणीयें जेम धूमें करी पर्वतनेविषे अग्नि जाणीयें, एटले पर्वतनेविषे अग्नि हशे, त्यारेंज धूम देखाय छे, पण अग्निविना धूम होय ज नहीं तेम ए पांच लक्षण जे कहेशे, तेविना सम्यक्त्व पण नहींज होय. जो ए पांच लक्षण होय तोज ते समकेतधारी होय जेम जे छत्र चामरादिक धरावतो होय तेज राजा कहेवाय, तेम ए पण जाणवुं.

(ताइ के०) ते समकेतनां लक्षण (पंचेव के०) पांचज होय, तेनां नाम कहे छेः–एक (उवसम के०) उपशम, बीजुं (संवेगो के०) संवेग (तह के०) तथा त्रीजुं (निव्वेय के०) निर्वेद, चोथुं (अणुकंप के०) अनुकंपा, पांचमुं (अछिक्कं के०) आस्तिक्य ए पांच नाम कह्यां. हवे एनो अर्थ कहीयें छैयें.

प्रथम उपशम ते क्षमा धारण करवी, बीजुं संवेग ते नववैराग्य संसारना सुखनेविषे आसक्तता न होय. त्रीजुं निर्वेद ते मोक्षनी वांछा एटले मनमां एवो विचार रहे, के ते दिवस केवारें आवशे, के जेवारें हुं मोक्ष सुख पामीश! एवी वांछा हरहमेश तेना मनमां रहे. जेम घृतपूर खावानी वांछा रहे. पछी ते तुरत न पामे ते प्रारब्धाधीन छे पण घृतपूर खावानी इच्छा रहे तेपण रूडी जाणवी तेम मोक्ष पण तुरत पामे अथवा घणे काले पामे तो पण मोक्ष पामवानी इच्छा रहे, ते पण रूडी जाणवी. चोथुं अनुकंपा ते दुःखीया जीवनेविषे करुणा रहे. छती सामर्थ्यें दुःखीया जीवनुं दुःख टाले अने न टाली शके तो पण मनमां एवी अभिलाषा रहे जे आ जीवने हुं दुःखथकी मुक्त करुं तो रूडुं. पांचमुं आस्तिक्यता ते श्रीवीतरागें जे

जीवादिक नवतत्त्व कह्यां डे, तेनेविषे शुद्ध सद्दहणा राखे, तेनां मनमां ए वात तो निश्चल थयेली होय के जे श्रीअरिहंतजीयें नाख्युं डे, ते सर्व था अन्यथा होयज नहीं. एवे वैराग्यें बराबरी थाय ॥यतः॥ इयसिलिंगजूआ खलु, डुरकंल कराजिणेहि पसुत्ता॥नावपहाणा सहुणं,उ अन्ने दवलिंगधरा ॥१॥ संपुस्साविहि किरिया, नावेण विणा न हुंति किरियत्ति ॥ एयफलविग लत्तणउ, गवेजववायणाएणं ॥ २ ॥ आणोहेणाणंता, मुक्को गेवेजगेसुउ सरीरा ॥ एयतब्बा संपुस्सा, एस किरियाए उववाउ ॥ ३ ॥ ताणंत सोविप त्ता, एसाणउ दंसणंति सिर्वति ॥ एवं मग्गह्कुत्ता, एसाण बुहाण इछति ॥ ॥ ४ ॥ इयणिय बुद्धि इ इमं, आलोवे कण इब जइयवं॥ अयंत नावसाइं, नवविरहब मई जणेण ॥५॥ इति चतुर्दश शिलांगपंचाशके ॥ ४३ ॥

हवे प्रथम उपशम लक्षणनुं अने बीजुं संवेगनामा लक्षणनुं स्वरूप कहे डे.

॥ अवराहेवि महंते, कोहाणुदउवियाहिं उवसम्मो ॥ संवेगो मुरकं पइ, अहिलासो उ नवविरागो ॥ ४४ ॥ अर्थः– कोइयें (महंते के०) महोटो आपणो अपराध कस्यो, ते अपराधीनो (अवराहेवि के०) अपराध डे तो पण तेनी उपर (कोहाणुदउवियाहिं के०) क्रोधनो अनुदय करवो एटले क्रोध प्रगट न करवो, तथा ते क्रोधनुं फल जे ताडनादिक ते पण न करवुं तेने (उवसम्मो के०) उपशम कहियें जेम कुरगडूना पात्रामांहे, यति थूंक्यो तोपण तेने उपशम आव्यो परंतु लेशमात्र कषायोदय न थयो ॥ यतः॥ कडुअ कसाय तरूणं, पुप्फं च फलं च दोवि विरसाइं ॥ पुप्फेण जाइ कुविउ, फलेण पावं समायरइ ॥ १ ॥ जो पण ब्रद्मस्थने विषे सत्तामां कषाय होय, तो पण ते उदय प्राप्त न करे, तेने क्षमावंत कहीयें॥ यतः॥ किंसक्कावुत्तुजे, सराग धम्मंमि कोइ अकसाउ ॥ जो पुण धरिज धणियं, डुवयणु जालि एस मुणि ॥ १ ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धें उपशमनुं स्वरूप कह्युं हवे कथा कह्या पठी गाथाना उत्तरार्द्धें संवेगनुं स्वरूप कहेशे.

ए उपशम क्षमानी उपर मेतार्य मुनिनुं दृष्टांत कहे डेः– सांकेतपुरने विषे चंडावतंसक राजाने बे स्त्री परमवल्लन डे. प्रथम सुदर्शना अने बीजी प्रियदर्शना, तेमां सुदर्शनाने एक सागरचंड अने बीजो मुनिचंड ए बे पुत्र डे, अने प्रियदर्शनाने पण एक बालचंड अने बीजो गुणचंड एवे नामें बे पुत्र डे, ते मेरुपर्वत जेम बे सूर्य अने बे चंडमा तेणें करी शोने,तेम चंडा

वतंसक राजा पण पुत्रनां बे जोडलायें करी शोभे छे. राजायें सागरचंद्रने युवराज पदवी आपी अने मुनिचंद्रने उज्जयणीनुं राज्य आप्युं.

एकदा हिमंतऋतुनेविषे राजा, राज्यकार्य करी मंत्रीश्वर प्रमुखने विस र्जीने रात्रें वासघरनेविषे आव्यो. घरमां घणो उद्योत करतो दीवो दीठो. तेवारें विचार्युं जे ए दीवो ज्यां सुधी उलवाइ न जाय तिहांसुधी म्हारे काउस्सग्ग पारवो. एम निर्धारी काउस्सग्ग धारी उभो रह्यो. वली प्रथम प्रहरनेविषे शय्यापालिकायें जाण्युं जे रखे अंधकार थाय ? एवी वांछायें ते दीवो सींच्यो. पछी ते दीवायें करी जेम बाह्य अंधकार नाश पामे, तेम शुभध्यानें करी राजानो कर्मरूप अंधकार नाश पाम्यो, एमज बीजे त्री जे अने चोथे पहोरें पण शय्यापालिका दीवो सींचती जाय, पण ते राजा नो अभिग्रह जाणती नथी, हवे जेवारें थोडीसी रात्रि शेष रही, तेवारें शय्यापालिकाने उंघ आवी गइ. दीवो बूजाइगयो जोइने राजायें काउस्स ग्ग पार्यो, काउस्सग्ग पारी जेटले शय्यायें सूवा जाय, तेटले घणो वखत सुधी काउस्सग्गमां रह्या हता, तेने लीधे पग लोहियें भराणा, तेथी जेम छि न्नवृक्ष त्रूटी पडे, तेम राजानुं सुकुमाल शरीर भूमियें पड्युं, तेवारें नम स्कारमंत्र स्मरण करतो शुभध्यानें आयु पूरें मरण पामी राजा स्वर्गे गयो. प्रभातें खबर पडवाथी सर्व परिवार शोक करतो तेनी अंतक्रिया करी.

हवे सागरचंद्र पोतानी उरमान माताने कहेवा लाग्यो, हुं दीक्षा लउं. अने तमारा पुत्रने राज्य आपुं, उरमान मातायें कह्युं राज तमोने छाजे माटे तमें राज्य भोगवो म्हारो पुत्र तमारी चाकरी करशे म्होटा भाइनी चाकरी करवामां कांइ लाज नथी. एम कहे थके मंत्रीश्वरें सागरचंद्रने राज्य आप्युं. हवे स्त्रीनुं चित्त चंचल थाय छे माटे उरमान मातायें विचार्युं जे एने मारी नाखीने म्हारा पुत्रने राज्य अपावुं, एवु चिंतवी ते छल जोयां करे.

एकदा प्रस्तावें सुदर्शना राणीयें सागरचंद्रने अर्थे दासीने हाथें उद्या ननेविषे एक लाडु मोकल्यो, प्रियदर्शनायें ते दासीने पूछ्युं तुं क्यां जा य छे ? दासीयें कह्युं राजाने उपवासना पारणा माटें लाडु लइ जाउं छुं. तेवारें प्रियदर्शनायें दासीना हाथथी लाडुउ लइ लघुलाघवी कलायें तेने विष लिप्त करी तेमज दासीना हाथमां पाछो आप्यो. दासीयें जइ सागर चंद्रराजाने आप्यो, तेणे विचार्युं जे प्रथम न्हाना भाइने खवरावीने पछी

हुं खाउं, तो ठीक. एवुं विमासी तेमांथी अडधो लाडवो लघु भाइने वहेंची आप्यो भाइयें तरतज खाधो. तेवुंज तेना शरीरमां विष व्यापी गयुं. अने भूमियें पड्यो. राजायें औषध प्रमुख करी लघुभाइने जीवाड्यो. पछी दासीने पूछ्युं, कोना हाथथी लाडवो लीधो हतो? तेणें प्रियदर्शनानुं नाम कह्युं. राजायें विचार्युं ए काम एणे कर्युं हशे, पण जो ए लाडुउ में आरोग्यो हत, तो अपध्यानें मरी नरकें जात, माटे हजी सावधान थाउं.

एम विमासी प्रियदर्शनाना पुत्रने राजपाटें बेसाडी पोतें दीक्षा लइ अनुक्रमें गीतार्थ थया. विहार करतां उज्जयणी नगरीयें आव्या. तिहां साधुना संघने पूछ्युं जे तमारुं चारित्र सुखें पले छे? तेवारें यतिना समुदायें कह्युं राज्यपुत्र तथा पुरोहितपुत्र उद्धंछ छे, ते यतियोने संतापे छे, माटें इहां रहेवुं विषम छे. ते वात सांभली पाधरा पुरोहितने घरे आव्या, तिहां आकरे शब्दें धर्मलाभ दीधो, घरना चाकर सर्वे वारवा लाग्या के, अरे साधु! तुं इहां किहां आवी चड्यो? जो राजपुत्र जाणशे, तो तुजने संताप करशे माटे जो तुं तहारुं भलुं चहातो हो, तो इहांथी जतो रहे. एवुं सांभलतां वली पण गाढे शब्दें धर्मलाभ दीधो.

ते धर्मलाभ सांभली राजानो पुत्र तथा पुरोहितनो पुत्र बेहु नीचें आव्या बलात्कारें यतिने हाथें जाली मेडी उपर अगासीयें लइ गया, अने कहेवा लाग्या अरे मुंभ! अमारी आगल तुं नाच. यतियें कह्युं तालविना नाटक थाय नहीं माटे तमें ताल वजावो, ने हुं नाचुं. पछी यतियें नाचवा मांड्युं अने ते बे जण ताल वजाडवा लाग्या, तेने यतियें कह्युं अरे मूर्खों! तालभंग शुं करो छो? अरे कुलने कलंक सरखा एटलो ताल वजाडवो, ते पण तमारा माता पितायें शीखव्यो नथी, के जे तमें नृत्यने विषे तालभंग करो छो? एवी यतिनी वाणी सांभली ते क्रोधांध थइ बोल्या के आ मुंभानी मुंभ फोडो. एवुं कही ते बेहु दुष्ट मली यतिने मारवा उठ्या, यति पण बल करी तेमना अंगोपांगनी संधि उतारी मेडीथकी उतरीने वनमांहे जतो रह्यो. संधियो उतरी जवाथी बेहु जण बुंबारव करवा लाग्यो.

ते वात सांभली राजा तिहां आव्यो जूए तो बेहु आंख उघाडी पड्या छे, राजायें विचार्युं महाराजभाइ सागरचंद्रविना एवो कोइ युद्धनेविषे कुशल नथी. जे संधियो उतारी नाखे! पछी उपासरे आवी यतिउने पूछ्युं,

सर्वयतिउं बोल्या, अमारामां कोइ एवो छेज नहीं जे एवुं काम करे! परं तु एक परोणो यति आव्यो हतो तेणे कीधुं होय तो तेनी अमने खबर नथी. पछी तेनी खबर काढवामाटे वनने विषे गया, त्यां सागरचंद्रसा धुने दीठा, तेमने देखीने राजा लज्जा पाम्यो थको नीचुं मुख करी उनो र ह्यो. सागरचंद्रसाधुयें कह्युं के नलो तें चंद्रावतंसक राजानो वंश दीपाव्यो! जेमाटे तुं तहारा पुत्रने तथा पुरोहितना पुत्रने यतिउने उपद्रव करतां वारी नथी शकतो? माटें धिक्कार छे तहारा राज्य नोगववाने! तेवारें रा जा पगे लागी विनति करवा लाग्यो के, महाराज! ए महारो अपराध क्षमा करो अनें प्रसन्न थाउ. आवीने बेहु जणने समाधि करो. आज पछी यतिने कोइ पण उपद्रव करे नहीं. यतियें कह्युं जो बेहु जण दीक्षा लीये,तो हुं एने साजा करुं. राजायें कह्युं ते कहे छे,के अमें दीक्षा लइशुं पण साजा क रो. पछी साधुयें आवी बेहुने साजा करी दीक्षा दइने पोते अन्यत्र विहार कस्यो.

हवे राजपुत्रें विचार्युं जे काकायें मुजने रुडुं कीधुं जे संसारमां पाप करवा थकी निवारीने दीक्षा दीधी, तेमाटें कर्मक्षय करवा निमित्तें दीक्षा पालतो तपस्या करतो विचरवा लाग्यो अने पुरोहितपुत्र जे दुःख पामतो थको जैनधर्मनी दुगंछा करतो हतो ते पण शुद्ध चारित्र पाली तप कर तो विचरवा लाग्यो. ते बेहु आयु पूर्ण थये देवलोकें देवपणे एकठा जइ उपना. परस्पर प्रेमथी कामनोग विलसता थका परस्पर बोलबंध करता हवा के आपण बेहुमांथी जे प्रथम चवे, तेने बीजो आवी प्रतिबोध करे.

तेमां प्रथम पुरोहितनो जीव देवपणाथी चवीनें दुगंछाकर्मने योगें रा जगृहनगरें चांमालने घेर गर्नमां पुत्रपणे उपनो. हवे तेहिज नगरें धन्ना सार्थवाहनी नार्याने पुत्र जीवता रहेता नथी तेमाटें दुःखणी थइ छे तेने ते चांमालिनी स्त्री सार्थें प्रीति छे, एकदा ते चांमालिणी गर्नवती थकी सार्थवाहनी स्त्रीपासें मलवा आवी छे सार्थवाहनी स्त्री पण गर्नवती छे तेणीयें तेनी आगल पोताना पुत्र मरणनां दुःख कह्यां,तेवारें चामालिणी यें कह्युं जो महारे हमणां पुत्र आवशे, तो ते पुत्र हुं तुजने आपीश. अ नुक्रमें समकालें बेहुने प्रसव थया, चांमालिणीयें पुत्र जन्म्यो अने सार्थ वाहणीयें मुवेली दीकरी प्रसवी. पछी अंतरंग माणसनी सार्थें मूवेली पुत्री मोकलीने चंमालिणीनो पुत्र पोताने घेर कोइ न जाणे, तेम अणाव्यो.

अने ते पुत्रनुं मेतार्य एवुं नाम दीधुं. चांमालिनी स्त्रीयें पोताना धणीनें मृतपुत्री जणेली देखाडी. अनुक्रमें ते मेतार्यपुत्र सर्वकलानो पारंगामी थयो, यौवन पाम्यो पितायें इभ्यकुलनी रुपनी आठकन्या सायें विवाह जोड्यो.

हवे ते पूर्वभवना मित्र देवतायें अवधिज्ञानें जोइ तिहां आवी प्रतिबोध दीधो, पण कर्मने वशें तेने उपदेश लागे नहीं. तेवारें देवतायें विचार्युं जे एने कष्टमां पाडीश, तो ए प्रतिबोध पामशे. अन्यथा सुखीयो थको प्रतिबोध पामशे नहीं. पछी जेवारे मेतार्य आठ कन्यानुं पाणिग्रहण करवा वरघोडे चड्यो छे, चहुटामांहे आव्यो, तेवारें ते देवता पहेला मातंगना शरीरमां अधिष्ठित थयो तेवारें वरघोडाने देखी मातंग पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के हे प्रिये ! आपणी बेटी मुइ न हत तो तेनो आवो विवाह महोत्सव करत,ते सांभली स्त्रीनी जाति तुछ होय माटे तेणें अंतरनी वात कही दीधी, जे हे प्रिये ! तमें शोक न करो. ए पण तमारोज पुत्र छे. तेनुं कारण चांमालें पूछवाथी ते चंमालिणीयें बधी प्रथमथी वात कही संभलावी दीधी, तेवारें चंमालें तेने पोतानो पुत्र जाणी अश्वथकी पग झालीने नीचें पाडी नाख्यो. अने कहेवा लाग्यो अरे पापी! तुं महारो पुत्र थइ उत्तमकुलना लोकने केम अपवित्र करे छे? हवे हुं एक महारा कुलनी कन्या परणावीश. एवुं कही बलात्कारें हाथ झाली वणवानी खाडमां नाखी दीधो. मेतार्य लाज्यो थको दीनवदन करी रह्यो बोली न शक्यो.सार्थवाह अने तेनी स्त्री प्रमुख लोक सर्व उशीयाला थइ पोताने घेर गया. देवतायें बधा लोकोने मनमां संशय पाड्यो अने सर्वें जाण्युं जे ए सत्यवात जणाय छे.

पछी देवता दिव्यस्वरूप धारण करी मेंतार्यने कहेवा लाग्यो के आवी अवस्था पाम्यो तो पण प्रतिबोध केम नथी पामतो ? हजी कांइ वधारे संकटमां पडवा इछे छे? मेतार्यें कह्युं महारा कुलनुं कलंक उतार तो पछी तुं जे कहे, ते धर्म अंगीकार करुं. देवतायें कह्युं कुलनुं कलंक हुं केम टाली शकुं? तें पूर्वले भवें यतिनी निंदा करी पछी चारित्र पाल्युं छे, माटे चांमालनुं कुल पाम्यो. मेतार्यें कह्युं आ आठ कन्या उपरांत श्रेणिकराजानी पुत्री परणावी कलंक टाली बार वर्ष घरवास रहीनें पछी हुं दीक्षा लेउं. एम कर.

ते सांभली देवतायें वली सर्व सज्जननां मन फेरवी नाख्यां, तेथी सर्व चहूटामां आवी पाछी जाननी तैय्यारी करवा लाग्यां, मातंग पाछो जान

मां चाली आव्यो. अने हाथ जोडी कहेवा लाग्यो के में ते वखत मदिरा पीधी हती, तेथी एल फेल बकी गयो, पण ए म्हारो पुत्र नथी. म्हारो अपराध माफ करो. तेवारें सर्वना भर्म टल्या, आठकन्या परण्यो.

हवे श्रेणिकनी कन्या परणाववामाटें देवतायें एक छाग आप्यो, ते प्रतिदिन रत्नमय लींमी करे, तेथी मेतार्यना पितायें रत्नोनो थाल भरीने श्रेणिक आगल भेटणुं मूक्युं. श्रेणिकें कह्युं श्या कामें आव्या छो? तेणें कह्युं ताहरी पुत्री म्हारा पुत्रने परणावी आप. राजायें गलहत्थो दइ बाहिर कढाव्यो. तो पण प्रतिदिवस रत्नोनो थाल भरी राजा आगल भेटणुं ल इ आवे, अने कन्यानी मागणी करे, तेवारें राजा तेने तिरस्कार करी कढावे.

हवे अभयकुमारें विचार्युं एटला रत्नने मातंग क्यांथी लइ आवे छे? एम विमासी अभयकुमारें मातंगने पूछ्युं. मातंगें कह्युं अमारे घेर एक ब करी छे, ते जेटली लींमी करे छे,तेटलां सर्व रत्न थाय छे. तेथी म्हारे घेर रत्न घणां छे, अभयकुमारें कह्युं ए छागली राजाने आप तो हुं तहारी वांछा पूरुं, ते सांभली मातंग ते छागली राजाने घेर लइ आव्यो, तिहां लींमी करे पण रत्न थाय नहीं, तेवारें राजायें छागली पाछी तेने घेर मोकली तो तेमज रत्न थवा लाग्यां. तेवारें अभयकुमारें देवमहिमा जाण्यो पछी मातंगने कह्युं वैभारगिरिसुधी सुखें गाडां, वहेल, रथ, जइ शके तेवो मार्ग करी आप. तेणें देवप्रभावथकी तेज वखतें सुखें रथ, हाथी, घोडा जइ शके एवो सरलमार्ग करी आप्यो. जेथी सर्वलोक सुखसमाधें जइ श्रीवीरने वांदवा जवा लाग्या, वली अभयकुमारें कह्युं राजगृहने फरतो अभंग प्राकार, रूडां कोशीसां सहित करी आप. तेणें ते पण तत्काल करी आप्यो, वली अभयकुमारें कह्युं क्षीरसमुद्रनुं जल आणी आप के जे थकी तहारा पुत्रने स्नान करावी पवित्र करीयें. तेणें कहेतां वारज खीर समुद्रनुं जल आणी आप्युं.

एटलां कार्य कर्या पछी श्रेणिकराजायें अभयकुमारनुं वचन पालवाने अर्थे छत्रतलें क्षीरसमुद्रना पाणीथी मातंगना पुत्रने न्हवरावी पवित्र करी कन्यानुं पाणिग्रहण प्रथमनी आठ कन्याउ साथें कराव्युं. बार वर्ष मेतार्यें देवता पासें मागी लीधां हतां, अने वली बीजां बार वर्ष नव स्त्रीयें मली देवता पासेंथी माग्यां. सर्व मली चोवीश वर्ष पर्यंत नव स्त्रीयो साथें

कामजोग जोगवी पछी नव स्त्रीसहित दीक्षा लइ मेतार्य साधु गुरुनी पासें नव पूर्व जण्या. निर्मल चारित्र पालतां विचरवा लाग्या.

एकदा विहार करतां राजगृही नगरीयें सोनीने घेर आहार लेवाने अर्थें आव्या. श्रेणिकराजायें अजिग्रह कस्यो ठे जे १०० यव सोनाना लइ तेनुं जगदीश्वर आगल स्वस्तिक करुं, तो मुखमां पाणी घालुं. तेमाटें ते सोनीयें १०० यव सोनाना घडी चोकी उपर मूक्या, पोतें कार्य विशेषें उरडामां गयो, एवामां क्रौंचपक्षी ते जक्ष्य वस्तु जाणीने गली गयो. ते साधुयें दीठा. सोनी बाहिर आव्यो, तो यव दीठा नहीं. मेतार्यने पूछ्युं महाराज! यव क्यां गया? तेवारें मेतार्यें विचास्युं जे ए सोनी दुष्ट ठे ते क्रौंचपक्षीने मारी एना पेटमांथी यव काढी लेशे. तेना मरणनुं निमित्त हुं थाइश! माटें म्हारे मौन धारण करवुं,एज श्रेय ठे. एम धारी मौन रह्या. सोनारें चोर जाणी वाधरीयें माथुं वींटयुं खेंची करी बांध्युं. तेना जोरें आंख बेहु निकली पडी उपर चाबकाना प्रहार दीधा, तेवारें ते यति चामडाना पटबंधने संयम राज्य पटबंध करी जाणतो अने चाबकाना प्रहारने अमृतधारा जेवुं मानवा लाग्यो. मेतार्यमुनि उपशमसुधा पान करी क्षपक श्रेणि आरोहि केवलज्ञान पामी, सिद्धशिलानो शृंगार थई अनंत सुख पाम्यो.

हवे सुवर्णकारना गृहनेविषे सुतारे कुहाडे करी काष्ट फाड्युं तेनो खंम उडीने क्रौंचपक्षीने गले लागो. तेना घातनी पीडायें १०० यव निकली पड्या. ते देखी सोनार पश्चात्ताप करवा लाग्यो के, हा हा!! आ में शुं कस्युं!!! जो राजाश्रेणिक जाणशे, तो मुजने वेहाल करी मारी नाखशे. एवुं जाणी जय पामी दीक्षा लइ मेतार्यनांज रजोहरण प्रमुख उपकरण लइ श्रेणिकराजानी पासें जइ धर्मलाज दीधो, पोतानुं सर्व वृत्तांत श्रेणिक आगल कह्युं. श्रेणिकें कह्युं, तें जयथी दीक्षा लीधी, पण हवे निर्जयपणे पालजे. एवुं कही सुवर्णकार रुपिप्रत्यें विदाय कस्यो. ए मेतार्यमुनिनुं चरित्र सांजली कर्णपवित्र करी श्रीसम्यक्त्वनुं उपशमनामे लक्षण आदरवुं ॥

हवे गाथाना उत्तरार्द्ध करीसंवेगनामा वीजुं लक्षण कहे ठेः—तिहां (मोरकपई के०) मोक्षप्रत्यें जे (अहिलासो के०) अजिलाप एटले वांठा ते (संवेगो के०) संवेग कहीयें. (तु के०) वली (जव के०) संसार तेथकी जे (विरागो के०) वैराग्य ते पण संवेग कहीयें, जेमाटें जे मोक्षाजिलाषी

होय, तेनें नववैराग्य अवश्य होयज. अने जेने नववैराग्य होय, तेने मोक्षानिलाष अवश्य होय. एम ए बेहुने परस्पर संबंध छे ॥ यतः ॥ संवेगेणं नंते जीवे किं जणयति, संवेगेणं अणुत्तरं धम्मं सवं जणयति, अणुत्तराए धम्मसध्धाए संवेगहव्वमागछंति अणंताणुबंधि कोह माण माया लोहे पावंति नवं कम्मं न बंधंति॥ तप्पवश्यं वणं मिछत्तविसोधिं काऊण दंसणग राह एहनवति दंसण किंसुध्धिए अछेगइए तेणेव नवग्गहणेणं सिझंति सोहियणं विसुध्धाइ तंच पुणा नवग्गहणंणाइक्कमतित्ति ॥ ४४ ॥

हवे ए संवेगने विषे दंमदंतमुनिनो दृष्टांत कहे छे. हस्तिशीर्ष नामा नगरें दमदंत नामें राजा हतो, ते एकदा जरासंध प्रतिवासुदेवनी सेवा निमित्तें राजगृही नगरीयें गयो छे. ते अवसर पामी पांच पांमवो पोतानुं सबल सैन्य लइने दंमदंतराजानो देश नांज्यो, लूंट्यो, ते वात सांनली दंमदंत राजायें जरासंधनुं साहाय्य पामी सवल कटक लइ आवी हस्तिनागपुर पर घेरो नाख्यो. दूत मोकली पांमवोने कहेवराव्युं के, हुं जरासंधनी सेवायें गया पछी तमें छल करीने महारो देश लूंट्यो, पण हवे तमें हस्तिनागपुरथी बाहेर निकलीने महारी साहामा आवी युध्ध करो तो हुं जाणुं, जे तमें खरा बलवंत छो. पांमवो नयज्रांत थया थका बाहेर आवे नहीं त्यारें दंमदंत राजायें कहेवराव्युं के जो सिंह होता तो साहमा आवी युध्ध करता. पण हुं एटला दिवस तमारुं गाम वींटी वेठो बुं, तेम छतां तमें लडवा आव्या नहीं, ते उपरथी जाणुं बुं जे तमें शीयालीया छो. एवुं कहेवरावी दमदंत पोताने नगरें पाछो आव्यो.

एकदा श्रीधर्मघोषसूरिनी देशनारूप सुधा पान करी संसारविषय मदिरापानथकी विरक्त थयो थको परमसंवेग पामी दंमदंतराजायें दीक्षा लीधी, अनुक्रमें गीतार्थ थइ एकलो विहार करतो हस्तिनागपुरनी पोले मेरुनी परें अचल थइ काउस्सग्गें रह्यो. एवामां अश्वक्रीडायें निकलेला युधिष्ठिर प्रमुख पांचे पांमवो ते मुनिने देखता हवा, तेवारें अश्वथकी उतरी पगे नालस्थल लगाडी वांदी गुणस्तुति करी जे धन्य तमारो अवतार जे तमो आवुं दीक्षारूप राज्य पाम्या! एवुं कही आगल क्रीडा करवा गया. पाछलथी डुर्योधन पण घणा परिवारसहित निकल्यो, तेणे पण ते मुनिने दीठा, तेवारें क्रोधें नर्यो बोल्यो के, अरे आ पापीने मारो. एणें घ

णा दिवससुधी आपणने गढरोहमां राख्या हता, हवे कपट करी इहां बे
गो छे. एवुं कही सामो पथरो नाख्यो ते साधुने लाग्यो तो पण साधु
समभावथी चूक्या नहीं. पछी यथा राजा तथा प्रजा ए न्यायें ते डुर्योधन
गया पछी तेना माणसो पण ते साधु उपर पथरा फेंकता गया, ते पाषा
ण खंमे करी यति दटाइ गयो, अचेष्ट थइ पड्यो देखायो नहीं.

एवामां पांच पांमव क्रीडा करी पाछा वल्या, तेणें यतिने दीठो नहीं. लोकोने पूछ्युं अरे आहीं यति हता, ते किहां गया? लोकें डुर्योधननुं वृत्तांत कह्युं. ते सांभली युधिष्ठिरें विचार्युं जे हा हा ए पापी नरकगामीयें आ शुं अकार्य कर्युं छे! यतः ॥ गाणंव्वय वयरं, मयं हीणं तरंगवा ॥ जे णजहियगंतवं, चिह्नावितारी सोहीइं ॥ १ ॥ एवुं कही पाषाण सर्व परा करावी यतिनुं वैयावच्च करी वांदी स्वस्थ करी अपराध खमावीने घेर आव्या.

हवे ते महामुनि वेदनायें पीडित थको अपकारी जे कौरव अने उपकारी जे पांमव ते बेहुनी उपर समभाव चिंतवतो थको क्षपकश्रेणि आरोही केवलज्ञान पामी शिवपुरनेविषे अनंतसुखराशि भोगवतो थयो ॥ यतः ॥ परिज्झंतो डुज्झो, हणेण तह पंमवेण थुवंतो ॥ समसत्तुमित्त भावो, सो दमदंतो मुणी जयउ ॥ १ ॥ इति ऋषिमंमलसूत्रे ॥

प्रभातें राजा युधिष्ठिरनी सेवा करवामाटे डुर्योधन आव्यो, तेने युधिष्ठिरें कह्युं अरे कुलांगार! तुं हमणां यतिने मारवा लागो पण जे दिवसें आपणुं नगर वींटी पड्यो हतो ते दिवसें तुं क्यां गयो हतो? शामाटे युद्ध करवा सामो न थयो? ते ऋषि हमणां जेवारें क्षमा आदरी हथीयार छोडीने बेठो, तेवारें तुं मारवा दोड्यो? इत्यादिक घणां वचन कही शिखामण आपी. पण ते डुर्योधनने नरकें जावुं छे माटे कांइ जवाब न आपतां नीचुं मुख करीने रह्यो. दमदंत राजऋषि कृतकृत्य थयो. ए संवेग लक्षणनेविषे दमदंतराजानी कथा कही, माटे समतारूप सुधापान करी संवेग आदरो॥४४॥

हवे त्रीजुं लक्षण निर्वेद छे तथा चोथुं लक्षण अनुकंपा छे अने पांचमुं लक्षण आस्तिक्य छे, ए त्रणेनुं स्वरूप अनुक्रमें कहे छेः—

॥ निव्वेउ भागिछा, तुरियं संसार चारयगिहस्स ॥ डुहिए दयाणुकंपा, अछिक्क नहि जिणवयणे ॥ ४५ ॥ अर्थः—हवे (निव्वेउ के०) निर्वेद ते शुं कहीयें? तो के (तुरियं के०) उतावलो (संसार के०) संसाररूपीयो

(चारयगिहस्स के०) चारक घर एटले बंधिखानानुं घर तेहने (चागि छा के०) त्यागवानी इछा तेने निर्वेद एवे नामें समकेतनुं लक्षण कहीयें; एटले संसाररूप बंदिखानाना घरने उतावले त्यागवानी जे इछा करवी ते निर्वेद जाणवो संसाररूप बंदीखानाना घरथी निर्वेद एटले निकलवुं.

केटलाएक आचार्य संवेगनो अर्थ नववैराग्य कहे छे, अने मोक्षनी वांछा, तेहने निर्वेद कहे छे ए अर्थ पण घटे छे ॥ यतः ॥ निव्वेएणं नंते जीवे किंजणयइ निव्वेएणं जीवे दिव्वमाणुस्स तिरिछएसु कामनोगेसु विरज्ज माणे निव्वेयं हव्वमागछत्ति सव्वविसएसु विरज्जत्ति सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंनपरिग्गह परिव्वायं करेंति आरंन परिग्गह परिव्वायं करेमाणे संसार मग्गं वुछिदंति सिद्धिमग्गं पडिवन्नेय नवति ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ कह्यो, उत्तरार्द्धनो अर्थ कथा कह्या पछी आवशे.

हवे ए निर्वेद लक्षण उपर हरिवाहनराजानी कथा कहीयें छैयें:—एहि ज नरतक्षेत्रें नोगवती नगरीयें इंइदत्तराजा राज्य करे छे, तेनी मणिप्रन्ना नामें पट्टराणी छे तेने हरिवाहन नामें पुत्र छे. हवे तेहज नगरमां जमंदर नामें सूतार वसे छे, तेनो नरवाहन नामें पुत्र छे, तथा वसुसार नामें श्रेष्ठी वसे छे. तेने धनंजयनामे पुत्र छे. हवे राजपुत्र हरिवाहन तथा सुतार पुत्र नरवाहन अने श्रेष्ठीपुत्र धनंजय, ए त्रणेने मांहोमांहे मित्राचारी थइ, प्रतिदिन एकठा मली रमतक्रीडादिक करे.

एकदा राजायें पोताना पुत्रने घणीज आकरी शिखामण आपी जे हे पुत्र ! तुं मित्रोनी साथें रमत कस्या करे छे ते मूकीने आयुधाभ्यास कर. नहीं कां महारो देश मूकीने चाल्यो जा. एवी राजानी वात सांनली त्रणे मित्रें मली आपसमां विचार कस्यो, के जो राजायें देश मूकवा कह्युं, तो हवें आपणने परदेशेंज जावुं, अने आपणा नाग्यनी परीक्षा करवी. एवुं विचारी त्रणे जण पोताना पिता प्रमुखने पूछ्या विनाज देशांतरें चालता थया. मार्गे जातां महोटा अरण्यनें विषे पड्या. एवामां एक गजेंइ पोतानो शुंढादंम उंचो करीनें हरिवाहन कुमरनी साहामो दोड्यो. एटले शेठनो पुत्र अने सूतारनो पुत्र ए बेहु जण नाशि गया. पछी गजशिक्षामां विचक्षण एवा कुमरें पोतानी कलायें हाथीने वश कीधो. पोतें ते हाथीना उपर चडी वेगे अने पोताना बे मित्रोने शोधवा चाल्यो. घणोय शोध कस्यो, पण मित्र मल्या नहीं.

आगल जातां एक महोटुं सरोवर दीठुं, तिहां कुमर हाथीथकी उतरीने श्रम टालवाने अर्थे सरोवरमांहे स्नान करवा पेठो, जलक्रीडा करी खेद टाली बाहेर निकल्यो. तिहां मित्रोना विरहथी दुःखी थयो थको सरोवर नी समीपें एक महोटुं आराम छे, तेमांहे क्षेमंकर नामें यक्षनुं एक महोटुं चैत्य दीठुं तेमांहे पेठो. रात्रियें एक खूणामां जइ सूइ रह्यो.

एवामां तिहां रात्रियें अप्सराउयें आवी नाटक मांमयुं ते नाटक देखी कुमर चमत्कार पाम्यो. पछी ते अप्सराउ नाटक करी परिश्रांत थइ थकी पोतानां सखरां वस्त्र मूकी बीजां वस्त्र पहेरी पुष्करिणीमां जलक्रीडा करवा गइ. पाछलथी कुमरें उठी तेमनां वस्त्र लइ लीधां. केटलिएक वार पछी ते जलक्रीडा करी देहरे आवीने जूए, तो कपाट दीधां दीठां. तेवारें विचार्युं जे कोइक धूतारो छे ते आपणां वस्त्र लइ कपाट देइ मांहे बेसी रह्यो छे. पछी ते बाहिर रही थकीज हरिवाहनने घणुं घणुं बीहीवराववा लागी, पण मृगलीनो बीहीवराव्यो सिंह कांइ बीये नहीं. तेम हरिवाहन पण तेना थी बीहीनो नहीं. तेवारें अप्सराउयें जाण्युं जे मांहे कोइ साहसिकपुरुष छे माटे एने मन गमतुं करीयें तो वस्त्र पामीयें, अन्यथा वस्त्र मलशे नहीं. तेथी सौम्यवचन कहीने वस्त्र मागवा लागी. कुमरें कह्युं, तमारा वस्त्रने वायरो लइ गयो छे माटे जाउ वायरापासेंथी वस्त्र मागी ल्यो.

ते सांभली अप्सराउ बोलीयो तहारो सत्त्वगुण जोइ अमे संतुष्ट थये लीउ छैयें माटे वर माग. एवुं सांभली कुमरें कपाट उघाडी वस्त्र आप्यां. सहु पोतपोतानां वस्त्र लइ कुमरने कहेती हवी के तुं राजपुत्र छो, एवो अमें निश्चय कर्यो माटे आ खड्गरत्न आपीयें छैयें ते ले. एनाथी युद्धमां तहारो जय थशे तथा आ कंचुकरत्न आपीये छैयें ते तुं तहारी स्त्रीने आपजे. तथा अमारा वचनथकी शीघ्र राज पामीश. एवी आशीष देइ दे वांगनाउ पोतपोताने स्थानकें गइ.

प्रभातें खड्गरत्न लइने कुमर चाल्यो, आगल जातां एक नगरी दीठी. तेमां घरहाट प्रमुख सर्व विविध वस्तुयें भरेलां छे, पण कोइ मनुष्यने दीठुं नहीं. तेवारें आश्चर्य पामतो राजाना महेलमां गयो. तेनी त्रीजी भूमियें चड्यो तिहां एक मनोहर रूपवंती कन्या तेणे दीठी, कन्यायें पण कुमरने देखी उठी उभी थइ बेसवानुं आसन मूक्युं, तेना उपर कुमर बेठो. पछी कन्या

प्रत्यें पूबवा लाग्यो के आ कयुं नगर बे? एनी शी हकीगत बे? अने तुं पण एकाकी इहां केम रही बो? ते मने समजाव.

तेवारें कन्या हाथ जोडी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के हे महापुरुष! सांजल. एनुं वृत्तांत कहुं बुं. सावस्तिनगरीना विजय नामें राजा तेनी अनंगलेखा नामें हुं पुत्री बुं,एकदा हुं गवाक्षें बेठी हती,तेवारें जयंतनामा विद्याधरें मुजने दीठी, ते कामविन्हल थइ मुजने तिहांथी अपहरीने इहां पुर स्थापना करी आणी मूकी बे. अने मुजने कहे बे के तुं महारीसाथें पाणिग्रहण कर. हुं आ नगरनुं राज्य पालतो थको तहारी साथें नोगनोगवतो रहीश. ते विद्याधर विवाहनी सामग्री करवा गयो बे. आज काल आवी बलात्कारें महारुं पाणिग्रहण करशे. पण पूर्वें मुजने महारा पिताने घेर ज्ञानवंत मुनिराजें कह्युं बे के प्रियदत्तराजानो पुत्र हरिवाहन नामें बे, ते ताहारो पति थाशे. ते मुनिनुं वचन खोटुं थाय बे,तेनुं पण मुजने महोटुं डुःख लागे बे, के एवा महानुनावनां वचन केम व्यर्थ थाय बे?

तेवारें हसी करीने कुमर कहे बे के हे सुभ्रु! एवा विद्याधरने मूकीने हरिवाहनना पाणिग्रहणने शुं वांबे बे? हंसली हंसने मूकी बगलाने केम वांबे? माटे हरिवाहनने मूकी विद्याधरसाथें पाणिग्रहण कर, हवे कुमरनुं रूप, तेज, वचनचातुर्य, देखी कुमरीयें विचार्युं जे रखे ने ए हरिवाहनज महारा नाग्ययोग्यें खेंचाइ आव्यो होय,तो केम? ए पण एवां वचन कही महारी परीक्षा करतो हशे शुं? एम चिंतवी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामिन्! तमें जूउ महारो चित्तोल्लास तेवोज थाय बे, माटे जाणुं बुं जे हरिवाहन ते तमेंज बो, तो हवे महारी ऊपर कृपा करी आपणो वंशादिक प्रगट करो. जेम मुजने हर्ष ऊपजे एवी वार्त्ता करे बे, एवामां तो शरणाइ नफेरी प्रमुख तूर्यनाद थयो, ते सांजली कुमरीयें कह्युं, हे स्वामी! शीघ्र नासो, शीघ्र नासो. जेमाटें जयंतिविद्याधर आव्यो ते महाडुष्ट बे तमोने मारी नाखशे. माटे तमे हवें लगारमात्र विलंब म करो.

कुमरे कह्युं हे सुभ्रु! तुं चिंता म कर. महारुं बल जो जे कहेवुं बे? एवामां तो विद्याधर आव्यो, ते कुमरने देखी कोपाकुल थइ बोल्यो अरे महारा अंतःपुरमांहे कोण आव्यो बे? कुमर बोल्यो, श्रीइंद्दत्तराजपुत्र हरिवाहन आ कुमरीनुं पाणिग्रहण करवा आव्यो बे. जो तुजने युद्ध करवानी इहा

होय तो आव म्हारी साहामो. जो के म्हारा हाथ कहेवा छे ? एवुं सांजल तांज कुमरनी साथें युद्ध करवा माटें ते विद्याधर खड्ग लइ आव्यो, कुमरें ख ड्गतें करी तेनी तरवारना बे कटका करी नाख्या. उंचो उछली मुष्टिना प्रहारें माथानो मुकुट भांगी चोटली जाली हेठो नाखी तेना हृदय उपर चडी बेठो. तेवारें विद्याधरें कह्युं, हे महापुरुष ! मूक. मूक. बले करीनेज में तहारुं कुल जाणी लीधुं. माटे सुखें तुं ए कन्यानुं पाणिग्रहण कर. अने आ नगरीनुं राज्य पण तुंज भोगव. मुजने तहारो मित्रकरी लेखव. कुमरे तेने मू क्यो तेवारें ते कुमरने पगें लागी घणो भक्तिभाव देखाडी वैताढ्यें गयो.

हवे कुमरें अनंगलेखानुं पाणिग्रहण करी ते अप्सरायें आपेलुं कंचुक पहेराव्युं तिहां तेनी साथें विषयसुख भोगवतो ते नगरीनुं राज्य पाले छे. सुराज्यें करी गामगामनां लोक आवी तिहां वस्यां. नगरी एवी संकीर्ण थ इ के मांहे तिल पडवा जेटली पण जगा मले नहीं. एवुं नगर वस्युं, तेनुं विद्याधर नगर एवुं नाम दीधुं. हवे ते नगरनी पासें एक रेवानदी छे, तिहां हरिवाहन राजा अनंगलेखानी साथें जलक्रीडा करवा गयो छे. अनंगलेखा पण कंचुकादिक नवां वस्त्रने नदीना तट उपर राखी जलक्रीडा करवा पा णीमां पेठी छे, घणी वार जलक्रीडा करी पाछी आवी भींजेलां वस्त्र उतारी नवां वस्त्र पहेरवा लागी एवामां एक मत्स्य आवीने ते कंचुकरत्ननी मां हे पद्मराग नामें रत्न छे, तेने विषे मांसनी बुद्धि आणी गलामांहे उतारी गयो. तेनी पाछल घणा सुभटो दोड्या पण मत्स्य पाणीमांहे अदृश्य थइगयो.

ते राणी कंचुकने दुःखें दुःख करती रहे राजा पण दुःख करवा लाग्यो हवे ते मत्स्य तिहांथी दूरदेशें बेनानदीने तटें महापुरी नगरी छे तिहां न रकुंजरराजा छे ते जलक्रीडा करी मंत्री प्रमुख परिवारसहित क्रीडा पर्वत उपर बेठ छे, एवामां एक माछीयें आवी तेमनी आगल कंचुकरत्न मूक्युं अने राजाने कह्युं आज महोटो मत्स्य आव्यो हतो, तेना उदरमांहेथी ए कंचुकरत्न नीकल्युं छे, राजायें विचार्युं जेनुं ए कंचुक छे, ते स्त्रीरत्ननुं रूप पण कहेवुं हशे ? एम राजा कंचुकने देखी कामें पीडित थयो, अने माछीने प्रसाद दान आपी विसर्जन कर्यो.

हवे राजा कामज्वर पीडित थयो थको मंत्रीप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे मंत्री ! तुं जो मुजने जीवाडवो वांछतो होय, तो आ कंचुकनी पहेरनार स्त्रीने

पेदा कर. मंत्रीयें ते स्त्रीने मेळववा माटे घणा उपाय कस्या, पण शोध पाम्यो नहीं. तेवारें सातदिवस उपवास करी राज्यनी अधिष्टायिका देवी आराधी. ते देवी प्रगट थइ कहेवा लागी के, सर्वथा ए वात तमें करशो नहीं केम के ए हरिवाहन राजानी अनंगलेखा नामें स्त्री छे, हजी सर्प्पनी मणि लेवानी हिम्मत चाले, पण ते स्त्रीनुं शीलरत्न लेवाय नहीं. तेने मंत्रीयें कह्युं एक वार तें स्त्री मने आणी आप. पछी राजा छे, ने ते स्त्री छे. एवुं प्रधाननुं बोलवुं सांभलीने देवीविद्याधर पुरें आवी तिहां अरिहंतनी प्रतिमानी पूजानेविषे प्रवर्त्तमान थयेली अनंगलेखाने दीठी, तेवीज तिहां थी अपहरीने नरकुंजर राजाना घरनेविषे लावी मूकी पछी मंत्रीनी विदाय गीरी मागीनें देवी पोताने स्थानकें गइ.

नरकुंजर राजा आवी कहेवा लाग्यो के, हे प्रिये! आ तहारुं कंचुक देखी कामें पीडित थइने में देवांगनानें हाथे तुजने इहां अणावी छे, माटे हवे तमें महारी साथें कामभोग करवाने प्रवर्त्तो, यौवन सफल करो.

अनंगलेखायें कह्युं जो मुजने हाथ लगाडीश तो तहारुं मरण छे माटे साडा त्रण हाथ दूर रहीने माहारी साथें वात कर. राजायें विचार्युं एने एना धणीनो ताजो विरह थयेलो छे माटें ए एम कहे छे, पण विलंबे सिद्ध थाशे. एवुं विचारी राजा पाछो वली गयो. अने ते स्त्री अश्रुपातें भूमिका सींचती हरिवाहननुं रूप आलेखी तेनुं मुखडुं जोती रहे छे.

हवे पूर्वला हरिवाहनना बे मित्र एक तो सुतारनो पुत्र, अने बीजो शेठनो पुत्र, ए बे जण हस्तीना भयथकी हरिवाहनने एकला मूकी नाशि गया हता, ते दूर देशांतर भमतां भमतां विंध्याचलनी अटवीमां गया, तिहां तेणे वंशजालमांहे नीचुं मुख अने ऊंचा पग करी धूम्रपान करतो हाथमां जपमाला लइ जाप करतो थको एक पुरुष दीठो, ते पुरुष पण मनुष्यनो संचार जाणी मंत्रजाप पूर्ण थये थके बाहिर आवी बेहुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे महापुरुषो! तमें कोण छो? इहां केम आव्या छो? एवुं सांभलीते बेहु जण बोल्या, हे वीर पुरुष! कुलादिक पूछवानुं शुं काम छे! अमे दैवयोगें भमता भमता इहां निकली आव्या छैयें, तहारे जे काम होय ते कहे. तेवारें विद्याधरें कह्युं हुं त्रिलोकी विद्या साधुं छुं. तेनी में पूर्वसेवा तो करी छे, हवे उत्तरसेवाने विषे तमें उत्तरसाधक थाउ, के जेम महारे वि

द्या सिद्ध थाय. एवुं सांभळी ते बेहु जण उत्तरसाधक थया. अने विद्याधरें उत्तरसाधक पामीने होमपूर्वक विद्या साधवा मांमी, ते थोडे दिवसें विद्यासिद्धि पाम्यो. तेवारें विद्याधरें कह्युं तमो बेजण थकी म्हारी विद्या सिद्ध थइ हवे तमोने शुं आपीने हुं कृतकृत्य थाउं? एम कही एक रूप परावर्त्तनी अने बीजी अंजनसिद्धि, त्रीजी वैरीसैन्यविमोहिनी, चोथी विमानकारिणी, ए चार विद्याउ आपीने विद्याधर गयो. ते गगनवल्लभ नगरने विषे जइ वैरीने जीती पोतानुं राज्य कबजे करी राज्य सुखे भोगववा लाग्यो.

हवे ते शेठपुत्र तथा सूतार पुत्र बेहु जण भमता भमता बेना नदीने तटें आव्या, तिहां लोकोना मुखथी अनंगलेखानी वात सांभळी ते स्त्रीने जोवा वांछता अंजने करी अदृश्य थइ अनंगलेखानी पासें आव्या तिहां जूवे छे, तो ते हरिवाहननुं रूप आलेखी तेनुंज ध्यान करती रहेली दीठी. पछी ते बेहु जणें तेनी परीक्षा करवा निमित्तें हरिवाहननी छबीनो पट्ट अपहरि लीधो, ते पट्ट गयो जाणी वळी घणुं दुःख करवा लागी तेने बेहु जणे कह्युं तहारुं दुःख शुं छे? अमनें कहे तो अमें टालीयें. तेवारें तेणें हरिवाहननुं प्रथमथी मांमीने पाणिग्रहणपर्यंत सर्व वृत्तांत लखी देखाडयुं. ते वांचीने बेहु जणे पोताना मित्रनी स्त्री जाणी आवी पगें लाग्या, अने कहेता हवा के तुं कशी वातनी चिंता करीश मां. अमें तहारा पतिना मित्र छैयें. एवुं कहीने पछी बेहु जण राजानी सभायें गया, राजायें तेमने आसन आपी बेसाड्या, अने पूछवा लाग्यो के तमें कया देशथकी आव्या छो? वळी ज्ञान विज्ञान कांइ जाणता हो, तो मनें कहो. एवुं राजानुं वचन सांभळी ते बोल्या अमो भोगवती नगरीथकी आव्या छैयें. मोहनी अने वशीकरणी प्रमुख घणी विद्याउ जाणीयें छैयें. तमारे कोइ काम होय ते कहो, तो ते अमें करी आपीयें.

राजायें तेमने एकांतें तेडीने कह्युं के आ अनंगलेखा स्त्री मने वश करी आपो. तेवारें तेणे एक चूर्ण काढीने राजाने आप्युं अने कह्युं के, ए चूर्णनुं तिलक करी ए स्त्रीपासें जाजो, तो तमारे वश थाशे. एवुं तेमनुं कथन सत्य मानी राजा तिलक करी स्त्री पासें गयो, तिहां हरिवाहनना मित्रोयें पूर्वें कही मूकेलुं हतुं ते संकेतप्रमाणें अनंगलेखा उभी थइ राजानी साहामी चाली आवी, तेने राजायें भोगनी प्रार्थना करी तेवारें अनंगलेखा

यें कह्युं म्हारे श्रीअष्टापदजीनी यात्रा करवानो अभिग्रह छे. ते पूर्ण था य तो पछी तमें जेम कहेशो, तेम करीश. राजा पोतानो अर्थ सिद्ध थयो जाणीने पहेला बेहु जण पासें आवी ते वात कही. तेवारें ते बेहु जणे कह्युं तमें कांइ चिंता म करो. अमें एनें अष्टापदनी यात्रा तरत करावी तमारी पासें लइ आवशुं, कारण अमारी पासें आकाशगामिनी विद्या छे तेथी ब त्रीश कोश उंचे चडतां अने अष्टापदें जतां आवतां कांइ पण विलंब ला गशे नहीं. एवुं कही विमाननी रचना करी, तेमां अनंगलेखाने बेसाडी विमानने आकाशमार्गें चडाव्युं. पछी आकाशें रह्यांथकां कहेवा लाग्या के, अमो बे जण हरिवाहनना मित्र छैयें अनंगलेखाने लइ जाइयें छैयें. जो तमारामां शक्ति होय, तो अमारी सामा आवो.

ते सांभली राजा पोताना सुभटोने कहेतो हवो के, अरे सुभटो ! तमें एनें पकडो. ए स्त्री लइ जाय छे पण आकाशगामिनी विद्या कोइ पासें न होवाथी सर्व सुभट हारी पाछा वली आव्या, राजा निराश थइ बेठो, ते वारें पहेला बेहु जण वली विमानमांहेथी उतरी अंजनविद्यायें करी राजा ना घरथकी बे कन्याउनें अपहरी विमानमां बेसाडी लइ चाल्या, ते वि द्याधरनगरने उद्यानें आव्या, तिहां सर्व लोकोने शोकातुर दीठां. तेवारें लोकोने पूछवा लाग्या के, केम आहीं सर्व लोक शोकमय देखाय छे तेने कोइकें कह्युं के अनंगलेखा राणीना विरहथी अमारो राजा सशोक छे, ते माटें राजाना शोकने लीधे लोक पण सशोक छे.

हवे श्रेष्ठीपुत्र सिद्धपुरुषनुं रूप लइने राजसभायें गयो, तेने राजायें पूछ्युं तहारामां शी शी विद्याउ छे ? तेणें कह्युं म्हारी पासें तो घणी वि द्याउ छे, तमारे जे अर्थ होय ते कहो. राजायें कह्युं म्हारी स्त्री अनंग लेखा आणी आपो. तेवारें ते सिद्धपुरुष पूर्वें सूतारनी साथें संकेत कस्या प्रमाणें पछेडी उढी ध्यानमां बेठो के तरतज विमाने बेठीथकी अनंग लेखा तिहां आवी. तेने देखीने राजा घणुंज हर्ष पाम्यो. विमानथकी अ नंगलेखा बे कन्याउनी साथें उतरी राजाने पगे लागी राजा चमत्कार पाम्यो थको सिद्धपुरुषने कहेतो हवो के हवे मनें म्हारी स्त्री तो मली पण म्हारा बे मित्रोनी साथें वियोग थयेलो छे, तेनो मेलाप करी आपो, तो हुं आपनो म्होटो उपकार मानुं. एवो राजानो पोतानी उपर प्रेम देखी

ते बेहु मित्र पोतानुं मूलरूप प्रगट करी राजाने पगें लाग्या. राजायें आनं दयुक्त थकां विचार्युं जे विधाता अनुकूल होय तेवारें सर्व अनुकूल थाय.

पछी राजायें बेहु मित्रो पासें पोतानी सर्व वार्त्ता मूलथी मांमी कही, तेमणें पण पोतानी सर्व हकीगत कही. त्रणे मित्र परस्पर प्रेमथी रह्या बे कन्या आणी ते बेहु मित्रने परणावी, पछी पोतानी शक्तियें घणां राज जीती मित्रने बीजा देशोनां राज्य आपी पोतें विद्याधरपुरनुं राज्य पालतो विचरे छे.

हवे इंद्रदत्तराजा वृद्ध थयो, तेवारें हरिवाहनकुमरने पोतानी पासें ते डावी रूडुं मुहूर्त्त जोवरावी राज्यपाटें थाप्यो. पोतें दीक्षा लइ घणुं तप तपी कर्मक्षय करी शाश्वतुं मुक्तिनुं राज्य लीधुं.

पितायें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें हरिवाहन, बे मित्र अनें अनंगलेखा ए चारे जणे सम्यक्त्वसहित श्रावकधर्म आदर्यो. पछी हरिवाहन राजा तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अष्टाह्निक, अनयदान पट्टह, जिनप्रासादबिंबप्रतिष्ठादिक अनेक उत्तम कार्य करी श्रीजिनशासननो प्रभाविक थयो.

एक सहस्र वर्ष वीत्या केडें उद्याननेविषे केवली भगवान् पधार्या, उद्यानपालें वधामणी आपी तेने हर्षदान देइ राजा हरिवाहन पोताना बे मित्र तथा अनंगलेखा साथें वांदवा गयो. धर्मदेशना सांभली संसारथकी निर्वेद पाम्यो थको पूछवा लाग्यो के कहो स्वामी ! म्हारुं आयुष्य केटलुं छे ? केवलीयें कह्युं तहारुं आयुष्य नवप्रहर मान छे, ते सांभली राजा धूजवा लाग्यो के हा!!! हवे नवप्रहर मांहे हुं म्हारुं शुं आत्मसाधन करीश ! केवलीयें कह्युं चिंता म कर. हजी कांइ विणश्युं नथी तुं तरत दीक्षा ले ॥ यतः ॥ अंतोमुहूत्तमित्तं, विहिणाविहिया करेइ पव्वज्जा ॥ पुरकाणं पज्जत्तं, चिरकाल कयाइं किं भणिमो ॥ १ ॥ कंचणमणि सोवाणं, थंभसहस्सुसियं सुवसु तलं ॥ जोकारिज्ज जिणहरं, तउवि तव संजमो अहिउ ॥ २ ॥ केवलीयें एवुं कह्या नंतर पोताना विमलवाहन पुत्रने राज्य आपी राजायें मित्र द्वय तथा अनंगलेखानी साथें दीक्षा लीधी संसारथकी निर्वेद पाम्यो भावना भावतो हूउ, के धन्य ए गुरु के जेणें हुं संसार समुद्रमांहे बूडताने वाहिर काढयो तथा अनित्यादिक बार भावना भावतो रह्यो एवामां अकस्मात् मस्तकें शूल उपनुं घणी वेदना थइ तो पण चिकित्सानी वांछा कीधी नहीं. मनमां विचार्युं जे रूडुं थयुं के पाछला भवनां करेलां कर्म उद

य आव्यां, तेने नोगवीने रण उतारुं बुं एम वेदना अहियासतो शुन ध्या नें काल करी सर्वार्थसिद्धविमाने तेंत्रीश सागरोपमने आउखे देवता थयो. तिहांथी चवी महाविदेहमांहे उत्तमकुल पामी दीक्षा लइ मोक्षें जाशे. त था बे मित्र अने अनंगलेखा पण माहाविदेहमां मोक्षें जाशे. ए त्रीजा निर्वेद लक्षणनी उपर हरिवाहनराजानी कथा कही ॥ ३ ॥

हवे समकेतनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा बे, ते कहीयें बैयें, (डुहिए दया णुकंपा के०) डुःखीया प्राणीने विषे जे दया करवी, तेने अनुकंपा कही यें ते अनुकंपा बे प्रकारें बे. एक ड्व्यथकी अने बीजी नावथकी तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें ड्व्यादिक आपीने आगलानुं डुःख टालवुं ते ड्व्यथकी अनुकंपा जाणवी अने नावथकी तो आर्द्रहृदय थाय जे अरे आ डुःखी जीव बे, हुं एनुं डुःख नांजी शकतो नथी? एवुं मनमांहे नावे ते नावथकी दया कहीयें ॥ यतः ॥ दट्ठूणपाणि निवहं, नीमे नवसायरम्मि डुरकत्तं ॥ अविसेसोअणुकंपा, डुहावि सामब्बउ कुणइ ॥ १ ॥

हवे ए अनुकंपाने विषे जयराजानी कथा कहीयें बैयें. हस्तिनागपुरने विषे जयनामें राजा बे, ते एकदा सन्ना पूरी बेगे बे एवामां अकस्मात् लो कोने डोडतां दीगं, तेवारें राजायें वेत्रीने पूब्युं ए लोक धाय बे, ते शुं बे ? वेत्रें समाचार लइ आवी राजाने कह्युं स्वामी पूर्वें तमारा पितायें प्र नातें एक स्वप्न दीतुं हतुं. ते स्वप्नो विचार करी रूडेवानें स्वप्नमां जेहवा विचार कह्या हता. तेवां चित्रामण चितरावीने तेने लुगडाथी ढांकी रा ख्यां हतां, ते प्रतिदिन पूजाता हता हवे आज उन्मत्तशतामंद, गोविंद, ध रणीधर, प्रमुख कुमरें लुगडुं उघाडी ते चित्र जोयुं तेथी ते त्रणे कुमर तत्काल अचेत थयाथका पड्या बे. तेने जोवा माटें लोक डोडे बे.

ते सांनलीने तेनो प्रतिकार करवा माटे राजा तिहां गयो, ते पण मू र्त्ति देखतांज मूर्बा खाइ पडी गयो, तिहां मंत्री प्रमुख परिवारें मली शी तलोपचारें करी राजाने सावधान कस्यो. कुमरो पण सावधान थया, प बी राजा स्वस्थ थइ दंतधावन करी सन्नामां आवी बेगो. मंत्रीश्वरें राजा प्रत्यें पूब्युं, स्वामी! मूर्त्ति देखीने त्रण कुमर तथा तमोने मूर्बा आवी तेनुं कारण शुं हशे ? राजायें प्रधानने कह्युं सांनल. एनुं घणुं वृत्तांत बे ते कहुं बुं

विजयवर्द्धन नगरें शार्दूल नामें राजा तेनी निंदा नामें नार्या, तेनो चं

द नामें पुत्र हतो. तेने पुरोहितनो पुत्र विष्णु अनें मंत्रीनो पुत्र सुबुद्धि तथा श्रेष्ठीनो पुत्र शंख, ए त्रणे जणनी सार्थे मित्राचारी हती प्रतिदिन एकठा रमे, एकठा जमे अने एकठा भमे. अन्यदा अश्वक्रीडायें करी परिश्रांत थको राजानो कुमर महोटा आंबाना वृक्षनी हेठे वीसामो लीये छे. एवामां एक कापालिक आव्यो तेने कुमरें नमस्कार कीधो. कापालिकें आशीर्वाद दीधो जे तुं नागलोकनी स्त्रीनो नाथ थाजे. तेवारें कह्युं हुं मनुष्य छुं, ते नागलोकनी स्त्रीनो स्वामी शी रीतें थाउं ? योगीयें कह्युं गुरुना प्रसादथकी शुं न थाय ? सर्व चिंतव्या पदार्थ थाय. जे पृथ्वीमां भ्रमण करे, ते सर्व कांइ पामे, पण जे कूपना देडका सरखां होय, ते कांइ पण न पामे ? एवां योगीनां वचन सांभली मंत्रिपुत्रनी सार्थे कुमर घेर आव्यो.

रात्रें कुमरें आवी योगीने पूछ्युं के स्वामी ! नागलोकनी स्त्री शी रीतें पामीयें. योगी कहे सांभल. वंध्याचल नामा पर्वतें सुवेल नामा यक्षनुं प्रासाद छे. तेनी डाबी भीतें गुफा छे तिहां नागस्त्री घणी छे. तेनो भोक्ता तुं थाइश. एवो हुं तहारुं सौभाग्य देखुं छुं. एवुं सांभली कुमर कामवश थयो थको पिताने पूछ्याविना त्रण मित्रसहित योगीनी सार्थे जवा लाग्यो तेने त्रण मित्रें कह्युं के, हे कुमर ! तुनें योगीनो विश्वास करवो योग्य नथी ॥ यतः ॥ न नारिषु न मूर्खेषु, न विरोधिषु शत्रुषु ॥ नचाविज्ञातशीलेषु, विश्वसंति विपश्चिताः ॥ १ ॥ भवितव्यताने योगें ते त्रण मित्रोनां वचन अवगणीने कुमार ते योगीसार्थे चाल्यो. अनुक्रमें विंध्याचलें गया, तिहां योगीयें चार बोकडा वेचाता लीधा. ते चार जणने एकेको बोकडो आप्यो. अने कह्युं के सर्व जण एकेको बोकडो मारीने यक्षनी पूजा करो. पछी आंख मीचीने पगे लागो, के जेम साध्य सिद्ध थाय.

तिहां त्रण जणा तो योगीनुं वचन मानी बोकडाने मारी आंख मीची यक्षनें पगें लाग्या अने श्रेष्ठीपुत्रें तो पापथकी भयपामी छागनो वध न कर्यो. योगीयें तरवार काढी ते त्रणेनो शिरछेद कीधो. अनें श्रेष्ठीपुत्र शंखने पण योगी मारवा लाग्यो, तेवारें यक्षें कह्युं हे पापिन् ! एने मारीश नहीं, कारण के एणे तहारुं कथन कीधुं नथी एणे बोकडो मार्यो नथी. एतो जीवदयावान् पुरुष छे, तेमाटे एने मारीश नहीं. एवुं कहेथके योगी यक्षने मनाववा गयो, एटलामां श्रेष्ठीपुत्र शंख ते बोकडाने लइ

ने नाशी गयो. बोकडाने जीवतो सुगमें मूकीने विचार्युं जे ए त्रणे मित्रें पाप कीधुं तो ते पापनुं फल पाम्या. पण हवे हुं म्हारा स्वजनने मुख शुं देखाडुं ? माटें जिहां कोइ मुजने उलखे नहीं एवी जूमियें जतो रहुं. एम चिंतवी आगल चाल्यो, तेने जाग्ययोगें मार्गमां सुबुद्धि नामें श्रावक मल्यो, तेनी आगल पोताना फुःखनी वात कही, त्यारें श्रावकें कह्युं धन्य बे तुजने के तें जीवदया पाली पोतानो आत्मा उगार्यो. हवे तुं धर्म मूकी श मां. एम मारगमां बेहुने मित्राइ थइ. श्रावकें तेने चौद पूर्वनुं सारजूत एवुं पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण आप्युं, अने कह्युं जे एनुं स्मरण करवाथी तुजने इहलोकें तथा परलोकें रूडुं थाशे.

एम ते एकठा पंथें चाल्या जाय बे एवामां मार्गें जीमनामें पल्लीपतिनी धाड आवी, तेणें सथवारो लूंट्यो, घणां लोको नासी गयां. तथा मराणां अने ए शंख प्रमुख दश बंदीवानो पकडाया. तेने पल्लिपतिपासें लइ गया, पल्लिपतियें कह्युं जाउ. एमने देवीने देहरे राखो. जेवारें अगीयारमो नर मलशे. तेवारें देवीने बलि आपीशुं. एम कही राख्या. हवे शंख पोताना मुखथी नवकारमंत्रनुं स्मरण मूके नहीं गणयाज करे. एम करतां अगीयारमो पुरुष पण कोइ स्थलथकी आण्यो तेवारें अष्टमीने दिवसें चामुंमानी आगल अग्यार जणने बली देवामाटें उना कीधा. तेमने अंघोल करावी तरवार तैयार करे बे. एवामां पोकार करतो पल्लिपतिनो माणस आव्यो के, स्वामी ! धाउ, धाउ. तमारो पुत्र जूतग्रस्त थयो बे, मरणदशानी ढूकडो आव्यो बे, ते सांजलतां वार पल्लिपति तिहां गयो. तेवारें शंख नवकारमंत्रनो महिमा जाणी चोकीदारने कहेवा लाग्यो के अमो अगीयार जणनें तमें जीवता मूको. तो ए तमारा पुत्रने हुं जीवाडुं. पल्लिपतियें कह्युं एने तेडी लावो. शीपाइउ आवी शंखनें तेडी गया. हवे शंखें तिहां मंमलरचना करी पलेडी उढी कमलबंधन नमस्कार जाप करवा लाग्यो, तेना महिमाथकी जूतडुं नासी गयुं. कुमर उठी बेठो थयो. पल्लिपतियें तेने खोलामां लीधो, नवो जन्ममहोत्सव कीधो. शंखना कहेवाथी दश बंदीवानोने जमाडी वस्त्र आपीने पल्लिपतियें बोडी मूक्या. अने निरपराधी जीवोनो हवेथी वध करवो नहीं. एवो पडह वजडाव्यो. ते दिवसथी पल्लिपति ते शंखने गुरुनी पेरें आराधवा लाग्यो.

एकदा प्रस्तावें शंखना मात पितायें पोताना पुत्रनी खबर पामीने तिहां तेडुं मोकल्युं पल्लिपतियें घणा आमंबरसहित तेने घेर पहोंचतो कीधो. ते आवी पोतानां मातपिताने मल्यो, त्रणे मित्रनुं स्वरूप कह्युं. राजा प्रमुख सर्व लोक दुःख करवा लाग्यां. तिहां शंख गुरु समीपें शुद्ध धर्म पामी शुनकार्योंमां ड्व्यव्यय करतो घणी श्रीजिनशासननी उन्नति करतो जीवदयामां तत्पर थयो. एम घणुं पुण्यकर्मोपार्जन करी मरीने देवलोकें देवता थयो.

ते देवनुं जेवारें शेष स्वल्पायु रह्युं, तेवारें गुरुने पूब्युं नगवंत! हुं बोधबीज केम पामीश? गुरुयें कह्युं हस्तिनागपुरें शूरराजानो पुत्र जय एवे नामें तुं थाइश. तिहां चित्र जोतां जोतां त्रण मित्रनी साथें तुं प्रतिबोध पामीश. ते वात गुरुनी पासेंथी सांजलीने ते देवता शूरराजा पासें आव्यो, अने राजाने कह्युं के तमारी नींतने विषे माहारा पूर्व वृत्तांत आलेखवो, तेणे महारा स्वप्न पाम्याथकी महारुं तथा महारा त्रण मित्रनुं पूर्ववृत्तांत चितराव्युं तेने लूगडांथी ढांकी मूक्युं, अने हुं शंखनो जीव देवलोकथी चवी आहीं शूरराजानो पुत्र थयो बुं. तथा ए त्रणराजपुत्र महारा पूर्व नवना मित्र ते पण ए चित्र देखी मोह पामी. जातिस्मरण पाम्या अने मुजने पण जातिस्मरण उपनुं तेणें करी में महारुं समस्त पूर्वनव वृत्तांत कह्युं. तिहां समस्त लोक राजानो तथा त्रण मित्रनो पूर्वनव सांनली दयाने विषे तत्पर थया. सर्व लोको नवकारमंत्र तथा जीवदयानी आस्ता आणी धर्म करवाने प्रवर्त्त्या. पढी ते जयराज त्रण मित्रनी साथें गुरुनी समीपें चारित्ररत्न पामी आराधक थइ अनंतसुखनुं नाजन थयो. ए समकेतना चोथा अनुकंपा लक्षणने विषे जयराजानुं चरित्र कह्युं.

हवे पांचमुं आस्तिक्य नामें समकेतनुं लक्षण कहे छे.

(अब्बिक्कमब्बिजिणवयणे के०) श्रीजिनेश्वरना वचन उपर जे आस्था राखे, तेने आस्तिक्यता कहीयें ॥ यतः ॥ मन्नइ तमेव सवंमि, सकज्जिणेहि पसुत्तं ॥ सुहपरिणामो सम्मं, कंखाइवि मुत्तिया रहिउ ॥ १ ॥ ४५ ॥

ए आस्तिक्यने विषे पद्मशेखरनी कथा कहीयें ढैयें. आ नरतक्षेत्रने विषे पृथ्वीपुर नगरें पद्मशेखर नामें राजा राज्य करे छे. तेणें श्रीविनयंधरसूरिनी पासेंथी जीवादिक नवपदार्थनो विचार लेइ वज्रलेखनी पेरें श्रीजिनवचन ऊपर आस्ता राखी छे. ते राजा प्रतिदिन सनायें वेठो थको गुरु

ना गुणवर्णन करे. तेथी घणा जीवने धर्मउपर, गुरु ऊपर तथा श्रीजिन वचननी उपर आस्ता आवे. परंतु एक श्रेष्ठीनो पुत्र विजय नामें ठे ते राजा प्रत्यें कहे के जे ए साधुनी गुणस्तुति करे ठे ते सर्व पलाल फूलनी परे ठे, एवा ते वली जगतमां कोण ठे के जे पांचे इंद्रियना विषय जीती शके? ते माटे ए सर्व यतिउनी कपटाइ ठे माहारो तो ए अनिप्राय ठे के डुःखीया जीवने मारीयें तो ते मास्या थका पूर्वकर्मवेदीने नवांतरें सुगति पामे.

हवे ते विजयने प्रतिबोधवा माटे राजायें पोताना यक्ष एवे नामें अंतरंग पुरुषने कह्युं के ए विजयनी सायें तुं मित्राइ करी तहारा उपर विश्वास उपजाव. पठी तेणे तेम करानें जेम ए विजय न जाणे, तेवी रीतें विजयना रत्नकरंमकमांहे राजानुं आनरण मूक्युं. राजायें पडह वजडाव्यो जे महारुं आनरण गयुं ठे माटे जेना घरमांहेथी निकलशे तेने हुं चोरनो दंम आपीश. तेमाटें जे कोइ जाणो तो मने आवी कहेजो, जे कहीने पाढुं आपशे तेनी उपर दंम नथी. हवे जेवारें कोइयें पण आवीने राजाने न कह्युं तेवारें राजायें पोताना सुनटो मोकलावीने घेर घेर शोध करी ते शोध करतां विजयने घरे करंमीया मांहेथी आनरण निकल्युं, तेवारें राजायें विजयने तेडावी पूठ्युं तें केम महारुं आनरण चोर्युं? विजयें कह्युं हुं जाणतो पण नथी. राजायें कह्युं जे चोर होय, ते क्यारे पण पोताना मुखें माने नहीं. एम कही राजायें तेने मारवानो हुकुम आप्यो. एवो अकस्मात् चोरीनुं कलंक चडे ठतें मरवाना नयथी कंपतो एवो जे विजय ते पोताना यक्षनामें मित्रने कहेवा लाग्यो के तुं महारो मित्र ठो, माटें हमणां मने गमे ते उपाय करीने जीवतो रखाव. दंम परठीने पण जीवतो रहुं तेम कर.

तेवारें यक्षमित्रें राजानी आगल जइ कह्युं के स्वामी! विजय कहे ठे, के हुं तमारा आनरणनी वात जाणतो पण नथी. महारें माथे फोकट कलंक चड्युं ठे, माटें महारी पासेंथी दंम लइने मने मुक्त करो. ते सांनली राजायें कह्युं अरे यक्ष! ए विजय कहे ठे, के डुःखीया जीवने मारी नाखीयें तो मस्या थकां ते जीव पोतानुं कर्म नोगवी सुगति पामशे, तो ए पण रूडुं ठे, जे ए विजयपण मस्यो थको सुगति पामशे. जेमाटे विजयना कहेवा प्रमाणे जीव तो मरवा माटे वांठेज ठे, तो हवे विजयने मरवा माटें शी हरकत ठे? एमां एने शा वास्ते आटलुं बधुं डुःख लागे ठे? अने प्रपं

च करवो पडे बे? दंम आपवो पडे बे? ए वात यक्षें आवी विजयनें कही तेवारें विजयें कह्युं आवी रीतें मरण पामीने मने सुगति जोश्ती नथी माटे जेम तेम करी मने जीवित दान अपाव. ते सांजली वली पण यक्षें आवीने राजाने वीनव्यो के स्वामी विजय तो कहे बे, के मुऊने मरण थकी जीववुं घणुं वल्लन्न बे, तेमाटे एने मूकी द्यो. त्यारें राजायें कह्युं महारा घरथकी एक तेलनुं नरेखुं नाजन लश् आखा नगरमां नमवुं अनें तेमांथी एक तेलनो बिंडुमात्र पण नीचें पडवा न देतां तेवुंनुं तेवुं नाजनमहारी आगल पाबुं आवी मूके, तो हुं जीवतो मूकीश. तेणे ते वात कबूल करी.

पढी राजायें समस्त नगरलोकने कहेवराव्युं के चहूटें चहूटे शेरीयें शेरीयें वीणा, वेणु, मृदंग वजाडो. अने वेश्याउने कहेवराव्युं के तमें शोल शणगार सजी रस्तामां आवी नृत्य करो, मधुरस्वरें गीतगान करो. एवा राजाना हुकुम प्रमाणें सर्व कोश् कार्य करवामां प्रवर्त्तन थयां. एवामां विजयपण कंठसुधी नरेलुं तेलनुं नाजन लेश् रस्तामां निकल्यो, घणुये रसीयो हतो, पण मरणना नयथी मार्गें जातां वीणा वेणुनादें करी वेश्यानें नाचवामां एणे काननो तथा नेत्रनो चालो कीधो नहीं, एनुं एक तेल मांहेज ध्यान रह्युं. जे रखे ने तेलनुं एक बिंडु पडी जाय? जो बिंडु पडशे तो राजा मारी नाखशे. तेमाटें घणेज सावधानपणे तेलना नाजनने नगरने विषे नमाडी जेहवुं नरेखुं हतुं तेवुंने तेवुंज राजानी आगल आवी मूक्युं अने राजानें प्रणाम कर्यो. तेवारें राजा हसीने बोल्यो के अरे विजय! तुं कहेतो हतो जे इंड्रियो चपल बे, तेने कोश् पण जीती शके नहीं, अने यतिउ कपट करे बे, तो हवे तें आजे इंड्रियोने केम जीती लीधीयो? तेवारें विजयें कह्युं सर्वथकी मरणनुं नय महोटुं बे, में पण मरणना नयथी इंड्रियोनें जीती. एम सर्व जीवोने जीवितव्य वल्लन्न बे, मरणने कोश् वांबतो नथी.

हवे राजा पोतें दृष्टांत आपीने विजयने समजावे बे, राजा कहे बे के जेम तें मरणना नयें करी इंड्रियोवश कीधीयो, मरण थकी तुं बीहीनो, तेम ए यतिउ पण अनंता नवनेविषे मरण करवुं, तेना नयथी इंड्रिय जय करे बे. तेमाटें तुं कां नास्तिक थाय बे? एम दृष्टांत आपी राजायें प्रतिबोध्यो थको विजयश्रेष्ठियें आस्तिकपणुं आणीने श्रावकपणुं पडिवज्युं. ए रीतें पद्मशेखर राजायें घणा जीवोने युक्तिपूर्वक प्रतिबोध आपी श्रीजिनवचन नप

र आस्ता अणावी. एम श्रीजिनधर्मे आराधि श्रीजिनवचन उपर आस्ता धरतो अंतें अनशन लइ सुरजिवनने विषे जइ देववृंदने प्रतिबोध देतो हुवो. ए आस्तिक्यनामा समकेतलक्षणने विषे पद्मशेखर राजानुं दृष्टांत कह्युं.

इति महोपाध्याय श्रीचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणितत्शिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित श्रीसमक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिका बालावबोधे सम्यक्त्वलक्षणस्वरूपनिरूपण नामाऽष्टमोधिकारः संपूर्णः ॥ ८ ॥

हवे छ प्रकारनी जयणा राखवी, तेनुं नवमुं अधिकार कहे छेः—

॥ परतित्थियाणं तद्दे, वयाण तग्गहिय चेइयाणं च ॥ जं छव्विहवावारं, न कुणइ सा छव्विहा जयणा ॥ ४६ ॥ अर्थः—(परतित्थि के०) परतीर्थी ते अन्यतीर्थी मिथ्यादर्शनी जे तापस पारिव्राजकादिक तेने तथा (तद्देवयाण के०) तेना देव जे हरि, हर, ब्रह्मादिक तेहने तथा (तग्गहिय के०) तेणें ग्रहण कस्या एवा जे श्रीअरिहंतना (चेइयाणंच के०) चैत्य प्रतिमा तेने (जं के०) जे (छव्विहवावारं के०) षड्विध व्यापार एटले छ प्रकारनो व्यवहार (नकुणइ के०) न करे (सा के०) ते (छव्विहाजयणा के०) छ प्रकारनी जयणा एटले यत्ना कहीयें, एम सिद्धांतना जाण कहे छे.

हवे ते छ प्रकारनां नाम कहे छेः—

॥ वंदण नमंसणं वा, दाणाणुप्पयाणमेसि वज्जेइ ॥ आलावं संलावं, पुव्वमणालित्तगो न करेइ ॥ ४७ ॥ अर्थः—एक (वंदण के०) वंदन, बीजुं (नमंसणं के०) नमस्कार, (वा के०) वली त्रीजुं (दाण के०) दान अने चोथुं (अणुप्पयाण के०) अनुप्रदान (एसि के०) ए चार वानां परतीर्थि प्रमुखने विषे (वज्जेइ के०) वर्जे, तथा पांचमो (आलावं के०) आलाप अने छट्ठो (संलावं के०) संलाप एवा छ प्रकार, ते पूर्वोक्त परतीर्थि प्रमुखने विषे न करवा. तिहां जे (पुव्वमणालित्तगो के०) प्रथम अनालापक एटले पहेलुं बोलाव्याविनानुं तेनी साथें बोलवुं,ते (ण करेइ के०) करे नहीं, एटले अणबोलाव्यो बोले ते आलाप कहीयें, जे कारण माटे बोलाव्या पछी तो श्रीगौतमस्वामीयें पण नगवती प्रमुख सूत्रनेविषे प्रश्नना उत्तर आप्या छे, तथा मड्डुआ प्रमुख श्रावकें पण उत्तर आप्या छे, एम नगवती प्रमुख सूत्रोनेविषे देखीयें छैयें ॥ यतः ॥ तेणं काले

णं तेणं समएणं समणजगवं महावीरे जावगुणसीलए चेइए समोसढे जा परिसागडीगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जगवउ महावीरस्स जिठे अंतेवासी इंदजुइणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं एवं जहा वित्तीयसए नियंठुदेसए जावजिस्कायरियाए अडमाणे अहापजत्तं जत्त पाणं पडिग्गहइ इम पडिग्गाहि रायगिहाउ जावअतुरियम चवलजाव रीयं सोहेमाणेरा तेसिं अन्नउत्थियाणं अडुरसामंतेणं विंति वयति त तेण ते अन्नउत्थिया जयवं गोयमं अडुरसामंतेणं वित्तिवयमाणं पासंती पासेत्ता अन्नमन्न सदावंतीता एवं वयासी ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया, अम्हं इमाकहा अविउप्पकडा अयंचणं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं वित्ति वयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा अयंच णं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं वित्तिवयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अ म्मं गोयमं एयमठं पुछित्तए तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमठं पडिसुण तित्ता जेणेव जगवं गोयमे तेणेव उवागछंति उवागछित्ता ते जयवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा तव धम्मायरीए धम्मे वादेसए णायपुत्ते पंचछि काए पन्नवेति तं जहा धमछिकायं जाव आगासछिकायं तं चेव जावरुविकायं अरुविकायं पन्नवेत्ति स कहमेयं गोयमा एवं तएणं से जगवं गोयमे ते अ न्नउछिए एवं वयासी नो खलु देवाणुप्पिया अछिजावं नछित्ति वंदामो ता वयंसारवलु तुप्पे देवाणुप्पिया एयमठं सयमेव पच्चुरकेवह तिकट्टु न अन्नउ छिए एवं वयासित्ति ॥ श्रीजगवतीसूत्रे ॥ ४७ ॥

हवे एज गाथानो अर्थ, ग्रंथकार विवरीने देखाडे छेः—

॥ वंदणयं करजोडण, सिरनामण पूयणं च इह नेयं ॥ वायाइ नमुक्कारो, णमंसणं मण पसाउ य ॥ ४८ ॥ अर्थः—प्रथम हाथनुं जोडवुं, अंजलि करवे करी तेने (वंदणयं के०) वंदनक कहीयें, तथा (सिरनामण के०) शिरनुं नमाववुं तथा पुष्पादिकें करी (पूयणंच के०) पूजवुं (इह के०) ए श्रीजिनशासनने विषे एटलां वानां वंदनमांहे अवतरे, एम (नेयं के०) जाणवुं. एटलां वानां परतीर्थीने न करवां ॥यतः॥ परतित्थियाण पणमण, उप्नावण थुणण जत्तिरागं च ॥ सक्कारं सम्माणं, दाणं विणयं च वज्जइयं ॥ १ ॥ ए प्रथम यत्ना कहीयें. (हवे बीजी यत्ना कहे छे. (वायाइ के०) वचनें करी (नमुक्कारो के०) नमस्कारनुं करवुं, तथा गुणकीर्त्तन ते सूर्या

दिक देवनुं स्तवन करवुं तथा (मणपसाउय के०) मनप्रसाद ते मिथ्याद्दष्टि देव तथा तेमना तापसादिक गुरुउ जे बे, तेमने दीठे थके हर्षनुं पामवुं आदरनुं देवुं ते नमंसणरूप बीजी यत्ना कहीयें ॥ ४७ ॥

हवे एनेविषे संग्रामशूरनो दृष्टांत कहीये बैयें:— एहज नरतक्षेत्रें पद्मिनीखंम नामें नगरी बे. तिहां शूरसेनराजा राज्य करे बे. तेनो संग्रामशूरनामा कुमार बे, तेने बालपणाथी आहेडानुं व्यसन बे, माटें ते आहेडो करवाने अर्थें परदेशथी शिकारी कुतरा मगावे ने प्रतिदिन आहेडो करे. एकदा तेना पितायें तेने समजाव्युं के हे पुत्र ! आहेडानो उद्यम तुं करे बें, ते नरकनुं कारण बे, जे माटे निरपराधी जीवोनो वध करवो, तुऊने योग्य नथी. ए आहेडानुं व्यसन मूकी दे अने जो नहीज मूके, तो महारा नगरथी बाहिर जतो रहे, जेम हुं ताहारुं मोहोढुं देखुं नहीं ? तेम कर. एवां पितानां वचन थकी डुःख पाम्यो थको ते डुष्ट गामथकी निकली नगरनी बाहिर घर बांधीने रह्यो. तिहां नित्यप्रत्यें प्रनातें उठी सार्थे कुतरा लेइने घणा जीवोनो संहार करी आवे.

एकदा ते सघला कुतराने मूकीने कोइग्रामांतरें गयो बे, एवामां ते कुतरानां स्थानकनी समीपें एक श्रुतकेवली, अवधिज्ञानना धणी एवा श्रीशीलंधराचार्य आवी उतर्या, तेमणें ते कुतराने प्रतिबोधवाने अर्थें मधुरस्वरें सिद्धांतनी गाथा नणवा मांमी, ते गाथा आ प्रमाणें ॥ यतः ॥ खिणमित्तसुरक कऊे, जीवा निहणंति जे महा पावा ॥ हरिचंदण वणसंमं, दहंति ते बार कऊंमि ॥ १ ॥ जीवस्स दया रहिउ, जीवो अन्नं करेइ जो धम्मं ॥ आरुहइ बिन्नकन्नं, सो खरमेरावणं मुत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक ते आचार्यनी वाणी सांनलतां कुतराउने जीवदयानी वासना आवी. अने चिंतववा लाग्या के अमो जीववध करी नरकें जाशुं, घणां डुःख पामशुं, तेमाटे हवे आपणने आ जन्मपर्यंत जीववध न करवो. एवुं व्रत लइ बेगा.

हवे संग्रामशूर कुमार ग्रामांतरथी आव्या नंतर आहेडे चड्यो, तिहां कूतराने बूटा मूक्या. पण ते कोइ जीवनी साहामा डोडे नहीं, घणुं ए तु तु करे तथा कालीया कालीया, मोतीया मोतीया, धोलीया, धोलीया, बाजीया बाजीया, एवां एवां नाम लइ पोकारे, तो पण कुतरा तो जाणे पथ्थरानाज घडेला होय नहिं? तेवा स्तब्ध थइ रह्या.

एवुं जोइ कुतराना रखवालने ते इष्ट पूबतो हवो के ए कुतरा हरणा दिकनी साहामा धसता नथी तेनुं शुं कारण बे ? तेणे कह्युं बीजुं तो कांइ कारण हुं जाणतो नथी पण ए कुतरा जिहां रहे बे, तेनी साहामा यति उ आवी रह्या बे, ते जीवदयानां शास्त्र नणता हता, न जाणीयें ते सांन लीने एमनां चित्तपण जीवदयावासित थयां होय ?

एवी वात तेना मुखथी सांनलीने चिंतववा लाग्यो जे हाहा यतियोनी वाणीथी आ पशुउ पण प्रतिबोध पाम्या, अने हुं अनागीउ अधम थको रात्रिदिवस निरपराधी जीवोने मारतो फरुं बुं, तो नरक विना बीजे क्यां हिपण जवाने महारुं स्थानक देखातुं नथी. एवुं विचारी कुतराने बोडी मूक्या अने कह्युं के तमें तमारा गुरु जेथकी प्रतिबोध पाम्या तेनी पासें जाउ.

एवुं सांनलतांज ते सर्व कूतरा गुरुनी पासें आव्या अने हाथ जोडी विनीत श्रावकनी पेरें आगल आवी बेगा. कुमर पण कौतुकें वाह्यो गुरु समीपें आव्यो अने गुरुने नमस्कार करी कहेतो हवो, स्वामी ! मुजने प ण धर्म कहो, जेम हुं पण प्रतिबोध पामुं. तेवारें गुरु बोल्या, हे कुमर ! देव श्रीअरिहंत अढार दोषें रहित अने गुरु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, श्री अरिहंतनी आज्ञा प्रतिपालक, तथा धर्म, श्रीअरिहंत नाषित विनयमूल जीवदयासार, ए रत्नत्रयनुं तुं आराधन कर ॥ यतः ॥ जे अईया जेय पडि पुन्ना जेय आगमिस्सा अरिहंता नगवंता ते सवे एवमाइरकंति एवं नासं ति एवं परूवयंति सवे पाणा सवे नूआ सवे जीवा सवे सत्ता ण हिंसीय वा ण उवदवेयवा ण परियावेयवत्ति अपिच किंताए पढियाए पलालनूयाए पय कोडीए जंइतियंननायं परस्स पीडा ण कायवा. एवो उपदेश सांनलीने कुमरें शुद्ध निरतिचार समकेत उच्चर्युं. तथा निरपराधी जीवोना वध कर वानुं पच्चरकाण कर्युं. पढी आत्माने कृतार्थ मानतो थको पोताने घेर आ व्यो. अने कूतरा पण तिर्यंचने उचित धर्म पालता थका सुखें रहे बे. पो तानुं कुमर आहेडो मूकीने श्रावक थयो, एवुं जाणी शूरसेनराजायें हर्ष पामता तेहने युवराज पदवी आपी. एम पिता पुत्र बेहु सुखें राज्य पाले बे.

एकदा कुमरनो मित्र, सागर नामे हतो, ते समुइमांहे यानपात्र लइ पर देशें जइ घणी लक्ष्मी उपार्जीने घेर आव्यो, ते नेटणुं लइ कुमरने मलवा आ व्यो, तेणे नेटणुं मूकी प्रणाम करी समुइ संबंधी वार्त्ता कही. कुमरें पूछ्युं,

कांइ आश्चर्य दीठुं होय, तो कहो. तेवारें ते कहेवा लाग्यो के सांभलो, आश्चर्यनी वात कहुं छुं. में नरसमुद्रमांहे कल्पवृक्षनी शाखायें हिंचतो पल्यंक ते ऊपरें अद्भुत रूप लावण्यनें धरनारी चोशठ कलामां कुशल, शोल शृंगारें भूषित एवी कन्या बेठेली दीठी. ते देखीने जेटले हुं म्हारा प्रवहणनें तेनी पासें लइ गयो, तेटले कल्पवृक्ष पल्यंक अने कन्या सर्व अदृश्य थइ गयां. हुं चमत्कार पाम्यो. एटले म्हारा सेवकें कह्युं इहां कोइ देवांगना वसे छे, ते आपणने देखी पाणीमां अदृश्य थइ गइ. ए आश्चर्य में दीठुं.

हवे कुमर, कामें पीडित थयो थको विचारे छे जे ए स्त्रीने हुं केम पामुं? पछी हरखी पितानो आदेश मागी सागरमित्रने साथें लइ प्रवहणे बेसी समुद्रमार्गें चाल्यो. जातां जातां ते स्थानक पाम्या, तिहां तेमज कल्पवृक्षनी शाखायें बांधेला पल्यंकनी ऊपर कुमरीने रमती दीठी, पछी जेवारें तेनी साहामुं वहाण चलावे, तेवारें सर्व इंद्रधनुष्यनी पेरें अदृश्य थइ जाय. पछी कुमरने सर्व जनोयें वार्यां छतां पण हाथमां तरवार लइ ते कन्यानी पाछल झंप दीधो, तिहां जलकांतरत्न निर्मित सप्तभूमि प्रासादनेविषे सातमी भूमिका उपर पड्यो थको चिंतववा लाग्यो के ए प्रासाद पाणीमां केम रहेतुं हशे? एवो संशय मनमां उपनो तिहां तेने जलकांतरत्ननो महिमा सांभरी आव्यो तेवारें तेनो संशय मट्यो.

हवे कुमर तिहांथकी हेठलनी भूमिकायें गयो, तिहां कल्पवृक्षनी शाखानेविषे पल्यंक प्रलंबमान दीठो, ते उपरें दिव्यरूप कन्या सूती दीठी. पछी ओढणुं परहुं करीने तेनुं मुखकमल जोयुं ते पण तेहनो स्पर्श पामी तत्काल उठीने कहेवा लागी के, हे स्वामी! भलें आव्या. एवुं कही पल्यंकें बेसाडी नाम स्थानादिक पूछवा मांड्यां, कुमर पण हर्ष पाम्यो थको नगरनुं नाम पितानुं नाम अने पोतानुं नाम तथा इहां आववानो हेतु पण कह्यो वली कुमरें कह्युं के तुं कोण छो? अने इहां केम रहेली छो? इत्यादिक चरित्र कहे.

तेवारें कुमरी बोली. सांभल हे महापुरुष! वैताढ्यपर्वतें दक्षिणश्रेणीयें रथनूपुरचक्रवाल नगरनेविषे विद्युत्प्रभविद्याधर राजानी मणिमंजरी नामें हुं पुत्री पिताने अत्यंत वल्लभ छुं, अन्यदा म्हारे पिताये निमित्तियाने पूछ्युं म्हारी पुत्रीनो वर कोण थाशे? तेवारें निमित्तिये कह्युं समुद्रमांहे जलकांतरत्नुं सप्तभूमिकामय प्रासाद करावी, तिहां कल्पवृक्षनी शाखायें प्र

लंबमान पल्यंकें बेसी वीणा वजाडती ए तारी पुत्रीनें राख, तिहां शूर सेनराजानो पुत्र संग्रामशूर आवीने एनुं पाणिग्रहण करशे. ते निमित्तिया ना कहेवाप्रमाणें सर्व सज्जाइ करीने महारे पितायें मुजने इहां राखी छे. आज दिवससुधी तमारी वाट जोती इहां रही छुं. ते आज महारो मनो रथरूप वृक्ष अकस्मात् फलीभूत थयो. हवें तमने भासे, तेम करो.

एवी बेहु जण परस्पर प्रेमवार्त्ता करे छे, एवामां तिहां एक अकस्मात् थयो ते कहीयें छैयें. एक घोर विकरालरूपवालो, हाथमां खड्ग धारण करनारो, अने जाणे मशीमां बोली काढयो होय नहिं ? एवा काला शरी रवालो एक राक्षस तिहां प्रगट थइने कहेवा लाग्यो के अरे कुमर ! हुं सात दिवसनो भूख्यो छुं, अने ए कन्या महारुं भक्ष छे, तो तेने तुं केम परणवा वांछे छे ? एवुं कही कुमरीना नेउरसहित पग उपाडीने पो ताना मुखमांहे घाल्या, कुमरें तेनी उपर खड्ग वाह्युं, पण खड्गना बे कटका थइ पडया. तेवारें कुमर बाहुयुद्ध करवा लाग्यो, तेमां पण राक्षसें कुमर नें हेगो नाखी बांह वाली पिछवाड्यें बांध्यो, पछी कुमरप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे कुमर ! आ तहारी स्त्रीने हुं मूकुं पण जो एना बदलामां तुं मु जने एक स्थूलशरीरवाली स्त्री आणी आपे. अथवा तहारी नगरीमांहे घणी दासीयो महोटा स्थूलशरीरवाली छे, ते आणी आपे, तो हुं एने मूकुं. अने तेनुं भक्षण करुं. अथवा जो एम पण न करे,तो आ निकट ढू कडा महारा गुरु चरक पारिव्राजक छे, तेने आवी पगे लाग. अथवा एज महारा प्रासादनेविषे हरि, हर अने ब्रह्मानी मूर्त्तियो छे, तेने नमस्कार करी, पूजा कर. अथवा महारीप्रतिमा करावीने तेनी नित्यप्रत्यें पूजा कर. तो हुं तहारी स्त्रीने मूकी आपुं. जो एम नहीं करीश, तो आखी गली जइश.

ते सांभली कुमरें कह्युं के हुं जो स्थूलदेहवाली स्त्री तुजने आणी आ पुं, तो तेनो तुं वध करे. ते वध करवानुं पाप मने पण लागे, तेथी महा रो व्रतभंग थाय. माटे ए काम महाराथी न थाय, तेमज वली देव तो श्रीजिनेश्वर अने तेमनी आज्ञाना प्रतिपालक सुसाधु ते महारा गुरु छे तेम ने मूकीने बीजा कोइने हुं नमस्कार पण करुं नहीं. एक श्रीअरिहंत वि ना बीजा लौकिक देवने हुं प्रणाम पण न करुं, अने पूजा पण न करुं. वली हे राक्षस ! ए तुजने पण योग्य नथी, जे देवता थइने जीववधनो

धंधो करे छे ? तेवारें राक्षसें कह्युं जो एटलां वानां तुं न करे, तो इहांज श्रीजिनगृह छे तेनेविषे श्रीवीतरागनी प्रतिमा छे, तेने पूज. ते वात कुमर कबूल करीने हर्षवंत थयो थको प्रतिमा पूजवा गयो. तो तिहां ते प्रतिमाप्रत्यें बौद्धोने पूजा करतां दीठा. ते जोइ कुमर बोल्यो ए बिंब मिथ्यादृष्टि जनोयें परिग्रहीत छे तेमाटे मुजने पूजवुं कल्पे नहीं. ए कार्य करुं तो म्हारा सम्यक्त्वनी हाणी थाय. माटें जो तुं म्हारो शिरछेद करे ते हुं कबूल करीश, पण जे कार्य करवाने तुं कहे छे, ते मांहेलुं एक पण कार्य हुं करीश नहीं. हवे तहारा विचारमां आवे ते कर.

एवुं सांजली ते राक्षस कुमरीप्रत्यें तेना पगथी गलवा लाग्यो, तेवारें कन्या बुंबारव करवा लागी, के अरे आर्यपुत्र ! आ राक्षस जे कहे छे, ते कार्य करीने हमणां तुं मुजने जीवती रखाव. वली गुरु समीपें जइने सम्यक्त्वनो उच्चार करजे. एम कुमरीयें बुंबारव करतां राक्षस, कुमरीने गलतो गलतो गलासुधी आव्यो, अने कुमरने कहेवा लाग्यो के एने संपूर्ण गली ने पछी हुं तुजने पण गली जइश. अरे ! एक दासी पण तहाराथी अपाती नथी, जला नथी अपाती तो रह्युं, पण हजी तुजने जीववानी आशा होय तो दासी रही, पण एक बगली पाणीमांथी पकडीने मुजने लावी आप. तेने कुमरें कह्युं के तुं गमे ते कर, पण हुं कांइ तहारुं वचन मान्य करीने व्रतभंग करनार नथी. जेमाटें मारी नाखवाथी उपरांत बीजी कोइ शीक्षा कांइ तहाराथी थाय तेम नथी, अने मरवुं तो एक वार छेज, पण समकेत पामवुं माहादुष्कर छे, ते कांइ वारंवार पमातुं नथी माटें तुं तहारुं वचन मानवा संबंधी कांइ पण आशा राखीश नहीं. हुं मरवाथी बीहीतो नथी. एवुं कुमरनुं साहस देखीने चमत्कार पाम्यो थको ते राक्षसनुं रूप मूकीने दिव्यरूप धारण करी कुमरने पगे लाग्यो, अने कह्युं के, जेहवो सौधर्मेंद्रें तुजने सन्नामांहे वखाण्यो. तेहवोज तुं साहसिक छो. हुं इंद्रमहाराजनुं वचन मानतो न हतो, पण में तुजने सोनानी पेरें कसी जोयो, तो तुं तेवोज छे. हवे हुं सौधर्मवासी देव छुं, ते तहारी उपर संतुष्ट थइ कहुं छुं. के तुं जे कांइ म्हारी पासें माग, तेहुं आपुं. कुमरें कह्युं म्हारे देव गुरुना प्रसादथकी कोइ वस्तुनी खपती नथी. एवुं कहे छते ते देवता गंधर्व विवाहें कुमरीनुं पाणिग्रहण करावी कुमरनी रजा लइ देवलोकें गयो.

कुमर पण मणिमंजरीनी साथें विषयसुख नोगवतो थको तिहांज रह्यो.

एकदा प्रज्ञप्ति विद्यायें जइने मणिमंजरीना पिताने समाचार कह्या, ते वारें ते तिहां आवी घणी रुद्धि आपीने मणिमंजरी सहित कुमरने पद्मिनीखंम नगरें तेडी गयो, कुमर पोताना माता पिताने पगे लाग्यो, मणिमंजरीनो पिता विदायगिरि मागी वैताढ्यें गयो. शूरसेन राजा पण वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ धर्मराज्य पालवा लाग्यो. कुमर पण सम्यक्त्वमूल श्रावकव्रतरूप धर्म पाली अंतें समाधिमरण करी देवलोकनां सुख नोगवी अनुक्रमें मुक्तिने विषें अनंत सुखनो नोक्ता थाशे. ए वंदन अने नमनरूप बे यत्नाने विषे संग्रामशूरनी कथा कही ॥

हवे त्रीजी दान अने चोथी अनुप्रदान ए बे यत्ना तथा पांचमी आलाप अने बठी संलाप एवी चारे यत्नानुं स्वरूप कहे बेः—

॥ गउरव पिसुणं वियरण, मिठासण पाण खऊ सऊाणं ॥ तंचिय दाणं बहुसो, अणुप्पयाणं मुणि बिंति ॥ ४ए ॥ सप्पणयं संनासण, कुसलं वोसागयं च आलावो ॥ संलावो पुणरुत्तं,सुहडुह गुण दोस पुछाउ ॥ ५०॥

अर्थः—जे (गउरवपिसुणं के०) गौरव एटले आदर तेनुं पिशुन एटले सूचक एवुं (वियरणं के०) वितरण जे दान ते दानेंकरी आदर जाणियें. ते माटे गौरव पिशुन कह्युं हवे ते दान कइ कइ वस्तुनुं होय ? ते कहे बे. (इठासण के०) इष्ट वल्लन एवुं अशन जे उदनादिक अने (पाण के०) पाणी ते शाक जल, इक्षुरस, नालिकेरजलादिक जाणवा तथा (खऊ के०) खाद्य ते फलादिक अने (सऊाणं के०) शय्या, वस्ति, रहेवानुं स्थानक इत्यादिकनुं जे दान ते महत्त्वनुं जणावनारुं बे, माटें एवुं दान मिथ्यादृष्टिने देतां थकां कोइ देखे, तो एवुं जाणे जे ए श्रावक थइने मिथ्यादृष्टिने ए वडो आदर करे बे. तो ए पण गुणवंतज हशे, माटें अमें पण एने आदर आपीयें एम मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय. एटला माटे न देवुं ए दानरूप त्रीजी यत्ना कहीयें. हवे (तंचियदान के०) तेहज दान जे एकवार आपवुं तेतो दान कहेवाय पण जे (बहुसो के०) वारंवार देवुं तेने (अणुप्पयाणं के० अनुप्रदान एटले अनुप्रसाद कहीयें. ए रीतें (मुणि विंति के०) मुनियो कहे बे,ए चोथी अनुप्रदान यत्ना कहीयें. इहां घर आगल कोइ अन्यदर्शनीनो निक्षाचर आव्यो होय तेनें लोकव्यवहारें तथा अनुकंपायें दानदेवानो

कांइ निषेध नथी ॥ ४७ ॥ अर्थः— (सप्पणयं के०) सप्रणय एटले स्नेह सहित जे (संभासण के०) संभाषण करवुं, ते आलाप कहीयें. ते केवी रीतें थाय ? ते कहे छेः—(कुसलं के०) तुमने कुशल छे ? (वा के०) अथवा (सागयं के०) स्वागतं एटले सुआगतं अर्थात् तमें आव्या ते भलुं थयुं ? तमें भलें आव्या ? अथवा सुखें आव्या इत्यादिकनुं जे पूछवुं, तेने (च के०) वली (आलावो के०) आलाप कहीयें, ते आलाप मिथ्यादृष्टिनी साथें न करवो. ए पांचमी आलाप नामें यत्ना जाणवी.

अने (संलावोपुणरुत्तं के०) पुनरुक्त एटले वारंवार जे आलाप करवो तेने संलाप कहीयें. अथवा (सुहदुह गुणदोसपुच्छाउ के०) सुख दुःख गुण दोषना पूछवाथकी पण संलाप थाय. पुत्र, पुत्री, कुटुंब, परिवार, तथा शरीर आश्रयी द्रव्यआश्रयीआय व्ययादिकना सुखनुं जे पूछवुं ते सुखपृच्छा कहीयें. तथा हमणां तमें दुचित्ता देखाउ छो. राजा, चोर, गोत्री प्रमुख तमने संतापे छे. एटला माटें तमें दुःखीया छो ? एवुं पूछवुं, ते दुःखपृच्छा जाणवी. तथा कया कया शास्त्रने विषे तमारो परिचय छे ? अथवा तमें कां भणता नथी ? कलाभ्यास करो जेम रूडुं थाय ? तमारामां औदार्य, धैर्य, सत्त्वादिक गुण रूडा छे ? इत्यादिकनुं जे पूछवुं, ते गुणपृच्छा कहीयें. तथा तमें दुर्बल देखाउ छो, तेमज वली ज्वर, ताप, पित्त कफादिक रोगनुं पूछवुं, ते दोष पृच्छा कहीयें. ए प्रकार करवे करी संलाप कहीयें. ते संलाप मिथ्यादृष्टिनी साथें न करवो. जे माटें मिथ्यादृष्टिनी साथें जे अलाप संलाप करवो, ते दुर्गतिनुं कारण छे. ए छ यत्ना कहीयें ॥ यतः ॥ आलावो संलावो, विसंभो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सवंजिणंदेहिं पडिकुठो ॥ १ ॥ आणाइ अवट्टंतं, जो उववुहिज्ज मोहदोसेणं ॥ तित्थयरस्स सुयस्स य, संघस्स य पच्चणीउ सोय ॥

हवे ए पाछली चार यत्नाने विषे मंत्रितिलकनो संबंध कहीयें छैयें. एज भरतक्षेत्रें विजयपुर नगर तिहां नलराजा राज्य करे छे. तेनी सौभाग्यमंजरी एवे नामें पट्टराणी छे, अने मंत्रितिलक एवे नामें प्रधान छे. ते सकलबुद्धिनिधान छे. एकदा राजा पोताना मंत्रीनी साथें आहेडो करवा निकल्यो, वनमांहे एक मृगलो दीठो, राजा तथा मंत्री बेहु मृगलानी पूठें लागा, ते जेटले मृगनी उपर बाण नाख्युं, एटले मृग बोल्यो, के हे क्षत्री उ

कुमर पण मणिमंजरीनी साथें विषयसुख भोगवतो थको तिहांज रह्यो.

एकदा प्रज्ञप्ति विद्यायें जइने मणिमंजरीना पिताने समाचार कह्या, ते वारें ते तिहां आवी घणी रूद्धि आपीने मणिमंजरी सहित कुमरने पद्मिनीखंम नगरें तेडी गयो, कुमर पोताना माता पिताने पगे लाग्यो, मणिमंजरीनो पिता विदायगिरि मागी वैताढ्यें गयो. शूरसेन राजा पण वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ धर्मराज्य पालवा लाग्यो. कुमर पण सम्यक्त्वमूल श्रावकव्रतरूप धर्म पाली अंतें समाधिमरण करी देवलोकनां सुख भोगवी अनुक्रमें मुक्तिने विषें अनंत सुखनो भोक्ता थाशे. ए वंदन अने नमनरूप बे यत्नाने विषे संग्रामशूरनी कथा कही ॥

हवे त्रीजी दान अने चोथी अनुप्रदान ए बे यत्ना तथा पांचमी आलाप अने छठी संलाप एवी चारे यत्नानुं स्वरूप कहे छेः—

॥ गउरव पिसुणं वियरण, मिठासण पाण खज्ज सज्जाणं ॥ तंचिय दाणं बहुसो, अणुप्पयाणं मुणि बिंति ॥ ४९ ॥ सप्पणयं संभासण, कुसलं वोसागयं च आलावो ॥ संलावो पुणरुत्तं,सुहडुह गुण दोस पुछाउ ॥ ५०॥

अर्थः—जे (गउरवपिसुणं के०) गौरव एटले आदर तेनुं पिशुन एटले सूचक एवुं (वियरणं के०) वितरण जे दान ते दानेंकरी आदर जाणियें. ते माटें गौरव पिशुन कह्युं हवे ते दान कइ कइ वस्तुनुं होय ? ते कहे छे. (इठासण के०) इष्ट वल्लभ एवुं अशन जे उदनादिक अनें (पाण के०) पाणी ते द्राक्ष जल, इक्षुरस, नालिकेरजलादिक जाणवा तथा (खज्ज के०) खाद्य ते फलादिक अने (सज्जाणं के०) शय्या, वस्ति, रहेवानुं स्थानक इत्यादिकनुं जे दान ते महत्त्वनुं जणावनारुं छे, माटें एवुं दान मिथ्यादृष्टिने देतां थकां कोइ देखे, तो एवुं जाणे जे ए श्रावक थइने मिथ्यादृष्टिने ए वडो आदर करे छे. तो ए पण गुणवंतज हशे, माटें अमें पण एने आदर आपीयें एम मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय. एटला माटें न देवुं ए दानरूप त्रीजी यत्ना कहीयें. हवे (तंचियदान के०) तेहज दान जे एकवार आपवुं तेतो दान कहेवाय पण जे (बहुसो के०) वारंवार देवुं तेने (अणुप्पयाणं के० अनुप्रदान एटले अनुप्रसाद कहीयें. ए रीतें (मुणि बिंति के०) मुनियो कहे छे,ए चोथी अनुप्रदान यत्ना कहीयें. इहां घर आगल कोइ अन्यदर्शनीनो भिक्षाचर आव्यो होय तेनें लोकव्यवहारें तथा अनुकंपायें दान देवानो

कांइ निषेध नथी ॥ ४९ ॥ अर्थः– (सप्पणयं के०) सप्रणय एटले स्नेह सहित जे (संज्ञासण के०) संज्ञाषण करवुं, ते आलाप कहीयें. ते केवी रीतें थाय ? ते कहे छेः–(कुसलं के०) तुमने कुशल छे ? (वा के०) अथवा (सागयं के०) स्वागतं एटले सुआगतं अर्थात् तमें आव्या ते जलुं थयुं ? तमें जलें आव्या ? अथवा सुखें आव्या इत्यादिकनुं जे पूछवुं, तेने (च के०) वली (आलावो के०) आलाप कहीयें, ते आलाप मिथ्यादृष्टिनी सार्थे न करवो. ए पांचमी आलाप नामें यत्ना जाणवी.

अने (संलावोपुणरुत्तं के०) पुनरुक्त एटले वारंवार जे आलाप करवो तेने संलाप कहीयें. अथवा (सुहदुह गुणदोसपुछाउ के०)सुख दुःख गुण दोषना पूछवाथकी पण संलाप थाय. पुत्र, पुत्री, कुटुंब, परिवार, तथा शरीर आश्रयी द्रव्यआश्रयीआय व्ययादिकना सुखनुं जे पूछवुं ते सुखपृछा कहीयें. तथा हमणां तमें दुचित्ता देखाउ छो. राजा, चोर,गोत्री प्रमुख तमने संतापे छे. एटला माटें तमें दुःखीया छो ? एवुं पूछवुं, ते दुःखपृछा जाणवी. तथा कया कथा शास्त्रने विषे तमारो परिचय छे ? अथवा तमें कां जणता नथी ? कलाज्यास करो जेम रूडुं थाय ? तमारामां औदार्य, धैर्य, सत्त्वादिक गुण रूडा छे ? इत्यादिकनुं जे पूछवुं, ते गुणपृछा कहीयें. तथा तमें दुर्बल देखाउ छो, तेमज वली ज्वर, ताप, पित्त कफादिक रोगनुं पूछवुं,ते दोष पृछा कहीयें. ए प्रकार करवे करी संलाप कहीयें. ते संलाप मिथ्यादृष्टिनी सार्थें न करवो. जे माटें मिथ्यादृष्टिनी सार्थे जे अलाप संलाप करवो, ते दुर्गतिनुं कारण छे. ए छ यत्ना कहीयें ॥ यतः ॥ आलावो संलावो, विसंजो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सवंजिणंदेहिं पडिकुछो ॥ १ ॥ आणाइ अवट्टंतं, जो उववुहिज्ज मोहदोसेणं ॥ तिछयरस्स सुयस्स य,संघस्स य पच्चणीउ सोय ॥

हवे ए पाछली चार यत्नाने विषे मंत्रितिलकनो संबंध कहीयें छैयें. एज जरतक्षेत्रें विजयपुर नगर तिहां नलराजा राज्य करे छे. तेनी सौजाग्यमंजरी एवे नामें पट्टराणी छे, अने मंत्रितिलक एवे नामें प्रधान छे. ते सकलबुद्धिनिधान छे. एकदा राजा पोताना मंत्रीनी सार्थें आहेडो करवा निकल्यो, वनमांहे एक मृगलो दीठो, राजा तथा मंत्री बेहु मृगलानी पूठें लागा, ते जेटले मृगनी उपर बाण नाख्युं, एटले मृग बोल्यो, के हे क्षत्री न

त्तम ! तुं तृणना खानार अने निर्झरना जलना पीनार एवा निरपराधी अमोने शुं करवा मारे ढे ? अमने मारतां लाजतो नथी ?

एवी मृगनी वाणी सांजलीने राजायें मंत्री प्रत्यें पूढ्युं के हे मंत्री ! आ मृगलो मनुष्यनी जाषायें बोले ढे, एनुं शुं कारण हशे ? मंत्रीयें कह्युं ए मृग न होय ए तो कोइक देवता जणाय ढे, माटें आपणें एनी पाढल दोडीयें, ए क्यां जाय ढे ? हवे ते मृग फाल देतो चाल्यो जाय, तेनी पाढल राजा अने प्रधान बेहु घोडा दोडावता जाय. एटले मृग एक वनमां हे गयो, तेनी पाढल राजा अने मंत्री पण गया. तिहां ध्यानैकतान, उपशमरसनो कूप, क्षमानो आगर, सकलसाधु गुणसागर, एवो एक साधु दीठो, तेनी पासें जइने पहेलो मृगलो बोल्यो के हे महानुजावो ! तमें आ साधुने वांदो, एवुं मृगनुं वचन सांजली बेहु जण घोडाथी उतरी साधुने वांदता हवा. वांदीने बेठा, तेवारें साधु धर्मोपदेश देवा लाग्या ॥ यतः ॥ दानं सुपात्रे विशदं च शीलं, तपो विचित्रं शुजनावना च ॥ जवार्णवोत्तारणसत्तरंडं, धर्मं चतुर्धा मुनयो वदंति ॥ १ ॥ ए चारमां दान घणा प्रकारनां ढे, तेमां अजयदान अने सुपात्रदान ए बे दान मुख्य ढे. तेना फलनो क्षय नथी एवो धर्मोपदेश सांजलीने राजा धर्माजिलाषी थयो.

हवे साधुनुं रूप अने तेज देखी करी चमत्कार पूर्वक राजा पूढवा लाग्यो, हे स्वामिन् ! तमोने शुं वैराग्यनुं कारण थयुं ? जे एवुं रूप, तेज, लावण्य ढतां यौवनावस्थायें दीक्षा लीधी ? साधु बोल्या, हे राजन् ! संसारमां जो परमार्थदृष्टियें विचारीयें, तो सर्व कांइ वैराग्यनांज कारण देखाय ढे. हवे सांजलो. हे राजन् हुं महारा वैराग्यनुं कारण कहुं ढुं.

सिद्धपुर नामें नगर तेनो जुवनसार नामें राजा, तेने कनकश्री पटराणी ढे तथा तेनो मतिसागर नामें प्रधान ढे. एकदा राजसजायें नाटकीया आव्या, तेणें महोटे विस्तारें नाटक करवा मांड्युं, ते जोवामाटें राजायें पोतानुं अंतःपुर पण तेडाव्युं. तिहां राजा रससहित नाटक जूवे ढे.

एवामां द्वारपालें आवी कह्युं, हे स्वामिन् ! निमित्तियो ब्राह्मण आव्यो ढे, आपनी आज्ञा होय, तो आहीं तेडी लावुं. राजायें कह्युं तेडी लाव. द्वारपालें तेड्यो थको आवीने आशीर्वाद देइ बेठो. नाटक पूरुं थयुं तदनंतर राजायें निमित्तियाने पूढ्युं, तुजने कल्याण ढे ? निमित्तियें कह्युं, हे स्वामि

न्! मुजने कल्याण नथी, तुमने कल्याण नथी, अनें आ घरमां कोइने प ण हुं कल्याण देखतो नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांजली राजा रीश चडावीने कहेवा लाग्यो के अरे शुं आकाश त्रूटी पडशे? किंवा पर्वत त्रूटी पडशे? आ बांजणनी वात जो जो कहे ढे, के कोइने कल्याण नथी. प्रधाने कह्युं स्वामी! रोष शा माटें करो बो? कारण पूढी ल्यो के शाथकी अकल्याण ढे? तेवारें राजायें पूढे थके निमित्तियो बोल्यो स्वामी! अकस्मात् मेघ वर सशे तेथकी सर्व नगर जलमय थइ जाशे. माटें अकल्याण देखुं बुं.

एवुं कहेतांज उत्तरदिशाथकी एक हाथप्रमाणें वादलुं चड्युं. ते थोडा वखतमां सर्वआकाशें व्यापी गयुं. गर्जारव तथा वीजलीना जबकारा था वा लाग्या, एटले राजा, मंत्री अने निमित्तियो ए त्रणे जण तिहांथी उठी ने सातमी जूमियें चड्या. तिहां राजा, प्रधानप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हा हा इतिखेदे आपणुं अकस्मात् मरण आव्युं!! आपणे कांइ पुण्य कीधुं नथी तो हवे मरीने किहां जइशुं? एटलामां तो सातमी जूमिसुधी पाणी चडी आव्यां, राजाना पग जीजावा लाग्या, राजा जयज्रांत थयो थको न मस्कारमंत्र गणवा लाग्यो, एटले जेनी उपर पग मूकीने चडीयें एवुं एक महोटुं यानपात्र प्रगट थयुं, तेवारें प्रधानें कह्युं पाणी सातमी जूमियें आव्युं माटे हमणांज ए वहाणमां बेसो. कोइक देवतायें तमने सहाय कीधुं ढे. ते सांजलीने राजा जेटलामां जमणो पग उपाडीने वाहाणमां मूकवा जा य ढे, एटलामां तो मेघ पण न दीठो, अने यानपात्र पण न दीतुं नगर जेहवुं पूर्वें हतुं तेहवुं ने तेहवुंज दीठुं, लोक गातां वातां व्यापार करतां दीठां. राजायें निमित्तियाने कह्युं ए शुं थयुं! निमित्तिये कह्युं में कांइक इं इजाल देखाडी तेमज संदेहथी राजायें जाणियें इंइजालिक निमित्तियाने बे कोडी सुवर्ण आपी विदाय कर्यो.

पढी राजा पोताना अंतःपुरादिक आगल कहे ढे के जेहवी आ इंइजाल दीठी तेहवुंज संसारनुं स्वरूप पण जाणजो. यौवन, लक्ष्मी, राज्य प्रमुख ए सर्व इंइजालने दृष्टांतें ढे. में मनुष्यजवादिक सामग्री पामीने आज पर्यंत निरर्थक गमावी हवे हुं दीक्षा लइ सामग्री सफल करीश. एम कही पोता ना विक्रम नामें पुत्रने राज्य आपी राजायें दीक्षा लीधी. तेज ज्ञुवनसागर

राजा हुं छुं. हमणां भुवनसार साधु कहेवाउं छुं. एवुं पोताना वैराग्यनुं कारण कही साधु छाना रह्या.

नलराजा पण साधुना वैराग्यनुं कारण सांभली हर्ष पामी कहेतो हवो, के हे महाराज ! एवी मति तमारा सरखा उत्तमपुरुष होय तेनेज आवे. पण हुंतो भारे कर्मी छुं माटे मने एवो वैराग्य आवतो नथी. तथापि मने आप कृपा करी शुद्ध समकेतनो उच्चार करावो. समकेत हुं पालीश. तेवारें साधुयें समकेतनुं स्वरूप राजाने समजावीने पछी समकेत उच्चराव्युं.

राजायें पूछयुं स्वामी ! ए मृग कोण हतो के जेणे महारी उपर आटलो उपकार कर्यो. साधुयें कह्युं ए तहारो पाछला भवनो ब्राह्मण मित्र हतो, ते अज्ञानकष्ट करी यक्ष थयो छे, हमणां मुजने देखी भद्रकभावी थयो, अने तुजने देखी तहारी उपर एने प्रीति उपनी, तेवारें मृगलानुं रूप धारण करी तहारी उपर साधुसमागमरूप उपकार कीधो ॥ यतः ॥ चंदनं शीतलं लोके, चंदनादपि चंद्रमाः ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये, शीतः साधुसमागमः ॥ ॥ १ ॥ पछी यक्ष पण मृगलानुं रूप छांमी साधुने पगें लागी, समकेत आदरतो हवो. वली राजाने कह्युं अवसरें संभारजो, हुं आवीश. एम कही ते यक्ष पोताने स्थानकें गयो.

राजा तथा प्रधान बेहु नगरमां आवी राजायें रत्नमय जिनप्रतिमा करावी तेनी पूजा करतो साधर्मिकवात्सल्य, अष्टमी, चतुर्दशी, पौषधोपवासादिकने पारणे साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख कार्य करवामां प्रवर्त्ततो हवो मंत्रितिलक प्रधान पण राजानी पेठें शुभकृत्य करवा लाग्यो.

एकदा कर्मयोगें मंत्रितिलकने असाध्य रोग थयो. वैद्यें पण हिम्मत मूकी कह्युं, के ए रोग अमारे साध्य नथी. एवुं कही पोताने घेर गयो. एवामां एक पारिव्राजकनो वेश धारी वैद्य आव्यो तेणे प्रधानने समाधि करी तेथी प्रधान तेनो पक्षपात करवा लाग्यो. मिष्ट मिष्ट अशनपानादिक रूडां रूडां वानां तेनें आपे, घणो आदर आपे, राज्य सभायें तेडी लावे, राजानी आगल तेना गुण बोले, तेने राजा कहे ए मिथ्यादृष्टिनी स्तुतिरूप मुखें करी कां आपणा समकेतरूप क्षीरोदक वस्त्रने मलीन करे छे ? मंत्री कहे गुणवंतना गुण बोलतां समकेत मलिन न थाय.

एकदा पृथिवीस्थान नगरथी कोइ चार पुरुषें मली नलराजाने कागल

लख्यो जे हे स्वामिन्! तमारो वैरी जे नीलराजा तेणे एक पांत्रीश व र्षनो पारिव्राजक पापरूप मक्षिकायें कालो थयेलो महामायावी वाचाल छे, तेने तमोने मारवामाटे मोकल्यो छे, तेनो विश्वास करशो नहीं. एवो लेख राजायें एकांतें वांचीने पारिव्राजकने पकडवामाटे सुनटो मोकल्या, ते सुनटें तेने पकडी बांधी लातो तथा मुष्टिना प्रहार कस्या तेथी तेनी क डमांथी कंक लोहमय छुरी निकली आवी, सुनटें ते छुरी लइने राजाने देखाडी, तेवारें राजायें पूछ्युं आ शुं आश्चर्य? तेणें नीलराजानी यथा स्थित वार्त्ता कही संनलावी. राजायें प्रधानने तेडी कह्युं के जेनां तुं वखा ए करतो हतो, तेनां चरित्र जोइ ले. एम कही राजायें तेने मंत्रिपदथी उतारी बीजो मंत्री थाप्यो. मंत्री पण पोतानुं समकेत मलीन थयुं जा णी आलोयए प्रायश्चित्त लइ समकेतनी शुद्धि करतो हवो. पछी तेने शु द्धसमकेत पालतो जाणीने राजायें तेडीने वली पण तेने मंत्रिपदें स्था प्यो. वली पण राजा तथा प्रधान बेहु जनने परस्पर तेमज प्रीति थइ.

हवे घात करनारो परिव्राजक, राजाप्रत्यें कहेवा लाग्यो में नावथकी जैनदीक्षा लीधी छे, माटे मारवो होय तो मार, अने जीवतो मूके तो मूक. तहारुं मन माने, तेम कर. राजायें विचार्युं के जो तुं सम्यक्त्व पाम्यो हो, तो पण नावचारित्रीयो थयो कहेवाय तेमाटे हुं तुजने मूकुं छुं. एम कही परिव्राजकने मूक्यो. राजायें चिंतव्युं महारो वैरी नीलराजा छे, तेनी साथें युद्ध करुं तो घणा जीवोनो संहार थाय, माटे यक्षनुं स्मरण करुं पछी राजा यें अठम तप करी पौषध लइ पौषधशालायें बेसी यक्षनुं स्मरण कर्युं. य क्ष तेना मनोगत नावने जाणी नीलराजाने बांधीने तेनी पासें लइ आव्यो. तेने नलराजायें कह्युं अरे पापी! हवे कहे हुं तुजने केवी शिक्षा करुं? नी लराजायें कह्युं हुं तहारे शरणें आव्यो छुं, माटें मन माने तेम कर. एम क हे थके नलराजायें तेने पोतानी आज्ञा मनावी पोतानो सेवक करी मूकी दीधो.

हवे नलराजा कर्मराज तथा धर्मराज बेहु राज्यने सरखां पालतो थ को रह्यो. एकदा उद्यानपालें आवी वधामणी दीधी जे स्वामी! उद्यान नेविषे मुनि पधास्या छे, तेने राजा हर्षदान आपी पोतें मुनिने वांदवा गया. तिहां जोयुं तो जेमनी पासेंथी पोतें धर्म पाम्यो छे, तेज साधु पधा स्या दीठा. साधुयें पण कह्युं, हे राजन्! तुं मने उलखे छे? राजायें कह्युं

हा स्वामी! तमें महारा धर्माचार्य बो, तमाराथी हुं धर्म पाम्यो बुं.

हवे आचार्यें लोकोनी आगल पोतानुं वृत्तांत मांमी कह्युं, ते सांजली ने घणां लोक संवेग पाम्यां. राजायें पण धर्मदेशना सांजली संवेग पाम्यो थको पोताना पुत्रने राजपाटें थापी अमारी पट्टहोद्घोषणा करावी दीन जनोने दान आपी दीक्षा लीधी. मंत्रितिलक प्रधानें पण राजानी साथें दीक्षा लीधी. राजायें पडह वजडाव्यो के महारी साथें जे दीक्षा लेशे, तेना कुटुंबनी चिंता महारो पुत्र करशे. एवुं करवाथी घणे लोकें दीक्षा लीधी. राजा ते सर्वेनी दीक्षानो संघवी थयो. राजा दीक्षा पाली तपस्या करी अंतें अनशन आदरी सर्वार्थसिद्धविमानें स्वेबायें सुख जोगवतो थयो. मंत्रितिलक समाधि मरण करी सौधर्म देवलोकें सौधर्मेंइनो मंत्री थयो. अनुक्रमें बेहु जण मोक्षपद पामशे. ए चार यत्नानेविषे मंत्रितलक प्रधान तथा नलराजानां दृष्टांत कह्यां.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंड्गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंड्गणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे षट्यत्नास्वरूपनिरूपणनामा नवमोऽधिकारः सपूर्णः ॥ ए ॥

हवे ब आगारनो दशमो अधिकार कहे बे.

॥ आगारा अववाया, बविह कीरंति जंग रस्कहा ॥ राय गणं बल सुरक, म्म गुरुनिग्गह वित्तिकंतारं ॥ ५१ ॥ अर्थः—(आगारा के०) जे आगार ते (अववाया के०) अपवाद कहीयें. जे कारणमाटें श्रीजिनशासन जे बे, ते एकलाज उत्सर्ग मारग अंगीकार करवे चाले नहीं. ते माटे अपवाद कह्यो ॥ यतः ॥ उवसग्गसु अकिंचि, किंचिअपवायवं जवेसुत्तं ॥ तडुजयसुत्तं किंचि, सुत्तस्स गमा मुणेयवा ॥ १ ॥ तेमाटे जिहां उत्सर्गे घटमान होय, तिहां उत्सर्गे आदरवो. अने जिहां अपवाद घटे तिहां अपवाद आदरवो. श्रीजिनशासनरूप प्रासादनेविषे उत्सर्ग जे बे, ते मूल वारणुं बे. अने अपवाद जे बे, ते नासता जीवने बारी बे उत्सर्ग जे बे, ते यथाख्यात ज्ञान, दर्शन, चारित्रियानो निरतिचार मार्ग बे. ते हमणाने कालें संघयण, धृतिबल रहितपणे करी सेवन करी न शकीयें तेमाटे अपवाद सेवन करी पढी आलोयण प्रायश्चित्त लइ सम्यक्त्व नियमादिक शुद्ध करवा.

ते आगार श्रीसमकेतने विषे (छव्विहकीरंति के०) छ प्रकारें करीयें, तें शे अर्थें करीयें? तो के (भंगरस्कछा के०) समकेतना भंगनी रक्षाने अर्थें करीयें. जो ए छ आगार न करीयें, तो समकेतनो भंग थाय? अने जो ए छ आगार करीयें तो समकेतनो भंग न थाय? अने समकेतनो भंग थवाथी दुर्गतिपात थाय ॥ यतः ॥ वयभंगे गुरुदोसो, थोवस्सवि पालणा गुण करीय ॥ भंगा गुरुयंपि वयं, सगडंवन होइ फल हेऊ ॥ १ ॥

ते छ आगारनां नाम कहे छेः—एक (राय के०) राजा, बीजो (गणं के०) गण ते इष्ट स्वजन बांधव प्रमुखनो वर्ग, त्रीजो (बल के०) बल पराक्रम ऐश्वर्यादिकवंतनो हठ, चोथो (सुरकम्म के०) देवतानो क्रम एटले पराक्रम, पांचमो (गुरुनिग्गह के०) गुरु जे मिथ्यादृष्टि माता पितादिक तेनो निग्रह, छठो (वित्तिकंतारं के०) वृत्तिकंतार तिहां वृत्ति एटले आजीविका तेनो कांतार एटलें अटवी एटले सर्वथा आजीविका नज चाले ए छ आगार समकेतने विषे जाणवां. ए छ आगार मोकलां राखीने समकेत उच्चरे, तो सम्यक्त्वनो भंग न थाय ॥ ५१ ॥

हवे ए छ आगारनो अर्थ ग्रंथकार विवरी देखाडे छे.

॥ राया पुराइ सामी, जण समुदाउ गणो बलं बलिणो ॥ कारंति वंदणाइं, कस्सवि ए ए तह सुरावी ॥ ५२ ॥ गुरुणो कुदिठि भत्ता, जणगाइ मिछदिठिणो जेउ ॥ कंतारोउ माइ, सियणमिह वित्तिकंतारं ॥ ५३ ॥ अर्थः— (रायापुराइसामी के०) पुर आदि शब्दथकी नगर ग्राम खेट खर्वट देशनो स्वामी धणी होय तेने राजा कहीयें, तथा (जण समुदाउ गणो के०) स्वजननो समुदाय तेने गण कहीयें. तथा (बलंबलिणो के०) आमात्य, नगर, श्रेष्ठी, कानुगा प्रमुख बलवंतपुरुषो तेनुं बल (ए ए के०) एटला जन बलात्कारें करी (कस्सवि के०) कोइक समकेतवंत जीवने (वंदणाइं के०) वंदन नमस्करण पूजन सत्कारादिक करावे, एवी रीतें बलात्कारें परपाखंमीने वंदनादिक करतां समकेतनो भंग न थाय. (तहसुरावि के०) तथा क्षेत्रपाल, शाकिनी, डाकिनी, भूत, प्रेत, पिशाचादिक देवताने पण बलात्कारें करी कोइक सम्यक्त्ववंतपासें वंदनादिक करावे, तो तेथी तेना समकेतनो भंग न थाय ॥ ५२ ॥ अर्थः—(गुरुणो के०) गुरु जन जे (कुदिठिभत्ता के०) कुदृष्टि एटले मिथ्यादृष्टि एवा शाक्यादिक लोक तेना (भत्ता के०) भक्त हो

य एटले मिथ्यादृष्टि गुरुउंना नक्त होय एवा (जेउ के०) जे (जणगाइ के०) जनकादिक ते माता पिता ज्येष्ठ नाइ, तथा काका प्रमुख तेने गुरु कहीयें ॥ यतः ॥ पिता माता कलाचार्यो, एतेषां ज्ञातयस्तथा ॥ वृद्धधर्मोपदेष्टारो, गुरुवर्गः सतां मतः ॥ १ ॥ ए जनकादिक (मिच्छदिठिणो के०) मिथ्यादृष्टि होय एटले कुदृष्टि शाक्यादिकना नक्त होय ते बलात्कारें करी पोताना पासंमी गुरवादिकने वंदावे तथा नियमनंग करावे, तेने गुरु निग्रह कहीयें तेथी समकेतनो नंग न होय. तथा (कांतारोउमाईसियणं के०) क्षुधादिकरूप कांतारने विषे जे सीदाववुं तेणें करी (इह के०) आहिं (वृत्तिकांतारं के०) आजीविकारूप वनाटवि तद्रूप दुःखें करी नियमनो नंग थाय नहिं ॥ ५३ ॥

हवे एनो नावार्थ कहीयें बैयें. कोइक सम्यग्दृष्टि जीव उत्सर्ग अपवादनो जाण होय, ते वृत्ति चलाववा रूप कांतारने विषे पड्यो, अर्थात् महा दरिद्री अवस्थाने विषे पड्यो, कोइ रीतें पण आजीविका चाले नहीं, अने जीव्युं पण जोइयें ते पुरुष पोताना चित्तने विषे श्रीजिनधर्मनेज तत्त्वपणे जाणतो बतो तेने मिथ्यादृष्टियें हठ थकी नियमनंग करावीयें, ते वृत्तिकांतार कहीयें, तेणे करी सम्यक्त्वादिक नियमनो नंग न थाय ॥५३॥ हवे ए ठ आगारें करी समकेत नंग न थाय ते शामाटें ? तेनो हेतु कहे ठे.

॥ न चलंति महासत्ता, सुनिज्ज माणावि सुद्ध धम्माउ ॥ इयरेसि चलण नावे, पइन्न नग्गेन एएहिं ॥ ५४ ॥ अर्थः–(महासत्ता के०) महासत्त्वना धणी होय ते देव, दानव मानवादिकें (सुनिज्ञमाणावि के०) घणुए नेदाता थकां कदर्थना पमाड्या थका पण (सुद्धधम्माउ के०) शुद्धधर्म जे श्रीवीतराग देवनो नांखेलो निर्मल धर्म तेथकी (नचलंति के०) चलायमान थाता नथी. जेम मेरुपर्वत वायरे करी चलायमान थाय नहीं तेम धर्मने विपे जेमनुं अत्यंत दृढ मन थयेलुं ठे एवा महासत्त्ववान् पुरुपो पण तेनी पेठें जाणवा. परंतु एवा महासत्त्व पुरुपोथी (इयरेसि के०) इतर जे मंदसत्त्ववान् पुरुपो ठे, तेमने (चलणनावे के०) चलवापणुं ठे, तेवा जनोने (एएहिं के०) ए ए ठ आगार मोकलां राखवे करी (पइन्न नंगोन के०) प्रतिज्ञानो नंग न थाय, जे

माटें जे उत्सर्ग्ग मार्गे राखी शके, तो ते घणुंज रूडुं ठे, परंतु जे उत्सर्गमार्गे राखी न शके, तो ते ए ठ आगार मोकलां राखीने समकेत पाळे, तो पण नलुं ठे ॥ यतः ॥ महासत्ताणुन्ना, सवनिसे होय पवयणे नहि ॥ अयंवयंतुजीळा, लाहा कंखिव वाणीयउ ॥ ५४ ॥

हवे ए ठए आगारने विषे मृगांकलेखानुं दृष्टांत कहे ठेः—मालवदेशें उज्जयणी नगरीयें अवंतीसेन नामें राजा राज्य करे ठे, तेज नगरमां एक धनसार एवे नामें सार्थवाह रहे ठे, तेनी रंना नामें नार्या ठे, तेने मृगांकलेखा नामें पुत्री ठे. ते बालनावथकी पण निर्मलसमकेतनी धरनारी श्रीजिनधर्मने विषे तत्पर अने जीवाऽजीवादिक नवतत्त्वनी जाण ठे.

एकदा ते कुमरी उद्याननने विषे धनसारसार्थवाहनुं करावेलुं उत्तंग तोरण शिखरबंध श्रीजिनप्रासाद ठे, तिहां सकल सामग्री लइने पूजा करवाने अर्थें गइ. प्रथम द्रव्यपूजा करीने पठी नावपूजा निमित्तें काउस्सग्ग करी उनी रही ठे. एवामां तिहां सागरश्रेष्ठीनो पुत्र पोताना मित्रने साथें लइ देव जुहारवा आव्यो ठे. तेणें देव जुहारी वली नइक पणाथी काउस्सग्ग धारी प्रतिमाने नमी पगे लाग्यो वांद्यो. ते जोइ हाथ ताली टो देइ तेनो मित्र हस्यो, श्रेष्ठी पुत्रें पूठयुं शा कारणें हस्यो? मित्रें कह्युं ए प्रतिमा नथी पण धनसार्थवाहनी पुत्री मृगांकलेखा ठे, तेने तुं पगे लाग्यो.

हवे ते श्रेष्ठिपुत्र मृगांकलेखानुं रूप जोइ कामनूतें ग्रस्त थयो थको घेर जइ उखरडे पर्यंकें सूतो, मात पितायें बोलाव्यो बोले नहीं, घणुंए पूठे, पण पाठो उत्तर आपे नहीं. तेवारें तेना मित्रें सर्व वात मातपिता आगल कही समजावी. मातपितायें कह्युं, ए योग्य वात ठे, ते अमें करीशुं, तुं आवी नोजन कर. इत्यादिक घणुं समजावीने जमाडयो.

पठी तेज उद्यानमां तेज देरासरनी पासें सागरदत्तें पण एक श्रीरुषनदेवनुं प्रासाद कराव्युं, तेनी प्रतिष्ठा कराववा तेना दशान्हिकना दशमा दिवसने विषे जमणवार करी ठे. तिहां धनसार्थवाहने तेडयो ठे, ते कुटुंबसहित आवी नोजन करी मंमपमां बेठा ठे, तेवारें सागरदत्तें ज्योतिषियाने संज्ञा करी ते उपरथी ज्योतिषीयो बोल्यो जे आज विवाह मेलववानो अत्यंत श्रीकार सर्वोत्तम श्रेयस्कर दिवस ठे, एवो दिवस कोइ कालांतरेंज आवे ठे. जो धनसार्थवाहनी कन्या मृगांकलेखा अने सागरदत्त

नो पुत्र सागरचंद्र ए बेहुनो विवाह आज थाय, तो सर्वोपरि रूडो योग गणाय, तेवारें धनसार सार्थवाह पण सागरचंद्रनुं रूप देखी हर्ष पाम्यो थको बोल्यो, नलुं. एम कही तिहांज विवाह मेलवीने बेहु जण उठ्या, पोतपोताने घेर जइ विवाहनो महोत्सव करवा प्रवृत्त्या कन्याना बापें कन्याने पीठी चोली छे, अने वरना बापें वरराजाने पीठी चोली छे.

एवामां सागरचंद्र पोताना धनमित्र प्रत्यें कहे छे. के ते वखत देरासरमां में मृगांकलेखाने रूडी रीतें निरखी नथी, तेमाटें मुजने रूप जोवानी उत्कंठा छे, ते जो तुं महारी साथें आवे, तो तिहां जइ एनुं रूप रूडी रीतें जोइ आवीयें, धनमित्रें कह्युं तुं पाटें बेगे गे ते शी रीतें निकली शकीश ? तेणें कह्युं रात्रें गानुं बाहिर निकलवामां कांइ विशेष नथी. एम कदाग्रह लइ बेगे, तेवारें मित्रें कह्युं चाल जइ आवीयें ? पठी रात्रें श्याम वस्त्र पहेरी हाथमां खड्ग लइ जिहां कन्या पाटें बेठी छे तिहां आव्या, ते अवसरें मृगांकलेखा पोतानी चित्रलेखा अने पत्रलेखादिक सखीयोना परिवारें परवरी थकी पोत पोतामां गोष्ठि करे छे, तिहां चित्रलेखा मृगांकलेखाने कहे छे, के धन्य तहारो अवतार ! जे तुजने सागरचंद्र जेवो वर मल्यो ॥ यतः ॥ अनुरूपकलाशाली, पंमितःसवयः सुधीः ॥ धनवाननुरक्तश्च, पुण्यैःसंप्राप्यते पतिः ॥ १ ॥

हवे स्त्रीजातिनो स्वनावज छे, के एक बोले तो तेथकी वली बीजी जे बोले, ते अवलुंज बोले, ते प्रमाणें पत्र लेखा बोली उठी के मृगांकलेखाने योग्य वर तो धनश्रेष्ठीनो पुत्र अनंगदेव हतो कारण के ते रूपें करी साक्षात् अनंग जेवोज छे. तेवारें वली चित्रलेखा बोली जे मृगांकलेखाना वरने अर्थें संवर नामा ज्ञानीने पूछ्युं तेवारें तेणें कह्युं के अनंगदेवनुं वीश वर्षनुं आयु छे, माटे ते योग्य नथी. तेथी अनंगदेवने शुं करीयें ? ते सांनली पत्रलेखा वोली अरे सखि ! तुं जाणती नथी ? जे थोडुं होय तो पण अमृत नलुं जाणवुं अने विप तो एक नार जेटलुं होय तो ते पण शा कामनुं ?

एवी सखियोनी वातो थती मृगांकलेखायें वेठी सांनली पण लाजनें लीधे निवारण कीधी नहीं. अने ते बेहु सखीयोनी वात सागरचंद्रे छानो रही सांनली, तेथी घणो रीपें चढी खड्ग काढीने मारवा दोड्यो, तेने मित्रें हा

थ जाली राख्यो, अने कह्युं के सखीयो परस्पर वातो करे छे. एमा मृगां कलेखानो श्यो वांक छे? एम समजावीने घेर लइ गयो.

पछी सागरचंदें विरक्तचित्तें करी पितानी लज्जायें पाणिग्रहण कीधुं, परण्या पछी तेना पिता सागरदत्तें सूवाने माटे महोटो आवास करावी आप्यो पण सागरचंद दुष्टात्मा ते मृगांकलेखानी साथें द्वेष धरतो ढूकडो नावे. बोलावे पण नहीं, मृगांकलेखानुं नाम सांजले तो पण रीष करी उठे.

ए विषे मृगांकलेखा परमार्थ अजाणती, कर्मनो दोष त्रेवडती घणो खेद करती थकी दुःखें काल निर्गमन करे छे, एम ते विरहाग्नियें पीडित थकां श्रीजिनधर्माराधन करतां एकवीश वर्ष निर्गमन कर्यां.

हवे एकदा अवंतीसेन राजा, लाटदेशना राजाने जीतवामाटे जाय छे, तेवारें सागरदत्तने तेडीने राजा कहेवा लाग्यो के तमारा पुत्र सागरचंचंदने महारी साथें मोकलो, जेमाटें महारा सैन्यने अन्न वस्त्रादिक सर्व वस्तु पूरे. सागरदत्तें पोताना पुत्रने कह्युं के राजा तेडी जाय छे, तेनी साथें जरूर जवुं जोश्यें,ते सांजली सागरचंद पण अश्व रथ मेरा प्रमुख सज्ज करी माता, पिता,जाइ, काका प्रमुखने पगें लागी विदायगिरि मागी चालवा लाग्यो, ते जेवारें मृगांकलेखाना घर आगल आव्यो, तेवारें मृगांकलेखाने दीठी पण बोलावी नहीं, तो पण मृगांकलेखा आवी पगें लागीने अश्रुपात करवा लागी तथापि तेने अवगणी तिरस्कार करी चाल्यो तेथी मृगांकलेखा वली घणुंज दुःख पामी थकी शय्यायें आलोटती रोवा लागी, मनमां विचारे छे,जे घरना दासने पण बोलावे छे, अने मुजने आवी रीतें ठेली नाखे छे. माटें ए महारा पूर्वकर्मनो दोष समजवो. एवुं चिंतवती रही.

सागरचंद गाम बाहिर नदीने तटें जिहां कटकें उतारो कीधो छे,तिहां मेरा देइ पर्यंकें सूतो छे. एवामां वारंवार करुणस्वरें रुदन करती कोइक किन्नरीनो स्वर सांजल्यो, तेवारें मनमां विचार्युं जे आ रात्रिने विषे कोण स्त्री रुदन करे छे? एम चिंतवी खड्ग लइ शब्दने अनुसारें चाल्यो आगल जातां वनना कुंजमांहे सर्वाजरणें जूषित एवी एक स्त्रीने रडती दीठी. तेने कहेवा लाग्यो के हे बहेन ! तुं शा माटे रडे छे? त्यारें स्त्रीयें कह्युं एवो कोइ नथी जे महारुं दुःख जांगे, सागरचंदें कह्युं एक वार तहारे दुःख शुं छे, ते कहे तो पछी दुःख जांगवानी वात छे? स्त्री बोली महारो प्राणेश्वर हरि

नो पुत्र सागरचंद्र ए बेहुनो विवाह आज थाय, तो सर्वोपरि रूडो योग गणाय, तेवारें धनसार सार्थवाह पण सागरचंद्रनुं रूप देखी हर्ष पाम्यो थको बोल्यो, नलुं. एम कही तिहांज विवाह मेलवीने बेहु जण उठ्या, पोतपोताने घेर जइ विवाहनो महोत्सव करवा प्रवृत्त्या कन्याना बापें कन्याने पीठी चोली छे, अने वरना बापें वरराजाने पीठी चोली छे.

एवामां सागरचंद्र पोताना धनमित्र प्रत्यें कहे छे. के ते वखत देरासरमां में मृगांकलेखाने रूडी रीतें निरखी नथी, तेमाटें मुजने रूप जोवानी उत्कंठा छे, ते जो तुं म्हारी साथें आवे, तो तिहां जइ एनुं रूप रूडी रीतें जोइ आवीयें, धनमित्रें कह्युं तुं पाटें बेठो छो ते शी रीतें निकली शकीश? तेणें कह्युं रात्रें छानुं बाहिर निकलवामां कांइ विशेष नथी. एम कदाग्रह जइ बेठो, तेवारें मित्रें कह्युं चाल जइ आवीयें? पछी रात्रें श्याम वस्त्र पहेरी हाथमां खड्ग लइ जिहां कन्या पाटें बेठी छे तिहां आव्या, ते अवसरें मृगांकलेखा पोतानी चित्रलेखा अने पत्रलेखादिक सखीयोना परिवारें परवरी थकी पोत पोतामां गोष्ठि करे छे, तिहां चित्रलेखा मृगांकलेखाने कहे छे, के धन्य तहारो अवतार! जे तुजने सागरचंद्र जेवो वर मल्यो ॥ यतः ॥ अनुरूपकलाशाली, पंमितःसवयः सुधीः ॥ धनवाननुरक्तश्च, पुण्यैःसंप्राप्यते पतिः ॥ १ ॥

हवे स्त्रीजातिनो स्वनावज छे, के एक बोले तो तेथकी वली बीजी जे बोले, ते अवलुंज बोले, ते प्रमाणें पत्र लेखा बोली उठी के मृगांकलेखाने योग्य वर तो धनश्रेष्ठीनो पुत्र अनंगदेव हतो कारण के ते रूपें करी साक्षात् अनंग जेवोज छे. तेवारें वली चित्रलेखा बोली जे मृगांकलेखाना वरने अर्थें संवर नामा ज्ञानीने पूछ्युं तेवारें तेणें कह्युं के अनंगदेवनुं वीश वर्षनुं आयु छे, माटे ते योग्य नथी. तेथी अनंगदेवने शुं करीयें? ते सांनली पत्रलेखा बोली अरे सखि! तुं जाणती नथी? जे थोडुं होय तो पण अमृत नलुं जाणवुं अने विष तो एक नार जेटलुं होय तो ते पण शा कामनुं?

एवी सखियोनी वातो थती मृगांकलेखायें बेठी सांनली पण लाजनें लीधे निवारण कीधी नहीं. अने ते बेहु सखीयोनी वात सागरचंद्रे छानो रही सांनली, तेथी घणो रीषें चढी खड्ग काढीने मारवा दोड्यो, तेने मित्रें हा

थ जाली राख्यो, अने कह्युं के सखीयो परस्पर वातो करे छे. एमा मृगांकलेखानो श्यो वांक छे? एम समजावीने घेर लइ गयो.

पछी सागरचंद्रें विरक्तचित्तें करी पितानी लज्जायें पाणिग्रहण कीधुं, परण्या पछी तेना पिता सागरदत्तें सूवाने माटे महोटो आवास करावी आप्यो पण सागरचंद्र दुष्टात्मा ते मृगांकलेखानी सार्थे द्वेष धरतो छकडो नावे. बोलावे पण नहीं, मृगांकलेखानुं नाम सांभले तो पण रीष करी उठे.

ए विषे मृगांकलेखा परमार्थ अजाणती, कर्मनो दोष त्रेवडती घणो खेद करती थकी दुःखें काल निर्गमन करे छे, एम ते विरहाग्नियें पीडित थकां श्रीजिनधर्माराधन करतां एकवीश वर्ष निर्गमन कर्यां.

हवे एकदा अवंतीसेन राजा, लाटदेशना राजाने जीतवामाटे जाय छे, तेवारें सागरदत्तने तेडीने राजा कहेवा लाग्यो के तमारा पुत्र सागरचंद्रने महारी सार्थे मोकलो, जेमाटें महारा सैन्यने अन्न वस्त्रादिक सर्व वस्तु पूरे. सागरदत्तें पोताना पुत्रने कह्युं के राजा तेडी जाय छे, तेनी साथें जरूर जवुं जोइयें,ते सांभली सागरचंद्र पण अश्व रथ मेरा प्रमुख सज्ज करी माता, पिता,भाइ, काका प्रमुखने पगें लागी विदायगिरि मागी चालवा लाग्यो, ते जेवारें मृगांकलेखाना घर आगल आव्यो, तेवारें मृगांकलेखाने दीठी पण बोलावी नहीं, तो पण मृगांकलेखा आवी पगें लागीने अश्रुपात करवा लागी तथापि तेने अवगणी तिरस्कार करी चाल्यो तेथी मृगांकलेखा वली घणुंज दुःख पामी थकी शय्यायें आलोटती रोवा लागी, मनमां विचारे छे,जे घरना दासने पण बोलावे छे, अने मुजने आवी रीतें ठेली नाखें छे. माटें ए महारा पूर्वकर्मनो दोष समजवो. एवुं चिंतवती रही.

सागरचंद्र गाम बाहिर नदीने तटें जिहां कटकें उतारो कीधो छे,तिहां मेरा देइ पर्यंकें सूतो छे. एवामां वारंवार करुणस्वरें रुदन करती कोइक किन्नरीनो स्वर सांभल्यो, तेवारें मनमां विचार्युं जे आ रात्रिने विषे कोण स्त्री रुदन करे छे? एम चिंतवी खड्ग लइ शब्दने अनुसारें चाल्यो आगल जातां वनना कुंजमांहे सर्वाभरणें भूषित एवी एक स्त्रीने रडती दीठी. तेने कहेवा लाग्यो के हे बहेन! तुं शा माटे रडे छे? त्यारें स्त्रीयें कह्युं एवो कोइ नथी जे महारुं दुःख भांगे, सागरचंद्रें कह्युं एक वार तहारे दुःख शुं छे, ते कहे तो पछी दुःख भांगवानी वात छे? स्त्री बोली महारो प्राणेश्वर हरि

कमाइ करी आवे छे, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी माता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तह्मारे माटें रहेवानी जगा नथी. जिहां तह्मारी इछा आवे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.

एम मावित्रें काहाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्षनी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रभातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग भूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन ! तुं त्रण दिवसनी भूखी छो, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्भपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.

मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं भक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात छे एथी नियमभंग न थाय, तो पण हुं भक्षण करीश नहीं. एवो हठ लइने एमज भूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन ! में मह्मारा माणसना मुखथकी तह्मारुं वृत्तांत सांभल्युं छे,हवे तुं रडीश मां. मह्मारा सथवाराने विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुझने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संभलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह ! तुं मुझने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तह्मारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कर्यो. सार्थवाह तेने साथें लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथी तिहां घणुं सुख पामी.

एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक भिल्ल उपाडी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां, जे मह्मारी सखी पण मह्माराथी विछूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.

एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजाने विजयराजासाथें मित्राचारी छे, तेमाटें तेणे मालवाथकी सार्थवाहने आव्यो जाणी मालवाना अवंतीसेन राजानी साथें पोताना मित्रनुं वैर छे माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे छुपी बेसी रही. अरण्यमांहे सिंहादिक श्वापदोनो स्वर सांभलवे करी भयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनी

चंद्रमा जेवी कांति देखी खोळामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र ! आ वखतें तहारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण हमणां आहीं जंगलमां तहारो जन्म महोत्सव कोण करशे ? एवुं कही विलाप करे छे. तेने वनदेव तायें समजावी ॥ यतः ॥ वुड्ढिवाहाणिवा, गुरुयाणं नउणं हीण दीणाणं ॥ महिमा उवरागोवा, ससीसुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रज्ञात थयुं तेवारें सागरचंद्रनी नामांकित मुद्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ भूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते छोकरानुं आयुष्य बल वान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढूकडुं एक वैश्रमण नामें नगर छे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थे आव्यो छे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कू तरो नाशी गयो, शेठ हर्ष पामतो छतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती भार्याने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जण्यो छे, तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पहे लो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाड्यो. पछी तिहां शेठें म्हारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरें द्रदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंद्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय छे. ते पुत्र ना आव्या पछी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने साचे साचो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्भनुं कलंक उतर्युं, ते पछी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जण्या, सुरेंद्रदत्त पण अनुक्रमें सर्वकला भण्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख भोगवतो हवो.

पाछलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जूवे छे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुजने शी डुर्मति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने अरण्यमां मूकीने स्नान करवा गइ !!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां ललिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आ वी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें छे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको भोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कर्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती छे, आपणा गोकुलमां आवी छे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचार्युं जे म्हारे घेर आवी छे माटे म्हारुं कथन मानेज छूटे, एवुं निर्धार्युं एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय भोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि “ बला भिउगेणं ” ए आगार छे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रभावें वसंतने वासी वल्यूं, तेहज रात्रियें मरण पामीने दुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्गे भूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गेमां वडवृक्षनी छायायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे छे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांभली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ मह्निरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी छे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस बंदीवान छे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो छे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री भद्रकाली देवीने चडाववानी मानता करी छे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो भद्रकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता करी छे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय; तेनुं स्मरण करो. एवुं सांभली उंगणीश माणस तो भयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुझने मारी बलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण म्हारी नजरें देखुं नहीं. मने माहारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता छे.

एवुं सांभली सुंदर बोल्यो के हे भगिनी ! एकली तुझनेज हुं मूकुं छुं.

तेंने मृगांकलेखायें कह्युं हे नाइ सुंदर! मुजने मारी नाख. पण उंगणीश जनने मूकी आप. जो उंगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे डे ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः ॥ मादृशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग नूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंड मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उन्नो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीथकी तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंड विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी, प्रनातें चालवा मांम्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्यापणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पहोंचे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कह्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे डे.

मृगांकलेखायें कह्युं राजा कोण, अने हुं कोण ? जा हुं नथी आवती. ते सांभळी प्रतिहारें कह्युं राजानियोग मानवोज जोइयें, तेमाटें खुशीथी आवो, तो रूडुं. ते सांभळी मृगांकलेखा अणबोली रही, तेवारें ते सुखासनें बेसाडी लइ जावा लाग्यो, मृगांकलेखा कपटें गांडी बनीने सुखासनथकी नीचें पडी, लुगडां फाडे माथें धूड घाले, लोकोने पथरा मारे, यद्वा तद्वा बोले, तें जोइ वेश्यानी दासी तेने उपाडी पोताने घेर लइ गइ. मंत्र वादीने तेडाव्या, मंत्रवादी ढूकडा आवे, तो तेने माटीना ढेफाथी मारे. तेवारें मंत्र तंत्रनें विषे निपुण एवो कनकबाहु नामें पोतानो अंगरक्षक हतो, तेनें राजायें कह्युं के एने श्यो दोष छे? तें तुं जइने जोइ आव.

ते कनकबाहुयें तिहां जइ एकांतें श्रीचंद्रप्रभस्वामीना शासननी अधि ष्ठायिका ज्वालामालिनी नामें देवी छे, तेने मृगांकलेखाना शरीरमां उता रीने पूछवा लाग्यो, के मृगांकलेखाने श्यो दोष छे. तेवारें ते देवी मृगां कलेखाने मुखें कहेवा लागी के एने कांइ पण दोष नथी परंतु ए माहास ती अवंतीराजाना मंत्री सागरचंद्रनी भार्या परमश्राविका छे,ते कर्मने वश इहां आवी चडी छे. अने शील पालवाने माटें घेली बनी गइ छे,तेने तमें कुलदेवीनी पेरें आराधो के जेथी तमारुं कल्याण थाय.

एवुं सांभळी देवीने विसर्जन करी राजा पासें जइ परमार्थ समजावी कनकबाहु पोताने घेर मृगांकलेखाने तेडी गयो. लोकोमांहे सती कहेवाणी. देवांगनायें साख पूरी. हवे मृगांकलेखा तिहां सुखें रही थकी चिंतववा लागी, के हा हा जूवो कर्मपरिणाम कहेवा छे !! मह्यारो धणी सागरचंद्र किहां छे ! मह्यारो पुत्र किहां छे! मह्यारी सखी चित्रलेखा किहां छे ! कहेवां विकट कर्म कीधां छे के एटलानो वियोग हुं पामी ! वली माथें कलंक च ढेलुं छे ! निरंतर एवी चिंतवणा करती तिहां कालक्षेप करे छे.

हवे मृगांकलेखानो पुत्र सुरेंद्रदत्त मह्योटो थयो, तेवारें घणुं धन कमा इने पिताने वल्लभ थयो ते जोइ धनवती जननी चिंतववा लागी जे ए सुरें द्रदत्त छतां मह्यारा अंगजात बे पुत्र कांइ सुखी थाय नहीं, तेम पिताना मानेता पण थाय नहीं, माटें ए सुरेंद्रदत्तने विषप्रयोगें मारी नाखुं. एवा अभिप्रायथी त्रण मोदक बनाव्या, तेमां बे न्हाना निर्विष कस्या अने एक मह्योटो विषमिश्रित कस्यो, ते लाडु भांडागारें त्रणे भाइ बेग हता, तिहां

दासीने हाथें मोकल्या. दासीयें धनवतीना कह्याप्रमाणें बे न्हाना लाडु नरदेव तथा धनदेवने आप्या अने एक मह्येटो लाडु सुरेंद्रदत्तने आप्यो. पण सुरेंद्रदत्त कार्याकुल हतो, तेथी तेणें खाधो नहीं, एमज राखी मूक्यो. अने बे नाइयें बे लाडवा खाधा. वली भूख्या थया त्यारें सुरेंद्रदत्तें पोतानो लाडवो अडधो अडध करी बे नाइने वहेंची आप्यो बे नाइयें तरत खाधो.ते खातां वार मूर्छा खाइ पडी गया, तेनां घणां औपघादिक उपचार कस्या, पण कांइ टांकी लागी नहीं, बे नाइयें काल कीधो. वैश्रमण शेठें सर्व स माचार जाण्या अने विचाखुं जे धनवती निश्चें एनें मारशे. तेवारें सुरेंद्रद त्तने एकांतें तेडीने शेठे तेने सर्व वार्त्ता कही तथा सागरचंद्रनामांकित मुद्रा रत्न आप्युं, अने कह्युं के तुं तामलिप्ती नगरीयें जा. जो इहां रहीश तो ए दुष्ट स्त्री तुजने विषादिक प्रयोगें कपटथी मारशे.

एवुं सांजली सुरेंद्रदत्त तामलिप्ती नगरीयें आव्यो, तिहां घणुं धन उपा र्जीने एकदा श्रीरूषभदेवना प्रासादें पूजाने अर्थें गयो. तिहां शासनदेवी चक्रेश्वरी मातानी मूर्त्ति छे, तेनो मह्येटो महिमा जाणीने अठम तप करी ब्रह्मचर्य धारी थइ देवीनुं आराधन करवा बेठो. तेवारें चक्रेश्वरी प्रगट थइने बोली के हे वत्स ! तह्मारो पिता सागरचंद्र अने मृगांकलेखा माता ए बे तुजने सिद्धार्थपुरी नगरीना प्रियमेलक उद्यानमां मलशे. तेमाटें खेद म कर. तुजने देखवाथी जेना स्तनमांहेथी दूधनी धारा वरसे, तेहने तुं तह्मारी माता करी जाणजे. लोक सागरचंद्रने देखी कहेशे, ए सुरेंद्रदत्तनो पिता छे. आज थकी एक महीनामां तह्मारां माता पिता मलशे, एम नि श्चय जाणजे. एवुं कही देवी अदृश्य थइ. सुरेंद्रदत्त पण देवीने वचने श्री रूषभदेवने पूजी पारणुं करी सिद्धार्थपुर भणी चाल्यो.

हवे अवंतीसेन राजायें विजयराजानें जीती लीधो, तेवारें कटकथी विदायगिरी मागीने सागरचंद्र पोतानें घेर आव्यो. माता पिताने पगे लाग्यो जे द्रव्य उपार्जन करी लाव्यो हतो, ते सर्व पिताने आपीने पछी मृगांकलेखाने घेर आव्यो. तिहां जेम चक्षुर्हीन मनुष्य शून्य देखाय, तेम ते घर पण मृगांकलेखा विना शून्य दीठुं, तेवारें विचाखुं जे ए शुं पीयर गइ छे ? किंवा कोइ बीजो विचार होय तो ते केम घटे ?

पछी तिहांथी आवी माताने पूछ्युं, तेवारें मातायें कह्युं कें हे वत्स !

ए पापिणीनुं नाम कोण लीये ? तुं आंहीथी गया पठी एणें कोइकनी सायें अ नाचार सेव्यो तेथकी गर्न रह्यो, कुलने कलंक लगाडचुं, माटें अमें घरथकी कहाढी मूकी, एटलुं सांनलतां वारज सागरचंड मूर्छा खाइ धरती उपर प ड्यो. तेने शीतलोपचारें करी मूर्छा टाल्यानंतर विलाप करवा लाग्यो. मा तायें कह्युं के हे पुत्र ! तुं तहारी स्त्री पासें आव्यो हतो, तो अमने जणा वी कां न गयो ? सागरचंडें कह्युं तमें महारुं नामांकित मुडारत्न केम न उ लख्युं ? मुडारत्न तेणें देखाडचुं तेम ठतां तमें केम घरथी बाहिर काढी मू की. इत्यादिक घणा उलंना दीधा. बीजुं माता पितानी सायें शुं जोर चाले!

पठी धनुष बाणनो नाथो लइ अनिग्रह करी चाल्यो जे जिहांसुधी मृ गांकलेखा न मले, तिहांसुधी महारे घेर आववुं नहीं. एवो निश्चय करी मित्रने जाण कस्याविना एमज चाल्यो, ते गाम, नगर, खेट, खर्बटें नमतो पंथीजनोने पूठतो पूठतो जाय ठे, एवामां हेडंब नामें राक्षस मल्यो, ते प्र गट थइ कहेवा लाग्यो के मुजने तहारी स्त्रीनुं रूप पूठ. ते मृगांकलेखाने हुं गली गयो बुं ते वचन सांनली सागरचंड कोपाकुल थको राक्षसने गाल देइ मारवा उठ्यो. राक्षस पण वेतालरूपें वधवा लाग्यो, वधतां वधतां ता लप्रमाणें थयो, तेवारें कुमरें वेताल जाणी पंचपरमेष्टिनुं स्मरण कयुं. ते ना महिमाथी वेताल नाशि गयो.

सागरचंडें स्त्रीना वियोगथी मरवाने अर्थें केटलांएक काष्ठ एकठां करी महोटी चिता रची, अनें कहेवा लाग्यो अरे देव, दाणव, सिद्ध, गांधर्व, सर्व सांनलजो जे में निरपराधी सतीयोमांहे शिरोमणि एवी महारी प्रियानें घ णा वर्षलगण संतापि तेमाटे हुं महापातकी थयो बुं, ते पाप शुद्धकरवाने अर्थें अग्निमांहे फंपापात करुं बुं. एवुं कही जेटले अग्निमां पडवा कुदको मारवा लाग्यो, एटलामां सुयशा नामा सिद्धपुत्रें आवी वास्यो. के हे महा पुरुष ! तुं आत्मघात म कर, तुं तहारी प्रिया अने पुत्र सायें मली घणां सु ख नोगवी दीक्षा लइने मोक्षें जाइश. तहारो सुरेंडदत्त पुत्र तथा मृगांकले खा स्त्री सिद्धार्थपुरने विषे प्रियमेलक उद्यानें श्रीक्षषनदेवना चैत्यने विषे मलशे. तेनुं एंधाण ए जे एज निल्लनी पालीथकी नाशि गयेली मृगांकलेखा नी सखी चित्रलेखा तुजने मार्गेमां मलशे. तो ए वात तुं सत्य मानजे. पठी चित्रलेखाने लइ तुं सिद्धार्थपुरमां जाजे. हवे मुजने अनुज्ञा आप तो हुं नं

दीश्वरद्वीपें जिनचैत्य जुहारवा जाउं. एम कही सिद्धपुत्र आकाशें उत्पत्यो.
एवुं सिद्धपुत्रनुं वचन सांजली सागरचंद्र, आनंदरसामृतमांहे जीलतो थको विचारें ठे जे धन्य ठे मुऊने! जे माटे मने मृगांकलेखा पुत्रसहित मलशे. पढी चिता उलवीने तिहांथकी चाल्यो केटलिएक नूमि उलंवी गयो तिहां रुदन करती हा हा मृगांकलेखा तुं क्यां गइ? एकली केम जीवती र हीश! एवा विलाप करती स्त्रीनो शब्द सांजली कुमरें जाएयुं जे आ चित्र लेखानो स्वर ठे, तेवारें ते तिहां जइनें तेने मल्यो चित्रलेखा पण सागर चंद्रने उलखी पगे लागी. तेने मृगांकलेखानो समाचार सागरचंद्रें पूछ्यो. सखीयें कह्युं के हे स्वामिन्! सासु ससरायें काढी थकी पितानें घेर गइ,ते एों पण राखी नहीं, तेवारें तमारी पासें कटक मांहे आवतां चित्रगुप्त सा र्थवाहनी साथें चाली, तिहां हुं इंधण लेवा गइ हती तिहां मने जटनिल्ल प कडीने पल्लीमांहे लइ गया. अने महारां आजरण उतारी लीधां. ते पाल्लि आजेज श्रीविजय राजायें नांजी, तेवारें हुं नाशीने इहां आवी बेठी ढुं. ते सांजली वली सागरचंद्रें पण सिद्धपुरुपनी वात तेनी आगल कही संज लावी. पढी बेहुजण एकठां मली श्रीसिद्धार्थपुरीना मार्गजणी चालतां थयां.
हवे सुरेंद्रदत्त, सिद्धार्थपुरीयें आवी श्रीरुपजदेवने देहरे घणो द्रव्य व्यय करीने अष्टाइ महोत्सव करावे ठे. तिहां हजारो माणस गाम गामनां आ व्यां ठे, तेनी साथें मृगांकलेखा पण आवी ठे, तेणें सुरेंद्रदत्तने दीठो, ते वारें स्तनयुगलथी कांचली जेदी दूधनो प्रवाह चाल्यो. ते जोइ सुरेंद्रदत्तें विचार्युं जे एज महारी माता जणाय ठे. एवामां ते सिद्धपुत्र पण श्रीनं दीश्वरद्वीपनी यात्रा करी तिहां आव्यो ठे, तेणें सुरेंद्रदत्तने कह्युं शुं विचा र करे ठे? ए तहारी मृगांकलेखा माता आवी ठे, माटें एने पगे लाग. एवुं सांजली सुरेंद्रदत्त आवी पगे लाग्यो. मातायें तेने उत्संगें वेसाड्यो, बेहुनें आनंद उपनो, परस्पर पोतानुं वृत्तांत कही हर्ष पामे ठे. एवामां सुय शा सिद्धपुत्रें कह्युं के हे सुरेंद्रदत्त! तुने वधामणी आपुं बुं, के तहारो पिता सागरचंद्र चित्रलेखानी साथें ढूकडो आव्यो ठे, चाल. तेनी साहामा म लवा जइयें! एवुं कही सुरेंद्रदत्तने आंगलीयें वलगाडी मृगांकलेखा तथा घणां नगरना लोकसहित सिद्धपुत्र चाल्यो. वली ते सिद्ध पुत्र आगलथी जइ सागरचंद्रने पण कहेवा लाग्यो के तहारो पुत्र मृगांकलेखा साथें त

हारी साहामो आवे छे, एटलामां सुरेंद्रदत्त दूरथी दंमवत् प्रणाम करतो आवीने पिताने पगे लाग्यो, तेने सागरचंद्रे उपाडीने उत्संगें बेसाड्यो, आनंदाश्रुयें स्नान कराव्युं. सर्व आवी सोपारीना वृक्ष नीचें बेठां. मृगांकलेखायें चित्रलेखायें परस्पर आलिंगन लीधां, ते दिवसें ते चार जणने जे आनंद उपनो, तेनी सीमा केवली जाणे, अथवा ते चारे जणनां मन जाणे!

हवे कनकध्वजराजा कनकबाहुना मुखथी सागरचंद्रनुं आगमन जाणी साहामो चाली आव्यो. तेमने हस्ती उपर चडावी नगर सणगारीने पोताने आवासें तेडी लाव्यो. घणी आगता स्वागता करी, एक महीनासुधी पोताने घेर खमावी पछी साथें कटक आपी उज्जयणीयें पहोंचतो कीधो. तिहां पण सुयशा सिद्धपुत्रें अवंतिसेनराजाने तथा कुमरना माता पिताने आगलथी जइ मृगांकलेखा तथा सुरेंद्रदत्त पुत्रनी साथें सागरचंद्र आव्यानी वधामणी दीधी, ते सांजली अवंतीसेन राजा सागरदत्तशेठनी साथें तेमने तेडावा माटें सामो आव्यो. सागरचंद्र राजाने तथा पोताना पिताने पगे लाग्यो. नगर शणगार्युं, हाथी उपर बेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा आवी पद्माने पगे लाग्यां. सुरेंद्रदत्त पण वडी आइने पगे लाग्यो. वडी आइयें खोलामां बेसाड्यो. समस्त नगरलोकने हर्ष उपनो, वधामणां थयां, सागरचंद्रे घणुं द्रव्य खरचीने श्रीजिनजुवननें नाना प्रकारें पूजा करी, साते खेत्रें वित्त वावर्युं.

एकदा प्रस्तावें श्रीयुगंधर केवली उद्याननने विषे समोसर्या, तेनी उद्यानपालें वधामणी दीधी. तेवारें राजा तथा सागरचंद्र, सुरेंद्रदत्त, मृगांकलेखा, चित्रलेखा, जनक, जननी आदिक नगरवासी समस्त लोक वांदवा गयां. वांदी धर्मदेशना सांजली घणा जनोयें सम्यक्त्वादिक उच्चर्यां.

हवे मृगांकलेखा पूछती हवी, के हे जगवन्! में पूर्वें श्यां कर्म कीधां के जे थकी हुं कलंकादिक अनेक डुःख पामी? केवली कहे, हे मृगांकलेखा! सांजल. सिंहपुर नगरने विषे कंदर्प्प नामें ब्राह्मण हतो, ते कनकरत्नमय प्रासादने विषे अनंगदेवराजपुत्रें आराधतो थको अहंकार वहेतो रहे छे. तेहीज नगरें एक सत्यकीर्त्ति नामें तापस रहे छे, ते माहातपस्वी लोकमांहे पूजातो प्रसिद्ध छे. हवे पुरोहित ते तापसनी पूजाने असहेतो थको अनंगदेव राजपुत्रने मुखें कंदर्पविप्रने कहेवरावतो हवो, जे शत

कीर्त्ति तापसनी उपर कोइ एवुं कलंक चडावीयें के जेथकी एनी पूजा प्र
भावना घटी जाय, ते सांभली कंदर्प ब्राह्मणें पण कह्युं के हुं ठल जोइने
वखत आवे ए काम जरूर करीश. एनी प्रतिष्ठाने हाणी पहोंचाडीश.

हवे तेहीज नगरने विषे पद्मदेवश्रेष्ठीनी कमला नामें पुत्री छे, ते ल
लितांगशेठना पुत्रनी उपर आसक्त छे. तेमाटें ते पुत्री लोकोमांहे व्यभि
चारिणी कहेवाय छे. ते कमला कन्या एकदिवस पोताना माता पिताने क
ह्याविनाज किहांएक जती रही छे, अने देवयोगथी सत्यकीर्त्ति तापस
पण तेज दिवसें कोइने कह्याविना एमज ग्रामांतरें गयेलो छे. तेवारें
लोकमां वात चाली रही जे कमला कोइकनी साथें चाली गइ छे, ते ठल
पामीने कंदर्पविप्रें वात चलावी जे कमलाने तो सत्यकीर्त्ति तापस लइ गयो
छे. ते वात लोकोयें सत्य करी मानी लीधी अने सत्यकीर्त्तिनो निरादर थ
यो. पछी सत्यकीर्त्तिने ग्रामांतरथी आवतो जाणीने कंदर्प ब्राह्मणे विचा
र्युं जे हुं लोकमांहे खोटो पडीश. तेमाटें लोकोने कह्युं के दुष्ट तापस आ
व्यो छे तेने शिक्षा आपीयें पछी घणालोकनी साथें जइ यष्टिमुष्टिने प्रहारें
करी तापसने मार मार्यो. ते तापसें उपशांत पणे ताडना सहन करी.

कंदर्पविप्रने सातमे दिवसें जीभमां फोडलो थयो, तेनी वेदनायें मरण
पामी कूतरो थयो, कूतरो पण तेवीज जीभनी वेदनायें मरण पामी वेश्या
थइ. तिहां चंदनव्यवहारीयानो पुत्र श्रावक हतो, तेनी साथें वेश्यानो सं
बंध होवाथी वेश्या जिनधर्म पामी. एकदा सरोवरें गइ, तिहां विलास करतुं
राजहंसनुं मिथुन दीठुं, तेवारें क्रीडायें हंसने लइ कुंकुमें करी तेनुं शरीर
विलेपी मूक्युं. तेमाटें हंसलीयें तेने चक्रवाल जाणीने एकवीश घडी काल
प्रमाण तेनी साथें क्रीडा नहीं. धणीने विरहें दुःख पामती करुणस्वरें रोवा
लागी, तेने देखी ते वेश्याने करुणा आवी, तेवारें जलें करी कुंकुम धोइ हं
सने उजलो कीधो. हंस, हंसी, बेहु संयोग पामी रमवा लाग्यां. पछी ते
वेश्या पोताने घेर जइ घणा कालसुधी श्रीजिनधर्म पाली मायादोषें सौध
र्मेंद्रनी अग्रमहिषी थइ. तिहांथी चवीने इहां तुं मृगांकलेखा थइ छो.

तथा अनंगदेव जें राजपुत्र हतो, तेणें कंदर्पविप्रें करेला पापनी अनुमो
दना कीधी. तेथी ते घणा भव संसारमांहे भमीने इहां चित्रलेखा नामे त
हारी सखीपणे आवी उपनो छे. तें जे तापसने कलंक दीधुं तेना पापें

करी तुं इहां कलंक पामी. वली तें जे तापसने मास्यो हतो, तेणे करी तुं दुःख पामी तथा अनंगदेवें तहारा पापने सहाय कीधुं, तेमाटें इहां चित्रलें खायें तहारी साथें दुःख जोगव्युं, तथा एकवीश घडी पर्यंत हंस हंसीने वियोग पाड्यो, तेथी तुं एकवीश वर्षसुधी पतिनी साथें वियोग पामी, एवी कर्मनी विपरीतता जाणीने कर्म छेदवाने अर्थें साधुनो धर्म तथा श्रावकधर्म पालो.

मृगांकलेखा केवलीना मुखथी पूर्वजवनां कर्म सांजली ते कर्मोंने आलोइ पडिक्कमी प्रायश्चित्त आलोइ शुद्ध श्रावकधर्म पालती हवी. सागरचंद्र पण समकेतमूल श्रावकधर्म आदरी धर्मकार्यने विषे तत्पर थयो. अंत समयें सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा बेहु जण दीक्षा लइ कर्मक्षय करी शिवपदनें अनुजवता हवा. ए समकेतना छ आगारने विषे मृगांकलेखानी कथा कही.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशिकानामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण बालावबोधे सम्यक्त्वषडाकारस्वरूपनिरूपण नामा दशमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १० ॥

हवे अगीयारमुं समकेतनी छ जावनानुं द्वार कहे छेः—

॥ जाविज्ज मूलजूअं, डुआरजूयं पइठ निहि जूअ ॥ आहार जायणमिमं, सम्मत्तं चरण धम्मस्स ॥ ५५॥ अर्थः—(सम्मत्तं के०) समकेत प्रत्यें (जाविज्ज के०) एवुं जावीजें विचारीयें जे (चरणधम्मस्स के०) चारित्र धर्मनुं (मूलजूअं के०) मूलजूत छे जेम जे वृक्षनुं मूल सबल होय ते वृक्ष वायरादिकें पडे नहीं. सुकाइ पण न जाय, तथा तेने शीत तापना पराजव पण न थाय, शाखा, प्रतिशाखा, पत्र, फूल फलें करी विस्तार पामे, तेम चारित्ररूप धर्मनुं समकेतरूप मूल जो दृढ होय, तो ते चारित्रधर्म देव, दानव, मानवादिक रूप वायरायें चलाव्यो चले नहीं, परिसहादिकें विणसे नहीं, तेमाटें समकेतने मूलजूत कहीयें. ए प्रथम जावना जाणवी.

२ तथा समकेत जे छे ते चारित्र धर्मरूप राजनगरनुं (डुआरजूअं के०) द्वारजूत छे एटले चारित्रधर्मरूप राज्यनगर तथा राज्यमंदिर छे ते मांहे जो समकेतरूप द्वार होय तो प्रवेश कराय. ते द्वार सबल जोइयें जे द्वार मिथ्यात्वमोहनीय कर्मादि रिपुयें जांगी शकाय नहीं. जेमां प्रमादरूप चोर प्रवेश करी शके नहीं, तेमाटे समकेतनें द्वार जूत कहीयें ए बीजी जावना.

३ तथा चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेनो समकेत जे छे, ते (पइठ

के०) प्रतिष्ठानभूत छे. एटले चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेने जो सम्य क्त्वरूप प्रतिष्ठान सबल होय तो ते चिरस्थायी थाय,जेम राजप्रसादादिक नेविषे पीठबंध सबल जोइयें,तो ते प्रासाद पडे नहीं तेम चारित्रधर्म रूप प्रासाद छे, तेने समकेतरूप प्रतिष्ठान पीठबंध सबल होय तो ते पडे नही. तेमाटे समकेतने प्रतिष्ठानभूत कह्युं. ए त्रीजी भावना जाणवी.

४ तथा समकेत जे छे, ते (निहिभूअ के०) निधिभूत छे एटले चारित्र धर्मना मूलगुण अने उत्तरगुणरूप आदिक जे रत्न, तेने राखवाने समकेत निधानभूत छे. जेम चक्रवर्त्तीना निधानमांहे सघली वस्तु पामीयें, तेम समकेतरूप निधानमांहे चारित्रधर्मना मूलगुण उत्तरगुणरूप रत्न पामीयें, तथा ते मूलगुण उत्तरगुणनुं उत्पत्ति स्वरूप पामीयें, तेमाटें समकेतने निधिभूत कह्युं. ए चोथी भावना जाणवी.

५ तथा समकेत जे छे, ते (आहार के०) आधारभूत छे, जेमाटें चारित्रधर्म जे रहे, ते समकेतने आधारें रहे, जेवारें समकेतरूप आधार भांगो, तेवारें तेनुं आधेय जे चारित्र ते पण गयुं, एम जाणवुं. कारण के चारित्रधर्मविना समकेत रहे, पण समकेतविना चारित्रधर्म रहे नहीं. माटें चारित्र ते आधेय छे अने समकेत ते आधारभूत छे. ए पांचमी भावना.

६ तथा (इमं के०) आ समकेत जे छे, ते (भायणं के०) भाजन छे, एटले चारित्रधर्मरूप जे घृत, दुग्ध, दहीं, इक्षुरस, श्रीफल जल प्रमुख छे, ते समकेतरूप सुवर्णादि भाजनविना रही शके नहीं. तेमाटें समकेतने भाजन कह्युं, ए छठी भावना जाणवी ॥ ५५ ॥

हवे एज गाथानुं विवरण सूत्रकार त्रण गाथायें करी करे छे.

॥ देइ लहुं मुक्खफलं, दंसणमूले दढम्मि धम्मदुमे ॥ मुत्तुं दंसण दारं,ण पवेसो धम्मनयरम्मि ॥ ५६ ॥ नंदइ वयपासाउ, दंसण पीढम्मि सुप्प इठंमि ॥ मूलुत्तरगुण रयणा,णं दंसण अरकय निहाणं ॥ ५७ ॥ सम्मत्त महाधरणी, आहारो चरण जीव लोअस्स ॥ सुयसील मणुन्नरसो, दंसण वर भायणे धरइ ॥ ५८ ॥ अर्थः-(धम्मदुमे के०) यतिधर्म तथा श्रावकधर्मरूप द्रुम एटले वृक्ष तेने विषे (दंसणमूले दढंमि के०) दर्शन जे समकेत ते रूप मूल दृढ छते (मुरकफलं के०) मोक्षरूप फल प्रत्यें (लहुं के०) शीघ्र (देइ के०) दीये छे, जेम बीजा पण सबलवंत जे आम्रादि

कनां वृक्ष छे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे छे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष छे,तेने जो समकेतरूप मूल थड निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम नावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेसी कही यें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगर मां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो नूलाज नम्या फरे छे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कठयरं ॥ नव सायरं अपारं, जेणावरिया नमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सव्वाइं ॥ अरयव्व तु बलग्गा, नमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी नावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद छे तेने दृढ एवो (दंसणपीवंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद ऊगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंमाण थाय नहीं, ए त्रीजी नावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंमविशुध्यादिक ॥यतः॥ पिंमस्स जा विसोही, समईउ नावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अनिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत छे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चरकाण, चार अनिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार नावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावकजनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) सम केत छे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे छे. ते अमूल्य छे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं, अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपजे रत्न तेनो आधार समकेत छे, गुण आधेय छे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां नाववुं, ते चोथी नावना जाणवी ॥ ५३ ॥

तथा महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १८०००० योजन प्रमाण जाम पणे पृथ्वीपिंम छे, तलीयामां तीर्छि सातराज प्रमाण विस्तार वाली ते जे म असंख्याता द्वीपसमुद्र परिवेष्टिता सचराचर जीवलोक तेनो आधार छे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चा रित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले नव्यप्राणीनो गण. तेनो (आहारो के०) अधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, वेदक अने सास्वाद न, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व. तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी छे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शके नहीं, एवी नावना ते पांचमी नावना.

तथा (सुय के०) श्रुत ते द्वादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्जनरूप क्रिया एनो अनिप्राय कहीयें छेयें. सम्य ग्ज्ञान अनें सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मल्यां थकां अर्थ साधक था य ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग्ग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविछा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशी लरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस छे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (नायणे के०) नाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखें, कारण के समकेत रूप नाजनवि ना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए छठी नावना जाणवी ॥५८॥

हवे ए छ नावनाने विषे चंद्रलेखानुं दृष्टांत कहीयें छैयें. आ जंबुद्वीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर छत्र समान वटवृक्ष छे, तिहां शुकमिथुन व से छे, ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइ जइ मणि मय पांजरमां राख्युं. सारां सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं नोजन करा वे, समस्त कला नणावी. छए दर्शनना नेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

कनां वृक्ष छे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे छे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष छे,तेने जो समकेतरूप मूल थइ निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम भावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेसा कही यें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगर मां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो भूलाज भम्या फरे छे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कठयरं ॥ भव सायरं अपारं, जेणावरिया भमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं ॥ अरयव तु बलग्गा, भमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी भावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद छे तेने दृढ एवो (दंसणपीढंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद डगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंडाण थाय नहीं, ए त्रीजी भावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंडविशुध्यादिक ॥यतः॥ पिंडस्स जा विसोही, समईउ भावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अभिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत छे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चरकाण, चार अभिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार भावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावक जनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) सम केत ठे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे ठे, ते अमूल्य ठे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं. अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपज रत्न तेनो आधार समकेत ठे, गुण आधेय ठे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां नाववुं, ते चोथी नावना जाणवी ॥ ५३ ॥

तथा महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १८०००० योजन प्रमाण जाड पणे पृथ्वीपिंड ठे. तलीयामां तीर्छि रानराज प्रमाण विस्तार वाली ते जे म असंख्याता द्वीपसमुद्र परिवेष्टित सचराचर जीवलोक तेनो आधार ठे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चा रित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले नव्यप्राणीनो गण, तेनो (आहारो के०) आधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, ओपशमिक, वेदक अने सास्वाद न, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व, तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी ठे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शके नहीं, एवी नावना ते पांचमी नावना.

तथा (सुय के०) श्रुत ते द्वादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्जनरूप क्रिया एनो अनिप्राय कहीयें ठेयें. सम्य ग्ज्ञान अने सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मल्यां थकां अर्थ साधक था य ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग्ग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशी लरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस ठे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (नायणे के०) नाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखे, कारण के समकेत रूप नाजनवि ना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए ठठी नावना जाणवी ॥५८॥

हवे ए ठ नावनाने विषे चंद्रलेखानुं दृष्टांत कहीयें ठेयें. आ जंबुद्वीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर ठत्र समान वटवृक्ष ठे, तिहां शुकमिथुन व से ठे, ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइ जइ मणि मय पांजरमां राख्युं. सारां सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं नोजन करा वे, समस्त कला नणावी. ठए दर्शनना नेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

कनां वृक्ष छे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे छे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष छे,तेने जो समकेतरूप मूल थड निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम नावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेग कहीयें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगरमां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो नूलाज नम्या फरे छे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कठयरं ॥ नवसायरं अपारं, जेणावरिया नमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सवाइं ॥ अरयव तु बलग्गा, नमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी नावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद छे तेने दृढ एवो (दंसणपीढंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद डगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंडाण थाय नहीं, ए त्रीजी नावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंडविशुध्यादिक ॥यतः॥ पिंडस्स जा विसोही, समईउ नावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अनिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत छे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चखाण, चार अनिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार नावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावकजनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) समकेत ढे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे ढे, ते अमूल्य ढे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं, अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपजे रत्न तेनो आधार समकेत ढे, गुण आधेय ढे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां नाववुं, ते चोथी नावना जाणवी ॥ ५७ ॥

तथा महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १८०००० योजन प्रमाण जाम्पणे पृथ्वीपिंम ढे, तलीयामां तीर्छि सातराज प्रमाण विस्तार वाली ते जेम असंख्याता द्वीपसमुद्र परिवेष्टिता सचराचर जीवलोक तेनो आधार ढे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चारित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले नव्यप्राणीनो गण, तेनो (आहारो के०) अधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, वेदक अने सास्वादन, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व, तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी ढे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शकें नहीं, एवी नावना ते पांचमी नावना.

तथा (सुय के०) श्रुत ते द्वादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्ज्जनरूप क्रिया एनो अनिप्राय कहीयें ढैयें. सम्यग्ज्ञान अनें सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मल्यां थकां अर्थ साधक थाय ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग्ग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठ्ठा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशीलरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस ढे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (नायणे के०) नाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखें, कारण के समकेत रूप नाजनविना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए ढठी नावना जाणवी ॥५८॥

हवे ए ढ नावनाने विषे चंडलेखानुं दृष्टांत कहीयें ढैयें. आ जंबुद्वीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर ढत्र समान वटवृक्ष ढे,तिहां शुकमिथुन वसे ढे,ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइ जइ मणिमय पांजरमां राख्युं. सारा सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं नोजन करावे, समस्त कला नणावी. ढए दर्शनना नेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

कनां वृक्ष छे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे छे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष छे,तेने जो समकेतरूप मूल थड निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम भावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेश कही यें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगर मां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो भूलाज भम्या फरे छे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कठयरं ॥ भव सायरं अपारं, जेणावरिया भमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सब्बाइं ॥ अरयव्व तु बलग्गा, भमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी भावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद छे तेने दृढ एवो (दंसणपीढंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद डगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंडाण थाय नहीं, ए त्रीजी भावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंडविशुध्यादिक ॥यतः ॥ पिंडस्स जा विसोही, समईउ भावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अभिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत छे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चरकाण, चार अभिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार भावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावकजनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) समकेत बे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे बे, ते अमूल्य बे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं, अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपजे रत्न तेनो आधार समकेत बे, गुण आधेय बे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां जाववुं, ते चोथी जावना जाणवी ॥ ५७ ॥

तथा महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १८०००० योजन प्रमाण जाडपणे पृथ्वीपिंड बे, तलीयामां तीर्छि सातराज प्रमाण विस्तार वाली ते जेम असंख्याता द्वीपसमुद्र परिवेष्टिता सचराचर जीवलोक तेनो आधार बे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चारित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले जव्यप्राणीनो गण, तेनो (आहारो के०) अधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, वेदक अने सास्वादन, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व, तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी बे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शकें नहीं, एवी जावना ते पांचमी जावना.

तथा (सुय के०) श्रुत ते द्वादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्जनरूप क्रिया एनो अनिप्राय कहीयें बैयें. सम्यग्ज्ञान अने सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मल्यां थकां अर्थ साधक थाय ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग्ग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठ्ठा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशीलरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस बे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (जायणे के०) जाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखें, कारण के समकेत रूप जाजनविना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए बही जावना जाणवी ॥५८॥

हवे ए ब जावनाने विषे चंद्रलेखानुं दृष्टांत कहीयें बैयें. आ जंबुद्वीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर बत्र समान वटवृक्ष बे, तिहां शुकमिथुन वसे बे, ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइ जइ मणिमय पांजरमां राख्युं. सारा सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं जोजन करावे, समस्त कला जणावी. षट दर्शनना जेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

तिहां तेने सार्थे लइ जाय. एक घडी मात्र पण अलगा मूके नहीं. एकदा चारणश्रमण साधुयें ते विद्याधरने प्रतिबोधीने शुकमिथुनने मलयाचल पर्वतें पाबुं वटवृक्ष उपर मूकाव्युं. पबी ते मिथुनने स्वेबायें विविधप्रकारना जोग विलास जोगवतां एक पुत्र थयो, अनुक्रमें सूडासूडीने परस्परें कलह थयो, तेवारें सूडायें बीजी सूडी संघरी अने आगली सूडीने बोलावे नहीं, पबी सूडीयें कह्युं महारो पुत्र मने आप. सूडायें कह्युं ए महारो पुत्र बे, ते हुं नहीं आपुं. जेमाटे पुत्र ते पितानो अने पुत्री ते मातानी एवो लोक व्यवहार बे. सूडीयें कह्युं, ए न्याय ते कोना घरनो ? जेमाटे में गर्ने धस्यो, पाली पोषी महोटो कीधो, माटे महारोज पुत्र कहेवाय. एम बेहु पोतपोतामां विवाद करवा लाग्यां, तेवारें सूडायें कह्युं के चाल. आ नगर आपणी नजीक बे, तिहां राजसजायें जइ न्याय करावीयें. जे प्रमाणें ते ठेरावी आपशे, ते प्रमाणें आपणने कबूल बे.

पबी ते बेहु जण नगरने विषे गयां. राजसजायें जइ बेठां. राजा, मंत्री प्रमुख सजानां लोक आगल विवाद कस्यो. मंत्री प्रमुखें घणो विचार कस्यो, पण कोइने रूडो विचार चित्तमां प्रतिजासे नहीं. तेवारें प्रधानें कह्युं ए वातनी समज अमनें पडती नथी माटें अन्यत्र स्थानकें जइ कोइ रूडा जाण पुरुष होय तेनी पासें न्याय करावो. तेवारें ते गामना डुर्ललित नामें राजायें कह्युं जे आपणी पासें न्याय कराववा आव्यां बे, ते जो आपणे न्याय न करीयें, तो आपणने लज्जा जेवुं बे. माटें ए विवाद हुं पोतें जांजीश.

पबी राजायें पोतें विचार करीने एवो ठेराव कस्यो, के जे बीज वावे बे, तेमांथी जे अनाज उपजे बे ते बीज वावनार धणी लइ जाय बे. तेम बेटो ते बापनोज कहेवाय अने बापज लीये, परंतु माता तो नियमा अलगीज रहेवी जोइयें. जेम जूमिकामां बीज वावनारो बीज लइ जाय, अने जूमि क्षेत्राधिपनी कहेवाय. जूमिकाने बीजनो संबंध नथी, तेमाटें सूडी, पोतानुं क्षेत्र जे शरीर तेने जलें लइ जाय, पण पुत्रनो संबंध एने नथी. एवो विचार करी राजायें शुकपुत्र सूडाने आप्यो, तेवारें सूडी रोवा लागी अने राजाने कहेवा लागी के जे न्याय तमें कीधो, ते जलो कीधो ? राजा आगल कोनुं चाले ? पण ए न्याय तमारी वहीमां लखावो. जेम ए वली पण बीजा विवादमां काम आवे. बीजो कोइ विवाद आवे, तो तेनो चुकादो प

ए एमज कराय! राजायें पण ते वात कबूल करीने ते न्याय मंत्रीने हाथे वहीमां लखाव्यो ॥ यतः ॥ बीजिनएव हि बीजं, क्षेत्रं जवतीह तत्कृतामेव ॥ डुर्ललितमहिनाथो, निर्णयमेवं स्वयं चक्रे ॥ १ ॥

ए श्लोकने सूडीयें राजाना दफतरमां लखाव्यो अने पोतें पुत्रने विरहें मूर्छा पामी ढली पडी. सूडो हर्ष पाम्यो थको पुत्रने लइ गयो. प्रधाने शीतलोपचारें करी सूडीनें सावधान करी. सूडी पोताना धणी तथा पुत्रथकी विछूटी थकी श्रीशत्रुंजयतीर्थें जइ श्रीऋषजदेवनां दर्शन करी संसारथी विरक्त थइ थकी कहेती हवी ॥ यतः ॥ न गिहं न हि जरतारो, नय सयणा नेय अंगजाउ य ॥ सरणं इह संसारे, एग मिह जिणमय मुत्तं ॥ १ ॥ एम कही अनशन करी बेठी. अंतसमयें डुर्ललित राजानो अन्याय तेना मनमां आव्यो, तेमाटे मध्यमजावथकी कांची नगरीयें चंदनसागरशेठने घरे घणा पुत्र छे, तेनी उपर ए पुत्रीपणे उपनी, तेनुं नाम चंद्रलेखा दीधुं. ते पूर्वेजवना अन्यासथी निश्चल सम्यक्त्वधारिणी जिनधर्ममांहे प्रवीण थइ.

पछी तिहां तेने राज्यसजादिकनी जूमि देखी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, सूडासूडीनो जव दीठो, विवादनी वात सांजरी आवी, कर्मप्रकृति खेत्रसमास प्रमुख ग्रंथोना विचार जाणवामां प्रवीण थइ. तेवारें चिंतववा लागी जे राजायें अन्याय कीधो छे, माटें हवे एनां फल हुं एने देखाडुं. एवुं मनमां विचारी चंदनसागरश्रेष्ठीनी पासें सेराह, खुगह, हांसला, नीलुआ, कालुआ प्रमुख नानादेशना घोडा अणावी श्रीकार पायगायें बांध्या. डुर्ललितराजा जोवा आव्यो, घोडा देखी घणो हर्ष पाम्यो. वेचाता लेवानी मागणी करी. शेठें कह्युं ए घोडा हुं वेचतो नथी ए म्हारे घेर बांध्या रहेशे. वली राजायें कह्युं ताहारा किशोर आप. तेवारें शेठें पांच वर्ष पर्यंत माग्या आप्या, तेमांथी घणा किशोर थया,तेवारें पोतानी पुत्री चंद्रलेखाना कहेवाथी शेठें ते किशोर पोताने घेर आणी बांध्या ते वात अश्वरक्षकें जइ राजा आगल कही. राजायें रोष करी चंदनशेठने तेडाव्यो, तेवारें चंद्रलेखायें पिताने कह्युं के राजा पूछे, तो कहेजो जे म्हारी पुत्रीने खबर छे.

हवे चंदनशेठने राजायें पूछ्युं के तमें म्हारा अश्वकिशोर केम लीधा? शेठें कह्युं ए वातनो जवाब म्हारी पुत्री आपशे. हुं जाणतो नथी. राजायें कह्युं तमारी पुत्रीने तेडावो. तेवारें चंद्रलेखा अद्भुत शृंगार करी सुखासने

वेसी, घणी दासीयें परवरीथकी महोटा आमंबर सहित राजसनायें आवी. राजा तेनुं रूप देखी चमत्कार पाम्यो. हवे राजाने चंड्लेखा प्रत्युत्तर आपशे, ते कौतुक जोवाने अर्थे तिहां घणां लोक एकगं थयां. चंड्लेखा पण राजाने प्रणाम करी पोताना पिताना खोलामां आवी बेगी.

राजायें पूब्युं तहारा पितायें महारी घोडीना जणेला किशोर घोडा केम लइ लीधा? चंड्लेखा बोली के हे राजन्! तहारुं वचन संनाल. राजा घणुयें संनारे पण सांनरे नहीं. तेवारें चंड्लेखायें कह्युं के एकने आ नवनी वात पण सांनरे नहीं अने एकने घणा नवांतरनी वातो सांनरे! ए आप आपणा ज्ञानावरणीय कर्मनी केवी विचित्रता गे? ते वचन सांनलीने वली पण राजा घणो उपयोग दीये पण कांइ स्मरणमां आवे नहीं, तेवारें राजायें चंड्लेखाने कह्युं, मनें कांइ सांनरतुं नथी, माटे तुंज कहे. चंड्लेखायें कह्युं, तहारेज वचनें ए तुरंगम जो महारा पिताना थाय, तो हुं लउं, नहीं कां महारा घरनुं सर्वस्व आपुं. एवुं पण करी पगी राजाना न्यायना दफतर मंगाव्यां, तेमां लखेलो श्लोक काहाडी राजाने कह्युं आ श्लोक वांचो. ते श्लोक वांच्यो के तुरत ते राजानुं श्यामवदन थयुं. चंड्लेखायें कह्युं न्यायपूर्वक बोलजो. ए अश्वकिशोर महारा थाय, के नहीं थाय? राजा शुं करे वचने बंधाणो, ते केम पलटाइ शके? मंत्री प्रमुख समस्त लोक चंड्लेखानी चतुराइ देखी चमत्कार पाम्यां. चंड्लेखा राजानी विदायगिरी मागी गाजते वाजते घेर आवी. सघला किशोर घरे आणी बांध्या. नीला नीला जव मगावीने किशोरने खवरावता हवा.

हवे राजा अपमान पाम्यो थको विचारवा लाग्यो के हुं एनुं पाणिग्रहण करी मारे वश आणीने हेरान करुं! एवुं चिंतवी चंदनशेठने तेडावी कह्युं, तहारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण तुं महारी साथें कराव. शेठें आवी पुत्रीने पूब्युं पुत्रीयें ते वात कबूल करी, तेवारें महोटा महोत्सवें राजाने पुत्री परणावी दीधी. परण्या पगी राजायें तेने रहेवामाटें पोताना महेलथी घणुंज दूर एक प्रासाद करावीने तेमां तेने राखी. अने कहेतो हवो के तुं तो गमे तेवी धूतारी हती, पण जो के महारी खबडदारीथी में पण तुजने कहेवी धूती गे? राजा कहे गे, के हुं प्रतिज्ञा करुं बुं ते तुं सांनल. आजदिवसथी मांमीने हुं तुजने कामरागें करी बोलावीश नहीं. ते सांनली चंड्लेखा

बोली, स्वामी! हुं पण प्रतिज्ञा करुं छुं ते सांभलो! जो हुं चंदनशेठनी पुत्री हइश, तो म्हारी एव तमने जमाडीश, तमारे हाथे हमालनी माफक म्हारी शय्यासुधां उचकावीश, एवां वचन तेनां सांभली राजा क्रोधें भराणो थको अपमानीती स्त्रीयोना समूहमां तेने बेसाडी दीधी. अने तेनी साथें बोलवा चालवानो व्यवहार पण बंध कस्यो.

हवे चंद्रलेखा प्रतिदिन अष्टप्रकारी पूजा करे, सौभाग्यकल्पवृक्ष प्रमुख घणां तप करे, एकदा राजानी शिख मागी तपनुं उजमणुं करवा पिताने घरे आवी. पितायें तेनी दुर्बलकाया देखी दुःख करवा मांड्युं. पुत्रीयें कह्युं हे पिताजी! दुःख म करो. जे वाव्युं होय ते लूणीयें,लख्युं होय,ते पामीयें! कीधुं होय,ते भोगवीयें! एम पिताने समजावी तपनुं उजमणुं कर्युं.

पछी पिताने कह्युं अत्यंत रूपवंत अने सकल कलाकलापवंत एवी पच्चास कन्याउ मुजने आणी आपो. तथा तमारा घरथी मांभीने म्हारा घरसुधी छानी मानी एक सलंग खोदावी आपो. तथा म्हारा घरथी मांभीने द्वार वासिनी देवीना देरासरसुधी बीजी पण एक सलंग खोदावी आपो. तथा म्हारा घरनी नीचेंनी सलंगमांहे एक म्होटुं सुंदरप्रासाद करावो. एटलुं माहरुं काम करीने तमें निश्चिंत थाउ. पछी म्हारी कला जूउ. जे पुत्रीनो पिता द्रव्यवान् होय, तेने कांइ अडे नहीं. तेथी चंद्रलेखायें कह्युं तेटलुं काम तेना पितायें द्रव्यने बलें थोडा दिवसमां तैय्यार करी आप्युं.

पच्चास कन्या जे आणी छे तेहने चंद्रलेखायें सलंगना मार्गेथी जइ पोताना पिताना घरमांहे गीत, नृत्य, वाद्य, वेणु, वीणा, तालवादन प्रमुख समस्त कला शीखावी. पछी मणिमय जिनप्रासाद कराव्युं छे, तेमां सिंहासन मंमावी इंद्राणीनी पेरें चंद्रलेखा बेसे. अने पचास कन्याउनी पासें रात्रियें नाद्य करावे, राजा बे पहोर रात्रि वखतें मृदंगादिक वाद्यनो शब्द सांभली चमत्कार पामे, अने मनमां विचारे, जे ए नाद्य पातालने विषे! अथवा आकाशने विषे! किंवा पृथ्वीतलने विषे थाय छे! तेनो निश्चय करवा माटें राजा पल्यंक मूकी नीचे बेसी कान देइ सांभले. चंद्रलेखा पण प्रभातना वाजां वागे के संगीत वीसर्जी पच्चास कन्याउने सलंगने रस्ते पिताने घेर मोकली आपे. अने पोतें पोताना प्रासादने विषे आवी बेसे, वली पण एक दिवसनो आंतरो नाखी तेमज मध्यरात्रिने

समयें संगीत मंमावे. राजा पण तेमज विस्मय पामतो सांनले. अने चंड लेखा पण प्रनातनां वाजा वाग्यां सांनले के नाटकने विसर्जन करी कन्याउने पिताने घेर मोकली पोतें महेलमां आवी बेसे.

राजा ते नाचनी जगा शोधवा माटें घणुंय नमे, पोतें जूवे, जोवरावे, पण नाटकनी जगा क्यांहि मले नहीं. एकदा राजा,राजसनायें आवी वेग, तेवारें सर्वने पूछ्युं के रात्रें संगीत क्यां थाय डे? पण कोइ जवाब आपे नहीं. एम ते राजा नाटकना स्थलनी शोध माटे कष्टें दिवस अतिक्रमतो, क्यारें ए स्थानक देखशुं! एवे ध्यानें रहे डे.

चंडलेखायें राजानो मनोगत नाव जाणी एक कन्याने योगणीना वेषनो आंम्बर करावी संकेत करी शीखवीनें राजानी समीपें मोकली. ते योगणीने वेशें राजसनायें आवी. राजायें मान देइ आसन आपी बेसाडी. ते पण राजाने आशीष आपी बेगी. राजायें पूछ्युं हे स्वामिनि! तमारा मांहे शी शी शक्ति डे? योगणीयें कह्युं तमारे शक्ति पूबीने शुं करवानुं डे? जे काम होय, ते कहो, तो करी आपीयें. एवुं तेनुं वचन सांनली राजा तेने पोताने घेर तेडी लइ गयो. नलां नोजन करावी, नलां वस्त्रें करी संतोषी. वली रात्रिने समयें संगीत सांनली राजायें कह्युं ए संगीत क्यां थाय डे? ते मुऊने देखाडो. योगणीयें कह्युं ए देवतानां नाटक एवी रीतें देखाडाय नहीं माटें जो तमने जोवानी इच्छा होय, तो तमारी आंखे त्रण पाटा बांधी पडी देव शरीर तमने आपीने तिहां तेडी जइशुं. राजायें ते वात पण अंगीकार करी. प्रनात समयें योगणीयें मंमल मंमाव्युं,मंत्रजाप करवा लागी. 'ॐफुट्फुट्स्वाहा' एवो जाप करती रात्रिने समयें लोकोनी आव जाव बंध थया पडी राजानी आंखें त्रण पाटा बांधीनें चंडलेखाने घेर तेडी गइ. तिहांथी चंदनश्रेष्ठीने घेर लइ गइ, तिहांथी द्वार निवासिनी देवीने घरे लइ गइ, पडी सलंग नवनना द्वारनें विषे एकांतें राखीने आंखना पाटा डोड्या, तेवारें राजायें पाताल नुवन दीठुं ते जाणे साक्षात् देवनुवनज होय नहिं? तेनी मध्यमां रत्नमय सिंहासने वेगी चंडलेखा दीठी,राजायें जाण्युं ए कोइक महर्द्धिक देवनी देवांगना डे.

पडी राजाने देखी पच्चास कन्यायें न्हाना प्रकारनुं संगीत मांम्युं, ते जोइ राजायें विचार्युं, जे मनें जे लोचन मल्यां डे, तेनुं फल हुं आजे पा

म्यो. जेमाटें में साक्षात् देवांगनाउने महारी नजरें दीठी. तथा देव नाटक पण साक्षात् दीठुं. पछी एक प्रहर लगण नाटक करी तत्काल विसर्ज्युं.

एवामां एक दासी कहेवा आवी के हे स्वामिनि ! रसवती नीपनी छे, माटें जमवा पधारो. तेवारें ते जमवा उठी. जोजनशालायें गइ. तिहां था ली वाटका प्रमुख सर्व सुवर्णना आणी मूक्या. राजा एक खूणे उन्नो जू वे छे, तो जे जे वस्तु देखे, ते सर्व मणिमय सुवर्णमय देखे, ते देखीने आश्चर्य पामे. चंडलेखा, दासीयोना यूथ सायें जमवा बेठी. योगणी पण पासें जइ बेठी. तिहां विविध प्रकारना मेवा, सुखडी, शाल, दाल सालणा प्रमुख जे जे राजा देखे छे, ते ते सर्व अपूर्वगंध अपूर्व रसमय देखे छे.

हवे योगणीयें पूछ्युं के स्वामिनि ! तमें कोण छो ? आ पृथ्वीतल के म पवित्र कर्युं छे ? ते कृपा करी अमोने कहो. एवुं पूछवायी स्त्री माया स्वन्नाव केलवी अश्रुपात करी बोली के हे योगणी ! हे स्वामिनी ! महारुं वृत्तांत सांनलो. हुं धरणींडनी पटराणी धरणींडने परमवल्लन्न छुं अने आ महारी दासीयो ते वीणावादमां अत्यंत कुशल एमनी बराबर वीणा कोइ पण वजाडी शके नहीं. ए मुजने अत्यंत वल्लन्न छे, ते दासीयो महारा स्वा मी धरणींडें महारी पासेंथी मागी, में कह्युं हुं नहीं आपुं. जो ए तमने आपुं, तो महारा नाटकनो नंग थाय, तेवारें नागराजायें कह्युं, तमें नहीं आप शो, तो हुं जोरावरीयी लइ मूकीश. एवुं वचन महारा स्वामीनुं सांनली हुं तिहांथी रीसाइ आवीने इहां रत्नमय जुवन करी रहेली छुं. हवे तुमने कहुं छुं के जे रीतें नागराजा महारुं आ रहेवानुं स्थानक न जाणे, तेवी रीतें तमें मंत्रनी शक्ति फोरवजो. एवुं कही वली पण चंडलेखा योगणी प्रत्यें कहेवा लागी, के घणे कालें तमें मुजनें मल्या छो, माटें आपणे एक था लमां नेगां जमवा बेसशुं, एम कही बेहु जणी एकज थालमां जमवा बेठी.

तेवारें चंडवतीनी संज्ञायें पहेली योगणी बोली हा, हा, हुं एक परो णो सायें तेडी आवी छुं, ते वीसरी गयो. चंडलेखायें कह्युं कोण परोणो छे ? योगणी कहे, डुर्ललितराजा छे, तेवारें चंडलेखा नाक मरोडी कहेवा लागी के अरे रे औदारिक शरीरवालो मलमूत्रनो आगर, अपवित्रतानो सागर, एवो मनुष्य ते वली इहां केम आव्यो छे ? योगणी कहे हे स्वामिनि ! तमें नाक शा वास्ते मरडो छो ? में मंत्रशक्तियें करी तेनुं दिव्य शरीर क

खुं छे. तेमाटें म्हारा वचनथी एने एकज थालमांहे जमाडो. ए देवतानी रसवती एणे चाखी नथी, जेथी ए पण जमीने पछी मनुष्यलोकमांहे वा तो करशे? एम कही योगणीयें राजाने तेड्यो, तिहां ते राजा एवी रस वतीने पण कृतार्थपणुं मानतो जमतो हवो. जम्या नंतर छेहेडे गंगोदकें चलु कराव्यो, पंच सौगंधिक अपूर्व तंबोल आप्यां.

पछी योगणीयें कह्युं हे राजन्! उठो आ घरनी सर्व शोजा जूवो, राजा पण ठाम ठाम दासीयो साथें हसतो थको जोवा लाग्यो. जोइ जो इने हर्ष पामतो हवो. पछी योगणीने राजायें कह्युं, तम्हारा प्रतापथी म्हारी सघली वांछा पूर्ण थइ. हवे ए देवांगना साथें जो रमवानो अव सर आपो, तो हुं कृतार्थ थाउं. योगणीयें कह्युं ए वात कहेशो मां. कारण के जो मनुष्यनी साथें रमी छे, एवी वात धरणींद्र जाणे, तो एनो त्याग करी मूके, तथापि म्हारी पासें मंत्रबल छे, तेणें करी तमारी इच्छा पूर्ण करीश. पण एक वात तमोने कबूल करवी पडशे, के आ जन्मपर्यंत एनुं वचन माथे चडावी रहेवुं पडशे. राजायें कह्युं जेम तमें कहेशो, तेम हुं करीश. तेवारें योगणीयें चंद्रलेखाने कह्युं ए राजा ताहरो आज्ञाकारक छे, माटे एनुं मनोवांछित पूर्ण कर. वली हमणां ए घणी रात्रिनो जागेलो छे, माटे तम्हारा जुवननी मेडीयें सुखशय्यायें सूवाडीने देवशय्यानुं सुख पामवा दे. चंद्रलेखायें हा कही. तेवारें एक दासी बोली उपर पल्यंक न थी,माटे जो सूवो तो उपर पल्यंक लइ जाउ. ते सांजली राजा हर्ष पाम्यो थको योगणीना वचनथकी पल्यंकने पोताना मस्तकें उपाडी उपर लइ ग यो. तिहां पल्यंक अने तलाइ सर्व दासीनी पेरें पोतें पोताने हाथे पाथरी. पछी चंद्रलेखा नाना प्रकारना संजोगरसें करी राजानुं चित्तरंजन करती हवी.

पछी राजा बीजी पोतानी स्त्रीयोने रासजी जेवी गणीने तेमने पडती मू की अने प्रतिदिवस ते योगणीनी साथें आवी चंद्रलेखानी संघातें कामजोग मां प्रवर्त्ते. अने पल्यंक पण उपर लइ पाथरे. पछी योगणीयें कह्युं अरे चंद्र लेखा! तम्हारो पति तम्हारो दास थयो अने तम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ. चंद्रले खायें पण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ जाणीने शोलशृंगार सजी हसती हसती अंतःपुरमां आवी राजाने कहेवा लागी,के स्वामी! में तो तमोने डह्व्या हता माटें मुजने तमें त्यागी दीधी, पण आ बीजी अंतःपुरीयें श्यो अपराध की

थो छे, जेमाटे एमने त्यागी दीधी छे ? अथवा देवांगनाना विलासमां अमा रा जेवीना साहामुं तमे किहां जोशो ? ते वचन सांजली राजा चमक्यो अने चंडलेखानी साहामुं जोइ जोइने उलखी लीधी, तेवारें कह्युं के ए सर्व तहारां चरित्र जणाय छे. एवुं कहेतांज चंडलेखा आवीने राजाने पगे लागी,अने कह्युं स्वामी योगणीने वचने में आपनो अपराध कीधो,ते क्षमा करजो. रा जायें चंडलेखानुं बुद्धिविज्ञान देखीने पटराणी करी थापी. पछी राजाने पा ताल जुवनें सर्व अंतःपुरनी सार्यें रमतां थकां हजारो वर्ष व्यतिक्रम्यां.

एकदा उद्यानने विषे अजयंकर सूरि समोसस्या. उद्यानपालकें वधामणी दीधी तेमने यथायोग्य दान देइने सर्व सझाइ करी चंडलेखाने सार्यें तेडी राजा, वांदवा गयो. वांदीने योग्यस्थानकें बेठो. आचार्यें धर्मदेशना दीधी. नानाप्रकारनी धर्मदेशनाने अधिकारें गुरु, चंडलेखाप्रत्यें कहेता हवा, के हे चंडलेखा! तुं कां प्रतिबोध पामती नथी ? आपणा पूर्वजवें समकेतनां फल पाम्यां जाणी शामाटें प्रमाद करे छे ? पूर्वें सूडीने जवें श्रीशत्रुंजयती र्थें श्रीरुषजदेवने आराधी दुर्ललितराजानी उपर कोप धरीने समकेतना वशथी चंदनसारशेठनी तुं सर्वकलानिधान पुत्री थइ. अने वली इहां धर्म पण पामी छो, तो हवे प्रमाद शा माटें करे छे ? एवुं गुरुनुं वचन सांजली चंडलेखायें श्रावकनां बार व्रत उच्चस्यां. तथा राजा प्रमुख लोक पण सर्व यथाशक्तियें समकेतादिक व्रत उच्चरी पोत पोताने घेर गयां.

एकदा चंडलेखा पर्वतिथियें व्रत पालवाने अर्थें पोताने घेर पोषधशा लायें पोषध लइ करीने निश्चल मेरुनी परें अकंप थइ काउस्सग्ग करी रही छे. एवामां एक मिथ्यादृष्टि देवी अने बीजी सम्यग्दृष्टि देवी छे ते मने परस्पर प्रीति छे, तेमां सम्यग्दृष्टि देवीयें श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा करी अने जिनधर्मना पालनारा साधुउनी दृढतातो अत्यंत श्रेय छे, परंतु श्राव क श्राविकामां पण धैर्यता संबंधी वखाण करतां वर्त्तमानकालें चंडलेखा नी धीरज वखाणी ते सांजली मिथ्यादृष्टि देवी चंडलेखा पासें आवी. रा क्षसनुं रूप विकूर्वी, जाणे पाहाडने फाडी नाखशे, एवा महोटा छरा हा थमांहे लइ महोटे सादें बोलती हवी के आ तहारा पौषध काउस्सग्ग प्र मुख मूकी चरवला मुहपत्तिने नाखी दइने आ अमारा पगनी पूजा कर, नहींकां तुजने एकज कवलें आखीने आखी महारा मुखमांहे उतारीश. एवी

राक्षसीनी वाणी सांभली चंद्रलेखा लेशमात्र पण काउस्सग्गथकी चला यमान थइ नहीं. तेवारें महोटा हाथीयोनां रूप लइने चंद्रलेखाने बीहीव राववा माटे घणा उपसर्ग कस्या. पछी सिंहनां,सर्पनां, विकराल रूप करी बीहीरावी तो पण अचल रही. पछी डुर्ललितराजाने चोटलीयें पकडी चंद्र लेखा आगल आणीने कहेवा लागी के आ तहारुं कपट मूकी दे. नहीं तर आ तहारा धणीने मारी नाखीश. एम कही राजाने चाबके मारवा मांम्यो. राजा बुंबारव करी बोल्यो,अरे मनें मूकाव,मूकाव; ए मुझने मारे छे. ते सांभली चंद्रलेखायें विचाखुं के धर्म करतां थकां जे होनार हो, ते भलें हो. जेमाटें धर्म करतां मातुं थायज नहीं.

ए रीतें जेम जेम क्षोभावे, तेम तेम चंद्रलेखानुं मन निश्चल थातुं जाय. एम शुक्लध्यानें चडती क्षपकश्रेणि आरोहि केवलज्ञान पामी तेवारें ढूकडा रहेला सम्यग्दृष्टि देवतायें साधुनो वेश आणी आप्यो. चंद्रलेखायें पण चार मुष्टि लोच करी वेश परिधान कीधुं, देवतायें सुवर्णकमल रच्युं तेनी उपर बेसी धर्मदेशना देवा लागी. ते उपसर्ग करनारी मिथ्यादृष्टि व्यंतर देवीयें आवीने अपराध खमाव्यो. चंद्रलेखायें, डुर्ललित राजा प्रमुखने प्रतिबोध देइ घणा काल पर्यंत विहार करी भव्यलोकोने तारी श्रीशत्रुंजयपर्वतें मोक्ष कमला वरी. ए छ भावनाने विषे चंद्रलेखानी कथा कही.

इति महोपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे सम्यक्त्व षड्भावना स्वरूप निरूपणनामा एकादशोऽधिकारः संपूर्णः ॥ ११ ॥

हवे समकेतनां छ स्थानकनुं बारमो अधिकार कहीयें छैयें.

॥ अछि जिउ तह निच्चो, कत्ता भुत्ता य पुम्म पावाणं॥ अछि धुव निवाणं, तस्सोवाय उछहाणा ॥ ५ए ॥ अर्थः-(अछिजिउ के) जीवद्रव्य अछि एटले छे, एथी नास्तिक वाद उछाप्यो, ए प्रथम लक्षण छे (तह के०) तथा जीव जे छे ते द्रव्यनी अपेक्षायें (निच्चो के०) नित्य शाश्वतो छे. ए बीजुं लक्षण तथा (कत्ता के०) जीव कर्त्ता छे, एटले ज्ञानावरणीयादिक आठे कर्मनो कर्त्ता छे, तेमां सात कर्मनो निरंतर समयसमयें बंधक छे, अने कदाचित् कोइक समयें आठे कर्मनो बंधक छे, ए त्रीजुं लक्षण. तथा (य के०) वली (भुत्ता के०) जीव भोक्ता छे, शेनो भोक्ता छे?

तो के (पुसपावाणं के०) पुण्य अने पापनो नोक्ता छे, तिहां शुनकर्मनो बंधक जीव पुण्यनो नोक्ता छे, अने अशुनकर्मनो बंधक जीव पापनो नोक्ता छे, ए चोथुं लक्षण. तथा (अछिधुवनिव्वाणं के०) ध्रुव एटले निश्चें निर्वाण जे सकलकर्मक्षयरूप मोक्ष ते अछि एटले छे, ए पांचमुं लक्षण. तथा (तस्सोवायउ के०) ते मोक्षनो ज्ञान दर्शन चारित्रादिक उपाय छे, ए छठुं लक्षण ए (छठाणा के०) छ स्थानक कहीयें ॥ ५ए ॥

ए छ स्थानकना जाणवाथकी तथा सर्दहवाथकी जाणीयें जे एनी पासें सम्यक्त्व छे, पण जेने ए लक्षणनुं श्रद्धान न होय, तेनी पासें समकेत न कहेवाय. जे माटें ज्ञान तो मिथ्यादृष्टि पारखंमी पासें पण पामीयें केम के किंचिदून दश पूर्वनो जाणनार तो मिथ्यादृष्टि पण कह्यो छे. तेना किंचिदून दश पूर्व ते पण मिथ्याश्रुत कहीयें. मिथ्यादृष्टियें ग्रहण कयुं माटें जेटलुं मिथ्यादृष्टियें परिग्रहीत पूर्वश्रुत, ते सर्व मिथ्याश्रुत कहीयें. कारण के मिथ्यादृष्टि जेटलुं श्रुत जाणे, ते सर्व विपरीत पणे सर्दहे. अने विपरीत पणे वखाणे. अने सम्यग्दृष्टिपरिग्रहीत मिथ्याश्रुत होय ते पण सम्यग्श्रुत थाय ॥ यतः ॥ व्याकरण छंदोलंकृति, नाटक काव्यतर्क गणितादि ॥ सम्यग्दृष्टि परिग्रह, पूतं जयति श्रुतज्ञानम् ॥ १ ॥ इति सिद्धांतस्तोत्रे.

हवे ए छ लक्षणनुं स्वरूप कहे छे.

॥ आया अणुनवसिद्धो, गमई तह चित्तचेयणाईहिं ॥ जीवो अछि अवस्सं, पच्चस्को नाण दिठीणं ॥ ६० ॥ अर्थः–(आया के०) आत्मा (अणुनवसिद्धो के०) अनुनव सिद्ध छे, प्रत्यक्षपणे सिद्ध छे (तह के०) तेम (गमई के०) गमति ते अनुमानें पण जाणीयें छैयें. ते शी रीतें जाणीयें छैयें ? तो के (चित्तचेयणाइहिं के०) चित्त एटले ज्ञानगुणे करी जाणीयें छैयें, तथा चेयणाइ एटले चेतना चैतन्य तेणे करी जाणी छैयें, आदि शब्द थकी सुख, दुःख, इछा, नय इत्यादिक जे आत्मगुण ते लेवा. सुखदुःखादिकनो वेत्ता आत्मा होय, पण अचेतन स्तंनादिक जे छे ते सुख दुःखना वेत्ता न होय. एटला माटे (जीवो अछि अवस्सं के०) जीव अवश्य निश्चय छे, (पच्चस्कोनाणदिठीणं के०) ज्ञानदृष्टिने प्रत्यक्ष छे, जेहवो आत्मा लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात आत्मप्रदेशवंत छे. तेहवो, ज्ञानदृष्टियें देखे छे. ए प्रथम स्थानकनुं स्वरूप कह्युं ॥ ६० ॥

हवे बीजा स्थानकनुं स्वरूप कहे ले.

॥ दव्वछयायनिच्चो, उप्पायविणास वज्जिउ जेण ॥ पुव्वकयाणुसरणउ, पज्जाया तस्स उ अणिच्चा ॥ ६१ ॥ अर्थः-(दव्वछयायनिच्चो के०) इव्यार्थनयने मतें विचारतां आत्मा नित्य ले, जे कारण माटें (उप्पायविणासवज्जिउजेण के०) उत्पाद ते उपजवुं अने विणास जे विणसवुं तेणें करीने वर्जित ले रहित ले, जे कारण माटे जो घट अनित्य ले, तो तेनी उत्पत्ति पण ले,तथा विनाश पण ले अने आत्मानी उत्पत्ति पण नथी अने विनाश पण नथी परंतु आकाशनी परें नित्य ले, (पुव्वकयाणुसरणउ के०) पूर्वकृत कर्मना अनुस्मरणथकी (पज्जाया तस्स उ अणिच्चा के०) ते आत्माना पर्याय ते वली अनित्य ले जेमाटे पर्यायार्थिक नयें विचारतां आत्मा अनित्य ले जेम पूर्वन्नवने विषे हुं श्रावक हतो, में प्रतिष्ठा करावी हती,प्रतिमा न्नरावी हती. प्रासाद कराव्युं,इत्यादिक जे पूर्वें करेलां कृत्य तेना अनुस्मरणथकी एटले सांन्नरवा थकी आत्माना पर्याय जे मनुष्यत्व, तिर्यंचत्व, देवत्व, नरकत्व इत्यादिक ले ते अनित्य ले, एवा अनेक पर्याय उपजे विणसे ले. तेमाटे आत्मा, पर्याय आश्रयी अनित्य ले. अने आत्मा मूल इव्यें नित्य ले. ए बीजुं स्थानक कह्युं ॥ ६१ ॥

हवे त्रीजुं स्थानक कहे ले.

॥ कत्ता सुहासुहाणं, कम्माण कसाय जोग माईहिं ॥ मिउ दंम चक्क चीवर, सामग्गिवसा कुलालु व ॥६२॥ अर्थः-ए आत्मा (सुहासुहाणं कम्माण के०) शुन्नाशुन्नकर्मनो (कत्ता के०) कर्त्ता ले एटले करणशील ले, जेमाटे रूडी सामग्री पामीने शुन्नकर्म करे ले, अने नूंमी सामग्री पामीने अशुन्नकर्म करे ले. ते शेणे करी करे ले? तो के (कसायजोगमाइहिं के०) कषाय योगादिकें करीने एटले अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी अने संज्वलन, ए चार चार न्नेदें क्रोध, मान, माया अने लोन्नना मली शोल न्नेद तथा सत्यमनोयोगादिक पन्नर प्रकारना योग, एवं एकत्रीश तथा आदिशब्दथकी हास्यादिक नव नोकषाय, आन्निग्रहिकादिक पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व तथा पांच इंडिय अने लहा मननो अनिग्रह तथा पृथ्वीकायवध, अप्कायवध, तेउकायवध, वायुकायवध, वनस्पतिकायवध, त्रसकायवध, एवं सत्तावन्न हेतुयें करी जीव, कर्मनो बंध करे ले. तिहां दृष्टांत क

हे छेः–(मिउ के०) माटी (दंम के०) दंम (चक्र के०) चक्र अने (ची वर के०) चीवर लुगडुं इत्यादिकनी (सामग्गिवसा के०) सामग्रीना वश थकी (कुलालुव के०) कुलालवत् एटले कुंनारनी परें अर्थात् जेम कुंनार जे छे, ते माटी, दंम चक्र अने चीवर प्रमुखनी सामग्री पामीने घट करे छे, तेम जीव कपायादिकनी सामग्री पामीने कर्मबंध करे छे, ए त्रीजुं स्थानक कह्युं.

हवे चोथुं स्थानक कहे छे.

॥ नुञ्जइ सयं कयाइं, परकय नोगे अइप्पसंगो उ ॥ अकयस्स नत्थि नोगो, अन्नह मुरकेवि सो कज्जा ॥ ६३ ॥ अर्थः–(सयंकयाइं के०) स्व कृतकर्मप्रत्यें (नुञ्जइ के०) नोगवे ॥ यतः ॥ नानुक्तं क्षीयते कर्म, कल्पको टिशतैरपि ॥ अवश्यमेव नोक्तव्यं, कृतं कर्म शुनाशुनम् ॥ १ ॥ अने (प रकयनोगे के०) परकृतकर्मनो नोग मानीयें तो (अइप्पसंगो के०) अतिप्रसंग दोष आवे तथा तुकार निश्चयनयार्थें छे जो जीवने अन्यकृत कर्मनुं नोगववुं मानीयें, तो देवदत्तना जमवाथकी यज्ञदत्तने पण तृप्ति थावी जोइयें, पण एम तो देखातुं नथी जे जमे छे, तेनेज तृप्ति थती दे खाय छे, पण अन्यने तृप्ति थती नथी माटें परकृतकर्म नोगवे नहीं. स्वयं कृत कर्मज नोगवे ॥ यतः ॥ जीवेणं नंते अत्तकडे डुरक परकडे डुरके इति अ कयस्सत्ति माटे (अकयस्सनत्थि नोगो के०) अकृत कर्मनो नोग नथी (अ न्नह के०) अन्यथा जो अकृतकर्मनो नोग मानीयें तो (मुरकेवि के०) मोक्षने विषे पण (सो कज्जा के०) ते कर्मनो नोग होय. उडता रोगनी परें जो कर्म पण उडीने वलगी जाय, त्यारे तो सिद्धना जीवने पण कर्म लागी जाय! तेमाटें स्वयंकृत कर्मज आत्मा नोगवे. ए चोथुं स्थानक कह्युं ॥ ६३ ॥

हवे पांचमुं स्थानक मोक्ष छे तेनुं स्वरूप कहे छे.

॥ निव्वाण मरकय पयं, निरुवम सुहसंगयं सिवं अरुयं ॥ जियराग दोस मोहे, हिं नासियंता धुवं अत्थि ॥ ६४ ॥ अर्थः–(निव्वाणं के०) निर्वा ण एवुं (अरकयपयं के०) अक्षयपद छे, शाश्वतुं स्थानक छे, ते एक सि द्धनी अपेक्षायें सादि अनंत छे अने सर्वसिद्धनी अपेक्षायें अनादि अनं त छे. सिद्धने पतनना अनावथकी पाछो अवतार लेवो नथी माटे अक्षय छे वली कहेवुं छे ? तो के (निरुवमसुहसंगयं के०) निरुपम सुखसंगत छे, ते डुःखगर्जित नथी, तेमाटें निरुपम सुखसंगत कह्युं. तथा (सिवं

के०) निरुपद्रव छे, एटले उपद्रव रहित छे. केम के तिहां सात भय मांहेलो एके भय नथी, तथा बावीश परिसह मांहेलो एके परिसह नथी, तेमाटे शिव कह्युं उपद्रवरहित कह्युं तथा (अरुयं के०) अरुज छे एटले रोगरहित छे जेमाटे रोग तो शरीराश्रित छे तिहां मोक्षमां शरीरना अभा वथी रोगरहित पणुं छे, तेमाटे अरुज कह्युं. हवे ते मोक्ष केवी रीतें जा णीयें ? ते कहे छेः—(जिय राग दोस मोहेहिं के०) जीत्या छें राग द्वेष अने मोह जेणें एवा आप्त पुरुषोयें (भासियंता के०) भाषित कथित छे पण धूतारवाने अर्थें नथी कह्युं. जितरागदोषमोह एवा जे जिन, तेणें कह्युं छे. (ता के०) तेमाटे (धुवं के०) निश्चें (अच्छि के०) छे. जे श्रीवीतराग देवें कह्युं ते छतुंज छे, एमज जाणवुं. ए पांचमुं स्थानक कह्युं ॥ ६४ ॥

हवे छहुं स्थानक, तें मोक्ष साधवानो उपाय कहे छे.

॥ सम्मत्त नाण चरणा, संपुन्नो मोरक साहणोवाउ ॥ ता इह जत्तो जुत्तो, स सत्तिउ नाण तत्ताणं ॥ ६५ ॥ अर्थः—(सम्मत्त के०) स म्यक्त्व जे औपशम, क्षयोपशम क्षायिकादिक आत्मानो शुभपरिणाम तथा (नाण के०) ज्ञान विशेष जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म नःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान तथा (चरणा के०) चारित्र जे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए त्रण वानां तेणें करी (संपुन्नो के०) संपूर्ण पूरे पूरो छे. (मोरकसाहणोवाउ के०) मोक्ष साधवानो उपाय (ता के०) ते कारण माटे (इह के०) ए उपायने विषे एटले मोक्षरूप कार्यनुं जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप उपा य छे तेने विषे (जत्तो के०) यत्न करवो ते (जुत्तो के०) युक्त छे (ससत्तिउ के०) स्वशक्तिथकी पण, कोने ? तो के (नाणतत्ताणं के०) जेणे ज्ञाने करी त त्त्व जाण्युं छे, तेहने एटले जेणे श्रीजिनवचननां रहस्य जाण्यां छे, तेने ए उपायने विषे स्वशक्तिथकी यत्न करवो युक्त छे,ए छहुं स्थानक कह्युं ॥६५॥

हवे ए छ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानो संबंध कहीयें छैयें. एहीज भरतक्षेत्रने विषे कांची नामें नगरमां नरसुंदर नामें राजा राज्य करे छे ते राजा नास्तिक वादी छे. जीवादिक पदार्थ मानतो नथी, देवगुरुनो द्वेषी छे,तेने सुरसुंदरी नामें अग्रमहिषी छे, अने सुमति नामें प्रधान छे.

हवे चंद्रपुरनगरने विषे चंद्रसेन नामें सामंत छे, तेने मंत्रतंत्रादिकनो

जाण एवो एक योगी मित्र छे, ते चंद्रसेन सामंत नरसुंदर राजानी सेवा थकी उद्वेग पाम्यो थको योगीने कहेवा लाग्यो के तुं म्हारो मित्र छो माटें म्हारुं एक काम कर. योगीयें कह्युं शुं काम छे? ते मने कहे. चंद्रसेनें कह्युं नरसुंदरराजानी चाकरीमां मने कांहिं पण सुख नथी. माटे ए राजाने मारी नाखीयें, तो हुं सुखसमाधिमां रहुं! ते वात पहेला दुष्टात्मा योगीयें अंगी कार करी. पछी ते योगी कांचीनगरीयें आव्यो, अने मंत्रतंत्रादिक विद्यायें करी लोकोमांहे प्रसिद्धि पाम्यो. राजायें तेनी कलासंबंधी तारिफ सांभली तेडावीने पूछ्युं, तमें कया देशथकी आव्या छो? योगीयें कह्युं आप योगी योना भक्त छो. एवुं सांभली हुं श्रीपर्वतथकी तमारुं दर्शन करवा आव्यो छुं.

राजायें पूछ्युं तमारी पासें कइ कइ विद्याउ छे? तेवारें योगी बोल्यो हुं रात्रिने दिवस करी देखाडुं अने दिवसने रात्रि करी देखाडुं. धरतीने आका श करुं, आकाशने धरती करुं, समुद्रने एक चुलुकें आचमन करुं इत्यादि विद्याउ छे, माटे तम्हारे जे काम होय ते कहे, तो हुं करी आपुं. तेवारें योगीने प्रधानें कह्युं एटला म्होटा आडंबर अमारे कराववा नथी पण म्हारी स्त्री प्रणयकलह थकी रीसाईने ग्रामांतरें गइ छे, तेने इहां वेगं आणी आप, तो ए सर्व तम्हारुं बोलवुं साचुं करी मानीयें. ते सांभलीने योगीयें मंडल मांड्युं, मंत्र साध्यो, आकर्षण मंत्रें करी लोटथी खरडेला हाथे रोटला करती एवी थ कीज मंत्रीश्वरनी स्त्री आणी. मंत्री हर्ष पाम्यो थको नाचवा लाग्यो, राजाने ते योगीनी उपर आस्ता आवी. तेवारें राजायें एकांतें तेडीने योगीने पूछ्युं हे स्वामी! कालवंचना थाय के न थाय! एटले आयु पूरण थये मरण प्राप्त थाय छे, ते न थाय, एवो कोइ उपाय छे, के नथी? योगीयें कह्युं जे थकी कालने वंची घणुं जीवीयें मरीयें नहीं, एवो उपाय छे. पण जो तुं म्हारी दीक्षा लइ म्हारो चेलो था, तो ते उपाय चाले नहीं कां चाले नहीं. ते सांभली राजायें प्रधाननें राज्य भलावी पोतें योगी पासे दीक्षा लीधी.

योगीयें कह्युं नासिकाथकी बार आंगुल पवन बाहिर निकले अने दश आंगुलमांहे पेसे, तेथी जे विपरीत करे, ते मरणने वंचे. इत्यादिक कही योगीयें राजाने भूमिमांहे घाल्यो. पछी हिंसादिक पापमांहे बोल्यो, एम नि त्यप्रत्यें करावतां एकदा राजाने विषमविष आपीने योगी नाशी गयो, वि ष चढ्या पछी राजा अचेतन थइ पड्यो. समस्त परिवार रोवा लाग्यो, प्र

धानें योगीने पकडवा माणस मोकल्यां. योगी कागडानी पेरें नाशी गयो, मल्यो नहीं. घणा मंत्रवादी तेड्या, पण कोइनो उपाय लाग्यो नहीं. जे वारें पूर्ण विष व्यापी गयुं, तेवारें मरी गयो जाणी हाथणी उपर चडावी आडंबर सहित स्मशाने लइ गया, अगरुचंदननी चिता करीने जेहवो राजाने चितामांहे मूकवा लाग्या, तेहवोज राजा आंख उघाडी जोवा लाग्यो. अने बोल्यो के आ मुजने शुं करो छो ? तेवारें प्रधानें कह्युं महापातकी योगी तमोने विष देइ नाशि गयो पण हाथमां न आव्यो, मंत्रवादी तेड्या तेणें पण हाथ खंखेस्या, तेमाटें तमने मृत जाणीने इहां आण्या, ते सांन्नली राजायें कह्युं हुं केम निर्विष थयो ? प्रधानें कह्युं ते कारण तो कांइ समजातुं नथी पण में एवुं सांन्नल्युं छे जे कोइएक उग्रतपस्वी लब्धिवंत साधु थाय छे, तेना शरीरनो जो कोइने पवन लागे तो पण तेनुं विष जतुं रहे. ने निर्विष थइ जाय,तेवा कोइ साधु आव्या होय, तो हुं कही शकतो नथी.

राजायें तेनी खबर करवा माणस मोकल्यां के जाउ कोइ तपस्वी लब्धिपात्र साधु आव्यो छे ? ते जोइ आवो. माणस पण जोइ आवी राजाने कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! तमारा पुष्पाकर उद्याननें विषे चंडप्रन्नाचार्य समवसस्या छे, राजा कहे साची वात छे, एने प्रसादें महारुं विष उतरी गयुं, तेमाटें ए साधुने जइ वांदीयें. एम विचारी राजा तथा मंत्री प्रमुख सर्व लोक आचार्यने वांदवा आव्यां. राजा वांदी हाथ जोडी बेठो,आचार्यें धर्मोपदेश दीधो. अवसर जाणी जीवास्तिवादनी प्ररूपणा करी तेवारें राजायें नास्तिकवाद स्थाप्यो,अने कह्युं के जीव नथी,जो जीव होय तो घटपटादिकनी परें देखाय ते देखातो नथी, माटें आकाशपुष्पनी परें जीव नथी.

गुरुयें कह्युं तें नजरें दीठो नथी,माटे कहे छे के जीव नथी तो तहारी समज प्रमाणें मेरु महिधरादिक पर्वत पण नथी, तेम तहारा पूर्वज पण नथी. केम के ते पण तें दीठा नथी, परंतु तहारा पूर्वज नहीं,तो तहारी उत्पत्ति पण न जोइयें, माटें तहारा पूर्वज तो अनुन्नवसिद्ध थाय छे, तेम सुख दुःखादिक जे आत्माना गुण छे,ते पण प्रत्यक्ष देखाय छे. सुख दुःखादिक आत्मा अनुन्नवे छे. जे सुखदुःखादिकनो कोइक धणी छे,ते आत्माज छे.

राजायें कह्युं ए सत्य वात थइ, पण जीव पापें करी नरकें जाय अने पुण्यें करी स्वर्गे जाय, ए वात मलती नथी, जे माटे महारा पितायें घणां

पाप कर्यां छे, माटे तमारे मतें नरकें गयो हशे तो ते इहां आवीने मुऊने पापथकी शामाटें निवारतो नथी?

गुरु बोल्या सांजल. हे राजन्! कोइक चोर चोरी करतां पकडायो होय, तेने हाथे पगें गलायें ऊकडी बांध्यो होय, ते कहे के मुऊने बूटो मूको. हुं म्हारा कुटुंबने मली आवुं! पण ते चोरने कुटुंबने मलवा माटे कोइ बूटो मूके? राजायें कह्युं न मूके. गुरु बोल्या तेम नारकी जीवने परमाधार्मिक देवोयें वींटी लीधेलो तेणे मारतो छेदातो जेदातो ते केवी रीतें निकलवा पामे? ए दृष्टांतें तुऊने समाचार आपवा सारु केवी रीतें आवी शके?

राजायें पूछ्युं म्हारी माता परमश्राविका जीवादिक नवतत्त्वनी श्रद्धावंत हती, प्रतिक्रमण सामायिक पौषधनी करनारी हती ते तमारे मतें स्वर्गें जवी जोइयें, तो ते मुऊने प्रतिबोध देवा केम नथी आवती?

गुरुयें कह्युं सांजल. ते स्वर्गमां विविध प्रकारना कामजोगने विषे आसक्तथकी तथा वली मनुष्य लोकनो दुर्गंध चारशें तथा पांचशें योजन सुधी ऊंचो पसरे छे, एवा दुर्गंधमांहे केम आवे? ॥ यतः॥ चत्तारि पंच जोयण सयाइं, गंधोअ मणुअ लोगस्स ॥ उढं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण आवंति ॥ १ ॥ पंचसु जिणकल्लाणेसु, चेव महरिसितवाणु जावाउ ॥ जम्मंतर निहेण य, आगच्छंति सुरा इहयं ॥२॥ माटें जीव छतो छे, एवी सद्दहणा कर.

वली राजायें कह्युं में जीवनी सद्दहणाने अर्थें एक चोरने पकडी तेना राइ जेवडा खंम कीधा, पण तेमांथी कांइ जीवनो खंम निकलतो दीठो नहीं. ते माटें जाणुं बुं जे जीव नथी जो जीव हत, तो तेनो खंम पण दीठामां आवत?

गुरुयें कह्युं कोइक पुरुषें अरणीनुं काष्ठ लइ तेनो लोट करी नाख्यो पण तेमां अग्नि दीठो नहीं, तेम वली बीजा कोइक पुरुषें अरणीनुं काष्ठ मथन कर्युं, ते मथन करतां अग्नि प्रगट थयो. खंमोखंम करतां, लोट करतां, अग्नि प्रगट न थयो अने मथन करतां प्रगट थयो, तो ए अग्नि किहांथी निकल्यो? एवी रीतें रूपी पदार्थ जो सामग्रीविना नथी देखाता तो जीवतो पदार्थ छे, ते केम देखाय? तेमाटे चैतन्य गुणें करी जीव जाणीयें.

वली राजायें कह्युं में एक चोरने पकडी लोहनी मंजूषामांहे घाल्यो, ते मंजूषाने लाख देइने निश्छिद्र कीधी. अनुक्रमें जूख तरष वेठी ते चोर मरण

पाम्यो पण तेनो जीव कया रस्ताथी निकली गयो ! एवुं कोइ छिद्र मंजूषा मां दीठुं नहीं, तेवारें में निर्धार कर्यो जे जीव नथी.

गुरुयें कह्युं तेनुं दृष्टांत कहुं छुं, ते सांभळ. कोइक शंखवादक महाबल वान् हतो,ते घणो वेगळो रही शंख वजाडे,तो पण सर्व कोइ जाणे जे ए अमारी पासेंज शंख वजाडे छे. एकदा राजा शरीरचिंतायें प्रवृत्त्यो छे, ते वारें वेगळो रही तेणें शंख वजाड्यो, तेथकी राजा क्षोभ पाम्यो, राजाने वंधकोष्ट थयो. तेथी बाधा निसरी नहीं. राजायें ते शंखवादकने बंधावी अणाव्यो, अने कह्युं के एने मारी नाखो. तेवारें तेणें विनति करी के स्वा मि ! में दूर रही शंख वजाव्यो छे, तो पण तमें जाण्युं जे महारी पासें र हीने शंख वजाडे छे, तो एमां महारो श्यो वांक छे ? जो महारुं वचन न मानो, तो आप परीक्षा करो. राजायें कह्युं भलें हुं परीक्षा करुं छुं. एम कही राजायें ते शंखवादकने निश्छिद्र कुंभमां घाल्यो कुंभने घणो बूरी ली धो लेशमात्र छिद्र राख्युं नहीं, तिहां रही तेणें शंख फूंक्यो, ते राजा प्रमु ख समस्तलोकें सांभल्यो, तो हवे ते शब्द कुंभमांहेथी कये मार्गें निकल्यो ? छिद्र तो कोइ देखातुं न हतुं,तथा लूहारें लोह घड्युं, ते लोहमांहे अग्नि कया मार्गें पेठो छिद्र तो हतुं नहीं, तेम जीव पण शरीरमांहे पेसतो निकलतो देखाय नहीं, पण बोलावीयें तेवारें हुंकारो करी उठे छे, ते जीव जाणजे.

वली राजा बोल्यो स्वामी ! महारी एक वात सांभलो. में एक चोरने प्रथम तोल्यो, पछी मारी नाख्यो, मार्या नंतर फरी पण तोल्यो, परंतु जीव निकल्या पछी तेमां वजन कमती थयुं नहीं. जो जीव होय, तो जीव जतो रह्यो तेनो भार उछो थवो जोइयें, तेमाटे जीव नथी. ए वात निःसंदेह छे.

गुरुयें कह्युं एक गोवालीयें एक दडो वायरे भरीने तेने तोल्यो पछी वली वायरो काहाढीने पण तोल्यो, तो पण सरखो उतर्यो तो हवे वायरानो भार क्यां गयो ? ए दृष्टांतें जाणवुं, जे शरीरमांहे जीव पेसे तो शरीर भारी न थाय अने शरीरमांथी जीव निकले, तो हलवुं न थाय. जीव अरूपी द्र व्य छे, तेने चेतनादिक गुणें करी जाणीयें. इत्यादिक अनेक प्रकारनी युक्ति प्रतियुक्ति सांभलीने राजा प्रतिबोध पाम्यो थको गुरुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के महाराज ! तमारे प्रसादें करी माहारुं बहु प्रकारें मोहविष गयुं, तो पण महारो नास्तिकवाद कुलक्रमागत आव्यो छे, ते केम मूकाय ?

गुरुयें कह्युं विवेकरूप दीपक पामी अंधकारमांहे कोण पेसे? कोण रहे? सन्मार्ग पामी उन्मार्गें कोण जाय? ॥ यतः ॥ जइ केवि पुव्वपुरिसा, अंधलया अंधकूवए पडिया ॥ ताकिं सच्चरकणं, जडन्ति तहं व पडियव्वं ॥१॥ तद्यथा ॥ कोइक चार वाणीया व्यापारें धन उपार्जन करवा माटे चाल्या, अनुक्रमें चालतां चालतां लोहनी, रूपानी, सुवर्णनी अने रत्ननी खाण पामी, लोह नाखी रूपुं लीधुं, रूपुं नाखी सुवर्ण लीधुं, सुवर्ण नाखी रत्न लीधां. घरें आवी नवा घर कराव्यां, पाणिग्रहण कीधां, पुत्र पुत्री प्रमुख कुटुंबनी वृद्धि थइ. घणां धर्मकर्मनां कार्य करी इहलोकें परलोकें सुखी थयां. पण ते चारमांहे एक वाणीयो कदाग्रही हतो तेणें लोह लीधेलुं मूक्युं नहीं. तेने घणाय बीजा त्रण जणे समजाव्यो, तो पण लोहने मूकी रूप्य, सुवर्ण, रत्न लीधां नहीं. घणा योजनसुधी लोहनो जार उपाड्यो पण लोह नाख्युं नही. हठ लइ रह्यो, ते वाणीयो पापनो प्राणीयो घरे आव्यो. दारिद्र जोगवतां कालने प्राप्त थयो, इह लोकें परलोकें दुःखी थयो. ए दृष्टांतें हे राजन्! तुं पण ते लोहवाणीयानी पेरें पूर्वजवें दुःखी थयो छो तेम आगले जवें दुःखी थाइश.

तेवारें राजायें पूछ्युं में पूर्वजवें शी रीतें दुःख जोगव्यां छे? तेवारें आचार्य राजाप्रत्यें पूर्वजव कहे छे. एहज जरतक्षेत्रे मवगाम नामें गाममां अर्जुन नामें कुलपुत्र रहे छे. तेने सुश्रावक शुजंकर एवे नामें मित्र हतो. एकदा ते गामें एक साधु पधार्या. तेवारें शुजंकर श्रावकें, अर्जुनने कह्युं चालो, साधुने वांदवा जइयें! धर्मश्रवण करीयें! तेने अर्जुनें कह्युं हे मित्र! में एमना आगमनुं रहस्य जाण्युंज छे, ए आगम सर्व लोकोने धूतवाने अर्थे धूर्त्तोयें करेलां छे, लोकने पासमां पाडवाने अर्थे तेनुं नाम सिद्धांत करी थाप्युं छे. एवां वचन बोलवाथी तेणें कुकर्म उपार्ज्युं अनुक्रमें ते अर्जुन मरण पामीने छाग थयो, तेज छागने अर्जुनने पुत्रें अर्जुनना श्राद्धने दिवसें मारीने ब्राह्मणोने आप्यो. तिहांथी मरीने रासन थयो, ते घणी ताडना तर्जना सहेतो जार वहन करे, ते गलीया रासजने कुंजारे घणो मार्यो ते थकी मरण पामीने गर्त्तासूकर थयो, अशुचि उकरडे लोटतो थको अशुचि जक्षण करतो थको रहे, तेने आहेडीना कूतरायें मारी जक्षण कर्यो, तिहांथी मरी उंट थयो. तिहां पण घणो जार वहन करवे करी तेनी पीठ सडी गइ. तेनी वेदनाथी मरण पामीने गोबर गामने विषे धना नामें वाणीयाने

घेर पुत्र थयो, ते जन्मथी मुंगो बहेरो थयो, तेथी तेनी उपर लोक हांसी करे थके ते मूर्खो क्रोधने वशथको कूवामां पडी मरण पाम्यो. तिहांथी मरी नंदगामने विषे ठाकोरने घेर दासपुत्र थयो, तेणे एकदा मदिरापान ने उन्मत्तपणे करी ठाकोरने गाल दीधी, ठाकोरें तेनी जीन कपावी तेथी महा पीडायें नूमियें पड्यो, रडवा लाग्यो. एवामां एक साधु चारित्रीयो ज्ञानवंत आव्यो, तेणें आवी कह्युं के हे नडे ! तुं शुं रडे छे ? तुं तहारुंज पूर्वे कृत कर्मसंनार. तेणें अर्जुनना नवथकी मांमीने सघला नव कही संनला व्या, ते सांनलवाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी पोतानां करेलां पापने निंदतो साधुयें दीधेलो नमस्कारमंत्र तेने सांनलतो थको काल करीने तुं इहां राजकुमर थयो छो. पूर्वनव अन्यासथी तुऊने नास्तिक मत आव्यो. राजा पोताना पूर्वनव सांनली जातिस्मरणें करी पूर्वनव चरित्र देखी आचार्यप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे स्वामी ! तमें कह्युं ते सर्व सत्य छे, हवे मुऊने जीवादिक नवतत्त्वनी सद्दहणा आवी. जे तमें कह्युं, ते तेमज छे. महारो एटलो काल निरर्थक गयो. हवे प्रसन्न थइ संसार समुद्रथी तारवा माटे मुऊने दीक्षा द्यो, गुरु कहे. जहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंध करेह.

हवे राजा परम संवेग पाम्यो थको पुत्रने राज्य आपी पोतें आचार्य पासें दीक्षा लेतो हवो. गुरुयें शीखामण दीधी ॥ यतः ॥ जयं जरे जयं चिठे, जयंमासे जयं सए ॥ जयं नुजंतो फासंतो,पावं कम्मं न बंधइ ॥ १ ॥ इत्यादिक गुरु शिक्षा पामीने निरतिचार चारित्र पालतो हवो. सकलसिद्धांत नणी प्रवचनने पारंगामी थयो. आचार्यें योग्य जाणी आचार्यपद दीधुं. अनेक जीवने प्रतिबोधी पोतानी पाटे शिष्यने थापी पोतें जिनकल्प आदर्यो, “ गामेएगराइयं, नगरे पंचराइयं ” ए रीतें विहार करता हवा, छेहले अवसरें पादपोपगमन अणसण करी सर्वार्थसिद्ध विमाने देवता थयो. तिहां स्वेछायें सुख नोगवी मनुष्यनव पामी चारित्र आराधी मोक्षें जाशे. ए समकेतनां छ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानुं चरित्र सांनली दृढ थवुं. ए समकेतना शडशठ बोल सांनली हृदयमां धारी निश्चल समकेत आदरवुं. जेम समकेत मोहनीय कर्मक्षय करी क्षायिकसमकेत आवे.

हवे सकलशास्त्रार्थनुं निगमन वाक्य कहे छे.

॥ इयसत्तसठि पयाइं, उद्धिरिं उ विउल आगमारामा ॥ संगहिया इउ म

ए, मंदमईणं सरणहेउं ॥ ६६ ॥ अर्थः—(इयसत्तसठिपयाइं के०) इति ते परिसमाप्तिने अर्थें ठे चार सद्दहणा प्रमुख बार द्वार तेना उत्तर शडशठ पद ते प्रत्यें (विउल के०) विपुल महोटो एवो जे (आगमारामा के०) आगम रूप आराम ते आराममांहेथी परमार्थें फूलनी परे (उच्चिणि के०) वीणी लइने (उ के०) वली (इह के०) ए समकेत सप्ततिकाना मा प्रकरणने विषे (मए के०) में (संगहिया के०) संग्रह कीधां एकठां कीधां. ते शोने अर्थें एकठां कीधां ? तो के (मंदमईणं के०) मंदमति एटले तुछ ठे मति जेनी तेवा नव्य जीवोनें (सरणहेउं के०) स्मरणहेतुने काजे एकठां कीधां. जेम माली महोटा आरामथकी फूल लेइ चंगेरी नरे, पठी देवगृहें अथवा घरे आवीनें तेनी माला गुंथे ते श्रीजिनप्रतिमाना नोगमां आवे, तथा व्यवहारीया अने राजा प्रमुखने नोगमां आवे तेम विपुल एवा सिद्धांतरूप आरामथकी आ शडसठ बोलरूप पुष्प लइने ए समकेत सप्ततिका नामा प्रकरणरूप चंगेरीमांहे माला रूपें एकठा कीधां ठे, ते नव्यजीवोने कंठे करवाने अर्थें कीधा ठे. एटले नव्यजीवोने काम मां आववा माटे कीधा ठे, ए नाव ठे ॥ ६६ ॥

हवे एना परिज्ञानथकी शुं फल थाय ? ते कहे ठे.

॥ एसिं डविह परिस्मा, दंसण सुद्धिं करेइ नवाणं ॥ सुद्धम्मि दंसण म्मि, करपल्लवसंठिउ मुक्को ॥ ६७ ॥ अर्थः—(एसिं के०) ए समकेतना सडशठ नेदनी (डविह के०) बे प्रकारनी (परिस्मा के०) परिज्ञा एटले परिज्ञान ते एक सामान्यथकी अने बीजी विशेषथकी ए बेहु परिज्ञा जे ठे, ते (दंसणसुद्धिंकरेइनवाणं के०) नव्यजीवने दर्शनशुद्धि एटले समकेतनी शुद्धि करे समकेत निर्मल करे. जेमाटें अनव्यजीवने तो समकेतज नथी, तो तेनी शुद्धि पण क्यांथकी होय ? जेम कोइ स्त्रीयें पुत्र प्रसव्योज नथी तो ते स्त्री, नामस्थापना पण कोनी करे ?

आगमना नाव बे प्रकारें ठे. एक आज्ञागम्यनाव अने बीजा युक्तिगम्यनाव तेमां जे निगोदादिकना विचार ते आज्ञागम्य नाव ठे. अने बीजा विचार युक्तिगम्यनाव ठे. ते जेम ठे, तेम गीतार्थें वखाणवा अने सद्दहणा करनारें तेमज सद्दहवा ॥ यतः ॥ आणागिझो अठो, आणाए चेव सो कहियवो ॥ दिठंतिउ दिठंता, कहणविहराहणा इयरा ॥ १ ॥ श्री

जनन्नइगणिक्कमणेनाप्पुक्कं ॥ कन्नइय मइ डुब्बलेणं, तविहायरियविरहर्ज व ॥ नयगहयत्तणेण य, नाणावरणोदएणं च ॥ १ ॥ हेजदारण संन्नव, जं विबुज्जिज्जा ॥ सव्वणुमयमवितहं, तहावि तं चिंतई मइमं ॥ १ ॥ पराणुग्गह, परायणा जं जणाजुगप्पवरा ॥ जिय राग दोस मोहा, नन्नहा वाइणो तेणं ॥ ३ ॥ इति प्रतिक्रमण सूत्रवृत्तौ ॥

तेमाटे जे नव्यजीव होय तेहज आज्ञारुचि होय ॥ यतः ॥ अहिगारिणा इमं खलु, कारेयव्वं विवज्जए दोसो ॥ आणान्नंगा उच्चिय, धम्मोआसइ पडिबद्धो ॥ १ ॥ आराहणाइतिए,पुसं पावं विराहणाउ य ॥ एयं धम्मरहस्सं, विणेयं बुद्धिमंतेहिं ॥ २ ॥ इति सप्तमपंचाशके ॥ तथा ॥ विशिष्टकष्टस्य कर्म क्षयं प्रयात्यकारणत्वाज्जिनाज्ञया, एवं कर्मक्षयं प्रति कारणत्वादीनि नगवतीवृत्तौ ॥

माटे अनव्यजीव जे होय,ते आज्ञारुचि न होय तेने "खाधे पीधे दीवाली ने जगरे उच्चाट" एवो नास्तिकवादी होय तेमाटे 'नवाणं' ए पद कह्युं. (सुद्धिम्मि दंसणंमि के०) जेने समकेत शुद्ध छे,ते छुते थके तेने (करपह्लवसंविउमुस्को के०) करपह्लव जे हस्त तेमांहे मोक्ष, संस्थित एटले रह्यो छे. ए नाव जाणवो ॥ यतः ॥ सम्मत्तंमि उ लद्धे, पलिय पुहत्तेण सव्वउ हुज्जा ॥ खाउवसम खयाणं, सायरसंखं सया हुंति ॥ १ ॥ ६७ ॥

हवे ते समकेतशुद्धि केम थाय ? तेनो प्रकार कहे छेः–

॥ संघे तिब्रयरम्मि, सूरीसु रिसीसु गुण महग्घेसु ॥ अप्पच्चउ न जेसिं, तेसिं चिय दंसणं सुद्धं ॥६८॥ अर्थः–(संघे के०) संघ जे साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप तेहने विषे तथा (तिब्रयरम्मि के०) तीर्थंकरने विषे तथा (सूरीसु के०) सूरिने विषे, पंचाचार प्रतिपालक एवा आचार्यने विषे (रिसीसु के०) साधुने विषे (गुणमहग्घेसु के०) गुणेकरी महर्घ्य तेने विषे अर्थात् ए सर्वने विषे (जेसिं के०) जे विवेकी साधु तथा श्रावकने मन, वचन अने कायायें करी (अप्पच्चउन के०) अप्रत्यनीकपणुं न होय एटले अविश्वास न होय अनास्ता न होय (तेसिंचियदंसणंसुद्धं के०) ते साधु तथा श्रावकनुंज दर्शन एटले समकेत शुद्ध होय, अर्थात् श्रीसंघ तीर्थंकरादिकने देखीने तेनी उपर जे अनास्ता न आणे, तेनुं समकेत शुद्ध होय. अने जे अनास्ता आणे, तेनुं समकेत शुद्ध न होय ॥ ६८ ॥

हवे जे एवा न होय तेनां लक्षण कहे बेः—

॥ जं पुण इय विवरीया, पल्लवग्गहा संबोह संतुहा ॥ सुबहुंपि उज्जमंता, ते दंसण बाहिरा ऐया ॥ ६ए ॥ अर्थः—(जंपुण के०) जे वली (इय के०) ए पूर्वे कह्या तेथकी (विवरीया के०) विपरीत होय, एटले संघ, तीर्थंकर, आचार्य अने साधु, तेने विषे प्रत्यनीक होय (पल्लवग्गहा के०) पल्लवग्रहा तिहां पल्लव एटले बेहडो तेना जाणनारा एटले जेम कोइकें रुणुं नांग्युं होय तेहनोज बेहडो पकडी बेसें, तेम कांइक शास्त्र न एया होय तेनाज अनिमानें संघादिकनो बेहडो पकडे,जाले,कहे के एनो प्रत्युत्तर आप.एवी रीतें हुंकार तुंकार करे, बराबरी करे तेने पल्लवग्गहा कहीयें पण ते कहेवा होय? तो के (संबोहसंतुहा के०) संबोध एटले पोतें कांइक नण्याथकी पोताना ज्ञानें करी संतुष्ट थयाथका होय, परंतु पूरण आगमना नाव जाणे नहीं. तेमाटे जे कदाग्रह लीधो, ते मूके नहीं, एवा जम्माली अने गोशाला सरखा जे होय, ते (सुबहुंपिउज्जमंता के०) घणुये तप संयम क्रियाने विषे उद्यम करता होय तो पण (ते के०) ते जीवो (दंसणबाहिरा के०) समकेतदर्शनथकी बाह्य बे एम (ऐया के०) जाणवा एटले ते जीवो समकेतथी रहित जाणवा ॥ यतः ॥ दाणं डुक्कनिहाणं,कठाणं तहा अणुठाणं ॥ सम्मत्त विरहियाणं,तवोविसं तावगो नणिउ ॥१॥ इति श्रीहरिनइसूरिकृत मूलशुद्धिप्रकरणे ॥ तथा जेणे एक तीर्थंकरादिकनी हेलना करी, तेणे अनंत तीर्थंकरादिकनी हेलना करी, एम समजवुं. ॥ यतः ॥ एगंमि हेलियं मिवि, सवे ते हेलिया मुणेयवा ॥ नाणाईण गुणाणं, सवबवि तुल्ल नावाउ ॥ १ ॥ इतिपुष्पमालाप्रकरणे ॥ माटे जे संघादिकनी आशातना करे, तेनी पासें समकेत न पामीयें, अनें समकेत विना घणांय तप जपादिक जे कांइ करे, ते सर्वमुक्तिना मूलने अर्थें न होय केटलाएक अनव्य जीव पण साधुने वेशें जैनी क्रियाने बलें करी नवमी ग्रैवेयकें जाय, तो पण ते प्रशंसवा योग्य न थाय ॥ यतः ॥ ग्रैवेयकाप्तिरप्येवं, नातः श्लाघ्या सुनीतितः ॥ यथान्यायार्जिता संप, द्विपाकं विरसात्वतः ॥ इति श्रीहरिनइसूरिकृतयोगबिंदौ ॥ ६ए ॥

हवे एने विषे सुंदरनो दृष्टांत कहे बेः—जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेहें मणिवती नामा देशनेविषे मणिवती नामा नगरी ते परिणामे पण मणिवतीज

छे, तिहां सुस्थित नामें शेठ परमसम्यग्दृष्टि बार व्रतधारी श्रावक रहे छे, तेने घेर एक वातागरो विनयादि गुणें करी संयुक्त कामकाज करवाने निपुण, सुंदर एवे नामें छे, अने परिणामे पण सुंदर छे. ते एकदा पुण्ययोगें साधुनी संगति पामीनें सिद्धांतनां रहस्य प्रत्यें सांजलतो हवो, तेणे गुरुनी पासेंथी व्रत लीधुं जे महारे अष्ट प्रकारी पूजा कस्या विना तथा व्रती जोगवाइयें साधुने वांद्याविना जमवुं नहीं. ते नियम दृढ आस्तायें पाले छे. ते प्रकृतियें अल्पकषाय वालो देवगुरुने विषे नक्तिवंत हतो, तेथी अंतें पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी समाधि मरण पामी तिक्षशिला नगरीयें त्रिविक्रम नामें राजा तेनी सुमंगला राणीनी कुखने विषे पुत्रपणे आवी उपनो. राणीयें पूर्णकलशनुं स्वप्न दीतुं, ते स्वप्न राजानी आगल कह्युं. राजायें कह्युं तुजने उत्तम राज्य धुरंधर पुत्र थाशे, ते सांजली राणी हर्ष पामी.

अनुक्रमें गर्न वधते थके राणीने दोहोलो उपनो तेथी डुर्बल थवा लागी. राजायें डुर्बलतानुं कारण पूछ्युं तेवारें राणीयें कह्युं के हुं हाथणी उपर वेसुं, अने तमें छत्रधार थाउ. एवी रीतें हुं गामने चोराशी चहूटे फरुं तथा उद्याननी क्रीडा करुं, याचकने दान आपुं, दीनजननो उद्धार करुं एवो मुजने दोहोलो उपनो छे, ते हवे हुं शी रीतें तमोने छत्रधारक करीने दोहोलो पूर्ण करुं? राजायें ते दोहोलो पूर्ण कस्यो.

अनुक्रमें पुत्रजन्म थयो राजायें बंदीवान प्रमुख मूक्या, घणो महोत्सव कस्यो, वली ए पुत्र गर्नमां आवें थके एनी माता घरमांथी निकली उद्याने क्रीडा करवा लागी, तेमाटें एनुं निर्गतमुख एवुं नाम दीधुं. अनुक्रमें तेपुत्र बालनाव मूकी चंद्रमानी पेठें सर्वकलामां प्रवीण थयो.

एवामां वैशाली नगरीनो राजा वासव नामें छे, तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री छे, ते निर्गतमुख कुमरना गुण सांजलीने तेनी उपर अनुरक्त थइ थकी पोताना माता पिताने कहेवा लागी के हुं निर्गतमुख कुमरनी साथें मारुं पाणिग्रहण करीश. अन्य पुरुष सर्व महारे पिता भ्राता स्थानकें छे. तेमाटें मुजने तिहां स्वयंवरा मोकलो,ते पुत्रीनुं वचन सांजली माता पिता पण घणी सज्जाइ सहित ते पुत्रीने तिहां मोकलतां हवां. ते पुत्रीयें पण आगलथकी सांपरायण नामा ब्राह्मणने मोकल्यो, तेणे जइ त्रिविक्रम नूपने आशीर्वाद देइने कह्युं के हे स्वामी! वैशालिका नगरीनो स्वामी वासव

नामें राजा तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री छे, ते तहारा पुत्रना गुण सांजली अनुरक्त थइ थकी परणवा आवे छे, ते वात सांजली त्रिविक्रम राजा हर्ष पाम्यो. पछी केटले एक दिवसें कन्या पण आवी पिताना कहेवाथकी कुमरें पाणिग्रहण कर्युं बेहुने परस्परें चंद्रमा रोहिणीनी परें प्रीति थइ.

हवे रणसिंह नामें सीमाडीयो राजा छे ते त्रिविक्रमराजानी आज्ञा मानतो नथी घणो उन्मत्त थयो छे, तेनी उपर त्रिविक्रम राजा कटकजइ चडे छे, ते वात जाणी कुमरें आवी पिताने कह्युं के हुं पुत्र, सन्नाह पहेरवा योग्य छते तमें सन्नाह पहेरो, ते युक्त नहीं. माटे तमें बेग रहो. हुं रणसिंहनें वश करी आवीश. ते वचनामृत सांजली राजा हर्ष पामीने घेर रह्यो अने कुमरने सैन्यनी सार्थे मोकल्यो. कुमर तिहां जइ प्रजातनो सूर्य जेम अंधकारनो नाश करे,तेम वैरीरूप अंधकारनो नाश करी रणसिंह राजाने वश करी बांधी आणीने पिताने पगे लगाड्यो, जय पामी जयनिशान वजडाव्युं.

एकदा त्रिविक्रम राजायें पुत्रने राज्ययोग्य जाणी राज्य आपी पोतें गुरु समीपें दीक्षा लीधी. पाछल श्रीनिर्गतमुख राजा राज्य पाले छे, जेहवो नामें तेहवोज परिणामें पण प्रजापालक थयो. हवे ते राजाने युवराज मदन नामें छे तथा सुमति नामें प्रधान छे अने सुवचन नामें दूत छे, ते त्रणे जण अहंकार करवा लाग्या जे अमें छैयें, तो ए राजानुं राज्य चाले छे, अमारा पसायथी राजा सुखें बेसी रहे छे. अनुक्रमें राजा ते त्रणेनां गर्वित चित्त जाणी तेमनो गर्व उतारवाने अर्थें सेना सार्थें लइ पोतें देश जोवा निकल्यो,ते देशने जोतो जोतो सीमाडीया राजाउने वश करतो करतो अनुक्रमें पाछो पोताना देशनी गडासंधियें आव्यो.

तेवारें राजा, मदन युवराजने तथा सुमति प्रधान अने सुवचन दूतने कहेवा लाग्यो जे आपणे चारे जण मली पोत पोताना नाग्यनी परीक्षा करी जोइयें के कहेनां कहेवां नाग्य छे. एम कही बीजा मंत्रीने राज्य नलावी एकेकुं खड्ग हाथमां लइने चारे जण खाली हाथें निकल्या, ते चालता चालता कांची नगरीयें आवी थाका थका तलाव उपर बेठा. दातण कीधा पछी राजायें कह्युं आज नोजननी सामग्री कोण करावशे ? तेवारें सुवचन दूत बोल्यो तमें त्रणे जण इहां बेसो. नोजननी सामग्री आजे हुं करावीश. एम कही दूत नगरमांहे गयो. एक व्यवहारीयाने हाटें जइ बेठो. हवे ते दिवसें नगरमां

हे महोत्सव छे, परगामनां लोक घणा व्यापारने अर्थे आव्यां छे, हाट उपर ग्राहकोनी भीड छे, अने व्यवहारीयो हाट उपर एकलोज छे तिहां सुवचने तेने सहाय करी, तेथी ते व्यवहारीयानो व्यापार घणो थयो अने सारो लाभ थयो, व्यवहारीयो हर्ष पामी हाट बंध करी पोताने घेर जमवा जाय छे, तेवारें सुवचनने कहे छे, के हे महापुरुष! उठो महारे घेर जमवा चालो. तेने सुवचनें कह्युं हुं एकलो नथी महारी साथें त्रण जण बीजा छे, ते विना हुं एकलो जमुं नहीं. तेने शेठें कह्युं तमें जाउ. ते त्रणे जणने महारे घेर तेडी लावी भोजन करावो, तेवारें सुवचन दूत आवी त्रणे जणने तेडी गयो तेमने व्यवहारीयें भली सझाइयें भोजन कराव्यां, तेमने भोजन करावतां शेठने सवा दाम खरच थयो.

बीजे दिवसें रत्नपुर नगरने विषे गया. तिहां पण परिश्रांत थया थका तलावें जइ हाथ पग धोइ दातणपाणी करी बेठा, निर्गतमुख राजायें कह्युं हे युवराज! आज भोजन करवानो तहारो वारो छे,माटें भोजन कराव. ते सांभली युवराज नगरमांहे आव्यो तेनें रूपें करी मन्मथ जेहवो हतो माटे तिहां एक पुरुषद्वेषिणी मगधा नामें वेश्या छे,तेणे दीठो. तेथी ते कामातुर थइ. तेवारें वेटीनो अनुराग जाणी अक्कायें दासी मोकली, तेने तेडावी लीधो ते पण मगधा वेश्यानुं रूप देखी हर्ष पाम्यो. परस्परें द्यूतक्रीडा करवा लाग्या, एम करतां भोजन वेला थइ, तेवारें वेश्यायें कह्युं स्वामी उठो भोजन करीयें? तेणें कह्युं महारा त्रण मित्र तलावें बेठा छे, तेमना विना हुं भोजन करुं नहीं. वेश्यायें कह्युं जाउ त्रणेने तेडी लावो. भोजन आपणे घेर करावो. ते सांभली त्रणेने तेडी आव्यो. स्नानपूर्वक भलि सझाइयें भोजन कराव्यां. तेनें भोजन करावतां पांचशो रौप्यक खरच लाग्यो.

त्रीजे दिवसें पंचपुर नामा नगरें गया तिहां पण तेमज परिश्रांत थकां तलावनी पालें पूर्वोक्त सर्व सझाइ करी बेठा. राजायें मंत्रीश्वरने कह्युं आज भोजन कराववाने तमारो वारो छे माटें तमे नगरमां जइ भोजन करावो. मंत्रीश्वर नगरमां आव्यो, अनुक्रमें नगर जोतो जोतो राज्यसभायें गयो, आदर मान महत्त्वसहित राजाने प्रणाम करी बेठो. एवामां तिहां एक झगडो आव्यो छे, ते आ प्रमाणें छे. के कोइ दूर ग्रामने विषे एक व्यवहारीयो वसे छे, तेनी बे स्त्री छे तेमां लघुस्त्रीने पुत्र थयो, तेवारें व्यवहारीये

काल कीधो. लघु शोक्यनो पुत्र म्होटी शोक्यें पाल्यो, तेथी ते तेह्नोज कहेवा णो परस्पर बेहुने मांहो मांहे प्रेम हतो, माटें लघु शोक्यें कांइ मनमां आ एयुं नहीं, अनुक्रमें इव्यने अर्थें वढवा लागी. एक बीजाथी जूदी थइ तेवा रें म्होटी शोक्यें कह्युं पुत्र म्हारो छे, तह्मारे एनी साथें श्यो संबंध छे? ल घु शोक्यें कह्युं ए पुत्र म्हारो छे गामना लोकोने कांइ पण समजण पडती नथी तेवारें ते बेहु स्त्री वढती वढती राज्यसन्नायें आवी, राजा आगल पोतपोतानां दुःख रोवा लागी. राजाने पण कांइ समजण पडी नहीं. तेवा रें सुमतिप्रधान जे प्राहुणो थइ आव्यो छे, तेणे कह्युं स्वामी मुऊने हुकुम आपो, तो हुं ए विवादनो निवेडो करी आपुं. राजायें कह्युं घणुंज रूडुं. नलें न्याय करी आपो! राजानो आदेश पामी सुमति प्रधानें कह्युं तमें बेहु जणी मांहोमांहे समजी ल्यो. तो सारी वात छे. नहींतर इव्य अर्धो अर्ध वहेंची ल्यो, अने पुत्रना बे कटका करी एकेको कटको वहेंची ल्यो. ते सांन ली म्होटीयें विचार्युं जे पुत्र मरी जाय तो म्हारे शुं छे, पण इव्य तो अ र्धुं मने मले छे, जो पुत्र जीवतो रहीनें एनो ठरे, तो इव्य बधुं पुत्रने मली जाय अने पुत्र तो म्हारो नथी, एनोज छे, एम चिंतवी तेणें हा पाडी. पण लघु स्त्रीयें विचार्युं जे म्हारो अंगजात पुत्र जीवतो हशे, तो म्हारे काम आवशे, पण पूत्र मूआ पछी हुं इव्यने शुं करुं! पुत्रने जीवतो देखीश तो पण एम जाणीश जे म्हारो पुत्र छे. एवुं तत्त्व विचारी ते उतावली बोली जे एम हुं नहीं करीश. नलें ए पुत्र म्हारी वडी शोक्य लइ जाय, अने इव्य पण एनेज आपो. हुं म्हारा पुत्रने जीवतो देखीनेज संतोष पामीश, म्हा रे इव्य खपतुं नथी. म्हारुं एकलीनुं पेट नरवा माटें हुं लोकोनुं काम का ज करीश! पण पुत्रने मारी नाखवानो न्याय क्यांय पण सांनल्यो नथी, एवी रीतें तेनुं लोही तप्युं देखी प्रधानें कह्युं पुत्रनी खरेखरी साची माता एज छे, माटें एने पुत्र तथा इव्य आपो अने म्होटीने पुत्रनी उपर निःस्ने हीपणुं जोइ तेने खोटी जाणी काढी मूकी. एवी तेनी बुद्धि देखी राजा खुशी थयो. अने नोजनादिकें करी चारे जणने संतोष्या, ते राजाने नोजन क रावतां चार हजार इव्यनो खरच थयो.

हवे चोथे दिवसें हस्तिनागपुरें गया, तिहां राजा पछेडी उढी म्होटा वृक्षनी नीचें निश्चिंत जइ सूतो, उंघ करवा लाग्यो, ते जोइ त्रण जण हस

वा लाग्या के आजे राजा पोतानो वारो जाणीने सूइ रह्यो. हवे आजे आपणे नोजन शी रीतें करशुं ? ते त्रण जण जेहवामां एवी वात करे ले, ते हवामां ते हस्तिनागपुरनो अपुत्रीयो राजा मरण पामेलो ले,तेवारें मंत्रीश्वर प्रमुखें पंचदिव्य कीधां ले,ते पासेंना नगरने विषे नमतां नमतां क्यांहि योग्यपुरुष न पाम्या,तेवारें नगरनी बाहिर निर्गतमुख राजा सूतो ले,निज्ञा करे ले,तिहां ते पंचदिव्य आव्यां,राजा उपर अनिषेक कलश ढोल्यो,हाथीयें शुंढमां लइ तेने पोतानी उपर चडाव्यो ! अश्वें हेंषारव कर्यो. लत्र चामर विकस्वर थयां,त्रण जणने पूढ्युं एनुं नाम शुं ले ? तेऐं कह्युं एनुं निर्गतमुख नाम ले,तेवारें समस्त लोक बोल्या आपणो निर्गतमुख राजा थयो,एम कही प्रणाम करता हवा. राजा, पंचदिव्यनी साथें तथा त्रणमित्रनी साथें सिंहासनें जइ बेठो, तिहां जयश्री नामें राजपुत्री ले,तेनुं पाणिग्रहण कर्युं, ते दिवसें नोजन करावतां सवा लाख ऽव्य बेठुं. ए रीतें राजानुं नाग्य कह्युं.

हवे तिहां नवो राजा राजगादीयें बेठो तेने जोइ अन्यायी लोक आज्ञा न मानता हवा. तेवारें राजायें प्रतिहारोने कह्युं जे अन्याय करे तेनुं निवारण करजो. ते सांनली प्रतिहार हसवा लाग्या, जे ए राजाथकी राज्य ते केम चालशे? राजायें तेने हसता देखीने नींतीउपर चित्रेला चित्रधरने कह्युं के जे आज्ञा न मानें, तेने सारी पेरें शिक्षा आपजो. एवुं सांनलतांज चित्रधरो उठीने पहेला हास्यकरनारा प्रतिहारो प्रत्यें ताडवा लाग्या, ते आश्चर्य देखी सर्व वैरी जन आवीने राजाने पगें लाग्या, जे माटे मूर्ख जनने जिहां सुधी ताडना न करीयें, तिहां सुधी पाधरा थाय नहीं. अनुक्रमें ते वात सीमाडीया राजायें सांनली तेथी तें पण सर्व आवी वश थया.

ए आश्चर्य जोइनें युवराज, मंत्री, तथा दूत, ए त्रण जणनुं मान गली गयुं. अने तेउ जाणवा लाग्या जे ए राजानुं नाग्यज महोटुं ले,एने नाग्यें ज राज्य चाले ले. एमां आपणुं कांइ पराक्रम नथी.

एकदा बे पुरुष आवीने निर्गतमुख राजा प्रत्यें विनवता हवा, के हे स्वामीन् ! श्रीपुरनगरने विषे नरकेशरी नामें राजा राज्य करे ले, ते समस्त राजाउने तृण समान गणे ले, तेहनी जयलक्ष्मी नामें पुत्री ले, ते महारूपवंत ले विधातायें घणा आदरसहित घडी ले, ते कुमरी एकदा सनामां राजाने उत्संगें बेठी थकी तेने एक निमित्तिये दीठी, राजाये पूढ्युं, ए पु

स्त्रीनां लक्षण कहेवां छे ? निमित्तियायें कह्युं जे पुरुष ए पुत्रीनुं पाणिग्रहण करशे, ते सकलपृथ्वीनुं पाणिग्रहण करशे ? एवो एना लक्षणें करी जाणुं छुं. ते सांजली राजायें विचार्युं जे एनुं हुंज पाणिग्रहण करुं जेथकी समस्त पृथ्वीनो मालक थाउं ते पाप वार्त्ता मंत्रीश्वरें जाणी तेवारें राजाने निवार्यो जे आ अकार्य तमें करशो मां. ते सांजली राजायें नृतने कह्युं, ए मंत्रीश्वरने मारो. ए महारी वस्तु छे, तेने महारुं मन मानशे, तेम हुं करीश, तेमां एनें वचमां आववानुं शुं काम छे ? हवे ते कन्याने प्रधाने कोइ प्रछन्नघरने विषे छानी राखी, वली ते वातनो जेद कोइक पुरुषें राजाने कह्यो. तेथी राजा क्रोधें चड्यो थको प्रधानने मारी नाखवानो उपाय चिंतवे छे,ते जोइ अमो बेहु जणने प्रधानें तमारी पासें मोकलीने कहेवराव्युं छे,के तमो आवीने ए कन्यानुं पाणिग्रहण करो. राजाने पापचिंतवणाथी वारो.

ते वात सांजली प्रधानने राज्य जलावी हाथमां एक खड्ग लइ ते बे पुरुषने आगल करीने निर्गतमुख राजा, तिहांथी चाल्यो, ते श्रीपुरनगरें आवी पहोतो. तिहां मंत्रीश्वरें तेनी साथें जयलक्ष्मी कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं. अने श्रीपुरनगरनुं राज्य आपी, तेनी आज्ञा प्रवर्त्तावी. नरकेशरी राजा शीयालीयानी पेरें बीहीने नासी गयो. ए रीतें निर्गतमुख राजा, पूर्वजवना पुण्यप्रजावें करी त्रणे राज्यनुं सुख जोगववा लाग्यो.

एवामां तिक्षशिला नगरीथी एक दूत आवीने कहेवा लाग्यो के स्वामी ! तमारा पितानी नगरी तमारा विना शून्य करी जाणजो. हालमां तमारी नगरीने शूरतेज राजायें वींटी छे,ते वात सांजलतांज राजा जृकुटिजीषण थइ सैन्य सज्ज करीने चड्यो,तिहां जातां वार संग्राम करी शूरतेज राजाने आकरे बंधनें बांध्यो. तेने केटलाएक दिवस राखी वश करी आज्ञा मनावी, पोतानो सेवक करी मूक्यो, तेणें पण पोतानी पुत्री यशोमती एवे नामें हती, ते निर्गतमुख राजाने परणावी. राजायें तिक्षशिला नगरीयें महोटा महोत्सवें प्रवेश कीधो. इहां चार स्त्रीनी साथें विषयसुख जोगवतां त्रण राज्य पालतां, दिवस निर्गमन करे छे. जता कालने जाणतो नथी.

एकदा राजा विचारे छे, जे में पूर्वजवें श्या पुण्य कीधां हशे ! के जेना योगें हुं एटली राजऋद्धि पाम्यो ? एवामां उद्यानपालें आवी विनव्यो के हे राजेंद्र ! तहारा नंदनवनने विषे चार ज्ञानना धारक श्रीधर्मघोषसूरि प

धास्या ठे ते वात सांजली उद्यानपालकने घणुं प्रीतिदान आपी, चार अं तेउर सहित राजा वांदवा माटें गुरुनी पासें आव्यो. तिहां गुरुने वांदी यु क्तस्थानकें बेगे. आचार्यें धर्मदेशना देवा मांमी ॥ श्लोक ॥ उत्सर्गे परमे ष्ठिमंत्रपठनं देवार्चनं वंदनं, प्रत्याख्यानविधानमागमगिरामश्रांतमाकर्णनं ॥ कालेऽर्हद्गुरुसंविजक्तमशनं, न्याये न वित्तार्जनं, शीलावश्यकशीलनैरनुदि नं कार्यं शुजाः सेवनं ॥ १ ॥ एवुं देशनामृत पान करीने हर्षवंत थको रा जा गुरुने पूठतो हवो,के जगवन् ! में पूर्वजवें श्यां पुण्य कीधां ठे के जेथकी एवी राज्यसंपदा पाम्यो ? आचार्यें कह्युं तुं पूर्वजवें व्यवहारियाने घेर सुंदर नामें कर्मकर हतो, तिहां साधुनें संयोगें धर्म पामीने देव जुहास्या विना तथा गुरुने वांद्या विना हुं जमुं नहीं एवो तें नियम लीधो. ते शुद्ध मनथी पाल्यो, ते पुण्यना योगें तिहांथकी काल करीने इहां एवी राज्य संपदा पाम्यो ठे. हवें इहांथी काल करी देवतानां सुख पामीश. सातमे जवें मोक्षसुख पा मीश. एवा आचार्यना मुखरूप कुंजथकी वचनामृत पान करीने राजा, संतोष पामी समकेत मूल बार व्रत गुरुमुखें उच्चरी वांदी पोताने घेर आव्यो.

पठी देवपूजा, गुरुपूजानां फल देखी विशेषथकी चैत्यनिर्माणादिक ध र्मकार्य करी श्रीजिनशासननो दीपक थयो. एवी रीतें राज्यसुख जोगवी सातमे जवें मोक्षें जाशे. ए श्रीदेवगुरु जक्तिने विषें सुंदरनी कथा सांजली ने हे जव्यो ! तमें देवगुरुनी जक्ति करजो ॥ इति ॥

हवें शास्त्रनुं तत्त्वजूत वाक्य कहे ठेः—

॥ इय जाविऊण तत्तं, गुरुआणाराहणे कुणह जत्तं ॥ जेण सिवसुरक वीयं, दंसणसुद्धी धुवं लहह ॥७०॥ अर्थः—(इय के०) ए पूर्वोक्त प्रका रें कह्युं जे (तत्तं के०) तत्त्व श्रीजिनधर्मनुं सारजूत सम्यक्त्व तेनें (जा विऊण के०) जावें करी चिंतवीने तेनी वासना राखीने (गुरुआणाराह णे के०) श्रीगुरुनी आज्ञा आराधननें विषे (कुणहजत्तं के०) यत्ननें क रो. हे जव्यो ! एहवुं संबोधनपद बाहिरथकी लेवुं. गुरु आज्ञा आराधनने विषे यत्न करो. एवुं कह्युं ते शा माटे ? तो के जेमाटे देवनुं आराधन जे करवुं, ते पण हमणां गुरुने आयत ठे, कारण के देवतत्त्व जे ठे, ते पण गुरुना कह्याथी जाणीयें ठैयें. एरीतें देवतत्त्व अने धर्मतत्त्व ए बे गुरुने आयत्त थयां, ए बेनुं स्वरूप जो गुरु समजावे,तो समजीयें,तेमाटे जेणें शु

द प्ररूपक सुविहित नट्टारक श्रीविजयदेवसूरि प्रमुखनी आज्ञानुं आराधन कीधुं,तेणें देवनी आज्ञानुं पण आराधन कीधुं,तेथी “ गुरुआराहणेकुणह जत्तं ” ए पद कह्युं ॥ यतः ॥ महागरा आयरिया महेसि, समाहि कामे सुयसीलबुधिए ॥ संपाविउ कामेणुत्तराइं, आराहईतोसहधम्मकामी ॥ १ ॥

(जेण के०) जेणे गुरु आज्ञा आराधन यत्ने करी कीधुं तेणे (शिवसुखबीयं के०) शिवसुख जे मोक्ष सुख तेनुं बीज एटले कारणनूत एहवी (दंसण सुद्धी के०) समकेतदर्शननी शुद्धि जे निर्मलता ते प्रत्यें (धुवंलद्द के०) निश्चें पामी. अने जेवारें जीवने समकेतशुद्धि आवी तेवारें ते जीवने अवश्य मोक्षसुख आव्युं. केम के जे जीवने क्षायिक समकेत आव्युं ते जीव उत्कृष्टा चार नव, संसारने विषे करे ॥ यतः ॥ तश्य चउत्थे तेमिउ, नवम्मि सिझंति दंसणेखीणे ॥ जं देवनिरय संखाउ चरम देहेसु ते हुंति ॥१॥ दर्शनशुद्धि पण तेवारेंज कहीयें, के जेवारें जीव क्षायिक समकेत पामे. इहां शिव एवुं पद आणवे करी ग्रंथकारें ग्रंथने विषे अंतने पातें मंगलाचरण कीधुं ॥ यतः ॥ मंगलादीनि मंगलमध्यानि मंगलावसाना निशास्त्राणि विद्धुषामुपादेयानि निःश्रेयससाधकानिन्नवंतीति ॥ ७० ॥

॥ इति श्रीतपागछालंकार सार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार हार सार नट्टारक श्री ५ श्रीविजयसेनसूरीश्वर पट्टप्रनाकर नट्टारक श्री ५ श्रीविजयदेवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्री सम्यक्त्वरत्नाधिष्ठानश्रीसुरतबंदरादिचतुःसंघस्याष्टम्यादिपर्वसु श्रीसम्यक्त्व सप्ततिका प्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वस्थान षट्स्वरूपनिरूपणोनामा द्वादशोधिकारः समाप्तः ॥ १२ ॥

॥ प्रशस्तिश्लोकाः ॥

श्रीवीरपट्टांबुज नास्करानः, श्रीमत्सुधर्मागणनृद्बनूव ॥ अद्यापि वाणी प्रसरीसरीति, यस्य प्रनोः पंमितवक्रवासा ॥ १ ॥ बनूव तत्पट्ट परंपरायां, सूरिर्जगचंद्र इति प्रसिद्धः ॥ लेने तपोगछ इति प्रसिद्धिं, यस्माद्गुणोयं प्रथितावदातः ॥ २ ॥ परंपरायामपितस्य जातः, साधुक्रियामार्गविकासनास्वान ॥ आनंदपूर्वोविमलाग्रसूरि, जगज्जनानंदकरः प्रसिद्धः ॥ ३ ॥ तस्यापि

पट्टे विजयाग्रदानः,सूरिर्बनूव प्रबलप्रतापः ॥ राशिर्गुणानां किल यस्यवारां, राज्ञोः समानीकुरुते कवींद्रः ॥ ४ ॥ बनूव सूरिः किल तस्य पट्टे, श्रीहीरपूर्वो विजयोर्जितश्रीः ॥ लेने प्रतिष्ठां किलनूयसीं यो,नरेंद्रलक्ष्मींद्रकृतामजस्त्रं ॥५॥ तस्यापि पट्टेऽजनि सूरिराजः, सेनोत्तरश्रीविजयोयशस्वी ॥ ततार जैनागम वारिराशि, नावः स्वबुध्योत्तमनाग्यनाग्यः ॥ ६ ॥ विजयते किल तत्पदसेवया, सुललसूरिपदं प्रणयी गुणैः ॥ विजयदेवगुरुर्गरिमांबुधि, स्तपगणे गगने किमु चंद्रमाः ॥ ७ ॥ श्रीआनंदविमलगुरुशिष्याः, श्रीसहजकुशलनामानः ॥ लुंपाकमतमपास्य, गजमलमिव निर्मलाजाताः ॥ ८ ॥ तेषां च शिष्य मुख्याद्वाचकवरसकलचंद्रनामानः ॥ चंद्राइव वचनसुधां, ववृषुर्येविबुधतरपेयां ॥ए॥ श्रीशांतिचंद्रावरवाचकेंद्रा, स्तेषां च शिष्या बहुशिष्यमुख्याः । बनूवुरुद्दामगुणैरुपेताः, प्रनावकाः श्रीजिनशासनस्य ॥ १० ॥ श्रीमज्जंबुद्वीप,प्रज्ञप्तेर्वृत्तिविरचनाचतुराः ॥ येषां बुद्धिं सुरगुरु,रपीह ते विश्वगेयशुनयशसां ॥ ११ ॥ गीतार्थाः ॥ तेषां गुरूणां गुणसागराणां, प्रसादलेशं समवाप्य चक्रे ॥ अनेकशास्त्रार्थविचारसारः, परोपकृद्वाचकरत्नचंद्रः ॥१२॥ सम्यक्त्वसप्तत्यमलप्रबोधं, बालावबोधं पटुनिः सुबोधं ॥ सम्यक्त्वरत्नप्रवरप्रकाश,नामानमेनं, समयानुसारात् ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ रस मुनि रस शशिवर्षे (१६७६) पौषे शुक्ले त्रयोदशीदिवसे ॥ सूरतबंदरमुख्ये,परमार्हत्संघरमणीये ॥ १४ ॥ इति रत्नचंद्रनाम्ना चकार बालावबोधमतिसुगमम् ॥ सम्यक्त्वरत्नतिवर, प्रकरणतत्त्वार्थबोधकरं ॥ १५ ॥ सूर्याचंद्रमसौ यावत्, यावत्सप्तधराधराः ॥ यावत्तपागणस्तावदिदं जयतु पुस्तकं ॥ १६ ॥ इति महोपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित सम्यक्त्व रत्नतिकाबालाववोधग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु शुनंनवतु ॥

इति श्री दर्शनसित्तरी ग्रंथ समाप्त तत्समाप्तोयं

जैनकथा रत्नकोपस्य तृतीय नाग समाप्त ॥